𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮

मिथिलामोद

मैथिली पत्रकारिताक इतिहास

मिथिला मिहिर

पं॰ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

वैदेही

स्वदेश

मैथिली अकादमी, पटना

Scanned by CamScanner

मैथिली अकादमी प्रकाशन—६६

प्रकाशक :
मैथिली अकादमी
श्रीकृष्णपुरी, पटना-८०००01

(C) मैथिली अकादमी

प्रथम संस्करण : १९८१

प्रति : ११००

मूल्य : { साधारण रु० २०-००
सजिल्द रु० २३-०० }

मुद्रक :
शोभा प्रिंटिंग प्रेस
नया टोला, पटना-४

Scanned by CamScanner

प्रकाशकीय

मैथिलीमे पत्रकारिताक विकास वास्तवमे नाम मात्र भेल अछि। पत्रपत्रिकाक नाम भनहि बहुत गना देल जाओ, किन्तु ओकर जीवन-काल, ग्राहक-संख्या ओ कलेवर अत्यन्त शोचनीय रहल अछि। एहना स्थितिमे मैथिली पत्रकारिताक एतेक मोट इतिहास देखि सहजहि ककरहु आश्चर्य लागि सकैत छैक। परन्तु मैथिलीमे पत्रकारिता स्वयं भनहि नगण्य हो, किन्तु ओकर इतिहास नगण्य नहि छैक। मिथिला-मैथिल-मैथिलीक विषयमे जे किछु रचनात्मक वा जागरणात्मक काज गत अस्सी वर्षसँ भेल अछि तकर मुख्य श्रेय मैथिलीक एही दीन-क्षीण पत्रपत्रिका सभकें छैक ओ मिथिलाक समस्त समकालीन साहित्यिक एवं सामाजिक चहल-पहल ओ चेतनाक दर्पण इएह पत्रपत्रिका सभ अछि। दोसर बात जे पुस्तक-प्रकाशनक सुविधाक अभावमे मैथिलीक लेखक दीर्घ काल धरि एही पत्रपत्रिकामे अपन रचना प्रकाशित क' सन्तोष करैत अयलाह अछि। अतः मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे मैथिली साहित्यक एक विशाल कालावधिक इतिहास सेहो अन्तर्भुक्त अछि। फलतः प्रस्तुत पुस्तक जे अपने लोकनिक हाथमे अछि तकरा वास्तविक अर्थमे शुद्ध पत्रकारिताक इतिहास नहि कहि मुख्यतः मैथिली पत्रपत्रिकाक विवरण कही वा पत्रपत्रिकाक स्रोतसँ संकलित मिथिला-मैथिल मैथिली सम्बन्धी समकालीन गतिविधिक विवरण कही तँ प्रायः अधिक उपयुक्त होयत।

एकर लेखक पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', जे मैथिलीक मूर्धन्य कविक रूपमे प्रख्यात छथि, बाल्य कालहिसँ मैथिलीक नव-जागरणसँ निकटतः सम्बद्ध रहलाह अछि ओ मैथिलीक एक-एक पोथी तथा पत्रपत्रिकाकें अनुरागपूर्वक पढ़ैत ओ जोगबैत अयलाह अछि। प्रस्तुत पुस्तक हिनक एही जीवनव्यापी साधनाक सिद्धि थिक।

Scanned by CamScanner

एहिमे उद्धरणक आधिक्य किछु पाठकके खटकि सकैत छनि, मुदा स्थितिके स्पष्ट करबामे उद्धरण सभ निश्चय उपयोगी सिद्ध भेल अछि। दोसर, जाहि पत्रपत्रिकासँ ई सभ उद्धरण लेल गेल अछि से सभ आब अति दुर्लभ भ' गेल अछि। अतः उद्धरण रूपहु ओकर कतोक मार्मिक ओ महत्व पूर्ण अंश आइ लोकके उपलब्ध होइक एहू दृष्टिसँ प्रस्तुत पुस्तकक उद्धरण उपादेय अछि।

आशा अछि जे प्रस्तुत पुस्तक पत्रकारिताक इतिहासमे रुचि रखनिहार विद्वान लोकनिक हेतु तँ उपादेय होयबे करत, संगहि मिथिला-मैथिल मैथिलीक समकालीन इतिहासमे रुचि रखनिहार विद्वानो एहिसँ लाभान्वित होयताह।

श्रीकान्त ठाकुर

पटना
१८ मार्च १९८१

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी

आमुख

भाषा ओ साहित्यक विकास निर्भर रहैत छैक प्रचार ओ प्रसार पर। प्रचार ओ प्रसारक अनेक माध्यममेसँ एक महत्वपूर्ण माध्यम थिक पत्र-पत्रिका। आधुनिक विकासक युगकेँ पत्र-पत्रिकाक युग सेहो कहल जाइत छैक। मैथिली भाषा-साहित्यक विकासमे सेहो पत्र-पत्रिकाक महत्वपूर्ण योगदान रहलैक अछि। अतः पत्र-पत्रिकाक अध्ययन ओ अनुशीलनसँ भाषा ओ साहित्यक अध्येताकेँ विकासक्रम बुझबामे पूर्ण सहायता ओ सुविधा प्राप्त होइत छनि।

जहिना कोनो पाथरक खण्ड पहाड़सँ टूटि क' नदीक प्रवाहमे बहैत-गुड़कैत जाइत-जाइत चिक्कन होइत शालग्राम वा नर्मदेश्वरक आकार ग्रहण क' कहियो पूजाक सराइमे स्थान प्राप्त क' लैत अछि तहिना भाषा ओ शब्दक स्वरूप जनकण्ठक प्रवाहमे बहैत-बहैत एक एहन स्वरूप ग्रहण क' लैत अछि जे साहित्यक सराइमे पहुँचि पूज्य ओ प्रयोक्तव्य भ' जाइत अछि। जनकण्ठक प्रवाहमे बनल एहन शब्द जतय पत्र-पत्रिकाकेँ अभिव्यक्ति-सामर्थ्य प्रदान क' सबल बनबैत अछि ततय पत्र-पत्रिका एहन-एहन शब्दकेँ प्रयोगमे आनि भाषाक स्वरूपकेँ स्थिरता प्रदान करैत अछि जाहिसँ एक क्षेत्रीय भाषा अन्य क्षेत्रीय भाषासँ पृथक् अपन स्वतन्त्र अस्तित्व बनाय रखबामे सक्षम होइत अछि।

मैथिली पत्रकारिताक इतिहास कोनो प्राचीन नहि अछि। सम्प्रति एकर आठम दशक बीति रहल छैक, शतकपर एखन धरि नहि पहुँचि सकल अछि। तथापि पत्र-पत्रिकाक सहयोगसँ मैथिली-साहित्यक भण्डार एतेक समृद्ध भ' सकल अछि ओ भाषा जीवित रहि सकल अछि। एखनहु मैथिली भाषाक समक्ष अनेक समस्या छैक जकर समाधान तकबामे पत्र-पत्रिकाक अमूल्य साहाय्य प्राप्त भ' सकैत अछि।

अद्यावधि स्वतन्त्र रूपेँ एहि विषयक अनुशीलन नहि भेल छल। साहित्यक इतिहास लिखनिहार लोकनि अथवा मैथिली भाषाक चिन्तक लोकनि यदा-कदा जे किछु लिखबो कयलनि अछि, थोड़ बहुत एहि पर प्रकाश देबो कयलनि अछि से अपर्याप्त तँ अछिए, कतिपय भ्रान्तिक जन्म सेहो ओहिसँ

Scanned by CamScanner

भेलैक अछि। ओहि भ्रान्तिक निराकरण हमरा जनैत सर्वथा वाञ्छनीय अछि।

मैथिली भाषाक अध्ययन ओ अध्यापनक क्षेत्रक क्रमिक विस्तारे भेल जाय रहल अछि। विभिन्न विश्वविद्यालयमे केवल स्नातकोत्तर परीक्षे धरि एकर अध्यापनक व्यवस्था अछि से नहि, अनुसन्धान-कार्यक हेतु छात्रवृत्ति सेहो देबाक व्यवस्था अछि। शतशः छात्र आब एम. ए., पी. एच्. डी., डी. लिट् आदि उपाधि ग्रहण करबाक हेतु अध्ययनमे लागल रहैत छथि तथा शतशः शोध-प्रबन्ध लिखल जाय चुकल अछि ओ लिखल जाय रहल अछि जाहिमे किछुए प्रकाशमे आबि सकल अछि।

बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षामे मैथिलीकेँ एक स्वतन्त्र विषयक रूपमे स्वीकृति प्राप्त भेला उत्तर एकर क्षेत्र आरो विस्तृत भ' गेलैक अछि। शताधिक व्यक्ति आयोगक परीक्षामे प्रतिवर्ष सफलता पाबि विभिन्न उत्तर-दायित्वपूर्ण पदपर नियुक्त भ' कर्मक्षेत्रमे अवतीर्ण होइत छथि। अतः एखन धरि जतेक तथ्यात्मक भ्रान्ति उत्पन्न कयल गेल अछि तकर यथाशीघ्र निरा-करण आवश्यक भ' गेल छल।

उपर्युक्त आवश्यकता ओ उपादेयताकेँ दृष्टिमे राखि एहि दिस प्रवृत्त भेलहुँ। यावन्तो साधन उपलब्ध करबामे पूर्ण सफलता नहि प्राप्त भ' सकल, तखन जतबा जे उपलब्ध क' सकलहुँ ताही आधार पर विचार करबाक हेतु बाध्य होअय पड़ल, परन्तु एतबोसँ बहुत किछु भ्रान्तिक निरसन होयत ओ सत्य सभक समक्ष आबि सकत से विश्वास अछि।

यद्यपि ई कहब कोनो आवश्यक नहि, ई स्वतः सिद्ध अछि जे जे कोनो विचारक अपन ग्रन्थमे विचार व्यक्त करैत छथि से हुनक व्यक्तिगत मत होइते छनि तथापि हम ई स्पष्ट कहि देबय चाहैत छी जे एहिमे अभिव्यक्त विचार हमर व्यक्तिगत थिक। हँ, ई सत्य जे कोनो पूर्वाग्रहसँ ग्रस्त भ' हम किछु नहि लिखलहुँ अछि, 'नामूलं लिख्यते किञ्चित् नानपेक्षितमुच्यते'। अनुसन्धानक क्रममे जतय जे सत्य देखबामे आयल तकरा स्पष्टरूपेँ व्यक्त करबामे संकोच नहि कयलहुँ अछि। एहिसँ बहुतो सहमत होयताह तँ किछु गोटे असहमतो भ' सकैत छथि, परन्तु विचारक कोनो बिन्दु एहन नहि अछि जाहिसँ सब सहमते होथि।

१९६२ ई० मे अखिल भारतीय लेखक सम्मेलनक अवसर पर मैथिली आन्दोलनक सर्वेक्षणक क्रममे एक दीर्घ शोध-निबन्ध लिखबाक सुयोग भेल

Scanned by CamScanner

छल जे वैदेही विशेषांक रूपमे प्रकाशित भेल तथा मैथिली पढ़निहार छात्र लोकनिक हेतु उपयोगी सेहो भेलनि। आब ओ पुस्तक अप्राप्य भ' गेल अछि। छात्र लोकनि ओहि पुस्तकक जिज्ञासा करैत छथि। अतः उक्त पुस्तकक पुनर्मुद्रणार्थ मैथिली अकादमीक समक्ष प्रस्ताव कयने छलहुँ। परन्तु एहि बीच मैथिलीक विकास ताव्र गतिएँ भेल अछि। बहुतो अल्पजीवो पत्रपत्रिका जन्म ल' ल' अकाले कालकवलित होइत गेल, जाहि सभक सम्मिलित प्रभाव साहित्य पर पड़ल अछि। एहि तथ्यकें दृष्टिमे राखि अकादमीक अध्यक्ष श्रद्धेय श्रीयुत श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार सम्पूर्ण पत्र पत्रिकाक इतिहास प्रस्तुत करबाक आग्रह कयलनि। ओही आग्रहक फल स्वरूप ई मैथिली पाठकक समक्ष उपस्थित करबाक हेतु प्रवृत्त भेलहुँ। दू वर्षक अनवरत श्रमक पश्चात् ई प्रस्तुत भ' सकल अछि। एहि ठाम सूचनार्थ एतबा उल्लेख क' देब अनुपयुक्त नहि बुझना जाइत अछि जे मैथिलीक प्रथम पत्रिका 'मैथिल हित साधन' अन्वेषण कयलो उत्तर छिट-फुट ११२ पृष्ठ मात्र उपलब्ध भ' सकल जकर सम्पूर्ण श्रेय आयुष्मान् डॉ० श्री रामदेव झा कें छनि। हित साधनक अतिरिक्त १९५० ई० धरि प्रकाशित मासिक पत्रिकाक जतेक अंक उपलब्ध भ सकल ताहि सबमे प्रकाशित समस्त रचनाक सूची हम प्रस्तुत रखने छी जे प्रायः दू सय पृष्ठ धरिक अछि। भविष्यमे साहित्य अध्येताकें यदि ओ उपादेय प्रतीत होयतनि तँ प्रकाशमे अनबाक चेष्टा करब।

जाहि उदारचेताक आग्रहें ई ग्रन्थ लिखल गेल हुनके सदाशयताक फल-स्वरूप ई प्रकाशोमे आबि सकल। अतः कोन शब्दमे हमरा सन अल्पज्ञ हुनका प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करय से हमरा नहि भेटैत अछि। हुनक आशीर्वादिक आकांक्षी छी।

साधन जुटयबामे बाबू श्रीयुत कृष्णनन्दन सिंहजी (राघोपुर ड्योढ़ी), डॉ० श्री शैलेन्द्रमोहन झा, प्राचार्य, मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, डॉ० श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण', डॉ० श्रीकृष्ण मिश्र, प्रो० श्री कृष्णकान्त मिश्र, बाबू श्री लोकपति सिंह, नि० श्री कपिल देव राय 'प्रभाकर' ओ श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर'क हार्दिक सहयोग प्राप्त भेल। सर्वोपरि आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मार्ग-दर्शन तथा आयुष्मान् डॉ० श्री रामदेव झाक सक्रिय सहयोगक अभावमे एकर प्रस्तुतीकरण

Scanned by CamScanner

असम्भव सन छल। अतः सभक प्रति यथायोग्य आभार, कृज्ञतता ओ हार्दिक शुभकामनाक संग ई मैथिली पाठकक समक्ष उपस्थित क' रहल छी।

वर्त्तनीक प्रसंग एतबा स्पष्ट क' देब नितान्त आवश्यक प्रतीत भेल जे ह्रस्व अकारक दीर्घ उच्चारणक हेतु अर्द्ध अकार (ऽ)क प्रयोग कविवर जीवन झाक रचनासँ प्राप्त भ' रहल अछि। अतः व्यक्तिगत रूपेँ हम तकरे पक्षपाती छी। ई प्रयोग कोनो आधुनिक नहि।

अन्तमे पूर्णता एहूमे नहिए अछि। अनुपलब्ध साधन उपलब्ध भेला पर एकर क्षितिजक आरो विस्तार सम्भव होयत जँ भविष्यमे स्वयं क' सकलहुँ तँ बेस, अन्यथा "उत्पत्स्यते च मम कोऽपि समानधर्मा" एही आशा पर सम्प्रति विराम लैत छी।

विनयावनत

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

विषय-सूची

विषय — पृष्ठ

समाज-जीवन पर पत्र-पत्रिकाक प्रभाव — ३
स्वस्थ पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन ओ सम्पादकक उत्तरदायित्व — ८
पत्रकारिताक आरम्भ — १२
भारतीय भाषा ओ पत्रकारिता — १६
मैथिलीक पत्र-पत्रिका : विवरण ओ विवेचन — १८

दैनिक पत्र — २०

स्वदेश-२० ।

मासिक पत्र-पत्रिका — २६

मैथिल हित साधन-२६, मिथिला मोद-४७, मैथिल प्रभा ओ मैथिल प्रभाकर-९०, श्रीमैथिली-९३, मिथिला-१०४, मैथिल बन्धु-१३४, मैथिल युवक आ जीवनप्रभा-१३९, भारती-१३९, विभूति-१५५, साहित्य-पत्र-१६७, स्वदेश-१६९, मिथिला-ज्योति-१७९, पल्लव १८६, वैदेही-१९३, मिथिला दर्शन ओ मैथिली दर्शन-२१३, चौपाड़ि-२१७, मिथिला दूत-२२२, नूतन विश्व-२२५, बटुक, धीया-पूता ओ शिशु-२२८, इजोत-२४०, आखर-२४६, सोना माटि-२५७, बागमती-२६३, मिथिला-२६५, मिथिला-आलोक-२६६, पाग-२६७, शक्तिभूमि-२६७, अम्बर-ज्योति-२६७ ।

साप्ताहिक पत्र-पत्रिका — २६८

मिथिला-मिहिर-२६८, मिथिला-३०८, मिथिला सेवक-३११, निर्माण-३१५, जनक-३१७, स्वदेशवाणी-३२०, मिथिला टाइम्स-३२१, टटका-३२२, ६०k-३२३, चरचा-३२३, समाद ओ विकल्प-३२४ ।

Scanned by CamScanner

पाक्षिक पत्र-पत्रिका ३२६

मिथिला-मित्र-३२६, मैथिली समाचार-३२७, मैथिली पारिजात-३३०, सम्पर्क सूत्र-३३१, मातृवाणी-३३४ ।

द्वैमासिक पत्र-पत्रिका ३३६

अभिव्यंजना-३३६, मिथिला भारती-३३९ ।

त्रैमासिक पत्र-पत्रिका ३४१

मैथिली कविता ३४१, मिथिला-३४५, आहुति-३४६, मिथिला-मञ्च-३४६, मैथिली साहित्य परिषद् पत्रिका-३४७, अभियान-३४९, मिथिला भारती-३५३, मिथिला भूमि-३५७ ।

अर्द्धवार्षिक पत्र-पत्रिका ३६१

मैथिली प्रकाश-३६१, लोकमञ्च-३६२ ।

अनियतकालीन पत्र-पत्रिका ३६३

समन्वय-३६३, अक्षत-३६४, अनामा-३६४, अग्निपत्र-३६९, चाङुर-३६९, शिखा-३६९, लाल धूआँ-३७०, सन्निपात-३७०, भुम्हूर ओ भूर-३७०, मि०-३७०, मैथिली बुलेटिन-३७१, मैथिली समीक्षा-३७२, मिथिला समुदाय-३७२, रंगमंच-३७३, फराक-३७४ ।

नेपालसँ प्रकाशित किछु पत्र-पत्रिका ३८२

फूलपात-३८२, मैथिली-३८३, अर्चना-३८५ ।

उपसंहार ३८९

परिशिष्ट ३९४

मैथिली पत्रकारिताक
इतिहास

Scanned by CamScanner

समाज-जीवनपर पत्र-पत्रिकाक प्रभाव

मैथिली पत्रकारिताक प्रसङ्ग किछु लिखबासँ पहिने समाजक जीवनपर पत्रक प्रभाव कोन रूपमे पड़ैत छैक ताहि प्रसङ्ग किछु विचार क' लेल जाय से युक्तिसंगत प्रतीत होइत अछि। अतः प्रथम अध्यायमे एही प्रसङ्ग विचार कयल जा रहल अछि।

हमरालोकनि अर्थात् मानव जाति एक एहन चेतना-सम्पन्न प्राणी थिकहुँ जे सृष्टिक वैचित्र्यपर सेहो हस्तक्षेप करबाक सामर्थ्य अपनामे विकसित क' चुकल छी। एहि सृष्टिक विविधता ककरोसँ अपरिचित नहि। प्रकृति किछु थलचर, किछु जलचर, किछु खेचर ओ किछु उभयचर प्राणीक रचना कयने अछि जकर गणना आङुरपर करब परम कठिन काज, परन्तु मनुष्य सिल्ली चिड़ै जकाँ जल, स्थल, आकाश तीनू ठाम गमन करबाक योग्य अपनाकेँ बना चुकल अछि। "आहार-निद्रा-भय-मैथुनञ्च सामान्य-मेतत्पशुभिर्नराणाम्"—ई पूर्वज कहि गेल छथि, परन्तु एहि सृष्टिक सर्व-श्रेष्ठ प्राणी मनुष्य मानल जाइत अछि तकरा मूलमे मानव जातिक चेतना आ ताहिसँ उद्भूत तार्किक बुद्धिएकेँ प्रमुख स्थान देल गेल अछि। मनुष्यक तार्किक बुद्धि एकरा ततेक जिज्ञासु ओ संवेदनशील बना देने छैक जे ई अपन चारू दिस घटित होइत स्वाभाविक घटनाकेँ आदिए कालसँ अत्यन्त उत्सुकतासँ देखैत आयल अछि, देखिते नहि आयल अछि, ओहिपर तर्क-वितर्क करैत एक प्रकारक अनुभूतिकेँ संचित क' रखैत आयल अछि आ भविष्यमे अपनिहार सन्ततिक हेतु एक दोसरकेँ सम्प्रेषित करैत आबि रहल अछि। जाहि कोनो वस्तुक सत्ताक भान जखने होइत छैक तखने ओकर गुण-दोष बुझबाक, ओकर ज्ञान प्राप्त करबाक आकांक्षा सेहो उत्पन्न भ' जाइत छैक। इएह जिज्ञासा, इएह आकांक्षा ओहि संचित अनुभूतिक आधार-

Scanned by CamScanner

पर मनुष्यकेँ किछु करबाक हेतु उत्प्रेरित करैत छैक। मनुष्यक ई नैसर्गिक विशेषता थिकैक जे एकरा अन्य जीवसँ भिन्न सृष्टिक सर्वश्रेष्ठ प्राणी होयबाक अर्हता प्रदान करैत छैक। प्रायः एही प्रवृत्तिक कारणेँ मनुष्य जाति विकासक एहि परम बिन्दु धरि पहुँचबामे समर्थ भेल अछि। ज्ञान प्राप्तिक अनन्त पिपासाकेँ शान्त करबाक हेतु मनुष्य सागरक तलसँ ल' भूमंडल, खमंडल ओ भूगर्भक मध्यधरि प्रवेश करबामे ने डेरायल, ने घबरायल आ ने अगुतायल वा अकछायल अछि। अपन बौद्धिक क्षमताक प्रसादेँ प्राकृतिक सम्पूर्ण रहस्यक उद्घाटन करबाक हेतु कटिबद्ध सन प्रतीत होइत अछि। ई सब ओही जिज्ञासा ओ आकांक्षाक प्रतिफल थिक।

वस्तुकेँ बुझबाक, जनबाक उत्सुकता अनेक रूपमे प्रकट होइत अछि। ओहिमेसँ एक रूपकेँ पत्र-पत्रिकाक जन्मक कारण मानल जा सकैत अछि। समाचार बुझबाक प्रवृत्ति मनुष्यकेँ ताही दिनसँ रहलैक अछि जहिया पर्वतक गुफामे रहैत जंगली जीवन व्यतीत करैत छल। एखनहुँ जंगली जाति, जकरा लग आइधरि आधुनिक विकासक प्रकाश नहि पहुँचि सकलैक अछि, झुण्ड बान्हि क' निवास करैत अछि आ समाजमे जखन कोनो तेहन घटना भ' जाइत छैक तँ सबकेँ ओहि घटनासँ परिचय करयबाक हेतु समूहक प्रमुख व्यक्ति ढोलहो देया क' सम्पूर्ण समाजकेँ अवगत करा दैत छैक। ढोलहो सुनि क' आबालवृद्ध नर-नारी एकत्र भ' जाइत अछि आ परिस्थितिसँ अवगत भ' जाइत अछि।

पत्रकारिताक विकासक विशेषज्ञलोकनिक कथन छनि जे मनुष्यक बौद्धिक विकास जाही क्रमसँ होइत गेलैक, समाचार बुझबाक तथा बुझयबाक प्रक्रिया सेहो विकसित होइत गेलैक ताही क्रममे। जाहि समयमे यातायात दुर्गम छलैक, साधन दुर्लभ छलैक ताहू समयमे साहसी व्यापारी लोकनि झुण्ड बान्हि क' एक प्रान्तसँ दोसर प्रान्तमे व्यापार करबाक हेतु जाइत छलाह। ओहि व्यापारी लोकनिक माध्यमसँ एक स्थानक समाचार दोसर स्थान धरि पहुँचि जाइत छलैक। ओ व्यापारीलोकनि जहिना अपना प्रान्तक समाचार दोसर प्रान्त ल' जाइत छलाह तहिना ओहि प्रान्तक घटित विशेष घटनाक विवरण संकलित क' अपना-अपना प्रान्त धरि लैयो अनैत छलाह। एखनहु समाजमे प्रथा अछि जे बहुत दिनपर भेट भेला उत्तर अथवा आन ठामसँ अयला उत्तर नमस्कार-पातक बाद सबसँ पहिल प्रश्न हमरालोकनि इएह करैत छिऐक—कहू कुशल-समाचार।

प्राचीन समयमे भिन्न-भिन्न सुसंगठित राज्य छल । राजा अपन कोनो विशेष सूचना देबाक हेतु एवं प्रजाक परिस्थिति ज्ञात करबाक हेतु गुप्तचर सभक नियुक्ति कयने रहैत छलाह । एकर अतिरिक्त दरबारी भाट सभक उपयोग सेहो करैत छलाह । अत्यन्त प्राचीन समयमे शिलालेख, स्तम्भलेख आदि द्वारा प्रजाकेँ कर्त्तव्यज्ञान एवं राजाक आज्ञासँ अवगत करयबाक परिपाटी परिलक्षित होइत अछि । मिश्र, फारस, भारत आदि देशमे राजा लोकनि द्वारा लिखबाओल एहि प्रकारक अभिलेख सब एहि अनुमानक आधार मानल गेल अछि । रोममे जूलियस सीजरक समयमे समाचारक संकलन ओ प्रकाशनक विशेष उपाय उपयोगमे आनल जाइत छल । सरकारी आज्ञा, कोनो अभियोगक निराकरणमे कयल गेल न्यायालयक निर्णय, जन्म ओ मरणक लेखा-जोखा, ऋतु सम्बन्धी सूचना, अगिलग्गी, महामारी, वन्य जन्तुक उपद्रव आदि प्रकारक विशेष सूचना आदि, जे लोकके विशेष रूपें बुझबाक ओ जनबाक रुचि तथा उत्सुकता रहैत छलैक, लिखबा क' स्थान-स्थानपर साटि देल जाइत छलैक । ओही माध्यमसँ जनसाधारण सब घटनासँ अवगत भ' जाइत छल ।

राजतन्त्रसँ लोकतन्त्र दिस सामाजिक व्यवस्था जतेक अग्रसर होइत गेल अछि, वैज्ञानिक आविष्कारक प्रसादेँ एक देश दोसर देशसँ निकट होइत गेल अछि, समाचार-पत्रक प्रयोजनीयता ओ लोकप्रियता ततेक बढ़ल जा रहल अछि । छपाइक यन्त्रक आविष्कार भेला उत्तर पत्रकारिताक विकासमे अवर्णनीय प्रगति भेल । छपाइ-यन्त्रहुक विकास क्रमिक होइत गेल अछि, ओही संग पत्रकारिताक विकास सेहो द्रुत गतिएँ भेल जा रहल अछि । आब तँ सामाजिक ओ राष्ट्रिय जीवनमे पत्रक स्थान सर्वोपरि कहल जा सकैत अछि । एही तथ्यकेँ ध्यानमे राखि कोनो कविक कहल छनि—

"खींचो न कमानों को, न तलबार निकालो
जब तोप मोकाबिल हो तो अखबार निकालो"

इएह कारण थिक जे आब केहन-केहन महान ओ शक्तिशाली राष्ट्रक राष्ट्राध्यक्ष पर्यन्त पत्रकारक कृपाक आकांक्षी रहैत छथि । आइ-कालिह समाज मुख्य रूपसँ प्रकाश प्राप्त करबामे ओ नीति निर्धारित करबामे पत्रे सभक माध्यमसँ सहायता प्राप्त करैत अछि । वस्तुतः पत्रकारिता समाजक पथ-प्रदर्शक बनि गेल अछि । जन-सामान्यक समस्याकेँ सम्पूर्ण संसारक समक्ष सम्यक् रूपसँ उपस्थित करबाक ई अपूर्व साधन मानल जाइत अछि, अपितु इएह मुख्य साधन बनि गेल अछि ।

Scanned by CamScanner

एक तँ सामाजिक जीवनरूपी विशाल वृक्षपर राजनीति आइ अमरलत्ती जकाँ लतरि गेल अछि, जाहि कारणेँ जनसाधारणक जीवनमे पत्रक महत्त्व दिनानुदिन बढ़ले जा रहल छैक, दोसर राजनीतिक क्षेत्रमे विशेष रूपेँ काज कयनिहार व्यक्तिक स्थिति तँ एहन सन भ' रहल छनि जे एक-दू दिनधरि भोजन नहियो भेटला उत्तर रहि सकैत छथि, परन्तु पत्रक पन्ना बिनु उनटओने रहब कठिन बुझना जाइत छनि। बीड़ी पिनिहार, तमाकू खयनिहार, मदिराक सेवन कयनिहारलोकनिकेँ तुकपर अमलकेर वस्तु नहि भेटलापर जेना अतिशय कष्टकारक भ' जाइत छनि तहिना समाचारपत्र पढ़निहारकेँ समयपर पत्र नहि भेटलासँ कछमछी आबि जाइत छनि। जेना तमाकू खयनिहार साधारणतः ककरो तमाकू चुनबैत देखि सतृष्ण आँखिसँ ओम्हर ताकय लगैत छथि, तहिना अनका हाथमे समाचार पत्र देखि दृष्टि सतृष्ण भ' उठैत छनि। जागरूक ओ शिक्षित समुदायक हेतु समाचारपत्र पढ़ब प्राचीन कालक सद्ब्राह्मणक हेतु सन्ध्यावन्दन करब जकाँ अनिवार्य सन भ' गेलनि अछि। कोन परिवारमे कतेक पत्र-पत्रिका कीनल जाइत अछि, एहि आधारपर ओहि परिवारक बौद्धिक विकासक अनुमान कयल जाइत अछि। कोन भाषामे कतेक पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन होइत अछि, एहि आधारपर ओहि भाषा-भाषी जनसमुदायक जागरूकता जानल जाइत अछि। आब करोड़मे नहि, संसार भरिक जनसंख्याकेँ दृष्टिमे राखि विचार कयल जाय तँ अरबक संख्यामे लोक भेटत जे समाचारपत्र अवश्य पढ़ैत अछि। जातीय जीवन ओ क्षेत्रीय भाषाक विकासक माप-दण्ड समाचारपत्र बनि गेल अछि। ई भिन्न बात जे सब लोक समाचारे पढ़बाक हेतु अथवा राजनीतिक गतिविधिए बुझबाक हेतु नहि पढ़ैत हो, तथापि केयो नौकरीक हेतु, केयो ठीका लेबाक हेतु विज्ञापने सब देखैत हो, केयो बाजारे भाव बुझबाक हेतु अथवा किछुलोक फैशनक हेतु वा काले कटबाक हेतु, किन्तु पत्र-पत्रिकाकेँ एक बेरि उनटायब-पनटायब आवश्यकताक कोटिमे आबि गेल अछि से निर्विवाद।

मनुष्यक जीवनसँ सम्बन्ध रखनिहार छोट वा पैघ कोनो समस्या हो, तकर सूचना देब, समाधानक दिशा-निर्देश करब, ताहि विषयमे अपन स्वतन्त्र अभिमत व्यक्त करब पत्र-पत्रिकाक उत्तरदायित्वसन भ' गेल अछि। आहार-विहारक प्रसङ्ग, स्वास्थ्य-सौन्दर्यक प्रसङ्ग, ज्ञान-विज्ञानक प्रसङ्ग, कला-साहित्यक प्रसङ्ग, क्रय-विक्रय ओ वाणिज्य-व्यापारक प्रसङ्ग, विनोद-विलासक प्रसङ्ग, दर्शनशास्त्र ओ अध्यात्मक प्रसङ्ग, शासन ओ व्यवस्थाक प्रसङ्ग, सिनेमा ओ नाटकक प्रसङ्ग, खेल-धूपक प्रसङ्ग, लोकनीति ओ

Scanned by CamScanner

राजनीतिक प्रसङ्ग, देश ओ विदेशक प्रसङ्ग, रेस ओ सट्टाक प्रसङ्ग, एतेक दूर धरि जे दैनिक पञ्चाङ्ग ओ साप्ताहिक राशिफलक प्रसङ्ग पर्यन्तक सूचना ज्ञात करवाक अपेक्षा साधारणतः आजुक लोक पत्र-पत्रिकेक माध्यमसँ रखैत अछि।

ककरो नेतृत्वके उभारि क' आकाश ठेका देब, ककरो नेतृत्वकेँ बिगाड़ि क' रसातल पहुँचा देब पत्रकारिताक बामा हाथक खेल बनि गेल अछि। जे ज्ञान-विज्ञान किछु विद्याव्यवसायी, उच्चशिक्षाप्राप्त बुद्धिजीवीवर्गक मुट्ठीमे बन्द छल से पत्रकारिताक माध्यमसँ जनसाधारणक खोपड़ीधरि चल आयल अछि। गहनसँ गहन विषयक ज्ञान, वैज्ञानिकलोकनि द्वारा कयल गेल नवीन आविष्कार, अनुसन्धातालोकनि द्वारा कयल गेल गूढ़-सँ-गूढ़ विषयक अनुसन्धान, सन्त-महात्मालोकनि द्वारा कयल गेल उदात्त-सँ-उदात्त सद्विचारक चिन्तन, दार्शनिकलोकनि द्वारा संचित तत्वज्ञान, साहित्यकार लोकनि द्वारा अभिव्यक्त गद्यपद्यात्मक हृदयस्पर्शी मधुर कल्पना इत्यादि सब विषयकेँ जन-साधारणधरि पहुँचयबाक महान् कार्य आइ-काल्हि पत्र-पत्रिकेक माध्यमसँ भ' रहल अछि। कहल जा सकैत अछि जे मनुष्यक बौद्धिक औत्सुक्यकेँ उत्प्रेरित क' प्रकृतिक रहस्यकेँ उद्घाटित करबाक प्रेरणा प्रदान कयनिहार तत्वमे पत्र-पत्रिकाक भूमिका सबसँ प्रमुख बनि गेल अछि। तेँ आइ समाजक जीवनपर सबसँ अधिक प्रभाव यदि ककरो पड़ि रहल छैक तँ ताहि सबमे पत्र-पत्रिकाक नाम शीर्षपंक्तिमे अंकित कयल जा सकैत अछि। किं बहुना, भारतवर्षक इतिहासमे आसन्नभूतकालमे जे एतेक पैघ परिवर्त्तन भेल अछि, जकर प्रत्यक्षदर्शी हमरालोकनि सबहि गोटे छी, ताहिमे पत्र-पत्रिकाक कतेक पैघ योगदान रहलैक अछि से कहबाक अथवा लिखबाक विशेष प्रयोजने नहि अछि। सत्य ओ अहिंसाकेँ अस्त्र बनाय भारत सदृश विशाल देशक अधिकांश जड़ ओ मूर्ख जनताक हृदयमे अंग्रेजी साम्राज्यसन विराट् साम्राज्यक विरुद्ध चेतना जगायब एही पत्र-पत्रिका द्वारा सम्भव भ' सकल, एहि नग्न सत्यकेँ के अस्वीकार क' सकैत अछि।

स्वतन्त्रता-प्राप्तिक बाद देशपर चीन ओ पाकिस्तानक दिससँ अनेक बेरि आक्रमण भेलैक। ओहि युद्धक बिभीषिकासँ समाजकेँ अवगत करायब, देशक रक्षार्थ सैनिकक मनोबलकेँ ऊपर उठायब, देशवासीमे देशक हेतु सर्वस्व अर्पण करबाक चेतना जगायब, देशकेँ युद्धक स्थितिक सूचना दैत रहब, एहि सब प्रकारक उत्तरदायित्वक निर्वाह पत्र-पत्रिके करैत रहल, जाहि प्रसादेँ

देश युद्धक सामना क' सकल। सम्पूर्ण राष्ट्रक चरित्र एहीमे प्रतिबिम्बित होइत अछि। उपर्युक्त तथ्यक आधारपर ई निर्विवाद रूपें कहल जा सकैत अछि जे आजुक युगमे समाज-जीवन पर पत्रकारिताक प्रभाव सर्वोपरि होइत छैक।

स्वस्थ पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन ओ सम्पादकक उत्तरदायित्व

आजुक युगमे पत्रकारिता एक स्वतन्त्र विषय बनि गेल अछि। अनेक विश्वविद्यालयमे एक स्वतन्त्र शास्त्रक रूपमे एकर अध्यापनक व्यवस्था कयल गेल अछि। एहि विषयक प्रशिक्षण सेहो देल जाइत अछि। आइ प्रत्येक राजनीतिक विचारधाराक अपन-अपन स्वतन्त्र पत्र-पत्रिका छैक जाहि माध्यमसँ अपन-अपन सिद्धान्त जनजीवनमे प्रचारित करैत अछि। एकर व्यापकता ततेक बढ़ल जा रहल छैक जे जहिना भिन्न-भिन्न राजनीतिक विचारधाराक अपन-अपन स्वतन्त्र पत्र छैक तहिना भिन्न-भिन्न विषय, भिन्न-भिन्न वर्गक हेतु स्वतन्त्र पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन भ' रहल अछि। उदाहरणार्थ विज्ञान विषयक, स्वास्थ्य विषयक, सिनेमा विषयक, राजनीति विषयक, भाषा विज्ञान, व्यापार-वाणिज्य आदि सब विषयक स्वतन्त्र पत्र-पत्रिका उपलब्ध अछि। साहित्य विषयक पत्र-पत्रिकामे भिन्न-भिन्न विधा, यथा कथा, कविता, नाटक सभकहेतु स्वतन्त्र प्रकाशन भ' रहल अछि। बालवर्गक हेतु, स्त्रीवर्गक हेतु, कृषक वर्गक हेतु सेहो स्वतन्त्र पत्र-पत्रिका भ' गेल अछि।

पत्रकारिता सहयोगक आधारपर अवलम्बित रहैत अछि। चाउर-दालिक दोकान ई नहि थिक। एकटा प्रेस खोलि लेलहुँ, किछु बासि-तेबासि समाचार संकलित क' लेल, किछु कविता, हास्य-व्यंग्यक सामग्री जुटा लेल आ ओकरा सबकेँ छापि पत्रकारिताक दोकान चला रहल छी। एकर तन्त्र बहुत पैघ होइत छैक। पत्रकेँ सम्पादक चाही, प्रूफ रीडर चाही, संवाददाता चाही, प्रेस ओ कम्पोजीटर चाही, मशीन चलओनिहार चाही, आर्थिक आधारकेँ सुदृढ रखबाक हेतु धैर्यवान् प्रकाशक चाही आ ताहिपरसँ चुस्त-दुरुस्त वितरण-व्यवस्था चाही, निरलस वितरक चाही। एहि सभक सहयोग तँ समान रूपसँ चाहबे करी, एतेक होइतो सबसँ पैघ सहयोगी समाज होइत अछि—पाठक। पाठकेक हेतु उपर्युक्त सब साधन जुटाओल जाइत अछि, पत्रक वितरण समाजेक बीच होइत अछि। समाज थिक व्यक्तिक

Scanned by CamScanner

समूह । व्यक्ति-व्यक्तिमे रुचि-भिन्नता नैसर्गिक वस्तु थिक । सम्पादकक ई उत्तरदायित्व भ' जाइत छनि जे ओ समाजक रुचिकें चिन्हथि, यदि रुचिमे विकृति आबि गेल छैक तँ तकर परिष्कारक हेतु तदनुकूल विषयक संचय क' अपना पत्रकें सुसज्जित करथि । रुचिक अनुकूल वस्तु समक्ष अयला उत्तर समाज स्वयं ओकरा ग्रहण करैत छैक, परन्तु सम्पादककें ताहि प्रकारक चिन्तक, प्रत्युत्पन्नमति ओ आदर्श चरित्रक होयबाक चाही जे समाजमे यदि कुरुचि अथवा विकृत रुचि उत्पन्न भेल देखथि तँ अपन सुसंस्कृत विचारधारा तथा प्रभावपूर्ण भाषाक माध्यमसँ समाजक रुचि-परिष्कार करबाक योग्य भ' सकथि । संपादक रुचि परिष्कृत करबाक दिशामे अग्रसर होयबाक हेतु समाजक नाड़ीकें चीन्हि नाड़ी-विज्ञान-विशेषज्ञ वैद्य जकाँ बिनु रोगीकें किछु पुछने समुचित औषधक प्रयोग क' रोगकें निर्मूल करबाक प्रयत्न करैत छथि । सफल ओ सुयोग्य सम्पादक तदनुरूप नीति निर्धारित क' समाजकें अपना प्रभाव क्षेत्रमे घीचि अनबाक कलामे पारंगत होइत छथि ।

पत्रक स्वस्थताक हेतु समयनिष्ठता एक एहन आवश्यक तत्त्व थिक जकरा बिनु कोनो पत्र-पत्रिका ने अपन लोक-प्रियता स्थिर राखि सकैत अछि, ने अपन प्रभावक्षेत्रक विस्तारे क' पबैत अछि । निश्चित समयपर अंक नहि प्राप्त भेलापर पाठकमे क्षोभ उत्पन्न होइत छैक । अपन निर्धारित समयपर पत्र-पत्रिकाक अंक प्रकाशित भ' पाठकक हाथमे पहुँचि जाइक ताहि हेतु ओकर आर्थिक पक्षकें सुदृढ़ रहब अपेक्षिते नहि, परम आवश्यक होइत छैक । आर्थिक पक्षक हेतु उत्तरदायी प्रकाशक होइत छथि । प्रकाशकक क्रियाशीलतामे कोनो प्रकारक शिथिलता नहि आबय सेहो अत्यावश्यके । सम्पादक समयपर प्रकाशन योग्य सकल सामग्री जुटा लेथि आ कागतक कमीक कारणें प्रकाशनमे विलम्ब भ' जाय तँ सम्पादकक कयल सब श्रम ओ तत्परता निरर्थक भ' जाइत अछि । अतः प्रकाशकक तत्परता परम अपेक्षित । एतबेसँ काज चलनिहार नहि, पत्र-पत्रिकाक विकास ओ स्थायित्वमे एक आवश्यक तत्त्व वितरण-व्यवस्था सेहो होइत अछि । सम्पादक प्रकाश्य विषयक रचना समयपर उपस्थित क' देथि, प्रकाशक ओ प्रबन्धक दत्त-चित्त रहथि, प्रेस छापि क' अङ्क समयपर उपस्थित क' देअय, तथापि जँ समयपर वितरण नहि भ' सकय तँ कयल गेल समस्त चेष्टा विफल भ' जाइत छैक । तकर कारण जे पत्र-पत्रिकाकें बसिआइत देरी नहि होइत छैक । जेना पापड़

Scanned by CamScanner

वा तरल तिलकोड़ाक पातकें मसुआइत देरी कोनो स्वाद नहि, ओकरा कुरकुर रहब आवश्यक, तहिना पत्र-पत्रिकाकें टटका रहले उत्तर पाठकक रुचिपर चढ़बाक संभावना. बसिअयला उत्तर केहनो उपादेय, उत्तेजक अथवा मनोरंजक सामग्री छपल रहुओ, पाठकक चित्तपर चढ़बे ने करत। जेना पाँच सय टाकाक साइकिलमे पाँच पाइक 'भॉलट्यूब' नहि रहने सम्पूर्ण साइकिल व्यर्थ, तहिना कतबो रुचिकर सामग्री छपल रहय, केहनो महान् चिन्तक सम्पादक रहथु, कतबो आकर्षक आवरण रहौक, वितरक जँ समयपर पाठकक हाथधरि ओकरा नहि पहुँचा देलक तँ सब गुड़ गोबर भ' जाइत अछि। कहबाक तात्पर्य जे मशीनक कोल-काँटा जकाँ सम्पादक, प्रकाशक, प्रबन्धक ओ वितरक सभक तत्परता ओ दक्षता पत्र-पत्रिकाक विकासक हेतु नितान्त प्रयोजनीय होइत अछि। एहिमे कतहु विघटन भेला उत्तर पत्र-पत्रिकाक चलब असम्भवप्राय रहैत अछि। एतेक विविधता रहितो सभक समन्वय रखबाक हेतु तत्परता नितान्त अपेक्षित होइत अछि।

परन्तु एहि पृष्ठभूमिमे मैथिली पत्रकारिताक इतिहास तथा पत्र-पत्रिकाक स्थितिक अवलोकन कयला उत्तर स्पष्ट देखना जाइत अछि जे मैथिली पत्रकारिता एखनधरि प्रयोगात्मक प्रक्रियाक जालसँ बाहर नहि भ' सकल अछि। पत्रकारिताक चरम विकास दैनिक पत्रक रूपमे होइत छैक, तकर आइ धरि अभावे जकाँ रहल अछि। वस्तुतः मैथिली पत्रकारिताक आइ धरिक उपलब्धि एतबे कहल जा सकैत अछि जे पत्रकारिताक विकासक सम्भावनाकें ई आइ धरि जिअओने रहल अछि। मैथिलीमे तँ एखन धरि ई स्थिति अछि जे वेतनभोगी सम्पादक प्राप्त करबाक सौभाग्य एकमात्र 'मिथिला-मिहिर'कें भ' सकलैक अछि। एकर अतिरिक्त छोट-पैघ, अल्पजीवी अथवा दीर्घजीवी जे पत्र-पत्रिका एखनधरि प्रकाशित होइत रहल अछि तकर सम्पादकलोकनि आजीविकाक हेतु कोनो अन्य वृत्ति करैत मातृभाषाक प्रेमवश आत्म-तुष्टिक हेतु पत्रक सम्पादन ओ प्रकाशन करैत आबि रहलाह अछि। प्रतिष्ठित पत्रकार अपन पेट काटि क' एहिमे पूजी अथवा समय लगबैत अयलाह अछि। एहनो पत्रकारलोकनि भेलाह अछि जे पूजी लगओलनि, सम्पादित कयलनि। छपबामे प्रेसकें सहयोग कयलथिन आ मित्रमण्डलीमे वितरणो कयलनि। मूल्यक स्वरूप प्रशंसा भेटलनि। पचीस-पचास उदार पाठक ग्राहको भ' गेलथिन। जतेक दिन सकलाह, क्रम चलबैत रहलाह,

Scanned by CamScanner

दम टूटि गेलनि तँ हाथ-पयर समेटि बैसि रहलाह। धन गेलनि, समय गेलनि, श्रम गेलनि, ताहिपरसँ पचीस-पचास जे ग्राहक बनलथिन तनिका दृष्टिमे बैमान बनलाह, परिवारक लोकक दृष्टिमे फुकना आ समाजक दृष्टिमे ठकना अपनाकेँ बनबैत रहलाह अछि। स्वस्थ पत्रक हेतु जे-जतेक उपकरण चाही तकर दशांशो मैथिली पत्र-पत्रिकाकेँ अद्यावधि अनुपलब्धे रहलैक अछि। एही कारणेँ मैथिली-पत्रकारितारूपी लत्तीमे बेसी कुम्हड़ेक बतिया देखबामे अबैत अछि जे आङुर देखओलासँ सड़ैत आबि रहल अछि। एहना स्थितिमे एकर इतिहास की लिखल जायत ?

मैथिली भाषा ओ साहित्यक विकासमे जे-जतबे योगदान प्राप्त होइत रहल अछि तकरा एकदमसँ नकारल नहि जा सकैत अछि। कहबी छैक, 'नहि मामासँ कनहो मामा नीके।' एही कहबीक अनुसरण करैत अद्यावधि मैथिलीमे जे पत्र-पत्रिका प्रकाशित भेल अछि अथवा होइत आबि रहल अछि ओकरा सभक स्थिति ओ स्वरूपसँ एतय सर्वसाधारणकेँ अवगत करयबाक प्रयत्न कयल गेल अछि। मैथिली पत्र-पत्रिकाक एकटा विशेषता अवश्य रहलैक अछि जे जहियासँ एहि भाषामे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल अछि, अर्थात् १९०५ई० सँ आइ धरि, एहन कोनो अवधि नहि रहल अछि जहिया कतहुसँ ने कतहुसँ, कोनहु ने कोनहु पत्र नहि प्रकाशित होइत रहल हो। ई जे निरन्तरता आबि रहल अछि से किछु एहन सामग्री अवश्य उपलब्ध करबैत अछि जाहि सबकेँ हँसोथि-कँसोथि क' इतिहासक एक ढाँचा अवश्य प्रस्तुत कयल जा सकैत अछि, परन्तु से पत्र-पत्रिकेक इतिहास बेसी होयत, पत्रकारिताक थोड़। सत्य तँ ई थिक जे वर्त्तमान शताब्द धरि मैथिली भाषाक पत्रकारिताक इतिहास लिखबाक कल्पना करब मुख-सुखार्थे होयत। तथापि मडुआक काँटूकेँ डेङओला उत्तर जेना काज चलयबाक योग्य किछु दाना गरीबकेँ अवश्य उपलब्ध भ' जाइत छैक, तहिना मैथिली भाषा सम्प्रति जाहि स्तर पर आबि सकल अछि तकर क्रमिक विकास पर प्रकाश अवश्य पड़ि सकत से आशा अछि। एखन धरिक स्थितिसँ कोनो जागरूक समाज सन्तुष्ट कथमपि नहि भ' सकैत अछि, तखन निराशो होयबाक प्रयोजन नहि अछि। समाजक उदासीनता देखि बहुतो गोटे निराश भेल प्रतीत होइत छथि, परन्तु हम उज्ज्वल भविष्यक प्रति पूर्ण आशावान् छी। एतबा तँ अवश्य जे संसारमे पत्रकारिताक विकासक कोन कथा जे भारतीयो

पत्रकारिताक इतिहास देखलासँ स्पष्ट होइत अछि जे हमरालोकनिक पत्रकारिता कमसँ कम सय वर्ष अवश्य पछुआयल अछि।

हम सब कतेक पाछाँ पड़ल छी एकर सम्यक् ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु विहंगम दृष्टिसँ भारतीय पत्रकारिताक इतिहास पर विचार करब समीचीन होयत।

पत्रकारिताक आरम्भ

भारतीय पत्रकारिताक इतिहासवेत्तालोकनिक मन्तव्य छनि जे संसारक सर्वप्रथम दैनिक पत्र कोन प्रकाशित भेल से कहब कठिन अछि, परन्तु किछु विद्वानक मत छनि जे १३४० ई० मे चीनमे 'पेकिङ्ग गजेट' नामसँ एक विज्ञप्ति प्रकाशित होइत छल जकरा संसारक प्रथम समाचारपत्र मानल जा सकैत अछि [1]। परन्तु स्व० पुलकित लाल दास 'मधुर' लिखैत छथि—

"समाचारपत्रक इतिहासक आदिकालक सम्बन्धमे कोनो बात निश्चित रूपसँ नहि ज्ञात होइछ। कोन समाचारपत्र प्रथम प्रकाशित भेल, एकर कोनो सप्रमाण उत्तर नहि भेटैत अछि। परन्तु कहल जाइछ जे सर्वप्रथम समाचारपत्रक जन्मदाता चीन देश अछि। ओहि देशक राजधानी पेकिङ्गसँ सर्वप्रथम 'चिङ्ग पाओ' किंवा 'चिङ्ग चाउ' नामक पत्र प्रकाशित भेल छल। पं० नन्दकुमार देव शर्मा सेहो स्वकीय पत्र-सम्पादन-कला नामक पुस्तकमे एही बातकेँ विशेष प्रामाणिक मानने छथि। पूर्व समाचार पत्रक नियमित रूपसँ कोनो प्रबन्ध नहि छल। ओकर वास्तविक जन्म ओ विकास प्रेसक आविष्कारक सङ्ग भेल। अतः समाचारपत्रक सुन्दर भूत-कालिक इतिहास अन्धकारमय रहलासँ सर्वप्रथम कतैसँ कोन पत्र प्रकाशित भेल, एहि सम्बन्धमे विशेष मतभेद अछि। किछु लोक यूरोपकेँ ओ किछु चीन केँ समाचारपत्रक जन्मस्थान मानैत छथि। एहि सम्बन्धमे चीनक पक्ष अधिक सबल अछि। चीनमे सन् ९०१ धरिसँ, जखन प्रेसक आविष्कारो नहि भेल छल, समाचारपत्र प्रकाशनक पता लगैछ। ओहि समय चीनसँ 'कियल्ट' नामक उत्तम समाचारपत्र प्रकाशित होइत छल। कहल जाइछ जे

---

१. पत्र और पत्रकार (ले० पं० श्री कमलापति त्रिपाठी) पृ० ३।

ई समाचारपत्र तीन-चारि शताब्दी धरि चलल ओ अन्तिम भागमे तँ ई दिनमे तीन-तीन बेरि धरि प्रकाशित होइत छल[1]।

जे से, एहि विवादमे पड़बाक प्रयोजन नहि। पेकिङ्ग गजेटक प्रसङ्ग ई कहल गेल अछि जे ई विज्ञप्ति समाचार छपबाक काज नहि करैत छल। एहिमे सरकारी कर्मचारी सभक नियुक्ति, राजाक आदेश, राज्य विषयक अन्य सूचना प्रकाशित होइत छल। भारतवर्षमे एखनहुँ केन्द्रीय सरकार ओ राज्य सरकार सभक दिससँ सरकारी 'गजेट' प्रकाशित होइत अछि जे ओकरे अनुकरण कहल जा सकैत अछि।

समाचारपत्र अथवा सरकारी विज्ञप्ति जे 'गजेट' संज्ञा धारण कयलक तकरो एक छोट-सन मनोरंजक इतिहास अछि। गजेट शब्द इटालियन थिक। एकन्नी-दुअन्नी जकाँ एक छोट सन मुद्राकेँ इटलीमे गजेट कहल जाइत छलैक। समाचारपत्र जे छपैत छलैक तकर एक प्रतिक दाम एक गजेट होइत छलैक। तेँ पछाति समाचारपत्रक नामे गजेट पड़ि गेलैक। जेँ हेतु 'पेकिङ्ग गजेट', जकरा सर्वप्रथम पत्र होयबाक प्रतिष्ठा किछु इतिहास-कार दैत छथिन, ताहिमे 'गजेट' शब्दक प्रयोग अछि, तेँ बहुतोक मत छनि जे इटलीए एकर जन्म-भूमि भ' सकैत अछि। अस्तु !

अंग्रेजी शासनकालमे भारत यूरोप द्वारा यदि शोषित भेल तँ इहो सत्य जे बहुतो एहन बात हमरालोकनि सिखिओ सकलहुँ जाहि हेतु हमरालोकनिकेँ ओहि शासनक प्रति कृतज्ञ सेहो होयबाक चाही। ओहि सबमे पत्रकारिता सेहो एकटा एहन विषय अछि जे यूरोपसँ अपना देशमे आयल अछि। अठारहम शताब्दीक तीन चरण बितलैक तावत् धरि भारतमे पत्रकारिताक कोनो रेखा मात्र नहि छल। १७५७ ई०क पलासी युद्धक बाद बंगालमे जखन ईस्ट इण्डिया कम्पनीक शासन-सत्ता सुव्यवस्थित भ' चुकल छलैक, तकर दू दशक केर बाद अर्थात् १७८० ई०क उनतीस जनवरीसँ कलकत्तासँ प्रथम साप्ताहिक 'बंगाल गजेट' नामसँ प्रकाशित होअ' लागल जकर संस्थापक, संचालक ओ सम्पादक 'जेम्स ऑगस्टस हिकी' नामक एक अंग्रेज छलाह। पत्रक आकार बारह इंच नाम ओ आठ इंच चाकर। ओ केवल दू पृष्ठक छल। भारतीय पत्रकारिताक आदिपुरुष ओही अंग्रेज बहादुरकेँ कहल जा

---

१. गद्य कुसुम माला (प्र०—मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा) पृ० ६४।

Scanned by CamScanner

सकैत अछि। एखन धरि भारतीय पत्रकारिताक सविस्तर इतिहास नहि लिखल गेल अछि, तखन एक कोनमे व्याप्त मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक चर्चे कोन, तथापि जे-जतबा साधन उपलब्ध अछि, तकर अध्ययन कयलासँ ई कहल जा सकैत अछि जे भारतीय पत्रकारिताक न्यों एक अंग्रेज विद्वान् द्वारा देल गेल जकर माध्यम अंग्रेजी भाषा छल। जेँ हेतु एकर आरम्भ 'जेम्स ऑगस्टस हिकी' कयने छलाह तेँ 'बंगाल गजेट' 'हिकी गजेट' नामसँ प्रसिद्ध भेल।

आब दू सय वर्ष पुरय जा रहल अछि जहिया भारतवर्षमे पत्रक उदय भेल छल। ओही वर्षक नवम्बर माससँ अर्थात् दस मासक बाद 'मेसिङ्क' ओ 'पीटर' नामक दू अंग्रेज 'इण्डियन गजेट' नामक एक दोसर पत्र प्रकाशित करय लगलाह। तकर चारि वर्षक बाद अर्थात् १७८४ ई०मे कलकत्तेसँ 'कलकत्ता गजेट' नामक एक सरकारी गजेटक प्रकाशन आरम्भ भेल। ओही वर्ष 'रामस जोन्स' नामक एक अंग्रेज सज्जनक सत्प्रयाससँ 'बंगाल जर्नल' प्रकाशित होअ' लागल। १७८५ ई०मे 'ओरियण्टल मेगजीन' नामक एक मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल। एतावता निष्कर्ष ई जे 'हिकी गजेट'क प्रकाशनक बाद कलकत्तासँ अनेक पत्र प्रकाशमे आबय लागल। तेँ भारतमे पत्रकारिताक जन्मभूमि होयबाक गौरव कलकत्तेकेँ प्राप्त छैक। पाँच वर्ष पर्यन्त एकमात्र प्रकाशन-केन्द्र कलकत्ता रहल। परन्तु पत्र-प्रकाशनक ई प्रक्रिया कलकत्ते धरि सीमित नहि रहल। १२ अक्टूबर, १७८५ ई०सँ मद्राससँ 'मद्रास केरियर' नामसँ पहिल पत्र प्रकाशित होअ' लागल, किन्तु एकरो सम्पादक एक अंग्रेजे विद्वान छलाह। नाम छलनि 'रिचार्ड जानस्टन'। ई पत्र चारि पृष्ठक छल। एहि पत्रपर सदा सरकारक कृपादृष्टि बनल रहैत छलैक। 'रिचार्ड जानस्टन'केँ सरकार छापाक मशीन, काँटा (टाइप) इत्यादि इङ्गलैण्डसँ मङयबाक सुविधा प्रदान कयने छलनि। एकर दस वर्षक बाद १७९५ ई०मे 'मद्रास गजेट'क प्रकाशन आरम्भ भेलैक। एहू पत्रपर सरकारक कृपादृष्टि रहैत छलैक। एही समयमे मद्राससँ एक तेसर पत्र प्रकाशमे आयल जकर नाम छलैक 'इण्डिया हेरल्ड' आ सम्पादक छलाह 'हम्फ्रेस' नामक एक अंग्रेज।

पत्र-प्रकाशनसँ पूर्व जेना एखनहु सरकारसँ अनुमति प्राप्त करय पड़ैत छैक तहिना ओहू समयमे 'लाइसेन्स' अपेक्षित छलैक। हम्फ्रेस एहि हेतु आवेदन कयने छलथिन जे अस्वीकृत भ' गेलनि, तथापि ओ नियमक उल्लंघन

Scanned by CamScanner

करैत पत्र प्रकाशित करय लगलाह, जाहिपर मद्रास सरकार हिनका भारतसँ निष्काशित क' देलकनि आ पकड़ि क' एकटा जहाजपर बैसा क' सोझे इङ्गलैण्ड रवाना क' देलकनि।

तेसर महानगर अछि बम्बइ, जतयसँ १७८९ ई०मे 'बाम्बे हेराल्ड' नामक एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होअ' लागल। एक वर्षक बाद अर्थात् १७९० ई०मे एक अंग्रेजक सम्पादकत्वमे "बाम्बे केरियर' नामक पत्रक प्रकाशन भेल जे बादमे 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' नामसँ प्रख्यात भेल आ एखन धरि प्रकाशित भ' रहल अछि। १७९२ ई०मे 'बाम्बे गजेट' सेहो प्रकाशित भेल। १७९९ ई० अबैत-अबैत उपरिचर्चित पत्र सभक अतिरिक्त बंगाल, मद्रास, बम्बइ सब ठामसँ आनो-आन पत्र सब प्रकाशमे आबय लागल छल, यथा—'बंगाल हरकारू', 'मॉर्निङ्ग पोस्ट', 'कलकत्ता कैरियर' 'टेलिग्राफ', 'ओरियण्टल स्टार', 'इण्डिया गजेट', 'एशियाटिक मिरर' आदिक नाम लेल जा सकैत अछि। एहिठाम एतबा ध्यातव्य थिक जे भारतवर्षमे एतेक दिन धरि पत्र सभक प्रकाशन होइत रहल, परन्तु भाषा रहल अंग्रेजी आ संचालक, सम्पादक आदि रहलाह अंग्रेज। एतेक दिनधरि कोनो भारतीय भाषामे पत्रक प्रकाशन नहि भ' सकल छल।

एकर प्रमुख कारण निम्नाङ्कित मानल जा सकैत अछि :

१. भारतक मुख्य भाषा संस्कृत छल जे दर्शन, काव्य ओ नीतिक भाषा थिक। संस्कृतक विद्वान आध्यात्मिक प्रधान होयबाक कारणेँ एहि सबकेँ महत्त्व नहि दैत छलथिन, तेँ संस्कृत भाषामे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक प्रश्ने नहि छल।

२. फारसी भारतक राजकीय भाषा छल, परन्तु अंग्रेजक आगमनक बाद राजकीय सत्तापर अंग्रेजीक वर्चस्व बढ़ि रहल छल तथा फारसी प्रभावशून्य भेल जा रहल छल। अतः फारसीओमे पत्र प्रकाशनक हेतु जनसामान्यमे उत्साह नहि रहि गेल छल।

३. आधुनिक भारतीय भाषा अपरिपक्व छल ओ सीमित क्षेत्रमे बाजल जाइत छल, एक प्रदेशक भाषासँ दोसर प्रदेशक निवासी अपरिचित छलाह। अतः संकुचित क्षेत्र ओ अपरिपक्व रहलाक कारणेँ कोनो क्षेत्रीय भाषा पत्र प्रकाशनक योग्य नहि भ' सकल छल।

Scanned by CamScanner

तखन तँ राजकीय भाषाक रूपमे अंग्रेजीक विस्तार भ' रहल छल। अंग्रेज भारतीयकेँ अपना संस्कारमे संस्कारित क' देशमे 'काला साहेब'क निर्माणक प्रक्रियामे लागल छलाह। आधुनिकताक आलोक एही भाषाक माध्यमसँ देशमे पसरि रहल छल। अतः पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक माध्यम अंग्रेजीए बनि सकल छल होयत।

भारतीय भाषा ओ पत्रकारिता

भारतवर्षक इतिहासमे प्रमुख समाजसुधारकलोकनिमे राजा राममोहन रायक नाम बहुत आदरसँ लेल जाइत छनि। अनेक शताब्दसँ लौह-शृंखलामे जकड़ल भारत रूढ़ि-ग्रस्त, कुण्ठित, दुर्बल ओ पुरुषार्थहीन भेल जा रहल छल। ताही समयमे राजा राममोहन रायक प्रादुर्भाव भेल छलनि। स्मरणीय थिक जे ईसाइ धर्मक प्रचारकलोकनि द्वारा केवल ईसाइ धर्मक प्रचारे नहि होइत छल, अपितु ओ उपदेशकलोकनि द्वारा हिन्दू धर्मक स्थूल ओ बाह्य विषयकेँ लक्ष्य क' हिन्दूधर्मक विरोधमे खूब अपप्रचार सेहो चलाओल जाइत छल। एकर प्रत्यक्ष प्रभाव हिन्दू जातिपर पड़ैत छलैक। तेँ शिक्षित हिन्दूलोकनिमे अपन धर्मक रक्षा करबाक हेतु आतुरता बढ़ि रहल छलनि। ओहि अपप्रचारकेँ प्रभावहीन करबाक हेतु तथा समाजमे बढ़ैत आकुलताक शमन करबाक हेतु राजा राममोहन राय ब्रह्म-समाजक स्थापना कयने छलाह आ शुद्ध ब्रह्मोपासनाक प्रवर्त्तन करय चाहैत छलाह। एही क्रममे हुनक ध्यान समाचारपत्र दिस सेहो गेलनि आ १८१८ ई०मे अपन आत्मीय सभाक दुइ गोट सदस्य तथा हरचन्द्र राय ओ गङ्गाकिशोर भट्टाचार्य सदृश अन्तरङ्ग मित्रक सहयोगसँ 'बंगाल गजेट' नामक बंगला भाषाक एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करय लगलाह। राजा राममोहन राय सदृश प्राणवन्त नेताक नेतृत्वमे हिन्दू समाजमे नव प्राणक संचार भ' सकलैक। एही पत्रकेँ भारतीय भाषाक प्रथम पत्र कहयबाक सौभाग्य प्राप्त छैक। भारतीय पत्रकारिताक इतिहासमे १८१८ ई० अविस्मरणीय वर्ष मानल जायत। ध्यातव्य थिक जे जे बंगाल केवल न्यायशास्त्रे नहि, लोकभाषामे साहित्य-सर्जनाक प्रेरणा जाहि मिथिलासँ प्राप्त कयने छल, प्रेरणे नहि, लिपि पर्यन्त एतहिसँ ल' गेल छल सैह बंगाल पत्रकारिताक क्षेत्रमे अग्रसर भेल। न्यायशास्त्रक मुख्य केन्द्र तँ बनिए गेल, सङ्गहि मैथिलीकेँ गोटेक शताब्दी पाछाँ छोड़ि

Scanned by CamScanner

आगाँ बढ़ि गेल आ हमरालोकनि एखनहु दिनानुदिन आरो पछुअयले जा रहल छी। जहिया मिथिलाक्षरकेँ छोड़ि छापाक सुविधाकेँ ध्यानमे राखि मिथिलावासी देवाक्षरकेँ अङ्गीकार क' लेलनि तहिया जँ बंगाक्षरोकेँ स्वीकार कयने रहितथि तँ आइ जाहि प्रकारक घात-प्रतिघातक स्थितिमे मैथिली पड़ल अछि से दुःस्थिति नहि रहैत। आसामनिवासी एहि प्रसङ्ग बेसी बुद्धिमानी कयलनि—बंगाक्षरकेँ ग्रहण क' लेलनि। आइ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे परिगणित भेल सब अधिकारक फल प्राप्त क' रहल अछि आ मैथिली देवाक्षर स्वीकार क' लेबाक कारणेँ हिन्दीक बोली बनि गेल ! हिन्दीक दाँततरसँ अपन नरेटी छोड़यबामे सब शक्ति लागि गेल, न्याय्य अधिकारसँ आइ धरि हमरालोकनि वंचिते छी। अस्तु।

१८३१ ई०मे ईश्वरचन्द्र गुप्त 'संवाद-प्रभाकर' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करय लगलाह जे ५ वर्षक बाद अर्थात् १८३६ ई०मे दैनिक रूपमे परिवर्त्तित भ' गेल। एकरा केवल बंगले भाषाक नहि, अपितु भारतीय भाषाक प्रथम दैनिक होयबाक प्रतिष्ठा प्राप्त भेलैक। तकर बाद जा क' ओही वर्ष हिन्दी भाषाक 'उदन्त मार्त्तण्ड' नामक दैनिक पत्र प्रकाशमे आयल। निष्कर्ष ई जे भारतमे पत्रकारिता आरम्भ भेलाक ५६ वर्षक बाद भारतीय भाषामे दैनिक पत्रक प्रकाशन सम्भव भ' सकल।

मुदा, स्व० पुलकितलाल दास 'मधुर' एहि मान्यतासँ भिन्न मत रखैत छथि। ओ लिखैत छथि—

"देशीय भाषामे सभसँ पुरान समाचारपत्र 'समाचार-दर्पण' बताओल जाइत अछि। एहि पत्रकेँ ईसाइ सभ १८१८ ई०मे रायपुरसँ प्रकाशित कैने छलाह। वर्त्तमान पत्र सभमे देशी भाषाक सभसँ प्राचीन समाचारपत्र गुजराती भाषाक 'बम्बई समाचार' नामक पत्र अछि। एकर जन्म १८२२ ई०मे भेलैक।......काशी निवासी स्व० बाबू राधाकृष्णदास हिन्दी समाचार पत्रक एक इतिहास लिखने छलाह। एहि ग्रन्थमे बाबू राधाकृष्णदास 'बनारस समाचार' नामक पत्रकेँ हिन्दी भाषाक सबसौँ प्राचीन पत्र मानने छथि।"[१]

जे किछु, एहि विवादक एहि ठाम अवकाश नहि अछि। एतबा निर्विवाद अछि जे पत्र-प्रकाशनक मार्ग प्रशस्त भेल अंग्रेज द्वारा आ से अंग्रेजीक

१. गद्य कुसुम माला, पृ० ६६-६७

माध्यमसँ। हम सब बंगला, गुजराती, हिन्दी आदि भारतीय भाषासँ प्रेरणा प्राप्त क' पत्रकारिताक क्षेत्रमे अग्रसर भेलहुँ, तेँ १९म शताब्दमे मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक चर्चो मात्र नहि भ' सकल।

मैथिलीक पत्र-पत्रिका : विवरण ओ विवेचन

मैथिली भाषामे पत्रकारिताक आरम्भ १९०५ ई०सँ भेल। आरम्भक कालसँ ल' १९७९ ई० धरि मैथिली पत्रिकाक इतिहास कुल पचहत्तरि वर्षक अछि। एहि पचहत्तरि वर्षक अवधिमे सब मिलाय सतासी गोट पत्र-पत्रिकाक नाम हमरा भेटल अछि। एहि ठाम एतबा स्पष्ट क' देब आवश्यक प्रतीत होइत अछि जे विद्यालय, महाविद्यालय अथवा विभिन्न मैथिली संस्था द्वारा जे विद्यापति स्मृति-पर्व आदिक अवसरपर स्मारिका आदि प्रकाशित होइत अछि, यथा, चेतना समिति, पटना; मिथिला सांस्कृतिक परिषद कलकत्ता; संकल्पलोक, दरभंगा; मिथिलासंघ, दिल्ली आदि स्थानसँ तथा ग्राम्य क्षेत्रसँ उत्साही युवकलोकनि विभिन्न गामसँ हस्तलिखित पत्रिका बाहर करैत जाइत छथि, ताहि सभक परिगणन एहिमे नहि अछि। ओकरो सभक अन्वेषण कयल जाय तँ ई संख्या दुगुना-तिगुना भ' जा सकैत अछि।

एहन सौभाग्यशालिनी क्षेत्रीय भाषा बड़ थोड़ होयत जाहि भाषामे एहि छोट सन अवधिमे एतेक संख्यामे पत्र-पत्रिका प्रकाशित भेल होयतैक, परन्तु अभागलिओ एहन दोसर क्षेत्रीय भाषा नहि होयत जाहि भाषामे एतेक अल्पजीवी पत्र-पत्रिका भेल होइक। एतेक प्राचीन, प्रत्युत नेपाल सहित सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारतक भाषा-समूहमे प्राचीनतम, अनेक उप-भाषाक जन्म-दात्री, अनेक क्षेत्रीय भाषाकेँ मार्गदर्शन कयनिहारि मैथिली आइ धरि टग्ग हनैत घिसिऔड़ कटैत, ठेहुनिया दैत, काहि काटि रहल अछि आ एकरासँ प्रेरणा पाबि विकसित भेल भाषा सब साहित्यिक भाषाक गौरवसँ मण्डित युगक संग पयर मिलओने प्रगति पथपर दौड़ि रहल अछि।

कहबाक हेतु मैथिली भाषामे दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, आकस्मिक ओ अनियमित अनेक प्रकारक पत्र-पत्रिका जन्म लैत ओ काल-कवलित होइत इतिहासक परम्पराकेँ जोड़ैत आबि रहल अछि। एहि सबमे किछुए एहन पत्र-पत्रिका अछि जे अपन प्रभावसँ समाजकेँ

Scanned by CamScanner

प्रभावित क' सकल आ जकर विवेचन कयलासँ मैथिलीक विकास पर किछु प्रकाश पड़ैत अछि। एहि ठाम काल खण्डक अनुसार विवेचन नहि क' अपन दृष्टिकोणसँ विवेचन करब। परन्तु सर्वप्रथम अक्षरानुक्रमसँ पत्र-पत्रिकाक नामक सूची प्रस्तुत अछि जकरा देखलासँ ज्ञात होयत जे मैथिली क्षेत्रमे किछु उत्साही लोक सभ दिनसँ रहलाह अछि, परन्तु समाज हुनका उत्साहके बढ़यबाक बदला हतोत्साहिते करैत रहलनि अछि। सहयोग देबाक बदलामे कौचर्य करैत रहलनि। फलतः सभक उत्साह सोडा वाटरक उधियान बनि क' रहि गेल अछि। पत्र-पत्रिकाक नाम निम्नाङ्कित अछि—

१. अकविता
२. अक्षत
३. अग्निपत्र
४. अनामा
५. अभियान
६. अभिव्यंजना
७. अम्बर ज्योति
८. अर्चना
९. आखर
१०. आहुति
११. इजोत
१२, चरचा
१३. चाङुर
१४. चौपाड़ि
१५. जनक
१६. जीवन प्रभा
१७. टटका
१८. धीया पूता
१९. नव जीवन
२०. नव किरण
२१. निर्माण
२२. नूतन विश्व
२३. परिषद पत्रिका
२४. पल्लव
२५. पाग
२६. फराक
२७. फूल पात
२८. बटुक
२९. बागमती
३०. भारती
३१. भुम्हूर
३२. भूर
३३. मातृवाणी
३४. माहुर
३५. मि०
३६. मिथिला
३७. मिथिला अमर
३८. मिथिला आलोक
३९. मिथिला ज्योति
४०, मिथिला टाइम्स
४१. मिथिला दर्शन
४२. मिथिला दूत
४३. मिथिला भारती
४४. मिथिला भूमि
४५. मिथिला मित्र
४६. मिथिला मिहिर
४७. मिथिला मोद
४८. मिथिला समुदाय
४९. मिथिला मंच
५०. मिथिला सेवक
५१. मित्र वाणी
५२. मिनी पत्रिका
५३. मैथिल प्रभा
५४. मैथिल प्रभाकर
५५. मैथिल बन्धु
५६. मैथिल युवक
५७. मैथिल हित साधन
५८. मैथिली
५९. मैथिली कविता
६०. मैथिली दर्शन
६१. मैथिली प्रकाश
६२. मैथिली पारिजात
६३. मैथिली बुलेटिन
६४. मैथिली समाचार
६५. मैथिली समीक्षा
६६. रंग मंच
६७. लाल धुआँ
६८, लोक मंच
६९. वाणी
७०. विकल्प
७१. विभूति
७२. वैदेही
७३. शक्ति भूमि
७४. शिखा
७५. शिशु
७६. श्री मैथिली
७७. सत्य सन्देश
७८. सन्निपात
७९, समन्वय
८०. समाद
८१, सम्पर्क सूत्र
८२. संजीवनी
८३. सोना माटि
८४. स्वदेश
८५. स्वदेश वाणी
८६. साहित्य पत्र
८७. ६० के०

Scanned by CamScanner

उपर्युक्त सूचीमे एहनो नाम अछि जकर उपयोग भिन्न-भिन्न स्थानसँ भिन्न सम्पादक कयने छथि। जेना 'इजोत' नामक मासिक दरभंगासँ प्रकाशित होइत छल जकर तीन अङ्क मात्र प्रकाशित भेल। किछु दिनक बाद एही नामसँ नेपालसँ मासिके रूपमे प्रकाशित भेल, परन्तु एक अङ्क मात्र। मिथिला मासिक रूपमे बाबू भोलालाल दास ओ प०कुशेश्वर कुमरक सम्पादकत्वमे लहेरियासरायसँ १९२९ ई० मे प्रकाशित होइत छल। बादमे डॉ० श्री लक्ष्मण झाक सम्पादकत्वमे बहुतो दिनुक बाद साप्ताहिक रूपमे प्रकाशित भेल। ओहो बन्द भ' गेल तँ पं० भोलानाथ मिश्र पुनः मासिक रूपमे मिथिला नामसँ प्रकाशित करय लगलाह, परन्तु एक अथवा दू अङ्क मात्र प्रकाशित क' सकलाह। तदुत्तर बम्बइसँ मिथिला त्रैमासिक रूपमे प्रकाशित भेल जे प्रायः दू अङ्क प्रकाशित भ' बन्द भ' गेल। एकरा सभक संख्या जोड़ि देला उत्तर सतासी संख्या टपि जाइत अछि।

दैनिक पत्र

स्वदेश

मैथिलीमे पत्रकारिताक आरम्भ १९०५ ई० मे भेल से पहिने कहल जा चुकल अछि। शपथ खयबाक हेतु एक गोट दैनिकक प्रकाशनक प्रयोग सेहो कयल जा चुकल अछि। जेँ हेतु एकमात्र दैनिक बहरायल अछि, तेँ सबसँ पहिने ओकरे विवेचना कयल जा रहल अछि।

जहिना भारतमे पत्रकारिताक आरम्भ भेलाक ५५-५६ वर्षक बाद भारतीय भाषामे पत्रक प्रकाशन सम्भव भ' सकल तहिना मैथिलीमे पत्रकारिताक आरम्भसँ ५० वर्षक बाद अर्थात् १९५५ ई० मे प्रयोगक रूपमे आचार्य श्री सुरेन्द झा 'सुमन' १९४८ मे 'स्वदेश' नामक मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ कयने छलाह तकरे दैनिक रूपमे प्रकाशित करब आरम्भ कयलनि जे ९ अक्टूबर १९५५ ई सँ २७ दिसम्बर १९५५ ई० धरिक अवधिमे प्रकाशित होइत रहल आ एहि अवधिमे जकर ६५ गोट अङ्क प्रकाशित भ' सकल। एहि पत्रक प्रकाशन केवल मानव शक्तिक आधार पर भेल छल। पत्रक प्रकाशनमे कतेक तत्त्व अपेक्षित होइछ तकर दिग्दर्शन पहिने कयल जा चुकल अछि। दैनिक पत्रक हेतु तँ पूजी लाखक मात्रामे अपेक्षित होइत अछि, कम सँ कम 'प्लाट' मशीन चाही, परन्तु एहि पत्रक हेतु पूजी छल श्री सुमनजीक कर्मठता, अतुलनीय प्रतिभा ओ किछु अन्य अनन्य मातृभाषा सेवीक अदम्य

Scanned by CamScanner

उत्साह ओ मशीन छल ट्रेडिल। क्षेत्रीय संवादक संकलन करैत छलाह साहित्यकार बन्धु, प्रथम समाचारक चयन करैत छलाह स्वयं श्री सुमनजी, वितरण कयनिहार छलाह अध्यापक, साहित्यिक, छात्रलोकनि। हम स्वयं १०० प्रति वितरण करैत छलहुँ। एम्-एल्. एकेडमीक छात्रलोकनिमे प्रमुख छलाह तत्कालीन छात्र ओ सम्प्रति मिथिला विश्वविद्यालयक प्राध्यापक डा० श्री रामदेव झा। एहि पत्रक संस्थापक, संचालक ओ प्रधान सम्पादक छलाह स्वयं सुमनजी। हुनक सहायतार्थ एक सम्पादक-मण्डल छल जाहिमे पाँच व्यक्ति छलाह—प्रो० श्री धर्मप्रिय लाल, पं०श्री कांची नाथ झा 'किरण', प्रो० श्रीकृष्ण मिश्र, डॉ० श्री सूर्यकान्त ठाकुर, ओ एहि पंक्तिक लेखक सेहो। एहि पत्रक प्रकाशनक उद्देश्य पर दू अङ्क मे सम्पादकीय लिखल गेल छल जकर लेखक प्रधान सम्पादक स्वयं छलाह। ओ अविकल उद्धृत कयल जा रहल अछि—

भूमिका (१)

"महतो महीयानक युगमे अणोरणीयान्‌क की सङ्गति से मन्त्रद्रष्टा पुछल जाथु। डेंगीपर सागर पार करबाक साहसक सफाइ देथु कवि यशः प्रार्थी।

'नागर मन मोहइ' जनिक भाषा रहल हो से हर-सिरक कला-श्रृङ्गार सजाबथु अथवा सत्य कहबालेल जनिका कागत कोरे भेटैत छन्हि से कवित विवेकक ओरछोर ताकथु ।

परञ्च जकर दृष्टि अदृष्टे, नौकाक साधनोसँ जे वञ्चित जकरा सत्य कहबा लै कोरा कागतोक अभाव, ओ की सफाई दियै ?

पूजा तँ थिकैक विधि-विधानक वस्तु। शतदल, सहस्रदल, स्वर्ण कमल चाही ओ चाही तीर्थतीर्थक बिन्दु-बिन्दु संवाहक कलश। धूप-आरती-गन्ध नैवेद्य तँ नानाविधानि रहबे करौ। परञ्च जकरा श्याम तुलसीदल मात्र सम्भव होइक की ओ जननीक अर्चनाक स्पृहा नहि करय ? जकरा "उच्छल जलधि तरङ्ग" नहि प्राप्य रहैक की ओ नयम नीरसँ जननीक चरण नहि पखारय ?

Scanned by CamScanner

यदि साधने जुटयबामे पूर्वाह्ण बिता दी तँ की प्रतिमा अपूजिते नहि रहि जैती ? स्वर्ण पीठपर जननीकें यदि नहि बैसा सकी तँ की हुनका चिनुआरक मृत्पीठिकापर स्थापित नहि करी ? जैह प्रश्न अछि, सैह उत्तरो।

'स्वदेश' यदि उत्तर नहियो दै सकल, प्रश्नेमात्र ठाढ़ कै सकल, तँ एकर लक्ष्य सिद्ध रहतैक।

स्वदेशक जीवन ग्रन्थक मुख्य भूमिका गीताक आकर्षक आज्ञामे निहित अछि—'तत्कुरुष्व मदर्पणम्'।''

उपर्युक्त उद्धरणसँ स्पष्ट अछि—मैथिलीक प्रतिमा अपूजित नहि रहि जाय। मैथिली पत्र-पत्रिकाक अनुशीलन सँ ज्ञात होइत अछि जे पत्रकारिताक आरम्भिके समयसँ दैनिक पत्रक आकांक्षा जागि चुकल छल, मैथिलीक प्रसङ्ग चिन्तन कयनिहार प्राथमिक शिक्षाक माध्यम ओ दैनिक पत्रक स्वप्न देखैत आबि रहल छलाह, ओही स्वप्नकें साकार करबाक एक आतुर मनोरथ छल, से तँ साकार अवश्य भेल, नयन नीरसँ जननीक चरण पखारल गेल। आइ शपथ खयबाक हेतु ताकय नहि पड़ैत अछि. प्रश्न ठाढ़ क' गेल जे कोटि-कोटि कण्ठक भाषा होइतो आइधरि एहि भाषा-भाषीक हृदयसँ हीन भावना नहि गेलैक अछि। प्रश्न एखनहुँ ठाढे अछि। एहि पचीस वर्षमे अनेक प्रगति भेल, दैनिक पत्र आइओ नहि अछि।

भूमिका (२)

''विश्वक अणु-परमाणु जाहि महाशक्तिक विभूतिसँ अनुस्यूत अछि, जगतक जड़-जंगम जाहि चेतनामयीक प्रेरणासँ अचल-चञ्चल अछि, ओहि महामायाक ई अचिन्त्य चरित थीक जे शतशत संवत्सरक संघर्ष पर देश स्वदेश भेल अछि—सहस्राब्दीक पराधीनताक पाश सँ आबद्ध जन्मभूमि कर्म भूमिक रूपमे पुनः प्रतिष्ठित भेल।

सम्पूर्ण राष्ट्रमे आइ अछि आत्म विकासक स्फूर्ति, जनजनमे जागृत—युग युगसँ सञ्चित स्वप्नकें साकार करबाक संकल्प मनमनमे उद्वेलित। दिशा-दिशामे अछि नव चेतनाक वातावरण ओ क्षणक्षणमे कर्म प्रेरणाक संस्फुरण। गौरवमय अतीत जगा रहल अछि, अनुकूल वर्तमान बजा रहल अछि ओ आशा सम्मृत भविष्य स्वागत कै रहल अछि। एहना स्थितिमे

Scanned by CamScanner

यदि देश स्वदेश नहि भेल तँ मानै पड़त जे हम सभ महाशक्तिक चेतनामयी नहि, निद्रामयी विभूतिक आवाहक छी। मुक्तिक नहि, बन्धनक आराधक छी।

लोकतन्त्रक सङ्ग समष्टि ओ व्यक्तिपर तुल्य उत्तरदायित्व आबि गेल छैक। एतेक दिन विदेशक पराधीनतामे देशक जे मूल स्वरूप विकृत भै गेलैक तकरा अवशिष्ट संस्काररहितपर पुनः अपना स्वरूपमे आनय पड़त। अखण्ड भारतीय संस्कृति जाहि-जाहि संस्कृति-सभ्यताक समुच्चय थीक तकरा एक-एकके सुरक्षित राखि आगाँ बढ़ै पड़त। अङ्ग-अङ्गक पुष्टिसँ कलेवरकेँ पुष्ट बनबै पड़त। शक्तिकेँ एके केन्द्रमे संकुचित नहि कै दिशा-दिशामे प्रेरित करय पड़त।

एक दिस एहि प्रकारक प्राण-प्रेरणा, दोसर दिस मिथिलाक इतिहासमे मैथिली पत्रक स्थितिक अनुभव-चिन्तना दूहूक अन्तरालमे 'स्वदेश' कर्मक्षेत्रमे अवतीर्ण भेल अछि। गत पचास वर्षक दीर्घ अवधिमे मैथिलीक स्वतन्त्र दैनिक पत्रक प्रकाशन नहि हैब अत्यन्त विस्मयकर घटना छल! जाहि मिथिलाक समक्ष व्यापक प्रश्न सभ उपस्थित छैक—साहित्य-संस्कृति ओ भाषा-लिपिक संरक्षण-संवर्धन, मिथिला विश्वविद्यालयक निर्माण कोशी-समस्या आदि विशाल कार्यक्रम छैक—तकरा हेतु मैथिलीमे दैनिकक अभाव की असह्य यन्त्रणा नहि थीक? मर्मक व्यथा नहि थीक?

'स्वदेश' यदि एहि अभावक विकट मरुभूमिमे, पिपासाक असह्य मुहुर्तमे सहसा किन्तु एकान्त साहससँ कूप खुनबाक हेतु प्रस्तुत भेल अछि त एकरा एहि प्रयासक, विश्वास अछि, राशि-राशि सहयोगी हाथ पृष्ठपोषक होयतैक।

'स्वदेश' अमरताक दावा त नहि करैछ, क्यो कैओ ने सकैछ, किन्तु रक्तक अन्तिम विन्दु पर्यन्त संघर्षक भावना लै ई कार्यक्षेत्रमे प्रवृत भेल अछि। जीवनक दीर्घता घड़ी पलसँ नहि, कार्यसँ मानैत शक्तिभरि, साधना भरि, भावना-पूर्त्तिधरि चलिते रहबाक संकल्प पाथेय लै अग्रसर भेल अछि। महाशक्ति एकरामे शक्ति प्रेरित करथु। पथ कण्टकाकीर्ण रहौ, किन्तु ओकरा मर्दित करबाक साहस एकरामे भरथु, अमरता अप्राप्यो रहौ, किन्तु मृत्युसँ भिड़वाक क्षमता देथु। जया-जय, लाभालाभक परवाहि बिनु रखैत कर्म योगमे युक्त हैबाक प्रेरणा देथु।''

Scanned by CamScanner

एहि उद्धरणमे अभिव्यक्त विश्वास तँ सत्य सिद्ध नहि भेल, तीन-तीन कोटि भाषाभाषी होइतो, अनेक श्रीमान्, बुद्धिमान्, उच्चपदासीन लक्षावधि जीविकापन्न विद्वान् लोकक अछैतो राशि-राशि सहयोगी हाथ पृष्ठपोषणक हेतु नहि उठि सकल, मात्र ६५ अङ्क प्रकाशित भ' ई पत्र बन्द भ' गेल, किन्तु ई धरि सत्य प्रमाणित भ' गेल जे वस्तुतः हमसब चेतनामयी नहि, निद्रामयी विभूतिक आवाहक छी—

"या देवी सर्वभूतेषु निद्रा रूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः"

दोसर 'जीवनक दीर्घता घड़ी पलसँ नहि, कार्यसँ मानैत''''''अग्रसर भेल अछि' ईहो कथन सत्य सिद्ध भेल। एहि पचीस वर्षक अन्तरालमे मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे दोसर कोनो दैनिक पत्रक नाम अङ्कित करबाक स्थिति उत्पन्न नहि भ' सकल।

रक्तक अन्तिम बिन्दु धरि संघर्षमे लगयबाक संकल्प पूर्ण करबामे श्री सुमनजी पयर पाछु नहि कयलनि। आपादमस्तक ऋणसँ ग्रस्त भ' गेलाक बाद एहिसँ विरत भेलाह। जाहि आर्थिक संकटक पंकमे ओ फँसि गेल छलाह से हुनक अत्यन्त निकट सहयोगीओ लोकनिमे सब नहि बुझि सकलथिन, असफलताक हेतु आन्तरिक व्यथा जे रहल होइनि, मुखपर म्लानता ककरो परिलक्षित नहि होअ' देलथिन। एहि इतिहास स्रष्टाक प्रति मैथिलीभाषीकेँ कृतज्ञ रहबाक चाही।

एहि पत्रमे विभिन्न स्तम्भ छल—विभिन्न प्रान्तक गतिविधि, दरभंगा समाचार, लोकमत, हमरो किछु कह' दिअ' (व्यंग्य स्तम्भ), विदेशवार्ता, रेलवे टाइम टेबुल, बाजार भाव, खेल धूप, फिल्मलोक आदि। एहि पत्रक माध्यमसँ मिथिला विश्वविद्यालय, मिथिला क्षेत्रमे आकाशवाणी केन्द्रक स्थापना, विद्यापति स्मृति पर्वक माध्यमसँ बिस्फी आदि स्थानक उद्धार, जन साधारणमे मातृभाषाक प्रति अनुराग उत्पन्न करब आदि काज सुचारु रूपेँ सम्पादित होइत छल। व्यंग्य स्तम्भक माध्यमसँ निम्नवर्गमे प्रयुक्त लोक भाषाकेँ प्रयोगमे आनि ओहू वर्गक लोककेँ आकर्षित करबाक प्रयास कयल जाइत छल। ओहि स्तम्भक लेखकक रूपमे उचित राम, खुरखुर सदाय,

बचकानी मड़र, सोनेलाल यादव आदि नामक उपयोग कयल जाइत छल। उदाहरणार्थ एक उद्धरण प्रस्तुत कयल जाइत अछि—

हमर सुनबइ कि ने ?

आँइ यौ उचितराम जी ! एक गो बात सुनलिअइ ग' जे आब साले-साले सिच्छा सप्ताह इसकुलिया चटिया सब मनउतइ। ओइमे गाँ के साफ करत, इसकूलकेँ चून सँ ढेउरत, बाट-घाट, पोखरि-झाँखरि, अङना-दुरा सबकेँ बाढ़नि खड़रासँ बहारि-खड़रि क' बरहम बाबाके थान नाँहित चमकउने रहत। महज तकरा बाद फेन कुइछ होइ। अइ स ऊ सब साफ-सुथरा रहक सिच्छा पाउत, ई त हम सब बुझली, महज ई बीत भइरकेँ छउँड़ा सब राइत खिन क' बूढ़ आउर के कहइ छल ग' जे अउँठा छाप आब नइँ लगाउ। आब दसखत करब सीख लिअ'। हम मनेमन कहलौं जे चाइर गो अच्छर सीख लिती त कोन हरजा........एक्के गो लालच लागल अइ जे अच्छर सीख लिती त अहाँके एकबार पढ़िती। अखनी जाइ छी कुट्टी काटे, फेन पलखति मिलत त' अहाँ स गप्प करब—बचकानी मड़र।[1]

उक्त पत्रमे प्रकाशित किछु मनोरंजक शीर्षक—"बम्बैक तीन फाँक : नेताक मोन लुसफुस"। ओहि समय बम्बइक विभाजन भेल छलैक, तन्मूलक समाचारक उपर्युक्त शीर्षक छल। एक ठामक डकैतीक समाचारक शीर्षक छल 'आन डकैत पार : एक मोटैत गिरफ्तार' अर्थात् एहूमे व्यंग्य ओ सानुप्रासिकता आनि समाचारकेँ आकर्षक बनाओल जाइत छल। ओहि समयमे दरभंगामे फुटबॉल मैच चलैत छलैक। खेल 'ड्रॉ' रहि जाइक। ड्रॉ शब्दक हेतु 'समगम' शब्दक प्रयोग बेस लोकप्रिय भेल छल। एहि तरहेँ दैनिक पत्र द्वारा नवीन शब्दक रचना ओ लुप्त होइत शब्दकेँ पुनर्जीवन प्राप्त होइत रहैत छैक, जाहिसँ भाषाक अभिव्यक्ति-सामर्थ्यमे वृद्धि होइत छैक। एक समाचारक बानगी देखल जाय—

"दू दू खिल्ली पान जुर्माना।

नवादा, बहेड़ा २ नवम्बर। गत दुर्गा पूजाक अवसरपर गामक नौकरी कैनिहार ओ पढ़निहार शिक्षित वर्ग लोक जुटल छलाह। मैथिलीक प्रचारार्थ मनोरञ्जनमे निर्णय भेल जे भरि दशमी जे धोखोसँ मैथिली छोड़ि आन भाषामे

---

१. १२ दिसम्बर ५५ ई०।

परस्पर गप्प करताह तनिका घटना स्थलपर उपस्थित सब व्यक्तिकें दू दू खिल्ली पान खोआबै पड़तनि। एहि नियमक पालन तते कड़ाइसँ भेल जे बहुतोकें ई दण्ड स्वीकार करै पड़लनि। फलतः बजबामे पछाति पूर्ण संयम राखय पड़नि। जनसाधारणपर एकर खूब प्रभाव पड़ल।"[1]

एहि ठाम सम्पादकीयकेर प्राञ्जल ओ संस्कृतनिष्ठ, व्यंग्यस्तम्भक जन-सामान्यक बीच प्रचलित तथा समाचारमे शिष्टजन प्रयुक्त तीनू प्रकारक भाषाक उद्धरण देबाक तात्पर्य जे ई पत्र सम्पूर्ण मिथिलाबासीक बीच प्रवेश करबाक निमित्त भाषाक प्रसङ्ग उदार दृष्टिकोण अपनओने छल।

ई पत्र कोनो राजनीतिक विशेष विचारधारासँ सम्बद्ध नहि रहि शुद्ध राष्ट्रवादी छल। मिथिला केसरी बाबू जानकीनन्दन सिंह ओहि समय स्वतन्त्र मिथिला प्रान्तक आन्दोलन ठाढ़ कयने छलाह। ओहि प्रसङ्गक समाचार एहिमे अवश्य छपैत छल, परन्तु स्वयं तटस्थ छल। एहि कथनक पुष्टिमे निम्नाङ्कित उद्धरण पर्याप्त होयत। अपन मन्तव्य व्यक्त करैत सम्पादक लिखने छथि--

"हम पुनः स्पष्ट कै देमै चाहैत छी जे 'स्वदेश'कें केवल जनभाषामे जनमतकें उपस्थित करबे ध्येय छैक। भाषाक स्वत्व रक्षा, सार्वजनिक हित चिन्तन ओ जनताक अभाव-अभियोगकें निर्भीक भावें अभिव्यक्त करबे एकर लक्ष्य छैक। मिथिला प्रान्तक समर्थन वा विरोध एकर ध्येय नहि। एहि प्रकारक कोनहु विवाद-ग्रस्त विषयपर सम्पादक-मण्डल तटस्थ रहत।"[2] एहिसँ एहि पत्रक नीति स्पष्ट होइत अछि। पहिने कहल जा चुकल अछि जे जें हेतु 'स्वदेश' एक मात्र दैनिक पत्र मैथिली पत्रक इतिहासमे अछि, तें सर्वप्रथम एहिपर विचार कयल गेल अछि। आब इतिहासक आदिसँ विचार कयल जा रहल अछि।

मैथिल हित साधन

मैथिली भाषामे प्रकाशित सर्वप्रथम पत्र थिक "मैथिल हित साधन"। ई मिथिलासँ सुदूर राजस्थानक जयपुर नगरसँ १९०५मे प्रकाशित होयब

---

१. ४ नवम्बर, १९५५ ई०।

२. ४ नवम्बर, १९५५ ई०।

ॐनमस्तस्यै।

मैथिलहितसाधन. १

मैथिलचारुचर्या

श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीजयपुरमहाराजक आश्रित
दरभङ्गा-हरिपुर-ग्रामनिवासी पंडितवर
श्रीजगन्मोहनझाक रचित

ओ

जयपुरस्थमैथिलहितसाधनसंमिति

द्वारा प्रकाशित.

तथा

बालचन्द्रयन्त्रालयमें

मुद्रित.

सन् १३१४ साल.

मूल्य ६ =) आना

आरम्भ भेल। ई मासिक पत्र छल। ई जयपुरक राजपण्डित विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा तथा अलवर स्टेटक मुख्य न्यायाधीश पं० रामभद्र झा एम्०ए०क संस्थापकत्व, संचालकत्व ओ सम्पादकत्वमे प्रकाशित होइत छल। हमरा बहुत अन्वेषण कयलो उत्तर एकर एकोगोट अंक सम्पूर्ण देखबाक सौभाग्य नहि प्राप्त भ' सकल। छिटफुट पन्ना सब किछु उपलब्ध भेल। ताहि आधारपर विवेचन करबासँ पूर्व एहि पत्रक प्रसङ्ग विभिन्न विद्वान्‌लोकनि जे अपन-अपन अभिमत प्रकट कयने छथि तकरे उद्धृत करब समुचित बुझैत छी। स्व० पुलकित लाल दास 'मधुर' लिखैत छथि—

'मैथिल हित साधन'' अत्यन्त क्षीणकाय एवं अल्पजीवी होएबाक कारणें मैथिल समाजक तेहन कोनो विशेष हित साधन नहि कय सकल। तीनिये चारि वर्ष प्रकाशित भै ई पत्र काल कवलित भै गेल छल। किन्तु मैथिली भाषामे सर्वप्रथम सामयिक पत्रक सूत्रपात करबाक कारणें एहि पत्रक सञ्चालक गण अवश्य विशेष धन्यवादार्ह थिकाह।''[1]

स्व० बाबू लक्ष्मीपति सिंहक अभिमत छनि—

''मैथिली पत्रकारिताक विषम अतीत ओ वर्त्तमान अस्तव्यस्ततापर ध्यान देल जाए।······मैथिलीक सर्वप्रथम पत्र मैथिल हित साधनकें उदाहरण लेल जाए। ओ पत्र चलि सकल यद्यपि तिनिए वर्ष, किन्तु ओकर आदर्श, सिद्धान्त, उच्चस्तरीय साहित्यिकता एवं विषय व्यापकता मैथिली जगतमे हलचल मचाए देलक अवश्य, किन्तु ओहि हलचलमे कटु प्रतिक्रिया एवं उदासीनताक पुट ततेक वर्द्धिष्णु होमए लागल जे हित साधनक नूतन वर्षाङ्क (खण्ड २ पृ० ३)मे सम्पादकीय मन्तव्यक रूपें काकु ओ व्यंग्यक धुरखेल मचए लागल। ओ मन्तव्य छल—''जनिका सबहिकें हा-हा-ही-ही, लल्लो चप्पो, गीत-कवित्तक अतिरिक्त गम्भीर लेख सबहिक रसास्वादक योग्यता नहि छैनि तादृश व्यक्तिक ग्राहक नहि रहलासँ हित साधनक कोनोटा त्रुटि नहि।''[2]

हसुआ (गया) निवासी काली प्रसाद सिंह चौधरीक मन्तव्य छनि—

---

१. गद्य कुसुम माला, (मै० सा० परिषद्, दरभंगा) पृ० ७१-७२।

२. मैथिली साहित्यक रूपरेखा (द्वितीय खण्ड) (चेतनासमिति, पटना) पृ० ८१

"किन्तु हा खेद, थोड़बहि दिन धरि मिथिलाक हित साधन कय सहयोगी मैथिल हित साधन ने जानि कोन असाध्य रोगक पालाँ पड़ि गेलाह, यद्यपि मैथिल हित साधन 'यथा नाम तथा गुण:' एहि पदकेँ पूर्णरूपेण चरितार्थ नहि करैत छलाह। कतै संज्ञा हित साधन, किन्तु (नेनो लोकनि) बालक बालिका लोकनिक हित साधय लगलाह दुरूह दर्शन शास्त्रसँ। औ पाठक वृन्द ! बाल मराल की मन्दिर लेही ? जाहि व्यक्तिक बुतेँ एक मनक बोझ लय जाएब दुर्लभ तकरा उपर विराट् पर्वतक लादनि केहन युक्ति सङ्गत ? केवल पण्डित लोकनिकेँ जँ हित साधन करैबाक विचार छलन्हि तखन तँ मैथिल-पण्डित-हित साधन ने नाम रखबाक छलन्हि ?......अस्तु, बहुत दिनसँ तँ हित साधनक दर्शनो दुर्लभ। अन्वेषण कयने ज्ञात भेल जे कहियो कहियो झाँकी दर्शनक अधिकारी क्यौ-क्यौ भै जाइत छथि। ताहिसँ बूझि पड़ैत अछि जे सहयोगी किछु अस्त व्यस्त दशामे छथि।"[१]

बुझना जाइत अछि बाबू लक्ष्मीपति सिंह जे हित साधनक सम्पादकीय मन्तव्यक उद्धरण देने छथि से उपर्युक्त काली प्रसाद सिंह चौधरिक जेहन मन्तव्य छनि तेहने कोनो मन्तव्यक प्रतिक्रिया स्वरूप प्रकट कयल गेल होयत। सुनल अछि जे एहि पत्रक बाद जे दोसर पत्र 'मिथिला मोद' प्रकाशित भेल से प्रतिक्रिये स्वरूप। प्रो० श्री जयदेव मिश्र जी अपन पिता प० बबुआजी मिश्रक मुहेँ सुनल कथाक आधारपर कहने छलाह। दुर्योगवश ने हित साधनक पूर्ण अङ्क भेटि सकल ने मिथिला मोदक प्रथम दू वर्षक। अतः एहि प्रसङ्ग विशेष प्रकाश देबामे सम्प्रति असमर्थ रहलहुँ। द्वितीय संस्करणमे यथा सम्भव प्रयास कयल जायत अथवा 'उत्पत्स्यते च मम कोऽपि समानधर्मा।'

डॉ० श्री जयकान्त मिश्र अपन मैथिली साहित्यक इतिहासमे मैथिलहित साधनक प्रसङ्ग जे अभिमत व्यक्त कयने छथि[२] डॉ० श्री दुर्गानाथ झा

---

१. मिथिला मोद, उद्गार ३०-३१,

२. "The Maithil Hit Sadhan was the first monthly periodical in Maithili. It lasted only for about three years. It was a very ambitious project in as much it aimed to publish elementary works of permanent velue in different branches of learning, such as hygine, philosophy, grammar, arithmetic and

Scanned by CamScanner

'श्रीश' प्रायशः ओही कथ्यक मैथिली रूपान्तर प्रस्तुत करैत छथि—

'मैथिल हित साधन' मासिक विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा ओ पं० चन्द्रदत्त झाक प्रयाससँ जयपुरसँ बहार भेल। ई अधिक दिन नहि चलल। एहि पत्रक उद्देश्य छल गम्भीर ओ व्यापक, मैथिली साहित्यकेँ दर्शन, व्याकरण, भूगोल प्रभृति शास्त्रीय लेखसँ भरि देब, रचनात्मक साहित्यक निर्माण करब तथा सामाजिक दोषकेँ इङ्गित कए ओकर सुधारक उद्‌बोधन देब।.......एहि पत्रक दोसर वर्षक प्रथमे अङ्कमे एकर गम्भीर उद्देश्यक घोषणा स्पष्ट शब्दमे कए देल गेलैक—"जनिका सबहिकेँ हाहा-हीही, लल्लो-चप्पो, गीत-कवितक अतिरिक्त गम्भीर लेख सबहिक रसास्वादनक योग्यता नहि छनि, तादृश व्यक्तिक ग्राहक नहि रहलासँ हित साधनक कोनो त्रुटि नहि।" एहि उद्धरणसँ एहि मासिक पत्रिकाक उद्देश्य ओ प्रकाशित विषयक स्वभावक अनुमान कएल जा सकैत अछि।"[1]

'श्रीश'जीक एहि उद्धरणमे दू गोट प्रश्न विचारणीय भ' जाइत अछि। प्रथम ई जे आन सब इतिहासकार 'हित साधन'क सम्पादकक रूपमे विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा ओ पं० रामभद्र झाक नामोल्लेख कयने छथि, परन्तु श्रीशजी दोसर नाम चन्द्रदत्त झाक लैत छथि। ई कोन सूत्रसँ प्राप्त भेलनि से नहि जानि। ओहि समयमे चन्द्रदत्त झा नामक कोनो साहित्यकार अथवा मातृभाषा सेवीक उल्लेख वा रचना कतहु उपलब्ध नहि होइत अछि। द्वितीय, उपर्युक्त उद्धरणमे श्रीशजी जाहि उद्धरणकेँ पत्रक उद्देश्यक घोषणा कहलनि अछि से युक्तिसङ्गत नहि प्रतीत होइत अछि। उद्देश्यक घोषणा तँ आरम्भेमे कयल जाइत अछि, दोसर वर्षमे जा क' नहि। हमर धारणा अछि जे 'मोद'मे प्रकाशित कोनो टिप्पणीक प्रतिक्रिया स्वरूपे ओ लिखल गेल होयत। एकटा विचित्रता ईहो देखबामे अबैत अछि जे 'हित साधन'सँ एही उद्धरणकेँ सब इतिहासकार दोहरौलनि अछि, एहिसँ आभास भेटैत अछि जे

---

geography along with song, poems, notes on the merits and defects of the people of Mithila and comments on current topics."—ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (साहित्य अकादमी संस्करण), पृ० २२९।

१. मैथिली साहित्यक इतिहास, (परिवर्द्धित सं०), पृ० १२२।

Scanned by CamScanner

उक्त पत्रक सब अङ्कक अवलोकन केओ गोटे नहि क' सकलाह अछि। अस्तु।

डा० श्री राधाकृष्ण चौधरी "ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर"मे अपन मन्तव्य प्रकट करैत कोनो नवीन तथ्यक उद्घाटन नहि कयलनि अछि, प्रत्युत डॉ० श्री जयकान्त मिश्रहिक कथनक पिष्टपेषण कयने छथि।[1]

हमरा दृष्टिपथपर छिटफुट किछु पन्ना सब आयल अछि जाहिमे वर्ष, अङ्क आदि कथुक कोनो थाह पता नहि भेटल, किन्तु ओहि छिटफुट पन्नो सबसँ हित साधनक उद्देश्य ओ विषयवस्तुक सङ्ग तत्कालीन मिथिलाक स्थिति पर सेहो प्रकाश पड़ैत अछि। एहि कथनक पुष्टिमे किछु उद्धरण प्रस्तुत कयल जा रहल अछि। एकटा शीर्षक अछि "दरभङ्गामे दरबार"। उपर्युक्त शीर्षकक अन्तर्गत प्रकाशित बिषय निम्नाङ्कित अछि—

"बहुत आनन्दक विषय थिक जे भारत सम्राट् श्रीमान् एडवर्डक जन्म-दिवसक उपलक्षमे मिथिलाधीश्वर श्रीमान् महाराज बहादुर, दरभङ्गाकेँ 'महाराज बहादुर'क पदवी वंश परम्परालय सरकारक दिससँ प्रदान कयल गेल छनि। एहि शुभावसरपर दरभङ्गामे बड़का समारोह भेल छल। श्रीमान् लफाटनेण्ट गवर्नर (छोटा लाट) स्वयं उपस्थित भय 'सनद' प्रदान कयलथिन। महाराज बहादुर एहि हर्षमे, एहि उपाधि प्रदानक शुभ उपलक्षमे एक लक्ष रुपैया खर्च करबाक प्रतिज्ञा कयलैन्ह अछि।

हमरा लोकनि सतत एहने आशा लगौने रहै छी जे कोनो तादृश हर्षक अवसर हो जे श्रीमान मिथिलाधीश अपन दुर्दश देश दिस दृष्टिपात कय एको बेरि एहन उदार दानकेँ मिथिलाक ओ मैथिल समाजक उन्नति निमित्त व्यय करथि। परन्तु अभागी मिथिला देश अद्यापि महाराजक करुणापात्र नहि भेल अछि। एक वर्ष नहि भेल अछि श्रीमान् 'प्रिन्स ऑफ वेल्स'क शुभागमनक स्मारक रूप एक लक्ष रुपैया कलकत्ताक 'लेडि डफरिन फण्ड' आदिमे देल ओ पुनः एहि अवसरपर एक लक्षमे पचास हजार रुपैया पटना नगरक नाली बनयबालय ओ पचास हजार दरभङ्गा नगरमे सर्वसाधारणक उपयोगी कोनो कार्य निमित्त खर्च करबाक श्रीमान् अपन इच्छा प्रकट कयने छथि।

---

१. पृष्ठ २१८।

श्रीमान् आइ धरि जतबा द्रव्य अनेक अवसरपर प्रदान कयने छथि अवश्ये ओकर सदुपयोग भेल अछि ओ आबहु जे पचास हजार रुपैया राखल गेल अछि से अवश्ये कोनो सदुपयोगहिमे खर्च हयत। परन्तु श्रीमान्क ओतय एतबा प्रार्थना अवश्य अछि जे दरभङ्गामे टाउन हाल (सार्वजनिक गृह), नाली वा हड़ाही दिग्घी ब्रिज (पुल) आदि बनायब तादृश उपयोगी नहि हयत जेहन एहि रुपैयाक सूद द्वारा प्राथमिक शिक्षाक प्रचारसँ देशक दशा सुधारब उपयोगी हयत। मानल जे सम्पूर्ण मिथिलामे प्राथमिक शिक्षा प्रचारहु लय एतबा रुपैया पर्याप्त नहि भय सकै अछि, परन्तु 'अकरणान्मन्द करणं श्रेयः' एहि न्यायानुसार जे भय सकय तकरे परम लाभ बुझक चाही। पुनः अवसर अवसरपर अवशिष्ट प्रान्तमे तादृश पाठशाला स्थापित होइत रहत।

सर्वतः प्रथम मिथिलामे शिक्षाक आवश्यकता छैक। ओना त' अनेक मैथिल शिशु "शीघ्र बोध' सारस्वत' वा 'कारिकावली'क पोथी हथियवितहि छथि, परन्तु तादृश शिक्षा वर्त्तमान कालमे पर्याप्त नहि भय सकै अछि। वा ओ शिक्षा माध्यमिक शिक्षाक एक अङ्ग थीक। सुनबामे आयल अछि जे हालहिंसे श्रीमान् दरभंगा मे एक संस्कृत पाठशाला स्थापित कयलैन्हि अछि। हमरा लोकनि श्रीमान् कें एहि देशोपकारक कार्य निमित अनन्तानन्त धन्यवाद दैत छियैन्ह, परन्तु एतबा अवश्य निवेदनीय अछि जे 'मूल नास्ति कुतः शाखाः ?' प्राथमिक शिक्षाक अभावहिक फल थीक जे भाष्यान्त उच्च शिक्षा पओलहु उत्तार मैथिल लोकनि बाँचब, लिखब, हिसाब (Reading, writing, Arithmetic) जे नितान्त आवश्यक विषय थीक ओहिमे नितान्त अपटु ओ अक्षम रहै छथि। प्रमाण (क आवश्यकता) नहि, विदिते अछि जे पण्डित लोकनि कें यदि अपठित पुस्तक हाथमे देल जाइन त' पढ़ैकाल अनेक स्थलमे स्खलन हयतैन्ह। साधारणो हिसाब करबामे ई लोकनि नितान्त अक्षम रहै छथि। एहना स्थितिमे लिखब, पढ़ब, गणित, भूगोल, इतिहास आदि सामाजिक शिक्षाक मिथिलामे नितान्त आवश्यकता अछि। परन्तु मिथिलेश मिथिला दिश दृष्टिपात नहि करथि तँ' आन के ठाढ़ हो ? यदि प्रभुवर दया दृष्टिसँ मिथिला कें एको निगाहे नहि देखथि तँ' आन के देखय ? श्रीमानक साकांक्ष भेने सरकारहुक दिश सँ सहायता भेटि सकत ओ तत्रत्य धनिक जमीन्दार लोकनि सेहो देशोन्नतिमे कटिबद्ध हयताह।

असमर्थ मैथिल विद्यार्थी लोकनि कें छात्रवृत्ति देब, "दरभङ्गामें कालेज खोलब, छात्रालय बनायब, मैथिल लोकनि कें औद्योगिक शिक्षा देब, इत्यादि प्रधान कर्त्तव्य महाराज बहादुर कें सर्वदा स्मरण राखक चाही। ई सब कार्य यथावकाश यदि श्रीमाने नहि करताह तँ के करत। तावत् एहि शुभावसरक उपलक्षमे यदि एहि द्रव्यसँ प्राथमिक शिक्षाक प्रचारार्थ मिथिलाक अनेक प्रान्तमे "महाराज बहादुर प्राइमरी स्कूल" (आरम्भिक पाठशाला) स्थापित कयल जाय तँ' देशक असीम उपकार हो।"

उपरिलिखित विचार कें पढ़लासँ 'हित साधन' कोना अपन नाम कें सार्थक करैत छल से स्पष्ट भ' जाइत अछि। ओ समय छलैक सामन्तवादक। समाजक सूत्रधार छलाह श्रीमानलोकनि। मिथिलामे मिथिलेशक राजतन्त्र छलनि। प्रजाक सम्पूर्ण विकासक ओ समस्त समस्याक समाधानक उत्तर-दायित्व राजापर रहैत छैक। राजा कें अपन कर्त्तव्यक स्मरण करायब जागरूक पत्रकारक कर्त्तव्य थिकैक जकर निर्वाह पूर्ण रूपें कयल गेल अछि। एहिसँ अनेक विषय पर प्रकाश पड़ैत अछि :

प्रथम—महाराज दरभङ्गा द्वारा अन्य-अन्य भागक हेतु उदारतापूर्वक दान देलो उत्तर मिथिलाञ्चलक हेतु ओ उदारता नहि रहि पबैत छल।

दोसर—जन सामान्यमे प्राथमिको शिक्षाक व्यवस्था नहि छलैक।

तेसर—पण्डितलोकनि अपना विषयमे निष्णात होइतहु लौकिकतामे अपटु होइत छलाह।

चारिम—मैथिल हित साधन ई अनुभव करैत छल जे जाधरि मिथिलामे आधुनिक शिक्षाक प्रचार नहि होयत ताधरि समाज पछुआयले रहत। एही दृष्टिएँ वंश परम्पराक हेतु 'महाराज बहादुर' पदवी प्राप्तिक शुभ अवसर पर 'महाराज बहादुर प्राइमरी स्कूल' स्थापित करबाक सर्वथा समयानुकूल परामर्श देब एक जागरूके पत्रकारक काज कहल जायत। एहिसँ स्पष्ट अछि जे हित-साधन प्राथमिक शिक्षाक प्रचारक घोर पक्षपाती छल। केवल दरभङ्गा महाराजकें सुझाव द' अपन कर्त्तव्यक इति श्री नहि बुझलक, एहि दिशामे ओकर रचनात्मक कार्य देखबा मे अबैत अछि। एही दृष्टि सँ गणित, व्याकरण, भूगोल आदि सामान्य विषयक पुस्तक लिखबा-लिखबा अपना माध्यम सँ प्रचार करैत छल। एहि सँ ईहो स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि जे 'हित साधन'क प्रकाशन सुविचारित छल, उद्देश्य निश्चित छल, ककरो

Scanned by CamScanner

देखाउस सँ एकटा पत्र प्रकाशित क' लेल जाय, जेना बादमे बहुतो पत्र देखल जाइत अछि, से सोडा वाटरक उधियानमे एकर जन्म नहि भेल छलैक ।

(एहि उद्धरणमे कहल गेल अछि—"सुनबामे आयल अछि जे हालहिमे श्रीमान् दरभङ्गामे एक संस्कृत पाठशाला स्थापित कयलैन्ह अछि" एहि उक्ति सँ बुझना जाइत अछि जे जाहि अङ्क सँ ई उद्धरण लेल गेल अछि से १९०७ ई० क आषाढ़ मासक बादक कोनो मासक थिक, कारण दरभङ्गामे जे विद्यालय स्थापित भेल छल से आषाढ़ शुक्ल द्वितीया १९०७ ई० मे। हमर पिता पं० मुक्तिनाथ मिश्र एहि विद्यालयक स्थापनेक दिन सँ नियुक्त भेल छलाह । अतः एहि हेतु हमरा प्रमाण तकबाक आवश्यकता नहि अछि ।)

एक पन्ना पृष्ठ १९ ओ २० मात्र 'मैथिली सट्टक' छपल दृष्टिपथ पर आयल । ओहिमे 'नेपथ्यमे गीत' एकटा छपल अछि । रागक नाम कजरी सेहो लिखल अछि । ओहिमे सँ एक पद मात्र उद्धृत कयल जाइत अछि जाहि सँ भाषाक स्वरूपक परिचय भेटैत अछि । पद अछि—

"टूटल कठिन महेशक चाप
धनुष तड़ित सम चमकै जगमग । मिथिलापति मानस छल दगमग ।
सगबग शेष धराधर डगमग । भूमि सहित सिय काप ।।"

उपर्युक्त उद्धरणक उल्लेख करबाक तात्पर्य जे कविवर जीवन झा रचित 'मैथिली सट्टक'क नामोल्लेख परिचयक्रममे इतिहासकार वा समीक्षकलोकनि करैत छथि, परन्तु ई सम्पूर्ण पुस्तक अप्राप्ये अछि । एहि दू पृष्ठकें देखलासँ 'मैथिली सट्टक'मे वर्णित विषयक आभास सेहो भेटि जाइत अछि । ई सीता स्वयंवरक कथापर आधारित अछि आ मैथिली शब्दक प्रयोग भाषाक हेतु नहि, प्रत्युत जानकीक हेतु कयल गेल अछि । एहिमे कविवर जीवन झाक शब्द शिल्पक परिचय सेहो जगमग, दगमग, सगबग ओ डगमग शब्द सभक सानुप्रासिक ओ ठेठ शब्दक प्रयोग सँ भेटैत अछि । एहिमे 'चमकै' शब्दमे 'य'क स्थानमे दोलेक प्रयोग देखबामे अबैत अछि जखन कि 'हित साधन' शैलीक अनुसार 'चमकय' होयबाक चाही ।

Scanned by CamScanner

तदुत्तर पृ० ४३ सँ ५८ धरिक एक खण्ड देखल जाहिमे 'प्राकृतिक दर्शन' शीर्षक एक व्याख्यात्मक निबन्ध छपल अछि। एकर लेखक के थिकाह से ओतबा अंशमे नहि छपल अछि। एहिमे देवी गीता, वेदान्तसूत्रक भाष्य देवी भागवत, ब्रह्म वैवर्त्त पुराण, तन्त्र, श्रुति, स्मृति आदिसँ प्रमाण दैत मूल प्रकृतिक विशद विवेचन कयल गेल अछि। एक ठाम निबन्धक मध्यमे लेखक स्पष्ट कयने छथि—

"मिथिला मैथिल मात्रक साधारणतः ओ विशेषतः अत्याराध्या उपास्या कुलदेवी यैह आदि शक्ति भगवती मूल प्रकृति थिकीह। अतएव मैथिल हित साधन पत्रमे सर्वतः प्रथम एहि कर्त्री हर्त्री विधात्री परमेश्वरी मूल प्रकृतिक सावशेष स्वरूप निरूपणार्थ प्राकृतिक दर्शन प्रस्तुत भेल अछि।"

बुझना जाइत अछि जे प्रायः एही सब प्रकारक विषय प्रकाशित होइत देखि काली प्रसाद सिंह चौधरि एकर आलोचना करैत एकर नाम "मैथिल पण्डित हित साधन" रखबाक व्यंग्यात्मक परामर्श देने छलथिन। अनुमान कयल जा सकैत अछि जे एकर लेखक स्वयं विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा होयताह। सब वर्गक पाठकके अपना योग्य पढ़बाक सामग्री उपलब्ध होइनि एतदर्थ पण्डित वर्गक हेतु एहन गम्भीर विषय प्रकाशित करब उद्देश्य प्रतीत होइत अछि।

किछु पन्ना पृ० ४१ सँ ४८ धरि मिथिला भाषा व्याकरणक उपलब्ध भेल। ओहि उपलब्ध अंशमे सन्दिग्ध भूत तथा हेतुहेतुमद्भूतकालक नियम ओ कोष्ठक बनाय उदाहरण द्वारा बुझयबाक प्रयास कयल गेल अछि। विलक्षणता ई अछि जे नियम कहल गेल अछि हिन्दीमे तथा उदाहरण देल गेल अछि मैथिलीमे। हमरा बुझना जाइत अछि जे प्रवासी मैथिललोकनि, जे आगरा, अजमेर, झाँसी, अलीगढ़, फीरोजाबाद, जैत (मथुरा) आदि ठाम बसि गेल छथि ओ मातृभाषा बिसरि गेल छथि, तनिके सबके मैथिली सिखयबाक उद्देश्यसँ हिन्दी माध्यम अपनाओल गेल अछि। ध्यातव्य जे एखनहुँ प्रवासी मैथिल ब्राह्मणलोकनि एकर आवश्यकताक अनुभव करैत छथि जे व्यक्तिगत सम्पर्कसँ नीक जकाँ जानल अछि। कतेक दूरदर्शितापूर्ण काज आइसँ ७०-७५ वर्ष पूर्व आरम्भ कयल गेल छल तकर प्रमाण ई काज थिक।

Scanned by CamScanner

'हित साधन' शिक्षा प्रचारक हेतु कोना विविध-विधाक पुस्तकक प्रणयन कराय प्रकाशमे अनैत छल, तकर सम्यक् परिचय प्राप्त करबाक हेतु किछु-किछु उदाहरण दैत छी।

उपर्युक्त व्याकरणक नियम अछि—"सन्दिग्धभूत से भूतकाल की क्रिया में सन्देह ज्ञात होता है। इसके रूप बनाने का नियम है कि यदि क्रिया सकर्मक हो तो धातु मूल के अन्त में 'ने' लगाकर (अथवा सामान्यभूत के 'ल' को 'ने' में परिवर्त्तन करके) हयब क्रिया के भविष्यत रूप जोड़ते चले जाइये यथा मारब क्रिया का मूल हुआ 'मार' इससे 'ने' लगाने के बाद हयब क्रिया के भविष्यत काल का रूप लगाकर अन्य पुरुष एक वचन में 'ओ मारने हयत' (उसने मारा होगा) ऐसा रूप बनता है। भिन्न भिन्न पुरुषों के कर्त्ता तथा कर्म हो जाने पर जो रूप में अन्तर होता है सो निम्न निर्दिष्ट उदाहरणों से सिद्ध होगा—मारब (मारना) धातु

कर्त्ता अनादर	कर्त्ता अन्य पुरुष ओ ओकरा लोकनि	कर्म अन्य पुरुष ओकरा वा ओकरा लोकनिकें मारने हयतैक वा हयत	कर्म अनादर
कर्त्ता आदर	ओ वा ओ लोकनि वा हुनका लोकनि	ओकरा वा ओकरा लोकनिकें मारने हयताह वा मारने हयथिन	कर्म अनादर
कर्त्ता अनादर	ओ ओकरा लोकनि	हुनका वा हुनका सबहिकें मारने हयतैन	कर्म आदर
कर्त्ता आदर	ओ, हुनका लोकनि वा ओ लोकनि	हुनका वा हुनका सबहिकें मारने हयथिन	कर्म आदर

आदि-अन्त किछु नहि रहलाक कारणें लेखक अज्ञात छथि। ई तँ भेल व्याकरणक उदाहरण। आब गणितक उदाहरणक अवलोकन कयल जाय।

Scanned by CamScanner

किछु पन्ना एहन देखबामे आयल अछि जाहिमे गणितक विचार कयल गेल अछि। शीर्षक अछि 'मिथिला गणित पाटी' आ उपशीर्षक अछि—परिकर्माष्टक। पोथी आरम्भ होइत अछि—अथ संख्या प्रकरण। ई पन्ना सब पृ० १७सँ ३० पर्यन्त अछि। संख्या प्रकरण समाप्त भेलापर छपल अछि—इति शशिपाल कृतायां मिथिला गणित पाट्यां संख्या प्रकरणम्। स्मर्तव्य जे इतिहासकारलोकनि हित साधनक प्रमुख लेखकलोकनिमे कवीश्वर चन्दा झा, विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा, सोनेलाल झा, गणेशदत्त पाठक, रामभद्र झा, यदुनाथ झा 'यदुवर' तथा कविवर जीवन झाक नामोल्लेख कयने छथि, किन्तु शशिपाल झाक नामक कतहु चर्चा नहि छनि।

संख्या प्रकरणक बाद अछि योग प्रकरण, तकर बाद विषमाङ्क योगचक्र आरम्भ होइत अछि। विषय वस्तुकेँ बुझयबाक हेतु परिभाषा, उदाहरण, अङ्क चक्र, प्रश्न सब बनाओल अछि। उदाहरणार्थ किछु उद्धरण प्रस्तुत अछि—

एक परिभाषा—"एक दशादिक अंकक संज्ञा
दिग्गुण उत्तर कैल प्रतिज्ञा

यथा, उदाहरण—दशगुण उत्तर एकक मानक संख्या यैह थीक—

१	=	१ = एक
१ × १०	=	१० = दश
१ × १० × १०	=	१०० = शय
१ × १० × १० × १०	=	१००० = एक हजार
१ × १० × १० × १० × १०	=	१०००० = अयुत
१ × १० × १० × १० × १० × १०	=	१००००० = लाख

इत्यादि परार्द्ध पर्यन्त जानू"

प्रश्नक स्वरूप बड़े मनोरञ्जक अछि। अतः एक उदाहरण देखल जाय—

"अय दाई विधिकाँ दिनादि लयकेँ अद्यावधी सौरसों
कतबा वर्षक मान बीतल अहाँ सेटा कहू यत्न सों।
अय भौजी पुछिओनि जाय कोबरा गेहे अहाँ यत्न सों
ननदोसी कहताह सर्व मनमे राखब अहाँ यत्नो सों॥

मैथिल हित साधन

ई पुस्तक शक संवत् १८२६मे लिखल गेल अछि। सम्पूर्ण भेल वा नहि तकर कोनो पता नहि अछि। एहिमे हिसाब सब अपना ढङ्गक अद्भुते अछि। एकटा प्रश्न अछि—

"मिथिलेश श्री १०८ रमेश्वर सिंह बहादुर के. सी. आइ. ई. जीक राजनगरक मकानमे खर्चक संख्या लिखै छी, सभक योग कहू।" तदुत्तर ईंटाक खर्च, केवाड़क खर्च, बिजली लगाबयमे खर्च, झाड़ आदिक खर्च, जनमजदूर सभक पृथक्-पृथक् खर्चक संख्या देल अछि आ सभक योगफल चौदह लाख भेल से लिखल अछि। एहिना अंग्रेजी मासक प्रत्येक मासमे कतेक दिन होइछ तकर उल्लेख क' अन्तमे योगफल देल अछि। एतात्रता राजनगरक निर्माणक बादक ई अंक थिक।

किछु पन्ना जे देखबामे आयल से पृष्ठ ९सँ १६ धरि अछि आ एहिमे भूगोल छपल अछि। जे अंश उपलब्ध भेल अछि ताहिमे एशिया महादेशक परिचय छपल अछि। ताहि क्रममे सीमा, परिमाण मनुष्य संख्या, देश, द्वीप, उपद्वीप वा प्रायद्वीप, स्थल संयोजक, मैदान, पर्वत, अन्तरीप, सागर ओ उपसागर, जल संयोजक वा प्रणाली, महाह्रद, एतबा उपशीर्षक अछि, किन्तु अन्तिम अंश अपूर्ण अछि। ओहि समयक मनुष्य संख्या सम्पूर्ण एशियामे तिरासी करोड़ लिखल अछि। उदाहरणार्थ किछु उद्धरण प्रस्तुत अछि—

परिमाण—पृथ्वीक अन्य कोनो महाद्वीपक अपेक्षा एशिया बहुते विस्तृत अछि। सम्पूर्ण पृथिवीक स्थल भागक तृतीयांस (श) एही महाद्वीपक अन्तर्गत अछि। एशियाक परिणामफल प्राय: १७४००००० वर्ग माइल छैक।

मनुष्य संख्या—"सृष्टि भरिक मानव जातिमे आधाक निवास स्थान यैह महाद्वीप थीक। मनुष्य संख्या ८३०००००००० छैक।" एवं क्रमे एशियाक परिचय देल गेल छैक। देश सभक अंग्रेजी नाम विशेष रूपें देखबामे अबैत अछि आ ओहि समयमे जे देशक नाम छलैक, जाहिमे बहुतोक नाम बदलि गेलैक अछि, ताहि सभक परिचय एहिसँ प्राप्त होइत अछि।

तदुत्तर किछु अंश जे दृष्टिपथपर आयल अछि तकर आदि खण्डित छैक। पृष्ठ ३ ओ ४ पर ज्योतिष शास्त्रक भूमिका छपल अछि। तदुत्तर पृष्ठ संख्या १ तथा २ पर आरम्भ होइत अछि ज्योतिष शास्त्र। एकर लेखक

Scanned by CamScanner

थिकाह गणेश दत्त पाठक, मण्डला (मध्यप्रदेश)। एहि पुस्तकमे वर्णित विषयक प्रसङ्ग भूमिकाक उपलब्ध अंशमे प्रकाश देल गेल अछि। अतः भूमिकाक ओलबा अंश उद्धृत करब समीचीन प्रतीत होइत अछि। ओ अंश थिक—

"प्राचीन कालमे ज्योतिःशास्त्रसम्बन्धी विचार कोन प्रकारक छल ई बुझबाक निमित्त अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ देखैक चाही जे एकर ग्रन्थो भेटैत अछि की नहि। विद्वान मात्रक ई स्थिर सिद्धान्त अछि जे वेद अत्यन्त प्राचीन थिक। हमरा लोकनिक मते त' वेद अनादि अछि। अस्तु! प्राचीनो मानबासँ उपस्थित विषयक परामर्श निकें भय सकत। यदि वेदमे एतद्विषयक चर्चा भेटय त' प्राचीन कालक ज्योतिष ज्ञानक किछु अटकर भय सकय।

तदुत्तर पुराण अछि। एहिमे जतबा ज्योतिषक उल्लेख आयल अछि ताहिसँ तत्कालीन ज्योतिर्विद्याक ज्ञान भय सकैत अछि।

तत्पाश्चात् ज्योतिषक सिद्धान्त ग्रन्थक काल थिक। जखन एतद्देशमे एकर ज्ञान अन्तिम सीमाकेँ पहुँचल तखन एकर ह्रास काल अथवा करण ग्रन्थक काल बुझक चाही।

एना एकरा इतिहासक वर्णन लय निम्न निर्दिष्ट प्रकारे कार्य चलि सकत। १. वैदिक काल २. पौराणिक काल ३. सिद्धान्त काल ४. करण काल। एहिसँ अतिरिक्त आओरो विभाग भय सकै अछि, परन्तु से तेहन निकट-निकट हयत जे एककेँ दोसरासे पृथक् करब कठिन जकाँ भय जायत। आओर तत्तत्काल पूर्व अथवा परमे सम्मिलित भय सकत। यथा—वेदाङ्ग काल प्रथम आओर द्वितीयक मध्यमे अछि आओर ओ प्रथमहिमे सम्मिलित कयल जा सकै अछि।

अतएव उपरोक्त काल विभाग क्रमे ज्योतिर्विद्याक वृद्धि आओर ह्रासक इतिहास सूक्ष्म रीत्या लिखल जायत आओर मध्य-मध्यमें अन्य देशीय ग्रन्थ आओर ग्रन्थकारहुक विषयमे उल्लेख कयल जायत। आओर प्रत्येक प्रकरणमे अनेक प्रमाणसें इहो जनबाक चेष्टा कयल जायत जे ओहिकालमे ज्योतिष ज्ञानक की स्थिति छल।"

एहि उद्धरणकेँ देखलासँ ज्ञात होइत अछि जे ई ज्योतिष शास्त्रक ग्रन्थ नहि, प्रत्युत ज्योतिष शास्त्रक क्रमिक विकासक इतिहास थिक। गणेशदत्त पाटक एक निविष्ट ज्यौतिषी छलाह जे एही हित साधनमे छपल एक विज्ञापनसँ ज्ञात होइत अछि। ओ जन्मपत्र ओ वर्षपत्र बनबयबाक हेतु एक

Scanned by CamScanner

विज्ञापन छपबौने छलाह जाहिमे जन्मपत्रक हेतु ४/ रु० आ वर्षपत्रक हेतु १/ रु० पारिश्रमिकक उल्लेख कयल गेल अछि।

एक खण्ड उपलब्ध भेल अछि जाहिमे 'मैथिल चारु चर्या' नामक पुस्तक प्रकाशित अछि। ई आदिसँ अन्त धरि २८ पृष्ठ अछि। एहिमे वर्षक उल्लेख नहि अछि, परन्तु "मैथिल हितसाधन-१" छपल अछि। हमर अनुमान अछि जे प्रायः हितसाधनक प्रथम अंक यैह थिक, परन्तु ने एहिमे सम्पादकीय अछि ने प्रकाशनक उद्देश्यपर कोनो प्रकाश देल गेल अछि, तेँ सन्देहास्पदो अछि। ?

ई 'मैथिल चारु चर्या' एक संस्कृतक पुस्तक थिक जकर रचयिता ढंगा-हरिपुर ग्राम निवासी प० जगमोहन झा थिकाह। एहि श्लोकवद्ध पोथीक प्रत्येक श्लोकक भावार्थ श्लोकक नीचा मैथिलीमे लिखल गेल अछि। भूमिकाक रूपमे लेखक स्वयं लिखने छथि—

प्रिय मैथिल बन्धु !

ई मैथिल चारु चर्या हमर प्रथम निवन्ध थीक। एकर पूर्वार्द्धमात्र मैथिल हित साधन समितिकेँ अपन सर्वोत्तम मासिक पत्रमे प्रकाशित करबाक निमित्त देल अछि। यदि पाठक लोकनिक मोनमे एहि चारु चर्यामे कनेको सन्तोष हयतैन्ह तँऽ शीघ्रे एकर उत्तरार्द्धो बनयबाक पूर्ण प्रयत्न कयल जायत।

विनयावनत

श्री जगमोहन झा

एहिमे कुल ७० गोट श्लोक अछि जाहिमे मिथिलाक आचार-विचारक वर्णन कयल गेल अछि। मंगलाचरणमे योगीश्वर याज्ञवल्क्य ओ हरिसिंह-देवक वन्दना कयल गेल अछि। याज्ञवल्क्यक संग योगीश्वर ओ हरिसिंहदेवक संग पञ्जीश्वर विशेषण जोड़ल गेल अछि। भाषा टीकाक हेतु सेहो एक मंगलश्लोक अछि जाहिमे सौराठक महादेवकेँ सभेश्वर कहि प्रणाम कयल गेल छनि। जाहि ठामसँ ग्रन्थारम्भ होइत अछि ताहिठाम स्वयं महादेवकेँ सौराठ सभामे उपस्थित कराय महादेवक मुँहसँ मिथिलाक विशेषताक वर्णन पार्वतीकेँ सुनाओल जाइत छनि। एहिठाम उपरिचर्चित तीनू श्लोक उद्धृत कयल जाइत अछि—

Scanned by CamScanner

प्रथम मङ्गल श्लोक—

प्रणम्य योगीश्वरयाज्ञवल्क्यं स्मृत्यर्थपूतं मिथिलाप्रदेशम् ।
पञ्जीश्वरं श्रीहरिसिंहदेवं विविच्यते मैथिलचारुचर्या ।।

द्वितीय

सभ—समेश्वरं शिवं नत्वा सदा सौराष्ट्रवासिनम् ।
मिथिला चारु चर्यायाः भाषां कुर्वे स्वयं मुदा ।।

ग्रन्थारम्भमे जे श्लोक अछि तकर स्वरूप निम्नलिखत अछि—

"सौराष्ट्रे रमणीयतामुपगता विद्वत्सभा सप्रभा
यां द्रष्टुं स्वयमागतो गिरिजया सार्द्धं शिवः प्राह ताम् ।
कैलासो न विलासदो गिरिसुते ! वाराणसी तादृशा
वत्स्याम्यत्र चिरं त्वयाभिरमतो यावत् सभा स्थास्यति ।"

एहि श्लोकक अर्थ मैथिलीमे निम्न रूपें कयल गेल अछि—

"सौराष्ट्रमे प्रभासँ युक्त सभा अतिशय शोभित भय रहल अछि जाहि सभाकेँ देखबाक निमित्त पार्वतीक सङ्ग साक्षात् महादेव अयलाह। ओ सभाक रमणीयता देखि पार्वतीकेँ कहलथीन्ह जे हे पार्वती ! यावत् ई मैथिल सभा रहत तावत् अहाँसँ क्रीड़ा करैत एतहि रहब। एहन आनन्द हमरा कैलास वा काशीमे नहि भेल जे आनन्द पञ्चक्रोशी मैथिल सभा देखि भेल अछि ।"

पुस्तकक अन्तमे मैथिल हित साधन समिति द्वारा एक निवेदन कयल गेल अछि—

प्रिय पाठक महोदय गण !

ढंगा हरिपुर ग्रामनिवासी प० श्री जगमोहन झा जयपुरमे चिरकालसँ श्रीमहाराज बहादुरक आश्रित छलाह ओ ई मैथिल चारु चर्या नामक निबन्ध निर्माण कय हित साधन पत्रमें मुद्रण निमित्त सानुनयपूर्ण अनुरोध तथा एकर उत्तर खण्ड शीघ्र निर्माण करबाक प्रतिज्ञा कयलैन्ह। हुनका अनुरोधें ई निबन्ध मासिक पत्रमें प्रकाशित कयल गेल अछि ।

परन्तु शोक ! एकर निर्माण कयलाक बाद गत माघ मासमे ओ जयपुर से देश गेलाह ओ बाटहिमे रुग्ण भय देश पहुँचैतमात्र एहि असार संसारक त्याग कय देलैन्ह। हुनका दुःखित परिवारक सङ्ग हमरालोकनिक हार्दिक सहानुभूति अछि।

Scanned by CamScanner

आब एकर उत्तर खण्ड अप्राप्य बुझि खण्ड विभाग छोड़ि एकरा पूर्ण निबन्ध रूपें प्रकाशित कयल अछि। यद्यपि एहि निबन्धमे चारु चर्या यादृश योग्यता दृश विषय नहि छैक तथापि केवल विवाह विषयमात्रमें आग्रह-ग्रहिल निबन्धा प्रायः उत्तर खण्ड विषयानुरोधें एकर मैथिल चारु चर्यानाम धयने होथि से सम्भव थीक। एहना स्थितिमे हमरहु लोकनि एकर वैह नाम राखब उचित बुझल अछि। यदि मुद्रण दोषें वा अनवधानें कोनो दोष रहि गेल हो त अपनेक सन क्षमा सागर लोकनिकें क्षन्तव्य थीक।

विनीता
मैथिलहित साधन समिति

एहिसँ ई ज्ञात होइत अछि जे हित साधन संस्कृतोकें स्थान दैत छल आ एकर संचालन एक समिति द्वारा होइत छल।

एक अंश पृष्ठ १ सँ ८ धरि दृष्टिपथ पर आयल जाहिमे 'हिन्दी भाषा' शीर्षक एक लेख छपल अछि। एकर लेखक थिकाह पं० गणेशदत्त पाठक। एहिमे दू गोट उपशीर्षक अछि 'विचार और स्वभाव' तथा 'विचार आओर भिन्न दशाओंपर उसका प्रभाव'।

ध्यातव्य जे ओहि समय धरि मिथिलामे हिन्दीक प्रचार एकदम नहि छलैक। ओना विशुद्ध संस्कृतक विद्वान तँ एखनहु हिन्दीमे अपरिपक्वे होइत छथि। अतः मिथिलाक निवासीकें हिन्दीसँ सम्पर्क बढ़यबाक हेतु मध्यप्रदेश निवासी पं० गणेशदत्त पाठक हिन्दीमे लिखैत छलाह तँ दोसर दिस प्रवासी मैथिललोकनिकें मैथिलीसँ सम्पर्क बढ़यबाक हेतु हिन्दीक माध्यमसँ मैथिलीक व्याकरण प्रकाशित कयल जाइत छल। एकरा हम सुविचारित योजना बुझैत छी। एहि सँ प्रमाणित होइत अछि जे हित साधन एक स्पष्ट लक्ष्य बनाय ओहि उद्देश्य प्राप्तिक दिशामे संलग्न छल।

किछु अंश जे देखबाक सुयोग भेटल से अगस्त १९०६ ई०क वा तकरा बादक कोनो मासक अङ्क भ' सकैत अछि। एहि अनुमानक आधार अछि "मिथिला रिसर्च सोसाइटी" दरभङ्गाक एक विज्ञापन जाहिमे अगस्त १९०६ ई० छपल अछि। ई अंश पृष्ठ १ सँ पृष्ठ १४ पर्यन्त अछि। एकर शीर्षक छैक प्रकीर्णक। एहि शीर्षकक आगू मे छपल अछि—'संवाद तथा टिप्पणी' तकर अंग्रेजी रूपान्तर कोष्ठमे देल अछि—'Newes and notes' तदुत्तर एक उपशीर्षक अछि—'विलक्षण दाम्पत्य'! जकर लेखक थिकाह

Scanned by CamScanner

जलधर झा। ई जलधर झा हमरा जनैत जोंकी महिनाथपुरक निवासी छलाह आ विद्यावाचस्पति मधुसूदन झाक प्रिय शिष्य छलथिन। ई जयपुरमे रहल छलाह। हिनक सुपुत्र प्रो० श्रीकृष्णदत्त झा सहर्षा कालेजमे संस्कृतक विभागाध्यक्ष छथिन जनिका संग बाल्य अवस्थामे पढ़बाक सुयोग भेटल अछि।

हिनक सोदर जटाधर झा रमेश्वर लता संस्कृत महाविद्यालयमे लिपिक छलथिन। ओहिठाम ई अबैत छलाह आ हिनका मुँहेँ विद्यावाचस्पतिक अनुपम पाण्डित्यक चर्चा सुनल अछि। अस्तु। उक्त उपशीर्षकक अन्तर्गत छपल मुजौना (समस्तीपुर) गामक निवासी एक क्रूर, निष्ठुर ओ अविवेकी ब्राह्मण द्वारा, जनिक विवाह पिड़ारुछ छलनि, पत्नीक परित्यागक सत्य घटना वर्णित अछि। उक्त ब्राह्मण समस्तीपुर स्टेशन पर आबि अपन अबोध शिशुक संग अपना स्त्रीकेँ दरभङ्गावाली गाड़ीमे बैसाय अपने कोना पर भ' गेलाह तकर कारुणिक वर्णन करैत लेखक उक्त ब्राह्मणक सङ्ग समाजोक भर्त्सना कयने छथि।

तकर बाद 'नूतन आविष्कार', 'शोक समाचार', 'सृष्टि मे प्राकृतिक एक विवाह' आदि समाचार सब छपल अछि। घटना सब बड़ मनोरञ्जक अछि। समाचार सभक स्वरूप केहन होइत छल से ज्ञात करबाक निमित्त किछु उदाहरण एतय उपस्थित अछि।

'नूतन आविष्कार' एक घण्टामे २५० मील पत्र पार्सल पहुँचौनिहार अपूर्व डाक''—

''प्रोफेसर ऐण्डर्सन नामक एक डैनमार्कक प्रसिद्ध वैज्ञानिक चुम्बकक सहायता सेँ एक घण्टा मे २५० मील पत्रादि पहुँचयबाक प्रयास कइये रहल छथि। तावत् रोमक दोसर वैज्ञानिक पिसीसेली नामक दोसर रीतिसँ अद्‌भुत डाक गाड़ीक आविष्कार कयलैन्ह अछि। ओकरा अनुसारे तीनि तीनि सौ फीटक अन्तर पर अनुमान ५० फीट ऊँच स्तम्भ ठाढ़ कयल जायत, स्तम्भ सबहिक ऊपर बराबरि तार लगौला उत्तर पत्र तथा पार्सलक पहियावाला बक्स ओहि तार पर बिजलीक जोर से दौड़ाओल जायत। एवं प्रकारेँ सुमगतासेँ एके घण्टा मे २५० मील पत्रादि पहुँचि सकत। विलक्षणता ई जे एहि गाड़ीक चलयबामे सरकार केँ वर्त्तमान डाकक खर्चक अपेक्षा कइएक लक्ष खर्च न्यून पड़तैन्ह।'' एहिमे सरकारक हेतु आदरार्थक क्रियापद 'पड़तैन्ह'क प्रयोग द्रष्टव्य।

शोक समाचारमे सोनबरिसाक महाराज हरिवल्लभ नारायण सिंह तथा जयपुर राजकीय संस्कृत विद्यालयक प्रधानाध्यक्ष प० लक्ष्मीनाथ शास्त्रीक

Scanned by CamScanner

मृत्युक समाचार अछि। ई तँ भेल न्यूजक (Newes) उदाहरण, आब नोट्स (Notes) क उदाहरण देखल जाय। 'सृष्टिमें प्राकृतिक एक विवाह' हमरा जनैत नोट्सक उदाहरण थिक। एहिमे हिन्दीक सुप्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' मे प्रकाशित एक लेखकेर आलोकमे अप्रत्यक्ष रूपेँ बहुविवाह प्रथापर व्यंग्य कयल गेल अछि।

एकर बाद तीनिगोट विज्ञापन अछि। एक तँ प० गणेश दत्त पाठकक ज्योतिष सम्बन्धी जकर उल्लेख पूर्वमे कयल गेल अछि। दोसर विज्ञापन थिक मिथिला रिसर्च सोसाइटीक। एहिमे सोसाइटीक उद्देश्य, कार्यकलाप, योजना तथा सदस्यलोकनिक नामावली आदिक सूचना अछि। एहिसँ सूचित होइत अछि जे ई संस्था १९०५ ई०मे स्थापित भेल छल। एहि नामक मैथिली रूपान्तर कयल गेल अछि—मिथिला तत्त्व विमर्षिणी सभा। अनुमान कयल जा सकैत अछि जे अपन मधुबनी प्रवासकालमे मैथिली विषयक बहुतो अन्वेषण कयने ओ करौने छलाह डाँ० ग्रियर्सन।

एहि ठामक विद्वानलोकनिमे अनुसन्धानक प्रति अभिरुचि उत्पन्न भ' चुकल छलनि। डॉ० ग्रियर्सनक सम्पर्कमे जे विद्वानलोकनि छलाह ताहिमे प्रमुख छलाह कवीश्वरचन्दा झा, म० म० प० परमेश्वर झा, प० बबुजन झा, प० भाना झा, प० हली झा आदि[१]। प्रायः एही पृष्ठभूमिमे मिथिला रिसर्च सोसाइटी सदृश संस्थाक संगठन भेल हो से सम्भव। कदाचित् मिथिलाञ्चलमे एहन संस्था संगठित भेलाक कारणेँ प्रवासमे रहनिहार विद्वानलोकनि किछु ठोस कार्य करबाक प्रसङ्ग सोचने होथि आ मैथिल हित साधन समितिक स्थापना भेल हो जाहि समितिक प्रयासेँ 'मैथिल हित साधन' पत्रिकाक प्रकाशन भेल हो सेहो सम्भव। अस्तु।

मिथिला रिसर्च सोसाइटी प्रसङ्ग जे विज्ञापन अछि ताहिमे उद्देश्य पर प्रकाश दैत कहल गेल अछि—

"दरभङ्गामें एक सभा मिथिला रिसर्च सोसाइटी (मिथिला तत्त्व विमर्षिणी) नामक लगभग ड़ेढ़ वर्ष सँ अछि। (१) संस्कृत विद्याक पठन-पाठन बढ़ायब (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रण करब (३) मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान आ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब (४) मिथिलाक ऐतिहासिक

---

१. भारतक भाषा सर्वेक्षण, अनुवादक : श्री कुलानन्द मिश्र ओ श्री मोहन भारद्वाज (प्र०—मैथिली अकादमी, पटना) पृ० ३।

स्थान ओ वस्तु सभक अन्वेषण ओ यथासाध्य जीर्णोद्धार करब (५) देशाचारानुसार आओरो-आआरो विषयक उन्नति करब उक्त सभाक उद्देश्य छैक ।''

एहि सोसाइटीक संरक्षक छलथिन मिथिलेश महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह तथा कलकत्ता हाइकोर्टक जज बाबू शारदा चरण मित्र । सदस्यलोकनि छलथिन—बाबू तुलापति सिंह, विन्ध्यनाथ झा, म० म० डॉ० गङ्गानाथ झा, विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, कालीबाबू डाक्टर, म० म० चित्रधर मिश्र, कवीश्वर चन्दा झा, वैयाकरणकेसरी म० म० परमेश्वर झा आदि । प्रायः म० म० परमेश्वर झा एही योजनाक अन्तर्गत 'मिथिला तत्त्व विमर्श' नामक ग्रन्थक रचना करबाक हेतु प्रेरित भेल होयताह ।

दोसर विज्ञापनक भाषा हिन्दी अछि । यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिनी शाखीय वाजसनेयिनां नित्यकर्मपद्धति : (भाषा टीका) क विज्ञापन अछि । विज्ञापनदाता थिकाह—ठाकुर प्रसाद झा, आगरा । तिथि छपल अछि—श्रावण शुक्ल द्वितीया १९६३ संवत् । एतावता ई १९०६ ई० क अङ्क थिक से स्पष्ट होइत अछि ।

एहि अङ्कमे द्वितीय वर्षक सहायतार्थ हित साधनकें १००/रु० साहाय्य देबाक उपलक्षमे महाराज दरभङ्गाकें धन्यवादज्ञापन कयल गेल छनि । अन्तिम पृष्ठमे ''धर्मक रक्षा'' शीर्षक एक विज्ञप्ति छपल अछि जे खण्डित अछि । जतबे अंश उपलब्ध अछि से आजुक सन्दर्भमे बड़ प्रासंगिक अछि । अतः उद्धृत कयल जा रहल अछि—

''प्रिय पाठक गण ! विलायती चीनीमे गोरक्त तथा अन्यान्य अनेक जन्तुक अस्थि आदि पड़बा सें ओ नितान्त अपवित्र थीक ई बूझि देशदेशान्तरमे हिन्दू मात्र एकर त्याग कयलक अछि । नाना देशमे पूर्वसञ्चित हजारो मोन चीनी पानिमे फेकि देल गेलैक । स्थान-स्थानमे विलायती चीनीक बनल सैकड़ा मोन मिठाइ पशु वगैरहकें देल गेलैक । आशा अछि मैथिल भाइ आब एहि अपवित्र चीनीक स्पर्शसँ अपन हाथो मात्र दूषित नहि कय धर्मक रक्षा करताह । कतेक गोटाकें एहि चीनीक अपवित्रतहुमे सन्देह छनि । तनिका लोकनिकें सन्देह निवृत्त करबा लय डाक्टर ब्रेकक बनाओल लन्दनमे मुद्रित डिक्शनरी आफ आर्ट्स नामक पुस्तक देखक चाही । ओहि पुस्तकक तृतीय संस्करणक १२०५ पृष्ठमे जे लिखल अछि तकर स्पष्ट अभिप्राय छैक जे एक बेरि खांड़ साफ भेलाक बाद तामाक पात्रमे चूनक पानिमे चीनी

राखि ओहिमे बड़दक शोणित ओ थोड़ेक हाड़क चूर्ण देल जाइ छैक ताहिसँ ओ अधिक साफ भय जाइ छैक। देश-देशान्तरमे स्थान-स्थानमे सभा समिति भय एकर त्याग कयल गेल अछि। परम आनन्दक विषय हयत यदि मिथिलहुमे ब्राह्मण, क्षत्रिय, भूमिहार प्रभृति धार्मिक महाशयलोकनि सभा समिति कय एकर परित्याग करबामे दृढ़प्रतिज्ञ हयताह। पण्डित लोकनिकेँ एवं धर्म सभाक नेता लोकनिकेँ एहि विदेशी चीनी दिश विशेष मनोयोग देमक चाही।...........''

मैथिल हित साधन पत्रिकासँ जतबा उद्धरण देल गेल अछि तकरा सभक अनुशीलन कयलासँ हमर जे धारणा भेल अछि तकरा समग्र रूपेँ निम्नलिखित शब्दमे अङ्कित कयल जाइत अछि। विश्वास अछि जे एहिमे असहमतिक कोनो स्थान नहि भ' सकैत अछि।

प्रथमतः ई जे बहुत चिन्तन ओ विचारमन्थनक बाद एकर नाम "मैथिल-हित-साधन" राखल गेल होयत—''यथा नाम तथा गुणः''। कोनो समाजक हित साधनक हेतु सर्वप्रथम ओहि समाजमे शिक्षाक व्यापक प्रचार अपेक्षित रहैत छैक। मिथिलाञ्चलमे आधुनिक शिक्षाक सर्वथा अभाव छल। एहि अभावकेँ दूर करबाक हेतु हित साधन एक योजनाबद्ध कार्यक्रम अपनौने छल जाहि द्वारा ओहि दिशामे अग्रसर भेल प्रतीत होइत छल। एहि कारणेँ व्याकरण, गणित, भूगोल आदि बालोपयोगी पुस्तक लिखबाय ओकरा सभक प्रकाशन करैत छल। बालोपयोगी विषयक सङ विद्वमण्डलीक हेतु सेहो पाठ्य सामग्री चाही एहि दृष्टिसँ मैथिल चारु चर्या, प्राकृतिक दर्शन, ज्यौतिषशास्त्रक इतिहास सदृश पुस्तकक प्रकाशन करैत छल। कविता, कथा, उपन्यास आदि साहित्यिक विषयकेँ प्रमुखता नहि द' समाजकेँ मुख्य रूपसँ शिक्षाक दिस अभिमुख करब अभिप्रेत छलैक। 'दरभंगामे दरवार' शीर्षकमे सेहो एहिपर विशेष बल देल गेल अछि। तेँ हाहा-हीही-लल्लो-चप्पो आदि जे लिखल गेल से एहि दृष्टिसँ सर्वथा समीचीने छल। एहि दृष्टिसँ देखला उत्तर बाबू लक्ष्मीपति सिंहजीक ई आक्षेप जे सम्पादकीय मन्तव्यक रूपेँ काकु ओ व्यंग्यक धुरखेल मचय लागल ततेक समीचीन नहि प्रतीत होइत अछि।

हित साधन तँ धर्मक रक्षासँ सेहो सम्बद्ध अछि। ताहू दिस एहि पत्रकेँ जागरूक देखल जाइत अछि। ई भिन्न बात थिक जे आइसँ ७३-७४ वर्ष

पूर्व समाजमे रूढ़ि ओ धर्मान्धता बेसी छलैक। 'मैथिल हित साधन'क प्रकाशनो तँ ओही सामाजिक वातावरणक पृष्ठभूमिमे होइत छल। तेँ यदि आइ अतिरञ्जकता प्रतीत होइत अछि तँ कोनो असङ्गत नहि, परन्तु बहु विवाह आदि जे अनेक प्रकारक कुरीति समाजमे पसरल छल तकरो सभक निवारणक दिशामे जनमतकेँ प्रशिक्षित करबाक प्रयत्न दृष्टिगोचर होइत अछि।

पत्रिकाक माध्यमसँ पुस्तकक प्रकाशनक परम्पराक तँ ई जन्मदाता छल। एकरा बाद जतेक पत्र-पत्रिका प्रकाशित होइत रहल अछि अधिककेँ एहि मार्गपर अग्रसर होइत देखल जा सकैत अछि।

भाषा शैलीक प्रसंग 'हितसाधन' एकदम सावधान बुझना जाइत अछि। लाघवक दृष्टिएँ 'सकैत, जाइत, होइत, आदि क्रियापदसँ तकारकेँ निष्कासित कयने छल। कयल, कय, जायत, भय आदिमे सावधानता-पूर्वक यकारक प्रयोग देखल जाइत अछि। 'होयत' क्रियापदक ओकारकेँ सेहो विसर्जित क' हयतैन्ह, हयत आदि प्रयोग देखल जाइत अछि जे कवीश्वर चन्दा झा अपना रामायणमे कयने छथि। गुरु उच्चारणक हेतु विकारी (लुप्ताकार) 'ऽ'क प्रयोग ओही समयसँ भ' रहल अछि तकर प्रमाण 'तँऽ' शब्दक स्वरूप देखल जा सकैत अछि। करण तथा अपादान कारकमे 'सेँ' विभक्तिक प्रयोग हिन्दी ओ मैथिली दूनू भाषामे देखल जाइत अछि। अधिकरण कारकक चिह्न 'मे' अनुस्वारक संग प्रयुक्त भेल देखैत छी जे बादोमे पत्रकारलोकनि ग्रहण कयने छथि। एहिमे आगाँ चलि क' चन्द्रबिन्दु आ वर्त्तमान समयमे तकरो लुप्त कयल गेल अछि। वर्गक पञ्चम अक्षरक संग संयुक्ताक्षरेक प्रयोग सर्वत्र दृष्टिगोचर भेल। सम्प्रति जाहि प्रकारेँ पञ्चमाक्षरक संग संयुक्ताक्षरक बदला अनुस्वारसँ काज लेल जाइत अछि, यथा सञ्चयक स्थानपर संचय, घण्टाक स्थानपर घंटा, सम्बन्धक स्थानपर संबंध आदि प्रयोग भ' रहल अछि से सर्वथा वर्जित देखैत छी।

भाषामे अंग्रेजी शब्दक प्रयोग क्रमहि प्रवेश क' रहल छल—'न्यूज' नोट्स आदि एकरे द्योतक थिक। लेफ्टिनेंटक बदला लफाटनेण्टक प्रयोग तँ बेस मनोरञ्जक अछि। निगाह, वगैरह आदि उर्दूक शब्द सेहो भेटैत अछि। निगाह शब्दक संग मैथिलीक करण कारकमे प्रयोक्तव्य 'एँ' जोड़ि 'निगाहेँ' कम मनोरञ्जक नहि। एहिसँ बुझना जाइत अछि जे विदेशी

Scanned by CamScanner

शब्दकें पचा लेवाक प्रवृत्तिक उदय भ' चुकल छल। यैह, वैह, जैह, सैह आदि शब्द एही रूपें लिखल भेटैत अछि।

समष्टि रूपें 'मैथिल हित साधन' अपना नामकें सर्वथा सार्थक करैत छल। अतः स्व० पुलकितलाल दास 'मधुर' केर ई आक्षेप जे "हित साधन क्षीणकाय ओ अल्पजीवी होयबाक कारणें मैथिल समाजक कोनो विशेष हित साधन नहि क' सकल" पूर्णतः युक्तिसंगत नहि प्रतीत होइत अछि।

एहन सुनियोजित उद्देश्यसँ चलल एहि पत्रकें यदि समाजक पूर्ण सहयोग प्राप्त होइतैक तँ समाज एहिसँ पूर्णरूपें लाभान्वित होइत ताहिमे कोनो सन्देह नहि, परन्तु मैथिली भाषी समाज एतेक दिन बीति गेलाक बादो एखन धरि ततेक सचेष्ट नहि भ' सकल अछि। एहि दृष्टिएँ बाबू लक्ष्मीपति सिंहजीक ई कथन—"मैथिली पत्रकारिताक जन्मकुण्डलियहिमे जेना मारकेश रूपें समय-समयपर उत्पात होइत आबि रहल अछि" सर्वथा सत्य प्रतीत होइत अछि। एतबा श्रेय तँ एहि पत्रकें सब दैत छथिन जे मैथिलीमे पत्रकारिताक सूत्रपात एही पत्रिका द्वारा भेल। दोसरो तेसर पत्रक प्रकाशनक मार्ग प्रशस्त इएह कयलक। एकटा पृष्टभूमि, एक प्रकारक वातावरण तैयार कयलक। एकरो छोट उपलब्धि नहि मानल जा सकैत अछि। एकर प्रकाशित सब अङ्क उपलब्ध भेला उत्तर अनेक पुस्तक ओहिसँ बाहर कयल जा सकैत अछि। हमर विश्वास अछि जे ज्यौतिषी गणेश दत्त पाठक द्वारा रचित 'ज्योतिष शास्त्रक इतिहास' एक अभिनव वस्तु मैथिली साहित्यकें उपलब्ध भ' जइतैक।

विद्यावाचस्पति मधुसूदन झाकें प्रवासमे रहितो मातृभाषाक विकास करबाक प्रेरणा कोना भेलनि, मातृभाषाक प्रति ममत्व उत्पन्न करबाक प्रेरणा स्रोत कत'सँ छलनि—एहि सब बातक आभास सेहो सब अङ्क प्राप्त भेला उत्तर भेटि सकत। एहि पत्रक स्वरमे जेहने दृढ़ता छलैक तेहने मृदुता सेहो। ई सम्पादकक विकसित व्यक्तित्वक प्रमाण मानल जा सकैत अछि।

मिथिलामोद

मिथिला भाषाक दोसर मासिक पत्र छल 'मिथिलामोद' (१९०५ ई०)। काशीस्थ मैथिलविद्वज्जन समिति द्वारा एकर प्रबन्ध होइत छल। एकर सम्पादन महामहोपाध्याय पं० मुरलीधर झा करैत छलाह, परन्तु विलक्षणता अछि जे एहि पत्रमे कतहु सम्पादकक रूपमे हिनक नाम छपल नहि अछि,

Scanned by CamScanner

किन्तु सम्पादक इएह छलाह ताहिमे वैमत्य नहि अछि। इतिहासकार लोकनि एकर प्रकाशन वर्ष १९०६ ई० लिखने छथि। मोदक प्रसंग अपन विचार व्यक्त करबासँ पहिने पूर्वमे विद्वानलोकनि जे अपन-अपन मन्तव्य प्रकट कयने छथि तकरा उद्धृत क' देब समीचीन बुझैत छी। सर्वप्रथम मैथिली पत्रकारितापर कलम उठौनिहार छलाह पुलकितलाल दास 'मधुर'। पहिने हिनक मन्तव्य देखल जाय। 'मधुर'जी लिखैत छथि—

"मिथिलामोद प्रारम्भ सौं पाँच वर्ष धरि मैथिली-हिन्दी में प्रकाशित होइत रहल। छठम वर्ष सौं हिन्दीकें सर्वदाक हेतु सर्वथा बहिष्कार कै देल गेल ओ विशुद्ध मैथिलीभाषामे प्रकाशित होमै लागल। बीच-बीचमे अर्थाभावक कारणें कय बेरि बन्दो भै गेल सन्ता ई पत्र ११-१२ वर्ष धरि प्रकाशित होइत रहल। छल तँ ई पत्र मैथिल ब्राह्मणक जातीय पत्र, किन्तु एकर ग्राहक मिथिलास्थ कायस्थ, क्षत्रिय, भूमिहार, वैश्य एवं गोप आदि अन्यान्य जातिक लोकसभ सेहो छलाह। तकर कारण जे एहिमे साहित्यादि अन्यान्य विषयक लेखादि सेहो प्रचुरतासँ प्रकाशित होइ छल। एहिपत्रक भाषा परिमार्जित, प्राञ्जल, लिपि स्वच्छ एवं सुस्पष्ट तथा लेख सुपाठ्य रहै छल। एहिमे कनेको सन्देह नहि जे सामाजिक जागृतिक सङ्ग-सङ्ग मैथिली साहित्य सम्बन्धी जागृति एहि पत्र द्वारा खूब प्रचुरतासौं भेल। एहिपत्रमे अनेकानेक उत्तम-उत्तम आख्यायिका, प्रहसन, नाटक, गम्भीर लेख, मार्मिक विनोदपूर्ण लेख एवं विविध प्रकारक उत्कृष्ट कवितादि प्रकाशित भेल अछि। यदि ओहि सभक पृथक-पृथक संग्रह भै पुस्तकाकार प्रकाशित हो तँ ओ सभ मैथिली साहित्यक एक सम्पत्ति भै सकैछ। यद्यपि आधुनिक पत्र-पत्रिका जकाँ एहि पत्रमे विविध प्रकारक मनोरञ्जक चित्र, व्यंग-चित्रादि नहि, पृष्ठ संख्या तथा समयपर प्रकाशनाभाव आदि प्रबन्ध विषयक तथा सम्पादन विभागमे सेहो अनेक प्रकारक दोष ओ त्रुटि छल, तथापि समष्टि रूपें मैथिल समाजक हेतु ई पत्र समयानुसार बड़ उपयोगी छल। थोड़ेक सुधार भै गेला सन्ता ई पत्र सर्वथा उत्तम भै जाइत। हर्षक विषय जे ई पत्र पुनवरि प्रकाशित होमए लागल अछि।"[1]

१.—गद्य कुसुम माला (प्रका०—मै० सा० परिषद्, दरभंगा) पृष्ठ ७२-७३

Scanned by CamScanner

(श्रीः)

मिथिला-मोद

प्रथम उद्गार

मासिक-पत्र

श्रावण पूर्णिमा

काशीस्थमैथिलविद्वज्जनसमितिप्रबन्धानुमोदित
तत्रस्थमैथिलविद्वज्जनकलित

"स्पृहणीयगुणैर्महात्मभिश्चरिते वर्त्मनि यच्छतां मनः ।
विधिहेतुरहेतुरागसां विनिपातोऽपि समः समुन्नतेः" ॥

सं० १३१३ साल—शाके १८२७

काशी

प्रभाकर-यन्त्रालय में

मुद्रित ।

मूल्य १ वर्ष का १। रू०

ध्यातव्य जे गद्य कुसुम मालाक तृतीय संस्करण हमरा समक्ष अछि जे १९३९ ई० मे प्रकाशित भेल अछि। निश्चयतः प्रथम संस्करण १९३६-३७ मे प्रकाशित भेल होयत। इतिहासकारलोकनि मिथिला मोदक पुनः प्रकाशन १९३६ ई० सँ १९४१ ई० धरि मानैत छथि। हमरा दृष्टिपथपर १९३६ ई० सँ १९४० ई० धरिक एकसँ चालीस अङ्क आयल अछि। डाँ० श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण'क कथनानुसार १९४१ मे चारि गोट अङ्क प्रकाशनमे आबि सकल। एहि प्रकारेँ ५ वर्ष होइत अछि। मधुरजी एकर प्रकाशन काल ११-१२ वर्ष मानने छथि, एमहर ६ वर्ष भेल, दूनूकेँ जोड़ि देलासँ १७-१८ वर्षक अवधि होइत अछि। एहि प्रकारेँ ३६-३७ वर्षक अवधिमे आधा समय धरि प्रकाशित होइत रहल।

बाबू लक्ष्मीपति सिंहजीक मन्तव्य निम्न प्रकारेँ अछि—

"मैथिल हित साधनक व्यवस्थापक विद्यावाचस्पति मधुसूदन झाक अभिनन्दनीय मातृभाषा प्रेमसँ अनुप्राणित भए काशीस्थ मैथिल विद्वत्समिति द्वारा म० म० प० मुरलीधर झाजीक सम्पादकत्वमे मिथिलामोद नामक एक मैथिली मासिकक प्रकाशन १९०६ ई० मे प्रारम्भ कएल गेल। मोद सन् १९२० ई० धरि म. म. मुरलीधर झाक, १९२१ सँ १९२७ ई० धरि पं० अनूपमिश्र ओ कविवर सीतारामझाक तथा पुनः १९३६ ई० सँ १९४१ ई० धरि पं० उपेन्द्रनाथ झाक सम्पादकत्वमे प्रकाशित भए पुनः अस्तंगत भए गेल। विभिन्न विधाक प्रौढ़ साहित्यिक रचना, निर्भीक आलोचना एवं गम्भीर सम्पादकीय मन्तव्यक प्रसादातेँ (?) 'मोद' किछुए दिनमे समस्त मैथिली जगतपर अपन प्रभाव जमाए देने छल। किन्तु कटु-तिक्त-कषायक मात्रा अनुपातक्रमेँ किछु अधिक होइत जएबाक कारणेँ मोद कतेको पाठक लोकनिक हेतु आकर्षक नहि रहि पाछू कतेकोक हेतु विकर्षणहिक हौआ बनि गेल। फलतः हितसाधनक सङ्गहि मोदहुक आशा जाइत रहल।[1]"

डॉ० श्री जयकान्त मिश्र 'मोद'क प्रसंग लिखैत छथि जे[2]

१.—'मैथिली साहित्यक रूपरेखा' चेतना समिति, पटना, पृष्ठ ८२।

२.—'ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, (साहित्य अकादमी, दिल्ली), पृ० २२९।

Scanned by CamScanner

"अग्रिम वर्ष, तात्पर्य १९०६ ई० मे बनारससँ 'मिथिलामोद' नामक मासिक पत्र प्रकाशित भेल। एकर सम्पादन १९०६ ई० सँ१९२० ई० धरि म. म. मुरलीधर झा, १९२० सँ-२७ धरि अनूप मिश्र ओ सीताराम झा तथा विशेषत: नवीन संस्करण १९३६-४१ ई० धरि उपेन्द्रनाथ झा ओ श्रीकाञ्चीनाथ झा 'किरण' करैत रहलाह। किछु दिनुक हेतु ई बन्द भ' गेल छल आ एखन धरि बन्दे अछि, मुदा मैथिली मासिक पत्रिकामे दीर्घ जीवनक हेतु स्पृहणीय रहल। ई सब विषयपर सशक्त निबन्ध, वक्तृता, कथा, कविता, दीर्घ अनुवाद ओ सामयिक विषयपर टीका-टिप्पणी आदि प्रकाशित करैत छल। कतिपय नवीन लेखक एहिमे लिखबाक हेतु प्रोत्साहित भेलाह, यथा त्रिलोचन झा, रामचन्द्र मिश्र, अनूप मिश्र, कुशेश्वर कुमर, सीताराम झा, ज्यो० बलदेव मिश्र ओ उमेश मिश्र। मोद मैथिलीकेँ आगाँ बढ़यबामे पूर्ण कुशल छल। एकर विचार देश भरिमे सुनल जाइत छलैक तथा सम्पूर्ण मिथिलापर एकर प्रभाव छलैक।"

स्मर्त्तव्यजे डॉ० श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नाम सम्पादकक रूपमे छपल कतहु नहि छनि आ ने दोसर कोनो इतिहासकार लिखने छथिन, परन्तु 'मोद'क पुन: प्रकाशनमे ई प्रेरक अवश्य छलाह आ नेपथ्यमे रहि बहुत किछु काजो सम्पादित करय पड़ैत छलनि।

डॉ० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश' 'मोद'क प्रसङ्ग अपन अभिमत व्यक्त करैत लिखैत छथि—

"काशीक विद्वज्जन समिति दिसिसँ 'मिथिला 'मोद'क प्रकाशन म. म. मुरलीधर झाक सम्पादकत्वमे १४ वर्ष धरि (१९०६-२०) भेल। तत्पश्चात ७ वर्ष धरि एकर सम्पादन कएल अनूप मिश्र ओ श्री सीताराम झा। तदुत्तर नओ वर्षधरि ओकर प्रकाशन बन्द रहल। पुन: १९३६ ई० सँ४१ ई० धरि नवीनरूपमे ई प्रकाशित भेल प० उपेन्द्रनाथझाक सम्पादकत्वमे। अत: ई सब मिलाए २७ वर्ष धरि चलल ओ मैथिली साहित्यक सर्वांगीण निर्माण, विशेषत: गद्य साहित्यक निर्माण ओ मैथिल समाजक जागरणमे एकर योगदान बड़ महत्वक रहल। एकर सम्पादक ओ मैथिली गद्यक प्रधान निर्माता म. म. मुरलीधर झा एहि पत्रिकामे मैथिली गद्यक जाहि शैलीकेँ अपनाओल ताहि मध्य मैथिलीक अपन विशिष्ट ध्वनिक ध्यान नहि राखि हिन्दी ध्वनिक

Scanned by CamScanner

अनुकूल वर्ण प्रयोग कएल। एहि विषयमे म०म०परमेश्वरझाक विरोध करितहुँ ओ एहि दिशि ध्यान नहि देल जाहिसँ मैथिलीक लेखन शैलीमे तहिआ जे गम्भीर विषमता उत्पन्न भेल से अद्यावधि दूर नहि भए सकल अछि तथा शैलीमे एकरूपता नहि आबि सकल अछि। मुदा गद्यक विकासमे एकसर जतबा कार्य 'मोद'क द्वारा भेल ततबा कोनो एक व्यक्ति वा संस्था द्वारा कहिओ नहि भए सकल। 'मिथिलामोद'क मैथिल समाजपर बड़ प्रभाव छल तथा ओकर सम्पादकीयकेँ लोक कहिओ अवहेलना नहि कए सकल। मैथिल महासभाक प्रसङ्ग ओकर विवरण ओ आलोचना 'मोद'क पुरान फाइलमे देखबा योग्य अछि। हिन्दीक अत्याचार जखन मैथिलीक अस्तित्वकेँ नाश करबाक हेतु विशेष सक्रिय भेल तँ म. म. मुरलीधर झा एहि पत्रक माध्यमसँ ओकर विरोध कएल। अपन पत्रमे तँ हिन्दीक स्थान नहिएँ रहए देल, प्रत्युत 'मिथिला मिहिर'हुँ सँ हिन्दीकेँ निष्कृत कए देबाक हेतु अपन पत्रक द्वारा घोर आन्दोलन चलाओल। वस्तुतः 'मोद' तत्कालीन मैथिल समाजक दर्पण छल तथा ओकर विचार तत्कालीन मैथिल समाजक विचारधाराक प्रतिनिधित्व करैत छल।[1]

सर्वप्रथम विचारणीय अछि जे एक दिससँ सब इसिहासकार ओ विद्वान् एकर प्रकाशन वर्ष १९०६ ई० लिखैत छथि। एतवता एहन प्रतीत होइत अछि जे क्यौ गोटे सत्यक पता लगयबाक प्रयास नहि कयलनि, प्रत्युत सुनल-सुनाओल बातकेँ आधार मानि १९०६ ई० लिखि दैत गेलथिन। हमरा समक्ष मिथिला 'मोद'क प्रथम अंक राखल अछि। ओहिमे छपल अछि—श्रावणी पूर्णिमा सन् १३१३ साल, शाके १८२७। शक संवत् ओ ईसवीमे ७८ वर्षक तथा साल सन् ओ ईशवीयमे ५९२ वर्षक अन्तर होइत अछि। यदि १३१३ सन्मे ५९२ वर्ष जोड़ि दैत छिऐक तँ १९०५ ई० अथवा १८२७ शाके मे ७८ जोड़ि दैत छिऐक तँ १९०५ ई० होइत अछि। अतः प्रत्यक्ष प्रमाणक आधारपर एकर प्रकाशन वर्ष १९०५ ई० थिक, १९०६ ई० नहि।

दोसर विचारणीय प्रश्न अछि सम्पादकलोकनिक प्रसंग। पूर्वमे कहि आयल छी जे सम्पादकक रूपमे म. म. मुरलीधरझाक नाम कतहु कोनो अंक मे छपल नहि भेटल। हमरा दृष्टिपर 'मोद'क प्रथम अंकसँ १८९ म अंक

१.-मैथिली साहित्यक इतिहास, (परिवर्द्धित संस्करण), पृ० १२२-२३।

Scanned by CamScanner

धरिमे मध्य-मध्यमे किछु अंक अनुपलब्ध अवश्य अछि, तथापि १४६ गोट अंक उपलब्ध अछि जाहि आधारपर निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होइत अछि। सर्वप्रथम मोदक सम्पादकक उक्ति उद्धृत अछि—

'आइ यावन्मैथिल श्री मन्मिथिलेश महाराज बहादुर-प्रभृति सकल श्रीमान् धीधनवान् तथा मैथिल भलमानुस बड़मानुस सबहिक थोतैं प्रार्थना करैत छी जे थोड़ेके हमरो विनय सुनि लेल जाय।

प्रथम—सन् १३१३ साल शाके १८२७ श्रावणक पूर्णिमासँ स्वर्गवासी पं० दीनानाथ मिश्र, पं० श्री जीवन झा 'यज्वालय,' पं० श्री चक्रधर झा, हँसुआवासी बाबू श्री काली प्रसादसिह चौधरी 'जमीन्दार' इत्यादि महोदयक परमोत्साह पाबि अपन पूर्व संकल्पित ओ सूचना द्वारा सूचित मासिक पत्रकें पं० श्री मुरलीधर झा 'मिथिलामोद'—नाम ग्रहण पूर्वक प्रकाशित कैलन्हि (जे प्रायः वर्ष दिनसँ कारणान्तरें संपादकत्वक भार अपना उपर सँ उठाइओ संरक्षण साहाय्य पूर्ववत् करैत अबैत छथि)। मासाभ्यन्तरहि श्री ५ मान् मिथिलेश महाराज बहादुर ने जाने कोन गुण देखि, झट शत मुद्रा वार्षिक साहाय्य प्रेषित कराय 'मिथिलेश' (एहि पदक अर्थ 'मिथिला' देशक ईश प्रभु पालक) क यथार्थ अर्थकैं चरितार्थ कैलन्हि।''[1]

एहि उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे विधिवत् म. म. मुरलीधर झा जी मात्र तीन वर्ष धरि एकर सम्पादक रहलाह, यद्यपि एहू कालमे हिनक नाम कतहु मुद्रित नहि होइत छलनि। तखन एहि अवधिमे सम्पादक के छलाह से कतहु स्पष्ट नहि अछि। हँ, १६४म उद्गार अर्थात् ज्येष्ठ १३२८ साल १९२१ ई०क अङ्कमे प्रकाशक कविवर सीताराम झाक नाम तथा सम्पादकक रूपमे पं० अनूप मिश्रक नाम छपल भेटैत अछि। उद्गार १६५सँ १७० धरि हमरा उपलब्ध नहि भेल अछि। परन्तु उद्गार १७१-७२-७३मे, जे संयुक्तांक अछि, प्रकाशक ओ सम्पादक दूनू रूपमे कविवर सीताराम झाक नाम मुद्रित अछि। पुनश्च १७४सँ १७९ धरिक संयुक्तांक अछि जाहिमे पहिल रचना 'विनय' शीर्षक पद्य अछि, जाहिमे मोदक अवस्थापर दृष्टिपात करैत प्रार्थना कयल गेल अछि। एकर रचयिता थिकाह पं० अनूप मिश्र, हिनक नामक

---

१. मि० मोद, उद्० ४७, पृ० ११ भादव शाके १८३२ सन् १३१८ साल, अर्थात् १९१० ई०।

आगूमे 'उपसम्पादक मोद' छपल अछि। परन्तु सम्पादकक नाम जेना कविवर सीताराम झाक छपल छनि तेना पं० अनूपमिश्रक उपसम्पादकोक रूपमे मुद्रित नहि भेटैत अछि। पुनः १८६म उद्गारमे, जे जेठ सन् १३३० साल अर्थात् १९२३ ई०क थिक, कविवर सीताराम झा प्रबन्ध सम्पादक छथि। १८७म उद्गार वर्ष १६ सन् १३३३ साल अर्थात् १९२५ ई०क अगहनमें छपल ओ १८८म उद्गार, जे पौष १३३३ साल १९२६ ई०क थिक, ताहि ठाम धरि कविवर सीताराम झा एही रूपमे छथि। हमरा सबसँ अन्तिम अंक १८९म उद्गार फाल्गुन १३३३ साल, १९२६ ई०क उपलब्ध भेल। एहि अंकक सम्पादक श्री उपेन्द्रनाथ झा, बी० ए० छथि आ एकर पंजीयन संख्या, जे पहिने छल A ४७७ तथा उद्गार ३४सँ आबि रहल छल, एहिमे बदलल अछि, थिक A १५३०। एतावता, इतिहासकारलोकनि जेना सम्पादकलोकनिक कार्यअवधिक उल्लेख कयने छथि से सब आनुमानिक थिक, प्रामाणिक नहि।

एकरा मध्य-मध्यमे अनेक संकट अबैत रहलैक, अनेक बेर बन्द भेल, अनेक बेर पछुआयल, किन्तु पहिल बेर लटैत-बुड़ैत १६ वर्ष धरि प्रकाशित होइत रहल, इएह सत्य तथ्य थिक। जखन जखन बन्द भ' जाइत छल, तकर बाद पुनः प्रकाशनमे पछुआयल अंक सबकेँ जोड़ि संयुक्तांक प्रकाशित होइत छल। अतः ग्राहकलोकनिकेँ देल आश्वासन जे—

''मि० मो० प्रेमिजन महोदयकाँ उद्गार क्रम यथार्थ रहि मासक्रम कोनो होउन्हु, कोनो हानि नहिँ। वस्तुतः सम्प्रति मिथिलामे जेहन ई आगूहायण (अगहन) हर्षप्रद भेल अछि, से आगूह कैओ श्रावण पूर्णिमासँ प्रचालित मोदकाँ नहिँ इत्यादि अनेक कारणकूट पाबि 'मि. मो. श्रीमान् मिथिभेश महाराजकुमारक जन्मोत्सव मासहि काँ अपनो पुनर्जन्म समय मानि प्रचलित भेल अछि। मोद आशा रखैत अछि जे सहायक ओ गूाहक महोदयगण हमरा देखि शीघ्र २ अनुगूह पूर्वक सहायता ओ मूल्य प्रेषित कय नियमसँ चलयबाक बल दय कृतार्थ करताह।''[1] एहि उद्धरणसँ उपर्युक्त कथनक पुष्टि होइत अछि। एकर एक अंकमे २४ पृष्ठ निर्धारित छल। संयुक्तांक जतेक अंकक होइत छल ताहि संख्याकेँ २४सँ गुणा क' ततबा पृष्ठ रहैत छल। अर्थात् २ अंक तँ ४८ पृष्ठ, ३ अंक तँ ७२ पृष्ठ इत्यादि। वर्षमे १२ अंक भेल, १८७ अंक हमरा दृष्टिपथपर आयल अछि। एहि प्रकारेँ पन्द्रह

१.—उद्गार २५-२६-२७, आवरणक तृतीय पृष्ठ।

Scanned by CamScanner

वर्ष नओ मास पहिल बेर आ तीन वर्ष सात मास दोसर बेर प्रकाशित भ' ई सर्वदाक हेतु बन्दे रहि गेल।

'मधुर'जी लिखैत छथि जे मिथिलामोद प्रारम्भसँ पाँच वर्ष धरि हिन्दी मैथिली दुनू भाषामे प्रकाशित होइत छल। छठम वर्षसँ हिन्दीकेँ सर्वदाक हेतु सर्वथा बहिष्कार कय देल गेल ओ विशुद्ध मैथिली भाषामे प्रकाशित होअय लागल। ई हिन्दीक बहिष्कारक कारणपर कोनो प्रकाश नहि देने छथि। डॉ० 'श्रीश' कारणपर प्रकाश दैत लिखने छथि जे हिन्दीक अत्याचार जखन मैथिलीक अस्तित्वकेँ नाश करबाक हेतु विशेष सक्रिय भेल तँ म० म० मुरलीधर झा एहि पत्रक माध्यमसँ ओकर विरोध कयल। अपन पत्रमे तँ हिन्दीक स्थान नहिएँ रहय देल प्रत्युत मिथिला मिहिरहुसँ हिन्दीकेँ निष्कृत क' देबाक हेतु अपन पत्रक द्वारा घोर आन्दोलन चलाओल। ई अत्याचार कोन प्रकारक छल, के करैत छल आदि विषय स्पष्ट नहि भेल अछि। एहि ठाम ताहिपर प्रकाश देब आवश्यक बुझैत छी। मोदमे एहि प्रसंगक चर्चा भेटैत अछि—

"बजितहुँ भय होइत अछि परन्तु की हो, कुल वधू जकाँ चुपकी मारने कतेक दिन धरि नुकाएब। कनेक विचार दृष्टि दै देखू तँ जे केहन आकार केहन प्रचार ओ केहन नाम, तनिक ई मत्सरता? छी छी!!! औ बलाँ! सतत एम्हर ओम्हर जतै देखैत छी ततहि गर्दनि फलकाय २ संस्कृत (देववाणी रूप) चाउरमेँ उर्दू—वायुकारक—उरीद मिलाय असिद्धे वा अशुद्धे खीचड़ि खाइत छी, बड़ सुन्दर, खाउ, जकरा पचैक से खाथ वा जँ दुःखित पड़लासँ 'डाक्तर साहेब' कहथि तँ अपना घरहुमे धनी लोकनि व्यवहार करथु ओ परदेशमे हमरहु लोकनि व्यवहार करैत छी, तावता ई सिद्धान्त कतै सँ बहरायल जे हमरा लोकनि जेना कूदब फानब लोकमे देखबैत छी, अहूँ लोकनि ओहिना करू।

थोड़बो विवेकवृत दिऔक, वा किछु करू। हम पुछैत छी जे जहाँ भारत (भरत खण्ड) क 'मित्र'? उपकारक वा प्रकाशक? उपकारकता तथा प्रकाशकता दिशि ध्यान दिअ तँ—संवत् १९६८ वैशाख शुक्ल १ शनिक अपन अमूल्यपत्र मे सब ठाम ख्याते 'भारत मित्र' समाचार पत्र की सड़ल 'हिन्दी' लिखैत छथि—मैथिलों ने अपने उद्धार का विचित्र मार्ग बनाया है। 'हिन्दी की उपेक्षा' शीर्षक एक चिट्ठी अन्यत्र प्रकाशित की गयी है।

अबकी बारकी मैथिल कान्फ्रेन्स में यह प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ है कि यथा साध्य मैथिल भाषा में पुस्तकें लिखकर मैथिलों में विद्या प्रचार किया जाय। 'मिथिला मिहिर' के चौथे प्रकाश का अर्धांश मैथिल भाषा से भरा हुआ है। ऐसी दशामें कहना अनुचित नहीं है कि मैथिल लोग पीछे से अपने अन्यान्य भाईयों को खीच रहे हैं। मिथिला मिहिर में जैसी मैथिली लिखी जाती है उससे सभी विचारवान समझ सकते हैं कि इसके द्वारा विद्या प्रचार नहीं हो सकता। क्योंकि क्रिया पद और विभक्तियों के अतिरिक्त यह हिन्दी ही है। इससे मैथिली में विद्या प्रचार का स्वप्न देखना शेख चिल्लीयों के सिवा दूसरो को नहीं सोहता"। प्रिय पाठक ! यद्यपि एकर उत्तर सहयोगी 'मि. मिहिर' अपन ८ म प्रकाश में देलथिन्ह अछि, किन्तु सहयोगीक क्रम जेना डेराएल-भड़कल हाथी होथि जनिका माथ पर अंकुशक चोट ओ एम्हर-ओम्हर वर्छा। सत्य रहौ कि मिथ्या, दुलकी देने पड़ाएल जाथि, अस्तु। 'मित्र' जी ! इस कूल सँ उस कुल गेल अधकच्चू बच्चूक "चिट्ठी पत्री" लै कृतकार्य नहि भै सकैत छी। ई तँ कहू जे अहाँ कें अन्धकूपमे पड़ले पड़ल सुझैत अछि वा कोनो दूरबीक्षण-यन्त्र द्वारा देखना जाइत अछि जे मैथिल समुदायक उद्धारमार्ग विचित्र ? यथार्थ कहल अछि जे अपन टेटर नहि सुझैत छैक। अरे ! कतेको दिन सँ हिन्दी कें पछुऔने फिरैत छी किन्तु लिखबाक काल "अबकी वार—" "मैथिल लोग पीछे से" (तें टें पें)। इत्यादि सुन्दर वाक्यक प्रयोग करैत छी, कियैक ने अहीं सँ हो। औ "मित्र !" से शेख चिल्ली अर्थात् सकलुच्ची कहि देब कोनो ततेक टा गारि नहि थिक किन्तु का-की-के, गा-गी-गे-मात्र जननिहारक उक्त दुर्वाक्य उन्मत्त प्रलापें मैथिल बूझत। अहाँ अपन उद्धार करबाक स्वच्छमार्ग शेखचिल्ली बिल्ली, पिल्ली यैह सब देखैत छी ? देखैत रहू।......"[1]

एहिमे सहयोगी मिथिला मिहिरक उत्तरक प्रसङ्ग उल्लेख कयल गेल अछि। 'मिहिर' जे प्रतिक्रिया व्यक्त कयने छल तकरो उल्लेख करब समीचीन होयत। अतः ओकर अवलोकन कयल जाय। मिथिला मिहिरक सम्पादकीयमे कहल गेल अछि—

"मिथिला मिहिरमें मैथिल भाषाके लेखों का देखकर सहयोगी भारत-मित्र बहुत घबड़ा उठा है। उसको भ्रम हो गया है कि 'मिहिर' हिन्दी

---

१. मिथिलामोद, उद्‌गार ५६, पृ० ११-१२।

Scanned by CamScanner

भाषाका विरोधी है और उस की उन्नतिमें बाधा डालना चाहता हैं। हम नहीं कह सकते यह भ्रम कैसे उत्पन्न हुआ। इसका कुछ कारण नही देख पड़ता। मिथिला भाषासे मित्रको द्वेष हो यह बात तो दूसरी है, परन्तु मैथिलों में मिथिला भाषा द्वारा विद्या प्रचार विषयके प्रस्ताव की बात सुनकर तथा मिहिर में मिथिला भाषा देखकर उसने अपने पिछले अङ्कमें यह टिप्पणी लिखी है कि मैथिल लोग ऐसा करके अपने अन्यान्य भाइयों के पैर पीछे खींचते हैं सो नितान्त भ्रममूलक है। यह साधारण समझ का बात है कि अपनी मातृभाषा द्वारा विद्या सीखने में जो सुविधा होती हैं वह अन्यभाषा द्वारा नही। मैथिलों की मातृभाषा मैथिली है। इस हेतु यदि वे मातृभाषा को ही विद्या सीखने के काम में लावें तो इससे दूसरे को क्या नुकसान होगा। पीछे से दूसरे का पैर खींचना यह कैसे कहलावेगा। बंगाला लोग बंग भाषा में विद्या सीखते हैं. महाराष्ट्री लोग महाराष्ट्री भाषा का व्यवहार करते हैं तो इससे मित्रको क्या नुकसान पहुँचता है? अपनी मातृ-भाषाकी उन्नति सभी लोग करते जायँ यह तो अत्यन्त श्रेयस्कर बात हैं। मिथिला भाषा का व्यवहार करके हमनें कभी नहीं कहा है कि हिन्दी को भारतवर्ष की राष्ट्र भाषा बनाना हम पसन्द नही करते। राष्ट्र भाषा और प्रान्तीय देश भाषामें बड़ा भेद है। मित्र यदि यह सोचता हो कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनाने पर भारत की सब प्रान्तीय भाषाओं—बंगला, गुजराती, मराठी—का एकबारगी मटियामेंट हो जाएगा तो यह उसकी शेखचिल्ली समझ हैं। मैथिलों को मिथिला भाषा द्वारा अपना उद्धार करना शेखचिल्ली-पना कदापि नही कहला सकता ...।"[१]

एहि उद्धरण सँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली के प्रगति पथ दिस अग्रसर होइत देखि ओही समयसँ हिन्दीक तथाकथित समर्थकलोकनि एकर विरोध मे बीड़ा उठा लेने छलाह आ मैथिली केँ हिन्दीक पेटमे समाहित क' लेबाक षड्यन्त्र करबामे लागि गेल छलाह। एकरे प्रतिक्रियास्वरूप 'मिथिला मोद' हिन्दीक बहिष्कार करबाक निश्चय कयने होयत। अन्यथा मैथिली भाषी समाजक बीच हिन्दी विरोधी भावना लेश मात्र देखबामे नहि अबैत अछि, अपितु मैथिलीक प्रथम पत्र हित साधन, दोसर मिथिला मोद, तेसर

१.—मिथिला मिहिर, २०-५-१९११ ई०।

मिथिला मिहिर सबमे हिन्दीक समावेश होइत रहल। अर्थात् मैथिलीमे पत्रकारिताक उदयक सङ्गहि हिन्दीकें आदरक स्थान भेटैत रहलैक। मोदक संस्थापक म. म. मुरलीधर झा तँ म. म. सुधाकर द्विवेदाक शिष्य रहलाह, तें ज्यौतिष शास्त्रक अध्ययनक माध्यमो हिन्दीए रहल होयतनि। कर्म क्षेत्र काशी रहलनि जाहि ठामक सम्पर्क भाषा हिन्दीए छलैक। अध्यापक छलाह, तें अध्यापनो हिन्दीएमे करय पड़ैत छल होयतनि। जखन मिथिला मोदक प्रकाशन आरम्भ कयलनि तँ अपन आराध्य गुरुक पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त भेल छलनि। समय-समय पर म. म. सुधाकर द्विवेदी प्रकाशनार्थ रचनो दैत छलथिन। केदारनाथ बदरीनाथ यात्रा मोदक अनेक उद्गारमे क्रमशः प्रकाशित करैत रहलथिन। करुणाकर द्विवेदीक 'द्रौपदी' नाटक मोदेक माध्यम सँ प्रकाशमे अयलनि। म. म. द्विवेदीक निधन भेला उत्तर हुनक सचित्र जीवनी प्रकाशित कयने छलथिन। समस्यापूर्तिक जे परम्परा चलौने छलाह ताहू मे संस्कृत, मैथिलीक सङ्ग हिन्दीओ कें समुचित स्थान देने छलथिन। समय समय पर म. म. जी स्वयं सेहो हिन्दी मे लिखैत छलाह एवं अनको हिन्दी सिखबाक प्रेरणा दैत रहैत छलथिन। हिन्दीक प्रसङ्ग म. म. जीक दृष्टिकोण की छलनि से बुझबाक हेतु निम्नलिखित उद्धरण देखब आवश्यक। ओ लिखने छथि —

"प्रिय हिन्दी प्रचारक मैथिल बान्धव !

हम हिन्दीक विराधी नहिं, किन्तु कोट पैण्टलूम पहिरिओ जँ एहन-एहन 'गै हजूर ! हमरा मोकदमा होतागा ?" हिन्दीक प्रयोग करथि तँ हिन्दी-सेवकक "देशी मुरगी बोल बिलायती" ई उक्ति चरितार्थ जनु हो एकर यैह टा उपाय छैक जे यावत् सर्वसाधारण काँ ई बोध नहि होएतैक जे कि हिन्दी, ई कोना बाजी एकरा नहि जनला सँ हमरा की हानि होइत अछि ओ जननिहार हमरा अपेक्षें केहन चतुर अछि........ताबत् हिन्दीक प्रचार नहिं ....[1] "। एमहर मिथिलावासीक हृदयमे राष्ट्रभाषाक रूपमे हिन्दीक हेतु एहन आदर भाव, ओमहर हिन्दीक तथाकथित हितरक्षक लोकनि एखनहु मैथिलीक अहित चिन्तने मे बेसी गोटे लागल दृष्टिगोचर होइत छथि।

१.—मिथिला मोद, उद्गार ४१, पृ० ३।

ई निर्विवाद जे ओहि समयमे जाहि दृढ़तासँ 'मोद' मैथिली पक्षक समर्थनमे फाँड़ बान्हि प्रस्तुत भेल, से यदि नहि होइत तँ मैथिलीक अस्तित्व संकटमे पड़ि गेल रहैत। मिथिलाक हृदय प्रदेशसँ प्रकाशित होइत मिथिला मिहिर यदि 'मोदे' जकाँ हिन्दीक बहिष्कार क' मैथिलीक अभ्युन्नतिमे सर्वात्मना लागि गेल रहैत तँ 'बिहार' प्रान्तक निर्माण भेलाक बाद अपनो घरमे मैथिली केँ बहिष्कृते रहय पड़लैक से स्थिति प्रायः उत्पन्न नहि होइत।

जहाँ धरि नीतिक प्रश्न अछि—'मिथिला मोद' बहुत अंशमे हित-साधनक पथक अनुसरण करैत देखल जाइत अछि। राजतन्त्रक ओहि युगमे मिथिलाक प्रजाक सुख-सुविधा, संरक्षण-संवर्द्धन, शिक्षण-प्रशिक्षण आदि सभक उत्तरदायित्व मिथिलेशक माथ पर छलनि। अतः एहि सब कर्त्तव्यक बोध राजा केँ करायब पत्रकारक उत्तरदायित्व भ' जाइत छनि, जकर पालन 'हित साधन' करैत छल, जकर उल्लेख कयल जा चुकल अछि। 'मिथिला मोद' सेहो ई काज करैत छल। तखन एतबा अवश्य जे 'हित-साधन'क स्वर मे जे मृदुता छलैक से 'मोद'क स्वरमे नहि। ताहि प्रसङ्ग मोदक मान्यता छलैक 'हितं मनोहारिच दुर्लभं वचः'—हितकरो हो तथा मनोहरो हो एहन वचन दुर्लभ होइत अछि। एहि कथनक पुष्टि होइत अछि एक लेख सँ जकर शीर्षक अछि—'श्री ५ मान् मिथिलेश महाराज बहादुर'।[१] एकर लेखक थिकाह स्वयं म. म. प. मुरलीधर झा। स्तुतिक 'कैपसूल'' मे कतेक तिक्ख भाषामे विचार व्यक्त कयल गेल अछि से मननीय थिक। एहिमे एक दिस कर्त्तव्य बोधक प्रेरणा, दोसर दिस देशक समग्र विकास हेतु भारत सरकारसँ सुविधा प्राप्त करबाक हेतु नेतृत्व करबाक अनुरोध सेहो कयल गेल अछि। एहि प्रकारेँ एहि विषयक नीति सम्बन्धी एकमत्य 'हित साधन' ओ 'मिथिलामोद'मे देखल जाइछ।

शिक्षाक प्रचार हो एहि बिन्दु पर सेहो दुनू पत्र एकमत अछि, परन्तु शिक्षाक स्वरूपक प्रसंग दुनूमे वैमत्य छल। 'हित साधन'

१—म० म० मुरलीधर झा (लेखक : चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', प्रकाशक : मैथिली अकादमी, पटना) पृष्ठ २९—३८ द्रष्टव्य।

आधुनिक शिक्षाक प्रबल पक्षपाती छल, परन्तु 'मोद' आधुनिक शिक्षासँ सदाचार भ्रष्टता तथा शास्त्रीय अपरिपक्वताक सन्देह व्यक्त करैत छल। निम्नांकित उद्धरणसँ एहि कथनक पुष्टि होइत अछि ! 'मोद' लिखैत अछि—

"मोदामोदिजन ! की अपने लोकनि ई बुझैत छी जे मिथिलातिरिक्त सुशिक्षित अनेक देशमे जाहि प्रकारेँ पाठशालामे थोड़ २ अवस्थाक बालिका लोकनि जाय २ पढ़ैत छथि ताहि रूपेँ मिथिलहुमे हो ? होओ, उत्तम थिक। किन्तु संगहि इहो जानि राखू जे एकर चरम फल एतबे होएत जे ई भेलासँ परम आनार्य आर्यमतक पोषण होइत। आहा ! ओकर बेटी उढ़रि गेलैक वा गामहिँ गाम प्रचलित 'बगड़िया'—इत्यादि घोषण निवृत्त भय कलिमहिमा बढ़त। से बढ़ौ, उचिते थिक।....

औ महापुरुष शिक्षा प्रचारक ! ई शिक्षा की परमार्थ विधायक बुझैत छी ? किछु नहि प्रत्युत सर्वथा अधः पतनक मूल निश्चय जानू। औ लोकनि ! बाल्यावस्थासँ पढ़ि पढ़ि लोकमे प्रतिष्ठित कहबैत क्यो आर्य, क्यो जैन, क्यो तुलसाराम, क्यो क्यो बाबासिद्ध एहिना बौआय २ जीवनापवाहन करैत छा तखन थोड़ेके दिन एम्हर ओम्हर पढ़ि बालिका लोकनिक ज्ञान केहन होयतनि ? हमरा जनैत तँ उच्चकुलक बिनु पढ़लिये १० वर्षक अवस्थाक कन्याकेँ प्रायः जतबा अपन कुल, शील, श्रद्धा, भक्ति ओ स्नेह रहैत छनि पोथा पढ़निहारि नीचकुलक युवतीअहुँ काँ ओ दुर्लभ। रामचन्द्र चौदह वर्ष वनवास कयलन्हि कतै २ सँ पत्र व्यवहार होइत छलनि ओ लंकामे रावणक ओतय रहैत जानकीसँ जखन हनुमान भेट कैलथिन्ह तखन रामचन्द्रक पठावल 'हम आयल छी' एही विश्वासक हेतु एक औंठी देलथिन, यदि एहन लेख पठनादिक व्यवहार रहैत तँ रामचन्द्रक हस्ताक्षरकेँ ओ नहि चिन्हितथि ?

सर्वथा सबहिँ काँ उत्तम रूपेँ विचारि देखक थिक जे जाहिसँ सर्वोपरि धर्मरक्षा रहै ओ स्त्रीपुरुषक सौमनस्यमे हानि नहिँ हो एहन शिक्षा अवश्य करक थिक।"[1]

यद्यपि सामाजिक कुरीति सभक निवारणार्थ मैथिल महासभा सदृश संस्थाक संगठन भ' चुकल छल, परन्तु ओहिमे जे सक्रियता चाही से

---

१. मि० मोद, उद्गार २८-२९, पृ० ७५-७७।

Scanned by CamScanner

कहिओ नहि आबि सकल, भाषाक विकासक प्रसंग तँ मैथिल महासभा सर्वथा उदासी ने छल, परन्तु 'मोद'के भाषाक विकासक अतिशय आतुरता छलैक। दोसर मैथिल महासभाक परिधि ततेक संकीर्ण छलैक जे मिथिलाक निवासी सब धर्म ओ सब वर्गक प्रवेश ओहिमे नहि छलैक। समाजमे एहनो जागरूक लोक छलाह जे सम्पूर्ण मिथिलाकेँ दृष्टिमे राखि संगठन करबाक पक्षपाती छलाह। एहन संगठनक हेतु एक प्रस्ताव छल। प्रस्तावक छलाह नवटोल निवासी, 'रामेश्वर' नामक उपन्याकेक प्रणेता पं० जीवछ मिश्र। हुनक विचारकेँ 'मोद समाजक समक्ष उपस्थित कयलक। प्रस्तावक स्वरूप निम्नांकित छल—

"अनेक दिनसँ ई प्रस्ताव उठल अछि जे मैथिल समूहक दिशिसँ एक साहित्य संवर्द्धिनी सभा स्थापित कयल जाए जकर समर्थन पठितमात्रक हेतु आवश्यक, कारण जातीय उन्नतिक हेतु वेष, भाव ओ भाषा एही तीनूक आदर तथा सर्वदा एहि तीनूसँ अपन जातीय भाव व्यक्त राखब मैथिल सबकेँ कर्त्तव्य, तेँ एहि तीनू विषयपर अपन सामान्य विचार क्रम २सँ मोद पढ़निहार काँ अवगत भै गेल अछि। मैथिलक अनेक जातीय सभाजनु भै जाए, सब सदाचार वंशोर्त्तीर्णक हेतु ई 'मै० म० सभा' उदारतासँ काज लेथु से आग्रह सभा आरम्भक पूर्वहिसँ देखबैत आयल छी, परंच परिणामक हेतु केहनो कार्यक प्रस्ताव किऐक नहिँ हो, किन्तु प्रस्ताव कैनिहारकेँ यदि गुरुत्व रहितनि तखन तँ एहिपर विचार भै सकैत, से नहि भै हमरसन अवज्ञाभाजनक प्रस्ताव अनादरमध्यहि उड़ाए देल गेल। सम्प्रति अवज्ञा कैनिहार विवेचक काँ आँखि पसारि देखबाक थिकन्हि जे संचालाक लोकनिक दूरदर्शिता सँ अनेक मैथिल एहि 'मै० म० सभा'सँ अतिरिक्त सभा कैओ आन २ सभामध्य योगदान करैत एहि सभाक व्यापकता मध्य पूर्ण बाधा पहुँचाए देलनि, तेँ निरुपाय भेलासँ दोसर उपाय नहिँ देखि "गेलो पानि बान्ही आरि" एहि लोकोक्ति काँ चरितार्थक वासनासँ केवल भाषामात्रहु मध्य एक्य रखबाक उद्देश्यसँ ई प्रस्ताव विशेष सामाजिक अवगत होइछ। कारण जे मिथलावासी भैओ रुष्ट भै क्षत्रिय लोकनि राजपूत महासभामध्य मिलि गेलाह वा कतेक व्यक्ति साधु सभा निर्माण करथु वा गोप जातीय महासभा—आदि बनाए "तीनि तिरहुति आ तेरह पाक" 'एकर भारी नाद करथु, किन्तु मैथिल भेनहि सबहिक भाषा मैथिल होइछ तथा मिथिलाक

साहित्यसँ अपना लोकनिक जीवन चारितार्थ कै सकताह वा भाषाक उन्नतिक सम्बन्धसँ सबहि मैथिलक एक विचार होएत तथा नवीन विश्वविद्यालय मध्य एहि उचित आसनपर बैसाए सम्पूर्ण मैथिल समाजक गौरव रक्षाक वासना सब काँ होएब स्वाभाविक प्रतीत होइछ, तेँ समुदायक कथै कोन जे जाहि व्यक्ति विशेषकाँ मिथिला भाषासँ वा मैथिल मात्रसँ सम्पर्क वा समत्व होइन्हि हुनका लोकनि काँ एहि सभाक सफलताक हेतु साध्यभरि प्रयासी होयबाक थिकन्हि, यद्यपि एहि कार्य मध्य प्रथम उद्योगी ओ उत्साहीक प्रयोजन छैक। कार्य आरम्भ भेला उत्तर मैथिल मात्रसँ बल पौला उत्तर आवश्यक द्रव्य एकत्र होयब कोना चित्र नहि मन अबैछ परंच प्रथमारम्भ मध्य केवल प्रस्ताव उठौलहिसँ कार्य होएब संभव नहि। यदि निर्भीक महानुभाव एहिपर कहि बैसथि जे "परोपदेशे पाण्डित्यम्" तनिकासँ साञ्जलि निवेदन जे वस्तुतः हमर जीवन यात्राक परिवर्त्तन दिशि दयादृष्टि दै मानसिक ओ शारीरिक आदि दुर्बलताक विचार करथि। आशा जे एहि देश सेवासँ सन्तुष्टता देखौताह अतएव प्रस्तावक अनुमोदक ओ समर्थक उत्साही महाशय लोकनिसँ अर्थात् बाबू साहेब श्रीयुत गंगापति सिंह जीउ, पण्डित श्रीजीवनाथ राय काव्य व्याकरण तीर्थ ओ श्री यदुनाथ झा मुरहो, भागलपुरसँ सोत्साह प्रार्थना वा अनुरोध जे एहि प्रस्ताव काँ कार्य मध्य आनि मै० म० सभासँ पूर्वहि एकर प्रबन्ध कै ओहि संग श्रीमान् मधुसूदनक मंगल स्तुति सह एहि प्रस्तावित साहित्य-संवर्द्धिनी-सभाक जन्मदाताक पदवी काँ प्राप्त क' मैथिल मात्रक उपकारी बनैत जाथि।[1]"

कतेक दूरदर्शिता पूर्ण विचार एहि उद्धरण मे व्यक्त कयल गेल अछि से स्वयं ऊह्य थिक। प्रायः आगाँ चलिक ' यैह विचार मैथिली साहित्य परिषदक रूपमे कार्यान्वित भेल हो से सम्भव। मैथिल महासभाक नीतिसँ मोद केँ सब दिन मतभिन्नता रहलैक। मोद सक्रियता चाहैत छल आ मैथिल महासभा मूलतः महाराज दरभङ्गाक वर्चस्व समस्त मिथिला पर अक्षुण्ण रहय तदर्थ एक अस्त्रमात्र छल। महाराजक पार्श्ववर्त्ती लोक "नृपस्य चित्तं कृपणस्य वित्तम्" आदि स्मरण राखि मधुर वचन कहनिहार सब छलथिन, राजाक कृपापात्र रहब, अभीष्ट रहैत छलनि, कर्त्तव्य बोध करायब, त्रुटि दिस ध्यानाकर्षण करब, कदाचित् श्रीमान् रुष्ट भ' जाथि एहि आशंका सँ

१.—मि. मोद उद्‌गार ९४, पृ० १५-१६।

Scanned by CamScanner

सब गोटे फराके रहब श्रेयस्कर बुझैत छलाह। 'मोद' एहि सब दिस महाराजक ध्यानाकर्षण करैत छलनि, जाहि कारणें दुर्मुख मानल जाइत छल। ओना, मोदक भाषामे तीक्ष्णता अनुपातमे किछु विशेष अवश्य रहैत छलैक।

एहि ठाम प्रसङ्गतः अपना संग घटल घटनाक उल्लेख क' देब असंगत नहि जानि उल्लेख क' दैत छी।

वर्त्तमान मिथिला मिहिरक पुनर्जन्मक कथा थिकं। १९५९ ई० मे अजमेर में. महासभाक अधिवेशन छलैक। राय बहादुर शिवशंकर झा महासभाक महामन्त्री छलाह, कार्यसमिति मे श्रद्धेय राजपण्डित बलदेव मिश्रजीक वर्चस्व रहिते छलनि। विषय निर्धारिणी समितिमे अलीगढ़ निवासी प० वीरदत्तमिश्र प्रवासी मैथिल मिथिला मिहिरक पुनः प्रकाशन विषयक प्रस्ताव उपस्थित करय चाहैत छलाह। कलकत्ता मंचपर परिचय रहलाक कारणें ओ प्रस्ताव उपस्थित करबाक माध्यम हमरा बनौलनि। हम जखने प्रस्ताव कयलहुँ, तुरत राय बहादुर कहलनि—अहाँ एखन नेना छी, एहि सब विषयक गम्भीरता नहि बुझबैक। हम किछु तर्क उपस्थित करबाक हेतु मुँह ओरिऔलहुँ कि राजपण्डितजी झपटैत कहलनि—मै. महासभा आ मि. मिहिर मे कोन सम्बन्ध ? मि. मिहिर चर्चा सँ श्रीमान् अप्रसन्न भ' जाइत छथि। हम दम साधि लेल। तखन पुनः कोना महाराज साहेबक कान धरि ई प्रस्ताव पहुँचल तकर वर्णन आत्मश्लाघा होयत। परन्तु श्रीमान् अप्रसन्न नहि भ' पुनः प्रकाशनक व्यवस्था कयलनि। एकर उल्लेख करबाक तात्पर्य ई जे श्रीमान् लोकनिक पार्श्ववर्त्तीक प्रसंगमे अपन धारणा अछि, तदनुसार बुझना जाइत अछि जे 'मोद'क प्रसंग विषम धारणा राज्याश्रित लोकमे पसरल छल, तें बाबू लक्ष्मीपति सिंहक मन्तव्य छनि—''कटु-तिक्त कषायक मात्रा अनुपात क्रमे किछु अधिक होइत जएबाक कारणें 'मोद' कतेको पाठक लोकनिक हेतु आकर्षक नहि रहि पाछू कतेकोक हेतु विकर्षणहिक हौआ बनि गेल।''

परन्तु 'मोद' अपना युगमे एक सजग प्रहरीक काज करैत रहल। सामाजिक सम्पूर्ण गतिविधिपर दृष्टि रखैत कुरीति, कुसंस्कार, अन्धविश्वास सभपर अपन गम्भीर विचार समाजक समक्ष उपस्थित करैत रहल। ओहि कालक इतिहास कें संयोगि क' ई पत्र रखने अछि। बिहार बंगालक विभाजनक ओ समय छल राजनीतिक हलचल बढ़ि गेल छल, सब दिनुक

स्वतन्त्र अस्तित्व रखनिहारि 'मिथिला' 'बिहार'क पेटमे समा गेलि, एहि ठामक श्रीमान् लोकनि ओहि अस्तित्वक रक्षा नहि क' सकलाह आदि भावनाक प्रतिबिम्ब एखनहुँ 'मोद' मे देखल जा सकैत अछि।

अन्य अन्य क्षेत्र मे तँ 'मोद'क हाक अरण्यरोदने सिद्ध भेलैक, परन्तु भाषाकेँ सुप्रतिष्ठ स्वरुप देबामे ई पूर्ण सफल भेल। गद्यक तेहन ठोस आधार-शिला स्थापित कयलक जाहि पर मैथिलीक वर्त्तमान महल आइ ठाढ़ अछि। भाषा केँ स्थिर स्वरूप देबाक हेतु ई कतेक सचेष्ट रहल तकर एक उदाहरण प्रस्तुत अछि। 'मिथिला मिहिर'क 'स्वच्छन्दता' शीर्षकमे 'मोद' विचार व्यक्त करैत अछि—

"………औ बलाँ ! अपने क्रुद्ध भै जे कही से कहू, परन्तु हम अपनेकेँ बराबरि सावधान करबैत जाइत छी जे जँ अपने सम्पादकक आसनकेँ शोभित कै रहल छी, अपने मैथिल थिकहुँ तथा मिथिलाहि देश मेँ रहितहुँ छी, तखन एहन भ्रष्ट भाषा !!! औ ! वरद ? नहिँ, बड़द। हैजा ? नहिँ, ओवा वा महामारी वा 'कालरा' कहू से धरि स्वीकृत अछि। "देखय मेँ अबै अछि" ई कोन भाषा भेल ? 'बरै' केँ 'बरई लिखैत छी ? भला उक्त चौर मेँ लग……एहि वाक्य मेँ 'लग' सँ अगिला शब्द नहिँ लगौने कोनो हानि होएत ? 'गलफर' ? नहिँ, गलफड़.. इत्यादि कतेक लिखू थोड़को दृष्टि दिऔक। एही सँ अपने केँ कहैत छी जे जानि बुझि अपने "मिथिला भाषा" पर अपन स्वच्छन्दताक कुड़हरि चलाय रहल छी। वा जँ अपनेकेँ अनेक काज मेँ लागि मिथिला माताक आराधनक अवसर नहिँ भेटैत अछि तँ अपने तकर सम्पादको नहिँ, अतएव क्रुद्धो ताहि हेतु जनु होउ, परन्तु एतवा जानि राखू जे पत्रक सम्पादकता केँ स्वीकार कै जे अपने आन काज मेँ लगावल जाइत छी ई परम अन्याय होइछ।

जतेक 'मोद'क दुर्गुण मृगया (शिकार) हेतु बाबू भैया लोकनि अपन लक्ष्य लगौने रहैत छथि ततेक जँ लगहि 'मिहिर'क जंगल कैँ झोरथि तँ वस्तुतः 'मि० मिहिर' लोकमेँ जन्तु रहित भै मनुष्यगम्य भै जाइत, से नहिँ भै बलात् कण्ठ दाबि 'जेठरैयति' 'पटवारी' इत्यादि लोकक ओतै पठबैत रहू, किन्तु ई तँ कहबे करब जे 'मिथिला' देशकेँ 'बिहार'क सातु बनाय 'मिथिला-भाषाकेँ लवंगी मरिचाइ बुझि दाँत तर दाबि सुरकैत चलू, तावता अपन 'मि. मिहिर'क 'कैस' भरि रहल छी से भरू परन्तु, औ बाबू ! ई बड़ दुखद

Scanned by CamScanner

होइत छैक; एहि सँ उत्तम होइत जँ कचहरिया (अनमोली बोली) चूड़ा तथा पठिहारबा बाजब (चूरा, गुर, राहरि, कपरा.....पड़िचय छावकें गूड़, अग्रहण, श्रीणाथ) दहीमें आइ काल्हुक हिन्दी गूड़कें गूड़ि खैतहुँ तँ बड़ सुखद होइत; किन्तु जँ 'हकीम साहेब'क उर्दू औषधीक सेवन कैने होएब तँ चूड़ादही ओ गुड़ प्रिय नहिं लागत, तावता की लवंगीक गाछे उपाड़ि फेंकब ?

कहू तँ कतेक साधारणो लोक उत्साह कै लेख लिखि पठबैत अछि से हो, किन्तु अपने एही काजक हेतु नियत रहिओ ताहि लेखकें नहिं देखब ओ केवल 'हिन्दी'क आदर करैत चलब ? की स्वच्छन्दता ? धन्य। धन्य !! धन्य !!! ई कोनो अनुचित कथा नहिं कहल अछि; श्री ५ मान् मिथिलेश महाराज बहादुरक गुणगानक तान लगौनिहार कतेक आन पत्र सब विद्यमान छन्हि, किन्तु मैथिल समाजक प्रधान दुःख ज्ञापक पत्र कैटा अछि ? आन देशमें जे अभिनन्दन पत्र देल जाइत छन्हि से देखने वा सुनने "हमर मिथिला-देशक श्रीमान् एतेकटा छथि, एहन छथि' एतबै कि औरो किछु से तँ बुझितहि छी सब गोटे, किन्तु एहन ईश पाबिओ मिथिला अनिर्दिशि भेलि कलपि रहलि छथि !!! उत्कल सँ कोन गुणमे मिथिला घटलि जे यक्ष-भूमि मिथिलाक नामकें मारि "बिहार ओड़ैसा" हो तथा "मिथिला बिहार" नहिं हो ? इत्यादि विषय में चुप भै बैसि 'मिथिला मिहिर' नाम राखि पत्र चलाएब की ई स्वच्छन्दता नहिं ? धन्य, धन्य, धन्य !

मिथिलामिहिरक कल्याणार्थी ज्ये० बन्धु"[1]

एहि प्रकारक दृढ़ता, निर्भीकता तथा स्पष्टवादिताक हेतु 'मोद'क साहसक जतेक सराहना कयल जाय से थोड़ होयत।

ई एक समर्थ लेखकमण्डलक संघटन कयलक जे विभिन्न विषय पर लेखनी चलाय मैथिलीक भण्डारक श्रीबृद्धि करबामे जुटल रहल। लेखकलोकनिमे छलाह—प० जीवनझा यजुवालय, प० यदुनाथझा मुरहो, प० त्रिलोचनझा बेतिया, रामचन्द्रमिश्र 'चन्द्र' जैन (मथुरा), प० बबुआजी मिश्र, काली प्रसाद सिंह चौधरि, हसुआ (गया), पं० बोधकृष्णझा दसौत, पं० गौरीकान्त शर्मा, राजग्राम, म. म पं० परमेश्वरझा, पुलकित मिश्र, नवटोली, पं० चन्द्रशेखर

---

१. मि. मोद, उद्‌गार ११०, पृष्ठ ८-९-१०।

झा, हरिनगर, पं० केदारनाथ झा, कटैया, पं० तारा चरण झा, दरभङ्गा, पं० जनार्दन झा, बाजितपुर, वैजनाथ सिंह 'अखिलेश', चम्पानगर, बदरीनाथ उपाध्याय, बरारी, श्रीकृष्ण राय 'मोद रिपोर्टर', गजाधर झा, मधुबनी, पं० शिवेश्वर झा, लालगंज, बाबू रमानन्द ठाकुर, मधुबनी, पं० जनार्दन झा ठाढ़ी, प० जनार्दन मिश्र 'परमेश', सबौर (भागलपुर), नन्द किशोर दास, गोरापट्टी, बबुनन्दन झा, मोरबा ताजपुर, सदानन्द ठाकुर, श्रीनगर (बेतिया), शंकर झा, हरिनगर, पं० हरिनन्दन मिश्र, कानपुर, म०म० डा० गंगानाथ झा, वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु', बसैठ, पं० कपिलेश्वर मिश्र, वकील, मुकुन्द झा, फुलशरा (पूर्णियाँ), पं० श्रीकाशीनाथझा, कोइलख, रायबहादुर सिद्धिनाथ मिश्र, पं० गंगाधर मिश्र, चैनपुर पं० गंगाधर मिश्र, वकील, हरिमोहन चौधरि, रूपसपुर, पं० जीवछ मिश्र, नवटोल, पं० महेश्वर झा, अड़ेर, प्रमथनाथ मिश्र, मालदह, पं० रविनन्दन मिश्र बसानपट्टी, श्रीमन्तनारायण, खिरहरी, कालूचक, यदुनन्दन झा, सरैया, मदनमोहन मिश्र, मगदपट्टी, पं० दीनबन्धु झा, ब्रजमोहन मिश्र, तिलडीहा, सूर्यनारायण झा, राँटी, पं० सुरेश मिश्र, राज-दरभंगा, पं० चक्रधर झा, सागरपुर, डा० अमरनाथ झा, प्रयाग, कृष्णकान्त झा, पिलखबाड़, पं० हरिनन्दन मिश्र, भवानीपुर, मनमोहन मिश्र, मोद कार्य-परिचालक, पं० शशिनाथ झा, राँटी, श्यामसुन्दर दास, लहेरियासराय, पं० गिरिधर मिश्र, चकौती, जयगोविन्द शर्मा, पं० लक्ष्मीवल्लभ झा, धरणीधर लाल दास, मधुबनी, पं० महावीर मिश्र, पाहीटोल, पं० गदाकर झा पं० ऋद्धि नाथ झा, उजान, प० ब्रजनन्दन मिश्र, प० चेतनाथ झा, अभेद झा, लोहा, राम-नारायण शर्मा, लक्ष्मीपुर, सतीशचन्द्र मिश्र, लोकनाथ झा, पूर्णिया, ज्यौ० हरी झा, रामनगर, पूर्णियाँ, बूचन शर्मा, रमौली, खड्गनाथ झा, गंगौली, श्रीधर झा, पचगछिया, महेश्वर झा, मुरैठ, योगानन्द मिश्र, तिलाठी, नीलाम्बर झा, राँटी, रामसुन्दर ठाकुर, सलेमपुर, श्रीकान्त झा, दड़िमा, ब्रजनन्दन झा, नवटोल, प्रेमधन झा, नडुआर गोवर्द्धन झा, तिलडीहा, बाबू रासबिहारी सिंह झा, चनौर, ज्यौ० बलदेव मिश्र, बनगाँव, माधव झा, चानपुरा, पं० बुद्धिनाथ झा, शिवकुमार झा, बसनही, भागलपुर, इन्द्रपति सिंह, बाँकीपुर, बलभद्र झा, धमौरा, ज्यौ० केशव झा, लक्ष्मीपुर. भूषण मिश्र, सुगौना, जलधर मिश्र, काशी, छेदी झा, मधेपुरा, पं० कुशेश्वर कुमर, बाजित-पुर, पं० महेश झा, शिवपुर, वागीश मिश्र, मधुसूदन झा, छत्रधारी मिश्र, ज्यौ० मुरलीधर ठाकुर, पं० सीनाराम झा, चौगामा, अवधलाल झा, मुख्तार'

Scanned by CamScanner

मधेपुरा, पद्मनाभ चौधरि, चानपूरा, धूर्जटी झा, बानू छपरा, (वेतिया), कार्त्तिक नारायण झा, कछुवा, पं० हीरानन्द झा, काशी, रामकृष्ण खाँ, वनगांम, विशेश्वर झा, समौल, गोनौड झा, गौर, अन्हड़ा, नवति झा, मालपुर, मुजफ्फरपुर, प० श्रीकृष्ण मिश्र, पुरुषोत्तमपुर, देवेन्द्र नाथ झा, मधेपुरा, शिवानन्द चौधरि, रूपसपुर, शशिनाथ झा, सवौर, प० कुंजी झा, नागदह, धर्मनारायण झा, देवघर, श्याम नारायण कुमर, बाजितपुर, गुणवन्त लाल दास, मुख्तार, पुष्पलाल झा, पूर्णियाँ, कार्तिकेय झा, पूर्णियाँ, महेन्द्र नारायण झा, चन्द्रशेखर पुर, प० लक्ष्मीकान्त झा, रामगंज, जगतीनाथ झा, धमदाहा, प० गुणानन्द झा, निकासी, बदरीनारायण राय, दुर्गा गंज, ज्यौ० बवकन झा, चम्पानगर, म०म० डॉ० उमेश मिश्र, गजहरा, केदार नाथ झा, घोघरडीहा, अभिनन्दन चौधरी, बघवास, प० विश्वनाथ झा, लखन झा, सौराठ, सहस्रनाथ गोस्वामी, चम्पानगर, हरिमोहन चौधरी, रूपसपुर, प० श्रीनन्दन झा, ठाढ़ी, शिवनाथ झा, प० नन्द किशोर पाठक, बथनाहा, प० पुलकित लाल दास, 'मधुर', जयनाथ झा, दाध, नित्यानन्द दास, बभनगामा, अनुग्रह लाल दास, परवत्ता, प० अनूप मिश्र, नगवास, चन्द्र नारायण दत्त, राघवेन्द्र झा, परसा, प० जयकृष्ण झा, प० श्री शशि नाथ चौधरी, दगभंगा, प० श्री वेदानन्द झा, कोइलख, गोकुल नाथ झा, हड़री, मुंसी रघुनन्दन दास सखवाड़, ज्यौ० मधुकान्त झा, बेनीपट्टी, रामेश्वर ठाकुर, करही, इत्यादि। ओहि समयमे हैमवती देवी, चन्द्रमुखी देवी, श्यामा देवी, लेखिका लोकनि सेहो लिखय लागलि छलीह। विजयानन्द शर्मा, उद्योग शर्मा झाउ झा, आदि छद्म नामधारीलोकनि सेहो एहिमे लिखैत छलाह।

लेखक लोकनिकें प्रशिक्षित करबाक हेतु जे परामर्श देल जाइत छलनि तकरो एकटा उदाहरण द्रष्टव्य अछि—

"अतिरिक्त निवेदन ई अछि जे कोहुना अपने लोकनि लिखब हम खराजि मोद योग्य बनाय मुद्रित कराएब। एहना अवस्था में लेख प्रेषक महोदय कें उचित थिकन्हि जे जे लेख पठाबथि से जं स्वयं मोदमे छपबाक योग्य पठावथि अर्थात् स्पष्ट अक्षर तथा विभक्ति, क्रिया, कारक, वाक्य सन्दर्भ लेखक उपर मे अपन वक्तव्य ओ एकहि पृष्ठ मे रहै इत्यादि यावत्साध्य लिखि पठावथि तँ सुगमतासँ ताहि २ महाशय कें लेख पाटव झट भै सकैत छन्हि।"[1]

---

१. मि. मोद, उद्गार-५०-५१।

एहि उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे कोनो रचना सम्पादकक खराजपर चढ़लाक बादे मुद्रित होयबाक हेतु प्रेस जाइत छल। एहिसँ ईहो निष्कर्ष बहराइत अछि जे भाषाक स्वरूप पर पूर्ण विचार मन्थन भेलाक बादे निर्णय लेल गेल होयत। अतः ई मन्तव्य जे....."एहि पत्रिकामे मैथिली गद्यक जाहि शैलीकेँ अपनाओल ताहिमध्य मैथिलीक अपन विशिष्ट ध्वनिक ध्यान नहि राखि हिन्दी ध्वनिक अनुकूल वर्ण प्रयोग कएल।.......जाहिसँ मैथिली लेखन शैली मे तहिआ जे गम्भीर विषमता उत्पन्न भेल से अद्यावधि दूर नहि भए सकल अछि तथा शैलीमे एकरूपता नहि आबि सकल।" हमरा दृष्टिएँ पूर्वाग्रहयुक्त अछि। एहि प्रसङ्ग मोदक निम्नांकित विचार पठनीय अछि—

"श्रीयुत विज्ञ मिथिला भाषा विचारक! अपने लोकनि मिथिला मोद कैँ देखि ओ अपन यथेच्छ लेख कैँ विचारि विप्रतिखिन्न अर्थात् कोन भाषा लिखैक योग्य थिक एहि संशय मेँ पड़ि नानाविध शङ्का आ समाधान करैत होएब—यदर्थ दुइ चारि (२-४) उदाहरण हम देखबैत छी यथा—"ओ ई कार्ज? (र्य) कएलैन्ह, ओ ई काज कयलन्हि, ओ ई काज कैलन्हि, ओ एहि काज कैँ कैलन्हि।" आब एतै विचारणीय जे कोन प्रयोग शुद्ध। ध्यान देबाक थिक जे जे क्यो वर्षमध्य २-४ चिट्ठी मात्र लिखैत छथि हुनका बुझने तँ जे अपने लिखैत छथि वेह शुद्ध, यदि ताहि प्रयोग कैँ मानी तँ उपर जे देखा आएल छी चारिटा सेहो पहाड़ा मेँ पड़ि पहाड़ भै जाएत से कोनहु रूपेँ नहिँ बुझल जाय सकैत अछि; अथच यदि उच्चारण पर निर्भर होएब तँ "कएलैन्ह, कयलन्हि, कैलन्हि" एहि तीनू सँ एक विलक्षणे उदाहरण थिक जकरा हम कोनहु मातृकाक्षर मे" लिखि नहि सकैत छी, एहना स्थिति मेँ 'कैलन्हि' येह यदि 'मोद' मेँ प्रयुक्त होइत अछि तथापि "कएलैन्ह, कयलन्हि" एहि दुनू सँ जे बोध होएत सैह बुझल जाइत अछि, विशेषता ई जे एक तँ अक्षर लाघव, दोसर (ध्यान दै विचार करू जे) संस्कृत शब्दोच्चारण मेँ जे २ अक्षर जेना २ उच्चारित होइत अछि ताहू मे कैक गोट अक्षर एहन अछि यथा 'ऋ' क दाक्षिणात्य उच्चारण मेँ 'रु' बुझना जाएत, 'ज्ञ' क 'दन्त्य' मैथिल वर्ग मेँ 'ग्यँ' ओ नवीन शिक्षित-समाज मे यथार्थ 'ज्‌ञ' उच्चरित होइत अछि।"[1]...........

---

१. मि० मोद, उद्गार ४४, पृ० ४।

पूर्वहि कहल जा चुकल अछि जे 'मैथिल हित साधन'क प्रतिक्रिया स्वरूप 'मि० मोद'क प्रादुर्भाव भेल। प्रतिक्रियाक कारणेँ हित साधनक अनेक नीति सम्बन्धी बिन्दु पर सहमत होइतो भाषाक स्वरूपक प्रसङ्ग अपन भिन्न स्वरूपकेँ ग्रहण कयलक। हित साधन कय, भय, जायत, कयलन्हि, हयत सर्वत्र यकारक प्रयोग करैत छल। 'मोद' होएत, जाएत आदि मे एकार, कै, भै, कैलन्हि आदि मे ऐकार। 'हित साधन' 'थीक' लिखैत छल तँ मोद 'थिक' लिखय लागल। एहिना 'मिथिला मोद' जेँ दरभङ्गाक महाराज ओ राज्याश्रित लोकक संग राज दरभंगा द्वारा संचालित 'मिथिला मिहिर'क कटु आलोचना करैत छल ओ म. म. डा० सर गंगानाथ झा, प० चेतनाथ झा, डा० अमरनाथ झा आदि व्यक्तिक वर्चस्व नहि स्वीकार क' निर्भीकता सँ विचारक खण्डन करैत रहलनि एकर प्रतिक्रिया पुबारि पारक लोकमे भेल आ 'मोद' क भाषा स्वरूपक विपरीत भय वा भै, कयलन्हि, वा कैलन्हि एहि दूनू सँ भिन्न एकार शैलीक प्रचार पर जोर देल गेल। अन्यथा 'मोद' प्रेसक युग मे जाहि लाघवकेँ स्वीकार कयने छल तकर अनुकरण परवर्ती अधिकतर पत्रकार सब करैत रहलाह। भाषाक स्वरूपक प्रसंग कतेक मन्थन होइत छल से मोदक अंक सभक अवलोकनेसँ स्पष्ट होइत अछि। लेखकक एक समूह अभ्यस्त भ' चुकल छल ओहि रूपेँ लिखबाक। यदि बाद मे विवाद नहि उठाओल जाइत तँ एकरूपता आबि गेल रहैत।

भाषाक स्वतन्त्र अस्तित्वक रक्षार्थ लिपिक रक्षा परमावश्यक थिक। एहि तथ्यकेँ ताही समयसँ ध्यानमे राखल गेल अछि। 'मोद' क आवरण पृष्ठ पर ओकर नाम मिथिलाक्षरक ब्लॉक बनाय छापल जाइत छल। क्रमिक देवाक्षरक प्रचारमे वृद्धि आ मिथिलाक्षरक ह्रास होइत देखि लीथो बनबा क' 'मोद' छपने छल।[1] मिथिलाक्षरक आकारक शब्दचित्र प० वैद्यनाथ मिश्र 'विद्या-सिन्धु' छन्दोबद्ध खिंचने छलाह। एकर शीर्षक देल गेल छल "वर्णोद्धार अन्तरालाप पिहानी"।[2]

मिथिलाक्षरक संरक्षणार्थ 'मोद' समय-समय पर समाजक ध्यान कोना

१. मि. मो., उद्गार १०७ द्रष्टव्य।

२. पिहानीक स्वरूप परिशिष्टमे द्रष्टव्य।

Scanned by CamScanner

आकर्षित करैत रहैत छल तकर उदाहरण देल जाय। प० मनमोहन मिश्र लिखने छथि—

"औ लोकनि ! हम अपन छोट बुद्धिसँ बुझैत छी जे पहिने मैथिल पण्डित लोकनि जे कोनो ग्रन्थ बनबैत छलाह, ताहिमे प्राय: अधिक व्यक्ति अपन परिचय नहि दैत छलथिन्ह, तकर कारण हुनका लोकनिकेँ की छलन्हि ओ बुझैक सामर्थ्य हमरा नहि अछि, हँ तखन एतबा कहि सकैत छी जे ओ महानुभाव लोकनि संस्कृत छाड़ि आन कोनो भाषामे ग्रन्थ बनाएब पण्डिताइमे दाग लगाएब बुझैत छलाह, से नहिँ मानितथि तँ जाहि महा-महोपाध्याय लोकनिसँ अनेक तर्कशास्त्रक ग्रन्थ बनाओल गेल हुनका लोकनिसँ 'मिथिला-भाषा'मे कोश, व्याकरण ओ काव्य इत्यादि बनब की चित्र छल ? परञ्च ओ लोकनि त्रिकालज्ञ भैओ ई नहिँ जनलन्हि जे थोड़ेक दिन पश्चात् एहनि मिथिला शिथिला भै जैतिहि जतैक लोकके भाषाग्रन्थहुक काज पड़तन्हि, खेद !!

महोदय गण ! ई दृढ़ जानि राखू जे सम्प्रति जाहि रूपैँ देशोन्नति कैनिहार लोकनि 'मि० भाषा' गन्थक हेतु अछतबैत-पछतबैत छी, ताही रूपे अपने लोकनिक सन्तान मिथिलाक आखरहु लै पछतौताह, जे आखर आइ काल्हि अधिक सभ्यहु लोकनिकैँ कठिन बुझि पड़ैत छन्हि (लिखि पढ़ि नहिँ सकैत छथि) तेँ हम अहाँ लोकनिसँ ई कथा कहबाक साहस करैत छी जे मिथिलामध्य तेहन धनिक वा उत्साही पुरुष नहि छथि जे देश रक्षार्थ एको दूइ 'फार्म' मिथिलाक्षरक 'टाइप' बनबौताह। औ लोकनि ! एक दूइ 'फार्म'क कोन कथा जे अनेक 'फार्म'क टाइप बनि सकैछ, किन्तु ई काज १०-२० बिगहा खेत कैनिहार सँ वा 'वकील', 'मुख्तार', 'पेशकार' ओ पण्डित लोकनिसँ नहिँ भै सकैछ, कारण हिनका लोकनि तँ अपनहि राति दिन दैह २ करितहि रहैत छथि।

एहि दिशि श्रीमान् महोदय लोकनिक अनुग्रह नहिँ जाइत अछि, हा ! आँखि पसारि देखैत छी वा कान पाथि सुनैत छी तँ सम्पूर्ण मिथिलामे कोन ड्योढ़ी एहन नहिँ होएत जाहि मध्य सब वर्ष थोड़सँ थोड़ २-४ हजार टाका 'थियेटर' कशरत ओ 'आतसबाजी'मे उड़ि नहिँ जाइत हो वा नटुआ, बजनिञा ओ भाट भड़ुआ नहिँ लै जाइत हो, हमरा कहबाक जे इहो सब

Scanned by CamScanner

होऔ, 'दरबार'क शोभा थिक परञ्च जाहि श्रीमान्‌क राज्य तथा ड्योढ़ीसँ एतेक खर्च होइतहि अछि ताहि ठाम गोटेक हजार खर्च जँ एकी 'फार्म'क 'टाइप' बनि जाइत तँ मैथिल मात्रक कतेक टा उपकार होइत ? उपेक्षा श्रीमान् महोदय लोकनिक थिक, मैथिलाक्षरक रक्षा कैल जाए, नहिँ तँ आब थोड़बहि दिनमे अपन मिथिलासँ मिथिलाक्षरक आकृति 'मिथिला भाषा'क शक्ति (जेठि बहिनि) जयबा पर छथि।''[1]

स्मर्त्तव्य जे एतेक पहिनेसँ मिथिलाक्षरक रक्षार्थ श्रीमान् सभक ध्यान आकर्षित कयल जाइत रहलनि, परन्तु ओ लोकनि कानमे तूर द' आँखि मूनि बैसले रहलाह। बादमे मातृभाषाक पाछाँ एहने बताह भेल लोक सभक प्रयासेँ मिथिलाक्षरांकन समिति बनल, पुस्तक भण्डारसँ एकटा दुर्गासप्त-शती तथा आगाँ चलि प्रकाशमे आयल 'मिथिला' नामक मासिक पत्रमे किछु पृष्ठ सम्पादकीय छपबो कयल, परन्तु पुनः सब नष्ट भ्रष्ट भ' गेल। अद्यावधि हमरालोकनि प्रयास करिते रहलहुँ, ककहरा पोथीसँ आगाँ नहि बढ़ि सकलहुँ अछि। एहि अभावक कारणेँ मैथिलीके कोन संकटसँ लड़य पड़ि रहल छैक से ककरहुसँ अविदित नहि अछि। सम्प्रति विश्वविद्यालय १० अंकक मिथिलाक्षर परीक्षोमे देल गेल अछि, परन्तु मैथिलीक कतेक स्नातक ओ प्राध्यापक मिथिलाक्षर जनैत छथि सेहो ककरोसँ अज्ञात नहि।

मि० मोदक माध्यमसँ जे कतिपय ग्रन्थ प्रकाशित भेल ताहिमे निम्न-लिखित पुस्तकक नामोल्लेख कयल जा सकैत अछि—

१. मिथिला भाषा विचार।
२. अर्जुन तपस्या।
३. हितोपदेश (अनुवाद)।
४. म० म० सुधाकर द्विवेदीक जीवनी।
५. महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक जीवनिका।
६. पश्चिमोत्तर-यात्रा वा काश्मीर-यात्रा—म० म० पण्डित मुरली-धर झा।
७. केदारनाथ बदरीनाथ यात्रा (हिन्दी), म०म०प० सुधाकर द्विवेदी।
८. सीमन्तिनी आख्यायिका-म०म० वैयाकरण केसरी प० परमेश्वर झा।
९. चन्द्राभरण।
१०. आनन्दोद्यान (हिन्दी पद्य), प० रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र'।

---

१. मि० मोद, उद्‌गार-८९, पृष्ठ २१-२२।

Scanned by CamScanner

११. द्रौपदी नाटक (हिन्दी), प० करुणाकर द्विवेदी ।

१२. मिथिला सुमति समागम, प० चन्द्रशेखर झा, हरिनगर ।

१३. जानकी परिणय (काव्य), प० जनार्दन झा, ठाढ़ी ।

१४. कपाल कुण्डला (अनुवाद), प० शिवानन्द चौधरी, रूपसपुर, पूर्णियाँ ।

१५. भारतवर्षक इतिहास, (पं० हरिमंगल मिश्र, एम० ए० कृत) शिवानन्द चौधरि ।

१६. सुकन्योपाख्यान । - श्री गंगाधर मिश्र चैनपुर

१७ सत्यव्रतोपाख्यान---पं० गंगाधर मिश्र, चैनपुर ।

१८. कुमारी तपोव्रत—पं० मुकुन्द झा, फुलशरा ।

१९. शकुन्तलोपाख्यान ।

२०. ध्रुव चरित्र ।

२१. श्रीमद्भागवद्गीता--(अनुवाद), पं० त्रिलोचन झा, बेतिया ।

२२. कलिधर्म प्रकाशिका (नाटिका), पं० शशिनाथ झा, राँटी ।

२३. सीताहरण (गद्यमय रामायण कथा) ।

२४. राणा संग्राम सिंह—पं० गदाकर झा ।

२५. मिथिलाक इतिहास--बाबू इन्द्रपति सिंह, पचही ।

२६. नरसिंह पद्यावली—पं० छेदी झा ।

२७. मैथिलोत्तेजना पारावार—पं० बुद्धिनाथ झा ।

२८. मैथिल साहित्य दिग्दर्शन—पं० यदुनाथ झा 'यदुवर'

२९. मुद्राराक्षस (अनुवाद), पं० चेतनाथ झा ।

३०. शिक्षा सरोज—पं० कुशेश्वर कुमर, वाजितपुर ।

३१. गौरी परिणय (प्रबन्ध), गुणवन्तलालदास, 'मुख्तार' ।

३२. मिथिला भाषाक उन्नति—पं० बदरी नारायण राय, दुर्गागंज ।

३३. नलोपाख्यान—म० म० डॉ० उमेश मिश्र ।

३४. उत्तररामचरित (अनुवाद), साहित्यरत्नाकर मुंसी रघुनन्दन दास ।

Scanned by CamScanner

३५. समयोचित पद्यावली ।

३६. मै० छन्दोऽलंकार मंजूषा—पं० सीताराम झा ।

३७. मैथिली शब्दकोश आदि ।

एहिमे कतेको ग्रन्थ पूर्ण भेल, कतेको अपूर्ण रहल । स्मर्त्तव्य जे 'हित साधन जहिना योजनाबद्ध ढंगसँ पुस्तकक प्रकाशन करैत छल, 'मिथिला-मोद' सेहो ओहि पद्धतिकेँ अपनौलक ।

ताहि समयक लेखक लोकनिक चिन्तनक की स्वरूप छलनि ताहिसँ परिचय प्राप्त करबाक हेतु किछु उदाहरण सब उद्धृत करब प्रयोजनीय जानि उद्धृत कयल जाइत अछि । मातृभाषाक रक्षार्थ खूब उग्र आन्दोलन एहि द्वारा होइत रहल । ताहि क्रममे ककरो कनेको रोच नहि राखल जाइत छलनि । निम्नलिखित उद्धरण द्रष्टव्य—

"आबहु बहुत हमर देशीय सुयोग्य संस्कृतविद्याभिमानमत्तगजाकुंश पण्डितजी लोकनि अपन मातृभाषासँ बहुधा विमुखे रहैत छथि, नहिँ तँ एक दिनक आन्दोलनमेँ जे चाहितहुँ भै जाइत, परन्तु एम्हर तँ सुनबै नहिँ, "कतबो डोलाबौ कटिअहि धार" । आब की डाकनि देल जाएत ? उचिते, जखन 'हिन्दी' नागिनीक काटलि मिथिला सविषि भेलि जाइत छथि, यथौ मती नहि, तखन आब की हो; धिक्कार झड़ समान अस्मदादि क्षुद्र जन-समुदाय कैँ !! जे एतेक आर्त्तनाद करैत छी, एकौ रत्ती हमर श्रीमान् लोकनि नहिँ सुनैत छथि तथा कानब छाड़ि हमरा लोकनिमेँ कनेको आत्म-पौरुष नहिँ ? हे परमेश्वर ! जँ यैह करैक हो तँ श्रीमान् लोकनि काँ सर्वदा सुखी राखि अतिरिक्त एहि अकिञ्चित्कर हाथीक चोत सन ("ने नीपै योग्य ने पातै योग्य" समान) अप्रयोजक मैथिलगणक हेतु महाप्रलये होऔ, सैह प्रत्युत उत्तम, पुनः-पुनः ।"[1]

मिथिलाक रक्षाक प्रसंग मोदक चिन्ताक एक उदाहरण—

"मिथिलाक रक्षा कोना होएत ? केवल वार्षिक समारोह, अधिक पाश्चात्य विद्याक प्रचार, देशदेशान्तरमेँ व्यापार वा मिथिलाक १०-१५ महोदयक नाम इत्यादिअहिसँ ? नहिँ होएत । जँ थोड़ थाड़ भेलो तँ सुरेबक आगू नङड़ा, लुल्हा, खोण, कनहाक जेहन आदर होइक से भेलहु

१. मि० मोद्, उद्गार ८७, पृ० २३ ।

उत्तर ताहि दिन जे मर्माहित होएब से जँ सम्प्रति क्षुद्रभाषीक लेख दिशि दृष्टिपात करी तँ सुनल जाय।

साहस कै बजैत छी 'मैथिल सहासभा'में के ककर ठोंठ पकड़ैत अछि जे अवढङाही भाषामें बाजी ? अर्थतः ओ 'मै. म. सभा' एक जंगली गाछ भेल, जा ताहिपर बैसि रहि बजलहुँ ता सैह, तदनन्तर अपन घर आङनो सैह, ततः पर जँ अजार बजार गेलहुँ वा कचहरी सचहरी टहललहुँ कि पिजड़ाक पोसल आत्माराम।

चित्रकूट दरबारमें कैल सबहि जन भार।
चानन घसथि पुजेगरी चोरि करथि क्यौ वीर॥

औ महोदय ! ई वृथा कथा बाजि अपने सबहि कतेक मर्यादा एकट्ठा कैल ? फल भेल एतबै जे अपना देशमें रहि सुख पूर्वक निर्वाह करितहुँ से नहिँ दँतनिपोड़ी भाषाक आश्रय लै चललहुँ कि अपनो घरकैं आने छेकल। तथापि जे एखन थोड़ बहुत राजभाषा जानि कनेको आदृत होइत छी, ताहि दिशि किछु ध्यान नहिँ दैं अपन अधिकृत आयत्त जन समुदायकैं तुच्छ तोषामोदार्थ (जँ जनमलहुँ तँ मरबो नियते तखन) जे दुःख अन्य देशीय लोक नहिँ देइछ ताहूसँ अधिकाधिक देने नरक भोगार्थ सन्तप्त कै रहल छी। ई कोनहु समय में मनोगत नहिँ होइछ ? जँ ई हमर कहब मिथ्या तँ अपन आङन मध्य आकाशमें लाठी घुमौने अनका की ? अथच जँ सत्य हो तँ त्यागि दीअ, बड़ उपकारक विषय कहल अछि।

औ लोकनि ! मिथिलामे अपन आन देशक लोक जे कचहरीमे वकील वा मुखतार इत्यादि छथि ओ लोक सब विशुद्ध मिथिला-भाषा बजैछ। आन देशक व्यापारीक कोन कथा जे मारवाड़ी कैकटा मिथिला-भाषा बजैछ, हमर कतेको बाबू लोकनिक गणना कोम्हरहु नहिँ ? एकहु बाबूक कतहु मिथिला-भाषामें लेख देखल अछि ? किएक ? कारण यैह जे दँतनिपोड़ीक संसर्ग पावि 'खंजनिक चालि धैने बगड़ा' जकाँ अपनो भाषा बिगड़लि। बजबाक धाष्ट्र्य तँ राजविद्याक प्रभाव थिक। एहन २ प्रतिष्ठित देशोद्धार-धुरन्धर लोकनि जँ एम्हर दृष्टि नहिँ देताह तँ कोना देशक रक्षा होएत ?

थोड़ेक जीह दाबि औरो नहिँ बजने 'हीँ-हीँ' 'चमरदिनाए' जकाँ छेकने जाइछ। तेँ प्रार्थना जे जँ देशविनायक नायक श्रीमान् सबहि बहुधा

Scanned by CamScanner

अपन मातृभाषाक उपयोग करथि अर्थात् हमर मातृभाषाऽनभिज्ञ जनसँ राजभाषा वा हमर मातृभाषा विरोधी देशी जनसँ ऊटपटाङ भाषा बाजथि, तँ बहुत शीघ्र मिथिलाभाषा जागृत भै स्थिर भै जैतिहि।

औ महोदय ! अपन मिथिला-भाषाक प्रमाण तँ ततेक अछि जे कहबाक काजे नहिँ, कहू से कोन ? तँ अति प्राचीन तालपत्र लिखित पाँजिक पोथी; जतै विचार होइक ततै पठाउ, तकरे विकृत अर्थात् ताहिँ किछु अशुद्ध संस्कृतक पदमेँ आगाँ पाछाँ बिगड़ल प्राकृत (पाली) लगाए ई साम्प्रतिक मिथिला भाषा ई के नहिँ मानत ? प्राचीन समयमेँ मैथिल-भाषा-लेख एहने होइत छल तथा प्राकृत (पाली) पालिअहु सन, तावता संस्कृत ओ प्राकृत (किछु मागधी ओ अधिक गौड़ी) मिश्रित भाषाक सर्वप्रथम भाषाक कवि महामहोपाध्याय सन्धिविग्रहादिराजविद्याविशारद, संगीतशास्त्र कलाकुशल 'विद्यापति ठाकुर' भेल छथि, हुनकहु प्रबन्धमे तँ छी, छथि इत्यादिक बाहुल्य नहिँ, अथ जँ तादृश लेख प्रयुक्त होइत रहैत तँ आइ एहि थालमेँ कतहु निरवाच्छिन्न सुशिक्षित देशक भाषा थभकितथि ओ बनौधियाक भाषा टीकि पर ? 'गोर्खाली' नेपाली भाषाक ३-४ टा मात्र तथा पाश्चात्य भाषा पढ़निहारो ५०-६० जन होथि तँ बहुत. परन्तु से भाषा स्थिर, हमर मैथिल कैक लाख, तनिक भाषाक ई दशा !!! रक्षा कोना हो ?''[१]

स्मर्त्तव्य जे पटना विश्वविद्यालय 'नेपाली' भाषाकेँ आरम्भ कालेसँ मान्यता देने छल, परन्तु मैथिलीकेँ अपन अधिकार प्राप्त करबामे कतेक संघर्ष ओ अवरोधक सामना करय पड़लैक से विदिते अछि।

सामाजिक व्यवहारमे जे दुर्गुण सब घोंसिआ रहल छल ताहू प्रसंगमे 'मोद' सावधान छल। लेखकलोकनि ताहू विषय सब दिस समाजक ध्यान आकर्षित करैत रहैत छलथिन। भार दोरक व्यवहार कोना आ किएक आरम्भ भेल होयत ताहि प्रसङ्ग प० वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु'क विचार देखल जाय। शीर्षक अछि 'भार समाचार'।

''आइ काल्हि हमरा गामहिमध्य श्रीदुर्गास्थान ओ चौबट्टीक समीप अपना फुलवाड़ी मध्य आमक रक्षाविनोदार्थ बैसला उत्तर नव विवाहित कन्या ओ वर क तथा हुनका लोकनिक परिवारक मंगल प्रवृत्ति ओ मनोरथ पूर्तिक निमित्ते

१. मि. मोद, उद्‌गार १२४, पृ० ३।

Scanned by CamScanner

पठाओल सगुन चतुर्थी ओ बिदा भेल वरक संग सहस्रशः भार देखबाक अपूर्व आनन्द प्राप्त भै रहल अछि। ताहूमे दही, माछ, गोटा किनारीवाली साड़ी, डाला ओ विचित्र रङ्गल ढङ्गल पीढ़ीक अत्यन्त मनोहर दृश्य देखना जाइछ। ई शोभामय दृश्य एकमात्र मिथिलहिँ में दृष्टि गोचर होइछ।......

मिथिलामे एखनहु बहुत एहन व्यावहारिक चिह्न उपलब्ध होइछ, जाहिसँ ई प्रतीत भै जाइछ जे सबहि देशसँ पश्चात् धरि एहि मिथिलादेश मध्य ऋषि मुनि लोकनिक आचार, व्यवहार प्रचुर प्रचलित छल अछि वा अन्य देशहुक धार्मिकाचार प्राण ऋषि वा ऋषिकल्प ब्राह्मण लोकनि आइ काल्हुक बुलबुल-शेखर-रूपा जीव नौआक कौआ लोकनिक प्रिय पवित्र मातृभूमि मिथिलामे आबि अपन धार्मिक आचार व्यवहारक पालन परिपालन करैत छलाह अतएव एहि देशक आचार व्यवहारक उपर यवन साम्राज्य जन्य आत्यन्तिक अत्याचार नहिँ होएबाक अनुभव साधको वैह चिह्न सब होइछ। (लेखक अनेक चिह्नक विस्तृत तर्क ओ विवरण देने छथि। सबसँ अन्तिम चिह्न थिक 'भार' जे प्रसङ्ग एतय उल्लेख्य अछि)।......

छठम चिह्न थिक भारक व्यवहार। ओ ऋषि मुनि लोकनि जखन कोनो यज्ञादि कार्यक आरम्भ करैत छलाह तँ ओहिमे अपन आप्त सम्बन्धिक लोकनिकैँ पाता द्वारा निमन्त्रणादि दैत छलथिन्ह, निमन्त्रण जनिका लोकनि कैँ देल जाइन्हि हुनकहु लोकनिकैँ तँ ई बुझले रहैत छलन्हि जे पाता देनिहार कैँ दरबाजा पर बखारी की जे घरमे कोठी पर्यन्त नहिँ छन्हि, तँ जाहि निमन्त्रितक आश्रयक समीप जे कन्द, मूल, फल रहैत छलन्हि तकर भार लै यज्ञ स्थानमे जाइत छलाह, जाहिसँ यज्ञ कैनिहारकें बहुत सहायता भेटैत छलन्हि। कन्यादानो कैला उत्तर हुनका लोकनिकैँ जौतुक देबाक हेतु वैह कन्द, मूल, फल भेटैत छलन्हि, तँ ओकरे भार संग कै दैत छलथिन्हि, यैह व्यवहार आइ एहि रूपक वृहत् दृश्य देखा रहल अछि, परन्तु इहो एकटा प्राकृतिके नियम अछि जे कोनो व्यवहार जखन बहुत बढ़ि जाइत अछि तखन समय परिवर्त्तनक कारणेँ ताहिमे अनेक रूपक दोषो आपातित भै जाइत छैक, यथा श्राद्धमे वृषोत्सर्ग (साँढ़ दागब) ई कार्य परम पवित्र वेदशास्त्र सम्मत थिक, परन्तु काम्य, अतएव आरम्भमे इहो अल्प प्रचारिते छल होएत वा अन्य देशमे एखनहु एकर बहुते थोड़ प्रचार अछि, अपना देशक तँ अधिकता सँ ई समाचार भै रहल अछि, श्राद्धक जे नित्य अंग आवश्यक

Scanned by CamScanner

अछि से किछु होओ, दानक हेतु हजार ठाम उत्सर्गल वस्तु महापात्रे आनथि, तकरो दाम श्राद्धकर्त्ता श्राद्धक पश्चाते, सेहो भेटतन्हि वा नाहिँ, परन्तु एकटा आइ काल्हुक अढ़ाए टाकाक नेरु धरि दगबे करी, ओहो नेरु पश्चात् कसाइक हर वा गाड़ी तर शरीर त्याग करथु, तकर कोनो चिन्ता नहिँ, परन्तु दागब अवश्य, ऐँ रूपैँ बहुतो व्यवहार विचारणीय भै रहल अछि, जाहि हेतु स्वतन्त्र रूपैँ लिखबाक इच्छा रहैछ, जकर पूर्त्ति ईश्वराधीन अछि। सम्प्रति पुनः भारहिक सामाचार।

ई भारक व्यवहार यद्यपि प्राचीन पवित्र समयसँ प्रचलित अछि परन्तु ओकर कतोक अंश आब संशोधनीय भै रहल अछि। यथा-कतेक भरिआ जे क्षुद्र चोर रहैछ ओ बाटहि भारकैँ ताहि रूपैँ नष्ट करैछ जे पठौनिहारकैँ भार पठैबाक यश क बदला अयश ओ हँसी होइत छन्हि। भार जनिका ओतै अबैत छन्हि हुनक जाति ओ धर्म दूनू नष्ट होएबाक संभव। एहि विषय मेँ हम तावत् प्रत्येक गामक ढट्ठा फट्ठा बाला देवता लोकनिक प्रार्थना करैत छी जे ओ लोकनि एहि दिशि अपन कृपाकटाक्षपात करथि, जे जाहि ठाम कोनहु भरिआक ओहन व्यवहार देखथि ताहिठाम सुप्रसिद्ध अपन स्वाभाविक पराक्रम देखाबथि, ताहिमेँ कोनो आन रूपक विषय बढ़ला सँ गामक मुख्य लोकनि सेहो ताहि देवता सबहिक अनुकूल अपन स्वाभाविक व्यवहार करथि।

दोसर विषय ई थिक जे बहुत भार पठौनिहार एहन बुद्धिमान् होइत छथि जे दुइ, चारि, पाँच, सात टाका वा ताहूसँ अधिक खर्च कै भार ओरिअबैत छथि परन्तु कोनहु नदीक घाटबाटमेँ रहौक तँ ओकर गोटेक आना खेवा भरिआक संग नहि दैत छथिन्हि, यदि मङ्गितहु छन्हि तँ कहैत छथिन्हि जे ओतै हुनका लोकनिकेँ खेवा नहिँ लगैत छन्हि, ओ सब वार्षिक दैत छथिन्हि, तखन ओ घटवार भारक जे दुर्दशा करैछ से वर्णन लिखलासँ केवल ओकरहि हेतु एतेक और, अतः एहि विषयमेँ तादृश भार पठौनिहारक ओतै हमर प्रार्थना जे यदि ओतेक खर्च भारक हेतु करथि तँ एक आना ओकर दक्षिणा ओ अवश्य भरिआहुक संग कै देथिन्हि।

तेसर कतेक व्यक्ति अपन योग्यतानुसार किछु लेबाक लोभैँ भारक संग अनवसरहु जाइत छथि, ताहिसँ बहुत गोटाकैँ कष्टहिक भार पड़ि जाइत छन्हि अतएव ताहिसँ नहिँ भार सैह विचार नीक।

Scanned by CamScanner

चारिम बहुत एहनो व्यक्ति छथि जनिका कोनो धनिक व्यक्तिसँ सम्बन्ध भेला उत्तर यदि पचास भार हुनका ओहिठाम आएल तँ ताहि प्रत्येक भरिआक भोजन, बिदाइ, खेबा ओ पाथेयक कारण पाँच कट्ठा धनहर वा भीठ अवश्य भरना धरै पड़ैत छन्हि, एहि भार सबहिमे वस्तु से तेहने बहुमूल्यक (दही, केरा, कटहर) रहैछ जे ओकरा बेचबो अत्रधार कैने चतुर्थांश सधब असंभव। ताहिसँ ओ धनिक महाशय एक दूइ गोट भार और भारक मूल्य किछु थोड़ो कै पठाए देथिन्हि तँ हमरा अल्पबुद्धिक अनुसारैँ सैह बहुत उत्तम।

पाँचम भारक अनावश्यको व्यवहार ततेक बढ़ि गेल अछि जे बहुता ओहि हेतु नितान्त शीदित (?) हौइत छथि, कतेक गोटाकैँ तँ घरक अलंकरण आदि जथा बेचबाक वा बन्धक रखबाक मनोदु:ख उठावै पड़ैत छन्हि इत्यादि औरो बहुत विषय अछि जे सब दुर्दश मोदहु कँ अजीर्ण भै जैबाक डरैँ छोड़ैत छी तथा समस्त सविचार सुयोग्य मैथिल वर्ग सँ प्रार्थना कै आशा करैत छी जे यदि एहि लेखमे हमरासँ कोनो अनुचित उल्लेख कैल गेल हो तँ क्षमा कै एहि प्राचीन प्रचलित पवित्र ओ भूतपूर्व निर्दुष्ट भार व्यवहारक संशोधन दिशि कृपाकटाक्षपात करथि जाहिसँ भार बहुत लोकके भारभत नहि प्रतीत हो।"[1]

उपर्युक्त उद्धरणसँ तत्कालीन सामाजिक स्थितिपर तँ प्रकाश पड़िते अछि जे संगहि सामाजिक कुरीति निवारणक दिशामे लेखक लोकनि केहन चिन्तनशील छलाह ताहू पर प्रकाश पड़ैत अछि। एहि लेखके प्रकाशित भेना बासठि वर्ष भेल, एहि अन्तरालमे कतेक सामाजिक परिवर्त्तन भेल अछि से स्वयं विचारनीय, आइ तँ अगत्या लोकके 'विद्यासिन्धु'क परामर्श मानबाक वाध्यता भ' गेल छैक।

एहिठाम एक विषयक उल्लेख करब एहि हेतु आवश्यक अछि जे आब समाज सँ ओ व्यवहारो उठल जा रहल अछि। जे व्यवहार उठल जाइत अछि ते ई शब्दो अपरिचित भेल जा रहल अछि। श्राद्ध, उपनयन आदि अवसर पर जे कुटुम्ब आदि रहैत छथि तनिका लोकनि के 'बिखजी' (अल्पाहार) देल जाइत छन्हि। आब तँ लोक ओकरा 'नाश्ता' कहय लगलैक

१. मि० मोद, उद्गार १३१

अछि। एहि 'बिखजी' शब्दक अर्थ स्पष्ट करैत एकर आवश्यकता पर 'विद्या सिन्धु' अपन विचार व्यक्त कयने छथि जे निम्नाङ्कित अछि—

"उपनयन, श्राद्ध आदि कार्यमे बिखजी परसबाक, व्यवहार, जकर संस्कृत नाम 'विक्रजीव' थिक (विक्रं तन्नामकं जठराग्निं जीवयति इति व्युत्पत्तिः) अर्थात् विक्र नामक जठराग्नि कें जे जीवित राखै से विक्रजीव थिक. वैद्यक क्रमैं प्रथम पहर में उद्बुद्ध भूखक निमित्तभूत विक्र नामक जठराग्निक मुह मे पहिने किंचित् लघुपाकी पदार्थ देला सँ ओ अग्नि मध्याह्न-मुक्त कठिन वा अधिको पदार्थ कें पाचन करबा मे समर्थ होइत छथि, से नहिँ भेला उत्तर बिनु तेलक दीप वा आरम्भ में खड़, खुहरी आदि नहिँ देल आगिए जकाँ मिझाए जाइत छथि वा अधिक प्रकाश करै में ओ काठक ढेङ वा ढेर सन भसकल वस्तु कें भस्म करै में असमर्थ भै जाइत छथि, अतएव योग दृष्टिसँ सब शास्त्र ओ व्यवहार पारंगत हमरा लोकनिक पूर्वज ऋषि मुनि लोकनि "बिखजी"क व्यवहार सृष्ट कैलन्हि। हुनका लोकनिकें नगर (सहर) में दामें भेटै वाला वस्तु कतै सँ ओतन्हि. अतएव ओ लोकनि आगत कुटुम्ब लोकनिक आदर वन सुलभ केरा, केसौर, मखान आदि फल, मूल ओ कन्द लै सेहो दोनहि में दै करैत छलाह, तैं मिथिला मे अद्यावधि ओहि अवसर सबहि में परम धनाढ्य सँ अत्यन्त दरिद्रधरिक ओतै ओ व्यवहार ताही रूपें प्रचलित अछि।"

ध्यातव्य जे पूर्वक केहन निराडम्बर जीवनक लोक बितबैत छलाह, ताहिठाम सम्प्रति हमरा लोकनिक समाज केहन आडम्बर ओ प्रदर्शनक अभ्यासी भेल जा रहल अछि, जाहि आडम्बरक कारणे निर्धन वा मध्यवित्त लोकक जीवन-यापन दुर्वह भेल जा रहल छैक। परन्तु सम्प्रति समाजक चिन्तक वर्ग एहिसँ उदासीन प्रतीत होइत छथि। उपर्युक्त उद्धरण सब तत्कालीन गद्यहु क उत्तम उदाहरण मानल जा सकैत अछि।

अनेक प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार एहि पत्र-पत्रिकाक खँडहरमे दबायल दृष्टि गोचर होइत छथि। एकटा पद्यक उदाहरण देखल जाय। एकर निर्माता थिकाह चैनपुर निवासी प० गंगाधर मिश्र। ई अंश सुकन्योपाख्यान सँ उद्धृत कयल जा रहल अछि जकर भाषा ओ प्रबाह देखि सहसा कृष्ण जन्म क प्रणेता कविवर 'मनबोध' स्मरण पथ पर आबि जाइत छथि—

Scanned by CamScanner

"झट पट कैलह वज्र प्रहार। फट फट फोड़ब तोर कपार।
कट कट काटब देहक हार। गट गट गीड़ब तोहर धाड़।
घट घट रक्त च्यूब हम तोर। हट हट करब जगत मे शोर।
चट चट नोचब माथक केश। भट भट पटकब एही भेश।
धर धर पकड़ पड़ाएल चोर। सर सर ससरल जाइछ छोर।
मर मर अमर नाथ नहि योग। दर दर शोणित चलतहु रोग।
झर झर देह करब हम तोर। बर बर नीक लगै अछि मोर।
गर गर घर घर बाजै पेट। आइ पुरुष सँ भेलहु भेट।
रब रब दाँत करै अछि मोर। सब जन भोजन हेतु अघोर।
लग लग बग बग आँखि उखाड़ि। हमर चालि सँ उठै बिहाड़ि।
कैलह मुनि सँ किऐ विरोध। किछुओ मन मे नहिँ छहु बोध।
ई कहि इन्द्रहि देल पछाड़ि। कैल मृतक सन जीवन छाड़ि।"

एवं प्रकारेँ मि० मोद अनेक प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार केँ प्रोत्साहित क' क्षेत्र मे अनलक ओ मातृ भाषाक श्री वृद्धि करबामे तत्पर रहल। परन्तु मैथिली भाषी समाज आदि कालहि सँ जाहि प्रभादमे डूबल रहल ताहि सँ बाहर होइत आइओ देखि नहि पड़ैछ। १९१५ ई० क आश्विनक अङ्क मे जे विचार व्यक्त कयल गेल छल ताहि सन्दर्भ मे आजुक स्थितिक तुलना करैत मैथिलीक हित चिन्तक लोकनि भविष्यक प्रसङ्ग विचार करथि। अतः निम्नांकित उद्धरण प्रस्तुत कयल जा रहल अछि। एक लेख छपल अछि "व्यर्थ परिश्रम तथा व्यय" जकर किछु अंश प्रस्तुत अछि—

"आइ धरि" "मिथिला भाषा" "मैथिलाक्षर" योग्य मैथिल बनाएब, तनिक सुजीवनक हेतु सदुद्योग तथा मैथिलाचार विचारक सुरक्षा''' किछु कैल जाइछ ? मातृभाषा मैथिली केँ जखन सुयोग्य लोकनि त्याग करैत जाइत छथि तखन हमर सदृश जानवरक कनेक भुकनहि की होएत ? तथापि गोटेक जानवर क भुकने अनका फल होइत छैक, एम्हर तँ ततेक भैरववाहन भेल जाइछ जे भुकितहुँ डरे। आश्चर्य जे बिनु विचारने तथा मातृभाषाक अज्ञान से हो जँ उचितो सदर्थ बजलहुँ तँ गारिए बुझल जाइछ, जकर प्रति-

Scanned by CamScanner

फलो भुकनिहारहि कें भोगै पड़ैछ। भला, देखू तँ बंगला भाषा मे 'भारत वर्ष' नामक मासिक पत्र, जाहि मे सर्वविदित श्री ५ मान् माननीय महाराज वर्धमान पर्यन्त अपन मातृभाषाक प्रेमवश लेख दै रहल छथि, अतिरिक्त क कथा कोन, एवं बड़ वैद्य-वैद्य सुयोग्य लोक सब मातृभाषाक सेवन करैत छथि।

एम्हर मैथिल मंडल मे तँ जहाँ ५००) टाकाक 'जमीन्दारी' भेल कि 'मोकदमावाजी सँ अवकाश नहि वा कतेक गोटे कहि उठताह जे हम लेख लिखब ? वस्तुतः कोना लिखल जाय, बहुतो सुखी धनी कें कतेक कबुला पाती कैलासँ सन्तान भेलथिन्हि, लिखबा मे बाल्यावस्था मध्य थोड़ेक दमन (डाँटब कान पकड़ब'''इत्यदि गंजन) क आवश्यकता छैक, से कोना कैल जैतन्हि; जाहि दिन कनेक पढ़ौनिहार डँटलथिन्हि, ताहि दिन जँ काकातालीय न्याय" सँ हुनका ज्वर भै गेलन्हि, तखन मूर्खो भै जीबथु, अपन खैबा प्यूबाक योग्य धन छन्हिए, भेल, एहनहि ठाम कहल जाइछ जे "धनी बूड़ि वैद्यनाथक अवतार।" जे लोकनि सुशिक्षित समृद्धशाली छथि, हुनका तँ पहिनहि आत्मोन्नति दिशि ध्यान जाइत छन्हि; पश्चात् वैह (आत्मोन्नति) एक तेहन रोग भै जाइत छन्हि जे देशोन्नति सुझबे कठिन भै जाइत छन्हि, जँ कनेक सुझितहु छन्हि तँ दंत निपीड़िए भाषाक दोकठ मे आँखि देने पाकल गोपी आम जकाँ तखन की !!! विचार करैक थिक जे जनिका अपन देश प्रिय नहिँ अपन संबन्धी प्रिय नहिँ तथा अपन दैनिक आचार प्रिय नहिँ'''(अधिक बजैत डरो होइत अछि) हुनका मातृभाषा मे प्रेम कोना होएतन्हि, विषय तँ ई अछि जे जहाँ कनेको ककरहु सँ झोक तोड़ मे बाबू साहेब ऐलाह कि लगले मोछ टेरि 'हिन्दी'क "आतसवाजी" छाड़ै लगैत छथि।

एतेक बड़बड़ैबाक तात्पर्य येह जे वैद्य पण्डितजी लोकनि संस्कृतहि मे पोथा पोथी लिखताह वा शास्त्रार्थ करताह, एहि हेतु किछु करब हुनका लोकनि सँ दुइ टा काज नहिँ होएत एक तँ दश गोटा में वक्तृता देब, दोसर अपन मातृ-भाषा में लेख लिखब। लिखताह कोना, कतेक गोटा कें चिट्ठिओ धरि नहिँ लिखै अबैत छन्हि; खाधि, कोनहु रूपैं कूड़नूड़ सँ भरितहि, छन्हि, तखन कियैक नव अभ्यास लगौताह वा "बूढ़ कुकुर कतहु फाँस बझै" ? टुट पुजिना पेटहिक चिन्ता में मग्न रहैछ, बुभुक्षिते न प्रतिभति किंचित्" अर्थात् भूखल कैं किछु ने सोहाइत छैक।

Scanned by CamScanner

एम्हर पाश्चात्यशिक्षा सम्पन्न मण्डली दिशि तकैत छी तँ सुमेरु कैँ अवकाशे नहिँ, तैओ कौखन किछु लिखितहि छथि, जे अपने लोकनि देखितहि होएब वा हम कहैत छी जे जँ म. म. डाक्टर श्री गंगा नाथ झा सदृश दूइओ चारि गोटै मिथिलाक सत्पुत्र होइतथि तँ मिथिला देशक तथा तद्देशीय लोकक पैघ अभ्युद्य भेल रहैत। यद्यपि एम्०ए०, बी०ए०बी०एल० कतेक गोटै छथि ओ किन्तु एकौ गोटाक लेख मातृभाषा मेँ शपथहु खैबाक हेतु देखल गेलै कतहु ? (पं० श्रीरामभद्र झा केँ छाड़ि) तखन हमरासन 'अचतुर विचतुर' लोक जँ धार्ष्ट्र्य कै लिखैत अछि तँ सुनबे नहिँ, सुनब तँ सतत आँखि लाल पीयर कैने मि. मोद'क मूल्यहिपर बिसाइत जाइत छथि। जँ आइ प्रत्येक शिक्षित मण्डली ऊहि कै विचारितथि तँ 'मि० मोद'क कोन कथा जे एहन एहन कैकटा मासिक, पाक्षिक ओ साप्ताहिक पत्र बहराइत, से कथी लै होएत। जँ नामी जानि पत्र पठौलिऐन्हि तँ २-३ वर्ष धरि पत्र पढ़ि लैत जाइत छथि, मूल्यक हेतु पत्र लिखैत छिऐन्हि तँ 'तूष्णीम्', भी० पी० करैत छी तँ 'रेफ्यूज्ड' लिखि घुमा दैत छथि, कुकरहु सँ कहबैत छिऐन्हि तँ ''वकील-खनहि' मेँ कहैत छथिन्हि जे कि हुनका पत्र पठैबाक हेतु हम लिखने छलिऐन्हि ? इत्यादि अनेक वंचना कै परम सुप्रतिष्ठ यशोगरिष्ठ नामोदित पवित्र छथि, तेँ हम कहैत छी जे मै०म० सभाक विसर्जन करू ओ हमहुँ तखन 'मोद' कैँ काशीलाभ करा देबन्हि। अन्यथा व्यर्थ परिश्रम तथा व्यय केँ देखैत जाउ।''[1]

एहि उद्धरणमे व्यक्त विचारसँ की आजुक स्थितिमे कोनो अन्तर आयल अछि ? जाहि समय ई विचार व्यक्त कयल गेल छल, ताहि समयक जे शिक्षितक संख्या छल आइ ताहि सँ हजार गुणा लोक समाज मे शिक्षित नहि अछि ? ताहि समय मे (शिक्षा सँ हमर तात्पर्य साक्षरता तथा 'डिग्री' धारीक संख्या अछि) वर्ग विशेष धरि सीमित छल, ताहि दृष्टिएँ आइ साक्षरता जन जीवन धरि प्रवेश क' चुकल अछि। ओहि समयमे जतेक पाठक छल होयताह ताहि सँ अधिक सम्प्रति लेखक ओ साहित्यकार छथि। ओहि समयमे मैथिली केँ शिक्षा मे कतहु नामक चर्चो नहि छलैक, परन्तु सम्प्रति हजारक संख्यामे स्नातक ओ स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त विद्वान लोकनि छथि। सब मिला क' बीस हजार सँ अधिक छात्र स्कूल कालेजमे

---

१. मि० मोद, उद्गार १०८ पृ० ९।

Scanned by CamScanner

होयताह, परन्तु पत्र-पत्रिकाक की स्थिति अछि ? एकरा समाजकजड़ता छोड़ि आओर की कहल जा सकैत अछि ?

मिथिला मोदक उपलब्ध सब अंकक अध्ययन कयला उत्तर हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ अछि जे ई अपना युगमे एक प्रकाश स्तम्भ छल, जकरा आलोकमे तत्कालीन मिथिलाक सम्पूर्ण स्थिति सँ हम अवगत भ' सकैत छी ।

धर्म, सदाचार, प्राचीन इतिहासक अन्वेषण, संस्कृत शास्त्रक रक्षा, समाजमे बढ़ैत कुरीति, अशिक्षा, कृषि, वाणिज्य, उद्योग, गोरक्षा, मातृभाषाक रक्षा, प्राचीन साहित्यक संकलन, नवीन साहित्यक रचना, शासककेँ कर्त्तव्य बोध, पाश्चात्यसभ्यता ओ शिक्षाक प्रचार प्रसार सँ संभावित नैतिक पतन, अपव्यय, मिथिलाक गौरवमय परम्परा तथा अस्तित्वक रक्षा, सामाजिक संगठन, विश्वविद्यालयमे मैथिलीकेँ स्थान, मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा, मिथिलाक्षरक रक्षाक हेतु सतर्कता आदि सबपर 'मिथिला मोद'क दृष्टि रहैत छलैक ।

विचारमे गम्भीरता, अभिव्यक्तिमे निर्भीकता, तथ्यमे स्पष्टवादिता, कथनमे नम्रता, व्यंग्यमे तीक्ष्णता, भाषामे सुघड़ता, मातृभाषाक रक्षामे आतुरता, ग्राहकक हेतु दीनता, उच्छृंखल लोकक हेतु तिक्तता-कटुता, सम्पादकक विनोदप्रियता सब किछु रहितो दू गोट त्रुटि जे हमरा अल्प बुद्धिमे बुझना जाइत अछि से थिक—ई वर्ग विशेषक प्रसङ्ग जतेक सतर्क रहल ततेक सतर्कता समग्र समाजक हेतु नहि रखैत छल आ दोसर कट्टर सनातनधर्मावलम्बी होयबाक कारणेँ राष्टिय स्तरपर जाहि प्रकारक आन्दोलन चलि रहल छलैक ताहिसँ आन्तरिक किछु विरोध भाव रखने छल, समर्थनक स्वर कतहु नहि सुनना गेल । हँ, हिन्दू विश्वविद्यालयक स्थापनामें महाराज दरभंगाक जे योगदान रहलनि अछि ताहि प्रसंग राष्ट्रिय नेताक दृष्टि संकुचित छनि सेहो ज्ञात होइत अछि ।

पुनः प्रकाशित मिथिलामोद

मिथिला मोदक संस्थापक म० म० प० मुरलीधर झा १९२९ ई०मे दिवंगत भ' गेलाह । हुनका जीवनकालेमे मोदक प्रकाशन अवरुद्ध भ' चुकल

Scanned by CamScanner

छल। तकर बादसँ सामाजिक गतिविधिमे अनेक परिवर्तन भ' चुकल छल। महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह स्वर्गवासी भ' चुकल छलाह, तनिका स्थानपर स्व० महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह मिथिलेश भ' चुकल छलाह। स्वतन्त्र रूपसँ मैथिली साहित्य परिषद स्थापित भ' चुकल छल। आ पटना विश्वविद्यालयमे एक स्वतन्त्र भाषाक रूपमे मैथिलीक मान्यताक हेतु बाबू भोला लाल दास मैथिली साहित्य परिषदक प्रधान मन्त्रीक रूपमे (ताहि समय प्रधान मन्त्री सैह कहल जाइत छलैक) कटिबद्ध भ' लागि गेल छलाह। १९३५ ई० मे औपनिवेशिक स्वराज्यक रूपमे बिहारमे काँग्रेसक मन्त्रिमण्डल काज क' रहल छलैक। राजनीतिक हलचल बढ़ि चुकल छलैक। जातीय आधारपर किछु वर्ग अपन अपन गोड़ी बैसयबाक सदुपयोगमे लागि गेल छल। मैथिल महासभाक संकुचित नीतिक कारणेँ मैथिल शब्द ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक हेतु रूढ़ बनि गेल छल। एहि बीच दू दु गोट मैथिली मासिक पत्र प्रकाशित भ' विफल भ' चुकल छल, जकर, चर्चा आगाँ कयल जायत। एही पृष्ठभूमिमे काशीक विद्वज्जन समिति 'मोद'क पुनः प्रकाशन आरम्भ कयलक।

एहि पुनः प्रकाशित 'मोद'क सम्पादक भेलाह प० उपेन्द्रनाथझा, एम्०ए० एल-एल० बी०, जे म० म० मुरलीधर झाक भातिज छलथिन आ पछिला प्रकाशित मोदमे 'प्रोप्राइटर'क रूपमे जनिकर नाम छपैत छलनि। एहि नव उद्‌गारक प्रकाशनक उद्‌देश्यपर प्रकाश दैत मैथिलीक प्राचीनता, मिथिलाक्षरमे उपलब्ध शिलालेख, विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर सहित बंगाली लोकनिक मैथिलीक प्रति आकर्षण ओ प्रेम, डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी द्वारा प्राचीन ग्रन्थक अन्वेषण ओ प्रकाशन, म० म० मुरलीधर झाक अवदान आदिक चर्चा करैत मुख्य उद्‌देश्य निर्धारित कयल गेल अछि, यथा—दिनानुदिन शोचनीय भेल जाइत दीन गृहस्थक दशाक दिस सरकारक ध्यान आकर्षित करब, कोन प्रकारेँ दशामे सुधार होयत तकर उपाय ताहि विद्वान लोकनिसँ उपदेश निर्धारित करब, स्वास्थ्य, मानसिक शक्तिक विकास, आर्थिक दशामे सुधार आनब; कृषिक उन्नति दिस समाजक ध्यान आकर्षित करैत प्रशिक्षित करब तथा पारस्परिक विरोधकेँ दूर करबाक प्रयास करब आदि कहल गेल अछि। ई पुनः प्रकाशन सन् १३४४ सालक कार्तिक मास अर्थात् सन् १९३६ ई० सँ आरम्भ भेल। एहि नव उद्‌गारक संख्या तँ १ सँ

आरम्भ कयल गेल, परन्तु प्रकाशनक वर्ष पछिले प्रकाशित उद्गारसँ जोड़ि क' राखल गेल। एहिमे लेखक लोकनि छलाह—

कविवर सीताराम झा, साहित्य रत्नाकर मुंसी रघुनन्दन दास, ज्यौ० बलदेव मिश्र, डॉ० श्री सुभद्र झा शास्त्री, प० श्री आनन्द झा, न्यायाचार्य, बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', ज्यौ० श्री उमाकान्त झा, स्व० हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज', म० म० बख्शी मुकुन्द झा, बाबू भोलालालदास, प० श्री वेदानन्द झा, कोइलख, प० कुशेश्वर कुमर, प० प्रतापनारायण झा शास्त्री, श्री वैद्यनाथ मिश्र वैदेह, (जे सम्प्रति 'यात्री' नामसँ वर्त्तमानकालीन मूर्द्धन्य साहित्यकारक पंक्तिमे परिगणित छथि), प० जगदानन्द झा, विवेकानन्द, पं० उग्रानन्द झा, ज्यौ० षड़ानन झा, गिद्धौर, प० त्रिलोचन झा, बेतिया, बाबू क्षेमधारी सिंह, बाबू श्री बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर, ज्यौ० मधुकान्त झा, प० श्रीनन्दन झा, ठाढ़ी, पुलकितलाल दास 'मधुर', प० मधुसूदन मिश्र, प० श्री रामाकान्त झा शास्त्री, प० शशिकान्त शर्मा, श्री नगेन्द्र कुमर, ज्यौ० अच्युतानन्द झा, प० गंगेश मिश्र, प० सृष्टिनारायण झा, प० जीवनाथ राय, श्री हरिकान्त झा, बख्शी, प० शिवेन्द्र झा शास्त्री, बाबू सूर्यनन्दन ठाकुर, एम्० एल्० ए०, प० श्यामानन्द झा, बम्बई, प० कुलानन्द मिश्र शास्त्री, गजहड़ा, प० काशी नाथ ठाकुर 'कलेश', प्रो० लक्ष्मीनाथ मिश्र, डा० काञ्चीनाथ झा 'किरण', श्री गोविन्द चौधरी, श्री राजेन्द्र पाठक, गढ़ बनैली, लक्ष्मीनाथ मिश्र, बी०ए०, बी० एल०, प० श्री उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', बाबू भीमेश्वर सिंह, श्री प्रबोध नारायण चौधरी, प० जटाशंकर झा, श्री रमा नाथ झा, कोइलख, प० अयोध्यानाथ पाठक, प० जर्नादन झा "जनसीदन", प० अजब लाल झा, प० जयकान्त झा 'श्रुतधर', चौधरी केदारनाथ ठाकुर, बाबू लक्ष्मीपति सिंह, प० चन्द्रशेखर झा, हरिनगर, लीला देवी, प० जगदीश ठाकुर, अलखनिरंजन, एम० ए० बी०·एल०, प० जटेश्वर झा, श्री इन्द्रनारायण झा, प० जलधर झा, प० चन्द्रकान्त झा 'वैदिक'। एकर अतिरिक्त फक्कड़ होलक्कड़, फक्कड़ खेलक्कड़, पियक्कड़, मिलिन्द, केसरी, रसज्ञ, श्रीयुत पागल, विक्षिप्त आदि छद्मनामसँ सेहो किछु व्यक्ति लिखैत छलाह।

एहि नवीन संस्करणमे किछु नवीनता तँ अवश्य अयलैक। आधुनिक ढंगक कथा, शीर्षक द' मुक्तक कविता, बिहार एसेम्बलीक विवरण अर्थात् राजनीतिक चर्चा, मैथिली साहित्य परिषदक गतिविधि, हिन्दीक आक्रमणक

प्रतिरोध, अन्तरराष्ट्रीय राजनीतिपर दृष्टिनिक्षेप, भूकम्पक कारणें भेल अनेक प्रकारक हानि, इनार, पोखरिक जीर्णोद्धार, गाम घरमे बाट घाटक संकीर्णता, रौदी, दाही, मैलेरिया, हैजा आदि रोगसँ जनजीवनकें बचयबाक हेतु औषधालय, अशिक्षा दूर करबाक हेतु वाचनालय, पुस्तकालय, नहरि, छहर, पारस्परिक कलहकें शान्त करबाक निमित्त ग्राम पंचायतक संगठन आदि सामाजिक समस्या दिस सरकार सहित जन साधारणक ध्यानाकर्षण, वैवाहिक सभामे अबैत विकृति, टाका गनयबाक दुष्प्रवृत्ति आदि विषयक समावेश एहिमे होअ' लागल छल, परन्तु स्त्री शिक्षाक प्रसङ्ग दृष्टिकोणमे कोनो अन्तर नहि देखि पड़ैत अछि। एहि ठाम महामहोपाध्यातक पार्श्व-शिष्य महाकवि सीताराम झा जे स्त्री शिक्षाक प्रति अपन दृष्टिकोण उपस्थित कयने छथि से द्रष्टव्य अछि। ओ लिखने छथि—

''स्त्रीशिक्षा जहि ठाम अछि, पछताबै से प्रान्त।
जतय न अछि से देश पुनि, ताही हेतु अशान्त॥

डिल्लिक लड्डुक भेल अछि, ई बड़का दृष्टान्त।
ने कहि ! की बुझि भेल छथि, बुधियारो सब भ्रान्त॥

जाही सभा सोसाइटीमे जाउ, जाही अखबारकें देखू, जेम्हरहि दृष्टि-पात करू एतबै देखब सूनबमे अबैछ जे—

हो इसकुल कालेजमे, स्त्री शिक्षाक प्रचार।
महिला वर्गक हेतु सब, हो समान अधिकार॥''[१]

एहि उद्धरणसँ प्रतीत होइत अछि जे जहिना एहिसँ पहिने प्रकाशित 'मोद'क दृष्टिमे स्त्री शिक्षाक औचित्य स्वीकार करितहु आधुनिक स्कूली शिक्षाक विरोध देखना जाइछ, ताहिमे कोनो अन्तर नहि आयल छल। ई उचित दृष्टिकोण छल अथवा संकीर्ण एहि प्रसङ्ग हम अपन अभिमत बिनु व्यक्त कयनहि विज्ञ वर्गसँ एहि शिक्षासँ भेल हानि वा लाभक पर्यवेक्षण करबाक अनुरोध करब जे परिवार त्रुटि रहल अछि वा टुटि रहल अछि से सोचथि।

---

१. मिथिला मोद, नव उद्गार ५ पृ० १७।

Scanned by CamScanner

मोदक नव प्रकाशनसँ उत्साहित भ' मैथिलीमे दुइ गोट मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल, मुजफ्फरपुरसँ 'विभूति' तथा लहेरियासरायसँ 'भारती'। एहि दुहू पत्रक प्रकाशनक स्वागत करैत प० त्रिलोचन झा लिखने छथि—

"स्वागत श्री भारती ओ विभूति।
मैथिल जातिक शुद्धानुभूति॥
मिहिरक प्रकाशमे प्रगट भेल।
मोदक एकसरता दूरि गेल॥

आकृति सुन्दर ओ विशद भाव।
आशा हैबाक सु प्रभाव (?)॥
मैथिल संस्कृति रक्षित सुराखि।
आधुनिकहु उत्तम विषय भाखि॥

मैथिलि मिथिला मैथिल महान।
भारत उन्नतिहुक राखि ध्यान॥
हो ऐक्य आन्तरिक यद्यपि इष्ट।
जे प्रगट भेद तैयो अभीष्ट॥

मिथिला मोदक सौजन्य सौं उक्त दुहु मासिक पत्रक दर्शन भेल भारतीक समालोचना मोदमे भेल अछि तथापि प० श्री जीवनाथ रायक लेख पर एतबा और वक्तव्य जे मैथिल वर्ग "च" वर्गी "ज" कार तथा अन्तस्थ 'य' कारक प्रयोगमे बड़ असावधानता राखै छथि बंगला या हिन्दीक अन्धानुकरण कोन काज शुद्ध प्रयोग चाही। वर्ण संख्या ४९ वा ५० जे रहौ "ज" कार "य"कार तथा "ख" कार 'ष'कारक स्वतन्त्र स्थिति अछि। ताहिमे व्यभिचार नहि कै उचित व्यवहार कर्त्तव्य थिक आओर विषय समयानुसार लिखल जायत।

'विभूति'क प्रारम्भहिमे जे "विभूति कण" अछि तकरा सादर शिरोधारण कै सर्वदा तकरा रक्षामे संलग्न रहने निसन्देह उन्नति। वस्तुतः कथित

उक्तिक महत्त्व कोनो मंगलाचरणक अपेक्षा कम महत्त्वशाली नहि। विशेषतः (१) नम्बरक कणा वस्तुतः १ नम्बरक अछि। विशद समालोचना समय पाबि लिखल जायत। मोटामोटी "विभूति" द्वारा बहुतो अनुभूति प्राप्तिक सम्भावना। केवल श्री 'माढव्य' लिखित 'किमाश्चर्यमतः परम्" शीर्षक सों ओहि लेख कां की सम्पर्क से नहि बूझि पड़ल एवम् एकर अन्तिम भाग उद्देश्यक विरुद्ध प्रतीत भेल। आवश्यकता मिथिलास्थ सभहि जातिकेँ मैथिलत्व सूत्रमे बद्ध करबाक ततै मैथिल कायस्थहुक पृथकता पोषक ई की!!![1]

एहि अंकमे विभूति, 'भारती' ओ 'मिहिर'क अछैतहु मोदक उपादेयताक प्रसंग लिखल अछि—

करू 'विभूति' माथ पर राखू जिह्वा उपर 'भारती' थीर।
सेबू 'मिहिर'क किरण, किन्तु हो बिनु मोदक नहि पुष्ट शरीर।

ई अंश उद्धृत करबाक तात्पर्य जे मातृभाषाक स्वत्व रक्षाक हेतु समस्त भाषाभाषीकेँ एक सूत्रमे आबद्ध करब आवश्यक प्रतीत होअ लागल छलैक। मैथिली साहित्य परिषदक तत्त्वावधानमे विश्वविद्यालयमे स्वीकृति प्राप्तिक हेतु आन्दोलन चलि रहल छल, बिहार संस्कृत समिति द्वारा महाराज दरभङ्गाक प्रभावसँ मैथिलीकेँ स्वीकृति ओही समय प्राप्त भेल छलैक जकर बिस्तृत विवरण 'मोद'मे भेटैत अछि। स्वत्व रक्षाक हेतु जे आन्दोलन होइत छल ओहिमे मोदक स्वर सबसँ अधिक मुखर रहैत छलैक। एहि प्रसङ्गमे सीतामढ़ीमे भेल मैथिली साहित्य परिषदक विशेषाधिवेशनमे अध्यक्ष पदसँ देल गेल राजपण्डित बलदेव मिश्रक भाषणक कतिपय अंश द्रष्टव्य अछि। अन्य-अन्य स्थितिक चर्चा करैत पत्र-पत्रिकाक प्रसंग ओ कहने छथि—

"वर्त्तमान युगमे लेखकक पोषक होइछ जनता। जनतामे जाधरि एहि दिशि अभिरुचि नहि होएतैक, लेखक ओ प्रकाशक लोकनि उत्साहित नहि होएताह याधरि नीक नीक एवं जनताक रुचिक अनुकूल ग्रन्थक प्रकाशन नहि होएत ओहि अभिरुचिक जागृतिए नहि होएतैक। एहि अन्योन्याश्रयक परिहारक उपाय छैक प्रचार।

"एहन स्थितिमे मैथिली पत्र-पत्रिका आदिक चर्चा की कैल जाए? एतबा

१. मि० मोद०, नव उद्गार ६ पृ० २४।

सत्य अछि जे पूर्वापेक्षा मैथिलीक प्रसंग लोकक रुचि जाग्रत भेल अछि तथा एखन तीन-तीन मासिक पत्र चलि रहल अछि। किन्तु ई सूनि अपनेकैं आश्चर्य हैत जे बिहारसँ उड़ीसाक पृथक होइतहि केवल डेढ़ वर्षक समय मध्य एक डेढ़ सै उड़िया पत्रक प्रकाशन भेल अछि। मैथिली-भाषी ओड़िया भाषीसँ सोझे दोबड़ अछि। किन्तु तकरो जीवन सन्देहास्पदे अछि। एहि क्षेत्रमे जे पत्रिका नीच मनोवृत्तिक परिचय देलक अछि तदनुकूल ओकर अस्तित्वो अनावश्यक कहाओत। (स्मर्त्तव्य जे ई आक्षेप 'विभूति' पर अछि। पारिवारिक सम्पत्तिक कारणेँ बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'के महाराज दरभङ्गासँ विरोध छलनि, मोकदमाबाजी चलैत छलनि, तेँ 'विभूति'क माध्यमसँ महाराजक प्रति कटूक्ति सभक प्रकाशन होइत रहैत छलनि) परन्तु अन्यान्य पत्रक पूर्ण संरक्षण हैब अनिवार्य अछि।

यद्यपि हमरा सभक आन्दोलन विलम्ब सँ उठल अछि, कार्यो थोड़े भेल अछि तथापि प्रान्त भरिमे एकर चर्चा पसरि गेल अछि आओर राष्ट्रीयताक आड़मे किछु व्यक्ति आबहु विरोध करितहि छथि। हालमे मुजफ्फरपुरक समीप जे जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन भेल अछि तकर सभापति प्रसिद्ध विद्वान् राहुलजीक भाषण देखू। एहने बूझि पड़त जे मैथिलीकेँ स्वीकृति भेल आओर बिहारक प्रान्तीयता भंग भेल। हमर विरोधी सभक ई आपत्ति बड़ प्राचीन छन्हि। हम एहिसँ भीत नहि छी। यदि बिहारक अन्यान्य लोक मैथिलीक आदर नहि करताह, यदि ओ सभ हमरा लोकनिसँ सहानुभूति ओ सहयोग नहि रखताह तँ हमरा ओहि प्रान्तसँ कोन लाभ ? हम सब कियैक नहि स्वतन्त्रक आन्दोलन करब। आशे नहि, विश्वासो अछि जे बिहारक प्रबुद्ध नेतागण ई परिस्थिति उत्पन्न नहि करताह।....[१]

पुनश्च ध्यातव्य जे मैथिलीक रक्षार्थ स्वतन्त्र मिथिला प्रान्तक आन्दोलन हो एहि विचारक बीज उपर्युक्त उद्धरणमे दृष्टिगोचर होइत अछि। मिथिला केसरी बाबू जानकी नन्दन सिंह एही बीजकेँ अङ्कुरित करबाक चेष्टामे आगाँ चलि आन्दोलन ठाढ़ कयने छलाह तथा डॉ० श्री लक्ष्मण झा ओहूसँ एक डेग आगू बढ़ि काज आम्रभ कयने छलाह, परन्तु अपरिपक्व अवस्थामे जेँ ई कार्य आरम्भ भेल तेँ बादमे चलि ओ अङ्कुर अकालमे सुखा गेल।

---

१. मि. मोद, नव उद्गार १९, पृ० १५-१६।

Scanned by CamScanner

एहि पत्र द्वारा मैथिली दिवस, जानकी नवमी, विद्यापति स्मृति दिवस आदि प्रकारक कार्यकें प्रोत्साहित क' मैथिलीक आन्दोलनकें बल प्रदान कयल जाइत छल।

भाषाक स्वरूप पर पूर्वक प्रकाशन जकाँ तत्परता नहि राखल जाइत छल। पूर्वमे विभक्तिकें शब्दसँ फराक क' लिखबाक परिपाटी मोदमे देखैत छी, नव उद्गारमे ई अनिश्चत अछि, कतहु संगहु अछि, कतहु फराको। एहिना होएत, हैत, हैब, जाएत, जायत आदि विभिन्न रूप दृष्टिगोचर होइत अछि। नहि शब्द पर पूर्वमे चन्द्र बिन्दु निश्चित रूपें देल जाइत छल, नवकामे कतहु अनुस्वार अछि, कतहु नहि। 'मे' विभक्तिक संग एहने क्रम देखबामे अबैत अछि। ई सब अनियमितता पूर्वक उद्गार सबमे नहि देखि पड़ैत अछि।

एहि नव उद्गारहुक माध्यमसँ कतिपय पुस्तकक प्रकाशन भेल—यथा बाबू क्षेमधारी सिंहक 'सांख्य खद्योतिका' क्रमशः प्रकाशित होइत छल। प० श्री आनन्द झा, न्यायाचार्य रचित 'सीता स्वयंवर' ओ 'प्रबोध चन्द्रोदय' नामक नाटक क्रमशः प्रकाशित भेल। महर्षि गौतम रचित प्राचीन न्याय सम्बन्धी निबन्ध सब क्रमशः प्रकाशित होइत देखल जाइत अछि।

वर्त्तमान युगक किछु मूर्द्धन्य साहित्यकार—यथा कविवर श्री यात्री, डॉ० श्रीकाञ्चीनाथ झा 'किरण', प० श्री उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' प० श्री काशीनाथ ठाकुर 'कलेश' आदिक प्रतिभाकें विकसित करबामे एकर योगदान छैक। समष्टि रूपमे 'मिथिला मोद' मैथिलीक योग क्षेमक वहन सम्पूर्ण तत्परतासँ करैत रहल, परन्तु समाजक जड़ताक कारणें अन्ततः काल कवलित भ' गेल। मैथिली मासिक पत्रिकामे 'मोद'क बाद यद्यपि 'मिथिला मिहिर'क नाम अबैत अछि, परन्तु ई किछुए दिनक बाद मासिकसँ साप्ताहिक रूप धारण क' लेलक, अतः एकर विवेचन साप्ताहिक पत्र सभक संग कयल जायत। ऐतिहासिक क्रममे एहिठाम एकरे विवेचन उपयुक्त होइत, तें एहि ठाम एतबा कहि देब आवश्यक प्रतीत भेल।

मासिक पत्रिका सबमे मिथिला मोदक बाद चारिम पत्रक रूपमे जकर नाम लेल जाइत अछि से थिक मैथिल प्रभा। पाँचम श्री मैथिली तथा छठम मैथिल प्रभाकरक नाम लेल जाइत अछि।

Scanned by CamScanner

मैथिल प्रभा ओ मैथिल प्रभाकर

सब इतिहासकार एहि दूनू पत्रक प्रसङ्ग सङ्गहि अपन-अपन विचार व्यक्त कयने छथि। हमरा एहि दूनू पत्रक दर्शन नहि भेल अछि। एक तँ उपर्युक्त दूनू पत्र प्रवाससँ प्रकाशित होइत छल आ दूनूक सम्पादक छलाह जैत, (मथुरा) निवासी पं० रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र' जे 'चन्द्राभरण' नामक मैथिली अलङ्कार ग्रन्थक हेतु मैथिली साहित्यमे बहुचर्चित तथा 'मिथिला मोद'क स्थायी लेखक रहलाक कारणे बहुपरिचित छथि। मुख्य रूपसँ एहि दूनू पत्रमे हिन्दीएक रचना छपैत छल, परन्तु प्रवासी मैथिल लोकनिकेँ मिथिलास्थ मैथिल ब्राह्मण लोकनिसँ सम्पर्क बढ़यबाक उद्देश्यसँ जेँ हेतु एकर प्रकाशन आरम्भ कयने छलाह तेँ मैथिलीओक हेतु एकर द्वार फुजल छल। चेष्टा रहैत छलनि जे मैथिलीओक रचना प्रकाशनार्थ उपलब्ध हो आ जे रचना उपलब्ध होइत छलनि तकरा हुलसिक' प्रकाशित करैत छलाह। एहि दूनू पत्रिकाक प्रसङ्ग इतिहासकार लोकनिक मन्तव्य निम्नांकित अछि। स्व० पुलकित लाल दास 'मधुर' लिखने छथि—

"चतुर्थ पत्र 'मैथिली प्रभा' व्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण लोकनिक जातीय पत्रिका छल। किन्तु ओहिमे मैथिली भाषाकेँ सेहो स्थान देल गेल छल। ओहि पत्रिका सौं एतबा लाभ अवश्य भेल जे व्रजस्थ मैथिल लोकनिमे अनेक व्यक्ति मैथिलीभाषाक प्रेमी ओ अभ्यासी भै गेलाह। जाहिसौं ओ लोकनि भावी 'मैथिल प्रभाकर' मे सेहो मैथिलीकैँ स्थान देबाक पूर्ण निश्चय कैने छथि।' 'मैथिल प्रभा' पाँच छ: वर्ष धरि प्रकाशित भै बन्द भै गेल।"[1]

आब स्व० बाबू लक्ष्मीपति सिंहक विचार देखल जाय। ओ लिखने छथि—

"मैथिली पत्रकारिताक दोसर चरण प्रारम्भ होइछ, पुन: मिथिलासँ दूर अजमेरहिसँ जखन सन् १९२० ई० मे पण्डित रामचन्द्र मिश्र 'जैन' ? (जैत) "मैथिल प्रभा" नामक एक हिन्दी मैथिली मासिकक प्रकाशनक श्रीगणेश कएने छलाह। पत्र प्रवासी मैथिल लोकनिक छल। अत: पत्रक रूप विशेषत: सामाजिक, सांस्कृतिक छल। किन्तु, ओहो पत्र केवल १९२०ई०क अगस्त सँ सन् १९२४ ई०क दिसम्बर तक चलि सकल छल। तथापि

---

१. गद्य कुसुम माला, तृ० संस्करण, पृ० ७५।

Scanned by CamScanner

मिश्रजी अजमेरक सामाजिक गोलैसी सँ हतोत्साह नहि भेलाह आओर अलीगढ़ सँ "मिथिला प्रभाकर" नामक हिन्दी मैथिली मासिक पत्रक प्रकाशन सन् १९२८ ई०क अक्तूबर सँ आरम्भ कए देल। 'प्रभाकर' मात्र पन्द्रह मास जीवित रहि सकल, जकर मुख्य कारण प्रवासी मैथिल समाज मध्य सर्वांशिक सौमनस्य ओ सहकारिताक अभाव कहल जाए सकैछ।

जे से, किन्तु ई मानहिटा पड़त कि यद्यपि 'प्रभा' ओ 'प्रभाकर' अपने चिरंजीवी नहि भए सकल किन्तु जाइतहु जाइत ओ दूनू मिलाकएँ प्रभावित ओ अनुप्राणित कएने बिना नहि गेल। मिथिलामे उदित नारायण दास एवं नन्द किशोर लाल दास सन् १९२५ ई०मे "श्रीमैथिली" नामक मासिकक प्रकाशन आरम्भ कएलन्हि।"[१]

एहि प्रसंग डॉ० श्री जयकान्त मिश्र[२] ओ डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क मन्तव्य प्रायशः सामाने छनि। डॉ० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क कथन छनि—

---

१. मैथिली साहित्यक रूपरेखा, द्वितीय खण्ड, (चेतना समिति, पटना) पृ० ८३।

२. 'The second phase in Maithili Journalism began after the great war of 1914. the Maithilas outside Mithila were, as in the first period, the first to start. Their leader was Ramachandra Mishra of Mathura who ably edited two month lies in successi on: Maithila Prabha first published from Ajmer (August 1920 to December 1924) and later from Agra (June 1925 to June 1926) and Maithil Prabhakara published from Aligarh (October 1929 to January 1930). These Journals were for the most part interested in establishing contacts among the Maithilas in all parts of India, especially the Pravasi Mathilas, and were social rather than literary in character. They were also bilingual (Maithili and Hindi) papers so as to be intelligible to those Maithilas whose

"१९२० धरि मैथिलीक कोनो नव पत्रिकाक प्रकाशन नहि भेल। १९२०-१९३० ई०क मुख्य पाँच गोट पत्रिका प्रकाशित भेल ओ कोनो अधिक दिन नहि चलल। मिथिलेतर प्रान्त अजमेर (१९२०-२४) पुनः आगरा (१९२५-२६) सँ 'मैथिल प्रभा'क तथा अलीगढ़ सँ ''मैथिल प्रभाकर' (१९२९-३०) छपल। एहि दुनू पत्रिकाक व्यवस्थापक-सम्पादक मथुराक रामचन्द्र मिश्र जैत छलाह तथा एहि प्रकाशनक उद्देश्य छल प्रवासी लोकनिक संग मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पर्क स्थापित करब। एहिमे ई सर्वथा सफल भेल। एहि सँ साहित्यहुक पर्याप्त उपकार भेलैक। ई पत्रिका हिन्दी मैथिलीमें लेख प्रकाशित करैत छल। एहि पत्रिकाक उल्लेखनीय लेखक छलाह पुलकित लाल दास 'मधुर', छेदी झा 'मधुप', यदुनाथ झा 'यदुवर', प्रभृति। कहिओ-कहिओ कुमार गंगानन्द सिंह, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' प्रमथनाथ मिश्र प्रभृति सेहो अपन-अपन लेख ओ कविता एहिमे दैत छलाह। एहिसँ प्रवासी लोकनिमे मैथिलत्वक अभिमान जागल।"[२]

हम पूर्वहि कहि आयल छी जे एहि दुनू पत्रक दर्शन हमरा नहि भेल, अतः इतिहासकारलोकनिक कथन मात्र सँ एहि प्रसङ्ग सन्तोष करय पड़ैछ।

---

ansectors had left their home land generations ago and had settled in Hindi speaking areas and had forgotten thier mother tongue. Chief Matthili writer, who contributed to these Journals were Pulakit Lal Das 'Madhur', Chedi Jha 'Madhupa' and Yadu Nath Jha "Yaduvara". Occasionally the writings of Kumar Ganga Nand Sinha, Canda Jha, Raghu Nadana Das, Bhuvaneshwar Singh 'Bhuuana' Pramatha Nath Mishra and others also found place in them. They succeeded in reviving Maithili among the Pravasi Maithilas. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, (साहित्य अकादमी, दिल्ली) पृ० २३०।

२. मैथिली साहित्यक इतिहास, द्वि० संस्करण, पृष्ठ १२४।

Scanned by CamScanner

तथापि एकटा अनुमान कयल जाय सकैत अछि। एहि अनुमानक आधार थिक प० राम चन्द्र मिश्र 'चन्द्र'क साहित्य ओ मैथिलीक प्रति अनन्य अनुराग। 'मैथिल हित साधन' प्रवासी लोकनिमे मातृभाषाक प्रति (जे हुनका लोकनि केँ छूटि गेल छलनि) आकर्षण उत्पन्न क' चुकल छल। 'चन्द्र'जी 'मिथिला मोद' मे धुरझार लिखैत छलाह, परन्तु 'मोद' हिन्दीक रचना छापब बन्द क' चुकत छल। प्रकाशमे रचना केँ अनबाक उत्कण्ठा, आन्तरिक उत्साह, प्रवासी लोकनिक सम्पर्क बढ़यबाक आतुरता ई सब मिलि उत्साहित कयने होयतनि। भाषाक की स्वरूप वा प्रतिपाद्य विषय की छल से अङ्क सभके पढ़नहि बुझल जायत।

श्रीमैथिली

१९२५ ई० क फरवरी तदनुसार १९८२ संवत्मे माघमासक पूर्णिमासँ 'श्रीमैथिली' नामक एक मासिक पत्र विशुद्ध मैथिली भाषामे दरिभङ्गासँ प्रकाशित होअ लागल। ई पहिल पत्र छल जे हिन्दी सँ मुक्त छल। एकर सम्पादक छलाह उदित नारायण दास, बी०ए०, बी०एल्०, काव्यतीर्थ तथा प्रकाशक छलाह पण्डित अवध लाल झा।

सर्वप्रथम इतिहासकारलोकनि एहि प्रसङ्ग अपन-अपन की मन्तव्य प्रकट कयने छथि ताहि पर दृष्टिपात करब आवश्यक। स्व० पुलकित लाल दास 'मधुर' लिखने छथि—

''पंचम पत्र श्रीमैथिली सर्वाङ्गपूर्ण मैथिलीमे प्रकाशित भेल छल ओ ई पत्रिका यथार्थतः मैथिली भाषा-भाषी समस्त जनताक समाजिक एवं साहित्यिक पत्रिका छल। एकर नीति परम उदार, भाषा विशुद्ध ओ प्राञ्जल लेख गम्भीर ओ विषय सुपाठ्य रहै छल। सम्पादन कार्य एकर योग्यता सों कैल जाइ छल। एकर सम्पादकीय अग्रलेख विशेष विचार पूर्वक ओ योग्यता सों लिखल जाइ छल,आओर ओ एक विशेष मनोयोग पूर्वक पढबाक तथा मनन करबाक वस्तु होइ छल। एकर प्रभाव जनता पर खूब पड़ै छल। हमरा पूर्ण अनुभव अछि जे एहि पत्रिकाक प्रभाव सौं प्रभावित भै मैथिली भाषाक विरोध अनेक जातिक विद्वज्जन मैथिली-भाषा प्रेमी भै

Scanned by CamScanner

गेल छलाह। एहिमे अर्थाभाव सेहो नहि छल। किन्तु सुप्रबन्धाभाव एहिमे सर्वदा छल और एहि दोषें ई दुइये वर्षक उपरान्त काल ग्रासो भेल !''[१]

उपरिलिखित उद्धरणसँ हमरा एहन ध्वनिक आभास होइत अछि जे एहिसँ पूर्व जे पत्र-पत्रिका प्रकाशित होइत छल तकर सम्पादन योग्यतासँ नहि कयल जाइत छल तथा सम्पादकीय मनोयोगपूर्वक पढ़बाक योग्य नहि रहैत छल तथा जनता पर पूर्ण प्रभाव सेहो नहि द' पबैत छल, परन्तु एहिसँ सहमत होयब न्याय संगत नहि कहल जायत। कारण पर बादमे प्रकाश देल जायत। सम्प्रति अन्य विद्वान लोकनिक मन्तव्य देखल जाय। स्व० बाबू लक्ष्मीपति सिंह श्रीमैथिलीक प्रसंग लिखने छथि—

''मिथिलामे उदित नारायण दास एवं नन्दकिशोर लाल दास सन् १९२५ ई०मे 'श्रीमैथिली' नामक मासिकक प्रकाशन आरम्भ कएलन्हि। पत्रकएँ जन-साधारणक हेतु सुगम, सुबोध, सुरुचिपूर्ण बनएबाक उद्देश्यसँ ठेठ मैथिलीकेँ बहुत किछु प्रोत्साहन देल गेल; किन्तु ओहो प्रयोग असफल सिद्ध भेल। क्लिष्ट संस्कृतक परिवेश भए मुक्त जनभाषा ओ सर्व-साधारण कएँ आकृष्ट नहि कए सकल। कारण स्पष्ट छल। ओ छल यथापेक्षित जन-सहानुभूतिक अभाव।''[२]

डॉ० श्री जय कान्त मिश्रक जे अभिमत छनि[3] प्रायः सैह डॉ० श्री दुर्गा नाथ झा 'श्रीश' सेहो लिखने छथि—

---

१. गद्य कुसुम माला, पृ० ७५।

२. मैथिली साहित्यक रूप रेखा, पृ० ८३ ए हिष्ट्री ऑफ मै० लि०, पृ० २३१।

३. "In Mithila proper, the efforts of two kayastha scholars, Uditanrayana das and Nandakishora Lala, led to the publication of a magagine called "Srimaithili (1925 to 1927.) The editors clearly felt necessity af creating a work-a-day prose style. They encouraged literary criticism, and longer essays on non-literary subject.......

Scanned by CamScanner

'श्रीमैथिली'क प्रकाशन सँ जेना आधुनिक कवितामे नवीनोन्मुखता आएल तहिना गद्यहुमे। एहिमे विविध विषयक लेख सेहो प्रकाशित होइत छल, कविता ओ कथा मात्र नहि। एहिमे आबि मैथिली गद्य आओर अधिक परिमार्जित ओ नवीन भेल। एहि पत्रक द्वारा साहित्यिक समालोचना केँ सेहो प्रश्रय भेटय लगलैक। अतः एकर जे उद्देश्य छलैक—'मैथिलीक प्रौढ़ता सम्पादन' से बहुत दूर धरि पूर्ण भेलैक।''[1]

आब स्वयं सम्पादक प्रथमे अङ्कक 'अग्रिम निवेदन' शीर्षक सम्पादकीय मे एहि पत्रक प्रकाशनक उद्देश्य पर प्रकाश देने छथि तकर अवलोकन कयल जाय जाहिसँ उपर्युक्त विद्वानलोकनिक मान्यताक प्रसङ्ग विचार करबामे सुविधा होयत। सम्पादक लिखने छथि—

......यदि समस्त भारत वर्षक उन्नति तथा सुधार इष्ट तौं संगे-संग मिथिला देशहुक उन्नति साधन इष्टे। यदि मिथिलाक उन्नति होएब इष्ट तौँ एहि देशक भाषा, सामाजिक आचार विचार आदि विषयक उन्नति तथा सुधारक बिना इष्ट साधन असम्भव। अतः मैथिल लोकनि केँ अपन देश तथा समाजक आन्तरिक उन्नति करैत देखि यदि मैथिलेतर लोकनिकेँ कोनो प्रकारक आपत्ति होइन्हि तौँ ई सर्वथा व्यर्थ तथा भारतवर्षक समष्टिक हेतु अत्यन्त अनिष्टकर।...ई भारतवर्ष एक महादेश अछि। एकरा अन्तर्गत भिन्न २ प्रान्त तथा भिन्न २ भाग प्रत्येक एकएक देश अछि। भिन्न २ प्रान्त तथा भिन्न २ भागमे नाना प्रकारक भाषा प्रचलित अछि। भिन्न २ स्थानक आचार विचार सेहो पृथक् अछि। यद्यपि भारतवर्ष मध्य जे किछु प्रचलित भाषा अछि से सब संस्कृतहिक सन्तान रूपा अछि, तथापि कालान्तरें व्यवहार महात्म्य सौं प्रत्येक भिन्न-भिन्न भाषामध्य प्रकृत (ति) प्रत्यय-जन्य एक विलक्षणता आबि गेल अछि। एहि अवस्थामध्य यदि भिन्न-भिन्न प्रान्तवासी अपन सामाजिक उन्नति पृथक्-पृथक् भाषाक द्वारा करथि तौं एहि सौं अखिल भारतवर्षीय कार्यवाहीमे कोनो प्रकारक बाधा पड़बाक सम्भावना नहि।

हिन्दी साहित्य सम्मेलनक सभापतिक हैसियत सौं श्रीमान् बाबू राजेन्द्र प्रसादक लेख जे कोकनाडा मध्य पढ़ल गेल रहै ताहि मध्य राष्ट्रभाषा हिन्दीक विषयमे हुनक जे प्रशंसनीय विचार छल तकर ई अभिप्राय जे अखिल भारत-

---

१. मै० सा०क इतिहास, पृ० १२४।

Scanned by CamScanner

वर्षीय जे किछु कार्यवाही हो से राष्ट्रभाषा हिन्दीक द्वारा संपादित कयल जाय। भिन्न-भिन्न प्रान्तवासी कैं परस्पर कार्यवाहीक हेतु हिन्दीक आश्रय बिना लेने कदापि कार्य नहि चलि सकै छैन्ह। अतः राष्ट्रभाषा हिन्दीकैं अपनबैत अखिल भारतवर्षीय कार्यवाहीमे हिन्दीक सेवा करैत यदि भगिनीरूपा भिन्न-भिन्न भाषाक उन्नति साधन होइत रहै तौं एहि सौं कोनो प्रकारक क्षति राष्ट्रभाषा हिन्दीकैं नहि भै सकै छैक। हमरा लोकनिकैं हिन्दीभाषा सीखैक पड़ैत अछि। लेखमे साधु हिन्दी हमरालोकनि लिखि सकैत छी अवश्य किन्तु बजबामें प्रान्तीयता तथा मातृभाषाक छाया अवश्ये आबि जाइत अछि। हमरालोकनि जे मिथिला देशवासी छी अर्थात् जे व्यक्ति अपना घरमे छी, छथि, आएल, गेल इत्यादिक प्रयोग करैत छी तनिक मातृभाषा मैथिलीए थीकि एहि विषय मे कोनो प्रकारक सन्देह करबाक स्थान नहि।

अतः एहि पत्रिकाक द्वारा मिथिला देशवासी तथा मिथिला भाषाभाषीक उन्नति तथा सुधार हो एहि उद्देश्यक साधन हेतु हमरा लोकनिक प्रयास सर्वथा उचित तथा न्याय्य। हमरा लोकनि बंगाल तथा महाराष्ट्र कैं आदर्श मानि दृढ़ता पूर्वक यदि कार्य करैत जाइ तौं जे किछु कामना अछि से अवश्ये सिद्ध होइति।......एहि प्राचीन मिथिला देशमध्य केवल मिथिला मिहिरक छोड़ि कोनो पत्र-पत्रिका नहि अछि। ई विषय अत्यन्त खेदजनक। बिना पत्र तथा पत्रिकाक साहाय्यें कोनो प्रकारक सुधार होएब एहि समयमें अत्यन्त कठिम। एहि हेतु एक पत्रिकाक प्रकाशन नितान्त आवश्यक। एक पत्रिका बेचारी 'मिथिला मोद' छलि, किन्तु सहयोगिताक अभावे ओ मृत भै गेलि। यदि एहू पत्रिकाक सैह दशा होइक तौं कहैक पड़त जे हमरा लोकनि मध्य कार्य करबाक क्षमताक पूर्ण रूपें अभाव अछि।

कलकत्ता विश्वविद्यालय मध्य मिथिलाभाषा कैं एम्० ए० तक मे जे स्वतन्त्र स्थान देल गेलैक अछि तकर कारण यैह जे एकर अपन साहित्य उच्च कोटिक छैक। विश्वविद्यालयमे स्थान तौं भेंटि गेल अछि अवश्य, किन्तु यदि एकर अंग पुस्तकादि तथा पत्र-पत्रिका द्वारा उत्तरोत्तर वृद्ध नहि कैल जैतैक तौं एहि सौं कोनो लाभ होएबाक आशा नहि प्रत्युत् अन्यत्र निन्दे होयबाक योग्यता।

Scanned by CamScanner

एहि पत्रिकाक विषय सर्वथा साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक रहत। एहि देशक सामाजिक सुरीति वा कुरीति अछि तकर आलोचना कैं पत्रिकामे विशेष रूपें स्थान देल जैतैक।''[1]

एहि उद्धरणसँ एक तथ्य ई प्रकाशमे अबैत अछि जे एहि अवधिमे 'मोद'क प्रकाशन बन्द छल, मिथिला मिहिर जन सामान्यक समस्या अथवा हिन्दी द्वारा मैथिलीपर होइत आक्रमणक प्रति पूर्ण जागरूक नहि छल। हमरा एकर प्रकाशनमे मूल प्रेरक तत्त्व ई बुझना जाइछ जे 'मोद'क प्रकाशन बन्द भ' गेलासँ एक रिक्तता आबि गेल छल जकरा भरब आवश्यक मानल गेल होयत, दोसर कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीकें स्वीकृति भेटि गेलाक कारणें साहित्य भण्डारकें श्री सम्पन्न करब अनिवार्य भ' गेल छल।

सम्पादक अग्रलेखमे जे घोषणा कयने छथि, पत्रिकाक अध्ययन कयलापर सम्पादक सावधान प्रतीत होइत छथि। पूर्वहुक पत्रिका सब जाहि प्रकारें क्रमशः पुस्तकादि प्रकाशनक दिशामे संलग्न छल ताही प्रकारें 'श्रीमैथिली'मे सेहो मिथिलाक इतिहास, स्त्रीकर्त्तव्य, नवरस विवेचन, नाट्यशास्त्र, प्राचीन विद्वान लोकनिक परिचय आदि विषयपर लिखबाय विस्तारसँ प्रकाशित करबाक प्रयत्न कयल जाइत छल। परन्तु जेना बाबू लक्ष्मीपति सिंह लिखने छथि जे व्रजस्थ मैथिल लोकनि द्वारा प्रकाशित 'मैथिल प्रभा'कें बन्द भ' जयबाक कारणे ओही प्रभावें एकर प्रकाशन सम्भव भेल, से हमरा कतहु परिलक्षित नहि होइछ।

ई पत्र मैथिली भाषाक विकासक हेतु समय-समय पर उद्बोधनात्मक लेख प्रकाशित करैत रहैत छल। मिथिलाक्षरक रक्षाक निमित्त समाजकें प्रेरित करैत रहैत छल। साहित्यक समीक्षात्मक मूल्याङ्कन करायब, व्याकरण सम्बन्धी समस्या सबकें उपस्थित करब, सामाजिक समस्या सबपर लिखबायब आदि कार्य एहि पत्रिका द्वारा सेहो होइत रहल, परन्तु एहिसँ मैथिलीक प्रौढ़ता सम्पादन भेल से नहि मानल जा सकैत अछि।

पूर्वहु कहल जा चुकल अछि जे मैथिलीक पत्र-पत्रिका आरम्भसँ बहुत दिन धरि एकवर्गीय रहल। जखन कखनहु कोनहु सामाजिक समस्याक प्रसङ्ग लिखल जाइत छल ओ हरिसिंह देवीय व्यवस्थाक अन्तर्गत परिगणित जे दु टा जाति अछि तकरे समस्या रहैत छल। मैथिल ब्राह्मणक वैवाहिक

---

१. श्रीमैथिली अङ्क १, पृष्ठ २-४।

Scanned by CamScanner

समस्या ओ कर्णकायस्थक वर्त्तमान दशाधरि सीमित रहि जाइत छल। एहिसँ अतिरिक्त एक विशाल जन-समूह जे समाजक अभिन्न अङ्ग थिक, उपेक्षित रहि जाइत छल। शिक्षाक एक एहन व्यापक समस्यापर अवश्य ध्यान देल जाइत छल, परन्तु ओहि समयमे शिक्षाक प्रसार सेहो किछुए जाति मध्य छल तेँ तथाकथित निम्न वर्गक समस्यापर कोनो दृष्टिपात नहि भ' पबैत छल।

जखन एक दिस कहल जाइत छल जे जे क्यौ अपना-अपना घरमे, समाजमे छी, छल, गेल, आयल बजैत छी ताहि सभ व्यक्तिक मातृभाषा मैथिलीए थिक, तखन आवश्यक छल जे ओहू वर्गक जे सामाजिक समस्या छलैक ताहिपर विचार कयल जइतैक, समाधानक हेतु मार्ग दर्शन होइतैक। एहि दिशामे उदासीनता परिलक्षित होइत अछि जे पत्रकारिताक त्रुटि मानल जयबाक चाही। एहि सब दृष्टिएँ एहि पत्रकेँ कोनो प्रगतिशील डेग उठबैत नहि देखल जाइत अछि, तथापि मैथिली भाषाक की स्थिति छल, उपर्युक्त दू जातिक समाजमे की सब त्रुटि छल, कोन प्रकारक परिवर्तन आबि रहल छल ताहि सब विषयक परिचय एहि पत्रिकाक अध्ययनसँ होइत अछि। हम सबसँ पैघ उपलब्धि एकर ई मानैत छी जे हिन्दीक जाहि प्रकारक आक्रमण ओहि कालमे भ' रहल छलैक; 'मिथिलामोद' बन्द भ' गेल छल, ओहि शून्यकालमे इएह 'रन टेकने' रहल। एकरो छोट उपलब्धि नहि कहल जायत।

भाषाक दृष्टिएँ वा सम्पादनक दृष्टिएँ 'श्रीमैथिली' 'मैथिल हित साधन' ओ 'मिथिला मोद'सँ बहुत पछआयल अछि। 'मोद'क प्रौढ़ताक सङ्ग एकर कोनो तुलने नहि कयल जा सकैत अछि। भाषाक दृष्टिसँ ह्रास देखि पड़ैत अछि तखन विकासक कोन कथा। उदाहरणार्थ जाइत, होइक, पड़ैत आदिक स्थानपर जाईत, होईक, परैत आदिक प्रयोग, कतहु विभक्ति विभक्त, कतहु सटल, कयल, कैल, इयैह, यैह आदि द्विविध प्रयोग तथा असम्पादित रचनाक प्रकाशन आदि अनेक त्रुटि दृष्टिगोचर होइत अछि। एहि कथनक पुष्टिमे एक उद्धरण प्रस्तुत अछि—

"अपने करुणा वरुणा लय छी। भक्ति गद्‌गद आँखि सौं बाहार भय असंख्य निर्म्मल निर्झर अपनेमे लीन भय जाईत अछि। करुणा कल्लोलनी अपनेहीक अगाध कोढ़ मध्य विश्राम करैत अछि।

अहाँ आनन्द सागर छी। आनन्द लहरी असंख्य धारा सौं अहाँक आलिंगन करैत अछि। ओकर किनार-किनार पुलक पल्लवित बनक हरियरता बहुत अपूर्व सौन्दर्य प्रभान्वित करैत अछि। नेत्र निर्झर रूपी धवल धारा मध्य प्रफुल्लता जलकेलि करय लगैछ।

करुणा आओर आनन्द अपने दूहूक अगाध निधि छी। साहित्यक पुष्प शय्या पर करुणा और आनन्दक कहियो सम्मिलने नहि होइछ, किन्तु अहाँक हृदय सुख सेज पर दूहू प्रेम सहित आलिंगित भय विश्राम करैत छथि। तंय तौं अपने आनन्द घन वनिकय प्रेमाम्बु वर्षण करैत छी आओर कहियो करूणा कादम्बिनी बनिकय दयाक श्रोत उमड़बैत छी। धन्य अछि अहाँक लीला! स्मरण करू, गोधूलीक वेर छल। अपने आग्नेय पर्वत भय रहल छलहुँ। ब्रह्माण्ड प्रकंपित छल। सृष्टि ध्वंसक आशंका छल, एकाएकी परदा बदलि गेल, प्रहलाद 'आवि उपस्थित भेलाह। क्रोध वेश समाप्त भेल, आँखि छलछला उठल, ज्वालामुखी मन्दाकिनी वनि गेलिह। अपनेक करुणा निर्झरनी ओहि अनन्य भक्तक संतप्त हृदय के सिक्त कय देलक। वाह! तापित कयल गेलाह सत्याग्रही, द्रवित भेलहुँ अपने! अपनेक ओहि दिनक अश्रुक मूल्य? एक दिन गजेन्द्र केँ ग्राहिन्द्र पकड़ल-कैन्ह। खिचिकय लय गेल अतल जलमे। गजेन्द्रक आर्त्तनाद सौं आकाशक प्रत्येक दिशा भरि गेल। अहाँ चौंकि गेलहुँ। एक वयक उठल। ध्यान सहित ओम्हर कान देने वेतहास दौड़ल। मुकुट छुटि गेल, चक्र नहि छुटल। कुंडल टुटि खसल, व्रत नहि टूटल। पहुँचवाक देरी छल,गजेन्द्र मोक्ष निश्चित? अपने पीताम्बरक छोड़ सौं गजेन्द्रक सूढ़ सहलावय लगलहुँ। गजेन्द्र गद्गद भय गेल! अपनेक भक्ति वात्सल्य उमड़ि चलल। करुणा अभिषिक्त भय गेल! ओहि दिन अपनेक आँखिमे कतवा अमुल्य अश्रु छल!

दिन-दिन अपनेक अश्रुक अमुल्यता बढ़ैत गेल। अहां कइयेक वेर अश्रु बहाओल, परन्तु हृदय केवल एके वेर द्रवित भेल!

चित्रकूट मध्य "भैया" भरत मिलवाक हेतु अएलाह। अहाँक छाती भरि गेल। भ्रातृ स्नेहक सुधा श्रोत फुटि कय बाहर भेल; किन्तु अस-मंजसे किछु संकुचित कय देलक।

दण्डकारण्यमे सीता हरण भेल, वनक द्रुम गुल्म लतादि श्रीहीना भय गेलीह। बनदेवी सभ विलाप कय उठलीह। अपनेक विह्वलता सौं त जड़-जङ्गम मात्र विह्वल भय उठलाह। प्रकृति पूर्ण प्रभावान्वित भय गेलीह। प्रकृति पुरुषक संबंध प्रत्यक्ष शिद्ध भय गेल। किन्तु ई सभटा अपनेक मानव लिला छल।

लँकाक रणांगन मध्य गम्भीर लड़ाकू लखनलाल मुर्छित भेलाह। बानरी सेना कें अपनेक दारुण बिलाय निसप्राण कय देलकैक। अपनेक कमल नयन आकाश मार्ग पर अड़ल छल। अहाँके हनुमान कें पैघत्व देब स्वीकार छल। अपने तौं श्वयं "भव भीम रोग बैस्य छी"। किन्तु ओहो अपनेहींक मानवीय लीला छल हँ, बलिहारी रहे अपनेक ओहि अश्रुक जे "जन-स्थान" में बहल छल। स्मरण अछि? घनघोर जङ्गल मध्य अपने बन्धु सहित चल जा रहल छलहुँ। अचानक ठिठकि कय ठाढ़ भय गेलहुँ। कातर भय उठलहुँ। बिरह-व्यथा बिसरि गेल। कोनो पिड़ितक आर्त्तनाद सौं व्याकुल भय गेलहुँ। दया अगुवानी कैलक। सावधानताक संग आगां बढ़लहु। एक गोट आत्मत्यागी पक्षी पड़ल र कुहरि रहल छल। देखैत संता अपनेक चंचल आंखि निमेष सुन्य भय गेल। अपने अखिन्न ब्रह्माण्ड विधायक छी, किन्तु प्रायसः हे अपनेक आँखि कहियो ओहन दृष्य देखने छल। अपूर्व आत्म-विसर्जन देखि अपनेहूँके आत्म विस्तृत भय जाय पड़ल। अपनेक सिथिल हाथ ओहि वृद्ध जीवक धुल धुसरित, रक्तासक्त एवं असक्त शरीरकें कनेक-कनेक उठाय कय क्रोड़ मध्य रखलक। अपनेक पुलकावली सघन भय उठल। इन्दीबर कदम्ब कुसुम बनि गेल। अनायास जटाजूट फुजि गेल। करुणाक संगीनी जाटपंखक धूरा झारि देलकैक। अपने धनस्याम तौं छीहे श्रावनक घटा जकाँ उमड़ि उठलहुँ। करुणाक कालिन्दी आकुल प्लाविता भय उठलीह। बनस्थली सिक्त भय गेलीह। जनस्थान सनाथ भय गेलाह। अश्रुक अमुल्यता प्रकट भय गेल।

वास्तवमे वैह नोर अमुल्य थीक जे प्रकृति पर दुःख कातरताक प्रेरणा सौं प्रसूत आओर सत्य समवेदनाक संचार सौं सम्भूत रहय। वैह अश्रु विश्वक परिताप के समन करैत अछि। मनुष्यता ओकरहि द्वारा कृतार्थ हवैछ। देवत्व ओकरहि पावि कय विकशित होइछ। पृथ्वी तल कें वैह श्वर्ग रूप में परिणत करैछ। पुर्णेन्दुक शितलता ओही सौं परास्त होइत

अछि। साहित्य भण्डारक रत्न मञ्जुषा ओकरहिं संचित कय धन्य होइत अछि। जिवनक असारता ओकरा सौं एको वेर सम्मिलित भय कृत कृत्य भय जाइत छथि।

जाहि मध्य पवित्र प्रेमोद्रेक और कमनीय कारुण्य नहि, ओ अश्रु केवल वही आँखि सौं बाहर होइत अछि, जनिका "अपनेक अमुल्य अश्रु" क अखन तक दर्शने नहि भेलैन्ह।

श्री भुवनेश्वर सिंह साहेब

सेक्रेटरी लक्ष्मी पुस्तकालय (आनन्द पुर)" [१]

एहि उद्धरणक शीर्षक देल गेल अछि "अपनेक अमुल्य अश्रु"। अविकल एहि उद्धरण कें पढ़ि क्यौ विचारशील व्यक्ति चिन्तन करबाक हेतु बाध्य भ' जयताह जे "भाषाक प्रौढ़ताक सम्पादन" एहन गद्यसँ कोना सम्भव अछि। एकर लेखक थिकाह बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' जनिका कतिपय इतिहासकारक मतें गद्यक स्वरूप स्थिर कयनिहार कहल गेल छनि। एहिमे जाहि प्रकारक अशुद्धि बारंबार दोहराओल गेल अछि से प्रेसक अशुद्धि नहि मानल जा सकैत अछि। किन्तु एहिसँ हमरा कहबाक तात्पर्य ई नहि बूझि लेबाक चाही जे ई पत्र सर्वथा भ्रष्ट छल। ओहि रिक्त समय मे एकर अस्तित्व मैथिलाक अस्तित्व रक्षाक हेतु नितान्त प्रयोजनीय छल।

एहि पत्रमे लिखनिहार लेखक लोकनिक नाम निम्नलिखित अछि— पुलकित लाल दास 'मधुर', बाबू भोला लाल दास, म. म. डॉ० सर गंगानाथ झा, पं० छेदी झा, प० ऋद्धि नाथ झा (हटाढ़ रुपौली), नन्द किशोर लाल, जटाधर शर्मा 'विकल', गोविन्द मिश्र, काव्यतीर्थ, श्रीनरेन्द्र नाथ दास विद्यालङ्कार, रुद्रानन्द मिश्र, पंजीकार, जीवछ मिश्र, गोविन्द लाल दास बी. ए., म. म. डॉ० उमेश मिश्र, प० ताराचरण झा, प० यदुनाथ झा 'यदुवर', श्री नागेन्द्र कुमर, बाजितपुर, -प० रामेश्वर झा, मधेपुर, प० विकल मिश्र, श्रोत्रिय, (सनकोर्थ), विद्यानन्द ठाकुर एम. ए. बी. एल., नन्दकिशोर दास (गोरापट्टी), श्री फणिनाथ झा (खड़रख), श्रीमन्त लाल दास, चिरंजीव झा बी. ए. बी. एल., प० श्याम सुन्दर झा 'मधुप, (खजुराहा), माधव मिश्र

---

१. श्रीमैथिली, वर्ष १, अङ्क ८-९, पृ० १९१-१९३।

Scanned by CamScanner

बी. ए., प० अवध लाल झा, हरिवंश झा, मुख्तार (सागरपुर), जीवछ लाल दास, दुर्गाचरण लाल दास (बेलाराही), प० शालिग्राम मिश्र (परवत्ता), व्रजविहारी सिंह (सुरसण्ड), प० जनार्दन झा, प० बदरीनाथ झा 'योगेश,' (लोहना), काली कुमार दास, मुकुन्द झा (चनौर), अनुग्रह लाल ठाकुर, (नवहट्टा); श्री जीवछ झा वकील, प० श्री शशिनाथ चौधरी, प० नागेश्वर मिश्र, मोद नारायण दास, प० वुद्धिनाथ झा, सूर्यनारायण दास (बहेड़ा), प० योगधर झा, हरिकृष्ण लाल दास जयगोविन्दलाल ठक्कुर, (छतनेश्वर), साहित्य रत्नाकर, मुंसी रघुनन्दन दास, रामलोचन शर्मा 'कण्टक', श्री कुलानन्द दास, 'विद्यार्थी', राम झा (वीरसायर), मुक्तिनाथ बी. ए.; विद्यालंकार, ठाकुर धर्मलाल सिंह।

पूर्वमे कहल गेल अछि जे मैथिली पत्रकारिता एक वर्गीय छल। एहि तथ्य दिस 'श्री मैथिली'क ध्यान आकृष्ट भेल छलैक से निम्नांकित उद्धरणसँ ज्ञात होइत अछि। 'समाज' शीर्षक सम्पादकीयमे सम्पादक लिखने छथि।

"यदि हमरा लोकनि मैथिल समाजक हित साधनक चेष्टा करैत छी तौं जकरा मैथिल कहैबाक अधिकार छैक ताहि सभहीक बात सुनय पड़त, ओकर हितक कामना करय परत (?) ओकर सुधार सौं हर्ष मानय परत। कहबाक ई तात्पर्य जे मिथिला देशवासी हमर भाषा बजनिहार जे केओ व्यक्ति अछि कोनो जातिक कियैक ने रहौ ओकर उन्नतिकेँ अपन उन्नति मानक थीक, ओकर अवनतिकेँ अपन अवनति बुझक थीक। यदि एहि तरहक उदार भाव हमरा लोकनि मध्य भै जाओ तौं मैथिल समाज पुनः एक बलशाली समाज भय जाएत। आशा जे हमरा लोकनि मध्य उदारताक भाव दिनादिन बढ़त।"[१]

मैथिलीक अस्तित्वकेँ हिन्दीक पेटमे समाहित क' लेबाक हेतु एक तर्क देल जाइत छल जे मैथिली भाषा नहि, एक बोली थिक। एहि तर्कक उत्तर दैत सम्पादकीय टिप्पणीमे सम्पादक लिखने छथि—

'बहुतोक मैथिलेतर लोकनिकेँ ई भ्रम छैन्ह जे "मैथिली" भाषा कहैबाक योग्यता नहि रखैत अछि। ई एक बोलो (Dialect) मात्र थीक। जाहि लोकनि केँ एहि प्रकारक भ्रम छैन्ह हुनका प्रति ई निवेदन अछि जे ओ लोकनि केवल एही विषयपर विचार करथि जे "मैथिली" कैँ अपन माता संस्कृत भाषाक भाण्डार सौं सामग्री लय अपना हेतु व्यवहार करबाक लेल

१. श्रीमैथिली, वर्ष १ अंक ३, पृ० ७६।

केहन स्वतंत्रता छैक। जङ्गलीओ लोक अपना बोलीमे अपन दुःख, शोक, हर्ष आदि कैं प्रकाशित कय लैत अछि। अतः केवल मानसिक भावहीक प्रकाशनक सामर्थ्य सौं कोनो बोली (Dialect) भाषा नहि कहा सकैत अछि। यदि ओकरामे उच्च-उच्च कोटिक साहित्यिक विषयकें लेख मे प्रकाशित करबाक सामर्थ्य होईक तौं ओ 'बोलिये' नहि थीक किन्तु भाषा कहा सकैत अछि। भारतवर्षक जतेक भाषा अछि ओकरा जे किछु सामर्थ्य छैक से संस्कृत भाषाहीक देल थिकैक। जे भाषा संस्कृत कोष कैं जाहि तरहैं स्वतन्त्रता पूर्वक स्वायत्त कय सकल अछि किंवा कय सकैत अछि ओकरा ओतेक सामर्थ्य होइत छैक। आ ई देखबाक चाही जे "मैथिली" संस्कृतक भाण्डारक सामग्रीकें कोन तरहैं स्वायत्त कय सकैत अछि। हमरा लोकनि सामान्यतया जे भाषा व्यवहार करैत छी ताहू मध्य संस्कृतक शुद्ध शब्दक व्यवहार कय अपना भावक प्रकाशन करैत छी। 'हमरा ई बात लक्षित भय गेल' 'सभ बातक प्रतीकार अवश्ये छैक' 'ई काज करबाक लेल ओ सन्नाह पहिरलैन्ह अछि' 'हम बर (?) सीदित भय गेलहुँ' 'हम यच्च यावच्च सभ कहि सुनलिऐन्ह (?) 'ओ यत्र कुत्र बाजय लगलाह' इत्यादि वाक्यक व्यवहार हमरा लोकनि अनुक्षण करैत छी। भारी सँ भारी संस्कृत शब्दक व्यवहार यदि "मैथिली"मे कैल जाओ तौं कनेको अनौचित्य नहि बुझि परैत छैक। जहिना सँस्कृतक वाक्यमे हमरा लोकनि संस्कृत शब्दक व्यवहार करैत छी ताही तरहें "मैथिली"हूक वाक्य मध्य। एहि प्रकार संस्कृतक भाण्डार सौं व्यय करबाक सामर्थ्य आन बोलीकें नहि छैक।....जखन एहि प्रकारक शब्द सामग्री मैथिलीकें प्राप्त छैक तखन एकरा भाषा होएबामे जनिका सन्देह होइत छैन्ह हुनक केवल ई अज्ञानता मात्र थिकैन्ह।"[1]

एहि प्रकारें अनेक लेखक समय-समय पर मैथिली ओ मातृभाषाक महत्व पर प्रकाश दैत रहैत छलाह जे अङ्क सभक अध्ययनसँ प्रतीत होइत अछि। परन्तु समाजक गाढ़ निद्रा भंग करबामे 'श्रीमैथिली'कें सेहो विफलते हाथ लगलैक। सातमे अङ्कमे एकर दीनता ओ समाजक उदासीनतापर प्रकाश देल गेल अछि। सम्पादक लिखने छथि—"मैथिलीक छौ अंक प्रकाशित भै चुकल अछि ई सातम अंक थीक। जे मैथिल विद्वान नहि छथि तनिक गणने की किन्तु जेहो व्यक्ति एहि महान् उद्देश्यक अनुभव कै सकैत छथि

---

१. श्री मैथिली, वर्ष १, अंक ३, पृ० ७६-७७।

हुनको लोकनिक एहि दिशि उपेक्षे बूझि पड़ैत अछि। वार्षिक मूल्य एकर दू टाका मात्र छैक। जेहो व्यक्ति किछु उपार्जन करैत छथि हुनको लोकनिक एहि दिशि वेशी अनुग्रह नहि देखि पड़ैछ।" एही उपेक्षाक कारणें द्वितीय वर्षक पूर्णांक तीन अंकके एक ठाम प्रकाशित संवत् कय १९८३ मे आबि ई पत्र सर्वदाक हेतु अस्त भ' गेल।

मिथिला

वैशाख शुक्ल द्वितीया सन् १३३६ साल तदनुसार अप्रैल १९२९ ई०सँ विद्यापति प्रेस, लहेरियासरायसँ प० कुशेश्वर कुमर तथा बाबू भोला लाल दासक संयुक्त संपादकत्वमे 'मिथिला' नामक एक विशुद्ध मैथिली मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल। हमरा दृष्टिएँ मैथिली पत्रकारितामे एहिठामसँ मोड़ आयल अछि, अतः मैथिली पत्रकारिताक दोसर चरण एहिठामसँ मानबाक चाही। प्रकाशकक दिससँ आरम्भेमे प्रतिज्ञा वाक्य देल अछि—

वादी प्रतिवादी दूनुक हम खण्डन मण्डन छापब।
उचित दोष गुण जे क्यौ लिखता नहि तकरा हम झाँपब॥
"कुमर" पुरातन-नीति निरत छथि "दास" नवीन समाजी।
अछि आशा दूनू दुनकें राखथि सब दिन राजी॥"

एहिसँ निष्कर्ष बहराइत अछि जे प० कुशेश्वर कुमरजी, म. म. पण्डित मुरलीधर झाक शिष्य, प्राचीन विचारधाराक पोषक छलाह तथा बाबू भोला लाल दास पाश्चात्य शिक्षा सम्पन्न आधुनिक विचारक पोषक। अतः ई पत्र दूनूक विचारधाराक एक संगम स्थल छल। भाषा ओ विचारमे एहिसँ पूर्व प्रकाशित पत्र सबसँ ई प्रगतिशील छल से एहिमे प्रकाशित विषयवस्तुसँ ज्ञात होइत अछि।

आब प्रथमतः हम 'मिथिला'क प्रसङ्ग इतिहासकारलोकनिक अभिमत उपस्थित करैत छी। पुलकित लाल दास 'मधुर' 'समाचार पत्रक ऐतिहासिक विवेचन' लिखि एही पत्र (मिथिला) मे प्रकाशित करौने छलाह। जखन मैथिली साहित्य परिषदक दिससँ 'गद्य कुसुम माला' नामक पुस्तक संकलित

Scanned by CamScanner

भेल तँ एहि पुस्तकमे उएह लेख संकलित कयल गेल। तखन 'मिथिला'क प्रसङ्ग मात्र चारि पाँती जोड़ि देलथिन, एकर मूल्यांकन करब आवश्यक नहि बुझलनि। जे चारि पाँती जोड़ल गेल से थिक—

"छठम पत्र "मिथिला" छल। ई पत्र सर्वथा उपयोगी ओ उत्तम छल तथा एकर भविष्य सेहो उत्तरोत्तर पूर्ण समुज्ज्वल एवं मंगलमय देखि पड़ै छल। एहिमे कनेको सन्देह नहि जे यदि मैथिल-शिक्षित समाज पूर्ण सन्तोष-जनक रूपमे एहि पत्रिकाकेँ अपनबितथि तँ ई भविष्यमे अवश्य कोनो भाषाक उच्च कोटिक मासिक पत्र-पत्रिकाक समता करबामे पूर्ण समर्थ होइत। अस्तु।"[१]

डॉ० श्री जयकान्त मिश्र सेहो गम्भीरतासँ एकर मूल्यांकन नहि कयने छथि।[२] 'मिथिला'मे पत्रकारिताक स्वर सर्वथा बदलल अछि। समाज ओ

---

१. गद्य कुसुम माला, पृ० ७५।

२. The task of Sri Maithili was carried on by the best edited monthly of this period, viz, Mithila (1929-1931). It was edited by Kusheshvara Kumara and Bhola Lal Das. It was mainly a literary Journal in the beginning but latar on it became more and more interested in social subjects. The result was that it aroused better controvrsies and met with its end. Kusheshvara Kumara had received inspiration from Mm. Muralidhar Jha and Bhola Lal Das from Munshi Raghunandan Das a and therefore, they were able to maintain throughout high standard. The part that this magazine played in creating new types of litarary prose cannot be exaggerated. It can safely be asserted that but for Sri Maithili and Mithila the literature of the late thirties would not have achieved the enormous success it had. Writers like Narendra Nath Das, Hari Mohan Jha, Kali

Scanned by CamScanner

राष्ट्रमे होइत अनेक सामाजिक, धार्मिक ओ राजनीतिक आन्दोलन दिस एकर दृष्टि गंभीर देखना जाइछ।

'मोद'मे जे दृढ़ता ओ निर्भीकता छलैक से 'मिथिला'मे सेहो देखल जाइत अछि। हँ, ई भिन्न बात थिक जे दूनूक दृष्टिकोणमे आकाश पातालक अन्तर रहल होइक! परन्तु बहुत बिन्दु एहन छैक जाहिपर दूनू एकमत अछि। एहि प्रसङ्ग आगाँ विचार कयल जायत। डा० श्री जयकान्त मिश्रक मन्तव्य सँ मिलैत-जुलैत बात डॉ० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश' सेहो लिखने छथि—

"श्री मैथिली'क प्रकाशन जखन बन्द भए गेल तँ एहि पत्रक कार्यकेँ आगाँ बढ़ओलक मिथिला। तावत् धरि बहुत कालसँ आबि रहल प्राचीन ओ नवीनक विवाद चरम सीमापर पहुँचि गेल छल। मिथिला'मे आबि एकर समन्वयक चेष्टा भेल। कुशेश्वर कुमर प्राचीनक प्रतिनिधित्व करबाक निमित्त एकर सम्पादक भेलाह। श्री भोला लाल दास नवीनक प्रतिनिधित्व करबाक हेतु। एहि विषयक सूचना पहिले अंकमे छपल—

'कुमर' पुरातन नीति निरत छथि, 'दास' नवीन समाजी
अछि आशा दूनू दूनूकैँ राखथि सब दिन राजी

'मिथिला'मे पहिने साहित्यक लेखक आधिक्य रहैत छल। मुदा पश्चात आबि सामाजिक लेख सेहो प्रकाशित होअय लागल। 'मिथिला' 'श्रीमैथिली' जकाँ आधुनिक गद्यक निर्माणमे अभूतपूर्व योगदान देलक। एहि दूनू पत्र-पत्रिकामे ओहन-ओहन अधिकांश लेखक लिखब आरम्भ कएल जनिक साहित्य आइ गौरवक वस्तु अछि। दुनू पत्र पाँच वर्ष मात्र प्रकाशित भए मैथिली साहित्यक विकासकेँ बड़ आगाँ बढ़ाए देलक। एहि पत्रिकामे सर्वप्रथम प्रकाशमे अएनिहार लेखक लोकनिमे श्री नरेन्द्रनाथ दास, प्रो० हरिमोहन झा, काली कुमार दास, श्रीमती शामभवी देवी (शाम्भवी) प्रभृतिक नाम अग्रगण्य अछि।"[1]

Kumar Das 'Maithili Vacaspati', Srimati Shambhavi Devi and others revealed their latent capacities through them."—ए हिस्ट्री आफ मै० लिटरेचर, पृ० २३१।

१. मै० साहित्यक इतिहास, पृ० १२४-२५।

वस्तुतः कोन स्थितिमे, की उद्‌देश्य राखि ओ कोन नीतिक अवलम्बन क' ई पत्र प्रकाशित भेल से सम्पादकक शब्दमे देखल जाय—

"मैथिली"क बन्द भेलासँ मैथिली-साहित्य एक प्रकारेँ नितान्त अंधकार निमग्न भै गेल। मिहिरक आंशिक प्रकाश कहाँ धरि किछु साधन कै सकत? अत: हमरालोकनि अत्यन्त उद्विग्न भेलहुँ। हमरालोकनि प्रबुद्ध एवं मैथिली-प्रेमी जनताहुक उद्विग्नताक अनुभव कै रहल छलहुँ अतः हमरालोकनि विद्यापति प्रेसक व्यवस्थापककेँ हार्दिक धन्यवाद दैत छिऐन्ह जे एहि भारकेँ ग्रहण करबाक उदारता देखौलन्हि अछि। व्यवस्थापक महाशय अपना कारबारक केन्द्र दरभंगा नगरीमे रखने छथि—केवल ताही कारणेँ उदार मैथिलत्वक भावनासँ प्रेरित भेल छथि—ई विशेष सफलताक लक्षण एवं संतोषक विषय थिक। यैह कारण थिक जे अन्यान्य पत्र जकाँ "मिथिला" अर्थाभावक कारणेँ कदापि बन्द नहि भै सकैछ आओर ने ग्राहककेँ पछतैबाक अवसर दैतैन्ह, परन्तु आब देखक अछि जे मैथिल जनता कहाँ धरि एहि प्रयासमे हमरा लोकनिक उत्साह बढ़बैत अछि। व्यवस्थापक ई मन्तव्य छैन्ह जे जनता कम-सँ-कम यदि एतबो उत्साह देखाओत जाहिसँ एहि प्रयासमे घटी नहि लागै तँ अवश्य चलैत रहत आओर यदि अधिक उत्साह देखावै तँ पत्रकेँ अधिक सुन्दर एवं वृहत् बनाओल जाय। तातकाल यदि केवल एको हजार साधारण ग्राहक भै जाथि तँ पत्र अवश्य स्थायी भै जाएत, अतः पर अधिकस्याधिकं फलम्। की एतेक वृहत् जन-समुदायसँ हम एतबो आशा नहि कै सकै छी? मातृभाषाक एहि दुर्दशामे की हमर दशो हजार ग्राहकक आशा अधिक थिक? की एहनो-एहनो मैथिल श्रीमान् एहि पावन भूमि मिथिलामे विद्यमान नहि छथि जे एकाकी एकर भार वहन कै सकथि? तखन की मैथिल जनता एक हुनक निःस्वार्थ सेवाक उचित पुरस्कार (?) नहि दै सकत एवं ताहिसँ स्वयं उपकृत हैबाक उद्योग नहि करत? अस्तु, भविष्ये एकर निर्णय करत।

हमरालोकनिक विचारमे आबहु यदि मिथिला-भाषाक हेतु किछु उद्योग नहि कैल गेल तँ मैथिल जातिक, मैथिल संस्कृतिक एवं मैथिलत्वक अस्तित्व नहि रहत। एतेक दिन धरि हम नहि चेतलहुँ तँ हमर केओ विरोधियो नहि छल, किन्तु आब एहि भाषाक विरुद्ध एही प्रान्तमे आन्दोलन ठाढ़ भै गेल अछि। अनेक षडयन्त्र सफलताक सीमापर पहुँचि गेल अछि। उदासीन

आओर अनभिज्ञ रहने यदि मैथिलीक अस्तित्व बाहरसँ उठि केवल घरमे रहि गेल अछि तँ आब उपेक्षा कैने शीघ्र ओ दिन समुपस्थित हैत जखन कि हमरा लोकनि घरहुमे ई भाषा बाजै नहि पाएब। कनेक विचारबाक विषय थिक जे ओ स्थिति हमरा लोकनिक हेतु केहन भयानक हैत। बिहार प्रान्तमे सबसँ अधिक मिथिला-भाषा-भाषी जनताक संख्या अछि किन्तु प्रान्तीय विश्व-विद्यालयमे जहाँ अंगरेजीक अतिरिक्त हिन्दी, उर्दू, बंगला, उड़िया आदि सब भाषाक स्वीकृति अछि तहाँ मैथिलीक कोनो स्थान नहि—एतबे नहि तकर विरोध जोर-शोरसँ कैल जा रहल अछि। की ई विषय प्रत्येक मिथिलावासीक हेतु ग्लानि नहि थिक ? की एहि उद्देश्यक साधन बिना पत्र-पत्रिका अथवा स्थायी साहित्यक भै सकैछ ? यदि नहि, तँ प्रत्येक मिथिला-भाषा-प्रेमीक कर्त्तव्य थिकैन्ह जे ओ एहि पत्रकेँ दीर्घजीवी बनैबाक प्राणपणसँ चेष्टा करथि।

सुतरां एहि पत्रक मुख्य उद्देश्य मिथिला भाषाकेँ उचित स्थान प्रदान कराएब थिक अतः पत्र साहित्यके रहत किन्तु एहिमे सामाजिक एवं धार्मिक विषयक समावेश करब तेहने आवश्यक बुझना गेल। सम्प्रति मैथिल-समाजक जे दुरवस्था अछि से हो ककरहुसँ अज्ञात नहि अछि। यथार्थ पूछी तँ सामाजिक दुरवस्थहिसँ हमरा लोकनिक भाषा, भाव एवं भेष आदिक ई दुर्दशा सम्प्राप्त भेल अछि। एहि विषयमे यथार्थ पूछी तँ प्रबल क्रान्तिक आवश्यकता अछि। हमरा लोकनि कोनहु प्रकारेँ वर्त्तमानक उपेक्षा कै क सुन्दर भविष्यक आशा नहि कै सकै छी।..........

हमरा लोकनिक प्राचीन रीति-नीतिमे बहुत किछु अनावश्यक एवं आडम्बर आबि गेल अछि जकरा कात करब आवश्यक अछि तथा नवीनो क्रान्तिमे किछु सार छैक जकरा ग्रहण करब तेहने आवश्यक अछि। अतः निर्भीक भावे हमरा लोकनि समाजकेँ समयानुकूल मार्गपर लै चली तखनहि हमर कल्याण अछि अन्यथा हमरा जखन भावे नहि रहत तँ भाषा लै क की करब ? अतः भावोत्कृष्टताक हेतु—निर्जीव समाजमे किछु जीवन-शक्तिक सचार करबाक हेतु—बहुत किछु तीव्र आलोचनाक आवश्यकता अछि। दोसर कारण ई अछि जे सम्प्रति "मिथिला"क ग्राहक अधिकतः मैथिले छथि आओर ग्राहक लोकनिमेसँ अधिकांश व्यक्ति सामाजिको विषयक समावेशार्थ आग्रह कैने छथि। सम्प्रति दोसर कोनो पत्र नहि जकरा उपर

Scanned by CamScanner

ई भार अर्पण कैल जाय। धर्म एवं समाज कें कोनहु प्रकारें पृथक नहि कै सकै छी अतः एहि दून् विषयक उपेक्षा करब उचित नहि बुझना गेल हम अपना समाज कें प्रत्येक कुरीति एवं दुर्वृत्ति सँ पूर्णरूपेण मुक्त देखै चाहै छी। कोनहु विषय पर मिथिला भाषाक सत्साहित्य निर्माण होओ हमर यैह ध्येय अछि। हमर ई दृढ़ विश्वास अछि जे यदि विश्वविद्यालय हमरा लोकनिक मातृभाषा कें स्थान नहियो देत तँ हमरा लोकनिक सत्य परिश्रम कदापि निष्फल नहि भै सकैछ, कारण साहित्यक वस्तु कतहु रहै, ओकर महत्त्व कम नहि भै सकैछ। हम देखै एवं देखाबै चाहै छी जे मिथिला भाषा मे कोन-कोन साहित्यिक सामग्री प्रस्तुत भै सकैछ। हमरा लोकनि प्रत्येक विषय पर उत्तमोत्तम सामग्री उपस्थित करबाक अभिलाषा रखै छी। अतः विद्वन्मण्डलीक विशेष कृपा पात्र छी। आशा अछि कोनो मैथिल एवं मिथिला-भाषा-प्रेमी विद्वान लेखक हमरा लोकनि कें अपना कृपा सँ वंचित नहि रखताह।

अन्त में ई निवेदन कै देब आवश्यक जे पत्र मे एहन कोनो लेख नहि छपत जाहि सँ अनुचित व्यक्तिगत विरोध सूचित हो अथवा स्थायी कानूनक कोनो आशय भंग होइत हो। सामाजिक लेखहु में जहाँ धरि हैत तीव्र भाषाक अकारण प्रयोग नहि कैल जाएत आओर ने कोनो एहन लेख छापल जाएत जाहि सँ ई सूचित हो जे ई कोनो खास जातिक पत्र थिक। भाषाक सम्बन्धें हम मिथिलावासी प्रत्येक ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, कायस्थ, मुसलमान, अंगरेज, बिहारी, बंगाली, मारवाड़ी, कान्यकुब्ज एवं वैष्णव, शाक्त, दयानन्दी, रमानन्दी, कबीर पंथी तथा अन्यान्य मतावलम्बी कें एक दृष्टि सँ मैथिल कहै छिऐन्ह एवं हुनका लोकनि सँ मैथिलीक प्रति एक रंग सेवाक आशा करै छी। उदार विचारक सर्वदा हमरा लोकनि पक्षपाती रहब तथा अपना नीतिक विरुद्धो लेख कें (यदि ओहि मे किछु तथ्य रहतैक तँ) पत्र मे प्रकाशित कै सकब। यद्यपि अपना भरि हमरा लोकनि पत्रक सम्पादन मे कोनो त्रुटि नहि करब तथापि भूल-चूक हैब संभवे नहि अनिवार्यो अछि अतः पाठक लोकनि सँ प्रार्थना जे कृपया एकर सूचना देथि जाहि सँ अग्रिमक हेतु हमरा लोकनि सतर्क भै जाइ। अन्त मे जगज्जननी सँ प्रार्थना जे ओ हमरा लोकनि मे मैथिल, मैथिली एवं मिथिलाक सेवार्थ पूर्ण शक्ति एवं इच्छा प्रदान करथु, जाहि सँ हमरा लोकनिक उद्देश्य सिद्ध हो।"[1]

१. "मिथिला" वर्ष १ अंक १ पृ० ५-७।

एहि उद्धरण सँ स्पष्ट अछि जे मैथिली केँ अपन उचित अधिकार प्राप्त करायब एकर मुख्य उद्देश्य छल। यद्यपि 'मिथिला' पत्र द्वारा से नहि भ' सकल, किन्तु एकर सम्पादक बाबू भोला लाल दासजी एहिमे जे संकल्प कयलनि तकरा पूर्ण कयलनि। एहि हेतु हुनका लगातार दस वर्ष संघर्षरत रहय पड़लनि। मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना एकर बादे भेल जकर एक वर्षक बाद ई प्रधानमन्त्री निर्वाचित भेलाह आ एहि पाछाँ फाँड़ बान्हि भिड़ि गेलाह।

उपर्युक्त अग्रिम निवेदन तँ दासजीक थिकनि जे "मिथिला"क कनिष्ठ सम्पादक छलाह। वरिष्ठ सम्पादक छलाह प० कुशेश्वर कुमर जे 'मोद'क समय सँ पत्रकारितामे रुचि रखैत छलाह। ओ छन्दोबद्ध नम्र निवेदन कयने छथि, जाहि मे मैथिली पत्र सब पर एक विहंगम दृष्टि दैत 'मिथिला'क प्रकाशनक प्रसङ्ग लिखने छथि, जकर एक अंश उद्धृत कयल जाइत अछि—

"नहि उपदेश समिति मिथिला मे, नहि अछि संस्था आन।
पत्र पत्रिका नामहु लै नहि, नहि विशेष विज्ञान॥

जाहि कारणें ह्वै छ देश में विविध प्रकारक हानि।
तैं प्रचार कर्त्तव्य तकर अछि उचित, देश हित जानि॥

भेल जन्म "मैथिल हित साधन" जे हित साधन हेतु।
कैल बहुत किछु यत्न सुधारक, बनि तरङ्ग में सेतु॥

अभिमानी मैथिल समाज नहि देल ताहि पर ध्यान।
खेदित भै किछु काल मौन रहि, कैलक दीर्घ प्रयान॥

तदनन्तर शुभ लग्न सुतिथि में 'मोद' लेल अवतार।
देखि जकर उद्गार सबहिजन, पावल हर्ष अपार॥

क्रमहि बढ़ल जागृति समाज में भाषा मार्जित भेल।
सबक हृदय में भाव मैथिली साहित्यक बसि गेल॥

जकर सामाजिक सदुपदेश सौं बहुतो भेल सुधार।
जागि उठल मिथिला साहित्यिक पावि सुखद संचार॥

दै प्रमोद सब कैँ, अपने दुख सहि सचेष्ट ओ भेल।
मोदक उन्नति दिशि तथापि क्यौ दया दृष्टि नहि देल ॥

देखि उपेक्षाभाव समाजक अन्तर्हित ओ भेल।
छल जे बढ़ल प्रेम कविता मेँ से क्रम सौं घटि गेल ॥

मिथिला-भाषा-साहित्यक रस-सरिता गेल सुखाय।
पाबथि कष्ट तृषित निशिवासर, रसिकवृन्द अकुलाय ॥

तदनन्तर लै जन्म "मैथिली" तोष सबहि कै देल।
देखि जकर अभिवृद्धि, समाजक हृदय प्रफुल्लित भेल ॥

किन्तु तकर रक्षा नहि कैलक उचित रीति सौं लोक।
भै अल्पायु पत्रिका ओ, पुनि देलक सब कैं शोक ॥

अछि सब सौं प्राचीन देश मेँ 'मिहिर' यद्यपि उपकारी।
जकर अधिक सेवक छथि जानू तसिलदार, पटवारी ॥

हिलि मिलि करथि मैथिली हिन्दी जतै निरन्तर वास।
उन्नति हेतु तकर मैथिली गण, किछु नहि करथि प्रयास ॥

कहू तखन साहित्यक सेवा भै सकैछ की कहने।
सब सौं पाछाँ छी तौँ, उन्नति ह्वैत बिना दुख सहने ॥

सकल उन्नतिक हेतु प्रथम अछि, भाषोन्नति ई जानू।
मिथिला-भाषा-साहित्यक रस, सबहि हृदय में आनू ॥

छल उत्साह बहुत पहिनहि सौं मिथिला-पत्र चलावी।
मिथिला साहित्यक सेवा मे अनुदिन चित्त लगावी ॥

किन्तु विविध संसार-जाल में फँसि न कैल उद्योग।
अथवा कहि सकैत छी नहि छल पहुँचल तकर सुयोग ॥

अस्तु, आब हम सकल स्वार्थ तजि करब विशेष प्रयत्न।
मिथिलाक रक्षा हेतु अनेको छथि मैथिल-कुल रत्न ॥

Scanned by CamScanner

जनिक कृपाबल पावि पत्रिका करत सुलेख प्रचार।
जकर पठन पाठन सौं देशक ह्वैत परम उपकार ।।[1]

एहि पत्रक साज-सज्जा आधुनिक बनाओल गेल छल। 'आर्ट पेपर'पर आवरण पृष्ठ छपैत छलैक जाहिपर भारतवर्षक नक्शापर भारत माताक चित्र। भारतमाता एक हाथ मिथिला माताक माथपर रखने छथिन जे दोसर अंक सँ आरम्भ कयल गेल जकर निर्वाह अनेक अंकमे कयल गेल अछि। अन्य भाषाक पत्र-पत्रिकाक समकक्ष 'मेक-अप', 'गेट-अप' बनयबाक पूर्ण प्रयास कयल गेल अछि जे एहिसँ पूर्व प्रकाशित कोनो पत्रमे दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। मिथिलेशक एवं हुनक परिवारक स्तुति ओ गुण वर्णन एहू पत्रमे पूर्ण रूपेँ कयल जाइत छल जकर एकमात्र उद्देश्य छल जे राज-दरभङ्गाक दयादृष्टि एहि पर पड़य, किन्तु से कहिओ भ' नहि सकल। अर्थाभावक कारणेँ जेना आन पत्र सबकेँ बाध्य भ' बन्द भ' जाय पड़लैक से स्थिति एकर नहि छलैक। ई व्यापारिक दृष्टि सँ प्रकाशित होअय लागल छल, परन्तु व्यापारमे घाटा उठा क' नहि कयल जा सकैत छल तकर सर्वथा अभावे रहल। प्रकाशन सँ पूर्व प० कुशेश्वर कुमर जी आश्वासन देने छलथिन जे एक हजार ग्राहक हम स्वयं घूमि क' बना लेब। ताहिमे विफल भेला उत्तर एकरा नीतिपर दोषारोपण कयलथिन। तखन नीति निर्धारण ओ कोन प्रकारक रचनाक प्रकाशन हो से सब अधिकार हिनके द' देल गेलनि, परन्तु एहि जड़ समाजक सहयोग नहि भेटि सकलनि। एहि तथ्यक उद्घाटन निम्नांकित उद्धरणसँ होइत अछि। बाबू भोलालाल दास लिखने छथि—

"सहयोगी सम्पादक श्री कुमरजी आरंभमे ई प्रतिज्ञा कैने छलाह जे घूमिकै एक हजार ग्राहक देताह। श्रीयुत कुमरजीक उत्तर ई भेलैन्हजे पत्रक नीति अधिक गर्म अछि यतः लोक एकर ग्राहक हैब स्वीकार नहि करैछ। ताहिपर हमरा १ वर्षक हेतु अवकाश ग्रहण करबाक विचार देल गेल जकरा हम स्वीकारो कैल किन्तु स्वयं श्री कुमरजी ताहिमे सहमत नहि भेलाह। अंतमे समितिक परामर्शानुसार ई निश्चित भेल जे आब अहि वर्षमे जे किछु समय बचि गेल अछि ताहिमे श्री कुमरजी अपना रुचियें सम्पादन

1, मिथिला, वर्ष १, अंक १ पृ० ८-१०।

Scanned by CamScanner

करथि — जे किछु मैटर देथि तकर सम्पूर्ण अधिकार हुनकहि देल जाइन्ह तथा ओ घूमिकै ग्राहकक संख्या पूर्ति करथि। अहि नियमक अनुसार वर्त्तमान अङ्क सौं कार्यारम्भ भेल अछि ओ हुनू सम्पादक नियमबद्ध भेल छी अतः कोनो लेखादि छापबाक अथवा नहि छापबाक जिनका जे किछु लिखा पढ़ी करबाक होन्हि से स्वयं कुमरजी सौं करथि।[1]

किन्तु एहनो व्यवस्था कयला उत्तर कुमरजीकें ग्राहक बनयबामे सफलता नहि भेटलनि। वस्तुतः नीतिक कारणें ग्राहक नहि होयब कोनो समस्या नहि छल, मुख्य समस्या छल मैथिलीभाषीक अपन मातृभाषाक प्रति उदासीनता, अवहेलना ओ हीन भावना, पचास वर्ष अर्थात् आधा शताब्द बीति गेल, परन्तु आइओ एकमात्र पत्र 'मिथिला मिहिर'क ग्राहकक संख्या तेहने अछि जे प्रबन्धकक कृपेपर चलि रहल अछि, ग्राहकक संख्या-बलपर नहि। एहि जागरणक बाद, जखन कि प्रतिवर्ष महानगर सबमे विद्यापतिपर्वक नामपर नाच-गान, मनोरंजनमे लाख-लाख खर्च कयल जाइत अछि, जखन कि सहस्र जीविकोपार्जन कयनिहार एहि नगर सबमे पसरल छथि, जखन कि एक नहि, अनेक विश्वविद्यालयमे मैथिली मान्यता प्राप्त कयने अछि तखन मैथिली पत्र-पत्रिकाक ई दुर्दशा !!!

'मिथिला'क ग्राहकक की स्थिति छलैक से निम्नाङ्कित उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि। सम्पादक दास लिखैत छथि—

"जँ मिथिलाक धन सम्पन्न व्यक्ति १६ आना दोषी छथि तँ विद्वान लोकनि ३२ आना दोषी छथि। ई लिखैत बहुत दुख होइछ जे अनेकानेक मैथिल वकील, मुखतार, एम.ए., बी.ए., संस्कृताचार्य लोकनि एहि समाचार-पत्रक युगमे तीन टाका एहि पाछाँ व्यय करब बनक अपव्यय बूझै छथि ! स्वतः आडर देबाक कोन कथा—प्रार्थित भेलापर पराङ्मुख होइ छथि वा कानिकें गाहक बनैछथि ! अंगरेजीक विद्वानलोकनि तँ भला हिन्दी अंगरेजीयहु सँ आवश्यकताक पूर्ति कैं सकै छथि किन्तु संस्कृतक विद्वानकें मातृभाषाक अवहेलना अधिके हानिकारक होइ छैन्ह। परिणाम ई होइछ जे अनेक शिक्षित व्यक्ति एखनधरि कौंसिल, डिष्ट्रिक्टबोर्ड, लोकलबोर्ड म्युनिसपलबोर्ड आदि कोन संस्था थीक, चुनाव अथवा भोट कोन वस्तु थीक, देश तथा प्रान्त

१. मिथिला, वर्ष १, अङ्क १०, पृ० ४४४।

कोन दिश जाय रहल अछि—हमरा लोकनिक दीनावस्थाक वास्तविक कारण की थीक आदि साधारणसँ साधारण विषय नहि जनै छथि!

एहि विभीषिका केँ हम कहियाधरि सह्य करैत रहब? यदि महाराजाधिराज मिथिलेशक ध्यान एहि दिशि आकृष्ट नहि होइन्ह तँ की देशो तेहने कूप मंडक भै जाएत? की एही प्रकारेँ मिथिला भारतवर्षक राष्ट्र निर्माण मे भाग लेत? बहुत अतिकाल भेल। कहाँ तँ एक कोटि मिथिला-भाषाभाषी आओर कहाँ 'मिथिला'क एको हजार ग्राहक नहि! की एतबाक दिनमे ई देश तथा समाजक किछु सेवा नहिं कैलक अछि? की एकरा सहयोग सँ देशक किछु उपकारक संभावना नहि? मिथिलाक ग्राहक संख्ये एकर उत्तर देत।"[1]

निष्कर्ष इएह बहराइत अछि जे ई समाज सबदिनसँ मातृभाषाक अवहेलना करैत आयल अछि। पूर्वमे कहल गेल अछि जे मैथिलीक पत्र-पत्रिका बहुतो दिन धरि एकवर्गीय रहल जकर कारण मैथिलमहासभाक संकुचित दृष्टिकोण रहल अछि। मै. म. सभाक नीति निर्धारण महाराज दरभंगा द्वारा होइत रहल, तेँ अप्रत्यक्ष रूपसँ एकर दोषी राज दरभंगाकेँ मानल जायत। एहि प्रसङ्ग हम म.म. प० मुरलीधर झाक विचार उद्धृत करैत छी। ओ लिखने छथि—

"जाहि देशमे अति प्राचीन समय सँ अद्यावधि अमृतवाणी संस्कृत बहि रहल अछि से देश शिक्षित नहि? क्षत्रिय राज्यक समयमे गौतम याज्ञवल्क्यादि, यवनराज्यकालमे चण्डेश्वर, विद्यापति, उदयन, पक्षधर, वाचस्पति, शङ्कर आदि धुरन्धर 'पण्डित राज सबहिक ग्रन्थावली मुद्रित ओ अमुद्रित अनेकानेक उपस्थित अछि, मध्यमे एकटा इहो जे केवल संस्कृतक प्राबल्यहिसँ श्री५मान् महाराजाधिराजक राज्य थिक की नहि? तँ की हेतु जे आइ अस्मदादि दरभङ्गा राज्य, बनैली राज्य, अनेक महामहोपाध्याय, जाहिमे मध्यमणि डाक्टर युगल पदवी भूषित म. म. श्रीयुत गङ्गानाथ झा, अनेक एमे, बी.ए, डिप्युटी कलेक्टर, मुनसिफ, डिप्युटी सुपरिण्टेण्ट, पुलिस इन्सपेक्टर, वकील, मुख्तार, रायबहादुर, रायसाहेब, प्रोफेसर, हेडमास्टर, स्टेशन मास्टर, साधु-सन्त, बड़े-बड़े महन्थ, जमीन्दार इत्यादि शिक्षित लोकक समक्षमे "मैथिली-भाषा" शिक्षित भाषा नहि!!! कारण एकरा युनिवर्सिटीमे स्थान नहि!!!

---

१. मिथिला, वर्ष १, अंक ७, पृ० २७७।

प्रिय पाठकगण ! क्षमा कए देखल जाए ओ अवसर पड़ने हमर र ो कैल जाए। हमरा लोकनिक ई दुर्दशा किये भेल ? जाधरि मिथिलामे एम्हर महाराज महेश्वरसिंह महोदारक राज्य तथा ओम्हर फड़किया, बनैली इत्यादिक राज्य प्रायः मैथिलहिक प्रधानतामे छल ता एतेक भाषाँ परिभाषाक दिशि लोक कैँ ध्यान नहि, लोकहुक गमनागमन ततेक नहि, पण्डित मण्डलीओ सुखी छल, अन्न प्रशस्त छलैक, सुलभ मूल्येंहि लोकक सब आवश्यकता सम्पन्न भए जाइत छलैक। जखन उक्त महाराज परलोक वासी भेलाह कि ऐलाह 'कोर्ट आव् वार्ड्स' महाराजकुमार युगल शिक्षा दिशि गेलाह, प्रजागण दीक्षादिशि ओ पण्डितमण्डली भिक्षादिशि, एतावता १२-१३ वर्षक मध्यहि दरभङ्गा राज्यक तेहन परिवर्तन भेल जे मैथिलक प्रधानता लक्ष्मी हटि धनागारमे नुकैलिहि।

जखन पुनः महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह परमोदारचरित राजगद्दीकें सुशोभित कैल तखन थोड़ेक देशी पण्डितगण, किछु पहलवान, थोड़ेक मोसाहेब हिनका सबहिंक प्रवेश तँ भेल किन्तु ततेक अंग्रेजी कानून जल सिंचल जाए लागल जे पिच्छड़मे सब दरबारीकें पैर बचाए २ चलए पड़न्हि।''

महामहोपाध्यायजी मैथिलीक व्यापकता ओ व्यापक क्षेत्र दिस ध्यानाकर्षण करैत लिखने छथि—

''एखनहु बङ्गालमे जे संस्कृतक विद्वान् छथि ओ लोकनि निश्छल रूपैँ मानैत छथि जे न्याय दर्शन बङ्गालमे मिथिलासँ प्राप्त भेल तथा अक्षर तँ अत्रिकले, बङ्ग भाषा पर्यन्तमे अधिकांश मिथिला भाषाक संमिश्रण तावता मिथिला भाषाक प्रधान शाखा बङ्गभाषा निश्चय, एहि विषयकैँ कलकत्तासँ प्रकाशित बङ्गभाषाक मासिक पत्र 'भारतवर्ष' प्रौढ़ साक्षी। उत्तर भागमे नेवाड़ी जे गोर्खाली कए संप्रति प्रसिद्ध अछि, मिथिला भाषाहिक दोसर शाखा थिक, नेवाड़ी अक्षर पर्यन्त मैथिलाक्षरे बुझबाक थिक। मिथिला-भाषाहिक क्षुद्रशाखा जे मोजफ्फपुरसँ पश्चिम बेतिया धरि मैथिला-तिरिक्त लोकनि बजैत छथि। कहब जे एहन प्राचीन मैथिली-भाषाक उत्पत्ति कतएसँ भेल ? देववाणी (संस्कृत) सँ अतिरिक्त भारतवर्षमे ६ भाषा, गौड़ी, मागधी, वैदर्भी, शौरसेनी, महाराष्ट्री ओ पैशाची। एहि छबोमे प्रथम तीनिटा गौड़ी, मागधी ओ वैदर्भी पञ्चगौड़मे तथा अपर तीनिटा पञ्चद्राविड़

मे। ताहूमे गौड़ीक आधिक्य बङ्गभाषामे अछि। मिथिला-भाषामे गौड़ी ओ मागधी एहि दुनूक अधिक, बहुत थोड़ वैदर्भीक। ई विषय हेमचन्द्र कृत 'प्राकृत बाल भाषा', वररुचि कृत 'प्राकृत प्रकाश' सँ बुझल जाए सकैछ। मध्यमे यवन राज्यक प्राबल्ये याविनीओ बहुधा घोसिआएल, तखन यवनक अत्याचारसँ कलुषित पण्डितगण साधारण जनतामे एहन प्रचार कैलन्हि जे 'न वदेद्याविनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि' किन्तु कतेको अपन देशीय ताहू दिन अरबी फारसी जनैत छलाह तैं हुनका लोकनिक द्वारा तत्तद्भाषामे अरबी, फारसीक संमिश्रण अतएव ताहि समयक पण्डित लोकनि ताहि २ स्थानमे संस्कृत घोसिऔलन्हि।

यवनराज्यसँ पूर्व किछु दिन जैन-बौद्धक प्राबल्य पटना इत्यादिमे पूर्णरूपैं चलल, बौद्ध जैनक जे किछु अपन नित्य नियमादि तथा जैनमे कथा पुराणादि छैक सब प्राकृतभाषा (पाली) मे। नाटकादिमे प्राकृतक प्रयोग प्रायः छैके, तैं तकर निषेध नहि कए पूर्व श्लोकक उत्तरार्ध----"हस्तिना पीड्यमानोऽपि न गच्छैज्जैन मन्दिरम्।" ई सब त जे किछु जे तेहन महापुरुष लोकनि विचार कैलन्हि जे परम याज्ञिक विश्वाख्यात मिथिला-देश तिरहुत ओ विदेह नहि कहाए विहार भए गेल!!! एतदर्थ धन्यवाद हमरा लोकनि शास्त्र मर्मज्ञ अपन श्री ५ मान् महाराजाधिराजकें नहि कोना देबन्हि, जाहि करुणागारकें 'मिथिलेश' रुचिकर किन्तु मैथिली भाषाक उन्नतिक हेतु कनेको उत्साह नहि, यदि दैवात् कनेक उन्मुनी होइतहुँ छन्हि तँ तेहन २ राज प्रधान मिथिला-लवण-भक्त हाउ लोकनि छथि जे मैथिली कलकत्ता-युनिवर्सिटीमे सफल मनोरथ परन्तु विहारमे—"दुर-दुर छी छी"। अस्तु। कतेक दिन धरि अत्याचार रहत! हमरहु लोकनि उत्साही नहि छी, तखन की?

मिथिला देशमे बसनिहार दुइए जातिकैं मिथिलोन्नतिक चेष्टा, अनका ककरहु नहि। एकर मुख्य कारण 'मैथिल-महासभा" थिक जे मैथिल ब्राह्मण तथा मैथिल-करणकायस्थ एही दूइकैं लए चलल, अस्तु, जे भेल से भेल, हमरा लोकनिकैं विचार करबाक थिक जे चिरकालसँ मिथिला देशमे बसैत क्षत्रिय लोकनि जे सोनबरसा, बरुआरी, पँचगछिया इत्यादि अनेको स्थलमे वैश्यो लोकनि रहैत छथि, एना जतेक जाति रहैत छथि, प्रायः बहुधा ग्राममे निवास करैत जोलहा, धुनिया, कुजड़ा पर्यन्तकैं मिथिला-भाषा नहि जनने बजने उपाय नहि। जे क्यो सनातन धर्मावलम्बी छथि, हुनक धर्म कर्म

रक्षार्थ मैथिलहिक धर्मशास्त्र, न्यायालयमे "मिथिला-ला" सँ अतिरिक्त हुनका हेतु आन कोन उपाय तावता मिथिलाक उन्नतिक विषयमे प्राय: कोनो जातिकैं विरोध नहि परन्तु हमरहु लोकनि जँ एहिमे लागि पड़ी तखन ने । एही मिथिलामे हमर भूमिहारो भाइ छथि हमरा हुनकहु सबहिसँ कहाँ कोनो विरोध कहिऔ, प्रत्युत अनेक स्थलमे एक ग्राम मध्य निवास कए वहुत व्यवहारक सामञ्जस्ये देखना अबैछ, तैं मिथिलोन्नतिमे हुनकहु लोकनिके बाधा नहि । जँ एकर विरोधी वा बाधक कही तँ छपरा, आरा आदिक जे मैथिलेतर शिक्षित लोक छथि, हुनका लोकनिकैं व्यर्थ मैथिल तथा मिथिला-देश सँ ईर्ष्यादि । जँ भाषाक उन्नति बाधक बुझी तँ येह महोदयगण थिकाह, एकर यत्न करैक थिक ।

विशेषत: प्रार्थनीय हमर मैथिल बन्धुगण ओ थिकाह जे संस्कृत, अङ्गरेजी वा हिन्दी प्रभृति कोनहु भाषामे पाटव पाबि मैथिलीक दिशि कनडेरिओ नहिं दैत छथि, एहि उपेक्षा सँ मैथिलीक बड़ हानि होइछ तैं उचित थिक जे एहन उदासीनगण कैं ताकि ताहि रुपैं हुनका लोकनिक आराधन करी जाहि सँ ओ लोकनि प्रसन्न चित्त भै मैथिली दिशि आर्द्र-दृष्टि देथि ।

मैथिलीक बुझनिहार लोक बेतिया सँ पूर्नियांक पूर्व सीमा धरि, सोनपुर सँ मोरङ धरि, वीरगञ्ज सँ सन्ताल धरि, हम अपना कानैं हजारीबाग धरि छोटका जातिक मुहैं जे ओहि प्रान्तक प्राचीनवासी अछि, ओकरा सबहिक मुहैं 'मैथिली' सुनलहुँ अछि किन्तु कतहु-कतहु विकृत, एना कहि सकैत छी जे जँ शान्तभाव सँ एहि दिशि ध्यान दए तत्पर होइ तँ मैथिलीक व्यापकता बहुदूरवर्त्तिनी अछि । हँ, कोट, बूट, कमीज ओ छड़ीक झोंकमे परम प्रतिष्ठित मैथिल ब्राह्मणो जे मैथिलीक अवहेला करैत छथि ई वस्तु भिन्न थिक । इहो एक बबुआनी फैशन !!!

प्रिय पत्र-निरीक्षक महोदय ! "चलू, हटू, छाड़ू जाएब हम बङ्गला.... नाह न देखथि ओम्हरहि रङ्गला" इत्यादि भविष्यवाणी सत्य भेल ? सबहि महोदय जानि राखू जे कोनो श्रीमानक केवल किछु आर्थिके कृपासँ मिथिला भाषाक कल्याण नहि भै सकैछ । यद्यपि आर्थिको साहाय्यक आवश्यकता हम अनिवार्य बुझै छी तथापि यावत देशक समस्त जनता अपना मातृभाषाक

हेतु किछु कष्ट नहि उठाओत—यावत समस्त मिथिला-भाषा-भाषी लोकनि मिथिला भाषाकेँ अपन मातृभाषा बूझि उचित स्थान देऐबाक उद्योग नहि करताह, तावत हम श्री ५ मानहिक दोष कोना दिऔन्ह ? एतवा धरि कहब आवश्यक जे एहि आयोजन मे हुनके भाग विशेष छलैन्ह परन्तु ताहिमे अत्यन्त अवहेला देखि संतप्त होम पड़ैछ। अस्तु—"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कथं चन" एहि गीता वाक्यकेँ हृदय राखि अपन भाषा, वेष ओ भावक हेतु हमरा सबहि सन्नद्ध भए कार्यमे लागि जाइ—हमरा लोकनिक मनोरथ वेह 'मिथिला' एक दिन सफल कए समस्त जगतकेँ देखाए देतिहि, अवश्य, अवश्य, अवश्य, इति शुभम्।"[1]

इतिहासकारलोकनिक ई कथन जे एहि पत्रमे आरम्भमे साहित्यक लेख छपैत छल, पछाति सामाजिको विषय छपय लागल अनुमान अथवा अल्प सूचनापर आधारित अछि। ई पत्र पहिले अङ्कसँ प्रगतिशील रूपमे प्रकाशित होअय लागल। पहिले अङ्कमे 'व्यंग्य-चित्र'क सर्वप्रथम प्रकाशन एही पत्रमे भेल अछि "सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक"।[2]

स्त्री-शिक्षा ओ पर्दा प्रथा एहि दुनू बिन्दुपर 'मिथिला'क स्वर बड़ मुखर रहलैक। एहि पत्रक सबसँ पैघ अवदान जे मैथिली भाषाकेँ प्राप्त भेलैक से थिकाह व्यंग्य सम्राट् प्रो० श्री हरिमोहन झाजी। एहि आन्दोलनकेँ हिनके लेखनीसँ बल भेटलैक। 'मिथिला'क माध्यमसँ जे नवीन लेखक मैथिली क्षेत्रमे अवतीर्ण भेलाह ताहिमे आदरणीय श्री हरिमोहन बाबू सबसँ अधिक लिखलनि आ पुलकित लाल दास 'मधुर' जे 'श्री मैथिली'क प्रसङ्ग कहने छथि जे अन्य भाषा भाषीकेँ मैथिली पढ़बाक रुचि उत्पन्न कयलक से सर्वथा सत्य 'मिथिला'क प्रसङ्ग होइत अछि। 'कन्यादान' सदृश लोकप्रिय ओ रुचिवर्द्धक उपन्यास एहीमे धाराबाही प्रकाशित होइत छल। समाजक रूढ़िपर कठोर प्रहार आरंभेसँ कयल जाय लागल।

'मोद' आधुनिक स्त्री शिक्षाक विरोधी छल। एहि बिन्दुपर एहि पत्रक नीति सर्वथा प्रतिकूल छलैक। अन्य अनेक बिन्दुपर 'मोद'क नीतिक अनुसरण

१. मिथिला, वर्ष १, अङ्क १, पृ० ११।
२. तत्रैव, पृ० ३७।

करितो एहि बिन्दु पर कोनो प्रकारक समझौता करबाक हेतु ई प्रस्तुत नहि छल। 'मिथिला' संसारमे ओ देशमे होइत परिवर्त्तनक प्रति साकांक्ष छल। आधुनिकताक बिड़रो उठि चुकल छलैक, समाजक सम्पूर्ण प्राचीन मान्यता बदलि रहल छलैक; धर्मक प्रति अनास्था, धनक प्रति आसक्ति बढ़ि रहल छलैक; वर्ण व्यवस्था भखरि रहल छलैक; स्वदेशी ओ अछूतोद्धार-आन्दोलन रंग पकड़ि चुकल छलैक आ राजनीतिक मंचपर महात्मा गान्धीक नेतृत्वमे राष्ट्रिय चेतना जागि रहल छलैक। प्राचीन पण्डितलोकनि एहि परिवर्त्तनकें श्रेयस्कर नहि बूझि रोकबाक चेष्टामे छलाह जे सम्भव नहि छलैक। एहि प्रसङ्ग म. म. प० मुरलीधर झाक एक पत्र 'मिथिला'मे प्रकाशित छनि जकरा उद्धृत करब आवश्यक अछि। प्रायः म. म. जीक ई अन्तिमे पत्र छल होयतनि। अगिले मासमे हुनक मृत्युक समाचार भेटैत अछि। ओ लिखने छथि—

......प्रिय संपादक महोदय ! तथा साहित्यालंकार महाशय ! धैर्य राखि तेहन लेख देल जाए जाहिसँ ककरहु मनमे दुःख नहि होइक, ताहि ठाम समस्त देश, प्रतिग्राम ओ प्रति गृहकें दुर्वचन सँ अनादर करब केहन भेल अछि ! आइ कालिह बहुतो महोदय 'पर्दा-प्रथा'क उठैबाक पक्षपाती छथि किन्तु नग्न भए जाइ ई अभिप्राय प्रायः नहि होएतन्हि तखन 'हमरा पतनक कारण' शीर्षक लेखमे कतेको वाक्य हमरा उचित नहि बुझना जाइछ। हमरा जनैत अधःपतनक मुख्य कारण—अविद्या, लोभ, विलासिता, परस्पर द्वेष, कुसंस्कार ओ अहंकार। जा धरि मिथिलामे ज्ञान विद्या निपुण कन्द शाकादि आहार कैं कृश, कौपीनसँ भूषित राग-द्वेष-शून्य ब्राह्मण्य संस्कार सम्पन्न निरहंकारी अनेक मनुष्य ग्राम ग्राममे विद्यमान छलाह ताहि समयमे मिथिला आदर्श छलिहि। ई क्रम म. म. प० स्वनामधन्य भवनाथ (अयाची) मिश्र धरि छल ततःपर म म. पं० शंकर मिश्र (उक्त अयाची मिश्रक पुत्र) किछु लोभ देवक अर्च्चन होबै लागल। ई अर्चन चमरदिनाय जकाँ पसरैत पसरैत जखन आब समस्त देशकें अपन वशमे कए लेलक तखन आइ हमरा लोकनि विक्षिप्त भए आँय-बाँय-हाँय जे बाजी उचिते थिक तावता ई उन्नति मार्गक दर्शक नहि बुझल जाएत।

पुरुषतामे ताहि रूपक विद्या, धैर्य, साहस, कालज्ञताक संचार हो जाहि सँ पौरुष पाबि देश विख्यात हो ओ ततः पर शनैः-शनैः देश उन्नति मार्गकें

पकड़त । अबला जनक उन्नतिसँ प्रबल देश नहिँ भए सकइछ, किछु दिन धरि बाम भागहुक आदर पूर्ण रूपैँ होइत छल जे नहि देखनो जाइछ, आब ओहो प्रथा अस्ते भेल सन, जे मनुष्य होयत स्त्री जातिक अनादर नहिँ कए सकइछ, पुच्छ शृंगहीन मनुस्याभासक जाहिसँ न्यूनता हो तादृश उपाय करब उचित थिक ओ तेहन 'बिल पास' भेल अछि जे नाना नृत्यक उत्सव अपने सबहि देखि-देखि कृत कृत्य होइत जायब ।

प्रिय पण्डितजी ! अपने विचार कएल जाए जे केहनो प्रबल शिक्षाक प्रचार होएत तैओ कतहु-कतहु छुटल-फुटल मनुष्याभास रहने तकर आचरण कैं देखि 'मिथिला' कैं दूषित नहिँ कैल जाय, अपनहुँ आब एहने एहन लेख सँ मिथिला कैं चमत्कृत करब ?.........

यदि निकृष्ट वस्तुक दैवात् संपर्क भए जाए तँ ओकरा हटाए पवित्र भए जाइ सैह उचित, ई नहिँ जे ओकरा हाथ सँ छूबि नाक सँ सूँघि अन्तः करण कैं दुषित कए पश्चात् जैह कहल अछि सैह करी, जे भेला सँ एक स्थान में स्पर्श छल जे आब ३ स्थान कैं स्पर्श कए मन कैं घबड़ा देलक । अमेरिका, इङ्गलैण्ड अपना देश कैं जनु एखन बनाबी, एहि हेतु बहुत समयक अपेक्षा अछि, ताहि दिन 'कश्यपाः सकलं जगत्' भए किछु वर्ण व्यवस्था नहिँ रहत, देश, वेष किछु शेष नहिँ रहत । स्पर्शास्पर्श सब उठि जाएत, की एहो 'मिथिला' सँ देशोन्नति क आशा !!! अगुतैने बेटा-बेटी नहिँ, अगुतैने अन्न, फल इत्यादि किछु नहिँ अपन-अपन समय पाबि सब किछु होइत छैक से होएबे करत, तावता एतेक तेज 'स्पीड' सँ जनु हाँकल जाए, एहि में बहुधा (accidence) एक्सिडेन्स क भय क संभावना । पुनः कौखन ।....."[1]

एहि ठाम भविष्यक प्रसंग हिनक आशंका आइ साकार भेल बुझना जाइत अछि । एक समय छल जे कुलाङ्गनाक हेतु 'नाचब' शब्द गारि बूझल जाइत छल, आइ ई कलाक अङ्ग मानि घर-घरमे (जे जेहन प्रगतिशील से ततेक बेसी) समादृत भ' रहल अछि । वेष-भूषामे तँ ततेक परिवर्त्तन आबि गेल अछि जे वेषसँ जातीय संस्कृतिक कोन कथा, पुलिलग आदिक भेद करब कठिन भेल जा रहल अछि । वर्ण व्यवस्थाक तँ चर्चे नहि । म. म. जी सदृश ज्योतिर्विद्क भविष्यवाणी सत्य होयब उचिते छल ।

---

1. मिथिला, वर्ष १, अंक ७, पृ० ३०८ ।

Scanned by CamScanner

एहि पत्रक उत्तरमे सम्पादक दास जे लिखने छथि तकरो अवलोकन करब आवश्यक अछि। तखने स्थितिक स्पष्ट चित्र समक्ष आबि सकैछ। दासजी 'मिथिला'क नीतिक प्रसङ्ग पुनः स्पष्टीकरण दैत लिखने छथि—

"...........महामहोपाध्यायजी सब प्रकारें हमरा लोकनिक शिक्षा गुरु थिकाह। ओ 'मिथिला मोद' क द्वारा १५-२० वर्ष धरि मैथिल-जाति एवं मैथिलीक अपूर्व सेवा कैने छथि। हुनके लोकनिक प्रशस्त कैल मार्ग पर हम सब चलनिहार छी। एहू पत्रक ऊपर हुनक जे सदिच्छा एवं आशीर्वाद छैन्ह से हमरा लोकनि क हेतु अमोघ अछि किन्तु सिद्धान्तक भेद गुरु शिष्यहु में रहब असंभव नहिँ अतः किछु विनय ओहि प्रसगें अनुचित नहिँ हैत। महामहोपाध्यायजी लिखै छथि जे "हमरा पतनक कारण" शीर्षक सम्पादकीय विचार में कतौंक विषय उचित नहिँ अछि। यद्यपि कोनो अनुचित बातक स्पष्ट उल्लेख नहिँ कैने छथि तथा हमरा उत्तर देब आवश्यक नहिँ तथापि ई कहि देब व्यर्थ नहिँ हैत जे उक्त लेख में कोनो एक्सिडेंटकारी स्पीड नहिं अछि। वर्ग व्यवस्था क उन्नति सँ दलित भारतीय आर्यगण उन्नतिक चरम सीमा पर पहुँचलाह तथा एकरे विनाश सँ दलित भेलाह—ई बात प्रत्येक इतिहासज्ञ कें प्रत्यक्ष अछि। अत वर्ण व्यवस्था रहब नितान्त आवश्यक—किन्तु महामहोपध्याय स्वर्गीय अयाची मिश्र सन निर्लोभ शाक-मूलाहारी कौपीनधारी ब्राह्मणरत्नक मिथिला मे सर्वथा अभाव भेने-एकर प्रतिकूल समस्त ब्राह्मण समाज जें सरस्वतीक अपेक्षा लक्ष्मीक विशेष आदर भक्ति भेने—अंगरेजी शिक्षित युवक लोकनिक ई कहब आँय बाँय नहिँ जे जाति व्यवस्था आब एहि रूप में कोना रहि सकैछ ?

यदि ई लिखल जाय जे ब्राह्मणकैं केवल वेदाध्ययन, संध्या-गायत्री, यप-तप (?) हवन-यज्ञादिये करक चाहियैन्ह—वकालत मुखतारी नहिँ, महाजनी-जमीन्दारी नहिँ, खेती-व्यापारी नहिँ, नौकरी-रोजगार नहिँ, डाक्टरी-डिप्टीगिरी नहिँ, तौँ ई कथा के सुनत ? यदि शूद्र कैं ई कहल जान्हि जे अहाँ कैं केवल सेवा वृत्ति धारण करबाक थिक तौँ ओ सहसा कहि उठताह जे ई वृत्ति तौँ आब सब गोटे अपनाय लेलन्हि हमहि किये एहि में पड़ल रहब ? वस्तुतः शूद्रक कुल वृत्ति—यथा जोलहा, धुनियाँ, कसेरा, ठठेर, लहेर, तेली, बारी, लोहार आदि कर्म-कारक वृत्ति कैं विदेशी

Scanned by CamScanner

शासन एवं व्यापार नष्ट कै देने अछि। यदि ओ लोकनि अपना जीविका सँ जीवन निर्वाह करहु चाहत तोँ नहिँ भै सकतैक। तखन वर्ण व्यवस्थाक प्राचीन क्रम कोन रीतियैँ स्थिर रहौ ? विचार पूर्वक देखला उत्तर बूझि पड़त जे प्राचीन वर्ण व्यवस्था सर्वथा जर्जर एवं निःप्राण भै गेल अछि। एहि अवनतिक कारण चाहे जे किछु हो—किन्तु हिन्दू जातिक उत्थान आब कोना हैत, ई विषय चिन्तनीय थिक। अन्यान्य जाति वा प्रान्तक लोक एहि समस्याक ऊपर गहन विचार कै कऽ उदार विचारक पक्षपाती भेल अछि किन्तु मिथिला एखन मानू वैदिके युग मेँ पादन्यास कै रहल अछि। वर्ण व्यवस्थाक जे जीर्ण शीर्ण आवरण बचि गेल अछि—तकहरि सौँ मिथिला कैँ अपन प्राण रक्षा संगत बूझि पड़ै छैन्हि। यद्यपि क्रिया तदनुकूल नहिँ तथापि विश्वास तदनुकूले छैन्हि—जे वर्त्तमान युगक हेतु सर्वथा अनुपयुक्त थिक। एहना स्थितिमेँ अपना सँ नीच वर्णक प्रति सहानुभूति राखब—हुनका अपना समाज मेँ उचित मनुष्योचित (१) अधिकार दै अपनाय राखब केहन आवश्यक थिक कहबाक प्रयोजन नहिँ।.........

उच्च कुलाभिमानी हिन्दू-समाज मेँ स्त्रीगणक अवस्था सम्प्रति की छैन्हि एकरे किछु आलोचना पं० श्री हरिमोहन झा अपना लेख मध्य कैने छलाह। पाठक वृन्द स्वयं सोचि सकै छथि जे हुनक लिखब सत्य वा मिथ्या। हमरा बुझने हिन्दू-जातिक अवनति स्त्रीगणहुक अवनति पर ओतबे निर्भर अछि जतबा नीच जातिक अवहेलना पर। हमरा बहुत दिनक मनन सौँ ई निश्चय भेल अछि जे हिन्दू जातिक ई दूनू अंग विशेष अनादृत अछि-तैँ एकर ई दुरवस्था छैक। अतः उक्त लेख मेँ हम केवल एही दूनू बात पर पाठक लोकनिक ध्यान आकर्षित कैने छिऐन्ह। हमर ई मंतव्य नहिँ जे अवनतिक कारण एतबे अछि। महामहोपाध्यायक ई उक्ति हमरा बुझने कदापि युक्ति संगत नहिँ जे अबला जातिक उन्नति सँ देश सबल नहिँ हैत। ई कहब तर्क और धर्म दूनू कैँ ताख पर राखब थिक। क्षेत्र-भूता नारी जातिक उन्नति सँ तदुत्पन्न पुरुष जाति वा सम्पूर्ण मानव जातिक उन्नति नहि हो—ई आश्चर्यक विषय थिक। एहना स्थिति मेँ स्त्री-सुधारक चर्चो मात्र यदि ऐक्सीडेंट कारी बुझना जाय तँ आश्चर्य की ? किन्तु हमर निवेदन एतबे अछि जे हम एहन ऐक्सीडेंट स भयभीत नहि छी। "मिथिला" चलौ अथवा बन्द भै जाओ—हम एहि कठोर सत्यक अवहेला नहिँ कै

Scanned by CamScanner

सकब। जनिका ई भावना होन्हि जे स्त्री जातिक उन्नति सँ पुरुष जातिकैं किछु सम्बन्ध नहि छैन्हि, ओ कृपा कैं "मिथिला" क दर्शनो जनु करथु। "मिथिला" हुनका हेतु नहि चलल छैन्ह।......."[1]

एहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे 'मिथिला' एक दिस मैथिलीक अस्तित्व रक्षाक हेतु सन्नद्ध छल तँ दोसर दिस स्त्री शिक्षाक प्रबल पक्षधर सेहो। ई समाजक हेतु नीक भेल अथवा अधलाह एहि बिन्दुपर वैमत्य भ' सकैत अछि। भौतिकवादी दृष्टि सँ विचार कयनिहार एकर समर्थन करताह। भारतीय परम्पराक समर्थक नहि, कारण आधुनिक शिक्षाक प्रसारसँ जे पारिवारिक जीवनमे वैषम्य आबि रहल अछि, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ई जे अपवर्ग चतुष्टयक प्राप्ति भारतीय जीवनक लक्ष्य छल ताहिमे अर्थ ओ काम मात्र बचि गेल अछि, जाहि कारणे समाजक बीच जे एक सौहार्द ओ सौमनस्य छल तकर तँ लोप भइए गेल, पारिवारिको जीवन टूटि रहल अछि। आध शताब्दमे एतबा भेल अछि, यदि यैह गति बनल रहल तँ आगामी पचीस वर्ष बीतैत-बीतैत दाम्पत्य जीवन सेहो टूटि जायत, जकर आरम्भ भ' चुकल अछि। पति एक ठाम जीविकोपार्जनमे व्यस्त तँ पत्नी दोसर ठाम, एहि प्रकारें नेना भुटकाके मातृ-स्नेह ओ पितृ-स्नेह दुनूसँ वंचित रहि जाय पड़ैत छैक, एहि प्रकारक वैषम्य नागरिक जीवनमे प्रवेश क' चुकल अछि। एहि स्थितिकें नहि पसिन्न कयनिहार एकर समर्थन नहि करताह। परन्तु युगक जे प्रवाह अछि तकर अनुकूले दिशामे 'मिथिला'क नीति ओ चिन्तन छलैक से धरि सर्वथा सत्य अछि।

एहि सब स्थितिकें देखला उत्तर इतिहासकारलोकनिक ई कथन जे पछाति जा क' सामाजिक लेखहुक प्रवेश एहिमे भेल, युक्तिसंगत नहि प्रतीत होइत अछि।

भाषाशैलीक प्रसंग 'मिथिला'क दृष्टिकोण निम्नाङ्कित उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि। सम्पादकीय टिप्पणीमे सम्पादक दास लिखने छथि—

"सम्प्रति मैथिलीमे जे लेख वा कविता अबैछ तकर शैली अनेक देखना जाइछ। शैलीक निर्धारण प्रयोग पर अवलम्बित अछि आओर अनेक स्थल

१. मिथिला, वर्ष १, अंक ८, पृ० ३१५।

Scanned by CamScanner

मे हमरा लोकनिक शैली निर्धारित नहि अछि अतः हमरा लोकनि तातकाल यथासम्भव सभ शैलीकेँ स्थान दै रहल छी जाहिसँ अनेको विद्वानकेँ ई भ्रम भै रहल छैन्हि जे ओ सभ सम्पादकीय अवहेला वा व्याकरणक अशुद्धि थिक। हमर नम्र निवेदन जे सम्प्रति हमरा लोकनि मिथिलाभाषाक अधिकाधिक प्रयोग करी शैली अपनहिं स्थिर भै जाएत।"[1]

उपर्युक्त उद्धरणसँ स्पष्ट अछि जे लेखन शैली (वर्त्तनीक दृष्टिएँ) क प्रसङ्ग कोनो दुराग्रह एहि पत्रकेँ नहिँ छलैक, तथापि लाघवताकेँ ध्यानमे राखि अनेक शब्दक स्वरूपमे संकोच कयल गेल यथा कैल, हैत, आओर, भै आदि शब्दक प्रयोग भेटैत अछि, कतहु लुप्ताकारहुक प्रयोग अछि। 'सकैत' 'पड़ैत' आदिमे 'तकार'क लोप कयल गेल अछि। कतहु 'मैथिल हितसाधन' कतहु 'मोद' ओ कतहु स्वतन्त्रो शैलीक अनुसरण करैत प्रतीत होइत अछि।

'मोद'मे प० यदुनाथ झा 'यदुवर' 'मैथिली साहित्यक दिग्दर्शन' शीर्षक मे ओहि समय धरिक मैथिलीक विभिन्न विधाक पुस्तक सभक परिचय प्रस्तुत कयने छथि। 'मिथिला'मे ओकर अनुगमन करैत साहित्य रत्नाकर मुंसी रघुनन्दन दासजी मैथिली साहित्यक दिग्दर्शन करौने छथि जाहिसँ ओहि समय धरि मैथिली साहित्य कतबा समृद्ध भ' सकल छल तकर पूर्ण परिचय प्राप्त होइत अछि। एतदर्थ 'मिथिला'क नवम अङ्क द्रष्टव्य थिक।

एहिमे अनेक समीक्षात्मक, तुलनात्मक लेख सब प्रकाशित भेल अछि। श्री नरेन्द्र नाथ दास 'विद्यापति ओ चण्डीदास' शीर्षक तुलनात्मक निबन्ध धारावाही रूपेँ पहिले अङ्कसँ लिखय लागल छलाह, मध्य-मध्यमे दू अंककेँ छोड़ि नवम अङ्क धरि अर्थात् सात अंकमे विस्तारसँ प्रकाशित भेल अछि। अन्तिमो किस्तमे 'क्रमशः' छपल अछि, परन्तु नवम अङ्कक बाद नहि भेटैत अछि। हमर अनुमान अछि जे एहीसँ प्रेरित ओ प्रोत्साहित भ' श्री नरेन्द्र बाबू 'विद्यापति काव्यालोक' लिखने होयताह। हुनका मुहेँ सुनल अछि जे पहिने ई अनुपम ग्रन्थ मैथिलीएमे लिखल गेल छल, परन्तु एतेक मोट ग्रन्थक प्रकाशक नहि भेटलाक कारणेँ हिनका एकर हिन्दी रूपान्तर करय पड़लनि आ एही कारणेँ मैथिलीपर किछु वितृष्णा सेहो भ' गेलनि जे एतेक श्रम

---

१. मिथिला, वर्ष १, अंक ५, पृ० २२६।

कयलो उत्तर मैथिलीभाषी समाज एकर उचित आदर नहि कयलक। ओना साहित्य सेवा पितासँ उत्तराधिकारमे प्राप्त भेल छलनि, तेँ यथासमय किछु-किछु लिखैत रहलाह, परन्तु यदि हिनका समाजक दिससँ प्रोत्साहन भेटल रहितनि तँ एहि दिशामे मैथिली साहित्यकेँ पूर्ण समृद्ध कयने रहितथि।

एहि पत्रमे स्व० अच्युतानन्द दत्त द्वारा अनूदित 'महाभारत'क कतिपय अंश, गुणवंत लाल दास द्वारा अनूदित 'दुर्गा सप्तशती'क किछु अंश धारावाही रूपेँ प्रकाशित भेल अछि। पं० छेदी झा 'मधुप' मेघदूतक अनुवाद आरम्भ कयने छलाह। मिथिलाक्षरक पुनरुद्धारक हेतु बहुत पहिनेसँ समाजकेँ उद्‌बोधित कयल जाइत छल, परन्तु तत्परतापूर्वक प्रयास एही कालमे आरम्भ भेल। सर्वविदित अछि जे प० जीवनाथराय मिथिलाक्षराङ्कण समितिक मन्त्रीक रूपमे एहि हेतु पूर्ण तत्पर छलाह। एहि प्रसङ्ग सम्पादकीय टिप्पणीमे लिखल निम्नांकित उद्धरणसँ प्रकाश भेटैत अछि। सम्पादक दास लिखने छथि —

''एहि समितिक एक अधिवेशन १६ मार्च रवि दिन श्रीयुत रायबहादुर श्रीनाथ मिश्रजीक सभापतित्वमे पं० श्री कपिलेश्वर मिश्रजीक ओहि ठाम भेल। समितिक मन्त्री श्रीयुत पं० जीवनाथ राय पछिला अधिवेशनक कार्य्य विवरण पढ़ि सुनौलन्हि। पश्चात् मिथिलाक्षरक फौंट जे प्रस्तुत भेल अछि तकर नमूना देखाओल गेल। बंगालक अनेक अक्षर यथावत लेलहु उत्तर लगभग २०० अक्षर एवं संयुक्ताक्षरक फौँट मैथिलीमे स्वतन्त्रे प्रस्तुत कराओल गेल अछि। समितिक कार्यवाहीक ई सफलता देखि सदस्यगण हर्षित भेलाह। समिति सौँ ई निश्चित भेल जे जखनहि आओर अक्षर प्रस्तुत भै जाएत तखनहि एकर आडर देल जाए आओर आरम्भमे देवाक्षरक साहाय्येँ मैथिली वर्णमालाक प्राचारार्थ समितिक दिश सौं कम सँ कम ५० हजार पुस्तक छपाओल जाय जकरा अल्प मूल्यमे बेचल जाय जाहि सौँ लोक कैँ मैथिली लिपिक सुगमता पूर्वक ज्ञान भै जाय। समितिक एक प्रस्ताव ई हो भेल जे टाइप ऐला पर 'मिथला'क सम्पादक युगल एहि लिपिकैँ अपना पत्रमे यथासंभव समावेश करथि।......''[1]

१. मिथिला, वर्ष १, अंक १०, पृ० ४४४।

Scanned by CamScanner

'मिथिला'क सम्पादकलोकनि एहि प्रस्तावकेँ कार्यान्वित कयलनि। मुख-पृष्ठक मिथिलाक्षरमे ब्लाक तँ 'मिथिलामोद' सेहो बनबौने छल आ फैशन रूपमे आइओ अनेक पोथी, पत्र-पत्रिका तकर अनुसरण क' रहल अछि, परन्तु 'मिथिला' "मिथिलाक्षरक प्रचारोपाय" शीर्षक सम्पूर्ण सम्पादकीय मिथिलाक्षरेमे छपने अछि।[1] एही सम्पादकीयमे एक दससूत्री कार्यक्रम सेहो प्रस्तुत कयल गेल अछि जे निम्नाङ्कित अछि—

१. मिथिलाक्षरांकण-प्रबन्धक समिति द्वारा विद्यापति प्रेस, लहेरियासरायसँ प्रकाशित मैथिली प्रथम पुस्तकक पाठ।

२. समाचारपत्र आओर मासिक पत्रिकाक अंशतः मिथिलाक्षरमे छापब।

३. सामाजिक निमन्त्रण पत्रादिकेँ पूर्ववत् मिथिलाक्षरमे छपायब।

४. बालक बालिकागणक अक्षरारम्भ पूर्ववत् मिथिलाक्षर द्वारा करयबाक निश्चय करब।

५. रसीद-फारक आदि मुद्रित फारममे जमीदार आओर जमीदारीक नामादि मिथिलाक्षरमे छपायब।

६. नित्य व्यवहारक चिट्ठी-पत्री तथा लिफाफ पोष्टकार्ड आदिमे मिथिलाक्षरकेँ स्थान देब।

७. मिथलाक्षर मुद्रित धार्मिक पुस्तक, पद्धति तथा पञ्चाङ्ग प्रभृतिक मूल्य अत्यन्त अल्प कय देब।

८. अमुद्रित धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ तथा पञ्जी पुस्तक मिथिलाक्षरमे छपायब।

९. सामाजिक, धार्मिक एवम् साहित्यिक सभा-समितिक कागत पत्र यथासम्भव मिथिलाक्षरमे छपायब आओर लिखब।

१०. पटना विश्वविद्यालय द्वारा मैथिली भाषा तथा लिपि दुनू स्वीकृत भेला उत्तर मिथिलाक्षरहुमे पाठ्य पुस्तक छपायब।

पुस्तक भण्डार सँ मैथिलीक 'प्रथम पोथी' तथा दुर्गा सप्तशती मिथिलाक्षर मे छपबो कयल, परन्तु समाज तकरो प्रति अपन आवेश, प्रेम प्रदर्शित नहि कयलक। एहू व्यापारमे पुस्तक भण्डारकेँ घाटा उठाब' पड़लैक। बादमे जे टाइप सब छलैक से नष्ट भ्रष्ट भ' गेलैक, मिथिला-क्षरांकण समितिओ ध्वस्त भ' गेल। तहियासँ एकर पुनरुज्जीवनक अनेक

१. वर्ष १, अंक ११, पृ० ४४८।

प्रयास होइत रहल अछि, हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि द्वारा ब्लाक बनवाय एक फार्मक रूपमे बाबू श्रीयुत कृष्णनन्दन सिंहजी छपबौलनि। ग्रन्थालय प्रकाशन द्वारा ब्लाक बनबाय पुस्तकाकारमे तिरहुता वर्णमाला पोथी छापल गेल। 'मिथिला मिहिर'क आवरणक चतुर्थ पृष्ठ पर एहिना ब्लाक बनवाय-बनबाय अनेक पाठ धरि छपैत रहल। डॉ० श्री जयकान्त मिश्र द्वारा मैथिली ककहरा पोथी प्रकाशित कराओल गेल आ सम्प्रति जे शब्दकोष उक्त मिश्रजी द्वारा प्रकाशित भ' रहल अछि ताहि हेतु 'टाइप' बनबाओल गेल अछि। विश्वविद्यालयमे १० अंक पृथक् मिथिलाक्षरक हेतु राखल गेल अछि, परन्तु एखनहु एकर विकास नहि भ' सकल अछि। भविष्यहुमे एकर विकास भ' सकत तकर आशा क्षीणे अछि।

'मिथिला'क व्यवस्थापक ग्राहकक अल्प संख्या देखि झुझुआइत रहलाह आ अधिक दिन धरि घाटा उठा क' पत्र चलबैत रहताह ताहिमे सन्देह रहलाक कारणें सम्पादक युगल चाहैत छलाह जे मैथिल महासभा एहि पत्रकें अपना संरक्षणमे ल' लेअय। एतदर्थ एक प्रस्ताव सेहो राखल गेल छल, परन्तु महासभा ओहि प्रस्तावकें नहि स्वीकार कयलक। एहि प्रसङ्ग जे प्रतिक्रिया भेल से सम्पादकेक शब्दमे देखल जाय—सम्पादक दास लिखने छथि :

'मिथिला'क प्रचारार्थ दरभंगा मैथिल महासभा हमर प्रस्ताव स्वीकृत नहिँ कयलक—ई जानि ''मिथिला''क उदार पाठक लोकनि अवश्य विक्षुब्ध हैताह किन्तु हमरा तकर कोनो कारण नहि देखि पड़ैछ। हम तँ एकर प्रतिकूल यैह बुझै छी जे एहि सँ ''मिथिला''क उपकारे भेल अछि, अपकार नहिँ, कारण जे मिथिला किछु मैथिल ब्राह्मण अथवा कायस्थक सम्पत्ति नहिँ थीक जेना महासभा थीक। ई समस्त मिथिला भाषाभाषी जनताक सम्पत्ति थीक और उक्त प्रस्तावक स्वीकृत भेलासँ अन्यान्य जातिमे ओ भ्रम अवश्य होइत। अस्तु, एहिठाम एक दू भ्रमक निराकरण करब आवश्यक अछि। हम उक्त प्रस्ताव यथार्थ पूछी तँ एहि आशय सँ उपस्थित नहि कयने छलहुँ जे ''मिथिला'' केवल एहि जाति द्वैक सम्पत्ति थीक। एकर प्रतिकूल हम तँ ''मिथिला'' कैं महासभाक मुख पत्र बनाएब स्वयं अस्वीकार कैल—नीति बदलबाक कोन कथा ? किन्तु प्रस्ताव आनबाक एक मात्र कारण यैह छल जे एहि पत्र सँ हमर उद्देश्य मिथिला-भाषाक प्रचार एवं मिथिलाक्षरक उद्धार अछि और महासभो आइ बीस वर्ष सँ यैह प्रस्ताव

Scanned by CamScanner

स्वीकृत करैत आएल अछि। दोसर ई जे यद्यपि मिथिला भाषा तथा लिपि सम्पूर्ण मिथिला वासीक हेतु लाभप्रद अछि तथापि यैह दू जाति एकरा रक्षा एवं प्रचारमे सब दिन सँ अग्रसर अछि। मैथिली साहित्य में एही दुनू जातिक विशेष भाग छैक और एहि भाषा तथा लिपिक अवहेला सँ एही दुनू जातिक विशेष अनिष्ट छैक। अद्यापि जे कोनो पत्र-पत्रिका चलल अछि ताहू मे एही दुनू समुदायक हानि-लाभपर विशेष विचार होइत आएल अछि। "मिथिला" पत्रक प्रकाशन हमरा लोकनि कोन परिस्थितिमें कैने छी तकर पूर्ण विवरण आरम्भहि मे दय आएल छी। केवल भाषा तथा लिपिक प्रचारे हमरा लोकनिक मुख्य उद्देश्य अछि और वर्षाभ्यन्तर में "मिथिला" जे किछु काज एहि विषय में कयलक से पाठक पाठिकाक समक्ष अछि। जाहि स्थितिमें एको पत्र मिथिला भाषा में नहि चलि रहल छल, जखन मिथिलाक्षर टाइपक अस्तित्वो नहिं छल तखन "मिथिला" जन्म लय एहि दुनू वस्तु कैं अपनौलक, साहित्यक प्रवाह जारी रखलक और मिथिला-क्षरक टाइपक प्रथमारम्भे दर्शन करौलक अतः हम केवल एही दू वस्तुक सम्बन्ध सँ एहि जाति द्वैक प्रधान संस्था मैथिल-महासभामें उक्त प्रस्ताव कैं उपस्थित कैल। यदि मैथिल जाति आइ जीवित रहैत, ओकरा में अपना भाषा और लिपि क प्रति किछु प्रेम रहितैक तँ अन्यान्य विचार कैं कात राखि केवल एही कारणें नाचि उठैत और एकरा प्रचार में अपन समस्त शक्ति लगा दैत किन्तु मृत जाति में जातीय सेवाक जे पुरस्कार हैबाक चाही से तँ अवश्य भेल चाहै! मिथिला क जे सेवा कोनो मैथिलसँ पार नहि लगै छैन्ह, से विद्यापति प्रेस क अधिपति करथि ई मिथिलाक हेतु लाघव तथा गौरव क बात थीक किन्तु मैथिल जाति एहि अयशक मोचन 'मिथिला' कैं स्थायी बनाय कहाँ सँ करत, केवल पाँच-छौ सौ ग्राहक बनाय लगभग १०००/ टाकाक घटी पुराय व्यवस्थापक एवं सम्पादक कैं उत्साहित कहाँ सँ करत, एकरा सुधारबाक अथवा और अधिक सुन्दर बनैबाक प्रयास कहाँ सँ करत—जे और गरदनि मोकबा पर वृत्त? किन्तु एहि सँ "मिथिला" क लाघव नहि, लाघव मैथिलैक थिक महासभा और मैथिल जातिक।[१]........

प्रायः दासजीक ई अन्तिमे सम्पादकीय छलनि। एहि मे ओ सम्पूर्ण आक्रोश प्रकट कयने छथि। हमर व्यक्तिगत मत अछि जे 'मिथिला' मे

---

१. मिथिला, वर्ष १, अंक १२, पृ० ४७४-७५।

जतेक सम्पादकीय विचार प्रकाशित भेल अछि, ओहि सबकें एकठाम संकलित कयल जाय तँ तत्कालीन मिथिलाक सम्पूर्ण गतिविधि ओ स्थितिक इतिहास पर पूर्ण प्रकाश पड़त ।

'मिथिला'मे लिखनिहारलोकनि मे छलाह—

पुलकित लाल दास 'मधुर', म. म. डॉ० सर गङ्गानाथ झा, म. म. प० मुरलीधर झा, प० जनार्दन 'जनसीदन' 'भुवनेश्वर झा, स्व० आचार्य रमानाथ झा, काली कुमार दास, मुंसी रघुनन्दन दास, बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', प० जीवनाथ राय प्रो० श्री हरिमोहन झा, प० सीताराम झा, श्री दामोदर लाल दास, प० देव नारायण झा, श्री जयनारायण मल्लिक, वैद्यनाथ ठाकुर, राजेन्द्र लाल दास, प० छेदी झा 'मधुप' कुशेश्वर दत्त, श्री नरेन्द्र नाथ दास, श्री त्रिलोक नाथ झा, प० चिरंजीव झा, प० ठक्कन झा, श्री चतुर्भुज राय, नन्द किशोर लाल, विभूति नाथ झा, प० यदुनाथ झा 'यदुवर' 'ज्यौ बलदेव मिश्र, वैद्यनाथ वर्मा, प० गोपी रमण झा, श्री नागेन्द्र कुमर 'तरंगी' ज्यौ० बुद्धिनाथ झा, गणेश्वर झा 'गणेश', जलेश्वर सिंह, भीमेश्वर सिंह, हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज', प० जगदीश मिश्र 'मैथिल', अच्युतानन्द दत्त, कुमार गङ्गानन्द सिंह, प्रो० बदरीनाथ झा, प० श्यामसुन्दर झा शास्त्री, प० दामोदर मिश्र, प० त्रिलोचन झा, गुणवन्त लाल दास मुखतार, श्री त्रिगुणा नन्द कुमर, पं० योगेश्वर झा 'यज्ञ', बाबू शिवनारायण सिंह, प० लक्ष्मा नारायण झा 'शशांक', जगदीश मिश्र 'मरन्द', बामदेव मिश्र, श्री वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यार्थी', प० श्री दुर्गाधर झा, प० देवीकान्त ठाकुर, अवधनारायण दास, राम झा, प० परमेश्वर मिश्र, हरिमोहन चौधरी, शुभनारयण चौधरी । एकर अतिरिक्त कतिपय छद्मनामधारी सेहो छलाह, यथा—कुरकुट झा, 'विवेकी', एक प्रत्यक्षदर्शी, उन्मादी झा, 'सुधारक'। एहि पत्र मे अनेक लेखिकाक प्रवेश सेहो देखल जाइत अछि, यथा—श्रीमती सुभद्रा देवी, श्रीमती शाम्मवी देवी, श्रीमती योगमाया देवी, श्रीमती शशिलता देवी, श्रीमती इन्द्रमाया देवी, एक नव कनैंया तथा महालक्ष्मी, श्रीमती श्यामा कुमारी, श्रीमती पंचवती देवी 'फूल'।

इतिहासकारलोकनि एकर प्रकाशन काल १९२९-१९३१ लिखैत छथि। कोन स्रोत सँ ई लिखल गेल अछि तकर पता हमरा नहि लागल। हमरा

जनैत ई पत्र मात्र १३३६ सालक वैशाख सँ आरम्भ भ' १३३६ सालक चैत्र धरि चलि सकल। वर्षक अन्तिम अङ्कमे विगत एगारह अङ्कक आय-व्ययक लेखा प्रस्तुत कयल गेल अछि जाहिमे कुल आय ७५२।≡)।।। तथा कुल खर्च १५६६।।।≡)।। अछि एहि प्रकारें ९१४।≡)।। नौ सय चौदह रूपैया साढ़े सात आनाक घाटा एगारहमे अङ्कधरि भ' चुकल छल। बारहम अङ्कक व्यय एहि सँ अतिरिक्त छल। व्यवस्थापक घाटाक व्यापार करबाक हेतु उद्यत नहि छलाह। समाज उत्साहपूर्वक ग्राहकता नहि स्वीकार क' रहल छल। पारस्परिक मतभेद अतिशय उग्र भ' गेल छल जकर पूर्ण आभास बारहम अङ्कक सम्पादकीय सँ होइत अछि। सन्दिग्ध भविष्यक आशङ्का छठमे अङ्कक सम्पादकीय टिप्पणी मे व्यक्त कयल जा चुकल छल। नवम अङ्कमे सम्पादक दास ओ 'कुमर' 'नीति सम्बन्धी एक बात' ओ 'किछु आवश्यक वक्तव्य' लिखि चुकल छलाह जकर स्वरूप निम्नलिखित अछि—

नीति सम्बन्धी एकबात.... 'पत्र पत्रिका चलैबाक मुख्य उद्देश्य अछि जे जनताक विचार कैं कोनो विशेष ध्येयक दिश एकत्रित कै देशक किछु उपकार करी। भारत वर्ष सम्प्रति परतन्त्र अछि और एही कारणें एहि देशमे दरिद्रता, व्याधि, अकाल, मृत्य, अकर्मण्यता, अविद्या आदिक वृद्धि भै रहल अछि अतः अधिकांश भारतीय पत्रक मुख्य उद्देश्य राजनैतिक अछि, वस्तुतः समस्त देशक समक्ष यैह उद्देश्य प्रधानो अछि किन्तु एकर साधन अनेक अछि। यदि केवल भाषाक विचारें हम किछु दूरक जनताक विचार कें एक सूत्र में गाँथि सकलहुँ तौं कोनो ने कोनो प्रकारें ओही मुख्य उद्देश्यक सिद्धि हैत। एही दृष्टि सौं मैथिल जाति कैं एक गर्म पत्रक परमावश्यकता अछि तैं ''मिथिला''क आविर्भाव भेल अछि एहि सौं केवल मिथिला-भाषाहिक उपकार हैत। यदि पत्र-संचालक गण अपना देश तथा भाषाक अतिरिक्त बाहरी दुनियांक परिस्थितिक ऊपर किछु ध्यान नहि देथि केवल अपना पूर्व गौरवक राग अलापैत रहथि तों ताहि सँ देश वा भाषाक किछु उपकार नहि हैत। यदि अधिक नहि तौं कम-स-कम दसो वर्ष भविष्यक स्थिति ध्यान में राखि पत्रकार कै तेहन-तेहन विषयक समावेश करबाक चाही जे जनता ओहि उद्देश्य क मार्ग पूर्वहि सौं परिष्कृत करबा मे सजग भै जाय। अवश्ये ''मिथिला'' मे स्थानक बहुत अभाव अछि तैं हमरा लोकनि इच्छानुसार सब विषय क समावेश करबा सौं अक्षम रहै छी किन्तु

Scanned by CamScanner

एतवाधरि निश्चय जे आइ काल्हि यदि किछु कार्य वा सुधारक आवश्यकता होय तौं नर्म पत्र सँ किछु नहि भै सकैछ। समयानुसार सामाजिक, धार्मिक आर्थिक तथा साहित्यिक परिवर्त्तन अथवा 'क्रान्ति' करबे हमरा लोकनिक उद्देश्य होमक चाही अतः नर्म गर्मक यथार्थ पूछी तौं कोनो प्रश्न नहि अछि प्रश्न केवल ई अछि जे तावत कोन विषयक द्वारा विचार-सूत्रक आश्रय कैल जाय। हम पहिनहिं सूचित कैने छलहुँ जे हमरा लोकनिक मुख्य उद्देश्य साहित्यिके अछि सामाजिक आदि गौण किन्तु दुर्भाग्यवश साहित्यिक लेख बहुत कम अबै अछि अतः सामाजिके लेखक प्रधानता रहल। आब एतबहुँ मे यदि हमरा लोकनि ई मानि नीक वस्तुक अथवा ई कहू जे अपना देशक प्राचीन आदर्श कैं नहि ग्रहण करी जे ई सब कैने हमर देश इंगलैंड, अमेरिका भै जाएत त हम पूछै छी पत्र कथी लै रहत ? भारतीय तौं हमरा लोकनि एहू अवस्था मे छीहे ? परन्तु हमर सुधार की भेल ? सम्प्रति कोनो वस्तु पाश्चात्य देश में अछि तैं ओ ओही देशक खरीदल भै गेल और हमरा देश में हजारों वर्ष सौं पूर्वमें छल से हमर नहि भेल—हम एहि मतक पक्षपाती नहि। पाठक विचारथि। सं०—दास।"

किछु आवश्यक वक्तव्य—"महाशयगण। जाहि वस्तुक याचना बारबार कैल जाइछ, तकरा देवा में दाता उत्साहहीन तँ रहितहि अछि किन्तु याचकहूक हृदय संकुचिते रहैत छैक तस्मात् साहसकै पुनः किछु क्षमाक प्रार्थी छी आशा जे एक वेरि धरि अपने लोकनि अवश्य उदारता देखाएब।

हमरा लोकनि (दुदू सम्पादक तथा प्रकाशक) उत्साह तरंग में पड़ि एकाएक 'मिथिला'' क प्रकाशन में लागि गेलहुँ, क्रमशः किछु तीव्र लेख क समावेश होमै लागल। हमरा लोकनि दू मतक कट्टर भक्त बनि अपन अपन पक्षक समर्थन में तत्पर रहलहुँ। हँ एतबा अवश्य भेल जे हमरा अधिक काल अनुपस्थित रहने तथा लेखहुँक अभाव सँ प्राचीन मतक विचार अवश्य कमजोर रहल जाहि सँ प्राचीन मतानुयायी बहुतो व्यक्ति असन्तोष प्रकट कैलन्हि। एम्हर नवीन मतक प्रवाह दिनानुदिन तीव्र गति सँ बढ़ले गेल अनेको तरहक समालोचना, सम्मति प्राप्त भेल जकर किछु सारांश अपने लोकनिक निकट उपस्थित करैत छी---

स्व० म. म. गुरुवर पं० मुरलीधर झाक विदुा-पत्री शीर्षक लेख पढ़ि चुकल छी, जाहि में 'हमरा पतनक कारण' 'कन्यादान' 'स्त्रीक अनादरक

दुष्परिणाम' तथा पर्दा बहिष्कार लेखक मधुर स्वरें पूर्ण तिरस्कार कैल गेल अछि। उक्त महामहोपाध्यायजी केहन सामयिक प्रतिभाशाली विद्वान् छलाह ई प्रायः ककरहुँ सँ अविदित नहि। ओ लिखने छथि जे ई लेख हम पूर्ण रूपे सोचि विचारि लिखल अछि।

पोस्टल सुपरिन्टेन्डेन्ट राय बहादुर प० श्री जयानन्द कुमर लिखने छथि जे युग क्रान्तिक थिक। प्रत्येक समाज समयानुसार रीति-व्यवहार बदलि रहल अछि एहना स्थितिमे 'स्त्रीगण दुआरि सँ बाहर पैर नहि देथि' 'परदा प्रथा सनातन-धर्मक अङ्ग थिक' एहि प्रकारक लेख समयानुकूल तँ नहियें प्रत्युत असामयिक कहल जा सकैछ और एही प्रकार लेख पढ़बा मे केवल समयक नष्ट करब थिक।

पाठक गण ! आब अपने लोकनि विचारल जाय जे उक्त दूनू महानुभावक दुइ प्रकारक कथन में कोन माननीय ?

बहुतो नवीन मतावलम्बी लेखक विदेशी सभ्यताक प्रशंसा करैत कहैत छथि जे हम मिथिला कैं इंगलैन्ड अमेरिका बनाबै नहि चाहैत छी। "ई कथा केहन बुझि पड़ैछ जे चाहैत तँ नहि छी परन्तु भै जाय तँ क्षति नहि।" एहि ठाम एक प्राचीन कथाक स्मरण भेल अछि जे एक खेतक रखबार एक साधु सँ पुछलकैन्ह जे बाबा ! कतेको यत्न करैत रहैत छी तथापि जंगली जानवर प्रति राति आबि खेत चरि जाइत अछि, कोनो उपाय देखाओल जाय। तखन भक्तवत्सल ओ महात्मा स्पष्ट रूपें नहि कहि गीत गाबै लगलाह—

"लम्बे लम्बे बाँस मंगाओ ता में लोह लगाओ
हम साधू को क्या पड़ा है नाहक यतन बताओ
जीव पर दया करो रे भाई।"

ई सुनितहि रखबार कैं स्वयं ज्ञान भै गेलैक जे सहत-बर्छी बनाय रखबारी करी।

आब प्रस्तुत विषय ई अछि जे एहि रुपें दूनू दलक झीका-तीरी सँ पत्रिकाक नीति डमाडोल भै गेल। एहना स्थिति में हमरा लोकनि विचार करितहि छलहुँ ता अपन राज काजक आवश्यकता सँ श्रीमान् कुमार

Scanned by CamScanner

गंगानन्द सिंह साहेब दरभंगा उपस्थित भै "मिथिला" कार्यालय में पदार्पण कैलन्हि। उक्त श्रीमानहिक समक्ष उभय मतक प्रवाह देखि ई विचार स्थिर भेल जे 'मिथिला' मध्यम गति सँ चलाओल जाय, अर्थात् नहिं मालगाड़ीक चालि रहै, नहिं पन्जाब मेल जकाँ हाँकल जाय।"[1] एहि सँ एकर पुष्टि होइत अछि जे इहो मतभेद क्रमहि बढ़िते गेल।

तँ जखन व्यवस्थापककेँ व्यापारमे मूलोधन आपस भेटबाक आशा नहि, जाहि समाजक हेतु ई आयोजन तकरामे चेतना नहि, सम्पादकलोकनि मे विचारक ऐकमत्य नहि, तेहना स्थितिमे जतबे दिन चलैत रहल तकरा मैथिली भाषीक सौभाग्य कहबाक चाही आ एक वर्षमात्र चलि एहन सुसम्पादित पत्र बन्द भ' गेल से हमरालोकनिक दुर्भाग्य। परन्तु समष्टि रूपेँ विचार क' देखला उत्तर ज्ञात होइत अछि जे 'मिथिला' पूर्वक प्रकाशित पत्र सभक अपेक्षा समाजमे अधिक जागरण आनि सकल। एहिमे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक ओ साहित्यक विचारक समावेश कयल जाइत छल। एहिसँ समाजक नव उन्मेष भेल। गद्यमे आरो प्रौढ़ता आयल। साहित्यमे नवीन दृष्टिक विकास भेल। एक निश्चित उद्देश्यक पूर्त्तिक दिशामे ई नीतिपर दृढ़ रहि प्राणपणसँ चेष्टामे लागल रहल। मैथिली भाषाकेँ हिन्दीक बोली कहि जे वर्ग एकरा आत्मसात् करबाक षड्यन्त्रमे लागल छलाह तनिका लोकनिक मार्गपर ई एक अवरोधक तत्त्व भ' ठाढ़ रहल। एक स्वतन्त्र भाषाक रूपमे विश्वविद्यालय सबमे जे मैथिली आइ प्रतिष्ठापित अछि ताहिमे एकर भूमिका बड़ महत्त्वपूर्ण रहलैक। नवयुवक वर्गमे उत्साह ओ चेतना जगयबाक कार्य ई पूर्ण दक्षतासँ करैत रहल।[2]

---

१. मिथिला, पृ० ४०२-४०४।

२. एतय हमर विनम्र निवेदन जे यदि कोनहु मातृभाषा प्रेमीकेँ 'मिथिला'क बारहम अंकक बादो अंक सब उपलब्ध होइनि अथवा कतहु अन्यत्र दृष्टिपथपर आयल होइनि तँ कृपया तकर सूचना देथि जाहिसँ द्वितीय संस्करणमे तकर समावेश क' एहि संस्करणमे भेल भ्रान्तिक निराकरण भ' सकय।—लेखक।

Scanned by CamScanner

मैथिल-बन्धु

प० श्री रघुनाथ प्रसाद मिश्र पुरोहितक उत्साहसँ हुनके सम्पादकत्वमे एक हिन्दी मासिक पत्र अजमेर नगरसँ प्रकाशित होअय लागल। स्व० बाबू लक्ष्मीपति सिंहजी सेहो बहुतो दिन धरि एकर सम्पादन कयने छलाह। पहिने एहि ठाम इतिहासकारलोकनिक मन्तव्य उपस्थित अछि। बाबू लक्ष्मीपति सिंह लिखने छथि—

''सन् १९३५ ई० मे अजमेरक श्री रघुनाथ मिश्र 'पुरोहित' संयुक्त प्रान्तीय मैथिल महासभाक प्रमुख पत्रक रूपमे ''मैथिल-बन्धु'' नामक एक हिन्दीक पत्रक प्रकाशन आरम्भ कएलन्हि; जे सन् १९३८ सँ मैथिली-हिन्दी मासिक रूपमे परिवर्त्तित कए देल गेल।

संयोगवशात् सन् १९३७ ई० सँ हमहु 'बन्धु'क सम्पादनमे अवैतनिक रूपेँ अपना कएँ सम्बद्ध कए लेल, आओर अपनहि गाम (मधेपुर)सँ डाक द्वारा 'बन्धु'क हेतु सामग्री सभ जुटबय लगलहुँ। सौभाग्यवशात् हमरा एहि सम्पादन कार्यमे सर्वश्री किरण जी, प० सभाकान्त जी, प० श्री वीरेन्द्र नाथ झा 'शास्त्री', प० श्री भवनाथ झा 'दीपक' तथा अपन धर्मपत्नी स्व० लक्ष्मीवती 'लीला'क सहयोग प्राप्त होइत रहल। बन्धुक प्रकाशन राजनीतिक कारणसँ १९४४ ई० क आगू-पाछू किछु दिन स्थगित करए पड़ल, आओर पुनः सन् १९४५ ई० सँ सन् १९५५ ई० धरि सक्रिय रूपेँ सन्नद्ध रहलहुँ।......श्री पुरोहित जी सन् १९५७ ई० धरि मैथिलबन्धु'' कएँ अवेर-सबेर तेना चलबैत रहलाह, किन्तु किछुए दिनमे हुनकहु स्वास्थ्य बिगड़ए लगलन्हि; आओर 'बन्धु'क प्रकाशन बन्द करए पड़लन्हि। हमरा एतेक आत्म-सन्तोष अवश्य छल कि 'बन्धु' आपेक्षिक रूपेँ बहुत दिन चलल छल, तथा ओहि अवधिमे 'बन्धु'क महासभाङ्क, विभूतिअङ्क, मधुसूदनाङ्क एवं गंगानाथ-स्मृति-अङ्क आदि कतेको विशेषांक प्रकाशित भए सकल छलैक। किन्तु हमरा जनैत 'बन्धु' व्याप्य पत्र छल, व्यापक नहि। देश काल पात्रानुसारेँ हमरा 'बन्धु'मे मैथिली एवं हिन्दी दुनू कएँ स्थान देबए पड़ैत छल। एतावता बन्धुक नीति सीमित, क्षेत्र सीमित तथा

शैली संस्कृत-निष्ठ छल। एक निष्पक्ष आलोचकक दृष्टिमे 'बन्धु' मैथिली ओ मैथिली-संस्कृति-विशेषक सेवा कएलक, धारावाहिक रूपें कतेको गद्य पद्यमयी रचना सभ मैथिलीमे छपैत रहल, किन्तु हमरा ई स्वीकार करबोमे कनेको संकोच नहि कि 'बन्धु' ने मिथिलाक, आओर ने मिथिलाक विभिन्न समाजक व्यापक प्रतिनिधित्व कए सकल। एहि सम्बन्धमे, हम ऐतबेक कहि सन्तोष कए लितहुँ कि 'बन्धु' अपन सीमित क्षेत्र ओ सीमित साधनमे जतबेक दिन जेना चलि सकल सेहो किछु कम नहि किन्तु एम्हर श्री पुरोहित जीक आग्रह छनि कि 'बन्धुक' प्रकाशन पुनः आरम्भ कएल जाए, आओर प्रथम अङ्कक सामग्री प्रेस पठाओल जाए चुकल अछि। हमर अनुरोध मानि श्री पुरोहितजी 'बन्धु'क सम्पादक होएब स्वीकार कए चुकल छथि; आओर हमर यथासाध्य व्यक्तिगत सहयोग हुनका प्राप्त होइत रहतन्हि; किन्तु 'बन्धु' प्रवासी मैथिल-समाजक पत्र रहत। अतएव ओकरा विशुद्ध मैथिली पत्र बनाएब सम्भव नहि भए सकत।[1]

डॉ० श्री जयकान्त मिश्रक मन्तव्यक[2] संक्षिप्तीकरण करैत डॉ० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपन इतिहासक पृष्ठ १२५पर एहि हेतु पाँच वाक्य मात्र लिखने छथि—'मैथिल बन्धु'क प्रकाशन अजमेरसँ आरम्भ भेल १९३५ ई०मे जे प्रथम बेर १९४३ धरि चलल। एकर सम्पादक भेलाह रघुनाथ प्रसाद मिश्र ओ लक्ष्मीपति सिंह। एहिमे मैथिलीकें स्थान १९३९ क पश्चात् भेटए लगलैक। एहि मध्य मिथिलाक प्रसिद्ध विद्वान लोकनिक परिचयक प्रकाशन विशेष महत्त्व रखैत अछि। एकर 'विभूति अङ्क' स्थायी महत्त्वक वस्तु थिक।"

---

१. मैथिली साहित्यक रूपरेखा, द्वितीय खण्ड, (चेतना समिति, पटना) पृ० ८३

२. "·····In Mithila they began to feel that their mother-tongue would now get its proper place. A number of old periodicals were revived and several new ones were started with this hope.

The first to make its appearance, as usual, was a pravasi paper, called the 'Mithila-Bhandhu' (1935-

उपर्युक्त मन्तव्य सबमे परस्पर वैमत्य अछि। हमरा व्यक्तिगत रूपेँ प० श्री रघुनाथ प्रसाद मिश्रसँ साक्षात्कारक सुयोग लागल अछि—१९५४ ई० मे आगरामे आ पुनः १९५७ ई० मे अजमेरमे भेल मैथिल महासभाक अधिवेशनक अवसर पर। आगरामे तँ एकर संचालक-मण्डल एक गोष्ठीक आयोजन सेहो कयने छलाह जाहिमे हमरो दू शब्द कहबाक सुयोग लागल छल जकर विवरण १९५५ ई० क जनवरी अङ्कमे प्रकाशित भेल अछि।

हमरा समक्ष भिन्न-भिन्न कालक भिन्न-भिन्न आकारमे छपल मात्र दस गोट अंक अछि। स्थालीपुलाकन्यायसँ एहि आधारपर विचार कयला उत्तर हम एहि निष्र्ष पर पहुँचलहुँ अछि जे वस्तुतः ई हिन्दीक पत्र थिक। प्रवासी मैथिलकेँ एक सूत्रमे आबद्ध करबाक उद्देश्यसँ एकर प्रकाशन आरम्भ भेल। एहिठाम एतबा कहि देब असंगत नहि प्रतीत होइत अछि जे मैथिली भाषीलोकनि अपना मातृभाषाक जतेक अवहेलना करैत अयलाह अछि ततेक भारतवर्षक अन्य भाषाभाषी नहि। हमरा जनैत मैथिली भाषी ओहि परिमाणमे भारतवर्षक विभिन्न भागमे नहि बसैत छथि जतेक परिमाणमे बंगला वा राजस्थानी भाषाभाषी पसरल छथि। ओ लोकनि कोनहु प्रान्तमे

1943. New series 1947 to the present day) from Ajmer. Its editors have been Raghunath Prasad Mishra and Lakshmipati Singh. Since 1939 it began to give space to Maithili regularly and some interesting "Lives of Eminent Maithilas" and valuable research arricles have appeared in its pages. The greatest work that it ha, done, besides creating interest in the reading and writing of Maithili among Pravasi Maithilas, is to have published Special Number, specially the "Vibhuti Anka" of permanent value. ए हिस्ट्री औफ मैथिली लिटरेचर, पृ० २३३।

जा क' बसलाह, परन्तु पारिवारिक परिवेशमे मातृभाषाकेँ छोड़ि अन्य भाषाकेँ प्रवेश नहि करय देलथिन। बाहरमे ओहि क्षेत्रक भाषा ओ लोकनि सीखि लैत छथि, परन्तु मातृभाषाकेँ बिसरल नहि छथि। मैथिली भाषी जे उत्तर प्रदेश, मध्य-प्रदेश, राजस्थान, बंगाल आदि प्रान्तमे जा क' बसलाह से लोकनि अपन मातृभाषाकेँ तिलांजलि द' देलनि। एखनहुँ जे लोकनि अन्यत्र जाय नौकरी करैत छथि से यदि सपरिवार रहैत छथि तँ अपना धीया पूता पर्यन्तक संग हिन्दीमे बजैत छथि। सेहो बहुत दूर नहि, पटनोमे हमरा एहन परिवार देखबामे आयल अछि। एही प्रवृत्तिक कारणेँ प्रवासमे बसनिहार मैथिली भाषी अपन मातृभाषाकेँ बिसरि गेल छथि। तेहना स्थितिमे जँ कोनो पत्रकारकेँ ई चेतना भेलनि जे पुनः मातृभाषासँ समाजकेँ परिचित करयबाक चाही तँ से हुनक उदारता थिकनि। एहने उदार व्यक्ति मे एक 'पुरोहित'जी सेहो छथि। तेँ एक कोनमे किछु मैथिलीओकेँ प्रवासी पत्र सबमे स्थान भेटि गेलैक। वस्तुतः मैथिलीक पत्र-पत्रिकाक रूपमे ओकर सभक गणना करब हमरा युक्तिसंगत नहि प्रतीत होइत अछि। तथापि जँ अपन पूर्वजक भाषाक प्रति थोड़बो ममत्व ओ रुचि उत्पन्न करबाक दिशामे कोनो पत्र अग्रसर भेल अछि तँ ताहू हेतु ओ श्लाघ्ये कहल जा सकैत अछि। एहि दृष्टिएँ हम डॉ० श्री जयकान्त मिश्रक कथनसँ पूर्ण सहमत छी जे 'मैथिल बन्धु' प्रवासी मैथिलमे मैथिली पढ़बाक ओ लिखबाक रुचि उत्पन्न करबाक दिशामे सबसँ महत्त्वपूर्ण काज कयलक। एहिठाम प्रसंगतः एकरो उल्लेख करब अयुक्तिकर नहि होयत जे जखन अजमेरमे १९५९ ई०मे मैथिलमहासभाक अधिवेशन भेल छल ताहि अवसरपर मिथिलासँ गेल प्रतिनिधि लोकनिक स्वागत-सत्कार करबाक हेतु नियुक्त स्वयंसेवक लोकनिकेँ मैथिली पाठशाला स्थापित क' अधिवेशनसँ दू तीन मास पूर्वहिसँ मैथिली सिखाओल गेल छलनि। एहि प्रकारक प्रेरणा प्रदान करबामे 'बन्धु' सदृश पत्र-पत्रिकाक योगदान रहल होयत।

'मैथिल बन्धु' कहियासँ प्रकाशित होअय लागल एहि प्रसंग पूर्ण मतभेद अछि। हमरा समक्ष सबसँ पहिल अंक मार्च १९५१ ई०क अछि जाहिमे वर्ष २ ओ अङ्क तीन छपल अछि। ई अङ्क फगुआक अवसर पर प्रकाशित अछि जकर मुख पृष्ठपर महाराजाधिराज मिथिलेश कामेश्वर सिंहक चित्रक संग मैथिल महासभाक ४० म अधिवेशनक अध्यक्ष पदसँ देल गेल भाषण

Scanned by CamScanner

मुद्रित अछि। एकर अतिरिक्त एको पाँती मैथिली कतहु नहि अछि। एकर पंजीयन संख्या अछि ६२५। सम्पादकक रूपमे आवरणक चारिम पृष्ठ पर 'प्रिंट लाइन'क नीचा हाथ सँ लिखल अछि—सम्पादक : श्री लक्ष्मीपति सिंह, बी. ए. शास्त्री, साहित्याचार्य।

तदुत्तर १९५५ क चारि खण्डमे आठ गोट अंक हमरा उपलब्ध अछि जे जनवरी सँ अगस्त मास धरिक दू-दू मासक संयुक्तांक सब थिक। एहि सबमे वर्ष १६ छपल अछि। एहि आधार पर एकर प्रकाशन वर्ष १९३९ई०सँ मानय पड़त। १९५७ ई०क मार्च-अप्रैलक एक गोट अंक अछि जाहिमे वर्ष १८ छपल अछि। एहू सँ १९३९ प्रमाणित होइत अछि परन्तु एहि सब अंकक पंजीयन संख्या J १०० छपल अछि।

एहि सब अङ्कमे मैथिलीक जे किछु रचना भेटल से कमशः आचार्य परमानन्दन शास्त्रीक एक शुभकामना पत्र, प० श्री भवनाथ झा रचित कविता, बाबू लक्ष्मीपति सिंह रचित 'साँझ परात' शीर्षक उपन्यासक एक छोट अंश, म. म. डॉ० उमेश मिश्र, डॉ श्री जयकान्त मिश्र, डॉ० श्री राम चन्द्र मिश्र, प० श्री त्रिवेणी कान्त झा (पंजिकार)क चिट्ठी, श्री मतिनाथ मिश्र रचित 'उद्बोध' शीर्षक कविता ओ 'धुत्तोरी भला' शीर्षक फागु सम्बन्धी हास्यव्यंग्य मात्र।

तकर बाद १९७७ ओ १९७८ क तीन गोट अङ्क दृष्टि पर अछि। ई अंक सब एहन क्षीणकाय अछि जे एहि सँ एतबे प्रमाणित होइत अछि जे ई पत्र एखनो जीवित अछि। एक अङ्क १९७९ जनवरीक अछि जे मात्र दू पृष्ठ अछि, किन्तु एक कोनमे 'मैथिली भाषा और संस्कृति'क शेषांक मैथिली मे अछि। एहि सब अङ्कक पंजीयन संख्या बदलल अछि। एहि सब सं सिद्ध होइत अछि जे ई अनेक बेर उठबाक चेष्टा करैत रहल, परन्तु समाजक सहयोग नहि पाबि सकल।

१९५५ ई० क अङ्क सभक आवरण पृष्ठ पर महासभाङ्क, श्री गंगानाथ स्मृति अङ्क, पूजांक, होलिकांक, फगुआ अङ्क, विद्यापति अंक, मधुसूदनांकक संग हिन्दी मैथिली शिक्षक नामक पुस्तकक विज्ञापन छपल अछि। ई अंक सब उपलब्ध भेला उत्तर 'बन्धु'क वास्तविक मूल्यांकन कयल जा सकत। सम्प्रति एतबा निर्विवाद स्वीकार कयल जा सकैत अछि जे प्रवासी मैथिल

Scanned by CamScanner

लोकनि कें मिथिला-मैथिलीक प्रति आकृष्ट करबामे एकर अविस्मरणीय योगदान रहलैक जाहि सँ मैथिलीक आन्दोलन कें बल भेटलैक।

मैथिल युवक आ जीवन प्रभा

एही क्रम मे 'मैथिल युवक' ओ 'जीवन प्रभा'क नामोल्लेख कयल जा सकैत अछि। 'मैथिल युवक'क सम्पादक छलाह प० चुन्नी लाल झा। अजमेर सँ एकर प्रकाशन होइत छल। 'जीवन प्रभा' आगरा सँ प० व्रज मोहन झाक सम्पादकत्व मे प्रकाशित होइत छल, किछु दिन ई झाँसी सँ सेहो प्रकाशित भेल। ई दुनू पत्र 'मैथिली बन्धु'क चरण चिह्न पर चलबाक प्रयास करैत रहल; तें जे उपलब्धि मैथिल बन्धुक छल सैह एकरो सभके मानबाक चाही। एहि सब सँ मैथिली साहित्यक श्री वृद्धि मे कोनो विशेष सहयोग प्राप्त भेल हो से नहि मानल जा सकैत अछि। एतय ई स्पष्ट क' देब आवश्यक जे मैथिली मे बहुतो एहन पत्र प्रकाशित भ' बन्द भ' गेल जाहि सँ व्यक्ति विशेष कें मात्र आत्म सन्तोष भेटल होइनि से संभव।

भारती

मैथिली साहित्य परिषदक संरक्षकतामे दरभंगासँ 'भारती' नामक एक मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल १९३७ ई०मे वसन्त पंचमीसँ। एकर सम्पादक छलाह 'मिथिला'क भूतपूर्व सम्पादक ओ परिषदक तत्कालीन प्रधानमन्त्री बाबू भोला लाल दास। मिथिला जाहि उद्देश्यसँ प्रकाशित होइत छल ओही उद्देश्यक सफलताक दिशामे ई एक सुविचारित डेग छल। एहि प्रसङ्ग इतिहासकार लोकनि गम्भीरतासँ विचार नहि कयने छथि। प्रथमत: इतिहासकारलोकनिक मन्तव्य उद्धृत अछि। डॉ० श्री जयकान्त मिश्र लिखने छथि जे "मैथिल साहित्य परिषद्' दरभंगासँ प्रकाशित 'भारती' नामक पत्रक सम्पादक छलाह बाबू भोला लाल दास। एहिमे समीक्षात्मक निबन्ध, यात्रा-विवरण तथा उपन्यास आदि प्रकाशित होइत

Scanned by CamScanner

छल। प्राचीन ग्रन्थक, यथा वर्णन रत्नाकर, प्रकाशन सेहो ई प्रारम्भ कयलक।[1]

डॉ० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखने छथि—

"मैथिली साहित्यमे 'भारती'क महत्त्व अछि गम्भीर साहित्यक प्रकाशन ओ प्रचारक दृष्टिएँ। साहित्यक समालोचना, यात्रा तथा प्राचीन स्थायी मूल्यक वस्तुक प्रकाशनक दृष्टिएँ सेहो एकर बड़ महत्त्व अछि। ई पत्र व्यक्तिगत विवादसँ बचिकें चलए चाहैत छल, मुदा से भेलैक नहि। पाछाँ ई राजदरभंगाक प्रभावमे आबि भुवनजीपर व्यक्तिगत आक्षेप करैत व्यंग्य चित्र प्रकाशित कए विवादक विषय भए गेल ओ शीघ्र एकर अन्त भए गेलैक।"[2]

डॉ० 'श्रीश'क कथन एहन सन प्रतीत होइत अछि जे जें हेतु ई व्यक्तिगत प्रभावमे पड़ल तें अन्त भ' गेलैक तथा ई एकपक्षीय दरभंगाराजक प्रभावमे अयलाक कारणें भुवनजीपर आक्षेप करय लगलनि। हमरा दृष्टिमे ई अभिव्यक्ति पक्षपातसँ रहित नहि अछि। हम अपन एहि कथनक पुष्टिमे प्रमाण उपस्थित करब। प्रथमतः एहि पत्रक उद्देश्य जे सम्पादक स्पष्ट कयने छथि ताहिपर दृष्टिपात कयल जाय—

"........आइ पचीस तीस वर्षसँ मैथिलीक क्षेत्रमे जे क्षीण आलोक देखना जाइछ, तकरा हम परिस्थितिक प्रतिकूल लड़ाइ करब बुझै छी। सौभाग्यवश ओकर परिणामो नीके देखि पड़ैछ। जाहि मैथिल मनीषीगणक अदम्य उत्साहें ई आलोक कोनो रीतियें अद्यावधि स्थिर रहल, से अवश्ये धन्यवादार्ह छथि। आइ हुनके सबहुँक तपस्या बलें हम एहि युगान्तकें वसन्त पंचमी कहबाक साहस करै छी, अन्यथा एखनहुँ मैथिलीक प्रगतिमे हमरा अनेक सन्देह अछि। विघ्न-बाधाक पहाड़ तँ ठाढ़े अछि।

बिहारमे मैथिलीक प्रश्न जेहन महत्त्वपूर्ण भए रहल अछि ताहिसँ आब केयो मिथिलावासी तटस्थ नहि रहि सकै छथि। मैथिली साहित्य परिषदक निरंतर उद्योगसँ विरोधक वातावरण आब बहुत किछु परिमार्जित भेल

---

१. ए हिस्ट्री औफ मैथिली लिटरेचर, पृ० २३३ द्रष्टव्य।

२. मै० सा० इतिहास, पृ० १२६।

Scanned by CamScanner

अछि। किमधिकम् बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक गत अधिवेशन (बेगूसराय) पर्यन्तमे हिन्दी-मैथिला सौहार्द्र सूचक प्रस्ताव स्वीकृत भेल अछि जकर अद्यपर्यन्त अभाव छल। ओतय एक प्रस्ताव द्वारा यदि उत्तरी बिहारक प्राचीन ग्रन्थाक अन्वेषण-भार हमरा ऊपर देल गेल अछि तँ दोसर प्रस्ताव द्वारा मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना पर हर्ष प्रगट करैत मैथिल गणकैँ अपना साहित्यक अभिवृद्धि हेतु जे लगन छन्हि ताहिसँ सहानुभूति प्रगट कैल गेल। संगहि देवनागरीकैँ अपनैबाक अनुरोध कैल गेल अछि। किन्तु ई आदेश तँ हम शिरोधार्य कैनहि छी। ओम्हर प्रान्तीय विश्व-विद्यालयक सिनेटहुमे एहि बीचमे एक असाधारण घटना घटित भेल अछि। गतवर्ष मार्चक मीटिंगमे जाहि संथालीक अस्वीकृति भेल छलैक ताहि संथालीक स्वीकृति गत नोअम्बरक मीटिंगमे बातक बातमे भए गेल अछि।

अस्तु, एकर अभिप्राय ई नहि जे मैथिलीक मार्ग एकदम साफ भए गेल अछि। हमरा तँ एखनहुँ विकट परिस्थितिक सामना अछि। स्वीकृतिक प्रश्न तँ एक सामान्य बात थीक। हँ, एहि विषयमे ई कहब आवश्यक जे अन्यान्य प्रांतक स्वीकृति, मैथिलीक योग्यता ओ मैथिलीभाषी विद्यार्थीगणक आवश्यकता आदि देखैत "मैथिली चेयर" स्थापनासँ हमरा लोकनि जतबा आशान्वित भेल छलहुँ से केवल मृग-मरीचिके प्रमाणित भेल। अधिक की, साधक हैबाक अपेक्षा ई चेयर हमर बाधके प्रमाणित भए रहल अछि। अद्यापि एहि उदार दानसँ मैथिलीक कोनो हितसाधन नहि भेल अछि। तँ मैथिलीक स्वीकृति यदि कहियो हैत तँ अपनहि बलपर किन्तु पटना विश्व-विद्यालय आइ १५-२० वर्षसँ मैथिलीक प्रश्नकैँ जाहि रीतियेँ ठोकरबैत आएल अछि से महती मैथिली जनताक हेतु लज्जाक विषय थीक। ओ चोट आब ताहि पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल अछि जे ओकर अभिव्यक्ति अधिवेशनक प्रस्तावादि द्वारा नहि भए सकैछ। यद्यपि आब प्रान्त या पड़ोसहुक अनेक पत्र मैथिलाक पक्षकैँ समर्थित करै छथि तथापि बिना स्वतन्त्र पत्रेँ एहि लोक मतक निर्वाह नहि भै सकैछ।

किन्तु ई तँ हमर तातकालिक आवश्यकता थीक, वास्तविक ध्येय तँ हमर मैथिलीक सेवे थीक। आब हम मैथिलीक पुरातन पटोर सँ अभिनव खादीक शुभ्र साड़िए सजाएब आवश्यक बुझै छी। विद्यापति ओ गोविन्द दासक काव्यावली सँ आधुनिक साहित्य-निर्माणहि केँ अनिवार्य बुझै छी। से की

बिना सर्वाङ्ग सुन्दर पत्रें संभव ? की ताही दृष्टिएँ हमर मित्रगण ओ गुरुजन कतोक दिन सँ परिषदक संरक्षकतामे पत्र प्रकाशित करबाक आग्रह नहि कए रहल छलाह ? की मैथिली कँ अन्यान्य प्रान्तीय साहित्य जकाँ सजैबाक अभिलाषा लोक मे नहि बढ़ि रहल अछि ? एही निश्चित उद्देश्य कें समक्ष राखि भारतीक अवतार भेल अछि। हम जनै छी जे मैथिलीमे अनेक पत्र पत्रिका प्रकाशित भेल, किन्तु चिरस्थायी नहि भेल, परन्तु तँ की ? हिन्दी, बंगला, अङ्गरेजी पर्यन्तमे अनेक पत्र-पत्रिका अकाले काल कवलित भेल तँ की पत्रकार गण विश्रान्त भेलाह ? हम भारतीक कुण्डली तँ नहिएँ बनाए रहल छी, किन्तु मित्रगणक सहयोगक परीक्षा कोन कम बात, गुरुजनक आदेश पालने कहाँक थोड़ ? आइ हमरा आगाँ भूत भविष्य किछु नहि अछि। हम केवल वर्त्तमान क किंकर छी और यदि राष्ट्र-निर्माण में किछु मूल्य साहित्य सेवाहूक छैक तँ हम भारताक प्रकाशन द्वारा ओही वीणापाणि भगवती भारतीक उपासनामे लीन होइ छी जनिका कृपा बलें वाणीमे शक्ति अबैछ, असंभवो संभव होइछ।"[१]

एहि उद्धरण सँ आभास भेटैत अछि जे विश्वविद्यालय द्वारा मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न सोझरायल जा रहल छल तदतिरिक्त आधुनिक रचना सँ मैथिलीक भण्डार कें समृद्ध करब सेहो एक समस्या छल जाहि दिस 'भारती' प्रयन्नशील भेल, जकरा इतिहासकारलोकनि मानलनि अछि। ठाकुर सूर्यनारायण सिंह, जे मुजफ्फरपुर ट्रेनिंग स्कूलक प्रधानाध्यापक छलाह, 'मैथिलीक मांग' शीर्षक लेख द्वारा तर्कपूर्ण तथ्य प्रस्तुत करैत शिक्षामे मैथिलीक अनिवार्यतापर जे प्रकाश देने छथि से सर्वथा मननीय अछि। ई केहन सशक्त लेख अछि से सम्पादकक टिप्पणीए सँ जानल जा सकैत अछि। सम्पादक लिखने छथिन—'लेखक महोदय शिक्षा विभागक उच्च ओ अनुभवी पदाधिकारी छथि अतः शिक्षा पद्धतिमें मैथिलीक आवश्यकता पर जे किछु लिखलन्हि अछि, से साधिकार लिखने छथि। संगहि मैथिलीक प्रचारार्थ एहि लेख में जे सारगर्भित योजना उपस्थित करैत श्रीमान मिथिलेशक ध्यान आकृष्ट कएने छथि, तकरा कार्यगत भेने आशे नहि, पूर्ण विश्वासो अछि, जे मैथिलीक उपकारक अतिरिक्त एहनो अनेक

१. भारती, वर्ष १, अंक १, पृ० ३-४।

Scanned by CamScanner

कार्य भए जाएत जकर आवश्यकता श्रीमान कें वर्त्तमान कालक प्रवाह देखैत अनिवार्य छन्हि। आशा अछि प्रान्तीय शिक्षा विभागे नहि, मिथिलेश ओ समस्त मैथिली भाषी जनता एहि राजपूत विद्वानक लौह लेखनी लिखित तथ्यपूर्ण लेख पर पूर्ण ध्यान देत।''[२]

विद्वान लेखक एहि विस्तृत लेख कें अनेक उपशीर्षकमे विभाजित कयने छथि। उपशीर्षक सब अछि—वर्त्तमान विक्षोभ, विरोधक आशंका व्यर्थ, हिन्दी ओ मैथिली, वर्त्तमान शिक्षा-प्रणाली ओ मैथिलीक अनिवार्यता, मगही भोजपुरी मैथिली, मैथिलीक संरक्षण तथा प्रचार, साधन, अन्तमे निवेदन।

एहिमे जाहि प्रकारक मैथिल राष्ट्रसभाक स्थापनाक परामर्श देल गेल छल, यदि एहि मार्ग पर चलबाक प्रयास भेल रहैत तँ सम्प्रति जे मैथिली अष्टम अनुसूचीमे प्रवेश पयबाक हेतु संविधान क दुआरि पर माथ पटकि रहल अछि ओ जकरो मातृभाषा थिकैक तकरो द्वारा उपेक्षित अछि से स्थितिए प्रायः नहि उत्पन्न होइत। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे 'भारती' सामाजिक चेतना जगयबाक दिशामे पूर्ण प्रयत्नशील रहल, परन्तु आन्हरक समक्ष नृत्य प्रदर्शन मात्र भेल। कहबी छैक जे बहिराक लग एक गायक राग अलापय लगलाह तँ बहिरा कहलकनि—मुँह किऐक बबैत छी ? कहबाक आशय जे मैथिलीभाषी समाजक समक्ष पत्रकारलोकनि ओही गायकक समान भेलाह।

'विभूति' पत्रक प्रसङ्ग 'भारती'क दृष्टिकोण निम्नांकित उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि। सम्पादकीय टिप्पणीमे लिखल गेल अछि—

''ई पत्रिका गत होलीक अवसर पर वैशाली प्रेस मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित भेल अछि। छोट छीन मासिक बड़ सुन्दर ओ प्रिय लागल, छपाइयो सफाइ प्रशंसनीय। पृष्ठ संख्या पुलिसकेप चौपेजी २८ ओ वार्षिक मूल्य सवा टाका मात्र राखल गेल अछि जे सभक हेतु सुलभ ओ सस्त अछि। सम्पादक छथि श्रीयुत भवनाथ शर्मा साहित्यालंकार। भणिता भने भवनाथक रहौन्ह किन्तु ई भाव-भाषा भुवनक थिकैन्ह, ताहिमे किंचितो सन्देह नहि। ई और

---

२. तत्रैव, पृ० ५।

Scanned by CamScanner

आनन्दक बात। हमरा तँ यैह भान होइछ जे भुवनेजी ई उपनाम धारण कए कार्य क्षेत्र मे अवतीर्ण भेल छथि। लेखको वर्गमे हमरा कृत्रिमे नामक आभास भेटैछ, यथा—राजहंस, विश्वकर्मा, वीणापानि, सुदूरदर्शी, वाणी विनायक, माढ़व्य इत्यादि। अस्तु, प्रथमांकमे कतोक उत्तम लेख ओ कविताक समावेश अछि, किन्तु ओतवहि सँ एकर समालोचना करब हम एकरा प्रति अन्याय बुझैछी। पत्र-पत्रिका निरन्तर उन्नति करबाक वस्तु थिकै, जनमत केँ अपना पक्षमे करबाक साधन थिकै तथा समाजक वास्तविक सेवक थीक। दुभार्ग्यवश विभूति आरम्भहिमे समालोचनात्मक पत्र भए गेल अछि जाहिमे ओ स्वयं नहि ठहरि सकत। यदि ओकर नीतिये यैह होइक तँ हमरा आपत्ति नहि किन्तु यदि ओ मैथिली साहित्यक वास्तविक किछु सेवा करए चाहैछ तँ ओकरा मैथिलीक प्रत्येक पत्रक संग कन्धा सँ कन्धा मिलाय पत्र-पत्रिकाक हेतु सुन्दर परिस्थिति उत्पन्न करए पड़तैक, अन्यथा प्राचीन मैथिल स्वभाव दोषे एको पत्रक चलब असम्भवे अछि। कम सँ कम मैथिली भाषी जनताक रुचिक हमरा एखन एहने धारणा अछि। अस्तु, भारतीक बहुत दोष सपरिश्रम देखाए विभूति जे मित्रताक परिचय देने अछि तदर्थ ओकरा हम विश्वास दैत छिऐक जे भारतीमे जे कोनो दोष मान्य एवं परिहार्य्य छैक तकरा मार्जनक हेतु ई सतत सचेष्ट रहत किन्तु कमलालयक ऐश्वर्यसँ परिपालित विभूतिक समानता एकान्त तपस्विनी भारती कोना कए सकत? लक्ष्मी और सरस्वतीक तुलने की? प्रत्येक व्यक्ति विभूति केँ अपनाय उपकृत होथु, यैह हमर हार्दिक कामना। पुनः पश्चात्।"[१]

आब 'विभूति' जे 'भारती'क प्रसङ्ग अपन प्रथमे अंक मे उदगार व्यक्त कयने अछि तकर स्वरूप देखल जाय। साहित्य समीक्षा शीर्षक स्तम्भ अन्तर्गत श्रीयुत 'राजहंस' बी० ए० विशारद लिखने छथि—

"नव प्रकाशित मासिक पत्रिका। सम्पादक-बाबू श्री भोला लाल दास जी, प्रकाशक मित्र मण्डल कार्यालय, बिहार प्रेस लहेरिया सराय। क्राउन अठपेजीक आकार। ३६ पृष्ठ। वार्षिक मूल्य २।।) एक प्रति ।) प्रथमांकक।–)।

---

१. भारती, वर्ष १, अंक २, पृ० ७३।

'भारती' एही वसन्त पञ्चमीसँ प्रादुर्भूत भेलीह अछि। दर्शन देलन्हि त मन में एतेक आनन्द, एतेक भावना, एतेक कल्पनाक स्रोत संगहि प्रभावित भेल, जे आत्म विभोर कै देलक ! की मिथिला में वास्तविक नव-जागरण भै रहल अछि ? की आइ अपना समाजमे यथा जीवन ज्योति प्रदीप भेल अछि ? की आइ अपना देश मे साहित्य संरक्षणक क्षेत्र आंशिको तैयार अछि ? वा सबटा युवक प्रयासे थीक ! क्षणिक उमंग, क्षणिक उद्योग, क्षणिक हलचल—एवं पुनि क्षणहि मे घोर निराशा ? हृदय कहलक; भूत, भविष्य फराक रहौ, वर्त्तमान जँ सम्हरय त 'भारती' अपन सितारक झंकार सँ देश हृदयक तार-तार कै झंकृत कै देवाक कृपा अवश्य करतीह। सम्पादक सुयोग्य, सहृद लेखकक सहयोग मणिकांचन क योग, तखन प्रयोग सफल कियैक नहि हैत ? पत्रिका "मैथिली साहित्य परिषद' संरक्षित छथि, एहि सँ और आशा तथा सन्तोष भेल।

आगाँ बढ़लहुँ। चतुर चित्रकार चित्रित बहुवर्णांकित, भव्य आवरण देखि, एहन बुझि पड़ल जेना 'पत्रिका'क सबटा लावण्य एतहि एकत्रित हो। संचालक-मण्डल उदार अछि, बाह्याडम्बरक विधानमे अनपेक्षित व्यय तकर प्रमाण। किन्तु समय और साधनक दृष्टियें एहिमे सतर्कता सापेक्ष थीक। चित्रमे आधुनिकता कम छैक, विशेषत: जीवनक अभाव। ओ समय आब नहि रहल जे 'भारती'क आवरण 'भारती' भूषिते सभहक मनस्तुष्टि कै सकै। कल्पना कै निहार अपेक्षाकृत विशेष उत्साहवर्द्धक छविक कल्पना कै सकैत छथि।

प्रथमांकमे सब मिलाय उनैस गोट विषय अछि। ७टा कविता, १२ टा गद्य निबन्ध जाहिमे विनोद,पुस्तक-परिचय, परिषद-समाचार, टिप्पणी सबहक सन्निवेश। आत्म-निवेदन रूपें सम्पादकीय अग्रलेख प्रारंभहिमे अछि, जे कियदंशमे असम्बद्ध रहनहुँ, स्पष्टवादितादि गुणे स्पृहणीये कहाओत। भाषामे आधुनिकताक दिशि सम्पादकक रुचि देखि विशेष प्रसन्नता भेल। अन्य लेख मे बाबू श्री सूर्यनारायण सिंहक विचार-कोटि विशेष महत्त्वपूर्ण। एहन निबन्धसँ साम्प्रतिक उपकारक सम्भावना। हँ, जँ एकरा प्रगतिक रूप देल जाय एवं आन्दोलन होइत रहै, ओना त व्यर्थे। प० श्री जीवनाथ राय "नागरी तथा वैदेही" पर एवं श्री अच्युतानन्द दत्त "आर्यक आदि भूमि आर्यावर्त्त" पर संक्षेपमे नीक लिखने छथि। कहानी (गल्प) दू गोट अछि;

Scanned by CamScanner

एक ''कर्त्तव्यक वेदी'' दोसर ''उत्सर्ग''। दून् साधारण। कहानी कलाक नितान्त अभाव एवं हृदय स्पर्शहुमे समर्थ नहि। एहि क्षेत्रमे अधिक उन्नति अपेक्षित बुझना जाइछ। 'गल्प' सामाजिक अवस्थाक परिस्कारमे सहायक बड़ आवश्यक उपादान थीक, किन्तु जँ सुचारु चित्रित रहै। 'उत्सर्ग' पढ़ैत-पढ़ैत एहन भान हो जे प्राचीन ग्रन्थक टीका पढ़ैत छी—''इति मेदिनी'' ''इति वात्सायनः' 'इति कालिदासादयः'' ।

कवितामे, प्राचीन परिपाटीक विचारें 'श्री मुन्सीजी'क 'महाकाव्य'क अंश विशिष्ट अछि। खेद जे स्थानक विचारें ई नीक ठाम नहि छपल, जकर एहि अंकमे कमी अछि। आधुनिक दृष्टिएँ, सरसरीक विचारें, श्री उपेन्द्र ठाकुरक 'विफल जीवन' मधुर लागल। प० श्री सीताराम झा जीक शुभाशंसा हुनक अनुरूपे भेल अछि। किन्तु ''नित उठि बुधजन सविधि उतारथि जनिक आरती, करथु सतत कल्याण सदा से जनक भारती'' मे 'भारत भारतीक' प्रारम्भिक पदक छाया स्पष्ट अछि। ई प्रसन्नताक बात थीक जे 'झा' जी सन प्राचीन पंथानुयायी कवियहुक रचनामे आब 'शब्द'क सामयिक रुपक व्यवहार प्रचलित होमय लागल, जेना 'धारण करबाक' अर्थमे धारती इत्यादि ! कहि ने मैथिलीक प्राचीन रूपक पोषक व्याकरण शास्त्री लोकनि एकरा केहन प्रयोग मानताह। 'देशके उतारती'मे 'के' प्रयोग चिन्त्य थीक। एकर उत्तरदायित्व प्रेसक भूतकें छन्हि, वा सम्पादक महोदयकें ? ई सुखक विषय जे श्री जयनारायण जी पुनः कविक रूपमे आविर्भूत छथि। हिनकामे अनुभूति छन्हि। 'कामना' पढ़ल त एहन लागल जे हिन्दीक अनुवाद थीक। किन्तु तकर आधार स्मरण नहि भेल। सम्भव जे मौलिके कृति हो, किन्तु 'माँझी' मूड़ी डोलबैत अछि। मल्लिक जी एहन शब्दक प्रभावसँ अवश्य बचथि, जे 'मैथिली'मे नहि पचि सकय। 'भववारिधि-जल-धार' पुलिंग थीक, तरंगमये रहत, 'तरंगमयी' बनैबाक हेतु आधुनिक आपरेशन अस्वास्थ्यवर्द्धक से निवेदन अछि। आन जे पद्य अछि, से नहि छपैत त पत्रिकाक प्रतिष्ठा रहितैक। प्रथमांकहिमे 'शोकोद्गार' कोनो सुलक्षण नहि थीक। 'प्रार्थना' पिंगलकें चपेटने अछि ओ 'शुभकांक्षा'त पत्रिकाक हेतु सब तरहें अशोभन भेल। ने भाव वैशिष्ट्य भेल। भाषामे जीवन, ने तुकक ठेकन, ने शब्दक सुचारु संगठन ! 'मा, भारती !' की थीक, कोन छन्दक अनुकूल पद्यमे एकर स्थान, के कहौ ! ''वाचस्पति सन पुरुष बनौ''मे श्लिष्ट 'वाचस्पति'

Scanned by CamScanner

शब्द राखि कवि जे आकांक्षा करैत छथि, की से एहिसँ सफलीभूत हैत ? के एहन वाचस्पति बनै चाहत ? कविकेँ 'मैथिली' वा 'भारती'क प्रतिष्ठाक ध्यान नहि रहौन्हि, अपन 'वाचस्पति' उपाधिक लाज त राखक थिकैन्हि। सब मिलाय कविताक विभागमे उन्नतिक अपेक्षा बड़ छैक। छोट-मोट दोष अनेक।

हँ, 'झाजीक पत्र' शीर्षक विनोद खूब सरल भेल अछि। 'समाचार-संग्रह' प्रभृतिक 'स्टैंडर्ड' और ऊँच कर्त्तव्य थीक। मासिकक महत्त्व ताहीमे। प्रारम्भमे संस्कृतक प्राचीन पद्य उद्धृत अछि, से नवीन संशोधनसँ छोपल भ्रष्ट भै गेल अछि। छन्द, अनुप्रास, भाव ओ प्रवाह सबहक हानि संगहि। ई नहि चाही। जँ शिवक स्थानमे 'विधि' वाचक शब्दक खोज छल, त 'बिधिकान्ताम्' समीपे भेटैत। जँ 'भारती'क समावेश सापेक्ष्य, त कोनो संस्कृतक कविसँ से स्वल्प प्रयासहि साधित होइत। आगाँ एम्हर ध्यान राखब तथा एकर संशोधन कै देब उचित थीक। (स्मर्तव्य जे एहि परामर्शके मानि सम्पादक दोसर अङ्कसँ उपर्युक्त संस्कृत पदक स्थानपर मैथिलीक पदक समावेश कयने छथि।)

भाषामे एकतानता नहि अछि। रूपो सुगठित नहि। सम्पादनमे आओर अधिक श्रम ओ सुरुचि सापेक्ष्य। शैली ढील रखने भाषा सुसंकृत नहि हैत। जे हो, जतबो सुधारक सूचना प्रायमांकमे अछि, तकर प्रतिकूल उदाहरण एही अंकमे प्रस्तुत। कतहु विभक्ति सटल कतहु हटल। कतहु 'भए' कतहु 'भय'। कहाँ धरि उदाहरण देल जाओ। ब-व क, विराम चिह्नक बड़ दुर्दशा सर्वत्र अछि। छपाइक भ्रष्टताक चर्चे व्यर्थ थीक। मुखपृष्ठो तक पर अशुद्धि वर्तमान अछि। टाइपक, प्रूफक, सब तरहक। एहिमे सत्वर सामयिक सुधार नहि भेने पत्रिकाक उद्देश्य साधित नहि हैत। 'पुस्तक-परिचय' स्तम्भकेँ विशेष महत्त्वपूर्ण बनैब आवश्यक, खाली प्रशंसे किछु नहि। सम्पादकक टिप्पणी प्रत्येक लेख पर अछि जे हुनक विवेक (?) ओ परिश्रमक सूचना दैछ। किन्तु हुनकासँ हमरा जे आशा अछि, तकर चरितार्थता त प्रायः भविष्ये करत। काज बड़ उत्तरदायित्व, बड़ जिम्मेदारीक छैक।

जे रहौ, 'भारती'मे नवयुगक प्रेरणा, युवक-हृदयक तीव्र स्पन्दन छैक, ताहिमे सन्देह नहि। के एहन पामर जे 'भारती'क बहुल प्रचार, ओकर

Scanned by CamScanner

सर्व-प्रकारेण उन्नति नहि चाहत। हमहुँ सम्पादक, प्रकाशकके धन्यवाद दैत हुनक सफलताक शुभकामना करैत छी।''[1]

ई तँ 'साहित्य-समीक्षा' स्तम्भक अन्तर्गतक विचार भेल। अपना दृष्टिएँ गुण-दोषक विवेचन करब उचिते थिक। समीक्षकके जे दृष्टिपथपर अयलनि अछि से व्यक्त कयलनि अछि। आब 'व्यंग्य स्तम्भ'मे जे विचार व्यक्त कयल गेल अछि तकर अवलोकन कयला उत्तर सुधी पाठक स्वयं निष्कर्ष बाहर क' सकैत छथि जे 'भारती' राज दरभंगाक प्रभावमे आबि 'विभूति' पर आक्षेप करय लागल अथवा 'विभूति' आरम्भेसँ द्वेष भावकेँ पोसने छल।

'विभूति'मे माढ़व्य नामसँ 'किमाश्चर्यमतः परम्' व्यंग्यस्तम्भ लिखैत छलाह क्यो जन। प्रथमे अङ्कमे 'भारती'क प्रसङ्ग उक्त स्तम्भमे लिखल गेल अछि—

''मैथिली-साहित्य-परिषद' एँड़ीसँ चोटी पर्यन्त कायस्थ-संस्था थाक आओर ओकर संरक्षित 'भारती' मासिक सर्वथा कैथिनि पत्रिका! पहिलक मन्त्री कायस्थ छथि आओर दोसरमे कैथिनिक कविता छपैत अछि। एहि प्रबल प्रमाणक रहैत बाबू भोला लाल कतबो कार्य साधथु, 'की त्रुटि अछि'क और छो-छौ ब्राह्मण सभापतिक कतबो दोहाइ दैत जाथु, ठकब पार नहि लगतैन्हि! कलियुग थिकै, सभ जानि गेल अछि जे हाथीकेँ खैबाक दाँत एक होइ छैक, देखैबाक दोसर।''[2]

मैथिलीक उन्नति ओ प्रगतिक कामनासँ जँ काज कयल गेल रहैत तँ प्रायः जातिक चर्चा क' पारस्परिक मतभेदक एहन अभद्र आक्षेप नहि कयल जाइत। उपर्युक्त उद्धरणसँ स्पष्ट आभास भेटैत अछि जे अपन अन्तरक समग्र आक्रोशकेँ अभिव्यक्त करबाक उद्देश्येसँ 'विभूति'क प्रकाशन आरम्भ भेल छल। अतः डॉ० श्रीशक कथन सेहो पूर्वाग्रहयुक्त छनि।

'सम्प्रति मैथिलीकेँ, विश्वविद्यालय आदिमे जे स्वतन्त्र भाषाक रूपमे मान्यता प्राप्त अछि तदर्थ आन्दोलनकेँ अग्रसारित करबाक बहुत किछु श्रेय मैथिली-साहित्य-परिषदकेँ छैक'—एहि तथ्यकेँ प्रायः केयो विचारवान व्यक्ति अस्वीकार नहि क' सकैत छथि। परिषद भारतीक माध्यमसँ जनमतकेँ

---

१. विभूति, वर्ष १, अंक १, पृ० ८-११।
२. तत्रैव, पृ० २७।

Scanned by CamScanner

शिक्षित करबामे सफल भेल। एहिमे प्रकाशित अनेक रचना मैथिली साहित्यक अमूल्य ओ संग्रहणीय निधि अछि तथा मैथिलीक विकासक क्रमक इतिहासके अपनामे समेटि क' रखने अछि। मैथिली साहित्य परिषदक तत्कालीन गतिविधिक सम्पूर्ण परिचय एकर अध्ययनसँ प्राप्त होइत अछि।

मैथिली आन्दोलनकेँ बल देबाक हेतु जानकी नवमी, विद्यापति जयन्ती आदि पर्वक आयोजनपर जोर देल गेल। जानकी नवमीकेँ जातीय पर्व कोना बनाओल जाय ताहि पर अपन विचार व्यक्त करैत ठाकुर सूर्यनारायण सिंह लिखने छथि —

'जानकी नवमी प्राचीन कालमे मिथिलाक जातीय पर्व रहल हो, परन्तु सम्प्रति ई मिथिलाक जातीय पर्व नहि, कारण स्पष्ट अछि। जखन मिथिलामे जातीयताक भावने नहि तखन जातीय पर्वक कोन चर्चा? मिथिला कहियो स्वतंत्र छली, जातीय भावनो छल परन्तु आइ से अवस्था नहि अछि। दिनानुदिन बिहारी भावनासँ मैथिल भावना दबि रहल अछि और अनेक स्थानमे तँ मैथिलत्वक चर्चो अराष्ट्रीय संकीर्ण साम्प्रदायिक भावना मानल जाइछ। (एहिठाम ध्यातव्य जे सम्प्रति हिन्दुत्वक चर्चा पर्यन्तकेँ स्वार्थी सत्तालोलुप राजनीतिज्ञ साम्प्रदायिक कहि, एकर चर्चोसँ घृणा करय लगलाह अछि) मिथिलाक मृदुल जल-वायुक कारणेँ जे एतै बसि जाइ छथि से एक आध शताब्दीक बादे अकर्मण्य, आराम तलब, 'विदेह' अर्थात् उदासीन ओ बतबनौआ भए जाइ छथि। कर्मण्यताक अभाव मैथिल प्रकृतिक विशिष्ट गुण देखना जाइछ। जातीयताक दृष्टियें समस्त मिथिलावासीक एक सूत्रमे संगठित हैवो असंभव अछि कारण जे मिथिलेश द्वारा संचालित मैथिल महासभा मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थकेँ छाड़ि आन कोनो जातिकेँ मैथिल नहि मानैत छथि। इहो लोकनि अपनाकेँ मैथिल नहि कहै छथि। एहिसँ हिनका सबहिकेँ कोनो छतियो नहि होइ छन्हि कारण जे जातीय व्यवस्थाक नेतृत्व आब ब्राह्मणक हाथमे नहि रहल। आब सब जाति अपना अपनामे स्वतंत्र अछि। दोसर बात ई अछि जे अखिल भारतीय अन्यान्य जातीय सभामे आबद्ध रहने मैथिल सहयोगक हुनका अपेक्षो नहि रहैत छन्हि। ई बन्धन दिनानुदिन ढीले भेल जाइछ। तखन मिथिलामे जातीयता आनबाक ओ तकरा राष्ट्रीयताक आधारपर दृढ़ बनैबाक उपाय की अछि?

उत्थान ओ पतन जातीय जीवनक लक्षणो थिकैक परन्तु पतनक कोनो सीमो होएबाक चाही जकरा अनन्तर उत्थानक पुनः आशा कैल जा सकए।

तन्तु विनष्ट कीटावच्छन्न तरु-गुल्मकें जेना जीवनक आशा नहि, तहिना आदर्श भ्रष्ट, स्वार्थी समाजक उत्थानहुक कोनो आशा नहि। कर्म्मयोग भ्रष्ट समाज, केवल ज्ञानयोग एवं भक्तियोगसँ जातीय जीवनक उद्धार नहि कए सकैत अछि। कहबाक तात्पर्य जे व्यापारक अभावमे केवल मौखिक, सहानुभूतियें अथवा केवल भक्ति ज्ञानक शुष्क व्याख्याने समाजक हित साधनक कदापि संभव नहि। जे जाति अपन गौरवस्तम्भ जनक जानकी, गौतम, याज्ञवल्क्य प्रभृति महापुरुषक आदर्शकें बिसरि गेल हो, सेवा, परोपकार, प्रेम, सत्य संकल्पक रहस्य बिसरि केवल 'छूतकभूत'सँ अपन प्रतिष्ठा बुझैत हो, स्वार्थी क्षुद्र नीतियें अपना आश्रितहुँक सहानुभूतिक अधिकारी नहि हो, तकरा की कहबाक चाही—सजीव जाति वा निर्जीव ? जाहि युगमे असभ्य संथाल प्रगन्ना ओ छोटानापुरक जंगली जाति अपन संथाली भाषाकें विश्वविद्यालयसँ स्वीकृत कराय, आब अलग राजनैतिक प्राप्त निर्माणक आन्दोलन करैत हो ताही युगमे सभ्य, कुलील पंडित लोकनि 'बालक खाल' निकालि, वृहस्पतिक उदय अस्तक समय दुर्बीनसँ देखि, मकरन्दक शुद्धाशुद्धि परोक्षाक योग्यता रखितहुँ क्षुद्र हास्यास्पद अतिचारक विवादमे अस्त व्यस्त भए रहल होथि ओ मिथिलाक गौरव महामहोध्याय लोकनि चुपकी सधने गृह कलहकें शान्त करेबाक चेष्टा नहि करैत होथि ई देखि अन्य समाज मैथिल समाजक प्रति कोन धारणा निश्चित करत ?

हा ! हन्त !! जे मैथिल कहिओ स्वतन्त्र छलाह, राष्ट्रसूत्रक संचालक छलाह, जगत गुरु बनि आर्य संस्कृकिक 'मानदण्ड' निश्चित करैत छलाह, एहि गृह-कलह पर वागवीर छथि, अपमानित, अवहेलित, उपेक्षित भए अपना घरहिमे परमुखापेक्षी छथि, ई पतनक पराकाष्ठा थिक !!

....जहाँक अधिकांश अधिवासीक हृदयमे मैथिल भावनाक स्थान बिहारी भावना लै रहल हो मैथिल चेतनाक क्रमश: अवसान भए रहल हो, ओ प्रबल बिहारी भावनाक मूल कारण स्वयं मैथिल सभाक अनुदार नीति हो, ओहि समाजकें नीति कुशल कोना कहब ? "मिथिलायां भव: मैथिल:" एहि सिद्धान्तक प्रचार मैथिली महासभा करौ तथा मैथिल भाषाक लिपि 'देवनागराक्षर' ई घोषणा मैथिली साहित्य परिषद करौ अन्यथा किछुये दिनमे मैथिल भावना मिथिलहुँमे अछूत भावना भए जाएत।

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय मैथिल भावना भारतीय भावनाक विरोधी नहि। जाहि युगमे आन्दोलनक प्रभावें भाषाक आधारपर राजनैतिक प्रान्तक निर्माण भए रहल हो ......ताहि कर्म युगमे यदि मैथिली भाषा भाषी बिना आन संस्कृतिक विरोध कैने अप्राकृतिक कृत्रिम (भविष्यक हिन्दुस्तानी) भाषाक स्थानमे अपन स्वाभाविक मातृभाषाक माध्यम द्वारा प्रारम्भिक अनिवार्य शिक्षाक न्यायसंगत मांग पेश करथि तँ हुनका भावनाकेँ ठोकराय लांछित करब कोन राष्ट्रीय सहृदयता थिक, ई नहि बुझि पड़ैछ। बंगला, उड़िया, गुजराती, मराठी भाषाभाषी जाहि तरहें राष्ट्र विरोधी नहि ताही तरहें मैथिल भाषाभाषी राष्ट्र विरोधी नहि कहा सकै छथि।.......

किछु महाशयक ई आशंका छन्हि जे बंगाली, नेपाली, उदूँक स्वीकृतियें बिहारमे अलग प्रान्तीय भावना नहि भए सकैछ, परन्तु संथालीक समान मैथिलीकेँ मातृभाषा स्वीकृति केने ऐतिहासिक प्राचीन मिथिला भविष्यमे बिहार प्रान्तसँ पृथक होएबाक आन्दोलन करत (स्मर्त्तव्य जे मिथिला केसरी बाबू जानकीनन्दन सिंह एवं डा० श्री लक्ष्मण झा, भूतपूर्व उपकुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, स्वतन्त्र मिथिला प्रान्तक आन्दोलन १९५५ मे कयनहुँ छलाह) ई शंका अनर्गल नहि। मिथिला प्राचीन भारतक सम्मानप्रद स्वतन्त्र राष्ट्र छल।..........

...जहिया मिथिलाक अन्न खेनिहार, वायु श्वास लेनिहार, पानि पिअनिहार अपन पंचभूत मिथिलाकेँ समर्पित कैनिहार एक स्वरें कहि उठथि जे मैथिली (जानकी) हमर छली, मैथिली (भाषा) हमर थीक। मिथिला देश हमर थीक, मिथिलाक लाज, हमर अपन लाज थीक। मैथिलीकेँ जन्म देनिहारि मिथिला एखनहु पतित पावनी थिकीह।....मैथिलीक जयन्ती तिथि महोत्सव एहि सुखद कल्पनाक पूर्ति करथु। तखनहि मिथिलामे जातीयता जागत ओ जानकी नवमी जातीयपर्व भए सकत।

एहि उद्देश्यक पूर्त्तिक हेतु समस्त मानाभिमानी मैथिल जानकीक जन्म दिन.......मिथिलाक भूत, वर्त्तमान,भविष्य (क) समस्या पर विचार विनमय करथु। विचारक विषय सामाजिक हो किम्बा धार्मिक, राजनैतिक हो अथवा साहित्यिक। तखनहि ई जयन्ती तिथि पुनः महोत्सव बनत।''[१]

---

१. भारती, वर्ष १, अंक ११-१२, पृ० ३६२।

उपर्युक्त उद्धरणसँ स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि जे 'भारती' राजदरभंगाक प्रभाव क्षेत्रमे कहियो ने रहल। मैथिल महासभाक संकुचित नीतिक फलस्वरूप जे मैथिली भाषीमे 'दराड़ि' भेल तकर फल आइ धरि हम सब भोगि रहल छी। ताहि दिन जे समस्या छल प्राथमिक शिक्षामे मातृभाषाक माध्यममे मैथिलीकेँ स्वीकृति प्राप्त करब से आइ भेटि चुकल अछि, परन्तु यदि सत्यक अपलाप नहि कयल जाय तँ स्पष्ट रूपेँ स्वीकार करय पड़त जे सब वर्गक लोक एखनहुँ मैथिलीकेँ अपनयबाक हेतु हृदयसँ प्रस्तुत नहि छथि आ तेँ प्राथमिक विद्यालयमे अनिवार्य रूपेँ ई कार्यान्वित नहि भ' सकल अछि। ई दोष ओहि संकीर्ण नीतिक थिकैक जकर उल्लेख कयल गेल अछि। एहि प्रकारेँ अप्रत्यक्ष रूपेँ एकर उत्तरदायित्व राजदरभंगा पर छैक। तखन पुनः 'भारती'केँ राजदरभङ्गाक प्रभावमे अयबाक कोनो सम्भावना नहि प्रतीत होइत अछि। अङ्क सभक अध्ययन कयला उत्तर यैह प्रतीत होइत अछि जे 'विभूति' मैथिलीमे पीत पत्रकारिताक आरम्भ करबाक उद्देसँ प्रकाशित होअय लागल छल जाहि परम्परामे एखनहु किछु पत्र-पत्रिका समय-असमय हुलकी दैत देखल जाइत अछि।

मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे १९३७-३८ ई० अपन विशेष महत्त्व रखैत अछि। एक दिस दरभंगासँ 'भारती'क प्रकाशन, दोसर दिस मुजफ्फरपुरसँ 'विभूति'क आ तेसर दिस १९२६ ई० मे अस्तंगत भेल 'मिथिला मोद'क पुनः प्रकाशन 'काशी'सँ आरम्भ भेल छल। एही समयमे प० रमानाथ झा जी 'साहित्य' पत्रक प्रकाशन क' मैथिलीक शब्द लेखनमे एकरूपता अनबाक प्रयास कयलनि जे 'शैली' नामेँ मैथिलीमे बहुचर्चित विषय रहल अछि। 'भारती' सेहो एहि प्रसङ्ग अपना भरि प्रयत्नशील छल। शैलीक प्रसङ्ग जे सम्पादकीय टिप्पणी देल गेल छल से पाठकक सुविधार्थ उद्धृत करब युक्तिसंगत प्रतीत होइत अछि। ओकर स्वरूप निम्नांकित अछि— 36?

"मैथिली साहित्यक सौभाग्यक विषय थिक जे अनेक व्यक्ति अनेक प्रकारेँ मैथिली साहित्यक सेवामे दत्तचित्त भेल छथि। सम्प्रति राजकीय पुस्तकालयक लाइब्रेरियन श्रीयुत रमानाथ बाबू 'साहित्य' नामक त्रैमासिक पत्रिकाक प्रकाशनमे लागल छथि। पत्रिका शीघ्र बहार हैत। तावत् शैलीक विभिन्नता देखि रमानाथ बाबू एक लिष्ट सन्देहास्पद वाक्य वा शब्द समूहक प्रस्तुत कएने छथि ओ प्रमुख लोकक ओतय सम्मत्यर्थ पठौने छथि। हमरहु एक

Scanned by CamScanner

प्रति भेटल अछि। लिष्ट लम्बा अछि तथापि पूर्ण नहि कहल जाय सकैछ। हम तकरा एहि अङ्कमे प्रकाशित कराए रहल छी। एहि मे अधिकांश स्थल सन्देहास्पद अवश्य छैक ओ तकर निर्द्धारण हैब आवश्यक अछि। परिषदक शैली निर्द्धारण समिति जे संगठित भेल दुर्भाग्यवश तकर आयोजन अद्य पर्यन्त नहि भए सकल किन्तु पं० श्री जीवनाथ राय जी एहि प्रकारक एक दोसर लिष्ट ओहि समितिक हेतु प्रस्तुत कएने छथि। एहना स्थितिमे श्रीयुत रमानाथ बाबूक एहि उद्योगक हम स्वागत करै छी ओ भिन्न भिन्न व्यक्ति सौं सम्मति लेलाक बाद एहि विषयक विशेषज्ञक एक अधिवेशनो कराएब आवश्यक बुझै छी जाहिमे पूर्ण शंका-समाधान भए प्रत्येक विवादास्पद स्थलक निराकरण भए एक आदर्श शैलीक स्थापना हो किन्तु कोनो व्यक्तिक ओतए लिष्ट पठैवामे तारतम्य नहि हैबाक चाही, कारण जे मैथिली कोनो खास जाति वा वर्गक भाषा नहि थीक। एहिमे सभक सम्मति अपेक्षिते नहि प्रत्युत अनेक प्रणाली जे कोनो विशिष्ट समाज मे अशुद्ध वा अभद्र बुझल जाइछ, से बहुमत सँ सार्वजनिक बुझना जाए तँ तकरे अवलम्बन उचित अन्यथा ई लोक भाषा नहि रहि सकत। हम ई मानै छी जे अनेक प्रचलित शैलीसँ कोनो एकके 'साहित्य'मे रखबाक चाही परन्तु एकर निर्द्धारण बहुत अंशमे 'मनमाने' (Arbitrary ए) हैत।

…………हमर निश्चित धारणा अछि जे शैलीक फेरमे अपना शक्तिक थैली नहि उझली। मिथिला भाषाक प्रयोग अधिकाधिक हो तकरे यत्न करैत जाइ। शैली अपनहि स्थिर भए जाएत।[1]

'शैली' एक एहन विवादास्पद विषय बना देल गेल जे एखन धरि ओझरयले अछि। स्मर्त्तव्य जे एहि प्रश्नक समाधानक हेतु मैथिली अकादमी पटना सेहो विचार गोष्ठीक आयोजन कयने छल। परन्तु भाषामे कृत्रिमताक स्थान पर स्वाभाविकता पर विशेष जोर देलासँ प्रसार-प्रचारमे सुविधा होइत छैक। ओना मैथिलीमे प्रकाशनक दृष्टिएँ देखला सँ सन्तोषजनक प्रगति भेल अछि। विभिन्न शैलीमे छपैत अछि आ पाठक तकरा पढ़ि लैत छथि। अतः प्रचलित सब रूपकेँ वैकल्पिक प्रयोग मानि लेलासँ प्रगति मे कोनो बाधा होयबाक संभावना नहि। तथापि एखन धरि एहि प्रश्नकेँ ऊघल जा रहल अछि।

१. भारती, वर्ष १, अंक ११-१२, पृ० ४३६।

एहिना मिथिलाक्षरक प्रचारक हेतु एहि शताब्दक आरंभे सँ जतेक प्रयास होइत रहल ततेक एकर ह्लास होइत गेल। 'भारती'सँ पूर्व 'मिथिला'क सम्पादन करैत बाबू भोला लाल दास एहि हेतु ततेक सक्रिय छलाह जे 'मिथिला'क सम्पादकीय एक अंकमे मिथिलाक्षरेमे छपने छलाह, परन्तु 'भारती'क मुखपृष्ठ पर मिथिलाक्षरमे बनल 'ब्लाक' केँ छोड़ि अन्यत्र कतहु एकर प्रयोग नहि क' सकलाह। एही ७-८ वर्षमे मिथिलाक्षरक काँटा आदि नष्ट भ्रष्ट भ' गेल छल। अतः अध्यापक सूर्यनारायण सिंहक एहि विचार पर जे "मैथिली साहित्य परिषद मैथिली भाषाक लिपि 'देव-'नागराक्षर' घोषित करौ अपन सम्पादकीय टिप्पणी मे लिखने छथि—"···· सभक सुविधाक हेतु परिषद देवनागरहिक द्वारा अपन यावतो कार्य कए रहल अछि अतः लेखक महोदय केँ आशावादी होएबाक चाही।[१] एही उक्ति सँ स्पष्ट अछि जे 'भारती' मिथिलाक्षरक प्रगङ्ग उदासीन भ' गेल छल। स्मर्त्तव्य जे एखनहु हमरालोकनि मिथिलाक्षरक मोह छोड़लहुँ अछि नहि, परन्तु जेना दिनानुदिन एकरा हम सब बिसरल जा रहल छी, यदि सैह क्रम रहल तँ किछु दिनुक बाद प्राचीन बहुतो पाण्डुलिपिकेँ पढ़ब दुरूह भ' जायत आ ताहि सँ मैथिली साहित्यक प्राचीनता पर कतेक आघात होयत से मैथिलीक अभ्युत्थानक चिन्तामे रहनिहार केँ सोचबाक चाही।

मैथिलीमे जे कोनो पत्र बाहर भेल, सब मिथिलेशक गुणानुवादमे एहि लोभसँ लागल रहल जे आन-आन क्षेत्रमे लाखक लाख खर्च करैत छथि, यदि कहिओ मातृभाषाक दिस दयादृष्टि पड़ि जयतनि तँ पत्रिका चिरायु भ' सकत। 'भारती' सेहो एहिमे पश्चात्पद नहि भेल। महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह, राजा बहादुर विश्वेश्वरसिंह आदि सभक चित्र समय-समय पर छपैत रहल, परन्तु एहि सभक कोनो प्रभाव मिथिलेश पर नहि पड़लनि। ईहो कोहुना वर्ष पुरौलक आ अस्तंगत भ' गेल।

'भारती'मे जाहि लेखक सभक रचना छपैत छलनि से लोकनि छलाह —

प० सीताराम झा, काली कुमार दास, श्रीमती योगमाया देवी, श्रीमती अरुन्धती देवी, श्रीमती विद्यावती देवी, श्रीमती सीता देवी, ठाकुर सूर्य-

---

१. भारती, वर्ष १, अंक ११-१२, पृ० ३६४।

Scanned by CamScanner

नारायण सिंह, श्री उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', जयनारायण मल्लिक, जीवनाथराय मुनीन्द्र मोहन मिश्र, अच्युतानन्द दत्त, त्रिलोक नाथ मिश्र, लक्ष्मीपति सिंह, मुंसी रघुनन्दन दास, म. म. डॉ० उमेश मिश्र, श्री दामोदर लाल दास, सूर्य देवनारायण श्रीवास्तव, श्रीबल्लभ झा, रमानाथ झा, श्री नरेन्द्र नाथ दास, श्री जयनारायण झा 'विनीत', म.म. गंगानाथ झा, डॉ० श्री सुभद्र झा, भीमेश्वर सिंह, जीवनाथ झा, महावीर झा 'वीर', श्रीदुर्गाधर झा, श्रीमती शाम्भवी देवी, पुलकित लाल दास 'मधुर', श्यामानन्द झा, भुवनेश्वर झा, नलिनी मोहन सान्याल, डा० श्री कांचीनाथ झा 'किरण', दुखहरण झा 'शिवेश', बाबू क्षेमधारी सिंह, इन्द्रनारायण दास 'दीन', हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज' श्री आरसी प्रसाद सिंह, श्याम सुन्दर झा 'मधुप', जनार्दन झा 'जनसीदन', काशी नाथ झा, कपिलेश्वर मिश्र वकील, बबुआजी झा, शिवनन्दन ठाकुर, श्री रमाकर जी, उमाकन्त झा, जगदानन्द, शंकरलाल दास 'मुग्ध', जितेन्द्र नारायण सिंह 'इन्द्र', परमानन्द दत्त 'परमार्थी', हरिश्चन्द्र झा 'कविराज', कन्तलाल चौधरी, कालीकान्त झा, श्रीसुरेन्द्र झा, श्री उपेन्द्र महारथी, विभूति भूषण मुखोपाध्याय। एकर अतिरिक्त किछु छद्मनाम भेटैत अछि, यथा—'पागल', भारतीय, चितरंजन, 'जौहरी' 'प्रकाश देव' तथा 'झाजीक चिट्ठी', शीर्षक सँ आरंभ मे श्रीयुत हरिमोहन झाजी सेहो लिखैत छलाह।

समग्र रूप सँ कहल जा सकैत अछि जे 'भारती' मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे अपन महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। समाजक, राष्ट्रक ओ विशेषतः मिथिलाक सामाजिक ओ राजनीतिक प्रत्येक दिशामे सतत साकांक्ष रहि समाजक मार्ग दर्शन करैत छल। मैथिलीक प्रसङ्ग प० श्री गिरीन्द्र मोहन मिश्र, राजपण्डित बलदेब मिश्र तथा कुमार गङ्गानन्द सिंहक देल गेल भाषण छापि संग्रहणीय बनि गेल अछि।

विभूति

श्री भवनाथ शर्मा साहित्यालंकार नामसँ बाबू भुवनेश्वर सिंह, 'भुवन' मुजफ्फर पुर सँ १९३७ ई० क मार्च मास सँ 'विभूति' नामक एक मासिक पत्र प्रकाशित करय लगलाह।

डॉ० श्री जयकान्त मिश्र एकर गुण-दोषक विवेचन करैत लिखने छथि जे विभूति, भारती जकाँ, कोनो एहन प्रगति नहि कयलक जे एकदम देखार हो।[1]

डा० श्रीदुर्गानाथ झा 'श्रीश'क मन्तव्य छनि—

''भुवन''जीक 'विभूति' प्रगतिशील उद्देश्ये अवतरित भेल। भुवनजी क्रान्तिकारी विचारक निर्भीक व्यक्ति छलाह ओ ओहि युगमे हुनक निर्भीकता प्रगतिशील लोक मे तँ लोकप्रिय भेल, मुदा ओहि कारणेँ 'विभूति'क अन्तो भए गेलैक। भुवनजी एहि मे म० म० मुरलीधर झाक शैली अपनाओल मुदा से संक्षिप्तताक दृष्टिएँ, कारण, 'आषाढ़'क भूमिकामे प्रकाशित हुनक गद्य शैली मैथिली ध्वनि केँ सएह अनुसरण कएने अछि। नवीनताक दृष्टिएँ 'विभूति'क प्रकाशन मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे स्वर्णाक्षरसँ लिखबा योग्य अछि। एहि मध्य नवीन प्रकारक लेख, निबन्ध, आलोचना ओ कविता सभ प्रकाशित होइत छल। नवीन शिल्पक दृष्टिएँ मैथिलीक गल्प

---

१. "The 'Vibhuti was a popular monthly published from Muzafferpur, began its career well. It was priced very law, considuring that it used to give very interesting, though at times provocative, matter and that an established writer like Bhuvaneshvar singha "Bhuvana" was its editor. Its articles were revolutionary in spirit and envisaged a new time of work—that of ready-wit and humour. It met wtth its end soon because its style of spelling was new to Maithili readers, because it went too far in criticising the old institutions and because it gave an impression of malicious propaganda. The chief cause however, why 'Bharati' and 'Vibhuti' caused to come out was that the public were disillusioned even on the installation of the popular ministries in the province so far as the cause of Maithili was concerned. No perceptible progress could, therefore, be made by these papers." —पृ० २३४।

Scanned by CamScanner

साहित्य सभसँ पहिने एहि मध्य प्रकाशित भेल। एहिमे प्रकाशित हास्य व्यंग्य बड़ मार्मिक होइत छल ओ आइओ नवीनताक एक विलक्षण अध्यायक दृष्टिएँ एहिमे प्रकाशित सामग्री मैथिली साहित्यक इतिहासमे अपन वैशिष्ट्य रखैत अछि। एकरे अध्ययन सँ भुवनजी ओ हुनक विचार धाराक कवि लेखक वृन्दक' प्रवृत्ति-विश्लेषणमे बड़ सहायता भेटि सकैत अछि। दरभंगा राजक संग व्यक्तिगत विवादक कारणें एहि पत्रिकाक अन्त भेल यद्यपि ई बड़ लोकप्रिय छल तथा एकर मूल्य वार्षिक सावा टाका मात्र छलैक''।[१]

आब विभूतिक सम्पादक 'सम्पादकक बात' शीर्षक प्रथमे अंकक सम्पादकीयमे एकर उद्देश्य पर प्रकाश देने छथि तकर अवलोकन कयल जाय। एहु पत्रमे सम्पादकक बात' मिथिलाक्षरमे बनाओल 'ब्लाक' सँ छपल अछि जे मिथिलाक्षरक रक्षाक मोह केँ सूचित करैत अछि। सम्पादक लिखने छथि—

"आइ मातृभाषा मैथिलीक अर्चनार्थ 'विभूति'क संग सादर, सस्नेह, सोल्लास किन्तु शंकित चित्तहि सँ साहित्य प्रांगण में उपस्थित भेल छी। हमरा हेतु सब तरहें घर फूकि तमासा देखबाक सदृश भेनहुँ जँ ई प्रयास सर्वसारधाणक मनस्तुष्टि साधित कै सकै एवं एहिसँ अपन जातीय साहित्यक आंशिको पूर्त्ति भै जाय, त हम सब परिस्थतियहुँ में एहिसँ परमानन्दे लाभ करब। मातृभाषाक महिमा वृद्धि क हेतु 'विभूति' क रूप में आइ हम अपन हृदयक रक्त-विन्दु अर्पित कै रहल छी, परिचिते तकर अनुभव कै सकताह, किन्तु एकर सार्थकता तखनहि सम्भव जँ गुणज्ञ तदनुरूपे गुण बुझथि। जे विश्व विधानक सूत्रधार थिकथि, जनिका सँ हमरा 'विभूति'क प्रेरणा भेटल, जनिक अनुकम्पा 'विभूति'क जीवनक कारण भेल, आब वैह 'विभूति' केँ सब तरहें विभूतिवती बनावथु। जनिक महिमा घोर निराशाक अन्धकारहुँ में हमरा जीवन ज्योति देखबैछ, आब हमरा ओही महामहिमान्वित 'राजराजेश्वरी'क कल्याण निलय पाद-पाद्मक एकमात्र प्रत्याशा और भरोस।

साहित्य और समाजक सर्वांगिण (?) उन्नतिये 'विभूति'क लक्ष्य थीक। राजनीति में ततेक परबाक (?) इच्छा हमर नहि अछि। किन्तु समयक

२. मै० सा० इतिहास, पृ० १२६।

जे अपेक्षा छैक, तकर उपेक्षो सँ उद्देश्य सिद्धि नहिये हैत। 'विभूति' व्यक्ति केँ नहि, कार्य केँ, गुण केँ देखत। ने व्यर्थ ककरो कष्ट देत, ने प्रभावक डरें प्रशंसा-पुराणक रचना करत। सत्यक सदैव पक्ष लेत ओ यथासम्भव प्राणपण सँ देश, जाति और भाषाक हित साधत। किन्तु इहो इश्वर (?) नहि थीक। भ्रम मानव-धर्म थिकै, तैं जँ कहियो चुकत त अपन दोष मुक्त-कंठ सँ स्वीकार करबा में कदापि पश्चात्पद नहि हैत। ओकरा अपन नीति पर दृढ़ रहि लक्ष्य साधित करबाक, अछि किन्तु और उन्नत मार्ग देखैबाक भार आब परमोदार गुणज्ञ पाठक लोकनिक ऊपरहि रहल। हमर यैह कामना अछि जे जाहि दिन हम पथ भ्रष्ट होइ, जाहि दिन हमरा सँ सत्यक अपलाप हो, जाहि दिन हम शब्द क शक्ति वा आत्मा केँ बेचि दी, ताहि दिन हमर सर्वथा पतन हो। 'विभूति'क ओहेन जीवन हमरो अपेक्षित नहि अछि।

हम निन्दक नहि छी। हमराककरो सँ व्यर्थ विरोध नहि अछि। हमहुँ अपन स्वभाव सद्भावनामय रखैत छी। आन सम्प्रदायक हमरो प्रचण्ड पक्षपात अछि। हमहुँ पूर्वजक पथावलम्बी छी। हमरो अपन जाति, अपन साहित्य, अपन रीति-नीतिक प्रति तेहने ममत्व अछि। तैं जे 'विभूति'क पाठ करथि, से विवेक केँ संग राखथि। अपन मनक प्रतिकूल बात देखथि, तँ ठंढ़ा हृदय सँ विचार करथि। वैयक्तिक सद्भाव और वस्तु थीक। 'विभूति'क सम्पादकक हैसियत सँ जे किछु लिखल जैत, ओ शत्रु मित्र क भाव सँ बहुत ऊपर उठि, व्यापक और उच्च दृष्टिकोणहि सँ लिखल जैत। जाहि मित्र क आलोचना एहि मे हो, ओ ई बुझथि जे सम्पादकक आसन पर बैसि कर्त्तव्य क निर्वाह करबे एकर मात्र कारण थीक। कोनो क्षुद्र भावना एहिमें नहि।

मैथिली में एक वा अनेक नहि, त कतेको पत्र समय समय पर प्रकाशित भै अन्तर्हित होइत गेल। जँ प्रकृतिक धर्म कैम रहलैक, त जीवन-मरणक ई चक्र घुमितहि रहत। एहि सँ घबरैबाक, वा कोनो दुराशाक भाव ग्रहण करबाक आवश्यककता हम नहि बुझै छी। नें हमरा एहि सभहक कारणक अनुसन्धाने सापेक्ष्य अछि। सभहक समय होइ छैक। सभ अपना अपना अवसर मे किछु कार्य कै जाइछ। कर्मयोगे संसारक सम्बल थिकै। तैं 'विभूति' क हेतु उपयुक्त वातावरण, उपयुक्त क्षेत्र तैयार अछि वा नहि, तकर हम विचारो नहि करै चाहैत छी। हमर जे कर्त्तव्य से हम कैल,

लोकक जे कर्त्तव्य से ओ करत। मैथिल जाति जीवन हीन अछि से हम नहि मानैत छी। आइ नहि त काल्हि ओहो आँखि खोलबे करत। समय स्थिर भै बैसबाक अवकाश नहि दैतैक।

'पत्र प्रकाशित त भेल, कतबा दिन चलत?' जनिक ई विचार धारा छन्हि, जे सहायताक स्थान में गोलैसी केँ अपन ध्येय बनबैत छथि, निस्सन्देह स्वभाषा क पत्रकेँ नहि पनपय देबा क मुख्य पाप हुनके लोकनिक थीक। तकर प्रायश्चित्त हुनका लोकनि केँ करै पड़तन्हि, जहिया पड़ौन्हि। हँ, हम ई मुक्त कण्ठ सँ घोषणा करै छी जे उपेक्षा सँ, साधनाभाव सँ वा कोनो कारणे पत्र नहिये चलौ, कोनो पत्र केँ प्रकाशित करबाक चेष्टो संचालक समुदाय क विवेक और धैर्य्य क दुन्दुभि थीक। ओ निन्दा और आक्षेप सहैत छथि, परिस्थितिसँ लड़ैत छथि, गाँठक द्रव्य गमबैत छथि, और समाजक सम्मुख अपन पद-चिह्न छोड़ि जाइ छथि। हिनक विफलतो सफलते थीक। हिनक उद्योग भावी पीढ़ी केँ प्रेरणा दैछ, आलोक देखबैछ। के एहन छथि जे ई सिद्ध कै सकथि जे पत्र क व्यवसाय सँ अमुक जनताक एतेक द्रव्य ठकलन्हि? जँ कथौ नहि, त टट्टीक ओट सँ सिकार खेलैनिहारो अपन स्वरूप चिन्हथु, और पत्रकार क महत्तो कें बुझबा क चेष्टा करथु। की 'विभूति' एहन निन्दकक सत्कार केँ सहितहुँ, मिथिलाक विवेकवान जन, एवं तरुणक सहयोगक आशा करौ?

हम सभहक कल्याण कामना करैत छी। सभकेँ जागृत, सभकेँ प्रभावित एवं सभकेँ गौरवान्वित देखै चाहैत छी। हमर इच्छा अछि जे मिथिलाक घर घर सुख समृद्धि, शान्ति सद्भाव और सहयोगक निवास स्थल बनौ। सभहक हृदय निर्मल भै जान्हु। भगवती मैथिली 'विभूति'वती भै, विभूति वितरण करैत आनन्द विह्वल भै खिलखिलाथु। हमर मनोकामना और अनन्त भावना परिपूर्ण हो। हम 'विभूति' क रूप में एही महान प्रयत्नक समारम्भ करैत आनन्द और उत्साह क शंख फुँकैत छी।"[1]

ध्यातव्य थीक जे 'विभूति'क पहिले अंकमे जाहि प्रकारक शंका अभिव्यक्त भेल अछि ताहि सँ संस्कृतक ई लोकोक्ति 'मत्कम्बले फालोनास्ति' चरितार्थ होइत अछि। पाठकक समक्ष अंक पहुँचल वा नहि, "हम निन्दक नहि छी,

---

१. विभूति, वर्ष १, अङ्क १, पृ० २७-२९।

शंकित चित्तहिसँ साहित्य प्रांगण मे उपस्थित भेल छी, जे 'विभूति'क पाठ करथि से विवेक केँ संग राखथि'' आदि वाक्य लिखब की आन्तरिक सफाइक परिचायक नहि थिक ? घोषणा कयल गेल जे ''ने व्यर्थ ककरो कष्ट देत ने प्रभावक डरें प्रशंसा-पुराणक रचना करत।'' परन्तु प्रथमे अंकसँ कटु भाषण आरम्भ भेल। 'भारती' पत्र तथा मैथिल साहित्यक परिषदक प्रसंग 'विभूति'क दृष्टिकोणक उल्लेख 'भारती'क विवेचनाक क्रममे कयल जा चुकल अछि आ दोसरे अङ्क सँ मिथिलेशक गुणगान 'सम्पादकक बातमे कयल जाय लागल। 'श्रीयुत राजभक्त' नामसँ सम्राट् षष्ठ जार्जक जे गुणगान कयल गेल अछि तकर नमूना देखल जाय—

''सरल छथि, शुद्ध छथि, विशाल हृदय छथि, सर्वगुण सम्पन्न छथि के ? हमर सम्राट् ! ग्रेट ब्रिटेन, आयर्लेण्ड, अनेक उपनिवेश, और भारतवर्षक भाग्य विधाता। सरस्वती और लक्ष्मी जनिका मस्तक पर अपन पाणि-पल्लवक छाया पसारने छथि जनिका पर सुप्रसन्न आशुतोष अशेष शिवक वर्षण कै रहल छथि। जनिका सौभाग्य क संसार में तुलना नहि।''[२]

एकरा प्रशंसा पुरा नहि कहब तँ की कहब ? संगहि सम्राट्क परिवारक चित्र, सम्राट्, सम्राज्ञी, युवराज्ञी सभक जीवनीक झाँकी प्रस्तुत करब प्रशंसा पुराण नहि कहाओत ? सम्राट् षष्ठ जार्जक चित्रक नीचामे संस्कृतक एक श्लोक छपल अछि—

रत भारत राज राज लक्ष्मी नव पाणिग्रह दीक्षितः प्रतापी।
प्रकृति प्रिय शासनः सुकीर्त्तिश्चिर जीवतु सुखमस्तु षष्ठ जार्जः ॥

—श्री बदरीनाथशर्मणः

ई कोन क्रान्तिकारिताक लक्षण भेल जे एक दिस सम्पूर्ण राष्ट्र अंग्रेजी शासन केँ जड़िसँ उखाड़ि क' फेकि देबाक हेतु फाँड़ भिड़ने हो आ दोसर दिस एक पत्रकार, जनिका हेतु निर्भीक, क्रान्तिकारी, प्रगतिशील आदि विशेषणक प्रयोग कयल जाइत हो, प्रगतिशीलताक प्रवर्त्तकक रूपमे जनिका चित्रित कयल जाइत हो, से एहि प्रकारक स्तुति मे संलग्न होथि ? राज्याभिषेकपर, राजभक्तिपर विस्तारसँ लेख लिखा क' ओही अंकमे छापब चाटुकारिताक प्रत्यक्ष प्रमाण थिक।

१, विभूति, वर्ष १, अंक ३, पृ० ९।

Scanned by CamScanner

भाषाक प्रयोगमे शालीनताक निर्वाह कतहु नहि कयल गेल अछि। "किछु अमर आत्मा" शीर्षकक अन्तर्गत अनेक महान व्यक्तिक जीवन पर प्रकाश देल गेल अछि जाहिमे जान डी० राकफेलरक, जे एक अमेरिकन छलाह, दानशीलताक वर्णन सेहो कयल गेल अछि। उपसंहारक अंश पाठकक समक्ष रखैत छी—

"हँ, एक मिथिला अछि, जतैक लक्ष्मीवाहन लोकनि दोसरे ठाठमें साठ माठ करैत रहैत छथि! कतहु पेरिस बनैत अछि त कतहु गीदर कुकुर कें स्वच्छन्द बिहरबाक वातावरण छन्हि! इ जाति जँ रसातल नहि जाय त सैह अनर्थ, सैह महा आश्चर्यक विषय हैत। देखी कुलकलंक लोकनि कुलरत्न कहिया बनैत छथि।"[1]

एहिमे स्पष्ट आक्षेप जाहि व्यक्ति वा वर्गपर अछि से साधारणो पाठक कें बोधगम्य होयबामे दुरूह नहि। एहि प्रकारें शालीनताक परित्यागे जँ प्रगतिशीलताक परिचायक हो तँ समाज एहन प्रगतिशीलता ल' की करत से सुधी समाजक हेतु मननीय भ' सकैत अछि। वस्तुत: मैथिलीक समस्या अथवा समाजमे पसरल कुरीति आदिक निराकरण करबाक उद्देश्य सँ एकर अवतारणा नहि भेल छल। एकर अवतारणा भेल छल मनक आक्रोश व्यक्त करबाक हेतु जकरा उपरिलिखित सन्दर्भ प्रमाणित करैत अछि।

शैलीक दृष्टिएँ ई अवश्य अत्यन्त प्रगतिशील छल। भाषाक स्वरूपकें प्रेसक विकासकें दृष्टिमे राखि संक्षिप्तसँ सँक्षिप्त रूप तथा उच्चारणक अधिक निकट स्वरूपक प्रयोगमे ई सब पत्रसँ अगुआयल अछि। डॉ० 'श्रीश'क कथन जे "ई म. म. मुरलीधर झाक शैली अपनाओल" सर्वाशत: शुद्ध नहि अछि। म. म. जी जैत, हैत आदिक स्थानमे जाएत, होएत सैह प्रयोग करैत छलाह जे एही पुस्तकक 'मोद'क प्रकरणमे देखल जाय सकैत अछि। तखन ई कहल जाय सकैत अछि जे 'विभूति' 'मोद'क बहुत निकट छल।

यद्यपि भाषाक दृष्टिएँ आन-आन पत्रक अथवा पुस्तकक ओ रचनाक एहि पत्रमे बहुत भर्त्सना कयल गेल अछि, परन्तु अशुद्धिक दृष्टिएँ एहिमे किछु अक्षम्य अशुद्धि देखल जाइत अछि। एहिमे सबसँ पहिल रचना 'विभूतिकण' नामसँ सूक्ति सभक संचयन कयल रहैत छल। प्रथमे अङ्कमे जे विभूतिकण

---

१. तत्रैव, अंक ४, पृ० १६।

छपल अछि तकर लेखकक नाम छपल अछि—"कविन्द्र रविन्द्र नाथ'। एकरा प्रेसक भूतपर नहि थोपल जाय सकैछ, कारण विषय सूचीमे सेहो कविन्द्र रविन्द्र सैह छपल अछि। एहि प्रकारक अशुद्धि जे 'सम्पादकक बात'मे छपल अछि आ एहिठाम उद्धृत कयल गेल अछि, सुधी पाठकक हेतु हम ताहि-ताहिठाम प्रश्नसूचक चिह्न कोष्ठमे लगाय देल अछि।

ई नग्न सत्य थिक जे 'भुवन'जीकें मातृभाषा मैथिलीक प्रति एकान्त निष्ठा नहि छलनि; ओ हिन्दीक प्रति सेहो ओतबे निष्ठावान छलाह आ हिन्दीसँ अनुवाद क' 'विभूति'मे प्रकाशित करैत रहैत छलाह, हिन्दीक समर्थकगण अप्रसन्न नहि होथि तकरो चिन्ता रखैत छलाह। एहि कथनक पुष्टिमे छोट सन एक उदाहरण देखल जाय। मैथिली साहित्य परिषदक सातम अधिवेशन पटनामे सम्पन्न भेल छल, ताहिसँ मैथिलीक हेतु उपयोगी काज सेहो भेल, परन्तु 'विभूति' लिखैत अछि—

"मैथिली साहित्य परिषद' पटनामे अपन विजय स्तम्भ गाड़ि देलक, हिन्दी तिन्दीक चिन्दी उड़ि गेल। आब मैथिलीक अमरत्वमे बाधा की ? एक बेर प्रान्तमे धावा, बस किला दखल। तकर बादसँ उड़ाउ मलहक्का !"[१] ई एक दिस मैथिलीमे पत्र प्रकाशित करैत छलाह तँ दोसर दिस हिन्दीमे सेहो 'वैशाली' नामक मासिक पत्र। मैथिल महासभाक संकुचित नीतिक कारणें मैथिलीकें बहुत क्षति भेलैक, तकरे टा विरोध रहैत तँ एक बात छल, मै० सा० परिषद तँ उदारनीति रखने छल, परन्तु ई तकरो विरोध करैत रहलाह। अतः िनक क्रान्तिकारिता राज दरभंगाक संग वैयक्तिक विरोधपर आधारित छलनि, जे पीत पत्रकारिताक कोटिमे 'विभूतिकें' राखि दैछ। मिथिलामोद, श्रीमैथिली, मिथिला, भारती आदि पत्रमे मातृभाषा मैथिलीक हेतु जे आगि, जे उत्ताप, जे आतुरता देखल जाइत अछि, 'विभूति'मे तकर दर्शन नहि भेल। हमरा प्रथम वर्षक ८,९,११ अंक छाड़ि शेष ९ टा अंक तथा दोसर वर्षक १—२ तथा अंक ३ देखबाक सुसंयोग लागल एतबा अंकमे कोनो योजनाबद्ध स्थायी साहित्यक प्रकाशनक कोनो आभास नहि भेटल। पंचवक्त्रम, अतीचार, प्रायश्चित आदि पुरान-धुरान बात पर एहूमे खूब चर्चा अछि। हँ, आलोचना, व्यंग्य-वक्रोक्ति, कटूक्ति एहि सबमे एहन मुखर स्वर एहिसँ पूर्व प्रकाशित कोनो पत्रमे नहि देखबामे

१. विभूति, वर्ष २, अंक १-२, पृ० ५२।

Scanned by CamScanner

आयल। स्पष्टवादिता अवश्य गुण थिक, परन्तु स्पष्टवादिताक नामपर एहन भाषाक प्रयोगकें अमर्यादित मानल जायत। 'किमाश्चर्यमतः परम्" शीर्षक व्यंग्य-स्तम्भसँ अतिरिक्त 'चाबुक' शीर्षकसँ दोसर व्यंग्य स्तम्भ आरम्भ कयल गेल। मनोरंजनार्थ ओ उक्त मन्तव्यक प्रमाणस्वरूप एक छोट सन उदाहरण पर्याप्त होयत—

"वाहरे हमर श्रीनगराधीश! जिबैत रहू जिबैत। अत्रिसँ लै यम-स्मृति धरिक तेहन स्मृति घोंटना घोंटल जे विधान-पद्धतियो घुटकै लागल। बजैत बजैत औङ्हैलहुँ नहि सैह आश्चर्य! अपने 'रिसर्च'क वस्तु छी ताहिमे सन्देह नहि। आन्हर लोकनिकें एहिना......सुंघा-सुंघा फुजेल मँहकबैत रहू।"[1]

'विभूति'क शरदाङ्क, जे हमरा देखबाक सुयोग नहि भेल, प्रायः ८ ओ ९ म अङ्क छल होयत। 'भारती'मे एकर समीक्षा देखबामे आयल। जे अङ्क सब देखल अछि ताहि पृष्ठभूमिमे ई समीक्षा समुचिते प्रतीत भेल। पाठकक ध्यान एहि दिस आकर्षित करबाक हेतु उद्धृत करब युक्ति संगत प्रतीत होइछ। 'श्रीयुत चित्तरंजन जौहरी' नामें ई समीक्षा कयल गेल अछि जे निम्नांकित अछि—

"विभूतिक शरदाङ्क पाबि प्रसन्न भेलहुँ। Get-up देखि हृदय फूलि उठल। दुर्गोत्सव सम्बन्धी साहित्यक सूची पढ़ि भाव उमड़ि पड़ल, किन्तु दोसरे पृष्ठपर श्री १०८ भगवती दुर्गाक १८ म शताब्दक निर्जीव चित्र देखि ओ संस्कृतमे दुर्गोपनिषत पढ़ि हृदयक उल्लास तोड़ लेलक। भगवतीक चित्रमे चित्रकलाक त्रुटि निकालब अथवा शक्तितत्व निरूपणमे भाषाभावक समालोचना करब नास्तिकक लक्षण थीक, हम एहि सिद्धान्तकें नहि मानै छी, विशेषतः विभूतिक सदृश समालोचनात्मक पत्रक हेतु। एहि अंगरेजी (!) चित्रकारक चित्रकें छापबाक की अर्थगौरव छैक, विदित नहि। हमरा तँ अंगरेजी चित्रकारक अर्थो नहि लागल जे अंगरेज थिकाह वा अंगरेजी जननिहार हिन्दुस्तानी। अस्तु, आगाँ बढ़लहुँ—जे भवनाथशर्मा साहित्या-लंकार एतेक दिन केवल अनुमान खण्डक प्रतिपाद्य विषय छलाह से एहि शरतअंक मध्य सूर्यनारायणक प्रकाशमे स्पष्ट देखि पड़लाह। एतेक शीघ्र

---

1. विभूति, वर्ष २, अंक ३, पृ० ८४।

फरजी कारबाईक ई बंदिश तोड़ि देल जाएत—तकर आशा नहि छल, किन्तु चित्रक नीचामे पूर्ण विवरण पढ़ि विश्वास करहि पड़ल जे साधारण ओ विशेष सम्पादकमे अभेद सम्बन्ध अछि। विचारए लगलहुँ, आखिर एकर कारण का थिकै ? संभव थीक श्रीभुवनजीक ई ब्लाक पूर्वमे प्रस्तुत नहि हो।

फरजी टूटल तँ नहि छति, किन्तु प्रारम्भमे सम्पादकक चित्र रहब विज्ञापन तने बूझल जाएत, ई विचारि लेब आवश्यक छल। दुर्भाग्यवश सम्पादकीय प्रदर्शनक हेतु ई अंक अनेक प्रकारेँ अतुलनीय (Master Piece) अछि। पण्डित दीनबन्धु झा जीक छोट छीन लेख पर ४ गोट सम्पादकीय टिप्पणी जड़ल अछि। तेरहमो पृष्ठक सं० टी० उच्च स्वरेँ तकरे समर्थन करैछ। प० श्री सीताराम झा जीक पद्य पर पद्यमय सं० टी० की तकर अतिरिक्त घृष्टता पूर्णो नहि अछि ? कहाँ सम्पादन सम्बन्धी गोदानक मूल्य और कहाँ कविवरक एक-एक पद्यक महत्त्व ! ई सोनाकेँ करजनीसँ तौलब नहि तँ और की थीक ? आशा अछि सम्पादक महोदय आवहु गोदानक एहि पण्डैत कृपणताकेँ कात करताह, सौभाग्यक विषय थीक जे स्व० म. म. मुकुन्द झा बक्सी विद्यामहोदधि एहि सं० टी०क सटकासँ बचि गेलाह।

एहि विषयमे जे किछु कसरि रहि गेल छल तकर एकत्रे पूर्त्ति 'शाव-रोत्सव'मे कैल गेल अछि। जाहि-जाहि व्यक्ति सँ किछुओ कानि छलन्हि—थोड़वो काट छलन्हि—तनिका ऊपर अपने इच्छेँ छाउर छीटि 'विभूति' अपनो नामकेँ पूर्ण रूपेँ सार्थक कैने छथि। विनोदक तँ एहिमे लेशो नहि अछि। वैयक्तिक आक्षेपक अन्तरालमे जे घृणित मनोवृत्ति छूटि खेलैल अछि ताहिपर जुगुप्सा अवश्य होइछ....... मनुष्यक जीवनमे विफलता ओ दुर्भाग्य तँ पगपग अपन बिभीषिका देखबैछ। यदि एहन एहन प्रसङ्गपर पत्रकार लोकनि अपन वैयक्तिक दुर्भावना व्यक्त करए लागथि तँ ओहि भाषाक जे सुधार हैत से हैबे करत, ओहि पत्रहुक श्राद्ध नीक जकाँ भए जाएत।.......

रहल पत्र ओ संस्थाक बात। भारती, मोद, मिहिर, जमीन्दार सभा, मैथिल महासभा ओ मैथिली साहित्य परिषदक प्रति अशिष्टता पूर्ण आक्षेप सभक विषयमे एतबे कहब पर्य्याप्त हैत जे एहि सब व्यंङ्गमे विनोदक वास्त-विक पिण्डदाने भए गेल अछि।.......

Scanned by CamScanner

एकर अभिप्राय ई कदापि नहि जे शरदअंकक सम्पादन व्यर्थ भेल,अछि। मैथिलीमे सम्प्रति जाबे कैल जाइछ ततबे बहुत थीक—जैह प्रशंसनीय थीक। ताहूमे भुवनजी जाहि कठिन परिस्थितिमे एहि विशेषाङ्कक सम्पादन कैलन्हि अछि ...से हुनका मैथिली प्रेमक उत्कृष्ट प्रमाण थीक। उपरोक्त त्रुटि ओ अभद्रतासँ यदि ई अंक बचल रहैत तँ निश्चय ई मैथिलीमे विशेषांकक मार्ग प्रदर्शक होइत।.......''१

'विभूति' जखन दोसर वर्षमे प्रवेश कयलक तँ ओहिमे एक नवीनता देखबामे अबैत अछि। प्रथम ओ दोसर संयुक्तांकक आदिमे तरुण संघक दिस सँ आवश्यक निवेदन छपल अछि, परन्तु से हिन्दीमे अछि। हमरा एकर अर्थ नहि लागल जे 'विभूति' विशुद्ध मैथिलीक पत्र छल आ 'तरुण संघ, मिथिलेवासी तरुणक संगठन छल होयत, तखन पुनः आवश्यक निवेदनक माध्यम हिन्दी कें किएक बनाओल गेल। तेसर अंकमे उड़न खटोला भाग २ हिन्दी मे अछि जाहिमे धनञ्जय नामक लेखक छथि आ गाण्डीव के तीर ओकर शीर्षक छैक। एहू शीर्षकक अन्तर्गत अन्तरक आक्रोशे व्यक्त भेल अछि। एहि अंकक सम्पादकीयमे हिन्दीक पूर्ण 'वकालत' सेहो कयल गेल अछि। एहिसँ भुवनजीक उभयनिष्ठताक पुष्टिए होइत अछि।

ओना मैथिलीक हेतु एहि पत्रक द्वारा किछु नहि भेल सेहो कहब कृतघ्नता होयत। 'विभूति' पत्रकारिता कें एक नवीन दिशा देलक। साहित्यक समीक्षामे स्पष्टता अनलक, जाहि मैथिलमहासभाक संकीर्ण नीतिक कारणें मैथिली भाषा वर्ग विशेषक भाषाक रूपमे सिकुड़ि गेल ताहि नीतिक विरोधमे ओहि सामन्तशाही सँ टक्कर लेलक, किछु सत्साहित्यहुक प्रकाशन कयलक, एहि उपलब्धि सबकें नकारल नहि जाय सकैत अछि। परन्तु सत्यक घेंट ममोड़ि इतिहासक पृष्ठ पर स्वर्णाक्षरमे एकर नाम अंकित होयत ई कहब इतिहासहुकें अमर्यादित करब थिक। इतिहास अन्धकारसँ प्रकाश दिस अनबाक साधन थिक। ओहिमे यथातथ्ये वर्णन ओकर शोभा थिकैक, तकरा स्थान पर प्रकाश सँ अन्धकार दिस ल' जायब समाजकें, साहित्यक अध्येताकें दिग्भ्रान्त करब कहाँ धरि समुचित ?

'विभूति' मे जाहि लेखक-वृन्दक नाम देखैत छी ताहि मे सँ बहुतो तँ एहने छथि जनिका नामक दर्शन अन्यत्र कतहु नहि होइत अछि। जो सभ

१. भारती, वर्ष १, अंक १०, पृ० ३३३।

प्रायः छद्मनामे थिक, परन्तु छद्मनाम सभक संग जे अनेक उपाधि जोड़ल गेल अछि से पाठकलोकनिकें अन्धकारमे रखबाक उद्देश्य सँ जे एक सम्पादकक हेतु सर्वथा उचित नहि कहल जाय सकैत अछि। एहि पत्रक माध्यम सँ कोनो नवीन प्रतिभाकें प्रोत्साहित क' साहित्यक-सर्जनक हेतु आगाँ आनल गेल हो सेहो नहि परिलक्षित होइत अछि। एकमात्र एहन नवीन नाम एहिमे भेटल जे आगाँ चलि मैथिली साहित्यक भण्डार कें अपना रचनासँ श्रीसम्पन्न करबामे लागल रहलाह, ओ थिक प० ईशनाथ झा जीक। हिनका नाम सँ मैथिलीक कोनो पाठक वा अध्येता अपरिचित नहि होयताह।

विभूतिमे निम्नलिखित नामक लेखकलोकनिक रचना छपल छनि—

म. म. वख्शी मुकुन्द झा, प० विभूति भूषण मिश्र, राजहंस, बी. ए., बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', श्रीयुत विश्वकर्मा, एम्० ए०, प० वीणापाणि पाठक, श्रीयुत वाणीविनायक झा, प्रो० के० बी० पाठक, श्रीयुत पुण्यात्मा, प० जीवनाथ झा विद्याभूषण, श्रीयुत अलख निरंजन, एम. ए. बी. एल्. बाबू भीमेश्वर सिंह, श्रीयुत सुदूरदर्शी, श्रीयुत माढ़व्य, प० नित्यानन्द शर्मा, बी. ए. काव्य तीर्थ, श्रीयुत राजभक्त, प० श्रीवल्लभ झा, श्रीविनोदानन्द मिश्र, एम. ए., श्रीयुत शशिशेखर झा, सा० शास्त्री, श्रीयुत पारदर्शी, श्री गंगाराम दास 'नीरधन', श्रीयुत 'द्विरेफ' बी. ए., साहित्याचार्य, श्रीयुत मनमोहन मुकर्जी, एम० ए०, बाबू जलेश्वर सिंह, प० मधुसूदन मिश्र, व्या० सा० तीर्थ, श्रीयुत विश्वात्मा, प० महावीर झा 'वीर', नन्द किशोर नारायण सिंह, बी' एस. सी०, पुलकित लाल दास 'मधुर', बाबू गंगापति सिंह, शशि कान्त झा 'विद्यार्थी', प० त्रिलोचन झा, श्रीयुत अखिलेश्वर, बी. ए., म. म. डॉ० गंगानाथ झा, ठाकुर सूर्य नारायण सिंह, श्याभानन्द झा, (हैंठीवाली), बाबू भोला लाल दास, सुमित्रानन्दन पन्त (?) म. म. डॉ० उमेश मिश्र, श्रीयुत श्रद्धानन्द, प० काशीनाथ झा, काव्यतीर्थ, कविवर सीताराम झा, राजेश्वर ठाकुर, सा० आचार्य, प० छज्जूराम जी, "विद्यासागर", भिक्षु नागार्जुन, व्रजमोहन ठाकुर 'मोहन', प० ईशनाथ झा, प० परमानन्द शास्त्री, श्रीयुत मधुव्रत, श्री रामचन्द्र झा 'चन्द्र' श्रीयुत विनय गोपाल, श्रीयुत स्वच्छन्द भैरव, 'स्वानवाहन', श्रीयुत आरसी प्रसाद सिंह, श्रीयुत पिहकारी, श्रीयुत 'युग प्रवर्त्तक'। कहल जाइत अछि जे ई

Scanned by CamScanner

सबसँ प्रगतिशील छलाह, परन्तु महिला लेखिकाक एकोटा रचना विभूति मे नहि देखबामे आयल, जखन कि प्राचीनतम पत्र 'मोद' पर्यन्तमे महिला लेखिकाक नाम भेटैत अछि। उपर्यङ्कित नाम सबमे कतेक छद्मनाम अछि से पाठक स्वयं नीक जकाँ बूझि सकैत छथि, परन्तु ईहो एक प्रतिभा सम्पन्न लोक सँ भ' सकैत छैक जे एकसरे एतेक छद्मनाम सँ रचना करैत रहथ।

साहित्य - पत्र

आचार्य प० रमानाथ झाक सम्पादकत्वमे 'साहित्य-पत्र' नामक एक ग्रन्थमालाक प्रकाशन आरम्भ भेल छल। जेँ एहि मे 'पत्र' शब्द लागल अछि तेँ इतिहासकारलोकनि एकरो पत्र-पत्रिकाक कोटिमे राखि अपन अपन अभिमत प्रकट कयने छथि, परन्तु हमरा मतेँ एकरा पत्र-पत्रिकाक कोटिमे राखब युक्तिसंगत नहि थिक। एहिमे पत्रक एकोटा लक्षण घटित नहि होइत अछि। एहिमे ने सम्पादकीय रहैत छल, ने समाचार, ने सामाजिक समस्याने, अन्य प्रकारक कोनो टिप्पणी आदि, अतः एकरा ग्रन्थमाला कहब बेसी उपयुक्त अछि। एहि सँ एकर महत्त्व कम नहि भ' जाइत छैक। जे महत्त्वपूर्ण काज एहि साहित्य-पत्र द्वारा भेल से मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक। उदयन कथा, वेकफिल्डक पादरी, चीनीक लड्डू, शकुन्तला, शृंगार भजन, एकावली परिणय, कीचक वध आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सभक प्रकाशनसँ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि भेल जे अनुपम अछि। परन्तु रसगुल्ला, जिलेबी नहि थिक, तेँ रसगुल्लाक महत्त्व नहि घटैत अछि। एकरा 'ग्रन्थमाला' कहो, हमरा जनैत, एकर मूल्य बढ़िते अछि, घटैत नहि अछि।

आब मैथिली आन्दोलनक फलोत्पत्तिकाल प्रारम्भ होइत अछि। 'मैथिल हित साधन'क प्रकाशनक समय सँ जाहि अधिकारक प्राप्तिक हेतु स्वर मुखरित होइत रहल, मैथिली साहित्य परिषदक तत्त्वावधानमे जाहि आन्दोलन केँ चलाओल जाइत रहल, दाबू भोला लाल दास 'मिथिला' एवं 'भारती'मे

Scanned by CamScanner

जाहि उद्देश्यक संकेत कयने छलाह तकर आंशिक पूर्ति एही कालमे आबिक' भेल आ पटना विश्वविद्यालय ऐच्छिक रूपमे मैथिली कें एक स्वतन्त्र भाषाक मान्यता देलक। एहि प्रसङ्गमे 'मिथिला मोद' नव संस्करणमे सम्पादकीय निम्नरूपें लिखल गेल छल—

"गत किछु वर्ष सँ मैथिली साहित्य परिषदक प्रयत्न सँ पटना युनिभर्सीटीक सिनेट मे मैथिलीक स्वीकारार्थ प्रस्ताव उठैत छल, परन्तु सिनेटमे मैथिली विरोधीक बहुमत रहबाक कारणें पास नहि होइत छल। हँ, ई अवश्य जे एकर हेतु जेहन प्रबल आन्दोलनक आवश्यकता छलैक तकर षोड़सांसो (?) नहि होइत छल।

सिनेटक गत अधिवेशनमे श्री ५ मान मिथिलेश स्वयं एकर प्रस्ताव उपस्थित कैलन्हि—जाहि मे मैट्रिकमे ऐच्छिक, आइ. ए, बी. ए.मे वैकल्पिक ओ एम. ए. मे स्वतन्त्र रूपें मैथिली कें स्वीकार करबाक छलैक। किछु नाम मात्रक संसोधन (?) क संग प्रस्ताव स्वीकृत भैं गेल। हम 'मोद' परिवार दिशि सँ श्री ५ मान् मिथिलेश कें हृदय सँ धन्यवाद दैत छिऐन्ह कारण केवल हुनक व्यक्तित्वैक प्रभाव सँ मैथिलीक स्वीकृति भेल अछि। मैथिल जातिक उद्योग सँ नहि। श्री ५ मान मिथिलेशक एहि जातीय महान कार्य्यक हेतु जतबा गुण गान हो कमे थिक। मैथिल समाज एहि हेतु सदा कृतज्ञ रहत।

संग संग हम सिनेटोक सदस्य कें विशेषतः भाइस चान्सलर डा० श्री सच्चिदानन्द सिंह महोदय कें धन्यवाद दैत छिऐन्ह जनिक सदासयता (?) सँ ई कार्य सफल भै सकल।

एकर संग हम मैथिल समाज सँ ई कहि देब आवश्यक बुझैत छी जे ओ लोकनि एहि स्वीकृति सँ कृतकृत्य नहि भै जाथु। कारण एखन "नहि मामू सँ कनेह मामू नीक" ततवे भेल अछि। एहि स्वीकृति सँ ने मैथिलीक सम्मानोपयुक्त स्थाने भेल अछि ने एहि सँ मैथिलक विशेष उपकार भै सकत। हमरा लोकनि कें ताधरि अपन आन्दोलन जारीए राखक चाही यावत् उपयुक्त सफलता नहि प्राप्त हो—मैथिली कें अन्य प्रान्तीय भाषाक समान पद नहि प्राप्त हो।"[1]

१. मिथिला मोद, नव उद्‌गार २६, पृ० १३।

एहिमे जे आन्दोलनकेँ जारी रखबाक आग्रह कयल गेल अछि तकरा पाछाँ ई सन्देह होयब स्वाभाविक छल जे आन्दोलनमे शैथिल्य ने आबि जाय, से सन्देह सार्थके छल। वस्तुतः एक दशकधरि मैथिली पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनमे गतिरोध देखबामे अबैत अछि। मात्र 'मिथिला मिहिर' अपना गतिएँ चलैत छल। एहिठाम स्मर्त्तव्य अछि जावत धरि संघर्षक काल छल तावत धरि बाबू भोला लाल दास १९३१ ई० सँ लगातार मैथिली साहित्य परिषदक प्रधानमन्त्री बनल रहलाह, परन्तु विश्वविद्यालयमे स्वीकृति भेटतहि, यद्यपि ई आंशिके मान्यता छल, जकर उल्लेख उपरिलिखित 'मोद'क सम्पादकीयमे कयल गेल अछि, परिषदक नेतृत्व हुनकासँ ल' लेल गेलनि। आब ओहि मान्यता प्राप्तिसँ जतबे जे किछु आर्थिक लाभक मार्ग प्रशस्त भेलैक से एक गुट विशेषमे जा क' निहित भ' गेल। हमरा दृष्टिएँ 'साहित्य पत्र'क प्रकाशन एही लाभक हेतु पूर्वहि सँ सुनियोजित छल। विश्वविद्यालयक पाठ्य-क्रम ओ पाठ्यग्रन्थकेँ देखि एकर सहज अनुमान कयल जाय सकैत अछि। ई जे आशा कयल जाइत छल जे परिषद पाठ्यग्रन्थ प्रस्तुत करत आ ताहि लाभसँ एकर आर्थिक पृष्ठभूमि सबल भ' सकत से आकाश कुसुमे रहि गेल। इएह सब कारण रहल होयत जाहि कारणेँ पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन दिससँ लोक विमुख भ' गेल हो। अस्तु, १९३६ ई० सँ १९३९ धरि जतय 'मोद'क नवीन संस्करण काशीसँ, 'भारती' दरभंगासँ, विभूति मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित होइत छल, ततय स्वीकृति भेटला उत्तर पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनमे तीव्रता अयबाक स्थानपर गत्यवरोधे आबि गेल। एकरा तोड़लनि आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' 'स्वदेश'क प्रकाशनसँ।

स्वदेश (मासिक)

जनवरी १९४८ ई० सँ दरभंगासँ श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' 'स्वदेश' नामक एक मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ कयलनि। विषय-वस्तु, साज-सज्जा, रूप-आवरण, संकलन-सम्पादन सब दृष्टिएँ एहिसँ पूर्व प्रकाशित सब पत्र-पत्रिकासँ उच्च स्तरक ई 'पत्रिका' छल। भारतक मानचित्र पर ठाढ़ि भारत माता अपन वरदहस्त मिथिला माताक माथपर देने चित्रमे अंकित छथि।

Scanned by CamScanner

एहिमे अनेक स्तम्भ निर्धारित छल जे क्रमशः परिवर्द्धित होइत गेल। सभ स्तम्भक हेतु पृथक्-पृथक् ब्लाक सब बनल छल जकर प्रयोग सम्पादकक कलात्मक दृष्टिक परिचायक अछि। एतेक होइतो ई अल्पायु भेल, परन्तु एहिमे प्रकाशित रचना परम दीर्घजीवी भेल। मैथिली साहित्यक कोनो विद्यार्थी अवञ्च नहि छथि। बिनु ई रचना सब पढ़ने क्यो प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण भइए ने सकैत छथि।

ध्यातव्य जे १९४९ ई० मे ऐच्छिक विषयक अतिरिक्त, मातृभाषाक रूपमे मैथिलीकेँ स्वीकृति भेटलैक आ ताहि हेतु जे मैथिली साहित्य-संग्रह गद्य भाग ओ पद्य भाग सम्पादित भेलैक तकर सम्पादक प० रमानाथ झा 'स्वदेश'क प्रकाशित मात्र छओ अङ्कसँ १७-१८ टा रचनाक संकलन कयलनि। एहीसँ विषय-वस्तुक स्तर जानल जाय सकैत अछि। एहिमे मैथिलीक उच्चकोटिक लेखकलोकनि अपन-अपन रचना पठाय एकर सहयोग करैत छलथिन। शैलीक प्रसङ्ग 'स्वदेश'केँ कोनो दुराग्रह नहि छलैक। जे जाहि शैलीमे लिखैत छलाह तनिक रचना ताही शैलीमें छपैत छलनि, परन्तु एकर अपन नीति संक्षिप्त रूपकेँ प्रश्रय देब छलैक। प्रथमे अंकमे 'आत्म-निवेदन' शीर्षक सम्पादकीय मन्तव्यमे जे उद्देश्य पर प्रकाश देल गेल अछि से निम्नाङ्कित थिक—एहिसँ उपर्युक्त कथनक पुष्टि होइत अछि—

"......आब जखन स्वाधीनताक सुप्रभाव भेल अछि, मिथिला उपेक्षित नहि रहौ, अपन अधिकृत स्थानमे पुनः प्रतिष्ठित होओ—देश स्वदेशकेँ नहि मेटाबौ संगहि 'स्वदेश' देशक परिधिमे सहयुक्त भै दिन-प्रकाशक तुल्य समन्वित रहौ। 'स्वदेश' एही पवित्र उद्देश्यकेँ आगाँ राखि कार्य क्षेत्रमे प्रवृत्त भेल अछि।"

मैथिलीक गतिविधिक प्रसङ्ग प्रथमे अंकमे बाबू भोला लाल दास जे अपन मन्तव्य प्रकट कयने छथि ताहिसँ स्वदेशक प्रकाशनक पृष्ठभूमिपर प्रकाश पड़ैत अछि। पाठकक सुविधार्थ अविकल उद्धृत कयल जाइत अछि—
"प० नेहरू 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया'मे कहने छथि जे भूतकालक कोनो अर्थ नहि, कारण ओ चल गेल। भविष्यो तेहने व्यर्थ, कारण ओ उपस्थिते नहि भेल अछि। दूनूक बीचक वर्त्तमानो अस्तित्वहीन यदि ओहि प्रतिपल

उड़निहार वर्त्तमान क्षणकेँ अपना कोनो कार्यसँ चिह्नित नहि कएल जाय।
(एहिठाम स्मर्त्तव्य जे नीतिकार एहि प्रसङ्ग बहुत पहिने कहि गेल छथि—

"गते शोको न कर्त्तव्यः भविष्यं नैव चिन्तयेत्
वर्त्तमानेन कालेन वर्त्तयन्ति विलक्षणा"

प० नेहरू एहा विचारकेँ दोहरौने छथि)

मैथिलीक वर्त्तमान आन्दोलनक इतिहासमे जे क्षण गत भै गेल तकर उपयोग आब नहि भए सकत। भविष्यो हमरा उपयोगक बाहरे अछि। केवल वर्त्तमाने एहन क्षण थीक जकरा हम अपना कार्यसँ चिह्नित बनाय अपनाय सकै छी; अन्यथा ओहो व्यर्थे। हमरा साहित्यक इतिहासमे एहन कतेक क्षण-मास-वर्षक कोन कथा, युग कहू—व्यर्थ चल गेल अछि। की हम ओकरा किछु चिह्नित कए सकलहुँ ? अगम्य ध्रुव प्रदेश वा गौरी-शंकरक अभियान कैनिहार पश्चिमक साहसी व्यक्ति जखन एहना अचिह्नित हिमप्रदेशमे पहुँचैत छथि तँ अपन कोनो प्रतीक ओहिठाम छोड़ि जाइ छथि। आगाँ एनिहार व्यक्तिक हेतु ओ चिह्न पथ-प्रदर्शनक काज करैछ, ताहूसँ आगाँ बढ़बाक साहस दैछ।...... जे ओतै पहुँचि गेल, अपन ध्वजा गाड़ि देलक तकरे थिकैक। तहिना जे व्यक्ति किछु काज कए लैत अछि, अपना काजसँ एकरा चिह्नित कए दैत अछि, समय तकरे थीक। जे व्यक्ति कालकेँ एहि रीतिएँ पल-पल उड़निहार ओ अमूल्य बुझनिहार छथि, हुनका काज करबाक आतुरता रहै छैन्हि। ओ साधन, सहयोग, संकट ओ परिणाम आदिक चिन्ता नहि करै छथि—केवल साहसक बलेँ एकाकी चलि पड़ै छथि।

'स्वदेश'क प्रकाशनक प्रयास किछु तेहने साहसक परिचय दैछ, किछु तेहने मूल्य रखैछ, अतः एहि अभियानक हम हृदयसँ अभिनन्दन करैत छी एवं 'स्वदेश'क भविष्यकेँ अमर बुझि रहल छी। मैथिलीक असीम क्षेत्र आइ दिग्दिगन्तमे शून्य ओ मौन रूपेँ व्याप्त अछि कियो ओकरा अपना पद-चिह्नसँ अंकित नहि कए रहल छथि, कियो ओकर तूष्णीम्भावकेँ भंग नहि करए चाहै छथि। कोना नहि एहि साहसक प्रशंसा कएल जाय ? कियै एहि स्तुत्य प्रयासपर हृदय बाँस भरि नहि उछलि उठय ?

कतोक वर्ष पूर्व जखन मैथिलीक स्वीकृति प्रान्तीय विश्वविद्यालय द्वारा भेल छल तँ तकर उपलक्षमे श्रीमान् मिथिलेशकेँ परिषद् दिशसँ एक पद्यमय अभिनन्दन देल गेल छल तकर एक पद्य छलैक—

'मन मति मानु मलान मातु मैथिली परम गुनि
चीर चिकुर चिक-चाक चान चौगुन चमकत पुनि

सत्वर सजत समाज साज सत्कारक सुन्दर
पूर्व प्रतिष्ठा पैब पूर्ण पद पुजत पुरन्दर

कृपा कोर 'कामेश्वर'क जे कयलक काया-कलप
नेह नीर नहबाय नित, से निरबाहत निखिलतप'

दुर्भाग्यवश माताक ओ म्लानता आइ धरि बनले अछि। मिथिलेशकेँ जे करबाक चाही से कयलैन्हि वा भविष्यमे करताह, मुदा समाज आइधरि सत्कारक कोन साज सजलक ? मानल, किछु साहित्य-सेवी अनन्यभक्तक द्वारा किछु प्रसून हुनका चरणपर अर्पित भेल मुदा जाहि रोगीक प्राण कायाकल्प रसायनक द्वारा पलटाओल गेल छैक, तकरा उचित पथ्यादिक व्यवस्था कए यदि हम सब ओकरा समयक अनुकूल पुष्ट बनाय लेने रहितहुँ तँ हमसब आइ जे किछु चाहै छी—विश्वविद्यालय, मातृभाषाक द्वारा जन शिक्षा, स्वतन्त्र प्रान्त वा कृषि वाणिज्यादिक उन्नति—सब किछु हमरा मुख्यतः मैथिलीमाताक आराधनासँ प्राप्त भै गेल रहैत। प्रायः एतबो दिन प्रतीक्षा नहि करए पड़ैत किन्तु मैथिलीक अपार शक्ति केयो अनुमाने नहि कए सकलाह वा अनुमानो कैलनि तँ एहि क्षेत्रमे कार्य केनिहार पर विश्वास नहि कएलैन्हि आओर यदि विश्वासो कएलैन्हि तँ ईर्ष्याग्रस्त रहलाह। हमर ई दृढ़ विश्वास अछि जे आबहु जे किछु हैत से केवल 'भाषा'क आधार पर।

स्वाधीनताक बाद समस्त देशमे भविष्य-निर्माणक प्रश्न सब विषयमे उपस्थित अछि, एहि संघर्षमे मैथिली केँ जनशिक्षाक माध्यमसँ कम स्थान भेटने हमरा बुझने सभ निराधार ! एही सभ हेतु अंगरेजी, हिन्दी, उर्दू आदिक सए गोट पत्र-पत्रिका जे काज नहि कए सकत से एकटा क्षीणकाय मैथिलीक पत्रिका कए सकत। एहि सत्यकेँ जाहि दिन मैथिल, मैथिली भाषी ओ मिथिला वासी बूझि लेत ताहि दिन ओकर देश 'स्वदेश' हेतैक, ओकर ध्येय प्राप्त हेतैक—अन्यथा कोनो जन्म ओकर उद्धार नहि हेतैक। माताक ऊपर चरण प्रहार कैनिहार केँ उचिते थिकैक जे ओ सर्वत्र लतियौल जाय। हमरा सभक कोनो ध्येय यदि नहि प्राप्त होइछ, उचितो माङ कएने यदि मानहानि होइछ तँ सर्वथा उचिते। सोझ बात एतबे छैक जे महात्मा गाँधी

Scanned by CamScanner

कें जखन गुजरातीक व्यवहारमे लज्जा नहि होइ छैन्हि, तिलकके महाराष्ट्री ओ देशबन्धु कें बंगलासँ देशप्रेममे कमी नहि भेलैन्हि, तँ मैथिल-मैथिलीक पूजा कएने प्रान्त विच्छेदक वा अराष्ट्रिय कोना भए सकै छथि ! ई सभ तँ अधिकारक बात अछि, मुदा प्रश्न अछि यौतुक लेत के ?

मिथिला, मैथिल और मैथिलीक क्षेत्र मे कार्य कैनिहार व्यक्तिक पथ कतेक प्रशस्त, सुगम और प्रकाशपूर्ण भेल रहैत यदि बीसो-पचीसो वर्ष पूर्व हम सब मैथिलीक मर्म बुझने रहितहुँ। आइ तँ जे मर्द बाहर भेल अछि, से लाडु नहि खैत, लाठी खैत—मिठाइ नहि पाओत मुँह ठठाइ पौत ! देखी और के मर्द एहि मैदान मे अबैछ ? एखन तँ सए सए मासिक, साप्ताहिक ओ दैनिकक स्थान एहि क्षेत्र मे छैक। प्रान्तक प्रश्न छैक, विश्वविद्यालयक विधान छैक और जनशिक्षाक जाँच छैक, मुदा एकटा पत्रिको नहि ? की एही साधन सँ ई सब कठिन साध्य साधल जाएत ?.... ... .

.......एहि प्रकारक अन्धकारपूर्ण पट-भूमिपर मैथिली माताक साकार चित्र देखबाक आशा करब विज्ञानक चमत्कार नहि तँ और की कहल जा सकैछ ? मुदा सेहो आजुक संसार मे भैये रहल अछि। जौं 'स्वदेश' प्रकाशित भेल ओ होइत रहल त हम एहि साहित्यिक निस्तब्धताकें सिनेमा-घरक अन्धकार बुझब जे चित्रपट देखएबाक पूर्व परिचालक गण चारू कातक प्रकाश बन्द कए हठात् उपस्थित करै छथि। हम हृदय सँ 'स्वदेश'क स्वागत करै छी एवं एकरा दीर्घ जीवन ओ सुन्दर भविष्यक कामना करै छी। विश्वास अछि, ई हमर प्रलाप नहि हैत। यद्यपि वर्त्तमान कठिनता और भीषण देखि रहल छी। तथापि सुन्दर सम्पादन ओ मित्र वर्गक सहयोग एहि पत्रकें अनायासे प्राप्त छैक। केवल अर्थक व्यवस्था चिन्त्य अछि। समाजक परिवर्त्तित्त अवस्था, देशक वर्त्तमान आवश्यकता ओ मैथिली भाषाक उत्तरोतर बढ़ैत माङ यदि एतबो चिन्ता दूर नहि कए सकल तँ वणिक् बुद्धि अर्थदाता कें ई पुछबाक अधिकारे की छैन्हि जे पत्रसँ लाभ की हएत ? और अस्मदादि सदृश साहित्यक फक्कड़ कें तकर चिन्ते कोन जे पत्र क्षणिक चलतैक वा युगान्त व्यापी हेतैक। ओ तँ अपन कर्त्तव्य बुझै छथि। स्वदेशक आयोजक कें सएह करए पड़ैन्हि त कोनो आश्चर्य नहि। तखन मुदा एकटा और एकेटा आशा वा आग्रह हमर ई रहत

जे 'स्वदेश' भीषण वज्रपात जकाँ तेहन जोरसँ कड़कओ तथा चमकओ जे मैथिलीक विरोधीगणक आँखि फुटि जाइन्हि एवं कान बधिर भए जाइन्ह। एहेन क्रान्तिकारी जीवन क्षणिको हो तथापि लाख वर्षक मुर्दादिली सँ अत्यन्त श्रेयस्कर, सर्वथा अभिनन्दनीय। समय जे ओहिना अचिह्नित चल जाएत से त कोनो तीक्ष्ण चिह्न बज्र लेख सँ अंकित भेल !"[1]

उपर्युक्त उद्धरणसँ 'स्वदेश'क प्रकाशनक पृष्ठभूमि एकदम स्पष्ट भ' जाइत अछि। पूर्वहि कहल जा चुकल अछि जे स्वदेश मात्र छओ अङ्क प्रकाशित भ' बन्द भ' गेल, परन्तु जे अमिट चिह्न छोड़ि गेल, जे मार्ग निर्देश क' गेल से मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे अद्वितीये रहल।

स्मर्त्तव्य जे जनवरी १९४८ ई० मे एकर प्रथम अङ्क प्रकाशित भेल आ ओहि मासक ३० तारीखकेँ भारतवर्षक इतिहासमे अघटित घटना घटि गेल जे सम्पूर्ण इतिहासकेँ, मानवताकेँ ओ भारतक जनजनकेँ कलङ्कित क' देलक; ओ घटना छल महात्मा गान्धीक हत्या। एहि घटना सँ केवल भारतवर्षे नहि, विश्व स्तब्ध रहि गेल। 'स्वदेश'क दोसर अङ्क मुख्य रूपेँ एही इतिहासकेँ अपनामे समेटि क' प्रस्तुत भेल छल। महात्मा गान्धीक सम्पूर्ण व्यक्तित्वकेँ सूत्ररूपमे एहि अंकमे उपस्थित कयल गेल अछि जकरा मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि कहल जाय सकैत अछि। सम्पादकीय मन्तव्य स्तम्भमे जे राष्ट्रपिताक तर्पण कयल गेल अछि, केहन प्राञ्जल गद्य अछि से उदाहरणार्थं उद्धृत कयल जाइत अछि—

"वर्त्तमान कालीन दुइ अरब-संख्यक मानव समुदायैक बीच नहि, जे शताब्दिये नहि सहस्र-सहस्र वर्षव्यापी युगक अन्तरालमे सर्वश्रेष्ठ पुरुष छलाह, जनिक कृति-प्रकृति, निष्ठा-मर्यादाक तुलनामे दुइ हजार वर्ष पूर्वक महात्मा ईसा ओ अढ़ाइ हजार वर्ष पहिलुक भगवान् बुद्ध—सैह इतिहासमें समान-धर्मा कर्णगोचर छथि, ओहि युग-निर्माता, भारत भाग्य-विधाता महात्मा गाँधीक नृशंस हत्यासँ—सर्वदाक हेतु युग कलुषित, इतिहास मलिन, भारतीयता लाञ्छित ओ जाति कलंकित भै गैल !

किन्तु जे सूर्य अर्ध शताब्दी सँ भारतक भाग्याकाशमे निरन्तर देदीप्यमान छलाह से सहसा रक्तमेघाच्छल भै पुनः उदित भने ने होथु परञ्च जाहि ज्योतिएँ

१, स्वदेश (मासिक) वर्ष १, अंक १, पृ० ३९-४२।

ओ हृदय-हृदयकें आलोकित कै गेल छथि ओ कहियो धूमिल नहि हैत ! यज्ञवेदीमे जे अग्निहोत्र ओ प्रवर्त्तित कै गेल छथि ओ कहियो मिझै नहि पौत ! शान्तिक जे अजस्त्र निर्झर ओ कर्म-शिखर सँ प्रवाहित कै गेल छथि ओ कहियो रुद्ध नहि हैत ।

इतिहासमे एहन-एहन अनेक वीरात्मा भेल छथि जे जीवनमे सर्वदा विजयी छलाह । एहनो धीरात्मा भेल छथि जे मरणोत्तर जयी भेलाह । परन्तु एहेन महात्मा यैह छलाह जनिक जीवन जहिना नितान्त जयी भेल तहिना मरणो एकान्त विजयी सिद्ध भेल । जीवित गाँधीक जे प्रभाव छल ताहिसँ अधिक आइ मृत गाँधीक प्रताप अछि । जीवितमे भारतवर्ष हुनक शिष्य छल आइ सम्पूर्ण संसार भक्त बनि 'वन्दे जगद्गुरुम्' जपि रहल अछि । जीवित गाँधी सम्बद्ध समुदायमे देशहिमे 'बापू' कहि प्रसिद्ध छलाह आइ 'पिताऽसि लोकस्य चराचरस्य'क पदवीके प्राप्त कें गेलाह ।

जीवनक तिल-तिल स्नेह चढ़ाय जे स्वाधीनता-मन्दिरमे अखण्ड दीप जरौल—जे अहिंसाक वेदीपर रोम-रोम होम कै शान्ति-महायज्ञक पूर्ति कैल जे मृत्यु वरण कै मृत्युञ्जय पद प्राप्त कैल—ओहि कोटि-कोटि सन्तानक कल्याण-चिन्तनामे क्षण-क्षण खटनिहार राष्ट्रपिताक तर्पणमे—

स्वदेशक कोटि-कोटि सचेतन प्राणीक अन्तस्तलक श्रद्धा, अचेतन गिरि प्रान्तरक अणु-परमाणु, वन-काननक पुष्प-पत्र ओ गङ्गा-कोशी, कृष्णा-कावेरीक बिन्दु-बिन्दु श्रद्धाञ्जलि अर्पित अछि ।

नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते"

ततः परम्—

शाश्वत धर्म-गोप्ता महापुरुष यदि जन्मग्रहण द्वारा संसारकें सन्मार्गपर आरूढ़ करैत छथि तँ अपन निर्वाण द्वारा सेहो कल्याण-परम्पराक सूत्र सम्बद्ध कै जाइत छथि । संसारकें अहिंसाक मर्म बुझबैत जँ युग-पुरुष हिंसाक लक्ष्य बनल छथि तँ एहि सँ ई नहि मन्तव्य थीक जे अहिंसापर हिंसा चरणाघात कै गेल । अहिंसा व्रतीक चरम साधन थिक आत्म-बलिदान । जे काज सहस्र प्रवचने नहि भै सकैछ से रक्त-बिन्दुक द्वारा सिद्ध होइछ । ई विश्वास करै पड़त जे युग-दधीचि गाँधी अपन अवशेष अस्थि द्वारा; हृदयक बिन्दु-बिन्दु द्वारा आसुरी भावनाकें निर्बीज करबाक संसारकें प्राण-प्रेरणा दै

Scanned by CamScanner

गेल छथि। आब हुनक युगमे जन्म ग्रहण कैनिहार मानव पीढ़ीक कर्त्तव्य थिकैक जे एहि विश्वपावनक रक्तदानक पवित्रताक रक्षा करौ।

केवल साम्प्रदायिकता-शब्दकें कोष सँ बहिर्गत कैने रक्तक ऋण नहि चुकौल जा सकैछ अथवा अहिंसाक देवताक नामपर कोनहु उत्तेजनात्मक नीति सँ विद्वेषक कलुषित वातावरणकें निमूल कैल जा सकैछ। गाँधीवादक अग्रणी भाष्यकार आचार्य विनोबाक शब्दमे गाँधीजीक सदृश महा-मानवक ऊपर हत्याराक हाथे कोना उठलैक, ई विचारणीय। गाँधीजी व्यक्ति नहि छलाह, समस्टिक भार-निर्वाही छलाह। अतएव ओहनो महामानव यदि चरम क्रूरताक लक्ष्य बनथि तँ तकर उत्तरदायित्व :व्यक्ति-व्यक्तिपर अछि। वास्तवमे जाहि स्वतन्त्र राष्ट्रक ओ जन्म देलन्हि तकर प्रत्येक नागरिक पर महान् उत्तरदायित्व छैक जे ओ राष्ट्रपिताक पदचिह्नक मार्मिकता सँ अनुव्रजन करैत विश्वमे विशेषतः अखण्ड भारतमे शान्तिक साम्राज्य ओ भ्रातृत्व स्थापित करौ।............''[1]

एहि उद्धरणसँ संक्षिप्त शैलीक पुष्टिक संग उत्कृष्ट गद्यक उदाहरण सेहो ज्ञात होइत अछि। स्वदेश प्रथम पत्र छल जे 'भुवन'जी द्वारा उद्घोषित सिद्धान्त जे 'विभूति ने व्यर्थ ककरो कष्ट देत ने प्रभावक डरें प्रशंसा-पुराणक रचना करत' एकर सर्वांशतः पालन कयलक। जातीय वा सामाजिक कोनो गोलैसी सँ ई अपनाकें सर्वथा मुक्त रखलक। एकर दृष्टिकोण राष्ट्रिय रहलैक। अतः एहिमे स्थायी मूल्यक साहित्यक प्रकाशन बेसी भ' सकल। विनोदक हेतु एहिमे कोनो स्तम्भ नहि राखल गेल छल, परन्तु एहिमे जतेक विनोदात्मक रचना प्रकाशित भेल से अनुपमे अछि। व्यंग्य सम्राट् प्रो० श्री हरिमोहन झाजीक सर्वाधिक लोक-प्रिय रचना 'खट्टर ककाक तरंग'क तथा एहि पंक्तिक लेखकक सर्वाधिक चर्चित रचना 'युग चक्र'क आरम्भ एही पत्रसँ भेल छल। आचार्य रमानाथ झा धारावाही रूपें 'परिचय-पत्र' शीर्षक अनुसन्धानात्मक लेख तथा 'पुरान लिखा' शीर्षक लेख एहिमे लिखैत छलाह। परिचय-पत्रमे मैथिल ब्राह्मणक पंजीग्रन्थ सँ प्राचीन विद्वान सभक परिचय प्राप्त करबाक दिशामे विद्वद्वर्गकें प्रेरित कयने छलाह। हुनक ई उक्ति— ''हमरा लोकनि एखन पर्यन्त अपन पूर्वक अनुसन्धानमे प्रवृत्तो नहि भेल छी ओ जेहो दुइ चारि व्यक्ति किछु-किछु एहि दिशि प्रवृत्तो भेल छथि से ताहि

१. स्वदेश वर्ष १, अंक २, पृ० ११६।

रूपक भ्रमात्मक परिचय सब दैत गेल छथि जे सर्वथा हास्यास्पद प्रतीत होइत अछि।''[1]---पत्रकारितोक प्रसङ्ग हमरा सर्वथा सार्थक प्रतीत भेल। एहि क्रममे तत्वचिन्तामणिकार परमगुरु म. म. गङ्गेश्वर, परमगुरु म. म. वाचस्पति मिश्रक परिचय प्रस्तुत कयने छथि। एहिना 'कृष्णजन्म'क प्रणेता कविवर मनबोधक प्रसङ्ग अनेक तथ्यक उद्‌घाटन कयने छथि। यद्यपि एहि द्वारा ओ हिनका लौकिनिक श्रोत्रियत्व प्रमाणित करबाक चेष्टामे एतेक श्रम कयलनि, तथापि अनुसन्धानक हेतु एक दिशाक निर्देश एहि द्वारा होइत अछि। 'पुरान-लिखा' मे प्रचीन पत्र, आज्ञापत्र आदिक उद्धरण द' 'साहित्य-पत्र' मे स्वीकृत शैलीक समर्थन कयने छथि।

यद्यपि जीवित भाषामे जे अवश्यम्भावी परिवर्त्तन होइत छैक, तकर उपेक्षा क' दु-तीन शताब्दी पूर्वक भाषाकेँ प्रतिष्ठापित कयने ओ भाषा जनकंठक हेतु दुरुह भ' जाइत अछि, एहि तथ्य दिस ध्यान नहि देल गेल छल। ओना पछाति आञ्चलिक प्रयोगक समर्थनमे सेहो ई दत्तचित्त भ' गेलाह, परन्तु आरम्भमे 'शैली'क विवादकेँ सबसँ अधिक मुखर यैह कयने छलाह, मैथिलीकेँ स्वीकृति भेटला उत्तर जे पाठ्यग्रन्थ सभक सम्पादन कयलनि से एही प्राचीन शैलीमे, जाहि कारणेँ ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थसँ इतर वर्गक लोक एहन कृत्रिम प्रयोगकेँ देखि मैथिली पढ़बासँ भड़कैत छल। अस्तु।

डॉ० श्री सुभद्र झाजीक विदेशयात्राक संस्मरण, श्री परमाकान्त चौधरीक विज्ञानक आरम्भ, श्री तन्त्रनाथ झाजी द्वारा अबहट्टमे महाकवि विद्यापति रचित 'कीर्त्तिलता'क मैथिली छायानुवाद क्रमशः एहिमे प्रकाशित होइत छल जे मैथिली साहित्यक उपादेय रचना सब अछि।

स्त्रीशिक्षाकेँ प्रोत्साहित करबाक हेतु 'नारी संसार' स्तम्भमे नारीवर्गक समस्यापर कविचूड़ामणि प० श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' नियमित रूपेँ लिखैत छलाह। डॉ० श्री श्रीकृष्ण मिश्र 'मिथिलाभाषा रामायण एक अध्ययन' लिखि छात्र समुदायक उपयुक्त रचना प्रस्तुत करैत छलाह। बालमण्डल स्तम्भ मे बालोपयोगी रचना छपैत छल।

ओही समयमे तत्कालीन भारतक प्रधानमन्त्री प० नेहरू भाषाधार प्रान्तक निर्माणक प्रसङ्ग अभिमत प्रकट कयने छलाह, ताहि प्रसङ्ग म. म. डॉ० उमेश

---

१. स्वदेश, वर्ष १, अङ्क १, पृ० १५।

मिश्र 'मिथिला प्रान्तक निर्माण' शीर्षक लेख लिखि मिथिलावासी ओ मैथिलीभाषीकें सतर्क कयने छलाह।

'स्वदेश'मे एक नग्न सत्य दिस जे संकेत कयल गेल छल जकरा संसार यदि नहिओ तँ देशधरि अवश्य बिसरि गेल, ओ सत्य छल—महात्मा गान्धीक मृत्युपर संसारक प्रत्येक देशक राष्ट्रनेता अपन-अपन शोक समवेदनाक सन्देश पठौने छलाह, परन्तु रूसक अधिनायक स्टैलिनक मुँहसँ एको शब्द नहि बहरायल छलनि। 'स्वदेश' स्टैलिनक चित्र छापि एहिपर आश्चर्य प्रकट कयने छल। पत्रकारिताक एहि सूक्ष्म दृष्टि पर सभक ध्यान आकर्षित होयबाक चाही।

डॉ० श्री जयकान्त मिश्र अपना इतिहासमे स्वदेशक नामोल्लेख मात्र कयने छथि तथा डॉ० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश' दू पाँती मात्र लिखने छथि। डॉ० श्रीशक कथन छनि—"मैथिली-साहित्य-पत्र''क पश्चात् पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनमे गत्यवरोध जकाँ उत्पन्न भए गेल। एहि गत्यवरोधकें भंग कयल १०-११ वर्ष पश्चात् श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' अपन स्वदेश (१९४८) मासिकक प्रकाशन कए जे बड़ अल्पजीवी भेल, छओ मास मात्र चलल। सामग्री-चयन, सम्पादन ओ मुद्रणक शुभ्रता प्रभृति सभ दृष्टिएँ ई पत्र बड़ आकर्षक छल।''[1]

'स्वदेश'क लेखकलोकनिमे छलाह—प० त्रिलोकनाथ मिश्र, प्रो० ईशनाथ झा, श्री आरसी प्रसाद सिंह, प० श्रीगिरीन्द्र मोहन मिश्र, श्री 'इन्दु,' कुमार गङ्गानन्द सिंह, प० श्रीगोविन्द झा, राजपण्डित बलदेब मिश्र, कविवर सीताराम झा, म. म. डॉ० उमेश मिश्र, प० जीवनाथ झा, 'विद्याभूषण,'' प० रमानाथ झा, श्री काशीनाथ ठाकुर 'कलेश,' प्रो० श्री हरिमोहन झा, प० श्री हरिनाथ मिश्र, डॉ० श्री श्रीकृष्ण मिश्र, प० श्री जीवानन्द ठाकुर, बाबू भोला लाल दास, डा० श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण,' प्रो० श्री जयदेव मिश्र, डॉ० श्री सुभद्र झा, प्रो० अनिरुद्ध झा, शङ्करी देवी, श्री यात्री, डॉ० श्री सूर्यकान्त ठाकुर, श्री चन्द्रनाथ मिश्र, 'अमर', कविचूड़ामणि प० श्री काशीकान्त मिश्र, 'मधुप', प्रो० श्री नवल किशोर झा, प० वीरभद्र झा, प्रो० श्री परमाकान्त चौधरी, प० जनार्दन झा, 'जनसीदन', श्रीमती 'महादेवी', प्रो०

---

१. मै० सा० इतिहास, पृ० १२७।

Scanned by CamScanner

श्री तन्त्रनाथ झा, प० छेदी झा 'द्विज,' बाबू क्षेमधारी सिंह, महावैयाकरण प० दीनबन्धु झा, चन्द्र किशोर राय 'तारेश,' प्रो० श्री उमानाथ झा, 'वनफूल,' श्री शुभङ्कर झा, श्री कुलानन्द 'नन्दन,' डॉ० श्री जयकान्त मिश्र, श्री रमाकर, श्री मदन मोहन झा, प्रो० श्री शचीनाथ झा, श्री राधाकृष्ण 'बहेड़,' श्री व्रज किशोर वर्मा, श्री 'जीबू', ज्यौ० बलदेव मिश्र, श्रीउपेन्द्र ठाकुर 'मोहन,' प्रो० श्री दामोदर झा, श्री विजय कान्त मिश्र, श्री उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास,' श्री मनमोहन झा।

अन्ततः स्वदेशो बाबू भोला लाल दासक एहि उक्तिकेँ चरितार्थ करैत जे "समय जे ओहिना अचिह्नितै चल जाइत से त कानो तीक्ष्ण चिह्न वज्रलेख सँ अंकित भेल ने" अस्त भ' गेल।

मिथिला-ज्योति

'स्वदेश' द्वारा एहि गतिरोधकेँ भंग भेलाक बाद पुनः पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक उत्साह पलटि आयल। एकर कारण ईहो छल जे पटनामे आकाशवाणी केन्द्रक स्थापना भेल, ताहिमे दुर्वाक्षत रूपेँ मैथिलीकेँ सेहो चौपालमे स्थान भेटलैक। यद्यपि एकरा पाछाँ किछु दुरभिसन्धि छलैक आ से छलैक हिन्दीक कड़ाममे मगही, भोजपुरीक संग मैथिलीओकेँ दाउनमे जोति, एकरा गरदनिमे पड़ल 'हिन्दीक बोली'क फाँसकेँ कसि क' राखब, जाहिसँ स्वतन्त्र भाषाक रूपमे मान्यता प्राप्तिक द्वार पर अवरोध ठाढ़ क रब। परन्तु से दुरभिसन्धि सफल नहि भ' सकलैक आ अगिले वर्ष अर्थात् १९४९ ई० मे बिहार सरकार मातृभाषाक रूपमे मैथिलीकेँ मान्यता द' देलकैक।

एही वर्ष दरभङ्गामे 'प्राच्यविद्या महासम्मेलन' आयोजित भेल छल आ उक्त सम्मेलन सेहो मैथिलीकेँ मान्यता देने छलैक। एहि सम्मेलनक आयोजनसँ एक नव चेतनाक संचार भेल, ओहि सम्मेलनक तैयारी चलि रहल छल जे वातावरणमे उत्साहक लहरि आनि देने छल। एही पृष्ठभूमिमे पटनासँ 'मिथिला ज्योति' नामक एक मासिक पत्रक प्रकाशन भेल, जकर सम्पादक छलाह बाबू दुर्गापति सिंह, बी. ए.। ई बेचारे पूर्ण व्यावसायिक बुद्धिएँ

गामपर खेत बेचि, पूंजी जुटा, पटनामे बैसि, बाबू लक्ष्मीपति सिंहक सहयोगसँ एकर आरम्भ कयने छलाह। एकरा रोचक बनयबाक पूर्ण चेष्टा कयल गेल छल। साहित्यिक बिषय, यथा कविता, एकांकी आदिक संग सामाजिक विकृति, संस्कृति, राजनीतिक अधिकार प्राप्ति आदिसँ सम्बद्ध व्यंग्य चित्र सब छपैत छल। एकटा उदाहरण एहि हेतु पर्याप्त होयत। एकटा व्यंग्य चित्र मैथिली विरोधीक अछि, जकर नीचामे एकटा पद छपल अछि—

"अरे ! कहू अर्द्धांग कियक छी, कटल डाँड़ सँ वा जलमें
वा उड़बा लए डेन पसारल, भार अपन तजि भूतलमें

औ अकाशकाँकोड़ ! अहाँसँ बँसविट्टीक छुछुन्नरि नीक
की मिथिलामे अपनहि आएल छी बनि 'ज्योति'क काल प्रतीक ?"[१]

एहि समयमे भाषाधार प्रान्तक निर्माणक चर्चा चलि गेल छल। एहि प्रसंग जे 'ज्योति'मे बाबू लक्ष्मीपति सिंह अपन विचार व्यक्त कयने छथि से 'ज्योति'क दिशासँ परिचय करबैत अछि। अतः उद्धृत कयल जाइत अछि—

"भाषाक आधारपर भारतीय संघमे प्रान्तीय-करणक आयोजन भए रहल अछि। आन्ध्र, कर्नाटक, केरल एवं महाराष्ट्र आदि कतेको क्षेत्र अपन अधिकार सिद्ध करबामे सफल भए चुकल अछि। किन्तु मिथिलाक भाग्यमे आगि लिखल छन्हि वा माटि, तकर किछु पता नहि लगैछ। मिथिला प्रान्तक निर्माणक सम्बन्धमे सुनल जे मैथिल-समाजक किछु कर्णधार आब सचेष्टो भेल छथि, बिहार कौंसिलक गत अधिवेशनमे कुमार श्री गङ्गानन्द सिंह जे किछु एहि सम्बन्धमे बाजि गेल छथि से मैथिल मात्रक हेतु मननीय अछि। समय बहुत बीति चुकल; कल्पना जगत्‌मे सुतल रहबाक कारणें किछु अवसर हाथसँ ससरियो गेल अछि।........एहिमे निस्वार्थ कार्यकर्त्ता लोकनिक, एवं व्यापक जन-आन्दोलनक नितान्त आवश्यकता अछि।........स्मरण रहओ, मिथिला केवल मैथिल-ब्राह्मण एवं कर्णकायस्थे लोकनिक टा नहि थिक। एहि पर मिथिला-भाषा-भाषीमात्र कएँ किंवा मिथिलाक अन्न-पानिसँ परिपालित, एवं एकर संस्कृतिसँ अनुप्राणित मानव मात्र कएँ समाने अधिकार छैक। एहि प्रसङ्ग एखन एतबेक संकेत पर्याप्त।

१. मिथिला ज्योति, वर्ष १, अंक २, जून १८४८, पृ० चित्रावली-६।

Scanned by CamScanner

प्रतीक्षा अछि, मैथिल-समाज अपन अस्तित्व एवं जन्मसिद्ध अधिकारक रक्षार्थ की करैछ ।"[१]

प्राच्य-विद्या महासम्मेलन कोनो विश्वविद्यालये द्वारा आहूत कयल जाइत अछि। ध्यातव्य जे दरभंगामे जे एकर अधिवेशन भेल छल से आमन्त्रण प्रस्तावित मिथिला-विश्वविद्यालय द्वारा नागपुर अधिवेशन (१९४६) ई० मे पठाओल गेल छल। स्वतन्त्र विश्वविद्यालयक स्थापना सेहो एक समस्या छल। एहि प्रसङ्ग उपर्युक्त उद्धरणक क्रममे लिखल गेल छल—

"मिथिला-विश्वविद्यालय स्थापित करबाक प्रयत्न कएल जाए रहल अछि। एकर स्वागत के मैथिल वा के भारतीय संस्कृति-प्रेमी नहि करत ? तखन रहल "श्रेयांसि बहुविघ्नानि"क भय। किन्तु सभक प्रतिकार छैक, आओर सभक छैक उत्तर। शुक्राचार्य लोकनि संसार कएँ कनाह नहि बनाए सकैत छथि। सत्य स्वतः ठहाका मारि हुनका लोकनि कएँ एक दिन चुप कए देतन्हि। युक्ति आओर तर्क कएँ भावावेशपूर्ण कूटनीति अधिक दिन तक तिरोहित नहि राखि सकैछ। आवश्यकता अछि केवल सुसङ्गठित सामूहिक नैतिक बल कएँ प्रयोगमे अनबाक, अपना कएँ स्मरण करबाक; अपन विपक्षी कएँ युक्तिवादसँ परास्त करबाक। स्वाधीन भारतमे पौने दुई करोड़ मिथिला-भाषाभाषी अपन संस्कृति-पीठ मिथिलामे विना अपन स्वतन्त्र विश्वविद्यालयक स्थापना करबओने अपना कएँ वस्तुतः स्वतन्त्र कहियो नहि मानि सकैछ, कियक तँ सांस्कृतिक स्वतन्त्रताक विना तथाकथित राजनैतिक स्वतन्त्रता अधम दासतहुसँ कतेक निकृष्ट एव दारुण होइछ। आशा अछि, मैथिल समाज आबहु अपन तन-मन-धनक यथा-सम्भव उपयोग कए अपन सांस्कृतिक अस्तित्वक रक्षा करत।........"[२]

एहि प्रकारक उत्साहपूर्ण वाक्य द्वारा सूतल एहि समाजकेँ हाक देल जाइत रहल, परन्तु जगबाक कोन कथा, करौटो फेरबाक हेतु उद्यत नहि, भाषाधार प्रान्त सब बनि गेल, मिथिला एखनहु परमुखापेक्षी भेल हाथउठाइ पाबि रहल अछि। प्राच्य विद्यामहासम्मेलन सम्पन्न भेलाक बाद 'ज्योति' अपना सम्पादकीयमे जे मन्तव्य प्रकट कयने अछि तकर अवलोकन कयल जाय—

१. मिथिला ज्योति, वर्ष १, किरण २, पृ० ६०।
२. तत्रैव।

''एहि वर्षक शारदीय शुक्ल पक्ष महा सम्मेलनक सांस्कृतिक ज्योति सँ मिथिला कएँ चारि दिनुक हेतु वस्तुतः चमकाय देने छल। एहि सम्बन्ध में कतेको पत्र-पत्रिका सभ चर्चा कए चुकल अछि, अतएव, एहि प्रसंग विशेष अधिक किछु नहि लिखि, एतबेक लिखब पर्याप्त बुझना जाइछ कि यद्यपि पूर्व प्रकाशित विज्ञापनादि एवं वाचनिक आयोजनक अनुपात (मे) महा सम्मेलनक समारोह संकुचित रहि गेल, तथापि ओहि सँ मिथिला मैथिल मैथिली कएँ अनुप्राणित होएवाक बहुत किछु साधन प्राप्त भए सकल। एतदर्थ श्रीमान मिथिलेश तथा महासम्मेलनक स्वागतकारिणी समितिक स्थानीय मन्त्री एवं अन्यान्य पदाधिकारीगण वस्तुतः धन्यवादाई थिकाह। किन्तु; अनुप्राणित होएबाक जे किछु साधन प्राप्त भए सकल, आओर यदि सदुपयोग नहि भए सकल, आओर एतेक खर्च, परिश्रम, विज्ञापन, व्याख्यान एवं प्रस्ताव सभक पश्चातहुँ हमरालोकनि ठामक ठामहि रहि गेलहुँ, तँ आब आओर अधिक हँसिये टा होएत। संसार इएह कहत जे मैथिल समाज केवल बातें बनेबा मे बड़ चोख होइछ। अतएव, आब खराबी सँ अधिक हँसबैक डर। आशा करैत छी जे मैथिल समाजक कर्णधार लोकनि महा सम्मेलनक सांस्कृतिक प्रेरणा कएँ फुल चढ़ैल होएबा सँ बचेबाक अवश्य यथासाध्य प्रयत्न करैत जयताह।''[१]

प्राच्यविद्या महासम्मेलन भेल, धूमधड़ाका, भीषण-भाणण, गर्जन-तर्जनक संग प्रस्ताव आदि पारित भ' समाप्त भ' गेल, मैथिलीक समस्या जतहि छल ततहि रहि गेल। ताहि समय भारतक संविधान बनि रहल छल। सम्प्रति जाहि अष्टम अनुसूचीमे प्रवेश पयबाक हेतु विगत तीस वर्ष सँ मैथिली भाषी माथ पटकि रहल छी से अष्टम अनुसूची बनलो ने छल आ एहि सँ पूर्वे पी. ई. एन्, तथा प्राच्यविद्या महासम्मेलन मे मैथिलीक प्रवेश भ' चुकल छल, किन्तु कर्णधारलोकनि निस्तब्ध भेल तमासा देखैत रहलाह। संविधान स्वीकृत भेलाक बाद आँखि फुजलनि जे एतेक प्राचीन ओ समृद्ध भाषा मैथिली ओहिमे स्थान नहि पाबि सकल। मिथिला विश्वविद्यालयक स्वप्न तखन साकार भ' सकल जखन स्व० ललित नारायण मिश्र मिथिलाक नेतृत्व अपना हाथमे लेलनि।

---

१. मिथिला ज्योति, वर्ष १, किरण ७, पृ० ६२।

Scanned by CamScanner

स्मर्त्तव्य जे जाहि समयमे प्राच्यविद्या महासम्मेलन भेल छल, ओहि समयमे मिथिला-मिहिरक अतिरिक्त केवल एकमात्र पत्रिका 'मिथिला-ज्योति' प्रकाशित होइत छल। अतः उक्त सम्मेलनक उपलब्धिक प्रसङ्ग थोड़ बहुत सूचना एही पत्रिका सँ भेटैत अछि। बाबू भोला लाल दास मैथिली शाखाक जे संस्मरण लिखने छलाह तकर उल्लेख सँ ज्ञात होयत जे प्राच्य विद्या सम्मेलन भेला सँ मैथिली केँ की उपलब्धि भेलैक। दासजी लिखने छथि—

"अधिकक तँ कथे नहि, संस्कृतक थोड़बो ज्ञान अछि नहि जे प्राच्य विद्या महासम्मेलनक शास्त्रीय शाखा सभादिमे विशेष अभिरुचि हो, मुदा मैथिलीक आवेश तँ स्वाभाविक अछि, अतः हमरा केवल अंगरेजीक प्रथम दिवसक कार्यवाही एवं अन्त मे मैथिली सर्व समन्वयक विशेष आग्रह छल। एहि मे भाग लै सकी, अतः अभ्यर्थना समितिक शुल्कक अतिरिक्त प्रतिनिधि शुल्क देल मुदा मैथिलीक समन्वय सभा देखि निराश भै गेलहुँ। डॉ० श्री सुनीति कुमार चटर्जी महोदयक भाषा सम्बन्धी केन्द्रीयकरण नीतिक विशद व्याख्या सुनि एवं कोनो भाषाकएँ एहि युग में सिंचित पल्लवित पुष्पित एवं फलित हेबाक योग्यताक चारिगोट प्रधान लक्षण जानि डॉ० श्री सुभद्र झा तकरा समर्थन कैलन्हि एवं मैथिलीक (केँ) चारू लक्षण सँ सम्पन्न बतौलन्हि। प० तन्त्र नाथ झाजी सेहो बड़ विनय पुरस्सर अपना भाषण केँ नीरस होयबाक भय सँ थोड़बहि मे समर्थन करैत ससंकोच अपन आसन ग्रहण कैलन्हि। पश्चात् एक दू व्यक्ति किछु बजबाक हेतु सभापति महोदय कुमार श्री गंगा नन्द सिंह जी सँ समयक प्रार्थना कैलन्हि, हमहुँ पाँच मिनटक एकटा प्रार्थी छलहुँ मुदा कोनो व्यक्ति केँ समय नहि देल गेलन्हि। कुमार साहेब कार्य-वाहीकेँ सत्यं शिवं सुन्दरं कहैत मैथिली समस्याक हल कै देलन्हि। संक्षेपमे यैह हमर संस्मरण।

यदि किछु भावना बुझबाक इच्छा हो तँ ओहि काल मे जे किछु कहबाक इच्छा सँ पांच मिन्टक समय मंगने छलिऐन्हि तकरे सारांश सुनि लेल जाए। अपने लोकनि केँ हमर कथा प्रिय लागौ वा अप्रिय, एतबा कहहि पड़त जे एहि सभा में विषय छल मैथिलीक समस्या तकर उत्थान मात्रो नहि भेल—विचार विमर्शादिक कोन कथा ? सन् १९४८ ई० मध्य मैथिलीक किछु चर्चो भै रहल अछि तकरो भान भेल। बुझि पड़ल जेना स्व० प्रो० राधा

कृष्ण झा, एम्. ए.क १९२०ई० बाला मैथिली विरोधक निराकरण करै हम सब उपस्थित भेल छी।

........हमरा तँ धन्धा अछि एहि बातक जे हम सब मैथिलीक हेतु की कै रहल छी जखन कि मैथिलीक जीवन मरणक प्रश्न उपस्थित अछि। समस्या तँ अछि मैथिली केँ जनशिक्षाक माध्यम बनेबाक, मैथिली केँ समयोपयोगी सामग्री सँ सजैबाक, प्राचीन अप्रकाशित साहित्य केँ प्रकाश मे अनबाक, समस्त मैथिली भाषी जनता मे मातृभाषा विषयक जागृति उत्पन्न करबाक मुदा हम सब सन्तुष्ट छी पटना विश्वविद्यालयक स्वीकृति मात्र सँ, कोनो मन्त्रीक प्रश्नोत्तर सँ, कोनो सामाजिक उपन्यास वा साहित्यिक प्रकाशन मात्र सँ। ताहू मध्य हम सब ई नहि देखै छी जे कै गोट विद्यार्थी मैथिली लै छथि वा कोन पत्र सम्पादक केँ कतेक ग्राहक छैन्हि। हमरा तँ एहि सब दिशा में अन्धकारे देखना जाइछ तखन एहि सन्तोषक की अर्थ से स्वयं संवेद्य। जखन हम सब समस्ये नहि बुझब तँ चिकित्से की करब। समस्त डाक्टरी वा वैद्यक पढ़ि रोगक कारण, निदान, चिकित्सादि जननहि की यदि हम कोनो रोगीक उपयुक्त चिकित्सा नहि कैल।

हमरा के मना करैत अछि जे मैथिली केँ अहाँ अपन मात्रिभाषा (मातृ) जनु कहू मुदा आइ यदि एहि विषयक जन-गणना हो तँ अधिकांश मैथिली भाषी अपना केँ हिन्दी भाषी लिखौताह। और मैथिल के थिकाह ? केवल किछु ब्राह्मण ओ कायस्थ ! तखन मिथिलाक सीमा कतै धरि ? एकर तँ चर्चो चुपेचुप चलैत अछि। आशा की विश्वासो छल जे ओरिऐन्टल कान्फ्रेंस सदृश सार्वभौम संस्थाक द्वारा यथार्थ मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक परिचय देल जयतैक मुदा ताहू सँ हमरा बुझने प्रतिनिधिगण केँ केवल मैथिल ब्राह्मण मात्र मिथिला वासी एवं मैथिल बूझि पड़ल हेथीन्ह। एहि स्थिति मे हम मैथिलीक भविष्यक अनुमान निकेँ कै सकै छी। सोझ कथा एतबे छैक। आब ककरो ने शंका छैक, ने तकरा समाधानक प्रयोजन। केवल छैक आवश्यकता रचनात्मक कार्यक्रमक आवश्यक माँगक। तकर हमरा कोनो टा प्रकाश नहि भेटल।..........।"[१]

---

१. तत्रैव, पृ० ३९-४१।

एहि उद्धरण सँ आभास भेटैत अछि जे एतेक दिन संघर्षरत रहितहु मैथिल महा सभाक संकीर्ण दृष्टिकोणसँ बाहर अपन समाज नहि भ' सकल छल। लेखक जे जनगणनाक प्रसङ्ग आशंका व्यक्त कयने छलाह तकर प्रतिफल १९५१ ई० क जनगणनामे प्रत्यक्ष देखल गेल। १९११ ई० मे जतय, एक कोटि सँ अधिक मैथिली भाषीक संख्या जनगणना रिपोर्टमे छल ततय ५१ ई० मे ओ उनचास हजार मात्र रहि गेल। परन्तु पत्र-पत्रिका सब दिन सँ एहि संकीर्ण दृष्टिकोणक विरोध करैत आयल। 'मिथिला ज्योति' सेहो एहि विरोधमे अपन स्वर मिलाय सामाजिक संगठनक दिशामे प्रयत्नशील रहल।

'ज्योति'क अपन लेखन शैली की छलैक से उद्धृत सम्पादकीय सँ ज्ञात होइत अछि, परन्तु शैलीक प्रसङ्ग एकरो दृष्टिकोण उदार छलैक। स्वदेश जकाँ एहू मे लेखक जाहि शैली मे लिखि क' अपन रचना पठबैत छलथिन ताही रूपमे छापि दैत छल। उपर्युक्त उद्धरण सँ एहि कथनक पुष्टि होइत अछि। हँ, एहि मे एकटा रूप विशिष्ट देखबामे अबैत अछि—कर्मकारकक प्राचीन रूप 'काँ' भेटैत अछि जकर आधुनिक रूप 'केँ' अथबा 'कैँ' देखल जाइत अछि, परन्तु एहिमे 'कएँ' रूप देखल जाइत अछि जे सब सँ भिन्न अछि।

एहि मे मैथिलीक विशिष्ट लेखकलोकनि सहयोग करैत छलथिन जकर संकेत निम्नांकित वक्तव्य सँ होइत अछि। सम्पादकीय मे लिखल गेल अछि—

"ई माँ मैथिलियैक कृपाक फल थिक कि हमरा मैथिलीक एक सँ एक विशिष्ट कवि, लेखक एवं मातृभाषानुरागी उदाराशय महानुभाव लोकनिक सहानुभूति एवं सहयोग प्राप्त भेल जाय रहल अछि।"[1]

एहि मे सर्वप्रथम जे क्षेत्र मे अवतीर्ण भेलाह से थिकाह प० श्री राघवाचार्य शास्त्री। ओना, प्रो० श्री हरिमोहन झा, श्री जयनारायण मल्लिक, डॉ० श्री कांचीनाथ झा 'किरण', प० जीवनाथ झा 'विद्याभूषण, प० श्री भवनाथ झा, बाबू भोला लाल दास, प्रो० हित नारायण झा, श्री गौरी नन्दन सिंह, श्री मथुरानन्द चौधरी 'मधुर', श्री कुलानन्द 'नन्दन', श्री नगेन्द्र कुमर,

---

१. किरण २, पृ० ६३।

बाबू श्री लोकपति सिंह आदिक संग एहू पंक्तिक लेखक लिखैत छलाह। मात्र सात अंक प्रकाशित भ' इहो अस्तंगत भ' गेल।

पल्लव

१९४८ ई० क अगस्त मास सँ नेहरासँ 'पल्लव' नामक मासिक पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ कयलनि श्री अमर नाथ चौधरी 'दीपक'। एकर प्रधान सम्पादक छलाह श्री वीरेन्द्र कुमार चौधरी। ई पहिल पत्रिका छल जे ग्राम्यक्षेत्र सँ प्रकाशित होअय लागल छल, परन्तु १९४८ मे एकर एकमात्र अंक प्रकाशित भ' ठमकि गेल। पल्लव पहिल पत्र छल जे "नवीन लेखक-गण केँ विशेष रूप सँ प्रोत्साहन भेटतैन्ह"[1] से घोषणा कयने छल।

एहि प्रथम अंक मे सर्वश्री यात्रीजीक 'एकाकी', आरसी प्रसाद सिंहक 'मिथिला', यदुनन्दन शर्माक 'बढ़ि चलू............' डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक 'रनियाँ', रानीक 'प्रभातक बात' शीर्षक कविता छपल अछि। श्री कुलानन्द 'नन्दन', श्री चतुरानन्दक कथा, श्री विरेन्द्र कुमार झाक महात्मा गान्धीक हत्याक सम्बन्धमे कल्पनात्मक कथा शैली मे लेख, श्री राज किशोर चौधरीक 'क्रोध' शीर्षक लेखक अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रिय राजनीति सम्बन्धी 'विश्वशान्तिक प्रश्न' शीर्षक लेख जकर लेखक थिकाह श्री चेतकर झा एम्. ए. ओ 'चिट्ठी पत्री' स्तम्भक अन्तर्गत वसानपट्टी निवासी श्री कमल नारायण मिश्रक 'सांस्कृतिक इतिहासक संरक्षण' सम्बन्धी विचार तथा रुक्मिणी चौधरी लिखित 'जयवार' उपन्यासक अश्लीलतापर खेद प्रकाश छपल अछि। सम्पादकीय मे पल्लवक प्रकाशनक उद्देश्य पर प्रकाश दैत लिखल गेल अछि—

"'पल्लव'क प्रथम अंक मैथिली-प्रेमी जनताक सम्मुख उपस्थित करैत प्रसन्नता होइत अछि। एकर प्रकाशनक उद्देश्य मिथिला और मैथिलीक सेवा थिक। नवयुगक नवीन वातावरण मे "पल्लव" आशा, उत्साह, दृढ़ता, और कर्मण्यताक सन्देश ल' क' सेवाकार्य में अग्रसर होइक

१. पल्लव, प्रथम अंक, आवरणक अन्तिम पृष्ठ।

Scanned by CamScanner

अभिलाषी अछि। आजुक परिस्थितिमे यदि हम केवल दैवी शक्ति पर विश्वास करैत हाथ पर हाथ रखने बैसल रही त' हमर सभक राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ह्रास पूर्ण रूपेन (?) भय जायत और कोनो स्वतन्त्र अस्तित्व शेष नहि रहत। 'पल्लव' परिवार ई आशा करैत अछि जे ओ मिथिला भूमि प्रत्येक नर-नारी तक नवीन चेतनाक सन्देश पहुँचाबैकमे सफलता प्राप्त करत।

'पल्लव' कोनो दल-विशेष सँ सम्बद्ध नहि अछि। 'बहुजन सुखाय बहुजन हिताय' एकर प्रेरक छैक। एकर पृष्ठ में प्रत्येक विचारधाराक लेख स्थान पाओत तथा विचार स्वातन्त्र्यक रक्षा एकर धर्म रहतैक। ई कोनो आवश्यक नहि जे विभिन्न रचना में प्रतिपादित विचारधारा और सम्पादकीय दृष्टिकोण मे सदैव सामञ्जस्य होए। पल्लव परिवार समस्त मैथिली-प्रेमी समुदाय सँ एहि सेवा-प्रयास में सद्भावना और सहयोगक आशा करैत अछि। संगहि ओ सब महानुभावक प्रति कृतज्ञता प्रकट करैत अछि जिनक सहयोग सँ ई कार्य सम्भव भय सकल अछि। हम सभ काशी विश्वविद्यालयक कुलपति, मैथिल गौरव डॉ० अमरनाथ झाक विशेष आभारी छियैन्ह जिनक प्रोत्साहन हमर प्रेरणा शक्ति छल।''[१]

परन्तु जाहि दृढ़ताक उद्घोष पहिल अंकमे कयल गेल से प्रथमे अंक धरि सीमित रहि गेल। १९४८ ई० क बाद जे 'पल्लव'क अंक प्राप्त होइत अछि, वर्ष ओ मासक उल्लेख ओहिमे नहि अछि। छपल अछि 'पल्लव' —१ तथा एकर सम्पादक छथि श्री शैलेन्द्र मोहन झा। एहि अंकमे एक सम्पादक मण्डलक नाम सेहो छपल अछि जाहिमे सर्वश्री प्रो० हरिमोहन झा, आरसी प्रसाद सिंह, सुरेन्द्र झा 'सुमन' तथा वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क नाम छपल छनि। कलात्मक आवरण पृष्ठ अछि जकर चित्रकार थिकाह ओम प्रकाश। एहि अङ्कक प्रकाशक मिथिला पुस्तक भण्डार, दरभंगा अछि। अपन सम्पादकीय मन्तव्यमे सम्पादक घोषित कयने छथि—

''पल्लव' प्रकाशित भऽ रहल अछि। यद्यपि पृष्ठ संख्याक दृष्टि सँ ई अत्यन्त क्षीण अछि तथापि पाठ्य सामग्रीक दृष्टि सँ एकरा विविध विषय

---

२. तत्रैव, पृ० ३२।

विभूषित एक सर्वाङ्गीन (ण) सुन्दर पत्र बनेबाक प्रयास कैल गेल अछि। हमरा लोकनिक इएह प्रयत्न अछि जे 'पल्लव'क एक एक अंक मैथिली साहित्यक स्थायी वस्तु हो। एहि लेल पल्लव कैं मैथिलीक प्रमुख साहित्यिकक सहयोग प्राप्त छैक तथापि अन्य गण्यमान्य लेखक सभसँ सेहो अनुरोध अछि जे एहि संकल्प-पूर्ति मे अपन हार्दिक सहयोग प्रदान करथि।

सम्प्रति 'पल्लव' क सालमे चारि अंक प्रकाशित हैत। परन्तु जँ पाठक लोकनि एकरा अपनेबा मे समुचित उत्साह देखौताह त अतिशीघ्र मासिक रूप देवाक प्रयास कैल जाएत।''

एहि घोषणा सँ निष्कर्ष बहराइत अछि जे १९४८ ई० मे प्रकाशित 'पल्लव' आ एहि 'पल्लव' में नाम साम्यक अतिरिक्त कोनो सम्बन्ध नहि छल। ई त्रैमासिक रूपमे प्रकाशित होअय लागल। स्थान बदलि गेलैक, सम्पादक बदलि गेलाह, परन्तु ''नवीन लेखकके विशेष रूपसँ प्रोत्साहन भेट-तनि'' ई घोषणा एहू अंक मे अछि।

प्रो० श्री हरि मोहन झा लिखित बहुचर्चित एकांकी ''अयाची मिश्र'' एही अंकमे प्रकाशित छनि। नवीन कवि मे श्री जगदीप नारायण 'दीपक'क बहुचर्चित कविता—''जाइत अछि नव वधू पिया घर'' तथा श्री चन्द्र भानु सिंह क ''कहिओ ने हो भोला बाबा ! एहन पीड़ा भेल'' सेहो एहि अंक मे छपल छनि। उपर्युक्त दुनू कविता ''विद्यापति गोष्टी'', लहेरियासराय द्वारा प्रकाशित ''विद्यापति के देश में'' नामक कविता संग्रहमे छपल अछि १९५५ ई० मे। यदि एहि पुस्तक सँ 'पल्लव' मे उद्धृत कयल गेल हो तँ एहि अंकक प्रकाशन एकर बाद भेल होयतैक। एहि पत्रमे प्रकाशित कविता जँ संकलन मे पठाओल गेल हो तँ १९५५ ई० सँ पूर्वक एहि अंक कें मानय पड़त। 'दीपक'जीक ई कविता १९५० मे 'वैदेही' क ११म अंक मे सेहो छपल छनि।

एकर बादक जे अंक प्राप्त होइत अछि ताहिने मैथिली मासिक—१ छपल अछि जकरा काटि कलम सँ २ बनाओल गेल अछि। आवरणक चारिम पृष्ठ पर अंग्रेजी मे कोन पर छापल अछि जून', ५७, परन्तु एहि मे एहि सँ पूर्वक अंकक सम्पादक मण्डल नहि अछि। एकर सम्पादक छथि

Scanned by CamScanner

श्री शैलेन्द्र मोहन झा तथा श्री अ० चौधरी 'दीपक', प्रबन्ध सम्पादक श्री हरिश्चन्द्र झा 'हरीश'। एहि अंक मे परामर्शदाता-वर्गमे छथि—श्री यात्री (नागार्जुन), श्री व्रज किशोर वर्मा, श्री राम चन्द्र मिश्र तथा श्री कृष्णानन्द झा।

एहि अंक मे प० विनोदा नन्द झा, कुमार गङ्गानन्द सिंह, भोला पासवान शास्त्री, हृदय नारायण चौधरी, सहदेव महतो, ललितेश्वर साही आदि मन्त्री ओ उपमन्त्री लोकनि सहित मिथिलांचलक विधायक लोकनिक पल्लव परिवारक दिस सँ संवर्द्धना कयल गेल छनि। अन्त मे जे कहल गेल छनि—"विधायक लोकनि जनताक नाभि कमल थिकाह, जन सामान्य सँ फराक होइतहिँ सुखा जएताह ततवा धरि मोन रखिहथीन···।" एहि सँ 'पल्लव' क स्वरक तीक्ष्णताक आभास भेटैत अछि। एहि अंक सँ प्रस्तुत अंकक सामग्रीक प्रसंग टुटप्पी शीर्षक सँ रचना सभक गुण दोष पर दू चारि वाक्यमे प्रकाश सेहो देल गेल अछि, परन्तु भाषा शैलीक प्रसङ्ग ई पत्र अस्त-व्यस्त सन प्रतीत होइछ। नव लेखनक बीज वपन एही पत्रिका मे भेल जे आँगा चलि अनेक अल्पजीवि पत्र-पत्रिका मे पल्लवित भेल अछि जकर विवेचन यथास्थान होयत। एहि टुटप्पीमे राजकमल लिखित 'खरीद बिकरी' शीर्षक गल्पक प्रसङ्ग जे विचार व्यक्त कयल गेल अछि से बानगी रूपेँ उद्धृत कयल जाइत अछि—"राजकमलक गल्प (खरीद बिकरी) केर तीक्ष्ण युग सत्य बढ़ड वेधक. बड्उ कटु तिक्त! हम अहाँ देखिओ क' नइ देखिअइ से भ सकइछ मुदा संवेदनशील कलाकार केँ कतउ रहल जाइ! या देवी सर्व भूतेषु क्षुधा रूपेण संस्थिता···से ताही क्षुधा देवीक विकराल लीलाक कदर्थ-प्रतीक के एक पंजाबी शरणार्थिनीक अभद्र भंगिमा मे अपना आगाँ ठाढ़ि देखि अपनहि पर खउँझा उठब! मुदा आन उपाइए कोनबाध्य भ' केँ शरीर सम्पर्क केँ जीविकाक अवलम्ब बनओनिहारि एक टा छिन्न मूल युवती जँ अहींक समक्ष ठाढ़ि होअए?"[1]

एहि उद्धरणक भाषाक स्वरूप पर विशेष दृष्टि निक्षेप आवश्यक। भाव ओ भाषा दुनू क्षेत्रमे स्वच्छन्दताक प्रवेशक उदाहरण एहिमे प्राप्त होइत अछि।

---

१. पल्लव, जून ५७, अंक २, पृ० २।

Scanned by CamScanner

'पल्लव'क ई अंक मधुबनी सँ प्रकाशित भेल अछि आ ई क्रम दिसंबर ५७ धरि चलैत अछि जाहि मे मात्र आठ गोट अंक प्रकाशित भेल अछि। ६-७ म अंक संयुक्तांक अछि तथा गणेश चन्द्र झा लिखित' रत्नहार' नामक उपन्यासक अतिरिक्त सम्पादकीय आदि एको वाक्य नहि लिखल गेल अछि। यद्यपि एहि उपन्यासक लेखक कें प्रथम जासूसी उपन्यासकार कहल गेल छनि परन्तु मैथिलीक प्रथम उपन्यास 'रामेश्वर' (ले०—प० जीवछ मिश्र) जे पढ़ने छथि तनिका ई अवश्य असंगत प्रतीत होयतनि। अस्तु।

पल्लव जे एक प्रकारक प्रगतिशीलताक सूत्रपात खास क' कथा-साहित्यमे कयलक तकर प्रतिक्रिया समाजमे की भेल तकर उदाहरण 'पल्लवे'क ११म अंकमे प्रकाशित 'कहानीक चौबट्टी पर' शीर्षक समीक्षात्मक लेखमे भेटैत अछि जकर लेखक छथि—'सपूत'[१]। अभिव्यक्त विचार निम्नोद्धृत अछि—

"कोनो साहित्यक इतिहासमे साल डेढ़ सालक तत्कालीन महत्त्व रहितो कोनो स्थायी महत्त्व नहि होइत छैक। खास कै स्थायी साहित्य एवं साहित्यक प्रवृत्तिक विश्लेषण करबाक काल। अतः मैथिली कथा-साहित्यक सम्बन्धमे विचार करबा काल, समयक अन्तराल बेसी लेमै पड़त। कोनो एहन स्थिर बिन्दु मानै पड़त जाहि ठामसँ वर्त्तमान आयामक विस्तार प्रारम्भ हो।

साहित्यक कोनो अंगसँ विशेष तरल एवं तीव्र परिवर्त्तनशील होइत छैक कहानीक टेकनिक। एहि दृष्टिकोणें सालो डेढ़ सालक महत्त्व होइत छैक। मुदा से ताही भाषामे जाहिठाम अबाध प्रकाशन-सौविध्य छैक। मैथिलीमे तकर केहन सुविधा छैक से अनुभूते वस्तु अछि। तें मैथिलीमे कहानी कें विकसित हैबाक अवसरे ने भेटि रहल छैक। तथापि विभिन्न अभाव अभियोगक उपस्थिति रहितो कहानी आगाँ बढ़ल अछि अवश्य।

किन्तु मैथिली कहानीक अध्ययन निकटसँ करैत छी तँ ओहिमे जीवनक प्रति भयंकर अनास्था, मानवीय चेतनाक उपेक्षा आ सेक्सुअल उच्छृंखलता पबैत छी। ई अनियंत्रित सेक्स भावना मैथिलीक कतिपय लेखककें डुबा कँ छोड़त। ई अवश्य जे अर्द्ध चेतन मानसमे चक्कर काटैत विभिन्न क्रिया-

१. स्मर्त्तव्य जे एहि नामसँ डॉ० श्री रामदेव झा वैदेही, निर्माण आदिमे सेहो लिखैत छलाह।

Scanned by CamScanner

प्रक्रियाक ताना-बानासँ उत्तम कहानीकेर सर्जन होइछ आ ई साहित्य-जगतक आधुनिक उपलब्धि थीक। फ्रायड, जुंग, एडलरक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तक अनुसार जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे यौन-भावना मूल निर्माताक रूपमे काज करैत छैक। मानवक समग्र क्रिया-कलापक जेना मूल स्रोत यौन आकांक्षा होइत छैक आ तकरे परितृप्तिक लेल जीवनक व्यापार चलैत छैक।

द्वन्द्वात्मक आन्तर्मुख कहानीक लेल ई तत्त्व कहानी लेखकके भेटलन्हि। मुदा प्रायः एकर दुरुपयोगे होइत रहल अछि। प्रश्न ई अछि जे की जीवनक वासनात्मक विकृतिक प्रशस्त चित्रण कहानीक श्रेय अछि? वर्त्तमान-कालीन मैथिली कहानीमे मनुष्यक चित्रण वासनाक कीड़ाक रूपमे भेल अछि। मुदा की मनुष्य वासनासँ ऊपर नहिँ किछु अछि? एहि प्रश्नक उत्तरमे सफल कहानीक मूल तत्त्व बीजीभूत अछि। जाधरि मैथिली कहानीके वासनासँ मुक्ति नहि भेटि जाइछ, कहानीकारक मानसिक यौन भावनाक परितृप्तिक माध्यम कहानी रहतन्हि ताधरि कोनो सफल कहानीक आशा करब व्यर्थ।

कहानीक दोसर शिविरमे मूल तत्त्व मानल जाइछ मानवक आर्थिक प्रवृत्ति। एहि दृष्टिएँ मानव-जीवनक सम्पूर्ण प्रक्रिया आर्थिक भावनाक कारणे अछि। अर्थक भावना जीवनक सभ क्षेत्रमे पसरल अछि आ वैह सांसारिक मानवीय व्यापार केर प्रेरणा स्रोत अछि। राजनीतिक चेतनाक प्रसारक कारणे मार्क्सक ई डाक्ट्रीन सेहो बहुजन मान्य अछि। वर्त्तमान समाज सँ उत्कृष्टतम कहानीक मूल आधार इहो रहल अछि। मैथिली कहानीमे जाहि ठाम एहि विचारक समाजगत मूल्य केर आधार लै कहानीक रचना भेल अछि ओहि ठाम उत्कृष्ट कहानी भेटल अछि। मुदा जाहि ठाम कहानी असमन्वित ई तत्व रहल अछि ओहि ठाम कहानी मात्र 'फेंटासी' बनि कै रहि गेल अछि। एहने कथा प्रतिपादनक भारसँ बोझिल रहैछ। एहन निष्प्राण कहानी पाठकक मोनके भिनभिना दैछ, माथके भरिआ दैछ।

प्रायः कहल जाइत अछि जे फ्रायडसँ साहित्यक अभ्यन्तर आ मार्क्ससँ वाह्य अंगक निर्माण भेल अछि। मुदा की एकरा मान्य कहल जा सकैत अछि? ई प्रश्न विद्वानलोकनिक मथदुखीक कारण रहल अछि। अन्ततः ककरा मूल तत्व मानल जाय? एकटा तीन दिनक भूखल युवकक आगाँ

Scanned by CamScanner

भोजनक थार आ सुन्दरी युवती दुनू आबि जाइक आ ओहि युवकके वैकल्पिक चुनाव करबाक आज्ञा होइक तँ ओ ककरा चुनत ? एकरा उत्तरमे बेस घीचतान छैक, मुदा एहि दुनूक लेल जे अन्तर्द्वन्द्व भेल हेतैक युवक हृदयमे तकर सामान्य तत्व बहुत रास उत्तम कहानीक आधार रहल अछि। किन्तु मैथिलीक अधिकांश कथाकार एहि दुनूकेँ बड़ अपटुतासँ फेंटि फाँटि दैत छथि। ई कथाक चिन्तन प्रवाहकेँ विश्रृंखल कै दैछ।

मैथिलीक आधुनिक कथाक पृष्ठभूमि प्राय: आर्थिके समस्यासँ अधिकांशमे निर्मित अछि तथापि जीवनक लेल दुनू विचारधारा आवश्यक अंग छैक। जीवनसँ कोनोकेँ फराक नहि कैल जा सकैत छैक। किन्तु कहानीक मूल तत्त्व जकरा कारणेँ कोनो कहानीक मान निर्धारण कैल जाइछ से उपर्युक्त दुनू वस्तु नहि अछि। मुदा भ्रमवश वा दुराग्रहसँ ओकरे कहानीक सर्वेसर्वा मानि लेल गेल अछि। एहि तरहक व्यामोह कहानीकेँ प्रोपेगंडा लिटरेचर बना कै राखि देलक अछि।

कहानीकार तँ भयंकर रूपेँ कहानी लिखैत छथि मुदा सभमे अनास्थाक स्वर एवं आत्मगत धुरीहीनताक परिचय भेटैत अछि। जे कहानीक नहि, कहानीकारक भविष्यकेँ अज्ञात दिशा दिश ठेलि रहल अछि।''......१

प्राय: ई पल्लवक अन्तिमे अंक छल। एहिमे यद्यपि ''पल्लव लिमिटेड' बनयबाक हेतु सहयोगक याचना कयल गेल अछि, परन्तु से किछु भ' नहि सकल आ १९४८ सँ १९५८ ई० क मार्च धरि सब मिलाय बारह गोट एकर अंक प्रकाशित भ' सकल जाहि सबमे कतिपय उपादेय रचना सब प्रकाशित भेल। पल्लवमे लिखनिहारमे छलाह—प्रो० श्री हरिमोहन झा, डॉ० श्री शैलेन्द्र मोहन झा, श्री उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', श्री रुद्रनाथ ठाकुर, श्री आरसी प्रसाद सिंह, श्री चतुरानन्द, श्री जयकान्त ठाकुर, श्री यात्री, प्रो० हितनारायण झा. मेधातिथि, राजकमल, गणेशचन्द्र झा, श्री ललित, श्री योगिराज, श्री इन्द्रनाथ झा, श्री शंकरकुमार झा, श्री राधाकृष्ण, श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', श्री गोपालजी झा 'गोपेश', श्री सोमदेव, श्री मणिपद्म, श्री उमेश चन्द्र चौधरी, श्री राम देव झा, श्री अनादि शंकर, श्री मिहिर, श्री मायानन्द, श्री राजमोहन झा आदि। एहिसँ अतिरिक्त श्री निर्मला कुमारी श्रीवास्तव, श्रीमती प्रतिमा अष्ठाना, श्री माधुरी झा, श्री उषारानी, श्री रुक्मिणी

१. पल्लव, मार्च ५८, पृ० २२-२४।

चौधरी आदि लेखिका सेहो छथीह। समग्र रूपें पल्लव 'नवता'क सूत्रपात कय मुरझा गेल से मुरझयले रहि गेल।

वैदेही

२६ जनवरी, बृहस्पति १९५० ई०, जहियासँ भारतक संविधान लागू भेल, मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे एक नवीन अध्यायक सूत्रपात भेल—जानकीक जन्मभूमि सीतामढ़ीसँ पाक्षिक ''वैदेही'क प्रकाशनसँ। १९०५ ई०सँ १९५० ई० क अन्तरालमे 'वैदेही' दोसर पत्र छल जे 'पाक्षिक' रूपमे प्रकाशित होअय लागल। एकर 'कण्ट्रोलिंग एडीटर' छलाह प्रो० श्री कृष्णकान्त मिश्र तथा 'मैनेजिंग एजेन्ट' छल राजा प्रकाशन, दरभङ्गा। ई शंकर प्रेस, सीतामढ़ीसँ मुद्रित होइत छल। मात्र ६ गोट अंक ओतयसँ प्रकाशित भेलाक बाद 1 मई १९५० सँ एकर कार्यालय सीतामढीसँ दरभंगा चल आयल। तहियासँ १९५१ धरि एकर सम्पादन एहि पंक्तिक लेखक द्वारा होइत रहल, परन्तु सम्पादन विभाग दरभंगा आ प्रकाशन विभाग सीतामढ़ी रहलासँ अनेक कठिनता होइत छल, जाहि कारणें १५ अगस्तसँ १ नवंबर १९५० धरि प्रकाशन बन्द छल जकर सूचना १५-११-५० क चौदहम अंकमे देल गेल अछि। एही अंकसँ एकर प्रकाशन दरभंगासँ होअय लागल जे एकर अन्तिम अंक धरि होइत रहल। १९५० सँ १९७३ ई० धरिक अन्तरालमे एहि पत्रिकाक सम्पादक-मण्डलमे अनेक परिवर्त्तन होइत रहल। १९५२ ई० धरि ई पाक्षिक रूपमे अबेर-सबेर प्रकाशित होइत रहल आ १९५३ ई० क जनवरीसँ ई नियमित रूपें मासिक भ' गेल।

'वैदेही'केँ सुव्यवस्थित बनयबाक हेतु १९५४ ई०मे एक वैदेही समितिक गठन कयल गेल जकर अध्यक्ष म. म. डॉ० उमेश मिश्र, उपाध्यक्ष प्रो० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', कोषाध्यक्ष श्री शशिनाथ चौधरी, एकर अतिरिक्त मन्त्री श्री कृष्ण कान्त मिश्र, प्रकाशन मन्त्री श्री सुधांशु शेखर चौधरी, प्रचार मन्त्री प० रामकृष्ण झा 'किसुन,' कला एवं मनोरंजन मन्त्री श्री अमूल्यधन चटर्जी, साहित्य मन्त्री प्रो० श्री भक्तिनाथ सिंह ठाकुर, विक्रय—श्री व्रजकिशोर वर्मा, पत्रिका सम्पादक श्री चन्द्रनाथ मिश्र, 'अमर,' एवं आय-व्यय निरीक्षक प्रो०

Scanned by CamScanner

श्री सुरेन्द्र नाथ झा, मनोनीत होइत गेलाह। एहि प्रकारेँ एक सुनिश्चित योजनाक आधारपर वैदेही समिति मैथिली सेवाकार्यमे निरत भेल।

एहि पत्रिका द्वारा मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना, मिथिलामे आकाशवाणी केन्द्रक स्थापना, हिन्दी-मैथिली विवादमे मैथिलीक स्वतन्त्र भाषात्व निरूपण, विद्यापति स्मृति पर्वकेँ व्यापक बनयबाक कार्य, अखिल भारतीय लेखक सम्मेलनक आयोजनमे योगदान आदि विशिष्ट कार्यक अतिरिक्त सस्त पुस्तकक प्रकाशन, कथा, समालोचना, एकांकी, उपन्यास, महाकाव्य, भाषान्तरसँ अनुवाद, मिथिलाक राजनीतिक ओ सांस्कृतिक इतिहास आदि अनेक विशेषांकक प्रकाशन आदि अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित भेल, परन्तु इतिहासकारलोकनि नामोल्लेख मात्र क' विराम ल' लेने छथि। डा० 'श्रीश' एक अनुच्छेदमे जे अपन विचार व्यक्त कयने छथि तकर अवलोकन कयल जाय—

"१९५० ई०मे 'वैदेही'क प्रकाशन सीतामढ़ीसँ भेल जखन कृष्णकान्त बाबू सीतामढ़ीमे रहैत छलाह। दरभंगाक मिथिला कालेजमे हुनक नियुक्ति भए गेलासँ दरभंगहिसँ 'वैदेही' क्रमिक आकर्षक रूपसँ पहिने पाक्षिक पुनः मासिक रूपमे प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन, श्री सुधांशुशेखर चौधरी ओ प्रो० कृष्णकान्त मिश्रक संयुक्त-सम्पादकत्वमे प्रकाशित होअए लागल। पश्चात् किछु दिन एकर सम्पादन श्री 'चन्द्रनाथ मिश्र अमर' ओ किछु दिन सोमदेवजी सेहो कएलैन्हि। १९५३क पश्चात् एहिमध्य आकर्षक साहित्यक सामग्री बाहर होइत छल आओर एकरा मैथिलीक प्रतिनिधि साहित्यकार लोकनिक सहयोग प्राप्त छलैक। मुदा एकर स्तर क्रमिक खसैत गेलैक। बीच-बीचमे कएक बेर ई बन्दो भए गेलैक। पुनः अमरजी ओ सोमदेवजी एहिमे नव-चेतनाक संचार करबाक चेष्टा कएल। एहि पत्रिका द्वारा नवीन रीतिक कथाक अद्भूत विकास भेल। किछु उच्च कोटिक कविता ओ निबन्ध सेहो प्रकाशित भेल। कहिओ कहिओ नीक साहित्यालोचना सेहो छपल। एकर कथा, समालोचना, एकांकी प्रभृति विशेषांक बड़ महत्त्वक सिद्ध भेल अछि। सर्वतोभावेन 'वैदेही' द्वारा मैथिली साहित्यक बड़ उपकार भेल।"[१]

एहि उद्धरणमे सम्पादकक प्रसङ्ग अत्यन्त भ्रामक सूचना देल गेल अछि। तथ्य निम्नांकित रूपेँ अछि—१९५० सँ १९५३ धरि ई पाक्षिक रहल जाहि

१. मै० सा० इतिहास, पृ० १२७-२८।

मे सातम अंकसँ २४म अंक धरि एहि पंक्तिक लेखक द्वारा सम्पादन होइत रहल। १९५३ ई० मे स्वयं श्री कृष्णकान्त मिश्र प्रबन्ध ओ सम्पादन-कार्य करैत रहलाह। १९५४क जनवरीसँ ई पत्र मासिक रूप ग्रहण कयलक तहियासँ पुन: एही पंक्तिक लेखक सम्पादन करैत छलाह, परन्तु अक्टूबर १९५४ मे कतिपय नीति-सम्बन्धी मतभेद भ' गेलाक कारणेँ एक सम्पादक-मण्डल बनल जाहिमे श्री शेखरजी सेहो सम्मिलित कयल गेलाह। ई क्रम केवल दु मास अर्थात् नवंबर ओ दिसम्बर धरि रहल। १९५५ मे हम साप्ताहिक निर्माणक सम्पादन करय लगलहुँ। फलत: १९५५ ई० क जनवरीसँ श्री सुमनजी, श्री शेखरजी ओ श्री कृष्णकान्त मिश्रक संयुक्त सम्पादकत्वमे प्रकाशित होअय लागल जे क्रम मार्च १९६१ धरि चलल, परन्तु श्री शेखरजी १९६० क सितम्बरसँ साप्ताहिक मिथिला मिहिरक सम्पादक नियुक्त भ' गेल छलाह, तेँ केवल हुनक नाम छपैत छलनि, जे हुनका हेतु अवैध छलनि, अत: अप्रैल' ६१ सँ श्री शेखरजीक नाम हटि गेलनि आ श्री सुमन जी ओ श्री कृष्णकान्त बाबू सम्पादक रहि गेलाह। ई क्रम मार्च '६४ धरि चलल। अप्रैल '६४ सँ जून ६८ धरि पुन: एहि पंक्तिक लेखक एकर सम्पादक रहलाह आ हिनक सक्रिय सहयोगमे प्रो० श्री रामदेव झा छलथिन। पुनः नीति सम्बन्धी मतभेदक कारणेँ हमरा लोकनिकेँ सम्पादन छोड़य पड़ल आ दिसम्बर '७० धरि श्री कृष्णकान्त बाबू स्वयं सम्पादक रहलाह। १९७१ सँ एक अतिथि सम्पादकक रूपमे श्री सोमदेवक नाम छपैत रहलनि आ मइ १९७३ क बादसँ एकर प्रकाशन स्थगित अछि। बीचमे कखनहुँ कदाच कोनो अंक प्रकाशित भेल हो से सम्भव जे हमरा दृष्टिपथ पर नहि आयल अछि। एतेक फेर बदलमे अनेक बेर स्थगित भेल। अन्तमे एकर स्तर अवश्य निम्नोन्मुख भ' गेल छल।

'वैदेही'क पहिल अंकमे पत्रक प्रकाशनक उद्देश्य पर प्रकाश दैत 'ई पत्र किऐक ?' शीर्षक सम्पादकीयमे लिखल गेल अछि—

"आइ ई पत्र भेटैत-भेटैत देश प्रजातन्त्र भऽ जाएत। अजुका भोरमे सूर्यक उदय होयब साधारण नहि। भिनसरका नीरवता भंग करैत दुन्दुभी नाद ककरा मोनकेँ मुदित ओ आह्लादित नहि करत। एहि सुअवसरपर आइ विदेहक पवित्र भूमिसँ 'वैदेही' बहार भ' रहल अछि। सीतामढ़ीक स्थान कतेक पवित्र अछि से हम व्यर्थे कहब। मिथिलाक केन्द्र थीक, मिथिला मैथिल मैथिली रसक सञ्चार एहि ठामक प्रत्येक साहित्यक तपस्वीमे भेटत। एतुका उत्साह

उदारता आ शालीनता प्राय: मिथिलाक कोनहु भागमे कम्मे ठाम भेटत । इएह हमरा सभके उत्साह देलक जे आइ वैदेहीके देखैत छी ।

मैथिलीमे पत्र एकदम नहि एखन अछि, सैह कहब । 'बटुक'टा इज्जति रखने अछि । 'गङ्गा' 'भारती' 'मिथिलामित्र' 'विभूति' 'मोद' 'मैथिलबन्धु' 'जीवन प्रभा' 'तिरहुत समाचार' 'मिथिला ज्योति' 'स्वदेश' आर की ने की देखलहुँ । सभक दु:खान्त देखि क्षुब्ध भ' जाइत छी । हमरा सबहिके तँ किछु एखन बजबाक मुँह नहि अछि । धन, मन, तनसँ हमरा सबहिक सहायता करू । एतबए भिक्षा सभसँ । हमर अपन सामग्रीक विषयमे किछु कहबाक नहि । जेना-तेना गज-पज लद्ध-पद्ध सोझांमे राखि देल अछि, जाहि लेल क्षमा माँगबाक सामर्थ्यो नहि, दोसर प्रेसक गर्भमे गनि क' तीनि दिन रहल । सभटाक संयोजक जे छथि तनिक देह दशा एतबए छन्हि जे सप्ताह सँ ऊपर भ' गेलन्हि जे ज्वर-पीड़ित छथि ओ १०१-१०२ डिग्री ज्वर छैन्हि । तइओ जनवरी २६, १९५०क बहार हो एतबय हुनक प्रतिज्ञा पूर भेलन्हि ताहि लेल सभके धन्यवाद । आब नित्य अङ्गरेजी मासक १ ओ १५क बहार भ'क' सभक डेरापर ई पत्र सुदृढ़ रूपसँ पहुनाइ करत, आशा से ओ भरोस । एतेक धरि विश्वास देब सभके जे टाइमपर किछुओक जुटाएब नित्य अपने सभक लग । स्मरण एतबए राखब जे सभक ई पत्रिका थिक ओ सभ अपन बिचार द' सकैत अछि ।''[1]

वस्तुत: एहि उद्धरणसँ पत्रक उद्देश्यपर प्रकाश नहि पड़ैत अछि । केवल एतबे आभास भेटैत अछि जे 'स्वदेश'क प्रकाशन बन्द भ' गेलाक कारणें जे रिक्तता आयल छल तकरे भरबाक उद्देश्यसँ जेना-तेना क्षेत्रमे एक पत्रके अवतीर्ण करबाक आतुरतासँ ई प्रयास कयल गेल । सम्पादकीयमे भावक गम्भीरता ओ भाषाक सुष्ठुता देखबामे नहि अबैत अछि, एकरूपतो नहि देखल जाइत अछि । एकर प्रकाशनसँ पूर्व कोनो योजना, कोनो रूप-रेखा स्थिर नहि कयल गेल छल । मात्र एक अदम्य उत्साह एकर संयोजकके क्षेत्रमे आँखि मूनि क' कूदि जयबाक हेतु प्रेरित कयने छलनि । एक संकल्प से देखल जाइत अछि जे जैह किछु होयत सैह लय समय पर पाठकक हाथमे अङ्क पहुँचा देल जाय तथा अनियमित प्रकाशनक कलंकसँ मैथिली पत्र-पत्रिकाके मुक्त कयल जाय ।

---

१. वर्ष १, अंक १, पृ० २ ।

एहि धारणाक पुष्टि दोसर अंकक सम्पादकीयसँ भ' जाइत अछि। एकरो निरीक्षण कइए लेल जाय। शीर्षक अछि 'हे लिअऽ'—सम्पादक लिखने छथि—

"ई दोसर अंक थीक। जहिआ एकर प्रथम प्रति सभकेँ भेटल छल तहिआ की ककरहु विश्वास भेल होयत जे ई एहिना नित्य बहार हएत। प्रायः दोसर माघ भेने 'जाड़' चलि जायत। एतबए पुनः कहब जे बरोबरि सभकेँ बिनु संकोचहि ई पत्र पहुनाइ करताह, यद्यपि नैवेद्य ओ भोजन हिनका हेतु किछु दिन धरि पाठकगण अपना प्रेरणासँ नहि ओरिऔथिन्ह से हमरा ज्ञात अछि। एहि नेनपन लेल क्षमा याचना।

मैथिली अपन भाषा थिक से आजुक युगमे बूढ़ बुढ़ानुस, युवा-युवती ओ नेना सभकेँ कहैत सरिपौं लाज होइत छन्हि। कहि नहि एक बेर हमरहु कहैत कोनादन लागल छल। आब तकर अर्थ बुझैत छिऐक। ततेक ने हमरा सभ अनका दृष्टिएँ खसल छी जे आब की अपना सबहिक देहमे किछुओ कत' रहल, सभटा धोखरि गेल अछि। ई मांस शून्य शरीरमे यदि हड़ाहीक वनर्जीक आपरेशनक अस्त्र प्रायः लागि जाए तँ देह घुरि आओत। आ' ताहि लेल बड़ कले बले सभ गोटाकेँ कान्ह द' क' उठाबए पड़त ई रोगीकेँ। कनिओ इम्हर-उम्हर डोलल तँ फेर 'बम महादेव'! पुनः प्राण नहि घुरत, सभ दिन लेल 'गेल महींस पानिमे पड़ड़ू सहित' वला परि भ' जाएत। बल संचय पहिने भऽ जाएत ने तखन ने कनेक काज करब—फगुआ खेलायब, सरही कलमी आम कण्ठसँ नीचाँ उतारब आ ततेक मोटाएब जे आन भाषा सए वर्षमे एतेक बलिष्ट नहि हएताह। सैह करू, ताहीमे कल्याण अछि। तखन चम्पा चम्पा भ' जइतीह।"[1]

एहि उद्धरणमे भाव ओ भाषा दूनूमे जाहि नेनपनक हेतु क्षमा-याचना कयल गेल अछि से नेनपन स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि। जहिना अपना देशमे बालिग मताधिकार की थिकैक से बिनु बुझनहि लोक बालिग मताधिकारक प्रयाग क' रहल अछि तहिना एकर संयोजक पत्रकारिताक कलाकेँ बिनु हृदयंगग कयनहि एहि पथपर आरूढ़ भेल सन प्रतीत होइत छथि, परन्तु जेना कोनो टोपी पहिरैत पहिरैत माथक आकार ग्रहण क' लैत अछि तहिना

---

१. अंक २, पृ० २।

'वैदेही' सेहो प्रकाशित होइत-होइत एक सुदृढ़, सुरुचिपूर्ण ओ योजनाबद्ध पत्रिकाक रूप धारण क' लेलक आ पत्रिकारिताक इतिहासमे अपन एक महत्वपूर्ण स्थान बना लेलक। हमरा दृष्टिएँ मैथिली वा मैथिली-हिन्दी मिश्रित समस्त पत्र-पत्रिकामे केवल चारि गोट पत्रक एहन व्यक्तित्व बनि सकलैक अछि जकरा सभक स्वतन्त्र अध्ययन अपेक्षित अछि आ ओहि सभक नाम थिक—'मिथिला-मोद', मिथिला-मिहिर', 'मिथिला-दर्शन' तथा 'वैदेही'।

'वैदेही'क प्रथम अंकमे मुखपृष्ठेपर बिहारक तत्कालीन राज्यपाल माधव श्रीहरि अणे महोदयक शुभकामना-सन्देश सहित एक विस्तृत चित्र सेहो छपल छनि। सन्देशक भाषा अङ्गरेजी छैक।[1]

प्रायः एही शुभकामना-सन्देशक प्राप्तिक कारणें १०१-१०२ डिग्री ज्वर रहितो श्री कृष्णकान्त बाबू दुस्साहस पूर्वक प्रथम अंककें बिनु कोनो योजना बनौने प्रेसक गर्भसँ बाहर क' लेलनि।

एहि अंकमे श्री गोविन्द झाक 'पथगीत' तथा श्री यात्रीजीक 'गाँधी' शीर्षक कविता, शरच्चन्द चटर्जी रचित 'रामेर सुमति' नामक बंगला उपन्यासक मैथिली अनुवाद 'श्री ठाकुर-पाठक-चौधरी' नामसँ (क्रमिक) छपल अछि। एकर अतिरिक्त मैथिली साहित्य परिषदक बारहम अधिवेशन, काशीक समाचार, स्वतन्त्रताक इतिहास एक दृष्टिमे, आल इण्डिया रेडियोक जनतन्त्र-दिवस-प्रोग्राम, सम्पादकीय डाकमे श्री राघवक एक पत्रक अतिरिक्त किछु पुस्तकक विज्ञापन मात्र छपल अछि। दू अंक धरि एकर आकार डबल क्राउन चरिपेजी रहल, तकर बादसँ डबल डिमाइ चरिपेजी भ' गेल। जखन

---

१. "Government House, Patna, Jan-2, 1950—I am glad to read that a Maithili fortnightly called "Vaidehi" is going to come out from Sitamarhi Jan 26, 1950, under your able editorship and with the assistance of scholarly co-workers. Your fortnightly will be a high-class Journal and help to popularize the cause of Maithili. I wish you success in your noble enterprise."—M. S. Aney

Scanned by CamScanner

मासिक रूप ग्रहण कयलक तखनसँ डिमाइ अठपेजीमे अन्त धरि प्रकाशित होइत रहल।

ई विदिते अछि जे जाहि समयमे वैदेहीक प्रकाशन आरम्भ भेल ताहि समयमे मैथिलीमे पत्रक क्षेत्र शून्ये जकाँ छल। ओना 'मिथिला मिहिर' ओ 'बटुक' अवश्य प्रकाशित होइत छल, परन्तु 'मिहिर'केँ युगक स्पन्दनसँ ततेक सरोकार नहि छलैक आ 'बटुक' तँ बटुके छल। एमहर मैथिलीक समक्ष अनेक ज्वलन्त समस्या सब छलैक जाहि हेतु जागरूकता सर्वथा अपेक्षित छल। एहन स्थितिमे वैदेहीए एक छल जे 'रन टेकने' रहय। एहि कथनक पुष्टिमे किछु उद्धरण सर्वथा अपेक्षित अछि। मैथिलीकेँ तथाकथित हिन्दीक समर्थक उदरसात् करबाक षड्यन्त्रमे संलग्न छलाह। देशमे भाषाक सम्बन्ध राजनीतिक संग जुड़ि गेल छल। १९५१ मे जनगणना भेल छल ताहिमे मैथिली भाषीक संख्या नगण्य बना देबाक सुनियोजित प्रपंच भ' रहल छल। केन्द्रमे शिक्षामन्त्रीक पदपर छलाह अब्दुल कलाम आजाद साहेब। ओ उर्दूक पक्षधर स्वभावतः रहथि। ओहि समय कांग्रेस अध्यक्ष छलाह हिन्दीक एकान्त समर्थक पुरुषोत्तमदास टंडनजी। टंडनजी एवं डॉ० सम्पूर्णानन्द आजादक वक्तव्यक बिरोधमे जे वक्तव्य देने छलाह ताहिमे मैथिलीओक क्षेत्रकेँ हिन्दीमे समेटि लेने रहथि। ओहि वक्तव्यपर मैथिली भाषीक ध्यान आकर्षित करैत वैदेहीमे सम्पादकीय मन्तव्यमे जे विचार प्रकट कयल गेल छल जे उद्धृत कयल जाइत अछि—

"मैथिलीक हेतु कतेक क्रान्ति भेल, कतेक हल्ला मचल, कतेक व्यक्ति एहि क्रान्तिमे अपन शक्ति लगा देलन्हि। किछु वैधानिक एवं दुःसाध्य काज सिद्धो भेल, किछु बाकिओ रहल, उदाहरणार्थ—मातृभाषाक रूपमे स्वीकृति भेटि जैब मैथिलीक भाग्योदय बूझक चाही। परन्तु भारतवर्ष भरिक उन्नत भाषाक परिगणन जखन भेल तखन बिधान परिषद द्वारा मैथिली उपेक्षित रहल। जखन प्रान्तीय सरकार स्वतन्त्र भाषाक कोटिमे मैथिलीकेँ स्थान दै चुकल अछि आ' निष्पक्ष विचार कै निहार विभिन्न विद्वानक द्वारा एकर समर्थन कै बेरि भै चुकल अछि; पी० ई० एन० तथा प्राच्य विद्या महासम्मेलन एहि भाषाकेँ स्थान दै चुकल अछि; ई निर्बिवाद सिद्ध अछि जे समस्त उत्तर भारतमे जखन साहित्य संस्कृत तथा प्राकृतक श्रृंग एवं गह्वरसँ लोकभाषाक विस्तृत धरातलपर उतरल तखन मैथिली ओकरा अपना अंचलमे खेलबै

लागल, लोकभाषामे साहित्योद्यानक रचना प्रथमतः मैथिलीए द्वारा भेल, तखन देशक गण्यमान्य व्यक्तिक मुहेँ किछु एहि सम्बन्धमे असङ्गत बात बहराइत हो तँ से क्षोभक विषय अवश्य थिक।

हम ध्यान आकृष्ट करब काँग्रेसक अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम दास टंडन तथा उत्तर प्रदेशक शिक्षामन्त्री श्री सम्पूर्णानन्दजीक वक्तव्य दिशि। एहि वर्ष दिल्लीमे भाषाक प्रसङ्ग बजैत भारतक माननीय शिक्षामन्त्री अब्दुल कलाम आजाद हिन्दीक जड़िकेँ हिला कै उर्दूक पक्षमे किछु बाजि गेलाह तखन ओकरे विरोधमे वक्तव्य दैत हिन्दीक विशालतापर ध्यान आकृष्ट करबाक हेतु श्री टंडनजी एवं श्री सम्पूर्णानन्दजी मैथिलीक उल्लेख कैलन्हि अछि ई कहाँ धरि युक्तियुक्त से अपने लोकनि विचार करू।

अज्ञ व्यक्तिक द्वारा यदि एहन भ्रम होइत छैक तँ सह्य भै सकैछ, परन्तु विज्ञक मुहेँ ई शोभा नहि दैछ। जन-जागरणक युगमे जनशक्तिक समक्ष, जन-भाषासँ क्यौ व्यर्थ टक्कर लेबै पहुँचत तँ ओकर परिणामो अज्ञात, नहि अपितु सर्व विदिते अछि। मैथिलीक जन्मसिद्ध अधिकार यदि क्यौ हड़पि लेबै चाहथिन्ह तँ भने एखन किछु अंशमे हुनका सफलता प्राप्त हेतैन्हि, जेना जन-गणनामे अनुचित एवं अन्यायपूर्ण काज सब कैल गेल अछि। परन्तु भविष्यमे एहि हेतु हुनका अवश्य प्रायश्चित करै पड़तैन्हि ताहिमे सन्देह नहि।

दिल्लीमे आमन्त्रित भाषा सम्मेलनमे प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रेषित मैथिलीक प्रतिनिधिकेँ जे अपमानित कैल गेल अछि से व्यक्तिगत नहि, सामूहिक अपमान थिक। एहि हेतु मैथिली भाषा-भाषी जनता, मैथिली साहित्य परिषद, मैथिल महासभा सभक द्वारा एकरा औचित्य पर विचार हैबाक चाही।

निकट भविष्यमे मैथिली साहित्य परिषदक वार्षिक अधिवेशन भै रहल अछि। आवश्यक थिक जे उपर्युक्त विषयक अतिरिक्त शैली एवं पाठ्य-पुस्तकक व्यवस्थाक प्रसङ्ग विचार-विमर्श कैल जाय। अनावश्यक एवं भाषाक हेतु हानिकारक कटु प्रसङ्गक शीघ्र अन्त हैबाक चाही।"[१]

---

१. वैदेही, वर्ष १, अंक २२, १ मई, १९५१, पृ० ३।

Scanned by CamScanner

एहि उद्धरणसँ ज्ञात होइत अछि जे मैथिलीक समक्ष जाहि कोनो प्रकारक संकट छलैक ताहि सब दिस 'वैदेही' सावधान छल आ तकर निराकरणक हेतु सतत समाजकेँ जागरूक बनयबाक हेतु प्रयत्नशील रहैत छल। मिथिलाक सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक सब समस्याक दिस एकर ध्यान रहैत छलैक। हिन्दी एवं मैथिलीक परस्पर संघर्षक प्रसङ्ग वैदेहीक दृष्टिकोण निम्नांकित सम्पादकीयसँ जानल जाय सकैत अछि। 'मैथिली एवं हिन्दी' शीर्षक सम्पादकीयमे 'वैदेही' अभिमत व्यक्त करैत लिखने अछि—

"बहुतो व्यक्तिक हृदयमे एहि बातक सन्देह उत्पन्न होइत रहैत छैन्हि जे हिन्दी एवं मैथिली एक दोसराक प्रचार एवं प्रसारमे बाधक भै सकैत अछि। किन्तु ई सन्देह कहाँ धरि समुचित कहाँ धरि नहि, एहि पर विचार करब आवश्यक।

यद्यपि ई निर्विवाद सिद्ध भै चुकल अछि जे मैथिली एक स्वतन्त्र भाषा थिक, एकर साहित्य प्राचीन एवं समृद्ध अछि। जकरा भाषा विज्ञानक वेत्ता लोकनि कतेको बेरि स्पष्टतया समर्थन कै चुकल छथि दोसर मैथिलीक व्याकरण जे प्रस्तुत कैल गेल अछि से भारतक प्रत्येक प्रान्तीय भाषाक व्याकरणमे अपन विशिष्टता रखैत अछि। तथापि बहुतो व्यक्तिकेँ एखन धरि एहि प्रसंग भ्रमात्मक धारणा छैन्हि जकर निराकरण ओ स्वयं गम्भीर अध्ययन सँ कै सकैत छथि।

तखन प्रश्न रहैत अछि एहि विषयपर जे एक भाषा दोसर भाषाकेँ समुन्नत बना सकैत अछि अथवा हानि पहुँचा सकैत अछि? हमर धारणा अछि जे प्रत्येक प्रान्तीय भाषाक समुन्नतिसँ राष्ट्रभाषाक प्रचार एवं प्रसारमे पूर्ण सहयोग भेटत। आइ यदि बंगला, गुजराती, मराठी आदि आदि भाषाक समुन्नतिसँ हिन्दीपर कोनो व्याघात नहि पहुँचल अछि तँ मैथिलीसँ एहि प्रकारक सन्देह किऐक कैल जा सकैत अछि?

जखन बंगाली लोकनि विद्यापतिकेँ बंगाली कहि, विद्यापतिक साहित्यकेँ आत्मसात् करबाक हेतु प्रस्तुत भेलाह तखन कतेक घमर्थनिक उपरान्त ई निष्कर्ष बहरैल जे विद्यापति बंगाली नहि अपितु मैथिल छलाह एवं हुनक साहित्य मैथिलीक अक्षय निधि थिक। परन्तु आइ विद्यापतिक साहित्यसँ हिन्दी कतेक गौरवान्वित भै रहल अछि, कहबाक प्रयोजन नहि। एवं

प्रकारें मैथिलीसँ हिन्दीक श्री वृद्धिए होइत ऐल अछि, तखन पुनः सन्देहक हेतु कतहु स्थाने नहि रहि जाइछ ।

कोनो भाषाक अथवा कोनो साहित्यक प्रतिष्ठा आ आदर जे होइत छैक से शिक्षिते समुदाय द्वारा । जा धरि शिक्षितक संख्या अधिकसँ अधिक नहि भै जाइछ ता धरि देवभाषा हो, राष्ट्रभाषा हो अथवा मातृभाषा हो ककरो आदर एवं सम्मानक क्षेत्र विस्तृत नहि भै सकैत अछि । एहि हेतु सबसँ पहिने आवश्यक अछि जे शिक्षितक संख्या जतेक शीघ्रता सँ, जतेक अधिक होइत अछि ततेक शीघ्र एवं अधिक राष्ट्रभाषाक प्रति श्रद्धा जन-साधारणक हृदयमे जागि उठै तदर्थ चेष्टा कैल जाय । एहि हेतु मातृभाषाकें जे श्रेय प्राप्त छैक से आन भाषा कतबो प्रयत्न करत आ श्रेय नहि प्राप्त कै सकैत अछि । मातृभाषा द्वारा बुद्धि-विकासमे बड़ थोड़ समयमे लोक सफलता प्राप्त करैत अछि. एहू सिद्धान्तकें विद्वन्मण्डली मुक्त कण्ठें स्वीकार कै चुकल छथि तखनतँ एही मार्ग सँ जनताक मध्य शिक्षाक प्रचार कैल जा सकैत अछि जाहि सँ जनतामे नवीन चेतनाक जागरण हो आ ओ अपन संस्कृति, अपन मर्यादा, एवं अपन राष्ट्रभाषाक रक्षामे दत्तचित हो । तँ हेतु यदि ककरो हृदय मैथिलीक उत्थान सँ सशंकित भै उठैत छैन्हि तँ हुनक आत्मबलक अभावे एकर कारण कहल जा सकैछ । हम ओहि व्यक्ति सँ राष्ट्रभाषाक उत्थानक कल्पनो नहि कै सकैत छी ।

यदि मैथिली भाषा भाषी कोनो व्यक्तिक हृदयमे हिन्दीक प्रति एहि प्रकारक सन्देह होइत छैन्हि तँ ओहो अपना हृदय कें हँसोथि कै ताकथु जे दुर्बलता कोनठाम नुकैल छैन्हि ओकरा पकड़ि कै बाहर फेकथु । मैथिली अपना स्थान पर अछि जतै हिन्दी ऐबाक ने प्रयत्न करत, यदि प्रयत्न करत तँ विफले रहत, आ' हिन्दी अपना स्थान पर अछि जतै जैबाक प्रयत्न मैथिली कथमपि नहिं कै सकैत अछि । माइक कोरामे खेलाइत खेलाइत जखन बच्चा उठि कै ठाढ़ हैब सीखैत अछि, तखन बाड़ीमे अखाड़ा खूनि डंड बैसकीक अभ्यास करैत अछि आ ओही बलें एकदिन संसारक कोनो अखाढ़ा पर जा कै ताल ठोकि प्रतिपक्षी सँ लड़बाक हेतु प्रस्तुत होइत अछि आ ओहिमे विजयी भेला सँ माइक नाम नहि, देशक नाम समुज्वल करैत अछि, तँ हमरा जनैत मातृ-भाषाक द्वारा बुद्धि विकसित कै राष्ट्र भाषाक हित-चिन्तन करब हमरा

सभक कर्त्तव्य होइत अछि। एक दोसराक प्रतिपक्षी एक दोसर कें बूझब भ्रम मात्र थिक।"[1]

एहि प्रकारें 'मिथिला विश्वविद्यालय', 'शिक्षाक माध्यम', 'जनगणना', 'मिथिलाक भविष्य', 'मैथिलीक भविष्य', 'वैवाहिक प्रथा', 'मैथिलमहासभा', 'आवश्यकता', 'जिज्ञासा', आदि अनेक शीर्षक सँ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक चतुर्मुखी समस्या सब पर ई पत्र समाजकें सचेत करबाक चेष्टामे छल।

ओहि समय धरि मैथिली पत्रक की स्थिति छल तकर विश्लेषण करैत 'मैथिलीक पत्र' शीर्षक सम्पादकीयमे जे विचार व्यक्त कयल गेल छल, तकरो अवलोकन उपादेय होयत। एहि सम्पादकीयसँ वैदेहीक स्थितिक सेहो परिचय भेटैत अछि तें उद्धृत कयल जाइत अछि—

"प्राय: मैथिलीक पत्र-पत्रिकाक इतिहास पर दृष्टिपात कैला सन्ता एतबे बुझना जाइत अछि जे कोनो एहन विशिष्ट कारण एहि पाँछा लागल रहल करैत अछि जाहि कारणें कोनो पत्र-पत्रिका सफलतापूर्वक समाजक सेवा नहि कै सकल अछि। हँ, काशीसँ प्रकाशित 'मिथिला मोद' एकर अपवाद कहल जा सकैछ। परन्तु ओहो आइ जनताक समक्ष नहि अछि। ओकरो कारणक अनुसन्धान करब आवश्यक अछि।

यदि पत्र-पत्रिकाक गणना कैल जाय तँ दर्जनो पूरि जैत, मुदा कोनो पत्र समाजक पूर्ण सेवा सँ वञ्चिते रहल अछि। मिथिला, मैथिली, मैथिल-हित साधन, मैथिल-बन्धु, विभूति, मिथिला-ज्योति, स्वदेश, पल्लव, मिथिला-मोद, मिथिला मिहिर आदि अनेको पत्र चलल आ' कालक गर्भमे विलीन भै गेल। एहिमे मिथिला-मिहिर अवश्य धन्यवादार्ह थिक जे अद्यावधि जाहि कोनो प्रकारें एखन किछु ने किछु मैथिलीक प्राण रक्षा करैत आबि रहल अछि। परन्तु ई एक एहन पैघक छत्रछायामे पालित अछि जैं एतबो। स्वावलम्बी हैवाक सौभाग्य एकरो नहि प्राप्त भेलैक अछि,""""।

सम्प्रति जे पत्र अहाँक हाथमे अछि से तेसर अंक धरि समाजक समक्ष अपन सेवा प्रस्तुत कै अकस्मात् अगस्त सँ असमर्थ भै कर्त्तव्यच्युत भै गेल। एकरो कारण एक मात्र उएह कहल जा सकैछ जाहि कारणें उपर्युक्त पत्र

१. वैदेही, वर्ष १, अंक ११, पृ० ३, १ जुलाई १९५० ई।

Scanned by CamScanner

सभक दुर्दशा भेलैक। आ' ओ कारण थिक समाजक सहयोगक अभाव एवं धनी-मानीक पत्र जगतक प्रति उदासीनता। यद्यपि शिक्षितक संख्या आदि युग सँ मिथिलामे प्रर्याप्त रहल अछि, परन्तु कविवर चन्दा झाक युग धरि भाषा-साहित्यक प्रति उपेक्षा भाव समाजक बीच एहन प्रबल छल जकर उदाहरण अनेको अछि। एहन कहल जाइछ जे कविवर जखन रामायणक रचना भाषामे कैलन्हि तँ विद्वत्समाजमे एही कारणेँ हुनक कटु आलोचना भेलन्हि।

आजुक युग बहुत आगू ससरि गेल अछि। सहस्रो वर्षक पराधीनताक पाशसँ मुक्त भै भारत उन्नतिक मार्गक अन्वेषणमे व्यस्त देखना जाइत अछि। आइ आवश्यक अछि जे प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक समाज अपना उन्नति सँ राष्ट्र केँ समृद्धिशाली बनैबा मे दत्तचित्त हो। अन्यथा संसारक गम्भीर वाता-वरण एवं मनुष्यमे मनुष्यताक अभाव एहि देशकेँ रसातल पहुँचैबामे विलम्ब नहि करत।

हम समस्त समाज सँ साञ्जलि प्रार्थना करत्तैन्हि जे ओ आबहु सचेत भै, रुढ़िवादिताक प्रबल पाश केँ छिन्न-भिन्न कै, युगक अनुकूल वातावरण उपस्थित करबाक हेतु अपना उत्तरदायित्व केँ बूझथु। जाहि समाजमे असंख्य वकील, मुखतार, प्रोफेसर, अध्यापक, धनी-मानी आदि केँ रहितहु उन्नतिक मार्ग सुगम नहि हो, जाहि भाषाक क्षेत्र एतेक दूर विस्तृत हो, जकर जनसंख्या दु कोटि सँ उपर हो, ताहि समाज मे दश पाँच नहि, तँ दुइओ चारि पत्र-पत्रिका स्वावलम्बी भै समाजक सेवा नहिँ कै सकै, एहि सँ विशेष हास्यास्पद विषय की भै सकैत अछि।………''[1]

एहि उद्धरण सँ स्पष्ट अछि जे आरम्भे सँ एकरो प्रकाशनमे व्यवधान होअय लगलैक जे मध्य-मध्यमे होइत रहलैक। अगस्त १९५० सँ बन्द रहलाक कारणेँ ग्राहक केँ वर्षमे २४ अंक देबाक हेतु एकर वर्ष पुरबाक समय आगू बढ़ाय देल गेल आ जानकी नवमी १९५१ मे २३-२४ म अंक विशेषाङ्कक रूपमे प्रकाशित भेल जकर अपन महत्त्व छैक।

एहि अंकक हेतु बिहारक तत्कालीन माननीय राज्यपाल श्री अणे महाशयक सन्देश तथा मिथिला-विभूति डॉ० अमर नाथ झाक 'शुभाकांक्षा' प्राप्त

१. वैदेही, वर्ष १, अंक १४, १५ नवंबर, ५० ई०।

भेलैक जकर 'ब्लाक' छपल छैक जाहिमे डॉ० झाक हस्तलिखित अढाय गोट पाँती अछि। शैलीक दृष्टिएँ ओकर उल्लेख युक्तियुक्त होयत। पत्रक स्वरूप निम्नाङ्कित अछि—

प्रयाग
२९-३-५१

"वैदेही" मैथिलीक उत्तम सेवा क रहल अछि। मातृभाषाक उन्नति के नै चाहैत अछि? हम आशा रखैत छी जे ई पत्रिका दिन-प्रति-दिन उन्नति करत।

अमर नाथ झा (हस्ताक्षर)

ओहि समय मैथिलीक जे मूर्द्धन्य चिन्तक एवं लेखक छलाह प्रायः अधिकतर व्यक्तिक रचना एहि अङ्कमे प्रकाशित छनि यथा—राज प० बलदेव मिश्र, प्रिन्सिपल वेणीमाधव मिश्र, म. म. डॉ० उमेश मिश्र श्री कुलानन्द 'नन्दन', प्रो० श्री बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर', प्रो० श्री परमाकान्त चौधरी, प० श्री आद्याचरण झा, डा० श्री जयकान्त मिश्र, ज्यौ० प० बलदेव मिश्र, प० त्रिलोकनाथ मिश्र, डा० हृषीकेश गोस्वामी, बाबू गंगापति सिंह, प० श्री जयकान्त झा बख्शी, श्री मार्कण्डेय झा, प्रो० श्रीकृष्ण मिश्र, डा० श्री रामाशीष ठाकुर, प० श्री रघुनन्दन मिश्र। एहि अंकमे कविलोकनि छथि— कविशेखर बदरीनाथ झा, कविवर सीताराम झा, प्रो० श्री हरिमोहन झा, प० जीवनाथ झा विद्याभूषण, प०श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप', श्री यात्रीजी, श्री सुमनजी, श्री व्यासजी, किसुनजी, श्री बहेड़जी, श्री राघवाचार्य शास्त्री, श्रा इन्दु, श्री मायानन्द, श्री निरंकुश, श्री गंगादेवी लाभ ओ श्री स्वर्ण प्रभा। श्री शैलेन्द्र मोहन झा, श्री शंकर मिश्र, श्री मथुरानन्द चौधरी 'माथुर', श्री ललितक कथा, श्री ब्रजकिशोर वर्माक एकांकी आदि। तात्पर्य जे वैदेहीक प्रति लेखक वर्गमे सहयोगक पूर्ण भावना छलनि।

एहि ठाम बाबू भोला लाल दास, जे अपन सर्वस्व अर्पण क' मैथिलीके पंक सँ बाहर कयने छलाह, स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद मैथिलीक उपलब्धिक प्रसङ्ग जे अपन आक्रोश व्यक्त कयने छथि, वस्तुस्थितिसँ अवगत करयबाक हेतु पाठकक समक्ष उपस्थित कयल जाइत अछि। 'चेतिचलू' शीर्षक पारस्परिकीमे दासजी लिखने छथि—

"........हम कहब जे मैथिली आब माल, माल भै गेलि छथि। शिशुवर्ग सँ नवम कक्षा धरिक मैथिली साहित्य स्वीकृत भै गेल। की एहन युग

मैथिली-साहित्यक इतिहासमे कहियो भेल छल ? कन्ट्रोलक जमाना थिकै, एहूमे किछु चोरबाजारी भेलैक तँ कोनो आश्चर्य नहि। ई सत्य जे एके व्यक्तिक दस-दस कक्षाक साहित्य स्वीकृत भेल मुदा लुटिमे चरखा हमरो भेटल अछि। ई थीक ए—ओ शैलीक पुरस्कार। की उत्तम शिशु साहित्य ? की लोक-प्रिय मैथिली शैली ! होन्हु पाँच संस्करण मैथिलीमे और अनुवाद छपौन्हु हिन्दी तथा गुजरातीमे प्रो० हरिमोहन झाक रचनाक, मुदा ओ थिकाह दछिनाहा। शुद्ध शैली की जानै गेलाह ? हूनक लिखल शिशु साहित्य कोना स्वीकृत भै सकैछ ? अस्तु, बेचारे प्रकाशक धरि चेति गेलाह। कियै नहि, एकक हानिसँ दशक लाभ अवश्ये कर्त्तव्य। मुदा सम्पादकजी, अहाँ जे ऐ-औ शैलीक पक्षपाती छी, से की हरिमोहने झा मथा हाथ देने छथि ? अहाँ कहब, हम विद्यार्थी लोकनिक हेतु नहि, प्रौढ़ ओ प्रतिष्ठिते व्यक्तिक हेतु लिखै छी मुदा अहाँक ग्राहक लोकनिकेँ यदि टेक्स्ट बुक कमीटीमे पुस्तक देबाक होन्हि, तखन ? बुझलियैक ? आबहु चेति चलू।

—भवदीय

भुक्तभोगी भोला लाल दास"[1]

वैदेहीक भाषा शैलीक प्रसङ्ग स्पष्ट क' देब आवश्यक जे ई पत्रिका, आदिकालसँ पत्रकारलोकनि जाहि संक्षिप्त रूपदिस क्रमहि अग्रसर होइत गेल छलाह तथा बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' संक्षिप्तताक जाहि चरम बिन्दु पर पहुँचि गेल छलाह, बहुत किछु ओकर निकट शैलीकेँ प्रश्रय देने छल। शैलीक प्रसङ्ग किछु कट्टर लोक यद्यपि एहि कारणे 'वैदेही'मे लिखल उचित नहि मानैत छलाह, तथापि एहने कट्टरमे एक म. म. डॉ० उमेश मिश्रजी सेहो छलाह, परन्तु ओ बरोबरि अपन रचना एहि पत्रिकामे प्रकाशनार्थ देल करैत छलाह। म. म. जी अपने 'हएत' लिखैत छलाह, परन्तु होयत, होएत, ओ हैत प्रयोगकेँ वैकल्पिक प्रयोग मानैत छलाह, अशुद्ध नहि जखन कि किछु कट्टर लोक ऐ-औ शैलीकेँ अशुद्ध कहैत सार्वजनिक रूपसँ एकर घोषणा कयने छलाह।[2] पत्रकारलोकनि छपाइक सुविधाकेँ दृष्टिमे राखि संक्षिप्त रूपकेँ प्रश्रय दैत अयलाह; दोसर जीवित भाषामे ई स्वाभाविक परिवर्त्तन अवश्यम्भावी छैक; तेसर बहुतो लोकप्रिय साहित्यकार संक्षिप्ते शैलीमे लिखैत छथि

---

१. वैदेही विशेषांक पृ० २४।

२. द्रष्टव्य—मिथिला कोषक भूमिका, पृ० २६।

Scanned by CamScanner

एहि सबकेँ ध्यानमे राखि 'वैदेही' सेहो एहि दिशामे किछु दिन कट्टर रहल।

१९५४ ई० क जनवरीसँ, जखन 'वैदेही समिति'क गठन भेल, एकर आकार-प्रकारमे बहुत परिवर्त्तन भ' गेल। ओहि प्रसङ्ग सम्पादकीय विचारक अनुशीलनसँ ज्ञात होइत अछि जे प्रकाशन एवं साहित्य-सर्जनाक क्षेत्रमे एक क्रान्ति आनि देबाक योजना बनल छल। ओहि योजनाक प्रतिफल छल 'चारि आना कैञ्चा', गप्पक फोड़न, विवेचना आदि पुस्तकक प्रकाशन। पत्रिकाक विभिन्न अङ्कमे जे गल्प प्रकाशित होइत छलैक आ तकर रीप्रिन्ट' करा क' पुस्तकाकार कयला उत्तर छपाइ कम लगैत छलैक आ ताहिसँ सस्त पुस्तक पाठककेँ उपलब्ध होइत छलनि।

एहिमे एक हास्य-व्यंग्यक स्तम्भ छल—'गोनू झाक चौपाड़िसँ' जकर लेखक छलाह धर्मधकेलानन्द। एहि स्तम्भमे सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक सब विषयपर समय-समय पर व्यंग्य लिखल जाइत छल। स्मर्त्तव्य जे जखन पटनासँ मिथिला-मिहिरक प्रकाशन आरम्भ भेल तँ 'गोनू झाक चौपाड़ि'क स्थान पर 'गोनू झाक चटिसार' नामेँ बहुतो दिन व्यंग्य-स्तंभ चलैत रहल आ जखन एहि पंक्तिक लेखक उक्त स्तम्भ लिखब आरम्भ कयलनि तँ ओकर शीर्षक 'धर्मधकेलानन्दक बलधिगरो' राखल गेल। ई थिक एकर परवर्त्ती प्रभाव।

वैदेहीक माध्यमसँ जे नवयुवक साहित्यकार प्रकाशमे अयलाह ताहिमे सम्प्रति बहुतो प्रौढ़ लेखकक रूपमे मैथिली साहित्य क्षेत्रमे प्रतिष्ठित ओ स्थापित छथि। यथा, श्री ललित, श्री मायानन्द मिश्र, स्व० राजकमल चौधरी, श्री सोमदेव, डॉ० श्री रामदेव झा, श्री प्रभास कुमार चौधरी, श्री राजमोहन झा आदि। एहि प्रकारेँ 'वैदेही' किछु स्वस्थ कथाकारकेँ क्षेत्रमे आनि मैथिली साहित्यक अभिवृद्धिमे बहुत पैघ योगदान कयलक। प्रायः कोनो विधा एहन नहि अछि जाहिमे 'वैदेही' द्वारा योगदान नहि कयल गेल हो। 'वैदेही'क सफलता पत्रकारितोक क्षेत्रमे लोकमे साहस ओ उत्साहक संचार कयलक आ एकरा बादे 'मिथिला दर्शन', 'मिथिला सेवक', 'मिथिला' साप्ताहिक आदिक प्रकाशन होअय लागल। हिन्दी-मैथिली समस्याक प्रसङ्ग तँ ई पूर्ण आस्थाक संग क्षेत्रमे अड़ल रहल। स्मर्त्तव्य जे ओहि समयमे पटनासँ 'पाटल' नामक मासिक पत्रिका लक्ष्मी नारायण 'सुधांशु'क सम्पादनमे

Scanned by CamScanner

प्रकाशित होइत छल, ओहिमे हिन्दीक विख्यात विद्वान डा० रामविलास शर्मा पूर्ण शक्ति लगाए मैथिलीपर प्रहार कयने छलाह जकर प्रतिवाद १४ ओ २१ फरवरी' ५४ क आर्यावर्तमे श्री यात्री जी कयने छलाह तथा वैदेहीमे सेहो स्वर मुखरित कयल गेल छल। एहि प्रसङ्ग 'भ्रम एकरे कहल जाइछ' शीर्षक निबन्ध विशेष रूपें द्रष्टव्य अछि।[1]

विधान मंडलमे मैथिलीक प्रसङ्ग जखन जे किछु चर्चा होइत छल, जेना मिथिलाकेसरी बाबू जानकी नन्दन सिंह मैथिलीमे भाषण करबाक हेतु ठाढ़ भेल छलाह आदि-आदि विषयक सम्पूर्ण गतिविधि, सम्पूर्ण इतिहास एहि पत्रिकामे उपलब्ध अछि। एहिना पटना आकाशवाणी द्वारा मैथिलीक उपेक्षा पर ई पत्र चाबुक लेने रहैत छल। मैथिलीक चौमुख विकास कोना होयत एहि दिशामे 'वैदेही'क जागरूकता विशेष अध्ययनक विषय अछि।

पूर्वहि कहल जाय चुकल अछि जे एहि पत्रिकाक विशेष अध्ययनक अपेक्षा अछि जाहिसँ मैथिली साहित्यक प्रगतिपर पूर्णरूपें प्रकाश पड़ि सकत। एही पत्रिकाकें एकर श्रेय छैक जे महाकाव्याङ्कक रूपमे स्व० दीनानाथ पाठक 'बन्धु' रचित 'चाणक्य' सन उत्कृष्ट महाकाव्य मैथिली पाठकक समक्ष आबि सकल। स्मर्त्तव्य जे १९६८ ई० मे एही महाकाव्यकें साहित्य अकादमीक पुरस्कारसँ वंचित राखल गेलैक। समग्र रूपमे वैदेही मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे अपन महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। 'श्री मैथिली'मे जेना वर्षान्तमे वर्ष भरिक रचना ओ लेखकक सूची प्रस्तुत भेल छल तहिना एहूमे आरम्भ भेल, परन्तु तकर पूर्ण रूपें निर्वाह नहि भ' सकल।

आब 'वैदेही'क विशेषाङ्क सभक संक्षिप्त परिचय ओ किछु विशेषतापर प्रकाश द' विचार समाप्त कयल जायत। पहिल विशेषाङ्कक उल्लेख पूर्वहि कयल जाय चुकल अछि जकरा 'मिथिला-मिहिर'क मिथिलाङ्कक आदर्शपर उपस्थित कयल गेल छल। तकर बाद १९५५ मे नवंबर-दिसम्बरक संयुक्ताङ्क कथा विशेषाङ्कक रूपमे प्रकाशित कयल गेल।

ओना तँ साहित्यक सब विधामे 'वैदेही'क उल्लेखनीय योगदान रहलैक अछि, तथापि कथा साहित्यकें एहि पत्रिकाक माध्यमसँ सर्वाधिक प्रोत्साहन भेटलैक। आइ जतेक प्रौढ़ नवयुवक कथाकार छथि ताहिमे अधिकतर एही

---

१. वैदेही वर्ष ४, अङ्क, ७ जुलाई १९५४ ई०।

पत्रिकाक माध्यमसँ साहित्य क्षेत्रमे अवतीर्ण भेल छथि। किछु प्रमुख नामक उल्लेख पहिने भ' चुकल अछि। तदतिरिक्त सर्वश्री रमानन्द 'रेणु', उग्रानन्द, जयानन्द, प्रो०रमाकान्त झा, हंसराज, सुन्दर झा शास्त्री,श्रीनिर्मला-कुमारी श्रीवास्तव आदि बहुतो कथाकार प्रथम बेर 'वैदेही'एक पृष्ठपर समाजक समक्ष उपस्थित भेल छथि। ई सन् १९५० सँ ६० क दशकक कथाकारलोकनि थिकाह। एकर बाद जे कथाक बाढ़ि मैथिली साहित्यमे आयल से'मिथिला-मिहिर'क नवीन संस्करणक अध्ययन सँ स्पष्ट भ' जाइत अछि।

१९५६ क कथा विशेषाङ्क मैथिली लेखक सम्मेलनमे व्यस्त रहलाक कारणें १९५७ क मार्चमे प्रकाशित भेल। स्मर्त्तव्य जे वर्षमे १२ गोट अङ्क स्वाभाविक रूपें प्रकाशित भेले अछि। ई कथा विशेषाङ्क तदतिरिक्त अछि। एकर मुखपृष्ठ पर इरानक सुप्रसिद्ध उपन्यासकार ओ कथाकार डा० श्री शिन पार्तोक चित्र छपल अछि तथा हिनक 'यमदण्ड' शीर्षक कथा सेहो छपल अछि। कथाकारक परिचय लिखैत कहल गेल अछि जे डा० पार्तो एहि कथाकें बम्बइमे वैदेहीक हेतु विशेष रूपसँ लिखने छथि।

परन्तु जेना 'मिथिला-मिहिर'क कथा-विशेषाङ्कमे सम्पादकीय विचार सबमे मैथिली-कथाक विकास पर विचार व्यक्त कयल गेल रहैत अछि, ताहि तरहक कोनो सम्पादकीय एहिमे दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। से रहला सँ पाठककें किछु विशेष सुविधा होइत छनि। तखन एहि कथा विशेषाङ्कक विशेषता ई अछि जे एहिमे 'तीन रहस्य' रूसी कथा, 'ठाकुरक कूप' हिन्दी कथा, 'शेफाली' बंगला कथाक अनुवाद थिक। एहि प्रकारें अन्य भाषाक कथा-साहित्यसँ मैथिलीक पाठककें परिचय करयबाक तथा मैथिली कथा-कारलोकनिकें कथा-साहित्यक प्रवृत्तिसँ परिचय करयबाक एक प्रयास एकरा कहल जाय सकैत अछि।

जें हेतु १९५६ क विशेषाङ्क प्रकाशमे नहि आबि सकल छल तें १९५७ क मार्चमे उपर्युक्त कथा-विशेषाङ्क छपल तथा १९५७क विशेषाङ्कक रूपमे वर्षक अन्तमे आलोचना विशेषाङ्क प्रकाशित भेल। एकर मुखपृष्ठ पर आचार्य रमानाथ झाक चित्र छनि तथा विभिन्न विषय पर विभिन्न लेखकक समीक्षात्मक ओ विश्लेषणात्मक विचार छनि।

एतय उल्लेखनीय अछि जे एहिसँ पूर्व भिन्न-भिन्न अङ्कमे प्रकाशित आलोचनात्मक कतिपय निबन्ध 'विवेचना' नामसँ पुस्तकाकार भ' चुकल छल।

Scanned by CamScanner

मैथिलीमे आलोचना साहित्यक अल्पता अछि। विश्वविद्यालयमे क्रमहि छात्रक संख्या बढ़ल जाय रहल अछि। बिनु मुल्याङ्कन भेने स्वस्थ साहित्यक निर्माण प्रचुर मात्रामे नहि भ' पबैत अछि। एहि सब बिन्दुकें ध्यानमे राखि 'वैदेही' एहि दिशामे सुविचारित डेग उठओने छल जे प्रकाशनेसँ प्रमाणित अछि।

१९५८ ई० मे 'वैदेही'क एकांकी विशेषाङ्क प्रकाशित भेल जाहिमे क्रमशः निम्नाङ्कित एकांकी ओ तकर सभक लेखक छथि—घरैया लूरि—श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', मण्डन मिश्र—प्रो० श्री हरिमोहन झा, कोजागराक भरिया—गोविन्दनारायण झा, न्याय—हंसराज, आदर्श वर—श्री गोपालजी झा 'गोपेश,' मिथिलाक तरुआरि—मणिपद्म, जीविका—गोविन्द झा। एकर अतिरिक्त 'मैथिली रंगमंचक विकास' शीर्षक निबन्ध अछि जाहिमे मिथिलाक ग्राम्यक्षेत्रमे कतय कोन नाटकक मंच छल वा अछि तकर इतिहासपर प्रकाश देल गेल अछि जकर लेखक एहि पंक्तिक लेखके थिकाह। मैथिली एकांकीक प्रवृत्ति पर प्रो० रामदेव झाक निबन्ध सेहो एहि संग अछि।

१९५९ ई०मे विशेषाङ्कक स्थानपर श्री सोमदेव लिखित 'चानो दाइ' नामक उपन्यास प्रकाशित भेल। एहि विशेषाङ्कक विशेषता एकमात्र अछि जें एकरा संग प्रो० श्री जयधारी सिंह 'प्रभाकर' लिखित "मैथिली उपन्यास : एक विहंगम दृष्टि" समीक्षात्मक निबन्ध छपल अछि। एहि निबन्धमे प्रभाकरजी ओहि समयधरि प्रकाशित प्रायः सब उपन्यासक संक्षिप्त विवरण दैत उपन्यासक विकासपर प्रकाश देने छथि। एहि संग उपन्यासकारकें दिशा-निर्देश सेहो कयल गेल अछि। एहिसँ आभास भेटैत अछि जे भविष्यमे मैथिलीक उपन्यास-साहित्य विकासक दिशामे अग्रसर हो एहि दिशामे सेहो 'वैदेही'क योगदान छैक।

विद्वान लेखक उपन्यासकें उत्पत्ति ओ विकासक दृष्टिएँ तीन उत्थानमे बँटने छथि। प० जीवछ मिश्र रचित 'रामेश्वर'क चर्चा कतहु नहि अछि तथा किछु नाम एहन अछि जकर थाह-पता हमरा नहि लागल। यथा, श्री सुमनजी रचित 'माला' तथा प्रो० ईशनाथ झा रचित 'सेवा' नामक उपन्यास। तथापि 'चानोदाइ'क भूमिकामे 'प्रभाकर'जीक ई निबन्ध विशेष रूपें मननीय अछि।

Scanned by CamScanner

एही प्रकारें १९६० ई० मे प्रो० श्री राधाकृष्ण चौधरी लिखित 'मिथिलाक राजनीतिक इतिहास', १९६१मे भारत मध्य स्वायत्त शासनोद्बोधन, विशेषांकक उल्लेख १९६३ ई० मे प्रकाशित 'मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास' अङ्कमे भेटैत अछि, जे अङ्क हमरा दृष्टिपथपर नहि आयल। १९६२ ई० मे 'मैथिली आन्दोलन:एक सर्वेक्षण' विशेषांकक रूपमे प्रकाशित भेल जकर लेखक एही पंक्तिक लेखक छथि जाहिमे मैथिली आन्दोलनक क्रमिक इतिहास ओ विकासपर प्रकाश देल गेल अछि। १९६४ ई०मे 'चन्दा झा विशेषांक' प्रकाशित भेल जाहिमे कवीश्वर चन्दा झाक कृति एवं व्यक्तित्व पर विभिन्न लेखक द्वारा समीक्षात्मक ओ विवरणात्मक अध्ययन प्रस्तुत कयल गेल अछि। १९६५ ई० मे 'चाणक्य' महाकाव्यक विशेषांक छपल, जकर लेखक छलाह स्व० दीनानाथ पाठक 'बन्धु'। एहि प्रसङ्ग पूर्वमे लिखल जाय चुकल अछि। एहिमे पुरोवचनमे महाकाव्य लक्षण ओ प्रस्तुत महाकाव्य ओ महाकविक संक्षिप्त परिचय अछि। १९६६ ई० मे "तोरे लागी" नामक कविता-संग्रह छपल अछि। एकर मूल लेखक थिकाह नेपालक महाराज महेन्द्र तथा अनुवादक श्री अनन्त बिहारी लाल दास 'इन्दु' जे नेपालमे भारतीय राजदूतावाससँ सम्बद्ध छथि आ जनिक 'तीन सप्तक' नामक मौलिक कविता संग्रहसँ मैथिलीक पाठक परिचित छथि।

एहि अनुवाद विशेषांकके प्रकाशित करबाक उद्देश्य पर प्रकाश दैत सम्पादकीयमे लिखल अछि—

"एहि भूमण्डल पर एकमात्र हिन्दू राष्ट्र अपनाकें कहैत गौरवक अनुभव करैत अछि से थिक नेपाल। नेपालकें क्यौ-क्यौ 'नय-पाल' सेहो कहैत छथि। ई जहिना हिमालयक कोरमे बसल अछि तहिना एकर कोरमे बसल, एकर राजधानी, काठमाण्डू सब दिनसँ साहित्य रूपी मानसरोवर रहल अछि। मैथिली-साहित्यक तँ मुख्य संरक्षक यैह भूमि रहल। प्राचीन साहित्यकें ओ प्राचीन पाण्डुलिपिकें यैह जोगौने रहल अछि। जाहि निधिक बलें आइ मैथिली अपन प्राचीनता तथा साहित्यिक गरिमाक उद्घोष करैत भारतक संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान पयबाक औचित्य प्रमाणित क' रहल अछि।

एखनहुँ राजकीय भाषाक रूपमे मैथिलीकें एहीठाम सम्मान प्राप्त छैक। एहि देशक तराइ निवासी पचास लाखसँ अधिक संख्यामे मैथिली भाषी

छथि। मिथिला ओ नेपालक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक ओ परस्पर रक्त-सम्बन्ध अच्छेद्य ओ अकाट्य रहलैक अछि तथा भविष्यमे रहतैक।

भाग्यवान अछि ओहि देशक लोक जाहि देशक लोकके सर्वोच्चसत्ता-सम्पन्न व्यक्ति कवि रूपमे प्राप्त भेलथिन अछि। कवि शब्देमे से मृदुता छैक जाहिसँ कवि विशेषणयुक्त व्यक्तिक हृदयक कोमलता स्वतः रूपायित भ' जाइत छैक। श्री ५ मान् महाराज महेन्द्र स्वयं कवि छथि आ संगहि काव्य-मर्मज्ञो। हुनका हृदयक उद्गार 'उसैको लागी' (ओकरे हेतु) शीर्षक एहि कविता संग्रहमे संकलित अछि, जकर मैथिली रूपान्तर एहि 'तोरे लागी' संग्रहमे मैथिली भाषीक सम्मुख उपस्थित अछि।

'वैदेही' एहि प्रयासमे रहल अछि जे किछु विशिष्ट वस्तु पाठक धरि सम्प्रेषित करय जे आन माध्यमसँ सुलभ नहि अछि। विश्वास अछि, एहि प्रकारक प्रयाससँ अन्यान्य भाषा साहित्यसँ तँ परिचय होयबे करत संगहि पारस्परिक स्नेह ओ सौजन्यमे वृद्धि होयत।"

मैथिली साहित्यक विकासमे नेपालक की योगदान रहल अछि से मैथिली साहित्यक अध्येतासँ अविदित नहि। अतः सम्पर्कसूत्र ओ प्राचीन सम्बन्धके सुदृढ़ करबाक दिशामे एहि प्रकारक प्रयास प्रशंसनीय कहल जाय सकैत अछि।

एकर बाद १९७० मे कल्याणी विशेषांक, १९७१ मे नवीन कथाकार अंक, १९७२ ई० मे कवितांक तथा १९७३ ई० मे पूर्णियाँ अंकक प्रकाशन भेल। विशेषांकक परम्परा टूटय नहि, ताही दृष्टिएँ एकरा सभक प्रकाशनक औचित्य अछि, कानो विशेषतासँ सम्पन्न नहि कहल जाय सकैत अछि। हँ, पूर्णियाँ विशेषांक ओहि क्षेत्रक मैथिली सेवी तथा साहित्यक अध्ययनक दृष्टिसँ महत्वपूर्ण अछि।

'वैदेही' मुखपृष्ठ पर विभिन्न विशिष्ट व्यक्तिक चित्र छापि एहू दिशामे नवीन प्रयास कयने अछि तथा मैथिलीक ई पहिल पत्र छल जे 'ह्वीलर बुक स्टाल' पर उपलब्ध होअय लागल। विस्तारक भयसँ विराम लैत अन्तमे एतबे कहब जे मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे 'वैदेही'क योगदान अपन विशेष महत्व रखैत अछि।

Scanned by CamScanner

मिथिला दर्शन ओ मैथिली दर्शन

भाषाधार प्रान्त संगठन आयोग जखन भारत सरकार द्वारा गठित भेल तँ मिथिला सेहो किछु सुगबुगायल, परन्तु दुर्भाग्यवश राजनीतिक क्षेत्रमे मिथिलाक कोनो नेता एहन विशिष्ट व्यक्तित्व सम्पन्न नहि छलाह जे एहि प्रश्नकें केन्द्रक समक्ष दृढ़तासँ उपस्थित क' सकितथि। मैथिलीक हेतु तँ 'दीपक तर अन्हार' वला लोकोक्ति आदि कालहिसँ चरितार्थ रहल अछि। पहिल पत्रक प्रकाशन जयपुरसँ तँ दोसर पत्रक प्रकाशन काशीसँ भेल। स्वतन्त्र भाषाक रूपमे सर्वप्रथम मान्यता बंगालमे भेटल। मिथिलाक मध्यमे रहनिहार लोकपर एहि सभक प्रतिक्रिया जाहि रूपें होयबाक चाही से एखनहु धरि नहि भ' रहल अछि।

मैथिलीकें राजनीतिक अधिकार प्राप्तिक दिशामे कलकत्ताक प्रवासी बन्धु सक्रिय भेलाह तथा कलकत्तामे मैथिली भाषीलोकनिक एक संस्था स्थापित भेल जे मैथिल संघक नामसँ जानल जाइत छल। साहित्य सेवीक प्रमुखता तँ एहू संघमे छल, परन्तु एकर सहयोगी साहित्य सेवीक अतिरिक्तो लोक भेलाह, जाहिमे सँ पछाति बहुतो गोटे साहित्यकार सेहो भ' गेलाह। ई संघ मैथिल महासभाक संकीर्ण दृष्टिसँ ऊपर उठि मैथिली भाषी मात्र कें समेटि क' कार्यक्षेत्रमे अवतीर्ण भेल। एहन संस्थाक कार्यकलापसँ समाजकें परिचय करयबाक हेतु तथा अपन स्वर सरकारक कान धरि पहुँच-यबाक हेतु एक पत्रक आवश्यकता अनुभव कयल गेल। एही पृष्टभूमिमे १९५३ ई०क जनवरीसँ 'मिथिला दर्शन' नामक एक मासिक पत्रक प्रकाशन कलकत्तासँ आरम्भ भेल जकर सम्पादक छलाह प्रो० श्री प्रबोध नारायण सिंह। एखन धरिक मैथिलीक पत्रक इतिहासमे ई पहिल सम्पादक भेलाह जे ब्राह्मण एवं कर्णकायस्थसँ अतिरिक्त वर्गक छलाह। एहिसँ अन्य वर्गमे पसरल 'मैथिल' शब्दक भ्रान्त धारणाक आंशिक रूपमे परिहार सेहो भेल।

जें हेतु राजनीतिक अधिकार प्राप्तिक दिशामे ई एक संगठित प्रयास छल तें एकरा स्वरमे तीक्ष्णता स्वभावसिद्ध छल। कुयोगसँ 'दर्शन'क सम्पूर्ण 'फाइल' हमरा उपलब्ध नहि भ' सकल अछि, तथापि जतबा अंक उपलब्ध भेल अछि ताहि आधार पर एतय मूल्यांकन कयल जाइत अछि।

Scanned by CamScanner

डा० श्री जयकान्त मिश्र तँ अपना इतिहासमे नामोल्लेख मात्र कयने छथिन, डा० 'श्रीश' किछु पाँती एहि हेतु खर्च कयने छथि जे निम्नांकित अछि—

"मिथिला दर्शन" क प्रकाशन १९५३ सँ आरम्भ भेल जे बीचमे कतेक बेर बन्द भए पुनः प्रकाशित भए रहल अछि। एकर सम्पादक छलाह प्रो० प्रबोध नारायण सिंह ओ हुनक विदुषी पत्नी श्रीमती डा० अणिमा सिंह। एम्हर श्रीमती अणिमा सिंहक स्थान पर हुनक सुपुत्री श्रीमती इलारानी सिंह सम्पादिका भेलीह। 'मिथिला दर्शन'क प्रकाशनक उद्देश्य अछि मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक उचित अधिकारक हेतु संघर्ष करब। १९५८ सँ एकर प्रत्येक अंकमे उद्बोधन वाक्य छपए लागल—

अछि सलायमे आगि, बरत की बिना रगड़ने।
पायब निज अधिकार, कतहु की बिना झगड़ने॥

अतः एहिमे तेहने लेख, कविता प्रभृति अधिक संख्यामे छपैत अछि तथा ओहने समाचारक प्रकाशनकें प्रमुखता देल जाइत छैक जाहिसँ उद्देश्यक पूर्त्ति हो। तथापि नव रूपक साहित्य, मुख्यतः कथा ओ कविताक अभिवृद्धि मे ई मासिक पत्र बड़ सहायक सिद्ध भेल अछि।"[1]

वस्तुतः एहि पत्रक सम्पादक आरम्भसँ प्रो० श्री प्रबोध नारायण सिंह छलाह, १९५७ मे किछु दिन धरि प्रधान सम्पादक प० दिनेश झा शास्त्री तथा निबन्ध सम्पादक प० श्री परमानन्द झा रहलाह, परन्तु मइ ५७ सँ ५८क अक्टूबर धरि केवल प० श्री परमानन्द झा सम्पादक रहलाह। ५८ क दिसंबर सँ ६३ धरि पुनः श्री प्रबोध बाबू तथा श्रीमती अणिमा सिंहक संयुक्त सम्पादकत्वमे प्रकाशित होइत रहल, ६४ ओ ६५ ई० मे श्री मदन चौधरी सेहो एहि सम्पादक-मण्डलमे सम्मिलित कयल गेल छलाह। ६८ सँ प्रबोध बाबू तथा प्रो० श्रीमती इलारानी सिंह आ ७१ सँ श्री प्रबोध बाबूक स्थान पर श्री बाबू साहेब चौधरी अयलाह। ७१ सँ एकसरे चौधरीजी सम्पादन कयलनि,, ७३क बाद मतभेद भ' गेलाक कारणें एहिसँ पृथक् भ' गेलाह तथा 'मिथिला दर्शन' क स्थान पर 'मैथिली दर्शन'' नामसँ पत्र चलब' लगलाह।

---

१. मै० साहित्यक इतिहास, पृ० १२८।

समाजक ध्यान आकर्षित करब सजग पत्रकारक दायित्व होइत छनि जकर पालन ई करैत छल। स्मर्त्तव्य जे 'वैदेही' तथा 'दर्शन' एक कालमे प्रकाशित होइत छल, परन्तु 'वैदेही' साहित्यिक श्रीवृद्धिकेँ प्रमुखता देने छल आ 'दर्शन' राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि समस्याकेँ प्रमुखता दैत छल। 'दर्शन' सेहो 'वैदेही' जकाँ विशेषाङ्क-प्रकाशन वर्षान्तमे साधारणतः करैत छल। परन्तु 'वैदेही' जेना प्रत्येक विधाक विकासकेँ ध्यानमे राखि, सुनियोजित ढंगसँ एहन काज करैत छल तेना 'दर्शन' नहि। एकर कारण यैह जे दर्शनक मुख्य कार्यक्षेत्र एहिसँ भिन्न छलैक। तथापि मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिमे सेहो एकर योगदान छैक। समय-समयपर इतिहास, आलोचना, निबन्ध आदिक प्रकाशन एहिमे होइत रहैत छल। कविता आ कथा तँ पत्र-पत्रिकाकेँ रोचक बनयबाक एक मुख्य उपादान मानल जाइत अछि, तेँ एहिसँ शून्य कोना रहैत, परन्तु नाटकक हेतु तथा नाटकक रंगमंचक हेतु दर्शन विशेष साकांक्ष रहैत छल। ओना कोनो नाटक एहि माध्यमसँ प्रकाशमे आयल हो से देखबामे नहि अबैत अछि, परन्तु समय-समय पर विभिन्न लेखकक एकांकी प्रकाशित होइत रहैत छल। कहल जाय सकैत अछि जे नाटक एवं कथाक विकासमे 'दर्शन'क उल्लेखनीय योगदान छैक।

नाटकक प्रसंग 'मिथिला दर्शन'क चिन्तन की छलै से निम्नांकित सम्पादकीयसँ स्पष्ट होइत अछि—

"इतिहास एहि बातक साक्षी अछि जे जाहि भाषामे रंगमंचक उत्तरोत्तर विकास नहि हो तकर जीवित रहनाइ असंभव! जाहि भाषाक बजनिहार लोकनि केवल आने-आन भाषाक नाटक तथा संगीत द्वारा मनोरंजन करबाक लेल बाध्य होइत छथि तकर लोप अवश्यम्भावी।

मिथिलामे लोक-गीत एवं लोक-नाट्यक परम्परा अद्यावधि अक्षुण्ण अछि, किन्तु अपनाकेँ उच्च स्तरक माननिहार लोकनिकेँ एहि लोक-गीत नाट्य परम्परामे रुचि नहि। अधिकांश लोक हिन्दी चल-चित्र अथवा हिन्दी नाटकक शरणापन्न होइत छथि। मैथिलीमे चल-चित्र वा नाटकक व्यवस्था यावत् धरि नहि होइत अछि तावत् धरि मनोरंजनार्थी बेचारे करबे की करताह?

ई हर्षक विषय जे भिन्न-भिन्न स्थानसँ मैथिली लोकगीतक ढेरक ढेर रिकार्ड बनि चुकल अछि, जकर यथेष्ट उपयोग मिथिलांचलमे भए रहल

अछि। सम्प्रति अन्धाधुन्ध पोथी सभक प्रकाशन भए रहल अछि। किन्तु नाटक-ग्रन्थक रचनामे जाहिठाम एतबाक संख्या-वृद्धि भेल ताही ठाम तदनुरूप रंगमंचक निर्माणमे श्रीवृद्धि नहि भए रहल अछि। एक समय मैथिली रंगमंच ततवा विकसित छल जे नेपाल, असम, बंग तथा कलिंगमे गाम-गाम मैथिली नाटकेक अभिनय होइत छल। असमिया साहित्यक जन्मदाता श्री शंकरदेव असमियामे अनेकानेक रचना कए चुकलाक बादहु जखन मिथिला अयलाह एवं मैथिली रंगमंचक सान्निध्य प्राप्त कयलन्हि तखन असमिया छोड़ि मैथिलीयहिमे नाटक रचना करय लगलाह। हुनक शिष्य-प्रशिष्यलोकनि सेहो मैथिली भाषाहिक माध्यममे धार्मिक नाटकक रचना करैत रहलाह। आइ सँ सात सए वर्ष पूर्व, जखन आन कोनो भारतीय भाषामे नाटक-रचना धरि नहि होइत छलैक तखन मैथिलामे अनेक स्थान पर विकसित रंगमंच सेहो छलैक, जाहिमे विशुद्ध मैथिली नाटकक अभिनय होइत छलैक।

सम्प्रति मैथिली रंगमंचक निर्माणक लेल चाही उच्च स्तरक चरित्रवान् एवं द्रव्यवान् लोक सभक प्रचेष्टा एवं युवक-युवती लोकनिक व्रत-निष्ठा। घूर्णायमान रंगमंचक आविष्कारसँ नाटक आइ नीक जकाँ चलचित्रक सामना कए सकैत अछि। यावत् धरि नाटककेँ उच्चस्तरीय सामाजिक मान्यता नहि प्रदान कएल जाएत एवं संभ्रान्त कुलक युवती लोकनिक हेतु अभिनय-शीलता विशिष्ट गुण नहि मानल जएतन्हि तावत् धरि मैथिली रंगमंचक दिवास्वप्न चरितार्थ भेनाइ असंभव।''[1]

स्मर्त्तव्य जे विभिन्न लेखकलोकनिसँ कतिपय नाटक लिखाओल गेल तथा कलकत्तामे एक रंगमंचक स्थापना सेहो भेल अछि। एहि प्रकारेँ नाटक तथा रंगमंचक विकास करबामे दर्शन समाजक प्रेरणास्रोत बनल रहल। साहित्य एकेडमीमे मैथिलीकेँ मान्यता देअयबाक प्रश्नपर 'दर्शन' पूर्ण तत्पर छल। संगहि अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ परिगृहीत करबाक हेतु स्वर मुखरित करैत रहैत छल। जनगणनाक अवसरपर मैथिलीभाषी समाजकेँ उद्‌बोधित करबामे सेहो सन्नद्ध रहैत छल।

जेना एक संगठित संस्थाक संरक्षणमे एहि पत्रिकाक आरम्भ भेल छल, जेना मैथिलीक मूर्द्धन्य साहित्यकार, चिन्तक ओ कार्यकर्त्ताक सहयोग एकरा

१. जून १९६० ई०।

प्राप्त छलैक तेना जँ मैथिल संघ आन्तरिक कलहसँ ग्रस्त नहि होइत तँ ई पत्रिका सुदीर्घकाल धरि अपन ओजस्वी विचारसँ समाजमे नव चेतनाक संचार करैत रहैत, परन्तु अपना समाजक जे सबदिना रोग पारस्परिक द्वेष रहलैक अछि ताही रोगसँ कलकत्तोक उक्त संस्था ग्रस्त भ' गेल जाहि कारणेँ एहि पत्रकेँ सेहो नेङड़ाइत अपना पथपर अग्रसर होइत रहय पड़लैक आ अन्तत: १९७४ ई० मे आबि ई ठामहि दू फाँक भ' गेल। श्री बाबू साहेब चौधरी मिथिला दर्शनक स्थानपर "मैथिली दर्शन" नामक पत्रिकाक प्रकाशन करय लगलाह जकरा मिथिला संघक प्रमुख पत्र कहल गेल अछि। कविवर सीताराम झा स्मृति-अंक एकरे थिक।

'मिथिला दर्शन' मुखपृष्ठकेँ आकर्षित बनयबाक हेतु समय-समय पर ब्लाकमे फेरबदल करैत रहैत छल। किछु दिन वाल्मीकिक आश्रममे सीता लव-कुशकेँ धनुर्विद्याक अभ्यास करबैत छथिन तकर चित्र, तँ किछु दिन 'एक महिला अरिपन दैत तकरा पाछाँ एक महिला 'टकुरी कटैत' वला चित्र बड़ आकर्षक ओ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक प्रेरणाक प्रतीक छल। विलक्षणता ई अछि जे ओहि चित्रक प्रयोग 'मैथिली दर्शन'क मुखपृष्ठ पर छपि रहल अछि। एहिसँ प्रतीत होइत अछि जे एहि दुनू दर्शनक एके गोत्र थिकैक। दूनूक दृष्टिकोण सेहो एके।

मिथिला दर्शनक माध्यमसँ बहुतो नवयुवक साहित्यकार क्षेत्रमे अयलाह। जे प्रमुख साहित्यकारलोकनि एहिमे लिखैत छलाह ताहिमे आचार्य रमानाथ झा, कविचूड़ामणि 'मधुप', प्रो० श्री तन्त्रनाथ झा, डॉ० श्री लक्ष्मण झा, प्रो० श्री हरिमोहन झा, आचार्य श्री सुरेन्द्र झा, 'सुमन,' डॉ० श्री शैलेन्द्र मोहन झा, प० श्री बच्चा ठाकुर, सर्वश्री शेखर, अमर, प्रवासी, रमण, डॉ० श्री जयकान्त मिश्र, डॉ० श्री रामदेव झा, डॉ० श्री परमेश्वर मिश्र, डॉ० श्री कांचीनाथ झा, 'किरण, श्री मायानन्द मिश्र, श्री राजमोहन झा आदि छथि। स्थान ओ सब अंकक अभावमे सभक उल्लेख संभव नहि भ' सकल।

चौपाड़ि

पटनामे एक मैथिली साहित्य गोष्ठी स्थापित भेल छल जे 'चौपाड़ि" नामक एक मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ कयने छल। पत्रिकाक नामक

Scanned by CamScanner

नीचाँ छपल अछि— 'मैथिली-साहित्य-गोष्ठीक मधुमण्डप'' अर्थात् एहि गोष्ठीक ई पत्रिका 'मधुमण्डप' छल। एहि प्रसङ्ग किछु कहबासँ पूर्व एहि पत्रक सम्पादक बाबू लक्ष्मीपति सिंह 'मैथिली पत्रकारिताक विकास' शीर्षक लेखमे स्वयं जे विचार व्यक्त कयने छथि से उद्धृत करब समीचीन होयत। ओ लिखने छथि—

''१९५२ ई०मे पटनहिमे मैथिली-साहित्य-गोष्ठीक स्थापना कएने छलहुँ, जकर अध्यक्ष छलाह म. म. डा० उमेश मिश्र ओ परामर्शदाता डा० अमरनाथ झा। ओही गोष्ठीक दिशिसँ 'चौपाड़ि' नामक एक मासिक पत्र चलओने छलहुँ। सम्पादक अपने छलहुँ आओर सिद्धान्तहु छल वएह परम्परावादी। यद्यपि चौपाड़ि मैथिलीक कवि-लेखक मात्रक हेतु अपन पत्र छल, तथापि ओ चिर समस्याक समाधान नहि कए सकल। तकर उत्तरदायित्व आनक नहि, सभ हमर अपनहि छल, कारण जे अपन परिस्थितिसँ विवश भए हम चौपाड़ि कएँ जीवित नहि राखि सकलहुँ।''[1]

डॉ० श्री जयकान्त मिश्र अपना इतिहासमे चर्चो नहि कयने छथिन। डॉ० 'श्रीश' चारि पाँती लिखने छथि—

''१९५३ हि सँ साहित्यक बुलेटिन जकाँ ''चौपाड़ि'' सेहो श्री लक्ष्मीपति सिंहक सम्पादकत्वमे पटनासँ छपब आरम्भ भेल जाहि मध्य छोट छोट लेख, कविता, कथा, एकांकी प्रभृति प्रकाशित होइत छल। एहिमे प्रकाशित सामग्री उत्कृष्ट ओ मार्मिक होइत छल ओ जतबहि दिन छपल, ततबहि दिनमे मैथिली साहित्यक बड़ उपकार भेल।''[2]

विचारणीय प्रश्न अछि जे 'चौपाड़ि'क सम्पादक स्वयं १९५२ ई०सँ एकर आरम्भ कहैत छथि तथा डॉ० 'श्रीश' १९५३ ई०, परन्तु हमरा समक्ष जे अंक सब अछि ताहिसँ प्रमाणित अछि जे वस्तुतः 'चौपाड़ि' १९५५ ई० सँ प्रकाशित होअय लागल छल। एहिमे अनेक विचित्रता अछि। प्रथम तँ एकरा पत्र वा पत्रिका नहि कहि 'मधुमण्डप' कहल गेल अछि। दोसर, वर्षक हेतु 'मण्डल' ओ अंकक हेतु 'मधुमन्त्र-१,२' आदि छपल अछि तथा तेसर ई

१. मैथिली साहित्यक रूपरेखा, (चेतना समिति, पटना), पृ० ८५।

२. मैं० सा० इतिहास, पृ० १२८।

Scanned by CamScanner

जे मासमे 'मधुमास' 'मासमाधव' आदि। साधारण पाठकके एहिमे छपल मासक नाम देखि अर्थबोध होयबामे पूर्ण कठिनताक अनुभव होयतनि।

हमरा समक्ष जे अंक अछि ताहिमे पहिल मण्डल—१, मधुमन्त्र-३, मधुमास, २०११ सम्वत् छपल अछि जाहिसँ सिद्ध होइत अछि जे वर्ष प्रथम अंक-३, सन् १९५५ ई०क मार्च मासक अंक थिक। एतावता एकर पहिल अंक जनवरी १९५५मे प्रकाशित भेल होयत। एहि प्रकारें इतिहासकार लोकनिक कथनसँ एकर सामञ्जस्य नहि बैसैत अछि। अंक सभक अवलोकन कयलासँ अनेक भ्रान्ति उत्पन्न होइत अछि। उदाहरणार्थ—तेसर अंक मधुमास अछि आ चारिम अंक—मासमाधव, परन्तु एहि वर्षक मास जेठ संवत् २०११मे मधुमन्त्र-८ छपल अछि। एहि अंकके पाँचम अंक होयबाक चाही, परन्तु मधुमन्त्र-५ जे अछि ताहिमे शुचिमास लिखल अछि। शुचिमास भेल आषाढ़। एहिना एक अंक अछि जाहिमे मण्डल-२, मधुमन्त्र-१ छपल अछि। एकर अर्थ भेल जे ई दोसर वर्षक प्रथम अंक थिक, परन्तु वर्षमे २०१४ संवत् तथा मास जेठ छपल अछि। अतः ई अंक १९५७ ई०क थिक। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे एकर प्रकाशनक कोनो अवधि निश्चित नहि छल। एहि तथ्यक पुष्टिमे सम्पादकेक वक्तव्य उद्धृत कयल जाइत अछि।

ओना 'चौपाड़ि'क सात गोट मात्र अंक देखबाक सुयोग भेल अछि ताहि सबमे एकमात्र अंकमे 'अपन बात' शीर्षकमे सम्पादकक मन्तव्य अछि जे निम्नांकित अछि—

"साधनक अभावें मनोरथक पंगु रहबहु स्वाभाविके, किन्तु कामना, कर्त्तव्य एवं कर्मफल अपन-अपन महत्व रखैछ। गोष्ठी स्थानीय साहित्यानुरागी लोकनिक सहयोगसँ आइ धरि केवल अपन "चौपाड़ि'क आठ मधुमन्त्रे तथा मैथिली कुसुमाञ्जलिएटा प्रकाशित नहि कए सकल अछि; प्रत्युत मदनपुर (पुर्णिया), अजमेर, जब्बलपुर आदि कतेको स्थानमे अपन शाखा-गोष्ठियो स्थापित कए चुकल अछि। समय-समयपर चौपाड़िक प्रकाशनार्थ हमरा महामहोपाध्यायजी, श्री सत्यानन्द कुमर एडवोकेट, श्री जयनाथ मिश्र तथा विजयकान्त मिश्र आदि उदाराशय मातृभाषानुरागी लोकनिसँ जे आर्थिक सहायता भेटल अछि, एतदर्थ कृतज्ञताज्ञापन करब हम अपन कर्त्तव्य बुझैत छी।

Scanned by CamScanner

संगहि 'चौपाड़ि'क सम्बन्धमे एहिठाम किछु निवेदन करबो प्राय: असंगत नहि होयत। चौपाड़ि ने मासिक पत्रिके थिक, आओर ने एकर कोनहु वार्षिक शुल्के निर्धारित भए सकैछ।''[१]

एक दिस ई कहब जे ई कोनो मासिक पत्र नहि थिक आ दोसर दिस बादमे ई कहब जे १९५२ ई०सँ एक मासिक पत्रिका चलओने छलहुँ वदतो व्याघात दोषसँ मुक्त नहि मानल जाय सकैत अछि। एहि संदर्भमे संपादकीयमे एकर प्रकाशनक उद्देश्य, प्रकाश्य विषय वस्तु तथा शैलीक प्रसङ्ग सेहो प्रकाश देल गेल अछि। सम्पादक आगाँ लिखने छथि––

''मैथिलीमे नित्य नवीन सुपाठ्य सामग्रीक प्रचार एवं ओहि प्रचारसँ अग्रिम प्रकाशनक हेतु यथासम्भव साधनप्राप्तिए सम्प्रति गोष्ठीक मुख्य लक्ष्य छैक। हमर इच्छा रहैछ कि चौपाड़िमे एहन कोनहु वस्तु नहि प्रकाशित हो, जकरा आबालवृद्धवनिताक समक्ष रखबामे शिष्टताक उल्लंघन भए जाए। लेख, कविता वा गल्पमें अश्लीलताक पुट भरि हम चौपाड़ि कएँ सर्वसाधारण प्रिय बनेबाक पक्षमे नहि छी। श्रृंगाररसक नाम पर कामोत्तेजक बीभत्सरसक समावेश अपरिपक्व मस्तिष्कक हेतु शंखियहु सँ विशेष घातक सिद्ध भए सकैछ। विरुदकाव्यसँ सर्वसाधारण कएँ उन्मुख (?) कए समयोचित स्वास्थ्यकर साहित्यक दिशि आकृष्टो करब तँ साहित्यकारहि लोकनिक कर्त्तव्य थिकन्हि। हम जनैत छी, जे चौपाड़िक विषयसंकलनसँ कतेको साहित्यिक बन्धु लोकनि सन्तुष्ट नहि छथि, किन्तु एकर तँ हमरा हाथमे कोनो प्रतीकार हु नहि अछि। सङ्गहि आधुनिक मैथिली साहित्यहुक सम्बन्धमे किछु निवेदन करब आवश्यक बुझना जाइछ। आइ काल्हि विदेशीय छन्द सभक देखादेखी मैथिलियहुमे तथाकथिक मुक्तवृत्त कविताक बाढ़ि चल आएल अछि, जाहिमे यति, गणमात्रा आदिक किछु ठेकान नहि रहैछ, एवं जे नहि तँ शुद्ध पद्य कहल जाए सकैछ आ ने परिष्कृत गद्य। मैथिली पद्य-संसारमे विदेशीय भिन्न तुकान्त काव्यहुक समावेश मैथिलीक भण्डार कएँ समृद्धिपूर्ण बनाओत, किन्तु भिन्न तुकान्तो कविता लिखबामे किछु साहित्यिक व्यवस्था, किछु अपन अपन मौलिक बन्धन रहैछ। एहि हेतु किछु अध्ययन, किछु मनन, एवं किछु बन्धन आवश्यक होइछ। प्रो० श्री

---

१. चौपाड़ि, मण्डल-१, मधुमन्त्र-८, मास जेठ, २०११ सम्वत्।

Scanned by CamScanner

तन्त्रनाथ झाजीक कीचक वध (मैथिली अनुवाद) क परिशीलनसँ विदेशीय छन्द सभक अनुकरण करबामे हमरा जनैत, मुक्तवृत्त कविता लिखनिहार नवीन कवि लोकनि कएँ बहुत किछु सहायता भेटि सकैत छन्हि। सारांश, चौपाड़िमे हम अपन प्राचीन पद्यपद्धतिक सङ्ग-सङ्ग नवीनसँ नवीनहु छन्द सभकएँ स्थान देबाक हेतु तैयार रहैत छी; आशा अछि मैथिलीक सहृदय अधिकारी कविलोकनि हमरा एहि सत्याग्रहमे सहयोग एवं प्रोत्साहन प्रदान करबाक अवश्य कृपा करैत जएताह। अस्तु!!

तँ, आब रहल शैलीक सम्बन्धमे अपन निवेदन। एहि सम्बन्धमे एतबेक संकेत पर्याप्त जे यावत् मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ लेखकलोकनि अपन-अपन क्षेत्रीय भाषाशैली, एवं उच्चारण-प्रक्रियाक प्रभावसँ मुक्त भए, तथा आवश्यकतानुसारे उपन्यास-गल्प-नाटकादि ग्रन्थ सभमे विभिन्न पात्रानुकूल विभिन्न क्षेत्रीय भाषा-शैलीक समुचित प्रयोग करितहु अपन अपन व्यक्तिगत रचनामे साहित्यिक मैथिलीक एकरूपताक रक्षा नहि करए लगैत जएताह तावत् हमरहु कोनहु मैथिली लेखकक शैली विशेष पर कोनहु आपत्ति करबोक अधिकार नहि भए सकैछ। चौपाड़िक गद्यांशमे शैलीक बहुरूपता हमर एही विवशताक परिणाम थीक। आशा अछि, विद्वत्समाजक समक्ष हम एतदर्थ दोषी नहि मानल जाएब। किमधिकं सहृदयेषु।

प्रसङ्गवश हम जब्बलपुरक पण्डित श्री भगवान दत्त मिश्रजी, एवं पण्डित चिरञ्जीवलाल झाजी कएँ, गोष्ठीक दिशि सँ हार्दिक धन्यवाद दैत छियन्हि जे 'चौपाड़ि'क प्रकाशनार्थ एक एक सय रुपैयाक दान कए मैथिलीक प्रति ई भक्ति देखओलन्हि अछि।"

एहि उद्धरणसँ चौपाड़िक नीति, उद्देश्य ओ शैलीक प्रसङ्ग दृष्टिकोण तँ स्पष्ट होइत अछि, अपितु डा० 'श्रीश'क ई कथन जे ई एक बुलेटिन छल सेहो सिद्ध भ' जाइत अछि। मूलतः बाबू लक्ष्मीपति सिंहक हृदयमे जे मातृ-भाषाक प्रति अपार स्नेह छलनि, एकरा समृद्ध देखबाक जे आकुल आकांक्षा छलनि तकरे पूर्त्यर्थ 'चौपाड़ि'क प्रकाशन करैत छलाह।

एहि उद्धरणसँ ईहो स्पष्ट होइत अछि जे पद्यक क्षेत्रमे जाहि प्रकारक स्वच्छन्दता आइ सर्वत्र पसरि गेल अछि ताहिसँ बाबू साहेब सहमत नहि छलाह। मुक्तवृत्तक विरोधी नहि छलाह, परन्तु ओहूमे जे यति आदिक किछु बन्धन छैक तकर उल्लंघन करबाक पक्षपाती नहि छलाह। तहिना कथा

Scanned by CamScanner

आदिमे जाहि प्रकारें उद्दाम यौन-भावनाक चित्रण आरम्भ भ' गेल छल ताहि प्रति हृदयमे वितृष्णा छलनि। एहि प्रकारक साहित्य-रचनाकें अस्वास्थ्यकर मानि ओहिसँ अपना पत्रकें मुक्त रखैत छलाह। अतः जे नीक बेजाय रचना एहिमे प्रकाशित भेल से समाजकें मानसिक रूपें अस्वस्थ बनयबाक अपराधसँ मुक्ते रहल।

यद्यपि 'चौपाड़ि'क समक्ष कोनो योजना नहि छलैक तथापि कतेको रचना एहन प्रकाशित भेल जे मैथिली साहित्यक अध्येतालोकनिक हेतु उपादेय अछि। डा० श्री जयकान्त मिश्रक 'मिथिलाक जनसाहित्य', आचार्य श्री परमानन्दन शास्त्रीक 'मिथिलाक्षर आओर मिथिलाभाषा' 'मैथिलीक प्राचीन इतिहास', 'बौद्ध साहित्यमे विदेह' 'कोशीक समस्या', श्री विजयकान्त मिश्रक 'मिथिला पर कर्णाटक वंशीय शासन,' श्री दीनानाथ झाक 'मैथिलीक हेतु काव्य सामग्री' आदि निबन्ध, प० श्री गोविन्द झाक वीर कीर्त्ति सिंह, प० श्री भवनाथ झाक 'विद्यापति' एकांकी आदिक विशेष रूपें उल्लेख कयल जाय सकैछ अछि।

एहिमे 'किमाश्चर्यमतः परम्' शीर्षक व्यंग्यस्तम्भ रहैत छल। ध्यातव्य जे ई स्तम्भ 'विभूति' तथा 'मैथिल बन्धु' मे सेहो छपैत छल। लेखक सबमे एके 'श्री माढ़व्य' छथि; परन्तु 'विभूति' मे भाषामे जे तीक्षणता रहैत छल से 'चौपाड़ि' मे देखबामे नहि अबैत अछि। एहि व्यंग्यमे मनोरंजकता, मृदुता अपेक्षाकृत विशेष अछि। सब मिला क' चौपाड़ि जतबे दिन चलल, अपन मर्यादाक सीमामे रहल। एक कलाकार जे अप्रतिम प्रतिभाक छलाह— विनोदानन्द झा 'बिनू'—तनिका सर्वप्रथम यैह पत्र सभक समक्ष अनलक, मुदा मैथिलीक दुर्भाग्य सँ ओ अल्पायु भेलाह।

मिथिलादूत

१९५४ ई०मे मैथिल महासभाक अधिवेशन आगरामे भेल छलैक। ओहि अवसरपर प्रवासी मैथिल बड़े उत्साहक संग पर्याप्त संख्यामे सम्मिलित भेल छलाह। महासभाक ई अधिवेशन प्रवासी मैथिलकें पूर्णरूपें प्रेरित कयने छलनि, जकर प्रतिफल भेल कानपुरसँ 'मिथिलादूत' नामक एक मासिक

पत्रक जन्म । ई १९५५ ई०क जनवरी माससँ प्रकाशित होअय लागल आ किछुए अंक प्रकाशित भ' बन्द भ' गेल । एकर प्रधान सम्पादक छलाह श्री सम्पत्ति मिश्र तथा सहयोगी सम्पादक श्री शिवानन्द झा । वार्षिक मूल्य २) टाका आ एक अंकक तीन आना मात्र ।

प्रथम अंकक सम्पादकीयमे जे विचार व्यक्त कयल गेल छल तकरा उद्धृत कयलासँ एकरा स्थितिपर पूर्ण प्रकाश पड़ैत अछि। मन्तव्य निम्नांकित अछि—

"जखन आन ओन जाति अपनामे एतेक सम्पर्क बढ़ा कऽ दिनानुदिन उन्नतिक मार्गपर अग्रसर भऽ रहल अछि तखन एक ठाम, एक शहरमे रहि कऽ हम मैथिल बन्धुगण एक दोसरसँ एतेक अनभिज्ञ रही जे—अपनामें परिचय सेहो नहिँ हो—नितान्त क्षोभक विषय थिक आ एही उद्देश्यक पूर्ति हेतु गत 'महारात्रिक' (विजयादशमी) बारह बजे रातिमे 'मैथिली परिषद'क नींव पड़ि गेल । तत्पश्चात् रवि दिन कानपुरक समस्त मैथिलगण एकत्र भय निश्चय कएलैन्हि जे एहि संस्थाक नाम 'मैथिल संघ' हो—आ सैह भेल । संघक स्थापनासँ ई बुझबामे भाङठ नहि भेल जे हमरालोकनिक बीच एहेन-एहेन उत्साही, कर्मठ, योग्य ओ त्यागी व्यक्तिगण छथि, जनिक साधारणे श्रमसँ मिथिलाक आँखिक नोर पोछब कठिन कार्य नहि प्रत्युत ओ गौरवान्वित सेहो भऽ सकैत छथि । ई मिथिलापर मिथिलेक कृपा कहल जाए तऽ कोनो अत्युक्ति नहि ।

संघक अग्रिम कार्यक्रम की हैत, कोन कोन वस्तु एहि संस्थाक अन्तर्गत राखल जाय, कोन बात कां प्राथमिकता प्रदान करी—ई सभ धंधाक भार एक्के बेर एहि नवजात संस्थापर राखि देला सन्ताँ एकर निर्णयात्मक क्रियामें दुर्बलता अएबाक संभावना अछि अतएव एहि सम्बन्धमें 'विकास सिद्धान्त' अत्यन्त उपयोगी बूझि पड़ैछ । तखन एतबाधरि अवश्य जे—हमरालोकनिक दृष्टिकोण साहित्यिक अवश्य हएबाक चाही ।

हमरालोकनिक साहित्यक दृष्टिकोण

हमरा विचार सं एखन मैथिली साहित्य कां दून दिस अग्रसर हएबाक चाही, प्रथम—प्राचीन मैथिलीक विद्वानक साहित्य-संकलन, दोसर—विश्व साहित्यक सर्वोत्तम ग्रन्थ कां मैथिलीमें लएबाक हेतु । मैथिली साहित्य एकरा बीज प्रदान करतैक आ विश्वसाहित्य विस्तार । यद्यपि दून दिस

Scanned by CamScanner

किछु ने किछु कार्य किछु वर्षसँ भऽ रहल अछि आ एहि कार्यक हेतु हमरा लोकनिकाँ ओहि कार्यकर्त्तागणक कृतज्ञ हएबाक चाही, जे नाना प्रकारक असुविधा होइतो अपना पथ पर अग्रसर भेल छथि तथापि ओ कार्य कोनो निश्चित योजनानुसार नहि भेल अछि आ ने तकरा लेल कोनो व्यवस्था रहल अछि।

आर्थिक अवस्था

सामन्तशाही युग बीति गेल। आश्रित साहित्य सेवी-वर्गक आब कल्पनो नहि कएल जा सकैछ अतएव समाजक कर्त्तव्य थिक जे साहित्य सेवी वर्गक सहायता करए। वर्त्तमान समाज व्यवस्थामे साहित्य सेवी वर्गक निश्चिततापूर्वक सम्पूर्ण समय साहित्य रचना लेल अर्पित नहि कएल जा सकैछ कारण जे साहित्यक उन्नतिक संग संग लोक कां उदरपोषण आ कुटुम्बक भार सेहो छैक। साहित्य रचना द्वारा दुनू उद्देश्यक पूर्त्ति हैब असंभव किएक तऽ लोक, साहित्यक दिशा मे, एक निश्चित — आयक अंश व्यय करबा लेल अनिवार्य रूपें तैयार नहि। अतएव समाजक सम्पन्न व्यक्तिसँ प्रार्थना अछि जे ओ लोकनि यथासाध्य एहि दिशामे उदारता देखाबथि, संग संग शिक्षित एक दू टा मासिक पत्रिकाक ग्राहक बनि साहित्यक उन्नतिमे सहायक होथि।"

एहि उद्धरणमे साहित्यिक दृष्टिकोण तँ बहुत व्यापक ओ गंभीर अछि, परन्तु तदनुरूप अंक सबमे प्रकाशित रचना एको गोट देखबामे नहि अबैत अछि। ई जे शंका व्यक्त कयल गेल अछि जे "ई सभ भार एक्केबेर एहि नवजात संस्था पर राखि देला सन्तां एकर निर्णयात्मक क्रियामे दुर्बलता अएबाक संभावना" से चारिए अंकक बाद परिलक्षित होइत अछि। चारिमास धरि प्रकाशित भ' ईहो पत्रिका दम तोड़ि देलक। तकर बाद सुनल अछि कहियो काल एक आध अंक प्रकाशितो होइत छल तँ दुर्योगवश ओ सब हमरा दृष्टिपथ पर नहि आयल। आदिक चारि गोट अंक देखल ताहिमे ओहि कालक कोनो स्थापित लेखकक रचना सेहो दृष्टिपथ पर नहि आयल। हँ, एहि अंक सबमे किछु नाम एहन अवश्य अछि जे सम्प्रति प्रौढ़तासँ साहित्य-रचनामे संलग्न देखल जाइत छथि ताहिमे श्री ताराकान्त प्रकाश, डा० श्री रामदेव झा, श्री सीताराम मिश्र, श्री रमानाथ मिश्र,'मिहिर', प० श्री राघवाचार्य शास्त्रीक नामोल्लेख कयल जाय सकैत अछि।

Scanned by CamScanner

विशेषरूपें विचारणीय अछि जे कोनहु पत्रक सम्पादन करबाक हेतु न्यूनतम योग्यता सम्पादकक की होयबाक चाही। योग्यतासँ हमर तात्पर्य विश्वविद्यालयीय उपाधिसँ नहि अछि। सम्पादन एक कला थिकैक, सम्पादकक एक उत्तरदायित्व होइत छैक जाहि प्रसङ्ग संक्षिप्त रूपें पूर्वमे विचार कयल गेल अछि। कोनो सम्पादककें भाषाक स्वरूपक सम्यक ज्ञान ओकर न्यूनतम योग्यता होयबाक चाही, परन्तु आगाँ चलि मैथिली पत्रकारितामे एहि तथ्यक उपेक्षा होअय लागल। मात्र उत्साही ओ समय देनिहार जे भेटलाह से सम्पादन करय लगलाह। फलतः भाषाक स्वरूपमे विकृति सब अबैत गेल अछि। उत्साह जाधरि रहलनि, किछु कष्टो उठाय सम्पादनमे तत्पर रहलाह, उत्साह क्षीण भेल, पत्रिकाक जीवन समाप्त। उत्साह समाप्त होयबाक प्रमुख कारण आर्थिक संकट, आर्थिक संकटक प्रमुख कारण समाज द्वारा एहि सब प्रकारक प्रयासक उपेक्षा, एहि प्रकारक प्रयाससँ सम्भावित दूरगामी लाभक प्रति अनभिज्ञता। अतः आर्थिक अवस्थाक प्रसंग सम्पादक द्वारा कयल गेल अनुरोधकें क्यो बुझनिहार-सुननिहार नहि। अतः एहु पत्रिकाक सैह गति भेलैक जे बहुतोक होइत आबि रहल छैक। परन्तु तें ऐहन प्रयासकें सर्वथा निरर्थक कहि नकारल नहि जाय सकैत अछि। एहिसँ एक बात अवश्य स्पष्ट होइत अछि जे मातृभूमिक प्रति किछु कर्त्तव्यक बोध तथा मातृभाषाक संरक्षणसँ स्वत्व रक्षामे सबलता अबैत छैक ई भावना बीजरूपमे सर्वत्र बढ़ि रहल छल। तकर प्रमाण एकरो मानल जाय सकैत अछि। आगिकें सुरक्षित रखबाक हेतु जेना स्त्रीगण चूल्हिमे छोटतन गोइठा वा विपड़ीक टुकरी घोंसिया दैत छथिन, जाहिसँ कोनो वस्तुक पाक तँ संभव नहि होइत छैक, परन्तु पाक करबाक हेतु आँच पजारबाक काल आगिक हेतु अन्यत्र नहि जाय पड़ैत छैक, तहिना मैथिलीमे अधिकतर पत्र-पत्रिका भावना रूपी आगिकें जिया क' रखबाक हेतु गोइठाक टुकरीक काज करैत रहल अछि।

एहि कथनक आशय ई जे 'मिथिला दूत' कोनो स्थायी मूल्यक वस्तु प्रकाशित क' सकल, से नहि, तथापि किछु कथा, किछु एकांकी-नाटक दू-एकटा विचारात्मक लेख छापि निरन्तरताक कड़ीकें जोड़ैत रहल।

नूतन विश्व

१९५७ ई०क मइ माससँ लहेरियासरायसँ 'नूतन विश्व' नामक एक मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल जे प्रायः ३ वर्षधरि चलैत रहल।

Scanned by CamScanner

आरम्भिक अंकक सम्पादक छलाह श्री गिरिधर नारायण तथा सहायक सम्पादक डॉ० श्री सीताराम दास ओ श्री राजेश्वर नारायण, परन्तु बादमे डॉ० श्री सीताराम दास सम्पादक तथा राजेश्वर नारायण उपसम्पादकक रूपमे काज करैत रहलाह। संरक्षक छल आनन्दमार्ग प्रचारक संघ।

एकर प्रथम अंक जे आनन्द पूर्णिमा विशेषांक नामसँ प्रकाशित भेल ताहिमे एकरा प्रगतिशील विचारधाराक मासिक पत्र कहल गेल अछि। ओना प्रगतिशील शब्द जाहि रूढ़ अर्थमे सम्प्रति प्रयुक्त होइछ, ताहिसँ एकरा कोनो सरोकार नहि छलैक। ई आनन्द मार्गक जे अपन आध्यात्मिक विचारधारा छैक तकर प्रचारार्थ प्रकाशित होअय लागल छल। बादमे चलि क' आनन्दमार्ग एक विवादास्पद संगठन भ' गेल, परन्तु आरम्भमे एकर स्वरूप अध्यात्मवादी बूझल जाइत छलैक।

प्रथम अंकक सम्पादकीयमे भौतिकवादी प्रवृत्तिकेँ बढ़ैत जयबाक कारणेँ संसारमे जेना महासंहारक शस्त्रास्त्रक निर्माण होइत गेल आ तृतीय विश्वयुद्धक विभीषिकासँ सम्पूर्ण संसारक मानव समुदाय त्रस्त ओ आतंकित भेल गेल अछि तथा विज्ञानक बढ़ैत चरणक संग जेना मानव समुदायमे भोगवादी प्रवृत्ति उत्तरोत्तर बढ़ैत गेल अछि, जाहिसँ नैतिकतापर घोर संकट आबि गेल अछि ताहि सभक विश्लेषण करैत सम्पादक लिखने छथि—

'........भारतमे बराबरिसँ आध्यात्मिक स्तर बड़ ऊँच रहल आ सब शासन अध्यात्मवादक भित्तिपर आधारित छल। महात्मा गाँधीक विचारो एहने छलैन्हि जे भारत अध्यात्मवादपर चलौ, मुदा महात्मा गाँधीक मृत्युक पश्चात गाँधीवादक शवपर भौतिकवाद नाँचि रहल अछि। आ जाहि कारणसँ भारतमे अशान्ति तथा भ्रष्टाचार दिनानुदिन बढ़ि रहल अछि। भारत के (?) महान नेता लोकनि नैतिक स्तर उच्च करबाक विषयमे किछु समयसँ बाजि रहल छथि मुदा एहि दिश कोनो ठोस डेग नहि उठि रहल अछि।........

नूतन विश्व यैह उनटा धार बहाबय चाहैछ। अपनेक सहयोगक हम आह्वान करैत छी। अपने एहि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक सब प्रकारक शोषणक उन्मूलन करबाक अभियानमे हमर संग दी, यैह हमर आह्वान। अपने संग तँ अवश्य देब। जँ विलम्बसँ संग देब एहि नूतन

Scanned by CamScanner

विश्वक निर्माणक प्रयासमे त' पाछु अफसोच हैत जे हम पछुआ गेलहुँ से अहाँ पछुआहि नहि।"

एहि उद्धरणसँ ज्ञात होइत अछि जे एक परम पवित्र उद्देश्य ल' ई पत्र कर्मक्षेत्रमे अवतीर्ण भेल छल।

हमरा एकर मात्र ९ गोट अंक देखबाक सुयोग भेल, परन्तु अन्तिम दू अंक जुलाई एवं अगस्त १९६१ इ० क अंकमे वर्ष ३ तथा अंक ७ ओ ८ छपल अछि। ताहिसँ पूर्वक अंक सबमे वर्ष ओ अंक संख्याक कोनो सूचना नहि अछि।

मार्च १९६० क अंकमे आनन्द मार्गक प्रसंग लिखल गेल अछि—"आनन्द मार्ग—(अराजनैतिक आध्यात्मिक संस्था) (क) परम शिव हमर पिता छथि। परमा प्रकृति हमर माता छथि। त्रिभुवन हमर स्वदेश थिक। वसुधैव कुटुम्बकम्। तेँ राष्ट्रीयता, जातीयता एवं वैषम्यक दीवारके ढाहि दीय। एक विश्व आनन्द परिवारक निर्माण करू। तेकर बहुमुखी विकासोन्मुखी व्यवस्थाक हेतु एक विश्व पार्लामेन्ट काएम हो। ताहिमे दूटा सदन हो—निम्न सदन आ उच्च सदनक निर्माण हो। प्रत्येक देशसँ चुनल एक-एक सदस्य जुटानसँ उच्च सदनक निर्माण हो। विश्वव्यापी विधान निर्माण परिषद निम्न सदन हो आ ताहिपर उच्च सदनक आँकुश रहै। स्थानीय शासन व्यवस्था स्थानीय परिस्थिति एवं आवश्यकतानुसार हो। ई संस्था संयुक्त राष्ट्र-संघसँ बेशी पैघ आ व्यापक हैत। कारण सं० रा० सं० क एके मत छैक—तोरा किछु होउ, हमरा कुरथी उला दे।........"

कल्पना तँ एहन छैक परन्तु एहिमे प्रकाशित विषय वस्तुसँ एकरा ततेक मेल नहि खाइत छैक। विभिन्न देशीय राजनीतिक, सामाजिक विषय वस्तुक संग अन्तरराष्ट्रीय समस्या सबपर सेहो व्यंग्यात्मक शैलीमे बहुत किछु प्रकाशित भेटैत अछि। विशेषत: श्री प्रभात रंजन सरकार, श्री आनन्दमूर्त्ति तथा डॉ० श्री सीताराम दासक गद्य आ 'दुलहआ' नामसँ ककरो सरस निरगुण आदि पद्य एहिमे प्रकाशित भेल अछि। श्री अनन्त प्रसाद ठाकुरक रचना सेहो विशेष संख्यामे छपल छनि।

एहिमे जे रचना सब छौत छन तकर शीर्षक सब छन—'भूमामन आओर अगुमन,' 'मानवक क्षुधा ब्रह्मोपलब्धि, 'तान्त्रिक आदर्श एवं समाज

पर ओकर प्रभाव,' 'मुखाकृतिक अध्ययन,' 'मानव एते भोगवादी किऐ' ?' 'आजुक समस्या,' 'व्याप्तिक ऐश्वर्य' 'मनुष्यक साहित्य साधना,' 'प्रोतोत गुरु भक्तियोग' 'अवतार वादक शव परीक्षा' 'मिथिलामे तन्त्रक पुनर्जागरण' 'तन्त्र आओर साधना' 'युगपुरुषक आह्वान' 'वेदमे ब्रह्म विज्ञान' इत्यादि। एकर अतिरिक्त 'त्रिशूल पाणिक ढड्ढर' शीर्षक एक व्यंग्य स्तम्भ सेहो देखल। एहि पत्रक चरम उपलब्धि हम ई मानैत छी—अन्यान्यवाद जकाँ आनन्दमार्गी लोकनि सेहो अपना प्रचारक हेतु मैथिली भाषाक माध्यमकेँ उपयोगी मानलनि। एहू तरहेँ एक विचारधाराक किछु साहित्य मैथिलीक भण्डारमे आयल।

बटुक, धीया-पूता ओ शिशु

एही अवधिमे मैथिलीमे तीनि गोट बाल-मासिक पत्रिकाक प्रकाशन आरंभ भेल— बटुक, 'धीया-पूता, ओ शिशु। एहिमे बटुकेटा चिरंजीवी भ' सकल। पूर्वमे कहल गेल अछि जे अन्य भाषा सबमे भिन्न-भिन्न विषय, भिन्न-भिन्न वर्गक हेतु स्वतन्त्र पत्र-पत्रिका सब प्रकाशित होइत अछि। मैथिली पत्रकारिता केँ एखन से सौभाग्य कहाँ ? तथापि बाल साहित्यक अभावकेँ पुष्ट करबाक विचार सँ सर्वप्रथम म० म० डा० उमेश मिश्रक चतुर्थ पुत्र श्री रमाकान्त मिश्र अपन पिताक परामर्श ओ प्रोत्साहन पाबि प्रयाग सँ 'बटुक' नामक एक बाल मासिकक सम्पादन ओ प्रकाशन आरम्भ कयलनि १९४९ ई० सँ। एहि प्रसङ्ग डा० 'श्रीश' अपना इतिहासमे लिखने छथि—"सर्वप्रथम 'बटुक' प्रयाग सँ १९४४ ई० मे प्रकाशित होएब आरम्भ भेल जे किछु वर्ष बन्द भए पुन: १९५९-६० ई० सँ श्री सुधाकान्त मिश्रक सम्पादकत्वमे प्रकाशित होएब आरम्भ भेल ओ तहियासँ बराबरि प्रकाशित भए रहल अछि।" एहिमे वर्षक उल्लेख सर्वथा भ्रामक अछि। डा० श्री जयकान्त मिश्र अपना इतिहासमे एकर आरम्भिक प्रकाशन वर्ष १९४९ ई० लिखने छथि जे प्रामाणिक थिक। यद्यपि कुसंयोगवश 'बटुक'क आरम्भिक अंक सब जे हमरा लग छल से दिवाड़क भक्ष्य बनि गेल, परन्तु 'बटुक'क १९६५ ई० मे जे सचित्र कथा विशेषांक प्रथम भाग प्रकाशित अछि ताहिमे चित्रावली सेहो छपल अछि। ओहिमे बटुकक प्रथम सम्पादक गणक रूपमे

Scanned by CamScanner

श्री नन्हे भाइ (आरम्भिक बटुकक सम्पादक)क चित्र छपल अछि। चित्रक परिचयमे लिखल गेल अछि—श्री रमाकान्त मिश्र, एम्. ए., पी. सी. एस. तथा श्री विजय कान्त मिश्र, एम्, ए. जे 'बटुक' पत्रकें प्रारम्भकए प्रथम पाँच वर्ष (१९४९ ई० १९५४ ई०) धरि 'बटुक'क सम्पादन सुचारू रूपें कयने छलाह। आइ एगारहम वर्षक ई सचित्र कथा विशेषांक छाल देखि दुनू गोटेकें हार्दिक प्रसन्नता हएतन्हि।" अतः एकर प्रथम प्रकाशन वर्ष १९४९ ई० थिक।

बाल मासिक पत्रक प्रकाशनक एकमात्र उद्देश्य रहैत छैक नेना भुटकाकें पढ़बाक दिस प्रवृत्त करब। मैथिली भाषी नेनाक दुर्भाग्य रहलैक अछि जे सरकार द्वारा शिक्षाक माध्यम स्वीकृत रहितो आइ धरि ओकर कार्यान्वयन नहि भ' सकल अछि। मिथिला क्षेत्रक अधिकतर अभिभावक एखनहु अकर्मण्ये छथि। मातृभाषाक प्रति उपेक्षाक भाव तँ छनिहें, बालशिक्षाक प्रति सेहो सर्वथा उदासीने। मिथिलांचलक नेना प्राथमिक पाठशाला पहुँचितहि हिन्दीक पोथी घोंखय लगैत अछि। मैथिली पढ़बाक अभ्यासे ने रहैत छैक। ताहि स्थितिमे बाल मासिक पत्रिकाक प्रयोजने नहि रहि जाइत अछी, तखन पत्रिकाक विकास कोना हो? तथापि बंगला, हिन्दीक देखाउसीमे जँ एही प्रकारक प्रयास भेल तँ सैह श्लाघ्य मानल जायत। तथापि बाल साहित्य कें पुष्ट करबाक उद्देश्य सँ प्रकाशित पत्रिकाक अनुरूप सब रचना एहिमे प्रकाशित होइत अछि।

यदि सत्यक अपलाप नहि कयल जाय तँ कहय पड़त जे एकर साधारण अङ्क सब कोनो आकर्षक नहि रहैत अछि। विधि पुरौअलिसँ साहित्यक विकास संभव नहि। एक तँ परिस्थिति प्रतिकूल समाज उदासीन, ताहूपर जँ सुपाठ्य सामग्रीक अभाव रहय तँ ओ पत्रिका कोना विकास क' सकैत अछि ?

उपर्युक्त कथनक ई तात्पर्य नहि जे 'बटुक'क प्रकाशन निरर्थक मानल जाय। समय-समयपर एकर विशेषांक सब प्रकाशित भेल अछि जे संग्रहणीय अछि, विशेषतः कथा विशेषांक सब, ताहि सङ्ग अनेक अंक प्रकाशमे आबि चुकल अछि जाहिसँ मातृभाषा मैथिलीक श्रीवृद्धि भेल अछि। यथा, म० म० डॉ० उमेश मिश्रजी काशीसँ प्रकाशित 'मिथिलामोद'मे 'नलोपाख्यान' लिखि क्रमशः प्रकाशित करैत छलाह, जे अपूर्ण छल, जकर सम्पूर्ण रूप 'बटुक'मे

Scanned by CamScanner

प्रकाशित भेल[1]। आचार्य रमानाथ झा लिखित संयुक्ताक्षर रहित शिशुपाठ-माला[2] जे अनेक अंकमे प्रकाशित अछि, नेना सभक हेतु परम उपादेय विषय अछि।

१९४९ ई०सँ १९५४ ई० धरि प्रकाशित भ' 'बटुक' बन्द भ' गेल छल। श्री रमाकान्त मिश्र ओ श्री विजयकान्त मिश्र कृतविद्य भ' जीविकाक उद्देश्यमे लागि गेल छलाह। तखन श्री सुधाकान्त मिश्र पाँच वर्षक बाद एकर पुनः प्रकाशनक योजना बनौलनि, अर्थात् १९५९ ई०मे एकर योजना बनल, जकर कार्यान्वयन १९६० ई०क गणतन्त्र दिवससँ भेल।

वस्तुतः बालमासिकक प्रकाशन अपेक्षाकृत बेसी व्यय-साध्य होइत अछि। नेनाकेँ विषयवस्तुमे प्रवेश करयबाक हेंतु चित्र अनिवार्य रूपेँ देबऽ पड़ैत छैक। श्री सुधाकान्त मिश्र एहि हेतु पूर्ण प्रयत्नशील भेलाह। एकर मुख-पृष्ठक चित्र सदा बदलैत रहैत छल। रचना सभक संग सेहो सम्बद्ध चित्र सब एहिमे छपैत छल। पुनः प्रकाशनक अवसरपर जे सम्पादकीय छपल अछि तकर अवलोकनसँ एकर संकल्पपर प्रकाश पड़ैत अछि। सम्पादक लिखने छथि—

"प्रिय नेनासभ

ई अहीं सभक खोज पुछारी आ माँ मैथिलीक प्रेरणा थिक जे आइ 'बटुक'क पुनः प्रकाशन भए रहल अछि। श्री नन्हें भाइ त' आब नौकरीक लेल प्रयागसँ बाहरे रहताह परन्तु बटुककेँ हुनक परामर्श भेटैत रहतन्हि। एतबए नहि, मैथिलीक उच्च कोटिक विद्वान् जेना श्री सुमन जी, श्री यात्री, श्री हरिमोहन बाबू एवं डा० श्री जयकान्त मिश्र आदि समस्त मैथिलीक प्रसिद्ध लेखक लोकनिक परामर्श आ लेख आशीर्वाद रूपेँ बरोबरि प्राप्त हएत।

'बटुक' आब हथगर गोड़गर भेल छथि, ई छठम वर्ष छन्हि, तैँ अहाँ सभ सङ दिऔन्ह, तुरन्ते साली टाका पठाए हिनक स्वागत करिऔन्ह जे सदत अहीं लग रहथि। नगदी साढ़े तीन टाका मात्रसँ काज नहि चलत, अपन लिखल कथा, कविता, वर्णन, चित्र सेहो पठाउ जाहिसँ 'बटुक' मोटा

१. कथा विशेषांक, १९६७।
२. कथा विशेषांक (१९६५) प्र० भाग।

Scanned by CamScanner

जाथि। जँ अहाँ सभ सङ देब त निश्चय, 'बटुक' बरोबर छपैत रहत आ कहिओ बन्द नहि हएत।

'बटुक' एहि छठम वर्षमे नव कलेवरमे नवीन सामग्री लए उपस्थित छथि। ई अहीं सभकेर पत्र थिक। ई चेतन लोकनिक हेतु नहि, खास अहीं सभक हेतु, अहींक मनोविनोद, अहींक रुचिक वस्तु थिक। हमरा लिखू जे केहेन पाठ्य-सामग्री अहाँ सभ चाहैत छी।"[1]

परन्तु रचनाक संकलन एहि दृष्टिसँ नहि होइत छल। एकर पुष्टिमे किछु उद्धरण प्रस्तुत अछि----

"सतत ध्यान राखक थिक जे मैथिलत्वक जे तात्त्विक रूप थिक तकर निष्कपट भावसँ रक्षा हो। अन्ततः सामाजिक काजमे परम्परागत वा पारस्परिक दोषकेर परित्याग कए, गुणक ग्राहक बनि मिथ्याभिमानकैं परित्याग कए देश सेवा व्रत केर प्रण करैत जाइ। यावत् स्वच्छ ओ पवित्र हृदयसँ चरित्र केर बलेँ ठाढ़ भए मैथिलीक उद्धरणक हेतु कटिबद्ध नहि होइत जाएब तावत् कोनो लाभ नहि हएत। व्यक्तिगत स्वार्थकैं बिसरि उदार चित्तसँ कार्यमे लागू।"[2]

एहि उद्धरणमे उदात्त विचारक अभिव्यक्ति अछि ताहिमे कोनो सन्देह नहि, परन्तु 'बटुक' सन मासिक पत्रिकाक दृष्टिसँ अनुपयुक्त अछि। एहन उद्धरण बहुतो देल जाय सकैत। स्थालीपुलाकन्यायसँ एतबे पर्याप्त होयत।

एहि माध्यमसँ मैथिलीमे किछु बाल साहित्यक रचना भ' सकल, अन्यथा बाल-साहित्यक दृष्टिएँ मैथिली साहित्य एखनहु दरिद्रे अछि तथा एहि कारणेँ नेना सबमे स्वाभाविक मातृभाषा प्रेमक उदये नहि भ' पबैत अछि।

संस्कारमे मातृभाषा प्रेम भरि देबाक हेतु एखनहु एकर आवश्यकता अछिए। 'बटुक' पत्रिकाक विभिन्न अंकक अवलोकनसँ स्पष्ट अछि जे एकरा आकर्षक बनयबाक हेतु अनेक प्रयास ओ प्रयोग कयल जाइत रहल,

१. वर्ष ६, अंक १, पृ० १८।

२. बटुक, जनवरी १९६४ ई० : मैथिली विकासमाला, प्रथम पुष्प, पृ० ६।

Scanned by CamScanner

परन्तु नियमित रूपें सुपाठ्य सामग्री नहि भेटैत रहलाक कारणें एकर पाठका बेसी नहि भ' सकल।

तेना सभक ध्यान आकृष्ट करबाक हेतु पुरस्कार योजना चलाओल गेल जाहिसँ रचनात्मक प्रवृति तेनालोकनि मे बढ़नि। मौलिक कविता रचनाक हेतु पाँती देल जाइत छल। यथा—"मातृभूमि केर सपूत हम मातृभूमि लेल करब बलिदान" शीर्षक सँ ३० पाँती कविता लिखि पठौनिहारमे सर्वोत्तम रचना पर १५) रु० क पोथी उपहार स्वरूप देबाक घोषणा भेल छल।[1] एहि प्रकारक आयोजन अन्य भाषाक पत्र-पत्रिकामे अनेक रूपक होइत अछि। 'बटुक' सेहो आधुनिक 'टेकनिक' सब अपनौलक परन्तु जेना सम्पूर्ण क्षेत्र शून्य पड़ल अछि तेना ई घर-घर धरि पहुँचि गेल रहैत। ओना मैथिली पत्र-पत्रिकाक प्रसंग लोहारक दोष सब दिन सँ रहबे कयल अछि, एहिमे किछु लोहोक दोष रहलैक अछि।

एहि बीस वर्षक अन्तरालमे एहि पत्र द्वारा जे विशिष्ट रूपें प्रकाशित भेल अछि ताहिमे किछु उद्धरणीय निम्नाङ्कित अछि—

शताङ्क : देशरक्षा अंक (१९६३ ई०), महाकवि विद्यापति स्मृति अंक (१७६१), कथा विशेषांक भाग १, भाग २ (१९६५), नेहरू स्मृति अंक (१९६४), कथा विशेषांक (१९६७), इजोती रानी (१९६७), गाँधी स्मृति अंक (१९६८), महामहोपाध्याय स्मृति-विशेषांक (१९६८), प० रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र' स्मृति-अंक (१९७२), रेडियो एवं टेलीविजन विशेषांक (१९७४), मंगल ग्रहक राज कन्या विशेषांक (१९७५) स्व० ललित नारायण-स्मृति-श्रद्धाञ्जलि अंक (१९७५), डॉ० श्री परमेश्वर मिश्र सम्मानांक (१९७७) आदि। एकर अतिरिक्त मैथिली महासम्मेलन, काशीक सम्पूर्ण विवरणक संग अनुसन्धान विभागक सभापति डॉ० श्री जयधारी सिंह 'प्रभाकर', आलोचना विभागक सभापति डॉ० श्री बालगोविन्द झा, कविता विभागक सभापति श्री बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर', धर्माधर्म विवेचनक सभापति कविवर सीताराम झा, मैथिली नाटक विभागक सभापति डा० श्री परमेश्वर मिश्र, प्रवासी मैथिल विभागक सभापति श्री महेन्द्र नारायण झा, मैथिली पत्रकारिता विभागक सभापति बाबू लक्ष्मीपति सिंह, महिला विभागक सभापति श्रीमती

---

१. जनवरी १९६४ ई०, पृ० २४।

गौरी मिश्र, लोक साहित्य विभागक सभापति श्री ब्रजकिशोर वर्मा, बाल साहित्य विभागक सभापति श्री जीवकान्त, मैथिली गद्य विभागक सभापति प्रो० रमानाथ झा आदिक भाषण सब प्रकाशित अछि। एहि भाषण मालाक माध्यम सँ मैथिली साहित्यक विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ैत अछि।

प्रथम मैथिली महासम्मेलन 'काशी'क अवसर पर बाल साहित्य विभागक सभापति श्री जीवकान्तजी बाल साहित्यक विकासपर प्रकाश दैत जे अपन विचार व्यक्त कयने छथि ताहि क्रममे 'बटुक'क चर्चा सेहो भेल अछि जकर किछु किछु अंश उद्धृत कयल जाइत अछि जाहि सँ एहि पत्रिकाक सेवा पर ओ मैथिलीक विकासमे एकर योगदान पर प्रकाश पड़ैत अछि :

"मिथिलामे बाल साहित्य रचबा लेल प्रयास भेल अछि। मुदा वातावरणक उदासीनताक कारणें बाल-साहित्यक पिपही पिपहीये अछि, ठमकल अछि।

मिथिलामे बाल-साहित्य रचबा लेल प्रयास भेल अछि से बलिदानी भावना सँ भेल अछि। नेना भुटकाक पत्रिका जे लोकनि बाहर कयलन्हि अछि से आत्म-बलिदानीक श्रेष्ठ उदाहरण छथि। मैथिलीमे जखन साहित्यक पत्रिका सोइरी घरमे मरि जाइत छैक, साधारण आ जनप्रियो पत्रिका ठेहुनियाँ दैत-दैत बालग्रहमे पड़ि जाइत छैक तखन बाल-पत्रिकाक कल्पना सन वैध बलिदान दोसर नहि भ' सकैत अछि।........

मैथिली मे नेना सभ लेल दुइ गोट पत्रिका बहार कयल गेल अछि— 'धिया-पुता' एवं 'बटुक'। धिया-पुता बहुत मनोवैज्ञानिक आ रचनात्मक सिद्ध भेल छल। मुदा प्रो० श्रीयुत् धीरेन्द्रजीक ई पत्रिका बहुत अल्प कालेमे समाप्त भऽ गेलन्हि। तेँ ओकर उपलब्धि आ संभावनाक आकलनक पूर्ण अवसर नहि भेटि सकल। तथापि जतबे दिन ओ बहरायल ओ अपन स्तर आ निष्ठाक कारणें सर्वदा मोन राखल जायत।

दोसर पत्रिका थिक 'बटुक'। मैथिलीमे यत्किंचित् जे बाल-साहित्य उपलब्ध अछि से एही प्रसादात्।.......एहि पत्रिकाक हेतु प्रयागक मिश्रबन्धु आ वर्तमान सम्पादक श्रीयुत् सुधाकान्त बाबू धन्यवादक पात्र छथि।........

प्रो० रमानाथ झाजी बटुकमे संयुक्ताक्षर-विहीन गद्यक नीक आरम्भ कयने छलाह, ओ योजनापूर्वक जँ चलाओल गेल रहैत तँ आओरो महत्त्वपूर्ण भेल रहैत। 'बटुक' मे देशी-विदेशी कथा सभक अनुवाद भेल अछि।... प्रयोग सभक क्रममे जीवकान्त अनेक 'नर्सरी राइम्स' लिखलनि। 'बटुक'क जून ६७ मे प्रकाशित एकटा उदाहरण: "चान अछि धान अछि, फोंका मखान अछि। साँसे अकास मे हरियर धान अछि।"......रोचकता दृष्टिएँ प्रो० श्री रामदेव झाक 'इजोती रानी' कथा सेहो नीक प्रयोग छल आ मैथिलीक कथाक शैलीपर लिखल गेल छल। एही क्रममे श्री मथुरानन्द चौधरी 'माथुर'क 'घूस महिमा'क नाम सेहो गनाओल जा सकैत अछि।......

बटुकमे प० राजेन्द्र चौधरीक धर्म ओ कर्त्तव्य एकांकी छपल छल। जीविनी साहित्य दिस एखन धरि कोनो अधिक प्रयास नहि भेल अछि. यद्यपि 'बटुक' मे म. म. प. जयदेव मिश्र, जमाहिर लाल नेहरू, गान्धीजीक जीवनी आदि प्रकाशित भेल अछि।......स्वर्गीय महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश्रक उपाख्यानमालाक अनेकानेक उपाख्यान (यथा नचिकेतोपाख्यान) तथा रूसी कथाक अनुवाद 'वरखा आनय बेङ' आदरपूर्वक स्मरण कयल जा सकैत अछि। एकर अतिरिक्त जमाहिरलाल नेहरूक पिताक पत्र पुत्रीक नाम सेहो उल्लेखनीय अछि। श्री रमाकान्त मिश्र (पूर्व सम्पादक : बटुक) द्वारा टैगोरक कथाक 'बटुक'मे भेल अनुवाद—'काबुली वाला' सेहो छपल अछि एवं श्री रमाकान्त राय 'रमा' द्वारा टालसटायक कथाक अनुवाद 'तीनिटा बाबाजी' सेहो बटुके प्रकाशित कयलक।

बाल आ किशोर साहित्यक कोनो प्रकाशन संस्था नहि अछि। प्रकाशनक ओ वितरणक व्यवस्था नहि रहने एहि दिशामे कोनो ठोस काज नहि भ' रहल अछि। मैथिलीमे बाल-साहित्य सृजन (?) करबाक अपार क्षमता छैक, विषयक प्रदेश सम्पूर्णतः अस्पृष्टे छैक। तथापि ओकर व्यावसायिक संभावना शून्य रहबाक कारणेँ ने क्यो प्रकाशके अछि आ ने कोनो लेखक योजनापूर्वक एहि दिशामे लेखन कार्य करैत छथि।

अन्हारक एहन भयावह गुफामे एक्केटा किरिन एतबा दिनसँ देखाइत रहल अछि। ओ थिक 'बटुक प्रकाशन', प्रयाग। ई संस्था बाल-साहित्यकेर प्रकाशनक दिशामे यत्किंचित नीक प्रयास कयलक अछि। मैथिली विकास माला आ 'कथा कहय कथनी माला'मे थोड़ेक वस्तु बहार भेल अछि। यद्यपि

गुण आ परिमाणक विचारसँ ई सभ सन्तोषजनक नहि कहल जा सकैत अछि। एहि संस्थाक कृतज्ञ मैथिली बाल-साहित्य एहि द्वारेँ रहत जे जतबो काज भेल अछि से प्रायः एही संस्थासँ भेल अछि।''

श्री जीवकान्तजीक उपर्युक्त भाषणसँ 'बटुक'क उपलब्धिक पूर्णतः लेखा-जोखा भेटि जाइत अछि।

एहिमे प्रमुख रूपेँ लिखनिहारमे म.म. डॉ० उमेश मिश्र, कविवर सीताराम झा, प्रो० रमानाथ झा, प्रो० श्री हरिमोहन झा, प० श्री सुरेन्द्र झा, 'सुमन', डॉ० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश', श्री गोविन्द झा (बम्बइ), डॉ० श्री रामदेव झा, श्री रामकिशोर झा 'विभाकर', श्री युत आरसी प्रसाद सिंह, श्री त्रिलोकनाथ झा, श्री 'स्वतंत्र', श्री कपिलदेव राय प्रभाकर, श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर,' प० श्री राघवाचार्य शास्त्री, श्री मथुरानन्दन चौधरी 'माथुर', डा० श्री परमेश्वर मिश्र, श्री जगदीप नारायण 'दीपक', प० श्री काली कुमार मिश्र, (चम्पारण), प० श्री रामचन्द्र झा 'चन्द्र', श्रीमती सुशीला झा, श्री तारानन्द झा 'तरुण,' श्रीमती शेफालिका वर्मा, डॉ० श्री केदारनाथ लाभ आदिक नाम लेल जा सकैत अछि। एहि माध्यमसँ अनेक किशोर सेहो साहित्य क्षेत्रमे अवतीर्ण भेलाह। एहि पंक्तिक लेखक सेहो लिखैत रहलाह।

पहिलुक अपेक्षा आब बाल मासिकक क्षेत्र विस्तृत होयबाक अवसर आयल अछि। वस्तुतः मैथिली अपना माटिमे जड़िपकड़य ताहि हेतु एहन आयोजनक नितान्त अवश्यकता अछि।

१९५७ ई० क जनवरीसँ श्री धीरेश्वर झा, 'धीरेन्द्र'क सम्पादकत्वमे विश्वेश्वर साहित्य कुटीर, लोहनासँ 'धीयापुता' नामक दोसर बाल मासिकक प्रकाशन आरम्भ भेल। साज-सज्जामे यद्यपि ई 'बटुक'सँ दोएम छल, परन्तु छपाइ-सफाइ एकर 'बटुक'सँ बेसी नीक छल, तखन भाषा पर 'बटुक'मे सेहो एकरूपताक ध्यान नहि राखल जाइत छल, आ 'धीया पूता'क भाषा सोतिपुराक भाषा छल। विषय वस्तुक दृष्टिएँ 'धीया पूता'मे 'वृद्ध बटुक'क हेतु रचना नहि छपैत छल, जे छपैत छल, से नेना भुटकाकेँ ध्यानमे राखि। तखन सम्पूर्ण मिथिलांचलक नेनाक हेतु एहि भाषाकेँ सुपाच्य नहि कहल जा सकैत अछि।

Scanned by CamScanner

ई पहिल पत्रिका छल जे रचनापर लेखकके पारिश्रमिक देबाक घोषणा कयने छल। ई भिन्न बात जे एकरा घरेक खर्ची जोड़बामे 'तेरह दण्डक सकराँति' वला कहबी सार्थक करय पड़ैत छलैक, जाहि कारणे पहिले अङ्कक प्रकाशनक बाद दोसर अङ्कक प्रकाशन अनियमित होअय लगलैक, तथापि रचनाक पारिश्रमिको भ' सकैत छैक ई बात मैथिलीक लेखक प्रायः सुननहु नहि छल होयताह, ताहिदिस लोकक ध्यान आकर्षित कयलक, ततबो कम साहस नहि मानल जायत।

एहिमे एक स्तम्भ छल 'फूलक कोंढ़ी'। एहि स्तम्भमे सम्पादकीय टिप्पणी छपल अछि—(हँ! फूलक कोंढ़ी! गम-गम करैत फूल ककरा पसिन्न नहि होइत छै······मगर बाबू! यदि कोंढ़ीये सुख जाइक तँ ???···तए!··· निश्चित जानू जे फूलसँ बेसी कोंढ़ियेक महत्त्व छै।········आ ताही लेल ई······स्तम्भ!!·······धीया-पूताक अपन कलमसँ लिखल वस्तु एहिमे छपतै आ' ओहो लोकके देखाके कहतै—"देकै छिअइ·······अमलो·······भाइजी लिखलखिन्ह हे अमहूँ···लिखबै! ···"[1]

एहि प्रकारे सम्पादक छोटसँ छोट नेनाक प्रतिभा-लताके पुष्पित-फलित बनयबाक हेतु मचानपर चढ़यबाक हेतु जड़िमे गाड़ल कड़ची जकाँ एहि स्तम्भक आरम्भ कयने छलाह जे सबसँ बेसी उपादेय छल। सम्प्रति कतेको प्रौढ़ साहित्यकार एही स्तम्भक माध्यमसँ मचान धरि चढ़ि आइ मैथिलीक भण्डारक श्रीवृद्धि करैत स्वयं ख्याति अर्जन क' रहल छथि, जाहिमे प्रथम नाम हम श्री मन्त्रेश्वर झाक लय सकैत छी!

एहिमे दोसर स्तम्भ छल 'पैंट बाटक रेडियो'। एहि 'रेडियो'क उद्‌घोषक छलाह 'नारद,' परन्तु 'धीया-पूता' सन पत्रक हेतु एहि स्तम्भके सर्वथा उपयुक्त नहि कहल जाय सकैत अछि। एहिमे राजनीतिक छौंक रहैत छल, ताहिपर राजनीतिक क्षेत्रक दुर्गन्ध सेहो अबैत छल, भाषा सेहो ततेक ललित-गर नहि। उदाहरणार्थ एक अंश उपस्थित अछि—

"ऑल-इण्डिया-रेडियो-पैंट घाट'···हम नारद बाजि रहल छी!!...हँ!! नारद!!....धीयापूताक ई तथाकथित फगुआअङ्क छी···जकर बाट तकैत-तकैत अपने लोकनि···हे हे हे!!! अचक्का···धैरज के फल मधुर रे भाइ!!

---

१. धीयापूता प्रथम अंक, पृ० २५।

....देखियौ चकचकी !!! नारद तँ ई बुझिते छलाह—से पाठक जी''''अपने लोकनि 'नारद'क ब्राडकास्ट सुनए चाहैत छी ? ''''''वेश-वेश-वेश ! ! !''''बाबू सुनल जाओ !'''खबरि अछि''''जे''''श्री फलां मिनिस्टरजी फगुआक पवित्र अवसरपर भरि राति मोड़ीमे सूतल छलाह !'''आ'''नवका''''श्री फलां आमीलए''''केँ कपड़ा खराब भ' गेलन्हि ! !''''हुँह ! अपने हँसैत छी पाठक जी'''''' ।''

प्रौढ़ साहित्यक हेतु तँ बड़ बेस, परन्तु नेना भुटकाक हेतु एहि प्रकारक भाषाक प्रयोग कतेक वांछनीय से स्वयं विचारणीय थिक ।

'धीया पूता'क माध्यम सँ किछु स्वस्थ बाल-साहित्यक सृष्टि भ' सकल ताहिमे 'माइक बोल', 'सूर्य उगि रहल छथि', 'स्वर्गमे' ई तीनू एकांकी, पंचतन्त्रक कथासभक अनुवाद, चाह, कागज, हौहटि एहि सभक आत्मकथा, किछु वैज्ञानिक कथा, किछु ज्ञानवर्द्धक गल्प ओ कवितासभक नाम लेल जाय सकैत अछि ।

जाहि प्रकारेँ ई आरम्भ भेल, यदि नियमित रूपेँ एकर प्रकाशन संभव होइत तँ 'बटुक' सँ अधिक लोक-प्रिय होइत आ मिथिलाक हृदय स्थान सँ प्रकाशित होयबाक कारणेँ प्रसारो प्रचारमे पछुआयल नहि रहैत, परन्तु एक तँ मैथिली पत्र-पत्रिकाक अनियमित प्रकाशनक कारणेँ सभक समक्ष ग्राहकक समस्या जटिल रहलैक अछि, दोसर एकर दोसरे अङ्कक प्रकाशनमे अनियमितता आबि गेलैक । प्रायश: अधिक अंक एकर एहने प्रकाशित भेलैक जाहिमे पूर्वक अंकक प्रकाशनक समयसँ दोसर अंकक प्रकाशनक अन्तराल पैघे होइत गेलैक । वहबालय ई १९५७ ई० सँ १९६० धरि प्रकाशित भेल । एहि अवधिमे एकर ४८ गोट अंक प्रकाशित होयबाक चाही, परन्तु दस-बारह अंक प्रकाशित भ' सकल । एहिमे अनियमितता केहन छल से 'सम्पादकक बटुआ' शीर्षक सम्पादकीय सभक अध्ययनसँ ज्ञात होइत अछि । दोसरे अंकक 'सम्पादकक बटुआ'क निम्नांकित सन्दर्भ उपस्थित अछि :-

''ग्राहक :—पहिने ग्राहके सँ ! पयैक तँ धीया-पूताक दुध तँ ओतहि सँ अबैछ किने!''''अपने सभकेँ ओहि कृपाक हेतु धन्यवाद जे देखाओल अछि

१. धीयापूता, वर्ष १, अंक ३, पृ० २८ ।

तथा दोसर अंक देरीक हेतु क्षमा याचना !......देरीमे किछु दोष 'भोँट' महाराजक आ किछ हमरो ! जे किछु आब तँ देरी भइये गेलै' ।......"१

पुनश्च तेसर अंकक 'सम्पादकक बटुआ'क उद्धरण देखल जाय—

"धीया-पूताक सम्पादककेँ जेट नहि—हवाइ जहाज नहि—मोटर नहि बस टूटा पएर मात्र !....फेर यदि दौड़बामे देरी भ' जाइछ तँ अपने लोकनि किछु दिन क्षमा करी । अपने लोकनि एहिना बल दीअ ।...सहानुभूति दीअह आ तखनि देखिऔ ने !....हमर ग्राहक पुछैत छथि देरी कयैक होइछ ??हम सोचैत छी 'धीया पूता'क ई सौभाग्य थिकै!...ग्राहकक औत्सुक्य कोनो पत्रक हेतु महत्वपूर्ण होइछ !.... । एहिसँ स्पष्ट अछि जे साधनाभावेँ अथवा जाहि कोनो कारणेँ हो, आरम्भेसँ ई पत्रिका ग्राहकमे विश्वास उत्पन्न करबामे असमर्थ रहि गेल ।"

प्रायः एहि अंकक बाद बहुतो दिनधरि एकर प्रकाशन स्थगिते रहल । पुनश्च १९५९ ई० मे आचार्य तेजनाथ झा, विद्यालंकार, धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' बी०ए० आनर्स तथा चन्द्रमोहन झा, एम्०कॉम० साहित्यभूषण, एहि तीनू व्यक्तिक सम्पादकमण्डल बनल, तखन एकर पुनः प्रकाशन भेल, परन्तु पुरान रोगसँ मुक्त नहि भ' सकल । एहि अंकक 'सम्पादकक बटुआ'क सुपारीक स्वाद लेला उत्तर एकर स्थिति ज्ञात होइत अछि । सम्पादक लिखने छथि—"जेना तेना 'धीया-पूता' अपन तेसर वर्षमे प्रवेश कएलक । ओना ओ मध्यमे दुखित पड़ल मुदा धन्यवाद ईश्वरकेँ ओ धन्यवाद मिथिलाक जनताकेँ जे ओ पुनः डेगगर भए चलए लागल अछि ।....हँ ! एकटा बात अपन ग्राहक सभसँ आ' ओ ई जे ओ सभ निश्चिन्त रहथु, पुरने चन्दामे हुनका लोकनिकेँ १९५३ क बारहो अङ्क पठाओल जएतन्हि ।...."२ एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे १९५७ मे जे ग्राहक भेल छलाह तनिका पुनः १९५९ मे ओहि मूल्यमे अंक प्राप्त होयबाक आश्वासन देल गेल छनि । एहि वर्षक जनवरी, फरवरीक अंकक बाद सितम्बरक अंक हमरा दृष्टिपथ पर आयल अछि । तदुत्तर अक्टूबर सँ दिसम्बर धरिक २४ पृष्ठक संयुक्तांक प्रकाशित भेल अछि । ताहूमे देरी होयबाक हेतु क्षमा याचना कयल गेल अछि ।

---

१. वर्ष १, अंक २, पृ० २५ ।

२. वर्ष ३, अंक १, पृ० २ ।

परिवर्त्तित आकार तथा साज-सज्जामे १९८० मे सेहो दुइ गोट अंक प्रकाशित भ' सकल ।

एहिमे प्रकाशित रचना सब धीया-पूताक योग्य होइत छल । एहिमे लिखनिहार किछु प्रमुख लोक छलाह—श्री कांचीनाथ झा 'किरण', प० श्री गणेश्वर झा, श्री तेजनाथ झा, श्री व्रजनन्दन झा, श्री विन्दुनाथ मिश्र, श्री दयाधर झा, श्री साधना देवी, श्री माधव झा, श्री जीवनाथ झा, श्री तुलानन्द झा, श्री गंगानाथ झा, श्री दुर्गानन्द झा, श्री प्रवासी साहित्यालंकार, प्रो० श्री शैलेन्द्र मोहन झा, श्री ब्रजकिशोर वर्मा, कवि चूड़ामणि श्री मधुप, श्री रामकिशोर झा 'विभाकर', श्री उमानाथ मिश्र, प्रो० श्री अमरनाथ झा, श्री भवनाथ झा 'दीपक', श्री गोविन्द झा, प्रो० श्री सुशील झा, श्री सोमदेव आदि ।

१९५० सँ ६०क दशक मैथिली आन्दोलनक हेतु विशेष महत्त्वपूर्ण रहल । एहि दशकमे विद्यापति-स्मृति-पर्वक माध्यमसँ मिथिलांचलक सुदूर देहाती क्षेत्रमे सेहो जन-साधारणक ध्यान मातृभाषाक महत्व दिस आकर्षित करबाक प्रयास भेल । १९५१ ई०क जनगणनामे हिन्दी विस्तारवादी सतर्क भ' मैथिलीभाषीक संख्या ४९-५० हजार मात्रक उल्लेख होअय देलनि, जकर तीव्र प्रतिक्रिया मैथिली-हित-चिन्तक लोकनिक मध्य भेल । एही दशकमे १९५२ ओ १९५७मे देशमे महानिर्वाचन भेल । संविधान लागू भेलाक बाद सतर्क मैथिली सेवक देखलनि जे संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रभावें साहित्य क्षेत्रमे पैर जमौने भाषा सब स्थान पाबि गेल, परन्तु मैथिलीक कतहु चर्च नहि । एही दशकमे भाषाधार प्रान्त सब बनल, जाहिसँ भाषाक महत्व राजनीतिक दृष्टिएँ बढ़य लागल । एही दशकमे स्वतंत्र मिथिला प्रान्तक माङक स्वर मुखर भेल । एही दशकमे दरभङ्गामे स्थापित विद्यापति गोष्ठी महाकविक जन्मभूमि बिसफी, सिद्धभूमि भवानीपुर तथा समाधिभूमि विद्यापति नगरक ऐतिहासिक साहित्यिक तीर्थयात्रा क' सम्पूर्ण मिथिलांचलमे अलख जगायब आरम्भ कयलक । एही दशकमे पटना (बिहारक राजधानी)मे चेतना-समिति स्थापित भ' क्रमशः मैथिलीक प्रश्नकें अधिकारी वर्गक समक्ष

Scanned by CamScanner

उपस्थित करय लागल। कतिपय मुख्यमन्त्री ओ मन्त्रीलोकनि विद्यापति-स्मृति-पर्वक मंचसँ मैथिलीक महत्ताकेँ स्वीकार करय लगलाह। एही दशकमे पटना आकाशवाणी केन्द्रसँ मैथिलीक कार्यक्रम प्रसारित होअय लागल।

अनेक विश्वविद्यालयमे मैथिलीक पठन-पाठन ओ प्रवेशिका स्तरमे मातृ-भाषाक रूपमे मैथिलीक अध्यापनक कारणेँ छात्रक संख्यामे दिनानुदिनवृद्धि भ' रहल छल। ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थक अतिरिक्तो वर्गक मध्य 'हमरो मातृभाषा मैथिली थीक' एहि भावनाक प्रसार भ' रहल छल। कलकत्ताक प्रवासमे रहनिहार प्रवासीबन्धु संस्था संगठित क' मातृभाषाक उद्धारक हेतु कटिवद्ध भ' आन्दोलनक शंखनाद क' रहल छलाह। आगरा, अजमेर, मालदह, वैद्यनाथ धाम आदि स्थानमे मैथिल-महासभाक अधिवेशन भेलासँ प्रवासीबन्धुक समर्थन विशेष भ' रहल छल। जाहि नवजातक बीज पल्लवमे वपन भेल छल (जकर उल्लेख 'पल्लव'क विवेचनक क्रममे भेल अछि) से नव काव्यान्दोलन जोर पकड़ि रहल छल, जकरा समर्थनमे एहीकालसँ अनेक पत्र-पत्रिकाक जन्म भेल। १९६० ई०सँ सम्प्रति जे 'मिथिलामिहिर' अछि से पत्रक विवेचनक पटनासँ प्रकाशित होअय लागल। एही सबकेँ दृष्टिमे राखि एतय सँ मैथिली पत्रकारिताक तेसर चरण प्रारम्भ होइत अछि।

इजोत

१९६० ई०क वसन्त पंचमीसँ सहकारिताक आधारपर दरभंगासँ एक 'इजोत' नामक मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल।। जेँ सहकारिताक आधारपर एकर प्रकाशन आरम्भ भेल छल, तेँ पत्रकारिताक क्षेत्रमे एकरा पहिल प्रयोग कहल जाय सकैत अछि। 'इजोत'क अंककेँ 'दीप' कहल गेल छल। एहि प्रसङ्ग प्रथमे दीपमे कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' 'अखण्ड' इजोत' शीर्षकसँ अपन शुभकामना व्यक्त करैत लिखने छलाह—

"साहित्यिक समुदायेँ सञ्चित जैमे सुरभित सत्य सिनेह।
महामहिम मृदु मिथिला माटिक मंजु मौलिसँ दीपित देह।

Scanned by CamScanner

तमोजन्य भ्रम भञ्जनकारक दियौ प्रभञ्जनकें जे नोंत।
भव्य भावना टेमीयुत तौं दीपक रहौ अखण्ड इजोत।।"

एहि पत्रिकाक काया मात्र ३२ पृष्ठक छल। केवल १९ व्यक्ति १०) रु० जमा क' इजोत परिवारक सदस्य बनलाह। एही पूँजीसँ ई मात्र तीन अंक धरि प्रकाशित भ' अभावक बिहाड़िमे सब दिनुक हेतु मिझा गेल।

एहि तीनू अंकमे जे सम्पादकीय विचार व्यक्त कयल गेल अछि ताहिसँ एकर उद्देश्य ओ कार्यक्षेत्रपर प्रकाश पड़ैत अछि। अतः ओ अंश सब पाठकक सुविधार्थ उपस्थित कयल जाइछ—

इजोतक जन्म ओ परिधि

☐ इजोतक जन्म साहित्यकार ओ साहित्यानुरागी लोकनिक द्वारा सहकारिताक आधारपर भेल अछि।

☐ इजोत प्रत्येक मास अधिकारी विद्वानक माध्यमसँ स्वस्थ समीक्षा प्रस्तुत करबाक दिशामे सचेष्ट रहत।

☐ इजोत जाधरि अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद द्वारा संचालित पत्रिका प्रकाशमे नहि आबि रहल अछि ताधरि परिषदक सन्देश-वाहकक रूपमे कार्य करत।

☐ इजोत साहित्यक गंभीर जिज्ञासु लोकनिक जिज्ञासाकें शान्त करबाक दिशामे यथासाध्य प्रयत्नशील रहत।

☐ इजोत उच्चवर्गीय छात्र लोकनिक हेतु एहन पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करत जाहिसँ हुनका लोकनिकें अध्ययनमे सहायता भेटन्हि।

☐ इजोत मैथिलीक विद्वान लोकनिक हेतु विचारक आदान-प्रदानमे संगम-स्थलक कार्य करत।

☐ इजोतक उद्देश्य स्वस्थ साहित्यक निर्माण मात्र रहत।

☐ इजोतक नीति वर्ग किंवा गुट्ट निरपेक्ष रहत।

☐ इजोत मैथिलीक सब लेखक ओ पाठक लोकनिसँ सहयोगक याचना करैत रहत।

Scanned by CamScanner

- ☐ इजोतमे समीक्षा-समालोचनाक प्रमुखता रहत, किन्तु कविता ओ कथादि अग्राह्य नहि बुझल जायत।
- ☐ इजोत पैघ परिधिक कामना रखैछ, किन्तु एकर दीप माटिक, टेमी छोट, स्नेहक अल्पता, तथापि सहयोगक, वरदानक आशामे ई अन्धकारक सीमाकें थाहै चलल अछि।[1]

अध्ययन-अध्यापनक क्षेत्र विस्तृत होयबाक कारणें समीक्षात्मक, समालोचनात्मक साहित्यक आवश्यकता बढ़ैत गेल। साहित्यक मूल्यांकन तँ एहीसँ सम्भव। एहि अभावक पूर्त्तिक दिशामे अग्रसर होयब एकर मुख्य उद्देश्य छलैक। दोसर अंकक सम्पादकीयमे अभिव्यक्त विचारसँ एहि कथनक पुष्टि होइत अछि। सम्पादक-मण्डल लिखने अछि—

"इजोतक पहिल अंक वसन्त पञ्चमीक अवसरपर मातृभाषा प्रेमी लोकनिक हाथमे पहुँचल जाहिमे ओकर जन्म ओ परिधिपर पूर्ण प्रकाश देल जा चुकल अछि·······।

वस्तुतः मैथिलीक क्षेत्रमे एखन ततेक काज पड़ल अछि जकर सूची मात्र उपस्थित कैल जाय तँ कतेक अंक प्रस्तुत भै सकैछ, किन्तु से नहि कै 'इजोत' ई प्रयास करबामे लागल अछि जे मैथिलीक प्रसङ्ग जतेक प्रकारक भ्रान्ति साहित्यकारसँ लै जनसाधारणक बीच निविड़ अन्धकार जकाँ पसरल अछि से दूर भै सकै।

यदि ई कहल जाइत अछि जे मैथिलीमे समीक्षाक समय नहि आयल अछि तँ निश्चय छात्रकें अन्धकारमे रखबाक प्रयास थीक अथवा अपन असल स्वरूपकें, अपन नैसर्गिक दुर्बलताकें नुका रखबाक प्रयास कहल जा सकैछ।

जखन विश्वविद्यालयमे मैथिली पढ़निहार छात्र छथि तँ हुनका हेतु आलोक चाही। यदि मैथिलीक किछुओ पाठक भेलाह अछि तँ हुनको रुचिमे परिवर्द्धन करक, परिवर्त्तन आनक हेतु प्रकाश चाही।

आइ आवश्यक अछि जे प्रत्येक वर्गक हेतु उपर्युक्त पाठ्य सामग्री प्रस्तुत हो। एखन जे पाठ्य ग्रन्थ अछि तकर स्तरक विचित्रता शिक्षक ओ प्राध्यापके वर्ग जनैत छथि। एहन अनन्वित पाठ्यग्रन्थ रहने ओ पाठ्यग्रन्थमे

१. इजोत, दीप १, पृ० २।

Scanned by CamScanner

अनन्वित रचना सभक संग्रह रहलाक कारणे छात्रकें कोन कठिनताक अनुभव होइत छैन्हि से वैह लोकनि जनैत छथि ।

एही समस्या सभक समाधानक हेतु मैथिली साहित्यमे समीक्षाक युग आनब एकर उद्देश्य अछि । आशा अछि इजोतक पाठक एकर उद्देश्यपर ध्यान राखि अपन विचार पठौताह ।''[1]

एहि उद्धरणसँ स्पष्ट अछि जे 'इजोत'क माध्यमसँ समीक्षा विषयकें पुष्ट करबाक प्रयास आरम्भ भेल । यद्यपि ई पत्र अत्यन्त अल्पजीवी भेल, परन्तु जाहि विचारक बीज वपन कयलक तकर क्रमिक विकास एकर प्रकाशनक परवर्त्ती कालमे अवश्य भेल ।

किछु पत्रक हितचिन्तकलोकनि अपन-अपन विचार पठौने छलथिन जाहिमे एकरा विविध विषय विभूषित बनयबाक विचार सेहो व्यक्त कयल गेल छल । हुनका सभक विचारक प्रसङ्ग 'इजोत'क दिससँ जे मन्तव्य प्रकट कयल गेल छल से निम्नाङ्कित अछि—

''जे दुइ गोट अंक पाठकक सोझाँ उपस्थित भै सकलन्हि अछि तकरा देखि अपन-अपन विचार एकर हितेच्छु लोकनि व्यक्त कैलन्हि अछि ।

जनिक ई विचार छैन्हि जे एकरा कथा-प्रधान पत्र बनैबाक चाही तनिकासँ निवेदन जे कथाक हेतु 'वैदेही' ओ 'मिथिला-दर्शन' दुइ गोट मासिक पत्र मैथिली पाठकक संख्या देखि एखन पर्याप्त कहल जा सकैछ ।

जनिक ई विचार छैन्हि जे जन-साधारणक हेतु बेसी सामग्रीकें एहिमे स्थान देल जाय तनिकोसँ निवेदन जे मनोरंजनार्थ उपर्युक्त पत्र पढ़ि ओही दुनूकें स्वस्थ ओ सबल बनैबामे योगदान करथुन्ह । तखन मातृ-भाषाक प्रति अनुराग रखनिहार व्यक्तिक मनोरंजन इजोत द्वारा सेहो होइन्हि तदर्थ साहित्य-सर्जनपर ओ भाषाक गतिविधिपर सूक्ष्म दृष्टि रखनिहार ओ चिन्तनशील व्यक्तिक विचार एही माध्यमसँ हुनका प्राप्त भै सकतन्हि ! जे बौद्धिक व्यवसायमे लागल छथि अथवा जे अध्ययन अध्यापनमे संलग्न छथि हुनको मस्तिष्कक हेतु भोजन उपलब्ध भै सकन्हि ताहि दिशामे मैथिलीमे भेल काज नगण्य कहल जा सकैछ । एहि उद्देश्यक पूर्त्तिक हेतु इजोत घर-घर अपन प्रकाश पहुँचैबाक हेतु प्रयत्नशील रहत ।

---

१. इजोत, दीप २, पृ० २ ।

इजोत परिवारक विश्वास छैक जे मैथिलीमे गंभीरो विषयक पाठक बहुत छथि जनिका हेतु सामग्री नहि भेटैत छन्हि। एहि प्रकारक साहित्यक सर्जनसँ विचारक, चिन्तक, लेखक ओ पाठक यथाशीघ्र समस्त मिथिला क्षेत्र ओ मैथिली-भाषी क्षेत्रमे ततबा अवश्य भेटि जैताह जनिक स्नेहदानसँ ई एहि छोटे सन टेमी द्वारा किछु आलोक पसारि सकत।

पाठकक अभाव अछि ई कहि स्वस्थ विचार नहि उपस्थित कै केवल कथा, गल्प, प्रहसन, कविता आदिएक प्रकाशनमे सब पत्र ओझरैल रहै से मैथिलीक भविष्यक हेतु हितकर नहि।"[1]

एहि पत्रक सम्पादक-मण्डलमे छलाह मिथिला-मिहिरक भूतपूर्व सम्पादक प० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', वर्त्तमान सम्पादक श्री सुधांशु शेखर चौधरी तथा एहि पंक्तिक लेखक।

ओना, एहिमे विशुद्ध समालोचना मात्र नहि छपैत छल, किछु कविता आदिक हेतु सेहो स्थान रहैत छलैक। मैथिलीक मूर्द्धन्य साहित्यकार लोकनिक स्नेह एकरा सब दिन प्राप्त रहलैक जेना—कविवर सीताराम झा, प्रो० श्री हरिमोहन झा, कविचूड़ामणि श्री मधुप, आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', श्री रामचरित्र पाण्डेय अणु, श्री गंगाधर मिश्र। श्री भुल्लेश्वर कामतिक कविता तथा एहि पंक्तिक लेखकक एक लोकगीत सेहो एहीमे प्रकाशित भेल।

आचार्य रमानाथ झा, डॉ० श्री शैलेन्द्र मोहन झा, डॉ० श्री श्रीकृष्ण मिश्र, प्रो० श्री परमानन्द झा, प्रो० श्री भक्तिनाथ सिंह ठाकुर, प्रो० श्री बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर', श्री ब्रजकिशोर वर्मा, प्रो० श्री दिनेश्वर झा 'दीन', प्रो० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश', डॉ० श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण', प्रो० श्री लक्ष्मीकान्त झा आदिक विचारप्रधान ओ समीक्षात्मक निबन्ध सब एहिमे प्रकाशित भेल जे स्थायी मूल्यक रचना सब अछि। एहि संग श्रीमती भारती देवी, डॉ० श्री रामदेव झा तथा प्रो० श्री रमेशचन्द्र वर्माक कथा सेहो क्रमशः तीनू अंकमे प्रकाशित अछि। प० त्रिलोकनाथ मिश्रक प्रसङ्ग संस्मरण तथा हुनक खबास श्री भुल्लेश्वर कामति रचित शोकोच्छ्वास सेहो प्रकाशित अछि। शोकोच्छ्वास[एक[निरक्षर व्यक्ति द्वारा रचित अछि जकरा संरक्षणार्थ उद्धृत कयल जाइत अछि—

१. इजोत, दीप ३, पृ० २।

हमर 'त्रिलोक' दिगम्बर दानी तजि मोहि कतै गेला।

झरझर झहरि नयन जल बरिसै, तरसै सुमिरि कला
भटकि भटकि चारू दिश तकलहुँ ओ न कतहु भेटला।

जनिक अमर यश विश्व गबै अछि निति दिन ध्यान लगा
से मणि दीप नुकैल कहाँ छथि, जगमे एक छला।

चरण-कमल-युग गहि हम सेवल केवल हृदय लगा
अन्तहु मधुर-सुधा नहि पौलहुँ छनहि गेलाह बिला।

रत्न-कमल-दल जग न फुलायत के पुनि देत जगा
भुल्लेश्वर सेवक कत जायत टूटल कल्प-लता।[1]

यद्यपि सर्वांशतः आलोचना अथवा समीक्षा मात्र तँ एहिमे नहि प्रकाशित भेल, परन्तु एक विधाक हेतु एक-एक स्वतन्त्र पत्र रहलासँ ताहि विधाक अनुरागी विशेष रुचि एहिमे रखताह से आशा कयल गेल छल। तकर प्रभाव परवर्त्ती कालमे देखबोमे अबैत अछि, परन्तु बहुतो व्यक्तिक चित्तमे आशंका होअय लगलनि जे एहि माध्यमसँ कतेकोकेँ देखार करबाक योजना बनल अछि। एकर आभास वैदेहीमे जे मत व्यक्त कयल गेल अछि ताहिसँ होइत अछि। वैदेही लिखने छल—

"........विषयक सम्बन्धमे किछु कहब व्यर्थ; जखन सुमनजी स्वयं सम्पादक छथि तखन विषयक चयन तँ नीक होयबे करत, तकर तँ विश्वास अछिए। भय अछि जे इहो असफल पत्रक संख्यामे एकक वृद्धि ने कै देअए। दोसर, समीक्षा-प्रधान ई पत्र कतेक धरि दलबन्दीसँ दूर रहत से नहि जानि। मैथिलीमे समीक्षाक युग नहि आएल अछि। उचित समीक्षाक ने सामग्री (?) अछि ने लोकमे सुनबाक सहिष्णुता अछि। तखन फूसि प्रशंसाक ढेरि लगाएब अथवा वैयक्तिक मतभेदक कारणेँ दोसराकेँ दूरि करब—एहन समीक्षासँ बिनु समीक्षहिक साहित्यक विकाश हो से श्रेयस्कर। रुचिक परिष्कार समीक्षाक प्रधान उद्देश्य होइछ, परन्तु जँ से समीक्षा समीचीन नहि भेल तखन तँ रुचिक परिष्कारक बदलामे भ्रष्टे भए जैबाक आशंका। आशा अछि इजोत प्रकाशन समिति एहि विषयपर पुनः विचार कए एहि

१. तत्रैव, पृ० २७।

पत्रकेँ विशुद्ध कहानीक पत्र बनाओत, जाहिसँ नव-नव लेखककेँ प्रकाशनक किछु सुविधा होएतैन्हि ओ एकर किछु प्रचारो होएत।"[1]

अस्तु, वैदेहीमे व्यक्त आशंका सत्य प्रमाणित भेल आ तेसर अंकक बाद एकरो अन्त भ' गेलैक।

प्रसंगतः ईहो लिखि देब समुचित जे एही नामसँ २०२७ संवत् भाद्रमे एक अंक काठमाण्डूसँ सेहो प्रकाशित भेल छल, जकर प्रधान सम्पादक डॉ० श्री हरिदेव मिश्र ओ सम्पादक ओम् कुमार झा छलाह तथा नेपालक मैथिली भाषीमे मातृभाषा प्रचार एकर उद्देश्य छल, परन्तु भाषा शिथिल। एके अंकक बाद ईहो बन्द भ' गेल।

आखर

१९६० मे इजोतक दीप मिझयलाक बाद बहुतो दिन धरि नियमित मासिक पत्रक रूपमे कोनो नवीन पत्रक आरम्भ नहि भेल। १९६७ ई०क दीपावलीक अवसर पर कलकत्तासँ मैथिली नव लेखनक मासिक रूपमे 'आखर' नामक पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। एकर युगल-सम्पादक छलाह श्री कीर्त्तिनारायण मिश्र ओ श्री वीरेन्द्र मल्लिक। पूर्ण कलात्मक, स्वस्थ पत्रकारिताक प्रतीक जकाँ सजधजसँ एहि पत्रिकाक प्रकाशन भेल छल।

समयक एहि अन्तरालमे, एकर प्रकाशनसँ पूर्व, मैथिली आन्दोलनक प्रगति पटनासँ मैथिली साप्ताहिकक प्रकाशन तथा साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्ति भ' चुकल छल। प० यशोधर झाकेँ हुनक 'मिथिला, वैभव' नामक ग्रन्थ पर मैथिलीक हेतु प्रथम पुरस्कार सेहो भेटि चुकल छलनि। प० रमानाथ झा साहित्य अकादमीमे मैथिलीक प्रतिनिधि छलाह।

साहित्य क्षेत्रमे सर्जनात्मक दृष्टिएँ साहित्यकार 'तथाकथित प्रयोगवादी' ओ 'तथाकथित परम्परावादी' एहि दू कोटिमे बँटि गेल छलाह आ तेसर वर्ग सुविधाभोगी सभक छल। एहि वैचारिक मतभेदक कारणेँ अनेक कटु प्रसंग सेहो पत्र-पत्रिकाक माध्यमसँ व्यक्त होइत रहैत छल। एहि नव कविता अथवा अकविताक मन्त्र द्रष्टा ऋषि श्री यात्रीजी तथा आचार्यक रूपमे स्व०

---

१. इजोत, दीप ३, पृ० ३१।

रामकृष्ण झा, किसुनके प्रतिष्ठापित कयल जा रहल छलनि। नव लेखनकेँ स्थापित करब एक आवश्यकता छल। एहि हेतु अनेक अनियमित पत्र-पत्रिका जन्म लैत रहल आ कृष्णक अग्रजक जकाँ मृत्युक मुखमे समाइत रहल, जकरा सभक चर्चा यथास्थान होयत।

नव लेखनक स्थापनमे 'आखर' सबसँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कयने अछि। एहि संगहि मैथिलीक न्याय्य माङक पूर्त्तिक हेतु एकर स्वर बहुत सशक्त छलैक। एही दुइ गोट काजक हेतु मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे 'आखर' अपन विशिष्ट स्थान बना चुकल अछि। ओना डॉ० श्री जयकान्त मिश्र एकर नामोल्लेख मात्र कयने छथि तथा डाँ० 'श्रीश' दु पाँती मात्र एहि हेतु खर्च कयने छथि। डॉ० 'श्रीश' लिखैत छथि—

"१९६७क नवंबर माससँ श्री कीर्तिनारायण मिश्र ओ वीरेन्द्र मल्लिकक सम्पादकत्वमे 'आखर' नामक मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित होअए लागल जे सामग्री-चयन ओ मुद्रण दुनू दृष्टिएँ नवीनतम छल एवं एहि मध्य आधुनिक विधाक साहित्यिक वस्तु छपैत छल। १९६८ क अक्टूबर मासधरि ई प्रकाशित भए सकल। राजकमल-स्मृति-अंक एकर विशेष उपलब्धि कहल जाय सकैत अछि।"[१]

आब 'आखर'क प्रकाशक उद्देश्यक प्रसंग सम्पादकीयमे जे विचार व्यक्त कयल गेल अछि तकर अवलोकन कयल जाय जाहिसँ वास्तविकतापर प्रकाश पड़ैत अछि। सम्पादकीयमे पहिने भाषाक राजनीतिक प्रसङ्ग, तदुत्तर एकर उद्देश्य पर विचार व्यक्त कयल गेल अछि। भाषाक राजनीतिक प्रसङ्ग लिखल गेल अछि—

"हमरा आँखिक सोझमे एक गोट विराट प्रश्न-चिह्न अछि—हमरा मने अढ़ाइ कोटि मैथिली भाषा-भाषी, मने समस्त मिथिलांचल। प्रश्न-चिह्नक भयावहता सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ कँपा देने अछि—ओ उनटा लटकल अपन गोलार्द्धकेँ हमरा गर्दनिपर झुला रहल अछि—आ हम भयाक्रान्त भए एहि फाँसीक रस्सीसँ बचबाक लेल छटपटा रहल छी। हम जीवित छी, हमर अस्तित्वकेँ नहि बिसरल जाय। हमरा अकालमृत्यु देबाक षडयन्त्र नहि कैल जाय।

१. मै० सा० इतिहास, पृ० १३०।

प्रभुता-सम्पन्न समर्थ व्यक्तिक समक्ष एक गोट भूखल नग्न भिखारि भव्य प्रासादक समक्ष बिनु छाड़ल (?, छारल) कुटिया, हजार पावर वाला बिजली बत्तीक लग टिमटिम जड़ैत (?, जरैत) दीप—ई उपमा सभ बड़ पुरान, बड़ प्रचलित, परम्परासँ चलि अबैत। हीन भावना हमरा परम्परासँ भेटल अछि—ओ छल-बल-कौशलसँ सम्पन्न छथि तेँ पैघ, हम ऋषि-मुनिक दुब्बर सन्तान छी, कनियेमे सन्तुष्ट आ आत्मस्थ, तेँ छोट। संसारक सभ देशकेँ मैथिली भाषा-साहित्यक प्रति अनुराग मुदा अपना देशक आँखि चोन्हिआब' बला भाषाक समक्ष ओ श्रीहत् (?) अनचिन्हार। जेना आधुनिक साज सज्जामे कोनो एम्. ए. डिग्रीधारीक समक्ष संस्कृतक पण्डित संज्ञाशून्य, जेना 'हैः'क भयसँ नुकायल पाग !

हमर आत्महीनता-बोध, हमर भय देखि प्रश्नचिह्न फाँसीक रस्सी बनि गेल, बाहरी चकाचौंधकेँ देखि हमर संस्कृति, हमर जीवन्त परम्परा प्रभा-शून्य भ' गेल। जे मैथिली ज्ञान-विज्ञानक अक्षय भण्डार बूझलि जाइत छलीह सैह मैथिली अपनहि घरमे वन्दिनी बना देल गेलीह। मैथिली बोली थिक, भाषा नहि—एहि अश्लील गारिकेँ सुनियो कऽ हम चुपचाप रहि गेलौं कियैक तँ हम सहनशील छी—सहनशीलताक आजुक युगमे अर्थ छैक—अधि-कार-ज्ञान-शून्यता, दोसर अर्थमे मूर्खता !

संविधानक उद्यानमे मालीक कुचक्रसँ पहिने मात्र चौदह गोट वटवृक्षकेँ गाछ मानल गेल। कालान्तरमे एक गोट कलम सिन्धी केँ झमटगर होइत देखि ओकरो गाछमे परिगणित करा देल गेल—मुदा मैथिलीक कल्पतरु एखनो संदिग्ध अछि—हम गाछ मानल जायब अथवा नहि ? इयैह थिक भाषाक राजनीति आ तकरे शिकार मैथिली।

शास्त्र ज्ञान एवं कृषिकर्ममे लीन रह' वला मैथिलीभाषा-भाषी पहिने भाषाक एहि राजनीतिकेँ नहि बुझि सकलाह। तेँ आइयो सर्वाधिक प्रताड़ित, पीड़ित एवं अभावग्रस्त। अधिकार-उपभोगक क्षमता हुनकामे नहि छनि अथवा ओ अधिकार छिनबाक कौशल नहि जनैत छथि—तेँ ओ दयाक पात्र छथि—हुनका किछु 'रिलीफ' चाही—साहित्य अकादमीक माध्यमसँ से रिलीफ हुनका सरकार द' देलकनि, ओ तत्काल सन्तुष्ट भ' गेलाह। यदि ओ आओर विपन्न भए आर्त्तनाद अथवा क्षुब्ध भए आक्रोश व्यक्त करताह

Scanned by CamScanner

तँ भीख द' देल जयतनि—भाषाक भीख, संविधानमे ओकर स्वीकृतिक भीख ।

भीख या मृत्यु ? नहि, हम भीख नहि लेब, आ ने मृत्युकेँ वरण करब । आत्म-दुर्बलताक कारण दयाक पात्र बुझल गेल छलहुँ, संकल्प-शक्तिक अभावक कारण अधिकारसँ वंचित रहि गेलहुँ । आब हम जागल छी—पूर्णजाग्रत । जाग्रत अछि हमर भाषा, साहित्य, संघटन, संस्था आ समस्त सांस्कृतिक वैभव ! आइ प्रहरीक सजगता आबि गेल अछि अढ़ाइ कोटिक मैथिलीकेँ पूर्ण विकसित भाषाक अधिकार देल जाय—अथवा अढ़ाइ कोटि मैथिलकेँ बलि चढ़ा देल जाय। मैथिलीकेँ बिहारक द्वितीय राजभाषा मानल जाय अथवा मिथिलांचलकेँ शहीदांचल बना देल जाय ।"

एही संग 'आखरक सम्बन्धमे—' दोसर शीर्षकसँ एकर उद्देश्य ओ जन्मक कारण पर प्रकाश दैत लिखल गेल अछि—

"हमर जे सुषुप्ति भाषाकेर निर्वासनक कारण बनल सैह सुषुप्ति साहित्योकेँ रूढ़ संस्कार ग्रस्त, ह्रासोन्मुख तथा पुंसत्वहीन (?—पुंस्त्वहीन) बना देलक ।

'आखर' नवजागरणक प्रतीक बनि सकय तेँ एकरा एक हाथमे भाषा-आन्दोलनक ध्वज-दण्ड तथा दोसर हाथमे साहित्य लेखनक कलम देल गेल अछि—ई हमर दाबा अथवा घोषणा नहि—मात्र अदम्य संकल्प ! तेँ 'आखर' परिवारक सदस्य 'आखर' केँ अपन जीवन-मरणक प्रश्न बुझैत छथि । स्वस्थ आन्दोलन, उत्कृष्ट लेखन तथा जीवन्त परम्परा-स्थापना आखरक अभीष्ट ।

गत ५-६ फरवरीकेँ सुपौल (सहरसा)मे आयोजित नव कविताक सेमिनारक अप्रत्याशित सफलता देखि एक दिशि सभ आश्चर्यमिश्रित खुशीमे मग्न, दोसर दिशि तीन बजे राति धरि (स्व०) राजकमल, किसुन, प्रो० धीरेन्द्र, रेणु, जीवकान्त आ हम—मैथिली मे एक गोट उच्चस्तरक पत्रिका बहार करबाक योजना बनाब' मे व्यस्त । राजकमलक प्रस्ताव—पत्रिकाक नाम हो 'आखर' आ बहार करथु कलकत्तासँ कीर्त्तिनारायण । सभ उल्लसित मुदा हम अवाक् ।

कलकत्ता पहुँचैत देरी कि राजकमलक पत्र-पर-पत्र । हमर चिन्ता देखि पीताम्बरजी एवं राजनन्दनजी आखर-परिवारक संघटनक

लेल प्रयत्नशील भेलाह आ आइ 'आखर' अपने लोकनिक हाथमे अछि।''[१]

वीररसात्मक एहि सम्पादकीयमे जे उत्साहभाव देखाओल गेल अछि से अवश्य प्रशंसनीय कहल जायत, परन्तु बहुत कथ्य एहनो अछि जाहिसँ मैथिली आन्दोलनसँ रुचि रखनिहार तथा मैथिलीक गम्भीर अध्येता सहमत नहि होयताह। यथा—"मैथिली बोली थिक, भाषा नहि—एहि अश्लील गारिकेँ सुनियोक हम चुप चाप रहि गेलौं'। की ई आरोप सत्य अछि? मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे सबसँ पैघ योगदान 'मिथिलामोद'क रहलैक अछि, एकरा क्यो अस्वीकार नहि क' सकैत छी। 'मोद' आरम्भमे मैथिली ओ हिन्दी दुनू भाषाक रचना छपैत छल, परन्तु एही प्रश्न पर म० म० प० मुरलीधर झा सर्वदाक हेतु हिन्दीकेँ 'मोद'सँ निष्कासित क' देल, ई के नहि जनैत अछि। एहिठाम प० श्री गिरीन्द्रमोहन मिश्रक ई उक्ति प्रमाणित करैत अछि जे मैथिलीभाषी एहि शताब्दीक आरम्भेसँ अपना अधिकारक रक्षाक हेतु सजग भ' गेल छलाह। मिश्रजी लिखने छथि—

"१९१४ ई० मे हिन्दी साहित्य सम्मेलनक वार्षिक अधिवेशन भागलपुरमे भेल छल।....साहित्य—सम्मेलनक अधिवेशनक हेतु जे विषय सभ निर्धारित कएल गेल छल ताहिमे एक विषय छल 'मैथिली और हिन्दी'।

......हिन्दी साहित्य सम्मेलन बिहार प्रान्तमे भेल छल आओर बिहार प्रान्तमे प्रचलित प्रान्तीय भाषामे मैथिली भाषा एक मुख्य थीक, प्राय: तएँ हेतु एहि प्रकारक विषय पर लेख लिखबाक हेतु सम्मेलन समितिक द्वारा निर्धारित कएल गेल छल।

एहि सम्मेलनक किछुए दिन पूर्व बिहार प्रान्तक प्रारम्भिक पाठशालामे शिक्षाक माध्यमक विषयमे किछु विवाद उपस्थित भए गेल छल। मैथिली-भाषा-भाषी लोकनिक दिशसँ एक प्रस्ताव उपस्थित कएल गेल छल आओर समाचार पत्रमे प्रकाशित भए गेल छल जे मिथिलामे प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली होएबाक चाही।''[२]

मैथिली-हिन्दीक संघर्षसँ पत्रकारिताक इतिहास भरल पड़ल अछि, जकरा सभक उल्लेख 'मोद' आदि पत्र-पत्रिकाक विवेचनमे पूर्वहि कयल जाय

१. आखर, प्रथम अंक, पृष्ट ३-४।
२. 'किछु देखल किछु सुनल'' पृ० ७८।

Scanned by CamScanner

चुकल अछि। अतः उपर्युक्त आरोप निराधार अछि । ई अवश्य जे एखनहु धरि मैथिलीकेँ जनतन्त्र देशमे जतबा न्याय्य अधिकार प्राप्त होयबाक चाहिऐक से अद्यावधि नहि भेलैक अछि, तकर मूल कारण सम्पादक स्वयं लिखने छथि—"शास्त्रज्ञान एवं कृषिकर्ममे लीन रह'वला मैथिलीभाषा-भाषी पहिने भाषाक एहि राजनीतिकेँ नहि बुझि सकलाह। राजनीति क्षेत्रमे मिथिलाक वर्चस्व एखनहु नहि भेल अछि। ई स्थिति जाबत धरि रहत, ई अधिकार प्राप्त होयबो दुर्लभ अछि। शहीदांचल बना देबाक घोषणा कतबो कयल जाय, वाचनिक उत्साहें ई होअयबाला नहि। परन्तु हिन्दीक साम्राज्य स्थापित करबाक क्रममे जतेक भाषाकेँ हिन्दी अपना पेटमे समाहित करय लागल यथा—व्रजभाषा, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मगही आदि ताहि भाषा-समूहमे मैथिलीए एक एहन भाषा अछि जे पेट फाड़िक' बाहर आबि चुकल अछि। आइ उपर्युक्त भाषाभाषी लोकनि एहि सत्यक अनुभव कयलनि अछि तथा मुक्तिक हेतु हाथ पैर मारि रहल छथि। हिनका सभक मार्गदर्शक मैथिलीए भेलनि अछि।"

१९३० ई० मे मैथिली-साहित्य-परिषदक स्थापना भेल। एहि पचास वर्षक संघर्षमे केवल साहित्यकार ओ किछु बुद्धिजीवीलोकनि द्वारा संचालित अधिकार प्राप्तिक आन्दोलनसँ मैथिली बहुत किछु अधिकार प्राप्त क' सकल अछि। जतय १९५० ई० मे चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे मैथिली प्राध्यापकक पदपर नियुक्तिक हेतु एको गोटे मैथिलीमे एम्० ए० नहि उपलब्ध छलाह ततय आइ शताधिक एम्०ए० प्राध्यापक छथि तथा पचासो व्यक्ति पी-एच्०डी० ओ डी० लिट्० भ' चुकलाह अछि से पुंस्त्वहीनक आन्दोलनसँ नहि। अतः वीररसमे आबि अपनहिटाकेँ पुरुष कहयबाक लोभमे पूर्ववर्त्ती लोकक कयल काजकेँ एक वाक्य लिखि नकारि देब पत्रकारिताक बुद्धिमत्ता नहि कहल जाय सकैत अछि।

जाहि अङ्कमे उपर्युक्त सम्पादकीय लिखल गेल अछि ताहि अङ्कमे आचार्य रमानाथ झाक मैथिली-आन्दोलन विषयक मैथिली परिचर्चा सेहो छपल अछि। ओ परिचर्चा आरम्भ करैत लिखने छथि :

"मैथिलीमे नवयुगक सुप्रभात हम तहिआ मानैत छी जहिआ हमर पुण्यश्लोक स्वर्गीय महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह बहादुर मैथिलीक स्वीकृतिक प्रस्ताव लए पटना विश्वविद्यालयक सेनेटक सभामे उपस्थित भेल छलाह। तहिआसँ एक उपलब्धिक पश्चात दोसर, एवंक्रमे परुकाँ वर्ष

साहित्य अकादमीक मान्यता उपलब्ध भेला पर मैथिली आन्दोलनक एक अध्याय सम्पन्न भए गेल ।"[1]

हिन्दीक पेटमे समायल भाषासमूहमे राजस्थानीकेँ छोड़ि दोसर कोनो भाषा एखन धरि एहि स्तर धरिक मान्यता नहि प्राप्त क' सकल अछि। मैथिली एकर बाद प्रान्तीय लोक सेवा आयोगक परीक्षामे स्थान पाबि एक सीढ़ी आओरो ऊपर चढ़ल अछि, परन्तु से राजनीतिक पुरुष द्वारा। आब जे अन्तिम सीढ़ी बाँकी अछि से एहि मासिक वा साप्ताहिक पत्रिका द्वारा संचालित आन्दोलनसँ संभव नहि; जन-आन्दोलन चाही, जाहि हेतु दैनिक पत्रक नितान्त आवश्यकता अछि।

'आखर'क माध्यमसँ परिचर्चा स्तम्भमे मैथिलीक विविध समस्यापर अनेक चिन्तक लोकनिक विचार लोकक समक्ष उपस्थित कयल जाय सकल। मैथिलीक अध्येता लोकनिक हेतु ओहि समस्त चिन्तनक सूचना द' देब सर्वथा उपादेय होयत। अतः तकर उल्लेख कयल जाइत अछि—

प्रथम अङ्कमे मैथिली आन्दोलनपर आचार्य रमानाथ झा तथा मैथिलीक विकासक समस्यापर श्री राजनन्दन लाल दास, दोसर अंकमे मैथिली आन्दोलन : एक प्रतिक्रियापर आचार्य श्री दिवाकर मिश्र शास्त्री तथा मैथिली आन्दोलन आ हमर सभक दायित्वपर श्री पीताम्बर पाठक, तेसर अंकमे मैथिली आन्दोलन : किछु प्रश्नपर डॉ० श्री उपेन्द्र ठाकुर तथा आन्दोलन : दिशा आ दायित्वपर श्री मदन चौधरी चारिम अंकमे मैथिली आन्दोलन : पर प्रो० श्री राधाकृष्ण चौधरी, पाँचम अंकमे भारतीय जनतन्त्र आ मैथिली पर श्री राजनन्दन लाल दास तथा मैथिलीक समस्या: व्यावाहारिक कारणपर श्री सुकान्त, छठम अंकमे मैथिली आन्दोलन : किछु विचारणीय समस्या पर श्री मायानाथ मिश्र तथा एगारहम-बारहम संयुक्तांकमे मैथिली आन्दोलन : एक दृष्टिकोणपर अपन-अपन चिन्तन प्रस्तुत कयने छथि जाहिमे कतोक विचार सर्वथा मननीय अछि। बहुतो ठाम मतभिन्नताक हेतु सेहो स्थान अछि। समग्र रूपमे मैथिली आन्दोलनकेँ अग्रसारित करबामे 'आखर'क वैचारिक योगदान अवश्य श्लाघनीय अछि।

छठम अंकक बाद एकरो प्रकाशनमे शैथिल्य आबि गेल। सातमसँ दशम अंक धरिक संयुक्ताङ्क 'राजकमल स्मृति अङ्क'क रूपमे तथा एगारहम

१. तत्रैव, पृ० ५।

बारहम संयुक्ताङ्क प्रकाशित भेलाक बाद एकरो अदम्य संकल्पक दमन भ' गेलैक ।

नवलेखन केँ स्थापित करब, राजकमलक सम्पूर्ण व्यक्ति केँ उजागर क' राखि देब, राजकमल लिखित 'आन्दोलन' शीर्षक उपन्यासक धारावाही प्रकाशन 'आखर' क चरम उपलब्धि थिक ।

सर्जनात्मक साहित्य तथा भाषाक परिष्कारक दृष्टिएँ ई स्वच्छन्दतावादे केँ विषेश प्रश्रय देलक । यद्यपि मैथिलीक विकासक समस्या शीर्षक परिचर्चा मे श्री राजनन्दन लाल दास शैलीक समस्या पर विचार व्यक्त करैत लिखने छथि ।

......मैथिली भाषा मैथिली क्षेत्रक विभिन्न जिलामे विभिन्न रूपेँ बाजल जाइछ । संगहि विभिन्न वर्गक भाषामे सेहो भिन्नता अछिए ।...... पुनः एके शब्दक उच्चारण विभिन्न क्षेत्रमे भिन्न-भिन्न तरहेँ होइछ । जेना अखन, एखन अखनि, एखनि, अखैन, अखनी, एखनी, आदि ।......आब एहि नवीन धाराक अनुकूल जँ साहित्यक रचना कयल जाय तँ मैथिली भाषाक भविष्य की हैत तकर कल्पना मात्र कयल जाय सकैछ । 'जाइत अछि' वा 'जाइछ' क लेल जँ 'जाइहइ', 'जाहै' प्रचलित भय जाय तँ मैथिली हिन्दीक बोली कहेबाक लेल पूर्ण योग्य भ' जायत ।''[१]

परन्तु मैथिलीक एक मान्य विद्वान प्रो० श्री राधाकृष्ण चौधरी लेखनक प्रसङ्ग अपन विचार व्यक्त करैत लिखने छथि—

''तेसर समस्या लेखन-कला आर शैली । हमर प्रिय मित्र एवं विज्ञ प्राध्यापक श्री रामदेवजी अहिं सम्बन्धमे (पत्रक स्तम्भमे) एकटा प्रश्न उठौलन्हि अछि । हुनक विचारक समर्थन करितहुँ हमर अपन मत अछि जे अहुना मैथिली जे जहिना लिखथि तहिना छापल जाए जाहिसँ मिथिलाक विभिन्न अंचलमे रहिनार (?) व्यक्ति अप्पन विचार अपनहि बोलीमे प्रकाशित क सकैथि आर एवंप्रकारेँ मैथिलीसँ तादात्म्य स्थापित क सकैथि ।''[२]

एहि प्रकारक परस्पर विरोधीविचार लोकक समक्ष ई पत्र उपस्थित कयलक, परन्तु पत्रकारिताक दृष्टिएँ जे पत्रिकाक अपन मत, अपन शैली,

---

१. प्रथम अंक, पृष्ट १२ ।

२. 'आखर', अङ्क ४, पृ० ६ ।

Scanned by CamScanner

अपन दृष्टिकोण होयबाक चाही से एहिमे दृष्टिगत नहि होइत अछि। जे जहिना लिखलनि से छपल, मुदा सम्पादकीयोमे एकरूपता नहि।

जाहि पत्र स्तम्भक प्रसङ्ग उक्त चौधरीजी प्रसंग निर्देश कयने छथि ताहू पत्रक उल्लेख करब रुचिकर होयत। दोसरे अङ्क देखलाक बाद डॉ० श्री रामदेव झा एक पत्र पठौने छलथिन। ओहिमे ओ लिखने छथिन श्री कीर्त्तिनारायणकें—

"भाइ कीर्त्तिनारायण, तोहर 'आखर'क पहिल अङ्क कीनि क' पढ़लियह। दोसर अङ्क एखन धरि विक्रय लेल नहि अयलह अछि, तें कतहु देखलियह-पढ़लियह नहि। बेसी नीक लागल आ किछु विपरीतार्थको लागल। मुदा से विस्तारसँ पाछाँ लिखबह। हँ, कालक्रमे—"आन भाषाक अथवा संस्कृतक तत्सम शब्दक प्रयोग ताही ठाम हो जतय ठेठ मैथिली शब्द नहि भेटय।" श्री राजनन्दन लाल दासक ई उक्ति यथार्थ छनि तथा किछु संशोधन अपेक्षित। संस्कृत शब्दावलीसँ एतेक परहेज उचित नहि, बंगलासँ नवीन शब्द ग्रहणक चेष्टा ओ हिन्दी-उर्दू शब्दावली(मैथिलीमे अपचल)सँ सर्वथा परहेज अपेक्षित। तें दासजी कें "सच पूछी"क स्थानमे 'सत पूछी' लिखक चाहियनि।

हाँ, (') ई कोन ध्वनि बना रहल छह ? पूर्वकालिक क्रिया (करब, धरब, लेब, देब, क्रियामे) वा कृदन्तमे अय/अए स्वर वा विलम्बित 'अ' होइत छैक—से स्पष्ट स्वर निर्देश करहक जेना—भए/भय/भ' वा पचयब्रामे भ' आ पचाब' एहन प्रयोग पाछाँ अव्यवस्थे अनतैक।"[१]

उद्धरण देबाक तात्पर्य जे ध्यानाकर्षण कयलो उत्तर एहि बिन्दु पर कोनो विशेष ध्यान नहि देल गेल, प्रत्युत भाषाक प्रयोगमे स्वच्छन्दतावादकें प्रश्रये देल गेलैक। एकर ऐक सम्पादक श्री वीरेन्द्र मल्लिकक लिखल एक छोट-सन कविता उदाहरणार्थ उपस्थित अछि। 'मर्दानगी' एकर शीर्षक अछि जकरा 'पुरुषत्व, पौरुष, पुरुषार्थ' एहू शब्द सभक द्वारा अभिव्यक्त कयल जाय सकैत छल। कवि लिखने छथि—

कार्बोहाइड्रेट्स, चिकनाहट,
संतुलित आहार

---

१. आखर, अंक ३, पृ० ५१-५२।

फास्ट —
एकमात्र दवाई अछि,
आदर्श मर्दानगीक लेल ।[1]

एहिमे मैथिलीक कयटा शब्द अछि ?

मैथिलीक बढ़ैत चरणकेँ देखि एकरा आत्मसात् करबाक षडयन्त्रसे लागल लोक जखन एकरा वेगकेँ रोकि लेबामे अपनाकेँ असमर्थ पौलनि तखन कूटनीतिक आश्रय लेलनि आ मैथिली क्षेत्रकेँ विभाजित करबाक राजनीति चलल । पूर्वीय क्षेत्रक मैथिलीक उपभाषाकेँ 'अंगिका' तथा पश्चिमीय क्षेत्रक उपभाषाकेँ 'बज्जिका' नाम द' नवीन भाषाक जन्म देल गेल । एहि दुरभिसन्धिमे बिहारक हिन्दीक जानल-मानल साहित्यकारलोकनि छलाह । पछाति यद्यपि ईहो लोकनि मातृभाषाक महत्त्व अनुभव कयलनि, परन्तु विषवल्लीकेँ जन्म लेलाक बाद ।

एहि कूटनीतिक विरोधमे आचार्य रमानाथ झा 'आखर'क माध्यमसँ जे विचार व्यक्ति कयने छथि से एखनहु पठनीय तथा मननीय अछि । अन्तिम लक्ष्यक प्राप्तिक मार्गमे ई एक अवरोधक तत्त्व अछि, जकर निराकरण आवश्यक अछि । समग्र रूपेँ विचार कयला उत्तर 'आखर' अपन अल्प-कालहिमे पत्रकारिताक इतिहास पर अमिट छाप छोड़ि गेल से स्वीकार करहि पड़त ।

एहिमे जनिका लोकनिक रचना छपैत छलनि ताहिमे परिचर्चाक प्रकरणमे लेल गेल नामक अतिरिक्त नाम निम्नांकित अछि—

सर्वश्री सकलदीप सिंह, रामकृष्ण झा 'किसुन', जीवकान्त, सोमदेव, रमानन्द 'रेणु', दशरथ झा, गंगेश गुंजन, यात्री, प्रो० हरिनारायण मिश्र, डॉ० रामदेव झा, ताराकान्त प्रकाश, कान्तजी, शेफालिका वर्मा, राजमोहन झा, तारानन्द झा 'तरुण', जयनारायण झा 'विनीत', मधुकर गंगाधर, भुवनेश्वर पाथेय, शशिकान्त झा 'शशि', डॉ० हरिश्चन्द्र, मनमोहन झा, कामेश्वर झा, पी० के० चौधरी, भवानन्द झा, पो० मायानन्द मिश्र, डॉ० बालगोविन्द झा, 'व्यथित', शैलेशकुमार पाठक, लक्ष्मीकान्त झा, रमानाथ मिश्र 'मिहिर', मणिपद्म, प्रभास कुमार चौधरी, वैद्यनाथ भास्कर, सुधांशुशेखर

---

१. आखर, प्रथम अंक, पृ० २२ ।

Scanned by CamScanner

चौधरी, मनमोहिनी, डॉ० आनन्दनारायण शर्मा, योगाकर झा प्रो० हरिमोहन झा, सोमनाथ, रमेशचन्द्र खाँ 'किशोर', महाप्रकाश, डॉ० 'श्रीश', डॉ० बेचन, डॉ० इलारानी सिंह, श्रीमती गौरी मिश्र, साकेतानन्द, स्व० हरिनाथ, रामभरोस कापड़ि, उपेन्द्र झा, जगदानन्द ठाकुर।

ई तँ भेल एक हाथमे देल भाषा-आन्दोलनक ध्वजदण्डक प्रसङ्ग, दोसर हाथमे साहित्य लेखनक कलम देल गेल छलैक। ताहि दिशामे 'आखर'क विशेष योगदानहुक विचार करब आवश्यक। 'आखर'क पहिल अङ्कमे परिचर्चा, आलोचना, अकविता, समवेत, कथा, नवहस्ताक्षर, उपन्यास, समीक्षा ओ समाचार-दर्पण नामक स्तम्भ सब अछि। दोसर अङ्कमे सम्पादकीय, कथा समवेत, चिट्ठीपत्री ई तीन गोट स्तम्भ बढ़ा देल गेल। यद्यपि सम्पदकीय प्रथमो अङ्कमे छल जे पूर्वहि उद्धृत कयल जाय चुकल अछि; तेसर अंकमे काव्य, व्यक्तित्व : कृतित्व, विविधा ई तीन गोट स्तम्भ पुनः जोड़ल गेल, परन्तु समीक्षा एहि अंकमे नहि अछि। चारिम अंकमे व्यक्तित्व : कृतित्व नहि अछि, परन्तु वैचारिकी, कथा परिचर्चा, प्रतिक्रिया ई तीन गोट स्तम्भ पुनः जोड़ल अछि। पाँचम अंकमे वैचारिकी नहि अछि, आलोचना आ समीक्षा भिन्न-भिन्न स्तम्भ बना देल गेल अछि। छठम अंकमे रम्या एकटा स्तम्भ पुनः जुटल अछि।

'आखर'क माध्यमसँ नवहस्ताक्षर ल' जेलोकनि मैथिली-साहित्यमे अवतीर्ण भेलाह ताहिमे छथि श्री सुकान्त, श्री गंगानाथ झा 'गंगेश', श्री तारानन्द झा 'तरुण', श्री मनमोहन झा, श्री भवानन्द झा, श्री वैद्यनाथ भास्कर, श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', श्री उपेन्द्र झा।

आइसँ तेरह वर्ष पूर्व ई लोकनि रचनाक क्षेत्रमे अयलाह आ आइ एहिमे बहुतो गोटे स्थापित साहित्यकारक पंक्तिमे आबि गेलाह अछि। जे साधनारत छथि से निखरि रहल छथि। एहन एक पीढ़ीकेँ क्षेत्रमे उतारि देवाक श्रेय सेहो 'आखर'केँ छैक।

किछु प्रयोग अनोन सेहो लगैत अछि। आलोचना स्तम्भमे एक लेख अछि 'साठोत्तरी मैथिली कविता'। ई शीर्षक स्पष्टतः हिन्दीक उच्छिष्ट थिक। मैथिलीमे संस्कृतक 'षष्टि' शब्द 'साठि' भ' गेल अछि 'साठ' नहि। साठि + उत्तरी = 'साठोत्तरी' नहि हो।

जहाँ धरि 'आन्दोलन' उपन्यासक प्रसङ्ग अछि, हमरा दृष्टिएँ ओ एक "दीर्घकथा' थिक। १९५७ ई०मे लिखल गेल। वस्तुत: राजकमल बद्ध परिकर भ' मैथिली क्षेत्रमे कोना अयलाह तकर आभास एहिमे भेटैत अछि। एक युवकक हृदयक औनाइत ज्वालामुखी जेना फूटि पड़बाक हेतु आकुल हो। इएह आगि आगाँ चलि राजकमलकेँ मसीहा बना देलकनि। अत: एकर प्रकाशन 'आखर'क महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थिकैक। एवंक्रमेँ आखरक रचना पक्ष सेहो स्वस्थ छैक। खेद जे एहन स्तरीय पत्र एतेक बुद्धिजीवी मैथिली भाषीक अछैत दीर्घजीवी नहि भ' सकल।

सोनामाटि

१९६९ ई०क फरवरी माससँ श्री भारतीभक्तक सम्पादकत्वमे पटनासँ 'सोनामाटि' नामक पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। एकर सह-सम्पादक छलाह श्री भद्रनाथ। एहिमे छपैत छल मैथिली मासिकी (डाइजेस्ट)। एकर आवरण पृष्ठपर 'मधुबनी चित्रकला'क नामसँ जे चित्रकला आइ विश्व विख्यात भ' रहल अछि ताहीमेसँ एक नमूना रहैत छल जे अपरिवर्तित रहल। एकर रंग-ढंग हिन्दीमे प्रकाशित 'कादम्बरी' आदिक सदृश बनयबाक चेष्टा कयल गेल छल। एकटा स्तरीय पत्रिकाक समीप ई अवश्य छल। परन्तु हिन्दीमे जाहि प्रकारक डाइजेस्ट सब बहराइत अछि, ताहि दृष्टिएँ ई बहुत पछुआयल छल, तथापि मैथिलीमे 'डाइजेस्ट'क कल्पना एही पत्रिकाक माध्यमसँ भेल तेँ एकर श्रेय एहि पत्रिकाकेँ अवश्य प्राप्त छैक।

यद्यपि नवलेखनक प्रति ई 'आखर' जकाँ प्रतिबद्ध नहि छल, तथापि ओहि दिस झुकाव अवश्य छलैक से एकर रचनासँ प्रतीत होइत अछि। ओना हमरा दृष्टिएँ ई कथा-मासिक तँ नहि, परन्तु कथा-प्रधान अवश्य छल। मिलाजुला क' एहिमे सबसँ अधिक कथे प्रकाशित भेल अछि।

एकर प्रकाशन सेहो पूर्ण अनियमित रहलैक। हमरा जतबा अंक देखबाक सुयोग भेल अछि ताहिसँ एहन प्रतीत होइत अछि जे बीच-बीचमे अप्रकाशितो अंकक गणना प्रकाशित अंकमे कयल गेल हो। प्रथम अंकमे

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय मन्तव्य एक शब्द नहि अछि। ने नीति-निर्धारणक प्रसङ्ग आ ने उद्देश्यक प्रसङ्ग किछु कहब आवश्यक बूझल गेल अछि। कतिपय व्यक्तिक शुभकामना एहि प्रथमे अंकमे प्रकाशित अछि। ताहिमे आचार्य रमानाथ झा अपन इच्छा प्रकट करैत लिखने छथिन—

"............मैथिलीमे एखन सबसँ विकट समस्या अछि पाठकक। कहैत छिऐक जे मैथिली दू कोटि जनताक प्रिय मातृभाषा थिक। पाँचो प्रतिशत यदि ताहिमे शिक्षित मानि ली तँ गोटेक लाख व्यक्ति मातृभाषाक महत्त्वकेँ बुझनिहार शिक्षित मैथिल होएताह। कि ताहिमे एको प्रतिशत नियमतः मैथिलीक पोथी किंवा पत्रिका किनैत छथि?

ई पत्रिका मैथिलीक पाठक तैयार हो तदर्थ आन्दोलनक नेतृत्व करओ एहिसँ पैघ काज मैथिली जगत्‌मे नहि छैक.......जय मैथिली।"

एहिमे प्रकाशित विविध प्रकारक रचना देखलासँ प्रतीत होइत अछि जे सम्पादक उपर्युक्त परामर्शकेँ ध्यानमे राखि रचनाक संचयन कयने छथि। किछु उपादेय समीक्षात्मक, विचारात्मक निबन्ध, देश-दर्शन, प्रेत-कथा, शिकार-कथा, किछु अद्‌भुत रसक वस्तु द' विभिन्न प्रकारक पाठककेँ आकर्षित करबाक प्रयास एहिसँ परिलक्षित होइत अछि।

दोसर अंकमे सम्पादक लेखनीसँ किछु पंक्ति अंकित अछि जाहिसँ एकर स्थिति ओ नीतिपर प्रकाश पड़ैत अछि। यद्यपि सम्पादकीय कहि क' एकर प्रकाशन नहि होइत छल आ ने किछु शीर्षके देल गेल अछि, विषय-सूचीमे सेहो कोनो गणना एकर नहि कयल गेल अछि, तथापि ई लिखल गेल अछि सम्पादकक लेखनीसँ, जे निम्नांकित अछि—

"प्रवेशांकक बाद अपेक्षाकृत किछु विलम्बसँ 'सोनामाटि'क ई दोसर अंक। पहिल अंक पर पाठकलोकनिक अनुकूल प्रतिक्रिया भेल, बड़ उत्साहित भेलहुँ। मैथिली बजनिहार तमिल बजनिहारसँ कम नहि हेताह, मुदा निकलैत अछि मैथिलीमे ततेक आ' तेहन-तेहन पत्रिका? अथवा, तमिल पत्र-पत्रिका जकाँ कोनो मैथिली पत्रिकाक पाठक-संख्या छैक डेढ़ लाख, दुइ लाख?

मैथिली पाठक पुर्णिया, सहरसा, दरभंगा, मधुबनी, मुजफ्फरपुर आ नेपाल तराइ अंचलेटामे नहि, आनो-आन जगहमे बिखरल छथि, जमल छथि।

Scanned by CamScanner

काशी, प्रयाग, दिल्ली, पटियाला, जयपुर, बम्बई, नागपुर, मद्रास, कटक, कलकत्ता, गोहाटी—देशक कोन एहन प्रमुख सांस्कृतिक आ' औद्योगिक केन्द्र छैक जतय मैथिली बजनिहार नहि पहुँचल छथि ?

'सोनामाटि' सभकें अप्पन बूझैत अछि, प्रचलित जातिवाद आ' भाषा-वादक कथित राजनीतिसँ फराके रहि ई सभक सेवा करैत रहत।''

हमरा जनैत मैथिलीक कोनो पत्र-पत्रिकाकेँ जातिवादसँ कोनो सम्बन्ध नहि रहलैक अछि, प्रत्युत 'मैथिल' शब्दक संकीर्ण अर्थसँ भाषाकेँ बाहर क' मिथिलावासी सभ जातिक भाषाक रूपमे प्रचारित करबाक प्रयास होइत रहल अछि, तखन जातिवादसँ फराक रहबाक घोषणा पूर्ण युक्तिसंगत नहि प्रतीत होइत अछि। रहल भाषावाद, से यदि अपन-अपन मातृभाषाक स्वत्वक हेतु कोनो दलित भाषाक बजनिहार संघर्ष करैत छथि तनिकापर भाषावाद करबाक दोषारोपण क' ओकरा न्याय्य अधिकारसँ वंचित रखबाक दुरभिसन्धि कयल जाय तँ, तकर विरोध तँ प्रत्येक मैथिली पत्रिकाक कर्त्तव्य कोटिमे अबैत अछि। यदि भाषावादसँ ई अभिप्रेत हो जे मैथिली क्षेत्रकेँ विखण्डित करबाक हेतु जेना 'अङ्गिका', 'बज्जिका' आदि कृत्रिम नाम द' षड़यन्त्र कयल जाय रहल अछि तँ तकरो विरुद्ध स्वर मुखरित करब मैथिली पत्रिकाक उद्देश्य होयबाक चाही, तखन भाषावादसँ फराक रहबाक घोषणो हमरा युक्ति-युक्त नहि प्रतीत होइत अछि। अस्तु।

उपर्युक्त सम्पादकीयमे मैथिलीभाषी क्षेत्रक उल्लेखपर डॉ० बेचन अपन आपत्ति प्रकट करैत एक पत्र लिखने छथिन। पत्रमे छैक—

''........अपनेक सम्पादकीय (मार्च-अंक) उद्घोषणामे मैथिली पाठकक क्षेत्रक अन्तर्गत पूर्णिया, सहरसा, दरभङ्गा आ' मुजफ्फरपुरक संग-संग भागलपुर आ' मुंगेर किएक नहि छैक ? की भागलपुर, मुंगेर मिथिलांचल सँ फराक छैक—अपनेक अभिमत ? — डॉ० बेचन, भागलपुर''।

उपरिलिखित पत्र जूनक अंकमे प्रकाशित अछि जाहि अंकक संख्या ५ छपल अछि। दोसर वर्षक पहिल अंकमे श्री यात्रीजीक एक पत्र छपल छनि। ओहिमे कहल गेल अछि—

''सोनामाटिक चारि गोट अंक आइधरि हमरा प्राप्त भेल अछि।...... चारू अंकक पाठ्य सामग्री मिला क' देखला उत्तर आशाक संचार वेश पुष्ट

मात्रामे भेल अछि। तत्काल भारतीभक्तजी 'सोनामाटि'क हेतु अपन रक्त-दान क' रहला अछि से बेश नीक जकां..........यात्री (नागार्जुन)''।

एहि सबसँ प्रतीत होइत अछि जे पहिल वर्षमे एकर मात्र चारिए गोट अंक प्रकाशित भ' सकल छल। परन्तु जुलाइक अंक संख्या ६ छपल अछि।

पूर्वमे कहल गेल अछि जे 'आखर' जकाँ ई नवलेखनक प्रति प्रतिबद्ध नहि छल। एहि कथनक पुष्टिमे सम्पादकेक निम्नांकित मन्तव्य देखल जाय सकैत अछि। सम्पादक लिखने छथि—

''सोनामाटिक स्वागत सभ क्षेत्रसँ भ' रहल अछि। बूढ़-पुरनियाँक आशीष, नवतुरियाक स्नेह सेहो। आइ कालिहक युगमे प्रतिबद्धताक अर्थ भेल अपनाकें एकसँ जोड़ि कए दोसरसँ तोड़ि ली, मुदा 'तोड़' सँ हम बचऽ चाहैत छी आ' 'जोड़'सँ जुड़', हमरा पाछाँ अछि परम्परागत अतीत आ आगाँ अछि दूरागत भविष्य। हम ककरासँ टूटी? दूरागत भविष्यक आहटि सुनि कए हम अपन कानमे आंगुर द' दी से नहि, आ ने परम्परासँ कटि क' नङटे नचबाक उत्तेजना हम अनुभव कए रहल छी।

'सोनामाटि' प्रतिबद्ध नहि अछि—ने कोनो राजनीतिक दल वा विचार-धाराक प्रति, ने कोनो साहित्यिक गुट वा वादक प्रति आ ने कोनो जाति वा वर्गक प्रति। आ जँ 'सोनामाटि' प्रतिबद्ध अछिओ तँ ओहिना जेना अन्हारमे इजोतक तीव्राकांक्षा जागल रहैत छैक अथवा बान्हलमे मुक्तिक लेल मोन पागल रहैत छैक।''[1]

एहि उक्तिसँ स्पष्ट अछि जे ई ककरो प्रति प्रतिबद्ध नहि छल, परन्तु नवलेखनक प्रति एकर झुकाव छलैक एकर पुष्टि अनेक रचनासँ होइत अछि। जेना पहिल अंकक पहिल रचना 'पति-पत्नी कथा' स्व० राजकमलक हस्तलिपिक ब्लाक बनबाय छापल गेल अछि जनिका नवलेखनक मसीहा मानल जाइत छनि। नवलेखनक मन्त्रद्रष्टा ऋषि श्री यात्रीजीकेँ आही वर्ष 'पत्रहीन नग्न गाछ' नामक पुस्तकपर साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छलनि, तेँ राष्ट्रपति जाकिर हुसेनसँ पुरस्कार ग्रहण करैत एक चित्र, डॉ० बच्चन एवं मराठीक लेखिका श्रीमती इरावती कर्वेक संग गप्प करबा कालक दोसर चित्र तथा 'पत्रहीन नग्न गाछ' शीर्षक कविता सेहो छपल अछि। तेसर 'नवकविता भाषा आ शब्द प्रयोग' शीर्षक निबन्धमे 'स्वरगंधा'क भूमिकामे व्यक्त कविताक लेल एक्के वस्तु आवश्यक अछि—'शब्द', एहि

---

१. वर्ष १, अंक ५, पृ० ४।

मान्यताक पुष्टिमे नवलेखनक आचार्य ओ भाष्यकारलोकनिक पुस्तकक उद्धरण सब देल गेल अछि। चारिम कविता अधिकांशतः नवलेखनेक पुष्टि करयवला सब अछि। एहिमे जाहि कविलोकनिक कविता छपैत छलनि से नाम सब थिक—श्री जीवकान्त, रामकृष्ण झा 'किसुन', श्री यात्री, नचिकेता, सुधाकान्त, शेफालिका वर्मा, तारानन्द तरुण, रामेश्वर प्रेम, गोपेश, कीर्त्तिनारायण, महेशचन्द्र झा, प्रशान्त; सोमदेव, सुभाषचन्द्र यादव, अयोध्यानाथ चौधरी, उपेन्द्र दोषी, मार्कण्डेय प्रवासी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, स्व० हरिनाथ। एहिमे अधिकतर कवि नवलेखनक प्रति प्रतिबद्ध छथि।

हम एहि पत्रिकाकेँ कथा प्रधानपत्रिका मानैत छी। कारण हमरा केवल आठ गोट अंक उपलब्ध भ' सकल ताहि सबमे मौलिक ४४ गोट कथाक अतिरिक्त प्राचीनकथा, लोककथा, प्रेतकथा अन्यभाषासँ अनूदित कथा सब सेहो अछि जे मिलाय ५५-५६ गोट कथा भ' जाइत अछि। सम्प्रति कथाक पाठकक संख्या सबसँ अधिक अछि। आ पाठक तैआर करबाक दिशामे प्रमुख रूपेँ ई पत्रिका बढ़ि रहल छल तेँ एकरा कथा प्रधान मासिक कहब विशेष युक्तिसंगत प्रतीत होइत अछि। एकर अतिरिक्त श्री मणिपद्मजीक एक लघु उपन्यास 'कनकी' तथा 'राय रणपाल'क धारावाही किछु अंश सेहो प्रकाशित अछि।

एहिमे निम्नांकित कथाकारलोकनिक कथा छनि—स्व० राजकमल, सर्वश्री मनमोहन झा, प्रो० तन्त्रनाथ झा, नगेन्द्र कुमार, प्रो० धीरेन्द्र, हंसराज, प्रो० राजेन्द्र किशोर, उपाध्याय भूषण, शेफालिका वर्मा रामभद्र, छत्रानन्द, मधुकर गंगाधर, भद्रनाथ, रमेश नारायण, प्रो० उमानाथ झा, गोविन्द झा, श्री देव, सिद्धेश्वर चौधरी 'मंजु', प्रभास कुमार चौधरी, श्यामानन्द ठाकुर, गौरी कान्त चौधरी 'कान्त', भक्तिनाथ, जीवकान्त, प्रो० मार्कण्डेय, गंगेश गुंजन, घनचक्र, शशिनाथ चौधरी, राजमोहन झा, रमानन्द 'रेणु', योगिराज, जयवीर, फणीश्वरनाथ 'रेणु', माधुरी झा, भुवनेश्वर पाथेय, ललित, श्री उपेक्षित, जगदीश प्रसाद कर्ण।

एकर अतिरिक्त एक फ्रेंच कथाक अनुवादक छथि मायानाथ मिश्र, बंगलाक दू गोट कथाक अनुवादक भद्रनाथ ओ ब्रजकिशोर ठाकुर, एक गोट खलील जिब्रान लिखित कथाक अनुवादक भद्रनाथ, नागालैंडक लोककथाक अनुवादक गणेश शंकर खर्गा तथा जिम कार्बेट लिखित शिकार कथा 'रुद्र प्रयागक नरभक्षी चीता'क अनुवादक 'मधुमिता' छथि।

Scanned by CamScanner

उपर्युक्त अनुवाद सभक अतिरिक्त एक जर्मन कविताक तथा एक-एक तमिल ओ तेलुगू कविताक अनुवाद सेहो एहिमे छपल अछि। एही कारणें एकरा डाइजेस्ट कहल गेल अछि। अन्य भाषासँ अनुवाद क' प्रकाशित करबाक काज एहिसँ पूर्वहु पत्र-पत्रिका द्वारा थोड़मे बहुत भेल अछि जकर उल्लेख पूर्वहि कयल जाय चुकल अछि।

'सोनामाटि'मे किछु संग्रहणीय लेख सेहो प्रकाशित अछि। जेना प्रो० श्री आनन्द मिश्रक 'लोचन एवं हुनक रागतरंगिणी', डॉ० श्री शैलेन्द्र मोहन झाक 'पुरुषपरीक्षामे काव्यशास्त्रीय अभिव्यक्ति' 'उमापति, जीवन एवं कृतित्व', श्री गोपेशजीक 'आधुनिक मैथिली कविता: अनुभूतिक स्वर', प्रो० श्री बालगोविन्द झा 'व्यथित'क 'रेचन-सिद्धान्त : काव्यानन्द', श्री कुलानन्द मिश्रक 'कविशेखर तथा हुनक एकावली-परिणय', प्रो० श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'क 'देवीगीत' ओ 'नदीगीत' आदिक विशेष नाम लेल जाय सकैत अछि। एहि संग तमिल महाकाव्य 'मणिमेखले'क परिचय स्वयं श्री भारतीभक्तजी प्रस्तुत कयने छथि जाहि माध्यमसँ मैथिलीक अध्येता लोकनिकें तमिल साहित्यसँ परिचय प्राप्त करबाक अवसर भेटैत छनि।

भाषाक समस्यापर 'सोनामाटि' विशेष सजग प्रतीत नहि होइत अछि। कहबाक हेतु तीन वर्ष धरि एकर प्रकाशन होइत रहल, परन्तु एहि तीन वर्षक अवधिमे प्राय: एकर आठ गोट अंक मात्र प्रकाशित भेटैत अछि। पत्र-पत्रिका संचित क' रखनिहार कतिपय व्यक्तिक ओतय छानि लेला उत्तर समाने अंक दृष्टिपथ पर आयल। हमहु आरम्भेसँ एकर ग्राहक रहलहुँ, हमरा जतबा अंक उपलब्ध अछि तदतिरिक्त अंक एकमात्र अन्यत्र प्राप्त भेल। एही आधारपर एहि निष्कर्ष पर आबय पड़ल जे मात्र आठे गोट अंक प्रकाशित भ' सकल। एहि निष्कर्ष पर पहुँचबामे सम्पादकक निम्नांकित कथन सेहो सहायक भेल। सम्पादक लिखैत छथि—"बेस सुदीर्घ अन्तरालक बाद सोनामाटिक ई शारदीया। पुनर्जीवन एकरा नहि कहब, मूर्च्छित छल से पुन: होशमे आबि गेल।"[1] दोसर वर्षक दोसर अंकक बाद इएह संयुक्तांक उपलब्ध अछि। एतेक अंकमे भाषासमस्या पर केवल डॉ० श्री जयकान्त मिश्रक 'मातृभाषा मैथिली : प्राथमिक शिक्षा" शीर्षक एकटा लेख देखि पड़ल।

---

१. वर्ष २, अंक ११+१२।

Scanned by CamScanner

एकर अतिरिक्त किछु विशिष्ट व्यक्ति, विशिष्ट स्थान आदिक परिचय, एक-आध देशक समस्या सम्बन्धी लेख, दू-तीन गोट रिपोर्ताज, एकटा एकांकी नाटक सेहो प्रकाशित अछि। सब मिलाजुला क' ई पत्रिका भाषाक विकासमे जे योगदान कयने अछि तकरा महत्वपूर्ण कहल जायत।

बागमती

मार्च १९७० ई० सँ ऋचालोकक तत्वावधानमे लहेरियासरायसँ एक मासिक पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल जकर नाम छलैक 'बागमती' तथा सम्पादक छलाह श्री शिवकान्त पाठक। ई एक राष्ट्रवादी पत्रिका छल जाहिमे राजनीतिक पुट सेहो रहैत छलैक। एकर उद्देश्यक प्रसङ्ग सम्पादक लिखने छथि—

"प्रगति जीवन थिक। किन्तु प्रगतिक हेतु चाही अदम्य उत्साह, आकांक्षा ओ सामर्थ्य सम्पन्न राष्ट्रिय एकात्मभाव।..........

परन्तु दुर्भाग्यक बात थिक जे आकांक्षा तऽ बड़ बलवती अछि, मुदा वैयक्तिक। राष्ट्रिय महत्वाकांक्षाक स्थान खाली अछि। तकर परिणाम थिक लोक-जीवनक अधोगति। व्यक्तिवादी महत्वाकांक्षाक परिणाम अछि धार्मिक क्षेत्रमे 'गुरुडम', आर्थिक क्षेत्रमे पूजीवाद, राजनीतिमे अधिनायकवाद, जे समस्त लोकजीवनक विकासक सम्भावने नष्ट क' दैछ। तेँ विकास-मार्ग-पर अग्रसरित लोकजीवनकेँ देखबाक आकांक्षी 'ऋचालोक' संगठनक ई प्रयास रूप बागमतीक आविर्भाव भेल अछि। प्रगतिक मंत्र जन-जीनमे फूकब एकर लक्ष्य छैक। चलैत रहू। सतत चलैत रहू। अतीतसँ प्रेरणा लैत, वर्त्तमानक मूल्याङ्कन करैत, भविष्यक प्रति जागरूक आकांक्षा आ निर्भीक रहि बढ़ैत रहू। भविष्यसँ भयभीत भऽ शिथिल भऽ जायब अकर्मण्यता थिक। जे प्रवृत्ति आ व्यवस्था, जे राजनीति आ अर्थनीति, जे सामाजिक नियम वा शिक्षा-पद्धति अकर्मण्य, झगड़ाउ, आलसी आ निद्रालु बनबैछ तकर त्याग करऽ पड़त। कर्मशील आ श्रम-शील लोक-जीवनक निर्माणमे लागि जाय पड़त। श्रम करबाक हेतु फरकैत बाहुबलकेँ कार्य देबऽ बला व्यवस्था-निर्माण करऽ पड़त। जतऽ राष्ट्रव्यापी श्रम अछि ओतऽ

Scanned by CamScanner

निर्धनता, विपन्नता नहि, अपितु सम्पन्नता आ समानता अछि, जतऽ सम्पन्नता आ समानता अछि ओतहि सत्य थिक, शिव थिक (?) आ सुन्दर सेहो। तेँ बागमतीक प्रवाह अपनेक सहयोगक सही दिशाक अपेक्षा रखैत अछि।''[1]

जेँ एकर सम्पादक राष्ट्रीयताक संपोषक रहलाह अछि, तेँ एहि उद्देश्यमे तकर प्रतिध्वनि सुनि पड़ैत अछि आ जेँ हेतु मातृभाषानुरागी ओ मैथिलीक अध्येता रहलाह अछि, तेँ मैथिलीक समस्या पर सेहो विचार सब प्रकाशित कयने छथि।

मैथिली पत्र-पत्रिकाक परम्परामे जे प्रवृत्ति रहलैक अछि से एहूमे दृष्टि-गोचर होइत अछि। अर्थात् एहूमे किछु कविता, एक-आध कथा, किछु लेख, भ' सकल तँ किछु अनुवाद आदि छपैत रहल। एहिमे अनुवादक रूपमे ऋग्वेदक दानसूक्त, समाजसूक्त आदि छपल अछि, जकर अनुवादक थिकाह आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'।

पूर्वमे कहल गेल अछि जे ई एक रष्ट्रवादी पत्रिका छल। एहि कथनक पुष्टिमे निम्नङ्कित अंशक अवलोकन कयल जा सकैत अछि। सम्पादकक लेखनीसँ कहल गेल अछि—

"..........अगिला वर्ग, पछिला वर्ग, अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक, हरिजन, गिरिजन, आदिवासी, वनवासी, छात्रसंघ, अध्यापकसंघ, कृषक संघ, श्रमिक संघ, संगठनक संख्या सैकड़ो नहि, हजारो होइछ। आ एते राश संगठन जँ राष्ट्रिय दृष्टिकोण सँ सामूहिक उत्थानकेँ लक्ष्य मानि प्राण-पणसँ जूटि जाइत तऽ की ई दुर्गतिक स्थिति अबैत ?.......

वास्तविकता तऽ ई अछि जे अपन-अपन नेतृत्व ठाढ़ करबाक हेतु संगठन निर्माण होइछ। संगठनमे जाहि सामान्य नागरिक, छात्र, श्रमिक वा कृषककेँ सम्बद्ध कयल जाइछ तकरो व्यापक राष्ट्रिय उत्थानक दृष्टिकोणसँ समूहक कल्याणक हेतु काज करबाक आदर्शसँ अनुप्राणित करबाक यत्नक स्थान पर वैयक्तिक लाभक प्रलोभन देल जाइछ। वैयक्तिके लाभकेँ प्रज्वलित कऽ तालाबन्दी, हड़ताल, घेराव आदिक अनुष्ठान पूर्ण कयल जाइछ।............ तेँ आजुक अनिवार्य आवश्यकता अछि वैयक्तिक महत्त्वाकांक्षाक राष्ट्रिय

---

१. प्रथम अङ्कक सम्पादकीय, पृ० १।

Scanned by CamScanner

महत्त्वाकांक्षाक वेदी पर बलिदान करबाक। जावत समग्र राष्ट्रक समृद्धि-शाली, पराक्रमी प्रतिमा नहि ठाढ़ होयत ताबत वैयक्तिक जीवन सुखी सम्पन्न नहि होयत।''[1]

एहिमे अनेक राष्ट्रिय समस्यापर विचार व्यक्त कयल जाइत छल। परिवार-नियोजन, त्रिभाषा फार्मूला, अर्थ-चिन्तन, शिक्षा-पद्धति आदि व्यापक विषयपर विभिन्न व्यक्तिसँ लिखबाओल जाइत छल। भाषा एकर प्रौढ़ ओ प्राञ्जल छलैक। मैथिली आन्दोलनक गतिविधि पर सेहो ध्यान राखल जाइत छल। एहि सब विषयवस्तुपर दृष्टिपात कयला उत्तर स्पष्ट रूपें बुझना जाइछ जे मैथिली पत्र-पत्रिका सबमे 'बागमती'क अपन स्वतन्त्र ओ बेछप व्यक्तित्व छलैक।

एहिमे लिखनिहारलोकनि छलाह—डॉ० मधुकर एस० भट्ट, डॉ० श्री काशीनाथ झा 'किरण', श्री मार्कण्डेय प्रवासी, श्री आनन्द मोहन, श्री इन्द्र नाथ झा, प्रो० श्री दिनेश्वर झा 'दीन', श्री शंकर मिश्र, श्री गोविन्द चौधरी, श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', श्री केदारनाथ मिश्र, डॉ० श्री रमाकान्त पाठक, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, श्री बदरीनाथ झा, श्री जगदीश प्रसाद कर्ण, श्री श्रीमन्त पाठक, श्री अभय आनन्द, श्री सत्यनारायण झा, श्री बालकृष्ण झा, आचार्य श्री मणिनाथ, श्री उपेन्द्र झा, श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', श्री सोमदेव, श्री कमलेश, श्री तृप्तिनारायण लाल, श्री रमाकान्त राय 'रमा', श्री शैलेन्द्र, डॉ० श्री रमण आदि। ईहो मात्र ६ अंक प्रकाशित भ' बन्द भ' गेल।

मिथिला

एहि नामक उपयोग मैथिली पत्रकारितामे वारंवार होइत रहल अछि। सर्वप्रथम एहि नामसँ बाबू भोलालाल दास मासिक पत्र प्रकाशित करैत छलाह, जकर विवरण-विवेचन पूर्वहि देल जा चुकल अछि। १९५२-५३ ई०मे डॉ० श्री लक्ष्मण झा साप्ताहिक पत्रक हेतु एहि नामक उपयोग कयने छलाह जकर विचार साप्ताहिक पत्रक प्रकरणमे कयल जायत।

१९६८ ई०मे आचार्य भोलानाथ मिश्र एही नामसँ मासिक पत्रिकाक

१. बागमती, वर्ष १, अंक २, पृ० १—२।

Scanned by CamScanner

प्रकाशन लक्ष्मीसागर, दरभङ्गासँ आरम्भ कयलनि। एकर संरक्षक छलाह तत्कालीन मैथिली-साहित्य-परिषद्क अध्यक्ष बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंहजी।

आत्म-निवेदन शर्षक सम्पादकीयमे एकर उद्देश्यपर प्रकाश दैत सम्पादक लिखने छथि—

"..........'मिथिला' मासिक मैथिली साहित्य पत्रिका थिक। साहित्य शब्दक व्यापक अर्थमे प्रयोग भेलैक अछि। मिथिला सर्वांशतः मिथिलाक प्रतिनिधित्व करत। मैथिलक प्रकृति-प्रवृत्ति आ गौरवमय अतीतक अनुकूल मिथिलाक सांस्कृतिक, सामाजिक ओ आर्थिक व्यवस्थासँ सम्बद्ध प्रश्नपर विशिष्ट व्यक्तिक मन्तव्य प्रस्तुत करबाक प्रयास करत।"

एकरा आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', डॉ० श्री लक्ष्मण झा, आचार्य रमानाथ झा, प्रो० श्री तन्त्रनाथ झा, डॉ० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश', डॉ० बच्चन आदिक सहयोग प्राप्त छलैक। परन्तु एकमात्र अङ्क प्रकाशित भ' ई सर्वदाक हेतु बन्द भ' गेल।

मिथिला आलोक

१०६९ ई०क फरवरी माससँ 'मिथिला आलोक' नामक एक मासिक पत्रिका श्री ओमप्रकाश उपाध्यायक सम्पादकत्वमे फीरोजाबाद (उत्तर प्रदेश) सँ प्रकाशित होअय लागल। मुख्यतः ई हिन्दी भाषाक पत्रिका छल। प्रवासमे बसनिहार मैथिल ब्राह्मणलोकनि द्वारा ई संचालित होइत छल। अतः मुख्य रूपें प्रवासी मैथिल ब्राह्मणकें संगठित करब एकर मुख्य उद्देश्य छलैक। हिनका लोकनिक पूर्वज मिथिलासँ जाय उत्तर प्रदेशक विभिन्न स्थानमे बसि गेल छलथिन। मैथिल महासभाक सम्पर्कमे अयलाक कारणें मैथिलीभाषाक पुनः मोह जागि गेल छनि। अतः प्रवाससँ प्रकाशित एहन पत्र-पत्रिकामे मैथिलीकें सेहो किछु स्थान प्राप्त होइत रहलैक। ताही परम्परामे मिथिला-आलोकमे सेहो यदा-कदा उपलब्ध मैथिलीक एक-आध रचना प्रकाशित होइत रहल अछि। एकर एकमात्र उपलब्धि ई कहल जाय सकैत अछि जे प्रवासीलोकनिकें अपन पूर्वजक मातृभाषाक स्मरण करबैत रहलनि अछि। रचनाक दृष्टि सँ कोनो विशेष

Scanned by CamScanner

उपलब्धि भेल हो से नहि कहल जाय सकैत अछि। एखनहुँ ई प्रकाशित होइत अछि।

पाग

१९७९ ई०क दिसम्बर माससँ हिन्दू विश्वविद्यालयक किछु उत्साही छात्रलोकनिक सत्प्रयाससँ श्री अरुण कुमार झाक सम्पादकत्वमे 'पाग' नामक एक मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल छल। एकर पहिल अंक 'साइक्लोस्टाइल' प्रकाशित भेल अछि। तकर बादक अंक हमरा दृष्टिमे नहि आयल अछि। प्रवासमे रहि मातृभाषाक मन्दिरमे दीप जरबैत रहबाक उद्देश्यसँ एकर प्रकाशन आरम्भ भेल अछि। एकर भविष्यक प्रसङ्ग एखन नहि किछु कहल जाय सकैत अछि।

शक्तिभूमि

१९७१ ई०क मइ माससँ लहेरियासरायसँ श्री नारायण झाक सम्पादकत्वमे 'शक्तिभूमि' नामक एक मासिकक प्रकाशन आरम्भ भेल। एक अथवा दू अंक प्रकाशित भ' बन्द भ' गेल आ मैथिली पत्र-पत्रिकाक संख्यामे एक वृद्धि क' गेल। एहिमे राजनीतिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक लेखक संग मातृभाषा मैथिलीक स्वत्वरक्षार्थ विचारात्मक लेख, कथा ओ कविता जेना आन पत्र सबमे छपैत अछि तहिना छपैत छल।

अम्बर ज्योति

ई मैथिली सांस्कृतिक मासिक संकलन छल जे डा० श्री छत्रधारी दासक सम्पादकत्वमे १९७२ ई०मे दरभंगासँ प्रकाशित होअय लागल छल। एकर कतेक अंक प्रकाशित भ' सकल तकर सम्पूर्ण सूचना प्राप्त नहि भ' सकल। जे एक-आध अंक दृष्टिपथपर आयल से एकरो गतानुगतिकता प्रमाण-प्रतीत भेल।

□

Scanned by CamScanner

साप्ताहिक पत्र-पत्रिका

मिथिला मिहिर

एहि ७५-७६ वर्षक अवधिमे गोटेक दर्जन साप्ताहिक पत्रक प्रकाशन भ' चुकल अछि। एहिमे अधिकतर अल्पजीविए अछि, परन्तु जे सर्वप्रथम एहि क्षेत्रमे अवतीर्ण भेल सैह एखनहुँ धरि जीवित अछि जकरा 'मिथिला-मिहिर'क नामसँ मैथिलीसँ कनेको रुचि रखनिहार जनैत छथि। ओना साप्ताहिकक रूपमे प्रकाशित पत्र सबमे 'मिथिला सेवक', 'मिथिला', 'जनक', 'मातृवाणी', 'स्वदेशवाणी', 'टटका,' 'मिथिलाभूमि,' 'मिथिला टाइम्स' 'चरचा,' 'समाद' ओ 'विकल्प'क नाम गनाओल जाय सकैत अछि।

वस्तुतः मिथिला-मिहिर १९०९ ई०क मकर संक्रान्तिसँ मासिक पत्रिकाक रूपमे मिथिलेश रामेश्वर सिंहक संरक्षकतामे दरभङ्गासँ प्रकाशित होअय लागल। एकर प्रथम सम्पादक भेलाह प० विष्णुकान्त झा शास्त्री। ध्यातव्य जे 'मिथिला-मिहिर' मात्रकेँ वेतनभोगी सम्पादक भेटलथिन। पहिने कहल जा चुकल अछि जे जेँ ई पत्र मासिक रूपमे आरम्भ होइतो प्रथम साप्ताहिकक रूपमे परिवर्त्तित भ' गेल, अतः एहिपर साप्ताहिके सभक संग विचार कयल जायत।

जहिया ई आरम्भ भेल तहिया एहूमे प्रमुखता हिन्दी तकरे छलैक। एहिसँ पूर्व जयपुरसँ 'हितसाधन' ओ काशीसँ 'मोद'क प्रकाशन आरम्भ भ' चुकल छलैक जाहि दुनू पत्रिकामे सेहो हिन्दीकेँ स्थान देल गेल छलैक। अन्तर ई छलैक जे उक्त दुनू पत्रिकाक मुख्य स्वर मैथिली छलैक आ अङ्गरूपमे हिन्दी स्थान प्राप्त कयने छल, परन्तु 'मिथिला-मिहिर'क मुख्य स्वर हिन्दी छलैक तथा अंग रूपमे मैथिलीकेँ बहिकिरनी जकाँ एक कोनमे बसा लेल गेल छलैक। अतः आरम्भिक कालमे एकरा हिन्दिएक पत्र कहब विशेष युक्ति-संगत प्रतीत होइत अछि।

मिथिला-मिहिरपर विचार करबाक हेतु एकरा चारि कालखण्डमे विभाजित करब युक्तियुक्त होयत—मासिक मिथिलामिहिर १९०९ ई०सँ १९११ई०; साप्ताहिक १९११सँ १९३४ई०; श्री सुमनजीक संपादनकाल १९३५ ई०सँ १९५४ ई०; तथा पटनासँ पुनः प्रकाशित १९६० ई०सँ अद्यपर्यन्त।

Scanned by CamScanner

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ मिथिला—मिहिर ॥

भाग [१] } मकरको संक्रान्ति पौ कृ० ७ । १९६५ { प्रकाश [१]

मङ्गला[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible]:

[illegible]

मिहिरोदय प्रस्तावे प्राचां श्लोकाः,

माघे ११ सर्गे ।

[illegible] पद्मिनीभिः ।

[illegible],

[illegible] वालसूर्य्यः ॥[illegible]॥

[illegible] क्ष्मातलन्यस्तपादः

[illegible] लोकम् ।

[illegible]शिष्यमाणः,

[illegible] ॥४८॥

प्रसन्नराघवे तृतीयेऽङ्के ।

[illegible] तारागण-
[illegible]परीहासाय भासांनिधिः
[illegible]रसन्यासाय पङ्केरुहो
[illegible]साय विद्योतते ।२।

लालयन्तमरविन्दवनानि,
क्षालयन्तमभितोभुवनानि ।
पालयन्तमथ कोककुलानि,
ज्योतिषां पतिमहं महयामि ॥३५॥

यावज्ञीगनिधेः प्रभातसमयः प्रोद्[illegible] लोकत्रयी-

मिहिरक प्रसङ्ग विभिन्न इतिहासकारलोकनि जे अपन-अपन मन्तव्य प्रकट कयने छथि, पहिने तकर उल्लेख क' देब युक्तिसंगत होयत। सबसँ पहिने स्व० पुलकित लाल दासक विचार देखल जाय। ओ लिखने छथि—

"सन् १९०७ किम्बा १९०८ ई० मे दरभंगा सौं 'मिथिलामिहिर' नामक पत्र प्रथम मासिक रूपमे प्रकाशित कैल गेल, जे एक वा दु वर्षक पश्चात् साप्ताहिक रूपें परिणत कै देल ओ आइ धरि ओहि रूपमे चल अबैछ। एहि पत्रक आइ धरि पाँच सम्पादक भै गेल छथि—प्रथम प० विष्णुकान्त झा जो बी० ए० (आब बी० एल० सेहो), स्वर्गीय प० योगानन्द कुमर जी, प० जनार्दन झाजी (वाजितपुर), प० कपिलेश्वर झाजी शास्त्री तथा वर्त्तमान सम्पादक पं सुरेन्द्र झा 'सुमन'।.........'मिथिला-मिहिर'क मासिक संस्करण हमरा दृष्टिगोचर नहि भेल छल। साप्ताहिक संस्करण हम स्वर्गीय कुमर जीक सम्पादन काल सौं पढ़ैत अबै छी। ई पत्र प्रारम्भहि सौं हिन्दी-मैथिलीमे प्रकाशित भेल अबैछ। एहि पत्रक नीति सर्वदा अत्यन्त नरम, भाषा त्रुटि पूर्ण ओ शिथिल, एवं प्रेसक त्रुटि सेहो सदा सौं चल अबैछ। समयोपयोगी विषय-संकलनक अभाव एवं नियमानुसार प्रकाशनाभाव तँ एकर सनातन धर्म अछि। एक तँ एहि पत्रके मैथिली-भाषाक पत्र मानब अनुचित। हेतु जे एहि पत्रमे हिन्दी-भाषाकें प्रधान ओ विशेष स्थान देल गेल अछि तथा मैथिलीकें गौण एवं बहुत थोड़। हम राष्ट्र-भाषा हिन्दीक विरोधी नहि, किन्तु ई सर्वथा उचित जे मैथिली-भाषाक पत्र-पत्रिकादिमे मैथिली भाषाक प्रधानता रहबाक चाही। कुमरजीक समयमे, एकर दशा किछु नीक छल ओ प० जनार्दन झाजीक समयमे मैथिली-भाषाकें विशेष स्थान प्रदान कैल गेल छल। किन्तु ओहि समयमे प्रेसक त्रुटिक पूर्ण बाहुल्य छल। वर्त्तमान समयमे तँ हम निःसंकोच कहि सकै छी जे सम्प्रति मिथिला मिहिर कें समयानुसार समाचारपत्र कहब समाचारपत्रक वास्तविक तत्व सौं सर्वथा अनभिज्ञता प्रगट करब थीक। ई कहबाक प्रयोजन नहि जे एहिमे अर्थाभाव नहि अछि। किन्तु कुशल प्रबन्धकक एहिमे सर्वदा अभाव भेल आएल अछि। सौभाग्यक विषय जे वर्त्तमान सम्पादकक परिश्रमसँ पत्रक बहुत किछु उन्नति भेल अछि ओ हैबाक सम्भावना अछि। हँ, हिन्दीक प्रधानता एखनहु पूर्ववते अछि।

नीतिक सम्बन्धमे सेहो हमरा कोनो विरोध नहि। सम्प्रति एहनो पत्र-पत्रिका अनेक विद्यमान अछि, जकर नीति अत्यन्त नरम अछि, किन्तु जे

Scanned by CamScanner

समयोपयुक्त समाचारादि एवं विविध प्रकारक अन्यान्य उपयुक्त सामग्री आदि सौं जनताक पूर्ण रूपेण मनोरञ्जन कै रहल अछि। 'मिथिला-मिहिर'क प्रचारक सम्बन्धमें कही नहि पड़त जे ओहि पत्रक ग्राहको 'मिथिला'क सम्पादकक मते, अधिकतः राजक तहसीलदार एवं पटवारिये लोकनि छथि। की हम आशा कै सकै छी जे वर्त्तमान मिथिलेश महोदय मैथिल जनताक मातृभाषाक एकमात्र साप्ताहिक पत्र 'मिथिला-मिहिर'कें वास्तविक मैथिली भाषाक पत्र बनैबाक हेतु, ओहिमे मैथिली-भाषाकें प्रधान एवं विशेष स्थान प्रदान कय, ओकरा जनताक लाभार्थ एवं मनोरञ्जनार्थ विविध विषय विभूषित, समयोपयोगी एवं समयानुसार समाचार दाता तथा सचित्र आदि विषय युक्त "श्रीकृष्ण सन्देश", "देश" तथा "कर्मवीर" आदिक सगान उच्च कोटिक पत्र बनैबाक कृपा करताह ?"[१]

बाबू लक्ष्मीपति सिंह जे 'मिथिलामिहिर'क प्रसङ्ग अपन मन्तव्य व्यक्त कयने छथि से निम्नाङ्कित अछि—

"हँ, जयपुर आओर काशीक देखादेखी सन् १९०८ ई०मे मिथिला मध्य दड़िभङ्गहुसँ "मिथिला-मिहिर" नामक एक मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ कएल गेल ओ सन १९११सँ हिन्दी-मैथिली-साप्ताहिक रूपें प्रकाशित होमए लागल। सन् १९३१-३२ ई०मे तँ मिहिर अंगरेजियहुँ कएँ स्थान देबए लागल, किन्तु ओहू त्रैभाषिक-परीक्षणसँ मिहिरक कोनहु प्रचारात्मक व्यापकता नहि बढ़ि सकल। यद्यपि मिथिलामिहिर कएँ आरम्भहिसँ प० विष्णुकान्त झा शास्त्री, म० म० पं० परमेश्वर झा, पं० जगदीश प्रसाद ओझा, पं० योगानन्द कुमर, पं० जनार्दन झा 'जनसीदन', पं० कपिलेश्वर झा शास्त्री, तथा अन्तमे पं० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' जी सँ सुसम्पादित होइत रहबाक गौरव प्राप्त होइत रहलैक तथा श्री सुमनजीक सम्पादकत्वमे 'मिहिर' मिथिलांक सन विशालकाय विशेषांक प्रकाशित कए मैथिली साहित्यक इतिहासमे एक उत्कृष्ट परिच्छेद जोड़ि देने छल, तथापि मैथिल महासभाक नवसूत्री योजनामे सिद्धान्ततः सीमित ई परम्परावादी मिहिर समस्त मिथिला कएँ आलोकित नहि कए सकल। फलतः सन् १९५२क पश्चात् हिन्दी-मैथिली-साप्ताहिक 'मिथिला-मिहिर'क प्रकाशन दड़िभंगासँ बन्द कए देल गेल।

---

१. गद्य कुसुम माला (तृतीय सं०), पृ० ७३-७४।

Scanned by CamScanner

ओम्हर, स्वर्गीय महाराजाधिराज सर डाक्टर कामेश्वर सिंह बहादुर मिथिला मिहिर कएँ एक स्वतंत्र, सचित्र, साप्ताहिक मैथिली पत्रक रूपमे प्रकाशित होइत देखबाक इच्छासँ मिथिला-मिहिरक प्रकाशनभार अपन पटना स्थित न्यूज-पेपर्स ऐण्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी कएँ देल। फलतः सन् १९६० ई०सँ 'मिथिला-मिहिर' विशुद्ध मैथिली साप्ताहिक रूपमेअ विरल गतिञो प्रकाशित होइत आबि रहल अछि। मिहिरक सम्पादक छथि श्री सुधांशु शेखर चौधरी, आओर सहयोगी छथिन्ह श्री उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', श्री मन्त्रनाथ झा 'हंसराज' तथा श्री भीमनाथ झा। किन्तु, खेदक ओ ग्लानिक विषय एतबेक जे प्रचार-प्रसारादिक यथावश्यक सभ साधनक रहितहु 'मिथिला-मिहिर' एहि चौदह (आब बीस) वर्षहुमे एखन धरि स्वावलम्बी नहि बनि सकल अछि। की विडम्बना! कहि नहि, एहि राहुग्रस्ततासँ मिहिर' कहिया धरि कोना मुक्त भए अपन नाम गुण कएँ वस्तुतः चरितार्थ कए सकत!!!''[1]

डॉ० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपना इतिहासमे मिथिला-मिहिरक प्रसंग लिखने छथि—

'मिथिला-मिहिर १९०८ ई० मे प्रकाशित होएब आरम्भ भेल ओ बीच-बीचमे बन्द भए आइधरि प्रकाशित भए रहल अछि। एकर सम्पादक भेलाह विष्णुकान्त झा शास्त्री (१९०८-१२), म० म० परमेश्वर झा, जगदीश प्रसाद ओझा ओ योगानन्द कुमर (१९१२-१९१९), जनार्दन झा 'जनसीदन' (१९१९-२१), कपिलेश्वर झा शास्त्री (१९२२-३५), श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' (१९३५-५४), एवं श्री सुधांशु शेखर चौधरी (१९६० सँ अद्यपर्यन्त)। आरम्भमे एहि मध्य मैथिलीक स्थान बड़ गौण रहैत छलैक ओ अधिकांश हिन्दीमे सएह लेख छपैत छल। एकर प्रकाशनक आरम्भ मासिकक रूपमे भेल किन्तु धीरे-धीरे साप्ताहिक भए गेल। १९३०-३१ मे तँ एहि मध्य अंगरेजीक लेख सेहो छपए। परन्तु धीरे-धीरे अंगरेजी-हिन्दीक स्थान गौण होइत गेल एवं मैथिलीक स्थान प्रधान। जहिआसँ एकर प्रकाशन पटनासँ होअए लागल अछि, तहिआसँ एहि मध्य एक मात्र मैथिलीक रचना छपैत अछि। यद्यपि एकर प्रकाशक दरभंगा-राजसँ

---

१. मै० सा० रूपरेखा, द्वि० खण्ड, पृ० ८२।

सम्बद्ध सम्पन्न संस्था सभ सएह रहल अछि, तथापि एकरा जतेक ओ जतबा (?) आत्मविश्वासक संग कार्य करबाक चाही, ततबा नहि कए सकल अछि आओर ने तदनुरूप परिनिष्ठित रूपमे मुद्रित भेल अछि। मुदा आरम्भसँ आइ धरि, मैथिलीक धरधराइत प्रकाशकेँ ई कहिओ मिझाए नहि देलक। अत: 'मिहिर' मिथिलाक जागरण तथा मैथिली साहित्यक अभिवर्द्धनक सदैवसँ प्रधान वाहन रहल अछि। एकर विशेषांक, विशेषत: १९३५ मे प्रकाशित 'मिथिलांक क' मैथिलीक पत्रकारिताक इतिहासमे बड़ महत्त्वपूर्ण स्थान अछि आओर एहि अंकक द्वारा प्राचीन ओ अर्वाचीन मिथिलाकेँ बहुत दूर धरि चिन्हल जा सकैत अछि। १९६० क पश्चात् मिहिरक द्वारा प्रयोगशील साहित्यकेँ विकासक माध्यम भेटि गेल छैक, विशेषत: कथा तथा नारीमनोरंजक साहित्यक निर्माणमे ई अपन महत्त्वपूर्ण योगदान दए रहल अछि।''[१]

आब 'मिथिला-मिहिर'क जन्म ओ पुनर्जन्मक प्रसङ्ग पाण्डित श्री गिरीन्द्र मोहन मिश्र जी जे अपना संस्मरणमे उल्लेख कयने छथि तकरो उद्धृत क' देब समीचीन होयत। श्रीयुत मिश्र जी लिखने छथि—

'१९०८ मे बी० ए० परीक्षा देबाक बाद कौलेजक ग्रीष्मावकाशमे हम अपन घरहि पर छलहुँ। एही ग्रीष्मावकाशमे हम अपन मित्र कैलूबाबूसँ भेट करए दुलारपुर गेलहु आओर हुनक आग्रहसँ दुलारपुरमे दू दिन रहए पड़ल। हमर जएबाक पहिनहिसँ हमरा लोकनिक मित्र बाबू सूर्यदेव नारायण, जनिका विषयमे किछु चर्चा आनठाम कएल अछि, सेहो दुलारपुरमे रहथि। सूर्यदेव बाबू आओर हम एक दिन वार्त्तालाप करैत एक हिन्दीक मासिक पत्र प्रकाशित करबाक आयोजनक विषयमे गप्प कएल, किन्तु कोनो मासिक पत्रक प्रकाशन द्रव्य साध्य छल, तएँ ई विचार भेल जे एहि विषयमे दरिभंगा जाए आवश्यक द्रव्य संचयक कोनो उपाय होएबाक चाही। एहि ग्रीष्मावकाशमे किछु दिनुक बाद हमर जेठ भाए, जनिक अवस्था ३१ म वर्ष छलैन्हि, सन्निपात ज्वरसँ ग्रसित भए स्वर्गवासी भए गेलाह। हिनक निधनसँ हमरा परिवार पर वज्राघात भए गेल। एहि दुर्घटनाक कारणेँ हमर परिवारक लोकक तथा सङ्गहि-सङ्ग हमरो चित्त व्यग्र भए गेल छल। हिन्दी मासिक पत्रक प्रकाशन अथवा एहि प्रकारक कोनो आयोजनक

१. पृ० १२३-२४।

दिश ध्यान राखब असम्भव भए गेल। ग्रीष्मावकाश समाप्त होइतहि हम कानून पढ़बाक हेतु पटना चल गेलहुँ।

एमहर सूर्यदेव बाबू दरिभंगा आबि यथा समय अपनहि महल्लामे रहनिहार पण्डित जगदीश्वर प्रसाद ओझासँ हिन्दीमे मासिक-पत्र प्रकाशित करएबाक आयोजनक सम्बन्धमे गप्प कएलैन्हि आओर निश्चय कएलैन्हि जे दरिभंगाक महाराजाधिराजक आर्थिक सहायता बिना एहि कार्यमे झट दए सफलता होएब सम्भव नहि। तएँ जगदीश्वर प्रसाद ओझा, जे बंगाली बाबूक नामसँ प्रसिद्ध छलाह, तथा सूर्यदेव बाबू दूनू गोटे बाबू तुलापति सिंहक भेट कएलथिन्ह। बाबू तुलापति सिंह महाराजाधिराजक प्राइवेट औफिसक औफिसर रहथि आओर दरिभंगा राजवंशेक बबुआन छलाह। बाबू तुलापति सिंहसँ ई दुनू गोटे एहि प्रकारक हिन्दी मासिक पत्रक प्रकाशन मे आर्थिक सहायता देबाक हेतु महाराजसँ निवेदन करबाक आग्रह कएलथिन्ह। बाबू तुलापति सिंह कहलथिन्ह जे यदि एहि मासिक पत्रमे चतुर्थांशो स्थान मैथिली भाषाकेँ देल जाइक तँ हम महाराजसँ एहि विषयमे आर्थिक सहायता देबाक हेतु कहबैन्हि। ई दुनू गोटे एहि प्रस्ताव केँ सहर्ष स्वीकार कएल आओर बाबू तुलापति सिंहक कहला सँ महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह मिथिलामिहिर नामक मासिक पत्र प्रकाशनक सम्बन्धमे समस्त खर्चक भार लए लेलथिन्ह।

फलतः राज दरिभंगाक सहायतासँ मिथिलामिहिर प्रकाशित होएब निश्चित भेल। एहि मासिक पत्रक सम्पादक भेलाह पं० विष्णुकान्त झा जे ओहि समयमे राजस्कूलक हेडमास्टर छलाह। ई भेलाह सम्पादक अवैतनिक। यथार्थमे एहि पत्रक सम्पादनक भार देल गेलन्हि पंडित जगदीश्वर प्रसाद ओझाकेँ जे औपचारिक रूप सँ एहि मासिक पत्रिकाक संयुक्त सम्पादक नियुक्त भेलाह। मिथिला मिहिरक प्रकाशनक निश्चय भेलापर एहि विषयक सूचना हमरा देल गेल आओर हमरा सँ इहो आग्रह कएल गेल जे अभिलषित हिन्दी मासिक पत्र सेहो प्रकाशित भए रहल अछि यथाशीघ्र अपन लेख एहिमे प्रकाशनार्थं पठाबी। हम ओहि समयमे पटनामे छलहुँ आओर कानूनक अध्ययन करैत छलहुँ। मिहिरक पहिले अङ्कमे प्रकाशनक हेतु हम अपनो एक लेख देल जे प्रकाशित भेल। तकरा बाद समय-समय पर हम मिथिला मिहिर मे प्रकाशनक हेतु लेख पठबैत रहलहुँ।

Scanned by CamScanner

मिथिला मिहिर मासिक पत्रक रूपमे तीन वर्ष तक चलल। तीन वर्ष तक प्रकाशित भेलाक बाद महाराज प्रसन्न भए एकरा साप्ताहिक पत्रक रूप देबाक निश्चय कएल आओर चारिम वर्षसँ मिथिला मिहिर साप्ताहिक पत्रक रूपमे प्रकाशित होअए लागल आओर बराबरि प्रकाशित होइत छल। प्रारम्भहिमे कएल निश्चयक अनुसार मिथिला मिहिरक एक अंश प्रायः चतुर्थांश मैथिलीभाषामे रहैत आएल। एम्हर आबि बहुतो वर्षक बाद दिवंगत महाराज कामेश्वर सिंह बहादुरक समयमे मिथिला-मिहिरक प्रचारमे क्रमशः शिथिलता पाओल गेल। एहि शिथिलताक कारणक समीक्षा करबाक हम एहि ठाम प्रयोजन नहि बुझैत छी। मिथिला मिहिरक प्रचारमे शिथिलता तथा आओर कारणसँ महाराज कामेश्वर सिंह हठात् एकर प्रकाशन बन्द कए देल। मिथिला मिहिरक प्रकाशन बन्द भेलासँ स्वभावतः हमरा हृदयमे बड़ क्षोभ भेल। किछुए दिनक बाद संयोगवशात् पं० जगदीश्वर प्रसाद ओझा हमरा ओहिठाम अएलाह आओर मिथिला मिहिरक प्रकाशन बन्द भेलापर अपन दुःख आओर खेद प्रकट कएलैन्हि। हुनकहु एहि विषय मे खेद होएब स्वाभाविके छलैन्हि। ओ हमरासँ एहि पत्रक पुनः प्रकाशन हेतु महाराजसँ अनुरोध करबाक आग्रह कएलैन्हि। हम किछुए दिनक बाद यथा समय दिवंगत महाराजसँ मिथिला मिहिरक उपर कहल इतिहास कहि सुनौलिऐन्हि आओर एकर पुनः प्रकाशनक औचित्य हुनका समक्ष प्रस्तुत कए देलिऐन्हि। महाराजके एहिसँ मिथिला मिहिरक पुनः प्रकाशन करबाक औचित्य हृदयंगम भेलैन्हि ई हमरा बुझना गेल।

किछुए दिनक बाद १९५९ ई०मे अजमेर मे मैथिल महासभाक अधिवेशन भेलैक आओर एहि अधिवेशन मे महाराजक समक्ष मिथिलामिहिरक प्रकाशनक सम्बन्धमे प्रवासी मैथिल प्रस्ताव उपस्थित करए चाहैत छलाह। प्रस्ताव उपस्थित करबाक पहिनहि कतेको महासभाक मुख्य कार्यकर्त्ता लोकनि महासभा सँ मिथिला मिहिर के कोनो सम्बन्ध नहि रहबाक कारणे अप्रासंगिक जानि विरोध कएलथिन्ह, किन्तु सभाक अधिवेशनमे मिथिला मिहिरक प्रकाशनक अनौपचारिक रूपें श्री चन्द्रनाथ मिश्र प्रसिद्ध अमरजी प्रवासी मैथिलक इच्छासँ महाराजके अवगत कराए देलथिन्ह तखन किछुए दिनुक बाद महाराज हमरा समक्षहि मे आर्यावर्त्त पत्रक सम्पादक पं० श्री श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार तथा एकर मैनेजर श्री उपेन्द्राचार्यके न्यूज पेपर्स एण्ड पब्लिकेशन्स लिमिटेड कम्पनी द्वारा मिथिलामिहिर साप्ताहिक रूपमे

Scanned by CamScanner

प्रकाशित करयबाक आदेश देल। महाराजक आदेशानुसार एहि कम्पनी द्वारा मिथिलामिहिर पुनः साप्ताहिक रूपमे प्रकाशित होएब आरम्भ भेल आओर प्रकाशित भए रहल अछि।"[1]

डॉ० श्री जयकान्त मिश्र अपन 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर'मे 'मिथिला मिहिर'क परिचयात्मक विवरण देने छथि।[2]

हमरा समक्षमे मिथिलामिहिर (मासिक)क प्रथम अंक अछि जाहिमे मकर संक्रान्ति संवत् १९६५ छपल अछि। मकर संक्रान्ति १४ जनवरीकेँ होइत अछि तथा संवत् फाल्गुनी पूर्णिमाक बाद बदलैत अछि। १९८०क

१. किछु देखल किछु सुनल, पृ० ७४-७७।

२. Two years later in 1905, a monthly magazine, called 'Mithila-Mihira', which destined to function from March 1911, as the longest lived Maithili weekly was published from Darbhanga. It has had Maithili, Hindi and, even English [during 1930-31] editions. It has published important essays, poems, and other materials and in general, has fulfilled the founder's wish ("to creat an awakening among the great Maithil Community). Its editorial policy has been peaceful and orderly advocacy of progress. In recent years, it has published special Numbers on several occasions. Among them the Mithilanka (Vol. XXIX, 1935) is indeed a storhouse of information on Mithila and her culture. It has shown half-hearted enthusiasm for the cause of Maithili according to some people because of its bilingual or even trilingual character for some time—but on the whole, it has kept the torch of awakening burning in Mithila all through these decades of the present century. Today it has became a purely Maithili weekly and its New Series begun in 1960) is being published from Patna.—पृ० २३०।

Scanned by CamScanner

मकर संक्रान्तिक दिन २०३६ संवत् छल। एहिमे १९६५ घटाओलासँ ७१ वर्ष होइत अछि अर्थात् १९८० मे ७१ घटा देला उत्तर १९०९ ई० होइत अछि। तेँ उपर्युक्त उद्धरण सबमे जे एकर प्रकाशनक आरम्भ १९०८ लिखल गेल अछि से सर्वथा भ्रामक अछि। वस्तुतः १९०९ ई० होयबाक चाही जे तथ्य अछि।

एहि प्रसङ्ग दोसर प्रमाण अछि जे राजा बहादुर विश्वेश्वर सिंहक जन्मक अवसरपर हिन्दीमे एक शीर्षक छपल अछि—"मिथिलामे आनन्द"। प्रकाशित विषय वस्तु निम्नांकित अछि—

"आज मिथिला मे जिधर देखिये उधर आनन्द ही आनन्द है। मनुष्य का कौन कहे पशु पक्षी, लता, गुल्म, वृक्ष, पौधे सभी आनन्द में मग्न हैं। पक्षीगण आनन्द से चहचहा रही हैं—आशीर्वाद दे रही हैं। वृक्ष, पौधे आनन्द से झूम रहे हैं—मस्त हो रहे हैं। गत चैत्र शुक्ल पक्ष ४ चतुर्थी उपरान्त पंचमी मिथिला के लिए एक चिरस्मरणीय शुभ दिन था। उसी दिन रात्रि के शेष भाग में (शुक्रवार के प्रातः चार बजकर चार मिनट पर) श्री५मान् मिथिलेश्वर के श्रीमान् चि० द्वितीय कुमार का शुभ जन्म हुआ।

उस जगन्नियन्ता सर्वशक्तिमान परमेश्वर से प्रार्थना है कि दोनों कुमारों के तेज को बाल सूर्य्य और चन्द्र की भाँति दिन दुगुना रात चौगूना बढ़ावें। तथा दोनों भाइयों में राम और लक्ष्मण की भाँति भ्रातृ-स्नेह दें।"[1]

ई सर्वविदित अछि जे महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक जन्म भैरवाष्टमी अर्थात् आग्रहायण कृष्ण अष्टमी १९०७ ई० मे भेल छन्हि। यदि मिथिला मिहिर १९०८ सँ प्रकाशित भेल रहैत तँ मात्र चारि मासक बाद उक्त राजा बहादुरक जन्मक समाचार कोना अबैत? अतः प्रकाशन वर्षक प्रसंग एक ठाम जे भ्रान्ति भेल से परम्परासँ चलैत रहल।

श्रीयुत गिरीन्द्र मोहन मिश्रजी मासिकक रूपमे एकर प्रकाशन तीन वर्ष लिखने छथि, परन्तु हमरा १ अप्रैल १९११ ई० सँ एकर साप्ताहिक रूप देखबाक सुयोग भेल अछि। उक्त अङ्कमे मैथिली एको पंक्ति नहि अछि, परन्तु ८-४-१९११क अङ्कमे सम्पादक योगानन्द कुमर लिखने छथि—

"मैथिल भ्रातृगण,

एकरा अवश्य पढ़ब

१. मि० मि०, मण्डल १, प्रकाश ४, मेष की संक्रान्ति। वैशाख १९६६।

......जाहि ऋषि महर्षिक हमरा लोकनि सन्तान छी से बहुत किछु पुण्य संचय कै गेलाह, हुनके लोकनिक पुण्य प्रतापसँ एतबा दिन हम सब निबहलहुँ। परन्तु आब सब ठेकाना लागि गेल। आब बिना अपना लोकनिक पुरुषार्थें किछु नहि हैत। देशक दशा आँखि पसारि देखतहि छी। एकर उद्धार करब की सहज बात थीक। जातिक उद्धार दुइ चारि वर्षें नहि भै सकइत अछि। ओहि में बहुत विलम्ब लागत। अत्यन्त धैर्य, अध्यवसाय देखाब पड़त अत्यन्त स्वार्थ त्याग करै पड़त। पृथ्वीमे जे ई जाति उन्नतिक शिखर पर एखन विद्यमान छथि से दुई चारि दस वर्षक परिश्रमसँ ओ स्थान प्राप्त कैनें छथि? कदापि नहि। बिगड़इत लोककैं देरी नहि लगइ छैक, परन्तु बनबामे अत्यन्त समय लगइ छैक। इतिहास पढ़लासँ ई विषय नीक जकाँ ज्ञात हैत तखन एहि समय में हमरा लोकनि कैं अपन उन्नति करबा मैं निस्सन्देह बहुतो सुविधा प्राप्त अछि। बृटिस सरकार प्रजा हितैषी कार्यमे सहायता देबामे सर्वथा अग्रसर रहइ छथि।"[1]

आदरणीय श्री मिश्रजी ईहो लिखने छथि जे प्रायशः चतुर्थांश रचना मैथिली मे रहैत छल, परन्तु प्रत्यक्ष देखलासँ ज्ञात होइत अछि जे आरम्भ मे चतुर्थांशोसँ किछु अधिके पृष्ठ अर्थात् ३२ पृष्ठक अंक मे सामान्यतः १२ पृष्ठ मैथिली रहैत छल, परन्तु से क्रमशः क्षीण होइत गेल अछि।

प्रथम वर्षक बारहो अंकमे क्रमशः जे लेखक लोकनि मैथिली मे किछुओ लिखैत छलाह ताहिमे म. म. मुकुन्द झा बख्शीक 'शिक्षा विषय', म. म. परमेश्वर झाक 'मिथिला तत्त्व विमर्श', कविवर लाल दासक 'सावित्री सत्यवान नाटक' ओ मिथिलाराजभूषण बाबू तुलापति सिंहक 'मदन राज चरित' प्रकाशित होइत रहलनि। एकर अतिरिक्त श्रीनगराधीश कुमार कमलानन्द सिंहक एक रचना 'मिथिला मे विद्या प्रचारक आवश्यकता' छपल छनि जकरा मैट्रिकक पुरना पाठ्य ग्रन्थ मे 'मैथिलक धनविद्या' शीर्षक सँ स्व० प्रो० रमानाथ झाजी संकलित कयने छलाह। दोसर सामयिक वार्त्ताक अन्तर्गत जगदीश्वर प्रसाद ओझाक 'स्त्री शिक्षा प्रणाली', तेसर प० जीवनाथ रायक 'मिथिलाकेँ कथिक गौरव', चारिम नन्दकिशोर दास दीवानक 'कन्या विक्रय', पाँचम हरिवंश झा मुखतारक 'मिथिलाक अवनतिक कारण', छठम प० ताराचरण झाक ''समाज सुधार' लेख प्राप्त होइत अछि।

---

१. मि० मि०—८.-४.-१९११ ई०, पृ० ४।

अर्थात् कुल ६ व्यक्ति छथि जे मैथिलीमे २-१ पृष्ठ क' लिखने छथि, अन्यथा उपर्युक्त मात्र चारि व्यक्ति लेखकक रूपमे प्रतिष्ठापित बुझना जाइत छथि।

परन्तु हिन्दीओक माध्यमसँ मैथिलीक समर्थन कयल जाइत छल जकर उल्लेख 'मिथिला मोद' पर विचारक प्रसङ्ग कयल जाय चुकल अछि।

बाबू लक्ष्मीपति सिंह तथा डॉ० 'श्रीश' सम्पादक सभक नामोल्लेख करैत म. म. परमेश्वर झा एवं जगदीश प्रसाद ओझाक नाम गनौने छथि। वस्तुत: म. म. परमेश्वर झा एकर सम्पादक कहिओ नहि रहलाह। जें हेतु प० विष्णु कान्त झा राज स्कूलक हेड मास्टर छलाह, अपन पूर्ण समय 'मिहिर' कें देबाक स्थितिमे नहि रहथि तें हुनक सहायतार्थ संयुक्त सम्पादक रूपमे प० जगदीश्वर प्रसाद ओझा छलथिन जे मैथिलीक अंशक सम्पादन सम्पूर्णत: नीक जकाँ नहि क' सकथि एहि आशंका सँ म. म. जीकें देख-रेख करबाक संकेत महाराजसँ भेटल छलनि आ तें हेतु म. म. जी कखनहु-कखनहु प्रेस जाइतो छलाह।

एहिठाम प्रसङ्गत: ईहो कहि देब अयुक्तिकर नहि प्रतीत होइत अछि जे 'मिथिला मिहिर'क सम्पादकलोकनि नीति निर्द्धारणक विषयमे स्वतन्त्र नहि छलाह। एकर संरक्षक मिथिलेश रहथि, अत: हुनके रुचिक अनुकूल नीतिक निर्वाह करबाक बाध्यता छलनि। भीतर भीतर ओहि समयमे अथवा महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहहुक समयमे कांग्रेस कें जे किछु सहायता राज दरभङ्गा सँ भेटैत रहल होइक, प्रत्यक्षत: वृटिश सरकारक विरोधसँ राज दरभङ्गा सब दिन बँचैत रहबाक प्रयास करैत रहल। जखन प० कपिलेश्वर झा शास्त्री, जे आपादमस्तक कट्टर राष्ट्रवादी रहथि, सम्पादक छलाह तँ एकटा दारोगाक भ्रष्टाचारक आलोचनाक क्रममे वृटिश सरकारहुक नीतिक विरोधमे किछु लिखि देलथिन। एही कारणें हुनका सम्पादकक पद छोड़य पड़लनि। तखन प० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' एकर सम्पादक नियुक्त भेलाह। जखन ई पदभार ग्रहण कयलनि तँ सम्प्रति अनुभवहीन छथि से जानि महाराज राजपण्डित बलदेव मिश्रकें 'मिथिला-मिहिर'क देख-रेख करबाक संकेत क' देने छलथिन। एतावता राज पण्डितजी 'मिहिर'क सम्पादक नहि मानल जयताह, तहिना म. म. परमेश्वर झा कें सम्पादक कहब युक्ति-युक्त नहि कहल जाय सकैत अछि।

दोसर भ्रान्ति नामक अछि। प० जगदीश्वर प्रसाद ओझा कें जगदीश प्रसाद ओझा कहल गेल छनि जनिक नाम सम्पादकक रूपमे कहिओ नहि छपलनि। तेसर भ्रान्ति—बाबू लक्ष्मीपति सिंह १९५२ सँ बन्द भ' जयबाक सूचना देने छथि आ डाँ० श्रीश लिखने छथि—'बीच बीचमे बन्द भए आइ धरि प्रकाशित भए रहल अछि'। तथ्य ई थिक जे १९५४ मे आबि क' हठात् एकर प्रकाशन बन्द क' देबाक आदेश महाराज देलथिन आ ओही समय मे मात्र एकबेर प्राय: ६ वर्षक हेतु ई बन्द छल। ओना अनियमित प्रकाशन तँ एकर धर्म भ' गेल छैक जकर पालन ई अद्यावधि करैत आबि रहल अछि।

स्त्री शिक्षा विषयक नीतिमे 'मिथिला-मिहिर' ओ 'मिथिला मोद' एकमत देखल जाइत अछि। 'मिथिला मोद' सेहो बालक ओ बालिकाक शिक्षा प्रणाली भिन्न हो ताहि पर जोर दैत छल, जकर उल्लेख 'मोद' पर विचारक क्रममे कयल गेल अछि। एहिठाम 'मिथिला-मिहिर' मे पं० जगदीश्वर प्रसाद ओझा जे विचार व्यक्त कयने छथि से उद्धृत कयल जाइत अछि जाहि सँ पाठकके तुलनात्मक विचार करबा मे सौविध्य होयतनि। प०जी लिखने छथि—

"..........बालिकाओं की पाठ्य पुस्तकें भी स्वतन्त्र श्रेणी की होनी चाहियें। उन्हें ऐसी पुस्तकें पढ़ानी चाहियें जिससे उनका मन उदार, उन्नत तथा प्रशस्त हो। वे सास श्वसुर की सेवा करना, पतिभक्ति तथा पतिव्रत धर्म सीख सकें। उन्हें ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिये जिससे वे गृह प्रबन्ध, बालकों की सेवा शुश्रुषा, तथा उनका स्वास्थ्य रक्षा भली भाँति कर सकें। चिट्ठी पत्री लिखने के साथ साथ उन्हें थोड़ा और आवश्यक गणित भी सिखाना चाहिये।

स्त्रियों को पुस्तकगत-विद्या की भी उतनी आवश्यकता नहीं। थोड़ा ज्ञान हो जाने से ही उन्हे स्त्री जनोचित कार्यों की शिक्षा देनी चाहिये। शिक्षा से वे सांसारिक कार्य और गार्हस्थ्य धर्म भली भाँति चला सकें उन्हें वैसी ही शिक्षा देनी चाहिये। जिन पुस्तकों में स्वास्थ्य रक्षा, धात्रिविद्या, शरीर पालन, गृह प्रबन्ध, पाक प्रणाली, शिल्प तथा दस्तकारी आदि स्त्रियों के लिए आवश्यक विषय का वर्णन हो वही पुस्तक स्त्रियों को पढ़ानी चाहिये :..........."[1]

---

१. मि० मि०, भाग १, प्रकाश १, पृ० १६।

Scanned by CamScanner

एही विचारके पुन: प्रकाश ४ मे सेहो मैथिली भाषामे व्यक्त कयने छथि। उक्त लेखसँ ज्ञात होइत अछि जे महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह स्त्री शिक्षाक प्रसार हो से आवश्यक बुझैत छलाह। सामयिक वार्त्ता स्तम्भक अन्तर्गत जे विचार व्यक्त कयल गेल अछि तकर किछु अंश द्रष्टव्य। पं० ओझा लिखने छथि—

"आई कालिह प्रत्येक देश हितैषीक ध्यान स्त्री शिक्षापर भय रहल अछि। हमर श्रीमान् मिथिलेश्वरक ध्यान तँ ई लोकोपकारी कार्य्यपर पूर्ण रूपें भेल अछि। श्री कङ्काली मन्दिर में एकटा कन्या पाठशाला स्थापित कयल गेल अछि आओर प्राय: सतत ओकर उन्नतिक चेष्टा होइत रहैत छैक। एखन विचारणीय विषय ई की स्त्री शिक्षाक कोन पथ अनुसरण कयल जाय। कोन प्रकारक शिक्षा हुनका सभके देल जाइन्ह। ई विषय में हमरालोकनिक जे सम्मति अछि से तँ मिहिरक प्रथम प्रकाश में "स्त्री शिक्षा और उसकी आवश्यकता" शीर्षक लेख में सम्यक रूपें प्रकट भेल अछि। तथापि एहि ठाम हम फेर कहैत छी जे हुनका सभके तेहने शिक्षा देल जाइन्ह जाहिसँ "गृहिणी" ई शब्द सार्थक हो।......."

एहि बीसम शताब्दक प्रथम दशकमे तीन गोट पत्रिका—'मैथिल-हित साधन', 'मिथिला-मोद' एवं 'मिथिला-मिहिर'—प्रकाशित होअय लागल। एहि तीनूक अनुशीलनसँ ज्ञात होइत अछि जे कहियोक विद्या केन्द्र मिथिला विद्याक अंशमे क्रमश: हीन दशाके प्राप्त कयने जा रहल छल। अत: शिक्षाक प्रचुर प्रचार हो ताहि दिस तीनू पत्रिका समाजक ध्यान आकर्षित करैत प्रतीत होइत अछि, संगहि स्त्रीशिक्षाक विकास हो ताहूमे तीनू पत्रिका सहमत अछि, परन्तु स्त्री शिक्षामे आधुनिक प्रणाली लागू हो तकर विरोध सेहो तीनू एके समान करैत छल। मिथिला सब दिन सँ सनातन धर्मावलम्बी रहल अछि जकरा दोसर शब्दमे वर्णाश्रम धर्म सेहो कहल गेलैक अछि। आश्रममे प्रधान गृहस्थाश्रम, गृहस्थीक आधार सब दिनसँ गृहिणी अतः स्त्री वर्गके योग्य गृहिणी बनाओल जाय से अभिप्रेत।

'मिथिला-मिहिर'मे जे चारि गोट प्रतिष्ठापित मैथिलीक लेखक छलाह हुनका लोकनिक भाषा-शैलीक परिचयार्थ छोट-छोट सन किछु उद्धरण उपस्थित कयल जाइत अछि।

Scanned by CamScanner

महामहोपाध्याय मुकुन्द झा बख्शी

शिक्षा विषय

"एहि समय एकर (मानसिक शिक्षाक) अनेक प्रकारक प्रणाली प्रचलित अछि : केओ महाशय आदिसँ अक्षर मात्रक अभ्यास करा कँऽ ओकरे सहायतासँ एक २ पुस्तक क्रमिक पढ़बैत जाएब उचित बुझैत छथि। आन अक्षर दिश विषेश (?) ध्यान नहि दय कँ बालक काँ नाम गाम मात्र लिखब सिखबैत छथीन्ह आओर एकक पाछू दोसर सरल पुस्तकका रट-(कण्ठस्थकर-) बैत जाइत छथीन्ह। एहि सङ्ग २ अक्षरो अपनहि आबि जाइत छैक। (चाहें ओ टेढ़ हो वा सोझ हो छापा पुस्तक भेटि गेलासँ ओकर सौष्ठव (उत्तमता) दिश ध्यान देअयवाक आवश्यकता नहि)।"[1]

मिथिला राजकुलभूषण बाबू कुलापति सिंह

मदनराज चरित उपन्यास

"रानी किञ्चित हँसि कै कुमारके चुम्बन कयल ओ परिचारिका सों पुछैत भेलथिन्ह जे एहि फल मध्य कोन गुण छैक जे अपरिचित भेलहुं सें एहि (कुमार सों अङ्गुल्या निर्देश कय) स्वादुवेत्ता कै भेटलैन्हि अछि ?

कुमार उठि नृत्य करैत कहलथिन्ह जे बहुत गुण छैक। हजूर अपनहि कहलन्हि। हम कालिह भोरमें खायब। आई धय रवै छी।

रानी० कोन गुण कहल गेल ?

कुमार० से की हम बुझलै वा की सुनलै गुलदस्तापर एक प्रजापति बैसल रहै तकरा हम पकड़ैत रही।"[2]

म० म० परमेश्वर झा, वैयाकरणकेशरी

मिथिलातत्त्व विमर्श

"ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ई तीनि जाति एहि आर्यावर्त्तक अन्तर्गत कोनो देशमें वास करबाक प्रयत्न करथि कियैक तँ देशान्तर जयबासँ हुनक आचार विचार नहि निबहि सकै छैन्ह, और शुद्र जे आचारक उपर विश्वास ध्यान नहि दै छथि जीविकाक संकट भेलापर जतबे धर्मक आचरण करैत होथि तकर रक्षा पूर्वक जहाँ कतहु सुविधा होइन्ह निवास कय सकैत छथि।"[3]

---

१. मि० मिहिर, मण्डल १, प्रकाश २, पृ० २१।
२. तत्रैव पृ०२४।
३. तत्रैव पृ० ७।

महाकवि लालदास

सावित्री सत्यवान नाटक

"सूत्रधार—हौ बूड़ि ? रसक कथा तों की बुझवहक चुप रहह २ हौ तों त विदूषक थिकाह कतहु रहह कुदैत फिरह ।

विदूषक—हँ औ नायक ! हम बुड़िये रही सैह नीक, एहन रसवेत्ता अहीं रहू जे स्त्रीकेँ बीच सभामें नचाय नचाय रसिक जनकेँ आनन्दक रस दैत फिरै छियैन्ह ।"[1]

ध्यातव्य जे 'मिथिला तत्व विमर्श' ओ 'सावित्री सत्यवान'क पृष्ठ संख्या स्वतन्त्र छल ।

डा० श्री जयकान्त मिश्र सेहो लिखने छथि जे ई संस्थापकक इच्छा पूर्ति कयलक (It has fulfilled the founder's wish) । संस्थापकक इच्छाक पूर्त्तिक अर्थ भेल जे नीति-निर्द्धारणमे सम्पादककेँ स्वतन्त्रता नहि छलनि परन्तु पत्रकारक जे दायित्व होइत छैक तकर निर्वाह तँ होयबाक चाही । ताहि प्रसंग बेतिया निवासी प० त्रिलोचन झा जे मिथिला मोदमे अपन उद्‌गार व्यक्त कयने छथि तकर अवलोकन करब आवश्यक प्रतीत होइत अछि । शीर्षक अछि 'मिहिरक महत्त्व', ओहिमे कहल गेल अछि—

"परममहत्त्वशाली' 'मिथिला मिहिर'क प्रकाश प्रकटित भेलहु उत्तर यदि अन्धकारक स्थिति नहिँ दूर हो तँ मिहिरक कोन दोष "नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्" अतः जे क्यो उक्त प्रकाशसँ वञ्चित छथि तनिक अपन दोष थिकन्हि मिहिर तँ तिमिरक नाशार्थ प्रकाशित होइतहि छथि तनिकासँ लाभ उठाएब वा नहिँ ई तँ लोकक अपन इच्छा थिक । बलात् की उपकार कैल जा सकैत अछि ?

परन्तु मिहिरमेँ ई बिषमता केहन जे जे क्यो हिनका उदित होइतहि प्रथम याममहिमेँ ?) अर्धालय पूजा करबामे अशक्य होएताह तनिका एहि प्रकाशसँ वञ्चित रहैक पड़तन्हि । मिहिरक प्रकाशक अधिकारी वैह लोकनि भै सकैत छथि जे सुशिक्षित मिथिला-मार्त्तण्ड-सम्पादकक तोषार्थ २) टाका वार्षिक अर्घ देबामेँ समर्थ छथि । सेहो १ वा १॥ टाका नहिँ पूरे पूर २ । से कियैक तँ यदि इतरो लोक एहि प्रकाशक अधिकारी भेल तखन एहि विलक्षण मिहिरक महत्त्वे की रहलन्हि वा थोड़ मूल्य राखल जाय तैओ महत्त्वमे न्यूनता अतः विना दक्षिणा देने प्रकाशक प्राप्त करब दुर्लभ नहिँ

१. तत्रैव पृ०६ ।

असम्भवो। हा ! इहो नियम जे लेखो पठौने पत्र देल जाएत अर्थात् जे अर्घ प्रदानक सामग्रीक संघटन करबा मध्य असमर्थ छथि ओ स्तवराजो पाठ कैं कृपाधिकारी भै सकैत छथि किन्तु सावधान ! स्तवमे स्तुतिए रहै। अथ यदि उचितानुचितक विवेचना करबाक हो तँ अनुग्रहक आशा परित्याग करू कियैक तँ यदि साधारण जनहुँक उचित विवेचना एहिमेँ स्थान प्राप्त करत तँ 'मोद' ओ 'हित साधन'सँ विशेष महत्त्वे की रहल ?

जे किछु हो मिहिरक इच्छा वा अनिच्छा पुरस्सर जेना हो प्रकाशक स्वभाव थिक जे सब ठाम पहुँचै अतः भाग्यवश द्वितीय प्रकाश प्राप्त करबाक संयोग भेल जाहिसँ विविध विषयावलोकन कैं विविध रसोद्रेक भेल। ठाम-ठाम एक विषयकैं पढ़ि अद्भुत् करुणा, क्षोभ ओ हास्य मिश्रित विचित्र भावसँ हृदय अधिकृत भेल ओ तद्द्वारा आन-आन भावक शमन ओ एहि भावक पुष्टि होमै लागल। पूर्ण भै ततेक बढ़ि गेल जे बिना लिखने नहिं रहना गेल अतएव 'नोब्रूयात् सत्यमप्रियम्' एहि मनु वचनकेँ अवहेला कै 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' येह निश्चय करैत अपन आन्तरिक विचार प्रकट करबामे प्रवृत्त भेलहुँ। आशा करैत छी जे 'मि० मोद' सम्पादक एहू अल्पज्ञ ओ वाचाल प्रति अपन कर्त्तव्य पालन कै प्रोत्साहित करताह ओ मिहिर प्रस्ताव स्वीकार किंवा सदुत्तर प्रदान पूर्वक भ्रम निवारण करताह।....

अस्तु, आब विषयारम्भ करैत छी—द्वितीय प्रकाशक प्रथम पृष्ठहिमे 'शिल्प की उन्नति'क प्रसंगमे प्रकाशित भेल अछि—

"हम बड़े दर्प के साथ प्रकाशित करते हैं कि श्रीमान् मिथिलेश्वर ने अपने देश के लुप्त प्राय शिल्प की उन्नति की ओर ध्यान दिआ है। और वर्ष अकाल पड़ने पर गरीबों को अन्न तथा द्रव्य मिला करता था पर इस वर्ष में प्रबन्ध किया गया है कि जो लोग काम करने के योग्य हैं उनसे काम लिया जाय। इससे सम्प्रति दो लाभ होंगे एक तो भले मानस अपने को कंगला तथा अकाल-पीड़ित नहीं समझेंगे दूसरे उन्हें काम करने का अभ्यास हो जायगा। हमारे यहाँ दान की प्रथा ऐसी बिगड़ गई है कि जिससे आलसियों तथा निकम्मो की संख्या बड़ती जाती है। अतएव ऐसा प्रबन्ध किया गया है कि जो भले घर की औरतें ऐसी हैं जिनका कोई सहायक नहीं है उन्हें राज्य से सूत कातने को चर्खा तथा रुई मिले जिनसे वह सूत कात कर अपना निर्वाह करें। साथ साथ खर्च करने को उन्हें कुछ द्रव्य भी मिलता है और उनके काते हुए सूतको बिकवाने का भी प्रबन्ध किया गया है। पुरुषों के लिये

भी इसी प्रकार का प्रबन्ध हो रहा है। मिथिलेश्वर की कृपा इसी भाँति बनी रही तो मिथिलादेश की बहुत कुछ भलाई होगी। हमरा मिथिला देश कोकटी नामक वस्त्र विशेष के लिये विख्यात था पर अब उनका बुना जाना भी कम होता जाता है इसका भी उद्योग करना चाहिये।

सम्पादक महाशय ! अपनेक उक्ति अनेकांशमे अवश्य उचित अछि, अपना देशमे दानक प्रथा बिगड़ि गेल अछि जाहिसँ आलस्य ओ निरुद्योगिता बढ़ैत जाइत अछि ओ अपना देशमे कोकटी कपड़ा नीक बनैत छल आब ओ ह्रास भेल जा रहल अछि परन्तु अपनेसँ हमर विनात जिज्ञासा ई अछि जे की बेत्रेक स्वजनवर्गक आहार बन्द कैने मिथिलामे शिल्पोन्नति नहि भै सकैत अछि, क्षमा करू अपने बी. ए० क उच्चोपाधिधारी सुशिक्षित महानुभाव छी, एहि अल्पज्ञक विनीत प्रार्थना पर दृष्टिपातो करब अपनेक महत्वक हानि-कारके होएत किन्तु अपन लेखक अभिप्राय जिज्ञासु कँ स्पष्ट कराय देबाक थिक, हम केहनो मन्द बुद्धि होइ परन्तु अपने तँ 'ग्रैजुएट' छी, सुशिक्षक कुच्छात्रहुँ कँ विषय बुझाय सकैत अछि अतएव स्पष्ट बुझा देल जाय कि अपने दरिद्र भल-मानुस विशेषतः सोतिहि लोकनिसँ कोकटी बुनावै चाहैत छी ? अवश्य होमहिँ बुझ, जखन अनेक उपद्रव सहबे कैलन्हि जे प्रायः जीलाहु काँ नहि सह्य हो तखन आब येह कियैक बाँकी रहतन्हि ? कोकटी बुनै जाथु। दोसर कोन काज करताह। हुनका लोकनिक हेतु एहिसँ विशेष फलप्रद अन्य काज कोन भै सकैत छन्हि ?''

(ध्यानीय जे श्रोत्रिय लोकनिकेँ महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहहुकसमयमे बहुतो दिन धरि चारि आना रोज उपनीतकेँ ओ दू आना रोज अनुपनीतकेँ दरभङ्गामे रहला सन्ताँ राजदिससँ भेटैत छलनि। प्रायः १९४०-४५ ई० धरि ई व्यवस्था छलनि। जखन बाबू गोपीरमणजी राजमे एहि विभागक अधिकारी भेलाह तँ ई चौअन्नी बन्द क' देल गेल। ताही दिस संकेत करैत प० त्रिलोचन झा कहने छथि—"की बेत्रेक स्वजन वर्गक आहार बन्द कैने मिथिलामे शिल्पोन्नति नहि भै सकैछ ?" प्रायः ई व्यवस्था बन्द क' देऊ जाय तकर चर्चा महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहहुक समयमे भेल छल। संगहि ईहो स्मरणीय थिक जे मिहिरमे उल्लिखित विचार १९०९ ई० क थिक जहिया महात्मागान्धीक पदार्पण भारतीय राजनीतिक मंचपर नहि भेल छलनि। महात्माजी १९१५ ई०क बाद चर्खा चलयबाक आन्दोलन चलौने छलाह)

प० त्रिलोचन झा आगाँ लिखने छथि—

'एहिमे कोनो सन्देह नहि जे यथा साध्य सभहिकाँ उद्योग कर्तव्य थिक जे सत्कुलोत्पन्नो लोक असद् वृत्तिशाली भेलासँ तिरस्कार ओ दण्डक भागी थिकथि किन्तु सद्‌वृत्तिशाली ओ उद्योगी बनैबाक उपाय अपनेकाँ येह भेटल ? आन नहिँ ? यदि आन क्यो एहन कहैत तँ ततेक संशय नहि होइत परन्तु 'ग्रैजुएट'क एहन विचार ककर विस्मयोत्पादक नहि होएत ? अपने तँ पढ़ल ओ लिखल छी, अपनेकाँ अनेक उपाय अछि किन्तु बिनु पढ़ल लोकलै केवल कोकटीये निर्धारित भेल अछि।........'[1]

मिथिला मिहिरक सम्पादकीयमे व्यक्त विचारक पण्डितजी विस्तारपूर्वक समीक्षा करैत उपसंहारमे लिखने छथि—

''यदि श्रीमान् महाराज बहादुरकाँ शिल्पोन्नति मिथिला देश मध्य करैक स्पृहा होइन्ह तँ एकटा व्यवसायिक शिक्षालय (टेक्‌निकल कालेज) खोलथु जाहि मध्य पढ़निहारक हेतु किछु वेतन scholarship नियत कैल जाय, शीघ्र शिल्पोन्नति बढत ओ निरुद्यागिता मिथिलासँ पृथक् होएत। अनेकांशमे कतेको लक्ष द्रव्य तँ उड़ितहि अछि यदि श्रीमान् महाराज-कुमार युगल जन्मोत्सव-स्मारक उक्त शिक्षालय दरभंगा राजधानीमे खोलल जाय तँ कोनो दु:साध्य विषय नहि कहि सकैत छी।.......

श्रीमान् महाराज बहादुरकाँ साधारण लोकक क्लेश कोना बुझना जैतन्हि। वस्तुत: ई काज मन्त्री, पार्श्ववर्ती ओ अनुचर जनक थिक जे प्रजा वर्गक यथार्थ हिताहित अवसर पाबि प्रभुक ओतै निवेदन कै देथि अथवा देशहितैषी समाचार-पत्रक सम्पादककेँ उचित थिकन्हि जे यथार्थ देश दशाक उल्लेख कै देथि जाहिसँ तद्देशस्थ यावतो श्रीमान् लोकनि अपन-अपन आयत्त देश ओ लोकक उचित संरक्षणसँ विमुख नहि भै यथार्थ प्रभुताक रक्षा करथि।

सम्पादक महाशय ! मिहिरक उद्देश्य देशक दुर्दशा रूप तिमिरक नाश आ साधारण-जनोद्योगसँ सर्वथा असाध्य मिथिलाक क्लेश प्रकाशन होमै बुझ। विशेषत: यदि मिथिलासँ 'मि. मि.' प्रकाशित कैल अछि तँ उचित आलोचनामे प्रवृत्त होउ। श्रीमान् लोकनिक तोषामोद (खुशामद) ओ चाटुकारी लेखक हेतु बहुत समाचार पत्र छन्हि। एहि हेतु अभिनव मासिकक प्रचालन की ? अधिक कतेक लिखू—हमरा लेखमे जे कोनो कटूक्तिक प्रयोग भेल हो से क्षन्तव्य थिक कियैक तँ ई प्रसिद्ध अछि जे 'बुभुक्षित: किं करोति पापम्'। अलं विज्ञेषु।

श्री त्रिलोचन झा, बानू छपरा—बेतिया''[1]

---

१. मि. मोद, उद्‌गार ३०-३१, पृ० १२४-१३३।

एहि समीक्षाक उत्तर दैत मिथिला मिहिरक सम्पादक जे लिखलथिन तकरो अवलोकन करब आवश्यक जाहिसँ यथार्थ स्थितिक परिचय भेटि जाइत अछि। शीर्षक देल गेल "मिहिर आओर त्रिलोचन"—

"मिथिला मिहिरके उदयकाल सेहो (चम्पा) अरण्य निवासी त्रिलोचन झाजी इससे बेतरह चिढ़े हैं।" इसके उदय होने की इस समय कौन सी आवश्यकता थी? इसका २) वार्षिक मूल्य बहुत ही अधिक है। इसमें मेरा लेख (नहीं-नही, गाली गलौज! आक्षेप!!) नहीं छपा।" आदि बातें ही आपके लिये प्रधान विचारणीय विषय हैं। जो हो आपके वृथा आक्षेपों के उत्तर में हमारे बहुतेरे पाठकों ने उसी ढंग के कई लेख लिख भेजे हैं पर हम नहीं चाहते कि मिहिरके बहुमूल्य कालमों को इन व्यर्थ झगड़े लड़ाइयों से भरें। सहयोगी मिथिला-मोदके ३०-३१ उद्‌गार में जो आपने हमपर आक्षेप किये हैं उनके पढ़ने से सभी निष्पक्ष पाठकों को विदित हो जायगा कि वह कहाँ तक बेजड़ हैं।"[1]

प० त्रिलोचन झाक समीक्षा उद्धृत कयल जा चुकल अछि। निष्पक्ष विचार कयला उत्तर ओकर शैली व्यंग्यात्मक अवश्य प्रतीत होइत अछि, परन्तु ओकरा 'गाली गलौज' नहि मानल जाय सकैत अछि। पत्रकारक उत्तरदायित्व दिस जे पण्डितजीक संकेत छनि से सर्वथा हमरा दृष्टिमे समीचीन प्रतीत होइत अछि। 'मिहिर'क नीति किछु एहि प्रकारक छलैक जकर दोसरो उदाहरण भटैत अछि। म. म. डॉ सर गंगानाथ झाजीक लेख सेहो आपस क' देल गेल छलनि जे बादमे डॉ० झाक पत्र, मि. मिहिरक सम्पादकक उत्तर, डा० झाक लेख ओ मोदक संपादकक टिप्पणी सहित मोद'मे प्रकाशित भेल छनि। पाठकक मनोरञ्जनार्थ तथा वस्तु स्थितिक परिचयार्थ ओकरो उद्धृत करब समाचान प्रतीत होइछ।

१५-११-११ ई० कें लेख आपस करैत 'मिथिला मिहिर'क सम्पादक पत्रमे लिखने छथिन—

"नम्बर ४३६ दरभंगा १५-११-१९११

श्री युक्त महामहोपाध्याय डाक्टर श्री गङ्गानाथ झाजी महोदय',

प्रिय महाशयवर!

अपनेक कृपापत्र पाबि हमरा अत्यन्त हर्ष भेल। अपनेक प्रेषित पत्र 'मिहिर' उद्देश्यक असंगत बुझल गेल तें ओ प्रकाशित नहि भै सकल, तें

---

१. मि. मिहिर, वर्ष १, प्रकाश ६, पृ० ३।

अपनेक आदेशानुसार ओ (आपस) जाइत अछि। विशेष समाचार श्री गोविन्द जी सँ ज्ञात होएत।

भवदीय कृपाभीलाषी श्री योगानन्द कुमर"

लेख पठबैत जे डॉ. झा मिथिला-मिहिरक सम्पादकके पत्र लिखने छलथिन तकर अवलोकन कयल जाय—

"सम्पादक 'मिथिलामिहिर'

महाशय !

काल्हि एक निवेदन हम 'डाक'क द्वारा अपनेक ओतै पठाओल परन्तु फेरि विचार कैल उत्तर ई स्थिर भेल जे मैथिल-विद्वान मण्डलीके हमर क्षुद्र लेख पर एतबा आस्था होएतन्हि जे ओहि 'बतहपोत'कै आद्योपान्त पढ़ताह ? से आशा करब हमर परम साहस भेल तैं हम अपन सिद्धान्त संक्षेपण अपनेक ओतए लिखि पठबैत छी, कारण जे समाचार-पत्र सम्पादकक ओतै सिद्धान्त प्रकट करबाक अधिकार सबकैं छैक, एहि मध्य कोनो अनुचित साहस नहि कहा सकैत अछि।

विचारिणी विषय मे बिलायत जयबाक प्रसंग दुइ टा पृथक् प्रश्न छैक, जकर विचार हम परस्पर निरपेक्षरूपेण कैल अछि। (१) समुद्र यात्रा दोषावह वा नहिँ (२) भक्ष्याभक्ष्य विचारक त्याग दोषाधायक वा नहि। (१) हमर पक्ष जे समुद्र यात्रा मध्य कोनो दोष नहि, प्राचीन कालहुमे प्रचुर व्यवहार छल। जँ दोषाधायक तँ ब्राह्मणमात्र कें, ताहु मध्य पाप प्रायश्चित सँ निर्णेजनीय। (२) अभक्ष्य भक्षणादि अवश्य दोषाधायक, परन्तु देशान्तर मध्य (जतै विजातीय स्पृष्टान्नक वर्जन प्रायः असम्भव) ततेक दोषावह नहि जतेक एतद्देश मे (जतै केवल रागतः प्रवृत्ति) तें बिलायत मध्य अभक्ष्य मासादिक भक्षण जँ नहि करै' जतबा बिना प्राणयात्रा असम्भव ततबेटा विजातीय स्पृष्ट-अन्नादि-भक्षण करै तँ प्रायश्चित द्वारा निस्तार अवश्य।

आइ काल्हि मैथिल समाज के बिलायत जाएब इष्ट वा अनिष्ट से विषय भिन्न थिक, तकरा शास्त्र सँ सम्बन्ध नहिँ, तैं ताहि प्रसङ्ग हमर की पक्ष अछि से जँ अपनेक आज्ञा होएत तँ पत्रान्तर मध्य निवेदन करब।

आशा करैत छी जे अपने एहि पत्रके यथासाध्य प्रकाशित कै 'मिहिर' द्वारा वा अवसर पड़ला पर महासभामध्य पढ़ि कै हमरा अनुगृहीत करब ओ एहिमध्य जे क्लेश भेल से क्षमा करब।

एक विषय आओरो निवेदनीय अछि—सहस्त्रशः हमर गुरुवत् शास्त्रज्ञ मिथिलामध्य छथि तथापि हमर एहि विषय मे अपन पक्ष प्रकाश करब परम

साहस ओ बालिशता थिक परन्तु साध्य की 'अदालति' आग्रह पुरस्सर (हमरा निषेध कयलहु पर) बजाय जखन प्रश्न कैलन्हि तखन हमरा जे फुरल तदनुसार उत्तर कोना नहिँ दितिऐन्हि तँ जे फुरल से बजलहुँ, कोनो पण्डिताइ देखैबाक बुद्धि सँ नहिँ, तथापि साहस अवश्य भेल परन्तु ततबा नेनपन गुरुजनक क्षमाक बाहर नहि होएत से दृढ़ आशा अछि।

कृपाभिलाषी क्षमाप्रार्थी
श्री गङ्गानाथ झा''

उपर्युक्त दूनू पत्रक संग 'मोद'क सम्पादक जे अपन मत प्रकट कयने छथि आब तकरो अबलोकन कयल जाय—

''म० म० डाक्टर श्री गङ्गानाथ झा श्रोत्रियवर सँ सभ्यतापूर्वक कथन प्रिय महोदय !

उक्त-यात्रा-प्रसङ्गक विषय मे अपनेक यथार्थ मनोऽभिप्राय केँ 'मोद' एतबहि उद्देश्यक लोभ सँ प्रकाशित कैलक अछि जे आगाँ पाछाँ नहि देखि वा बहुतो तँ धर्माधर्मक विचारक लेशो नहि जानि थोड़बहि लै घोघाउजि करै पर संनद्ध अपना देशक लोक भेल रहैत छथि। ई उचित नहि थिक से सर्वसाधारण लोक बुझथु। अथ च यद्यपि 'मै० म० सभा' सँ प्रस्ताव कै 'ततै जाएब' जाति पातक थिक इहो सर्वजन सम्मत भै गेल अछि, तँ की एकर चर्चे जनु हो, ई तँ 'पास' नहि भेल अछि, जँ एना हो तँ 'मै० म० सभा'क मुख्य ७ वा ९ प्रस्ताव इ बेरि आब 'पास' भै गेल परन्तु 'मोद' कैँ भरिवर्ष ओकरे 'बिरहा चाँचरि' गबैत पराभव, जँ ४० तँ घप ४०, अस्तु। हमरा कहबाक अपने सँ ई अछि जे अपनेक 'इजहार' मध्य कतेको स्थलमध्य सर्वसाधारण कैँ अप्रिय लगैत होइन्हि एहन जे लेख अछि तकरो सारांश यदि अपने यथावसर प्रेषित करी तँ ओहो मुद्रित हो, जाहिमध्य कतेकहु क अभिप्राय नहिँ बुझि हमरहु पर कतेक गोटै आँखि देताह, किन्तु व्यर्थ, हाँ, एतबा अवश्य रहैत अछि जे बिनु लाल पीअर देखनहि हम नहि भड़कब, ओ बिनु सरदीए ढेसबो नहि करब तँ लोक जे बुझथि, बछोरिया तँ थिकहुँएँ।

एही प्रसङ्ग हमर विनीत सहयोगी 'मि० मि० सं० जी'सँ विनय—क्रुद्ध जनु होइ, हम पुछैत छी जे 'इजहार' छापैक बेरि ई विचार नहि अर्थात् ओ सब विषय 'मि० मि०'क उद्देश्यक संगत ? उचित वा अनुचित जे हो, ई वस्तु भिन्न थिक तँ की एक श्लोकी रामायण कथा, भागवत कथा (एतै क्यो ओकर माहात्म्यक तुलनादिशि झुकि हुरपेटी जनु, हमर तात्पर्य केवल कथा बाहुल्यमे') नहि छैक ? ताही रूपैँ उक्त महोदयहुक लेख छपने की हानि ? एना लेख देखि यदि हमरा लोकनि भड़कब तखन तँ गाँमक गाँम

बसैबाक विरुद्ध नगरे ने उजाड़, तकरहु तँ विचारि लेबाक थिक। बाड़ीक पटुआ तीत ?

"चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान् ।"

हाँ अपनेक रुचिकर 'हिन्दी-भाषा'-वृद्धिलेख नहि, तावता "उद्देश्यक असंगत" अवश्य, क्षमा करब।

संपादक मि० मो०"[1]

एहि उद्धरणसँ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे महाराजक अथवा हुनक पार्श्ववर्त्ती अनुचरलोकनिक इच्छाक विरुद्ध म० म० डा० सर गङ्गानाथ झा सदृश व्यक्ति पर्यन्तक रचना 'मिहिर'मे स्थान नहि पाबि सकैत छल।

मिथिलाक हृदयभूमि दरभंगा आ मिथिलाक अधीश्वर दरभंगाक महाराज तनिक संरक्षकता मे प्रकाशित होइत 'मिहिर' विशुद्ध मैथिली भाषामे प्रकाशित हो ई सभक इच्छा छलैक। एहि इच्छाक संकेत पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित विभिन्न व्यक्तिक पत्र सबसँ भेटैत अछि। 'मिहिर' जखन साप्ताहिक रूपमे प्रकाशित होअय लागल तँ 'असमञ्जस' शीर्षक लेखमे कोइलख निवासी प० काशीनाथ झा हिन्दी ओ मैथिलीक पारस्परिक विरोधक आशंकाक निवारण करैत विस्तारसँ अपन अभिमत व्यक्त कयने छथि जकर किछु अंश उद्धृत कयल जाइत अछि। ओ लिखने छथि—

"..........पुनः कहैक पड़ैत अछि जे देश तथा समाजक उन्नति मेँ प्रथम प्रयोजनीय भाषोन्नतिए अछि। जा धरि मैथिल समाजमें सर्वत्र शुद्ध रूपेँ मिथिला भाषाक प्रचार नहि होएत तावत् उन्नतिक आशा दुराशामात्र थिक। कारण, बिना मिथिला भाषाक प्रचार भेने समस्त मैथिल मण्डली अपन आन्तरिक भाव ओ आवश्यकता प्रकाशित नहिं कै सकैछ अथ च परस्पर सहानुभूतिअहु कैँ नहि बान्हि सकैछ......

........उपर उक्त कथनक सारांश एतबै जे उन्नतिशील मैथिल समाज तथा विशेषतः 'मि० मिहिर'क संपादक ओ 'डाइरेक्टर'क ओतै प्रार्थना पूर्वक निवेदन अछि जे यदि मैथिलीक उपकारार्थ ई उक्त पत्र साप्ताहिक भै प्रकाशित होमै लागल अछि तखन मिथिला भाषहि मेँ कियैक नहि रहत ? ....मिथिलामेँ एकोटा साप्ताहिक नहि, ततै 'अद्वितीय' महत्त्वक भागी 'मिहिर'कैँ मिथिलाभाषामेँ होएब परमावश्यक।...."[2]

उपरिचर्चित पत्र 'मिथिलामिहिर'मे सेहो प्रकाशित भेल छल तथा तकर उत्तरमे 'मिहिर'क सम्पादक लिखने छलथिन तकर अवलोकन करबाक

१. मि० मोद, उद्० ३०-३१, पृ० ७-११।
२. मि० मोद, उद्० ५६, पृ० १०।

सुयोग तँ नहि भेल, परन्तु उपर्युक्त उद्‌गारमे [प० त्रिलोचन झाक प्रकाशित एक पत्रसँ ज्ञात होइत अछि। पण्डितजी लिखने छथि—

"मि० मिहिर'सँ अनुरोध—

प० श्री काशीनाथ झाक लेखकेँ सहयोगी 'मि० मिहिर' कृपया प्रकाशित कै अपन आन्तरिक अभिप्राय ई लिखैत छथि जे 'यदि मैथिल लोकनि अधिक ग्राहक होथि तँ मिथिलहि भाषामे 'मिहिर' प्रकाशित होएत' ई अत्यन्त सन्तोषक तथा धैर्यक वचन देल गेल अछि। एतै हम स्नेहपूर्वक जिज्ञासा करैत छी जे भाइ मिहिर! आधा मिथिला भाषा रखने मैथिलान्य अहांक ग्राहक लोकनिमे कोनो बाधा होइत छन्हि वा नहि? जाहि सप्ताहमे अर्धाधिक मि० भाषा देल गेल अछि, ताहिमे ग्राहकगणक उपालम्भ आयल अछि की?......हमरा जनैत ई सब किछु नहि थिक। सम्पादक जी! मिथिला महासभा (सुपौल)मे जे अपने सर्वाज्ञा उल्लंघन कै 'हिन्दी'क तान ताने लगलहुँ ततै थोड़ेको विचार नहि कैलैक जे मिथिलाक प्रसिद्ध विद्यापति ठाकुरक स्वर्गारोहण स्थानक समीपवर्त्ती ग्रामवासी मैथिल भै ई केहन गार्ह्य काज करैत छी।....साक्षात् मैथिलक कोन कथा जे मिथिलाभास पर्यन्त बहुत शीघ्र २ ग्राहक भै जैताह। किन्तु भाषाक दिशि ध्यान दिऔक, थोड़ेक दिन क्लेश बुझना जाएत, पश्चात् जे एकर परिणाम होएत तकर वर्णन लोक करत।............।"

प्रसङ्गतः चर्चा करब अयुक्तिकर नहि हयत जे अजमेरमे प्रवासी मैथिलक दिससँ जखन महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहकेँ 'मिथिलामिहिर'केँ पुनः प्रकाशित करबाक निवेदन कयलियनि तँ ओ यैह उत्तर देने छलाह जे यदि दुइओ सय ग्राहक होथि तँ हम तुरन्त 'मिहिर'केँ प्रकाशित करायब आरम्भ क' देब। ताहिपर अलीगढ़ निवासी प० वीरदत्त मिश्रः २५१ ग्राहकक शुल्क ५०२) रु० जमा करबाक हेतु ठाढ़ भ' गेलाह। तखन महाराजा राय बहादुर प० शिवशङ्कर झाकेँ कहलथिन—'एकरा 'नोट' कऽ लिअऽ।'

उपर्युक्त पत्रसँ ई ज्ञात होइत अछि जे कोनो कोनो अङ्कमे मैथिलीक मात्रा आधासँ अधिको भ' जाइत छलैक। एहिसँ ईहो भासित होइत अछि जे सम्पादक ओ व्यवस्थापक लोकनिक भीतर मातृभाषाक हेतु कोनो आगि नहि छलनि तथा संगहि हिन्दीक प्रति मोह सेहो ग्रस्त कयने रहैत छलनि। आरम्भेसँ जे एहन मानसिकता बनल रहल तेँ श्रीयुत सुमनजीक सम्पादकत्वो

Scanned by CamScanner

मे हिन्दीसँ मिहिर मुक्त नहि भ' सकल छल। श्री सुमनजी धरिकें बेसी काल सम्पादकीय हिन्दीएमे लिखऽ पड़ैत छलनि।

'मिथिला मिहिर'सम्पूर्ण मैथिलीमे प्रकाशित हो से केवल तथाकथित मैथिल ब्राह्मण मात्र चाहैत छलाह, से बात नहि। ब्राह्मणेतर वर्गमें सेहो एहन आकांक्षा छलैक। उहाहरणार्थ एकटा पत्र आओर उद्धृत कयल जाइत अछि।

"श्रीमान् सम्पादक महाशय तथा मैथिल सज्जनगण!

प्रणाम

'मिथिला मोद' तथा 'मिथिला-मिहिर' काँ देखि हम अत्यन्त आनन्दित भेलहुँ ओ तत्प्रयुक्त अपने लोकनि काँ अनेकशः धन्यवाद, किन्तु ई देखि हमरा अत्यन्त खेद भेल जे जाहि मिथिला में अनेंको पण्डित महामहोपाध्याय, तीर्थ, आचार्य, केशरी, एम्, ऐ., बी. ऐ. उपाधिधारी विद्वज्जन विराजमान छथि, जाहि मिथिलाक पण्डित लोकनिक यशक पताका सब देश विदेशमें फहराइत छन्हि, ताहि पूण्यमयी (?) मिथिला-(मातृ-) भाषाक एतेक दुर्दशा? हा! ताहि दीना मातृभाषाक लेखकक अभाव? एतेक बुद्धिमान् सुपुत्रक रहलहुँ मिथिला मातृभाषा बन्ध्या? की आश्चर्य विषय थिक मैथिल महाशयगण! की ई विचार करबाक अवसर नहिँ थिक, अपने लोकनि उन्नति २ चिकार रहल छी, की विना मातृभाषाक उन्नति भेलैं समाजक कल्याण? कथमपि नहि। आइ बङ्गालकैं देखू, महराष्ट्रकाँ देखू जे केहन उन्नति कै रहल अछि। की कहि सकैत छी जे ओ उन्नति मातृभाषा लै कै वा नहिँ? हमरा लोकनि उत्तम जकाँ जनैत छी तथा देखि रहल छी जे ओकर उन्नति केवल मातृभाषा लैकै, अन्यथा कथमपि नहिँ।

हा! एक ने दुइ मिथिला-भाषामें पत्र, ताहूमें मातृभाषाक अभाव? ई मैथिलक अत्यन्त लाघव थिक, एकरा मैथिल सज्जन गण उत्तम जकाँ विचारि देखथु ओ एहि क्षुद्रबुद्धिक प्रार्थना पर ध्यान देथु अर्थतः दीना मिथिला-(मातृ-)भाषाक जाहिरूपैं उन्नति हो, सब मैथिल सज्जनगण काँ परम कर्त्तव्य थिकन्हि। जनिका 'हिन्दी' अहिक अधिक प्रेम छन्हि ओ कृपया एतेक 'हिन्दी'क पत्र अछि मङाय देखथु, परन्तु 'मोद' ओ 'मिहिर' काँ मिथिला-(मातृ-) भाषा सँ बञ्चित नहिँ करथु। कियैक जे बाबू हरिश्चन्द्रहुक वचन छन्हि यथा—

''निज भाषा उन्नति अहै सौ उन्नति को मूल ।
विन निज-भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल ।।
....इत्यादि

ओ ''मैथिल महासभा''क समाचार सुनि हम अत्यन्त आनन्दित भेलहुँ तथा तत्कार्य संचालक महानुभाव लोकनि काँ हृदय सँ धन्यवाद दैत छिऐन्हि ओ प्रार्थना करैत छिऐन्हि जे दीना भाषाहुँक जीर्णोद्धार अवश्य करथि ।

हम आशा करैत छी जे हमर एहि क्षुद्र लेख दिशि समस्त मैथिल समाज ध्यान देताह ।

कालू चक
पो० बिहपुर मैथिल विद्वज्जनक सेवक
जि० भागलपुर [गोप वंशीय] श्री श्रीमन्त नारायण खिरहरी ।[१]

ध्यातव्य जे सम्प्रति गोपलोकनि अपनाकेँ यादव कहैत छथि, से यादवलोकनि मैथिलीक उत्थान करबाक हेतु सम्प्रति पूर्णरूपेँ सन्नद्ध देखि पड़ैत छथि । साहित्य क्षेत्रमे, अध्यापन क्षेत्रमे ओ लोकनि मनोयोग सँ आबि रहलाह अछि । १९८०क लोक सभाक ग्रीष्मकालीन सत्रमे श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव मैथिली केँ अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित करयबाक हेतु एक 'गैर सरकारी' बिल सेहो उपस्थित कयलनि अछि । मैथिलीक हेतु एकरा शुभ लक्षण मानबाक चाही ।

एक दिस जनमत 'मिहिर' केँ विशुद्ध मैथिलीक पत्रक रूपमे प्रकाशनक पक्षमे छल, ओमहर अंग्रेजी पर्यन्त केँ समाविष्ट कयल जाय लागल ! एहि प्रसङ्ग एक टिप्पणी देखबामे अबैत अछि—

''सहयोगी 'मिथिला-मिहिर' पहिने डुभाषिया छल किन्तु आब अंगेरिजियहु में ओकर किछु अंश बहराय लागल अछि तँ ओकरा ''तेभाषिया'' कहब उपयुक्त अछि । विश्वभाषा, राष्ट्रभाषा और प्रान्तभाषाक समावेश भै गेल । आब केवल उर्दूकेँ स्थान देब बाँकी अछि यदि ओकरो सम्मिलित कै लेल जाय तँ बहुत ठीक हो ।[२]

---

१. मि० मोद, उद्‌गार ५८, पृ० २१-२३ ।
२. मिथिला, वर्ष १, अंक १२, पृ० ५१३ ।

१९११ ई० सँ १९३४ ई० धरिक मध्य प० योगानन्द कुमर, प० जनार्दन झा 'जनसीदन' ओ प० कपिलेश्वर झा शास्त्रीक सम्पादकत्वमे साप्ताहिक रूपमे प्रकाशित होइत मिथिला मिहिरक सम्पूर्ण अङ्क सब हमरा अप्राप्ये रहल। छिटफुट जतय जे कोनो अङ्क देखबाक सुयोग लागल अथवा ओहि कालावधिमे प्रकाशित अन्य पत्र-पत्रिका सबमे जे टिप्पणी आदि देखल ताहिसँ इएह निष्कर्ष बहराइत अछि जे मैथिली भाषाक टिमटिमाइत दीपक रक्षा करैत रहबाक अतिरिक्त 'मिहिर' मैथिलीक हेतु किछु विशेष महत्वक कोनो काज नहि क' सकल। ने साहित्य सर्जनेक दिशामे प्रेरणादायक भेल, ने कोनो विशेषांके प्रकाशित कयलक आ ने भाषा केँ कोनो स्थिर स्वरूपे द' सकल ; अतः हम स्व० पुलकित लालदास 'मधुर'क एहि कथनसँ पूर्णतः सहमत छी जे "एहि पत्रकेँ मैथिली भाषाक पत्र मानब अनुचित। ".....................वर्तमान समय में तँ हम निःसंकोच कहि सकैत छी जे सम्प्रति मिथिलामिहिर कैँ समाचार पत्रक कहब समाचार पत्रक वास्तविक तत्व सँ अनभिज्ञता प्रकट करब थीक।"

एहिकालमे प्रकाशित 'मि. मिहिर'क सम्पूर्ण चरित्रकेँ प्रो० श्री हरिमोहन झाजी 'मिथिलाक मिहिरसँ' शीर्षक एक कविताक माध्यमसँ स्पष्ट रूपेँ चित्रितक' राखि देने छथि। उक्त कविता उद्धृत करब सर्वथा समीचीन होयत। कविताक स्वरूप निम्नाङ्कित अछि—

हे मिहिर! फोउ आग्नेय नेत्र बरसाउ तेज वैभव विशाल।
सूतलि सितहलि सिहरलि मिथिला पर तानू स्वर्णिम रश्मि जाल॥

संसार कतयसँ कतय गेल, नव नव परिवर्त्तन बहुत भेल।
हे मिहिर! अहाँ युगसँ किऐक उदयांचलमे छी अटकि गेल॥

सप्ताश्व एहन अड़ियल किएक, टकसै अछि रथ नहि एक बीत।
छी वर्त्तमान बनबैत अहाँ जकरा, से ससरल चिर अतीत॥

क्षितिजक महफामे बन्द अहाँ नीहारक अछि लागल ओहार।
नववधू जकाँ होइछ अहूँक कौखन बरु झाँपल कर उघार॥

सन्हियाएल छी आँचर उषाक धैने हुनकर गोटा किनार।
ता कोषमध्य 'तिरहुत'क अर्थ अछि भेल निविड़तम अन्धकार॥

अहिवातक पातिल मध्य बन्द सरबासँ झाँपल दीप जकाँ।
भितरे चमकै छी मुनल अहाँ हो जेना टेम पर टीप जकाँ॥

Scanned by CamScanner

छारल कुहेस ओ अन्धकार, लधने चहुँदिसि झपसी विकाल।
वादुर, उलूक, फड़फड़ करैत, झोलफलमे जानक अछि जवाल।।
जागू दिनेश! फाड़ू कुहेश सभ दूर करू बदरी विकाल।
असि तीक्ष्ण रश्मिसँ छिन्न भिन्न कय काटि हटाऊ तिमिर जाल।।
लागय किरणक ओ तीव्र शूक, भागल पड़ाय दूषक उलूक।
बहुव्याप्त अन्ध विश्वास तिमिरकैं करै रश्मि-शर टूक-टूक।
मिथिलाक सरोवर मध्य आइ, दारिद्र्य, अविद्या, अनाचार।
कौचर्य, कलह, ऋण, रोग, बन्ध आदिक पसरल सभतरि सेमार।।
चाही न आब शिशिरक प्रभात आनू ग्रीष्मक मध्याह्न काल।
सभटा सेमार जरि होय छार धधकाऊ तादृश तीव्र ज्वाल।।''[१]

१९३५ ई० मे आबि आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' 'मिहिर'क सम्पादक नियुक्त भेलाह। कार्यभार ग्रहण करैत देरी अपन सम्पादन क्षमता सभक समक्ष प्रकट करबाक हेतु एक विशेषाङ्क प्रकाशित करबाक योजना बनौलनि जे 'मिथिलांक' नामसँ वसन्त पन्चमी १९३६ ई०मे प्रकाशित भेल अछि, परन्तु एकर मैथिली खण्ड नवम्बर १९३५ में छपि चुकल छल। एकरा डॉ० श्री जयकान्त मिश्र स्टोर हाउस कहलनि अछि। वस्तुतः मैथिलीए नहि, हिन्दीओमे एहन सर्वांगपूर्ण ओ विशिष्ट लेखकलोकनिक रचनासँ सुसज्जित विशेषांक बहुत कम्मे प्रकाशित भेल छल होयत!

एतबा अवश्य जे एहि विशेषाङ्कोमे प्रमुखता हिन्दीएक रहलैक। हिन्दीक रचना १९२ पृष्ठमे छपल अछि आ मैथिलीक रचना तकर आधा १०० पृष्ठ। २९२ पृष्ठक एहि विशेषांकक आकार प्रायः रोआयल चरिपेजी अछि जाहिमे श्री उपेन्द्र महारथी सदृश चित्रकारक चमत्कृत कलाकृति एकर सौन्दर्यकेँ द्विगुणित क' देने अछि।

एहिमे पचासोसँ अधिक बहुरंगी, एकरंगी ओ रेखाचित्र सब मिला क' देल गेल अछि जाहिमे महाकवि विद्यापतिक हाथक लिखल, ल० सं० ३८९क, श्री मद्भागवतक दू पृष्ठ ताल पत्रक तथा ११५५ संवत्मे लिखल गंगेश उपाध्यायक 'चिन्तामणि' नामक ग्रन्थक एक पृष्ठ तालपत्रक चित्रक अतिरिक्त महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह, महाराज धिराजा रमेश्वर सिंह, महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह, राजा बहादुर विश्वेश्वर सिंह, साहित्य-सरोज राजा कमलानन्द सिंह, राजा कीर्त्यानन्द सिंह, कुमार रमानन्द सिंह, 'कुमार

१. मिथिलांक, १९३५ ई०, पृ० ६६ (मैथिली खण्ड)।

गंगानन्द सिंह, कुमार कृष्णानन्द सिंह, महामना पं० मदन मोहन मालवीय, म. म. प० मुरलीधर झा, म. म. प० जयदेव मिश्र, म. म. प० शशिनाथ झा, म. म. प० राजनाथ (रज्जे) मिश्र, म. म. डा० सर गंगानाथ झा, म. म. डा० उमेश मिश्र, म. म. प० बालकृष्ण मिश्र, डॉ० अमरनाथ झा, बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन, कविशेखर बदरीनाथ झा, दत्तबन्धु, कविवर सीताराम झा, प० गौरीनाथ झा, मुन्शी रघुनन्दन दास, बाबू हरिनन्दन दास, प० त्रिलोक नाथ मिश्र, प० श्री कमलनारायण झा 'कमलेश', डॉ० सुधाकर झा, बाबू भोला लाल दास, प्रो० श्री हरिमोहन झा, कैप्टन भवनाथ झा, महाकवि हरिऔध, महाकवि मैथिली शरण गुप्त, रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर,' श्री नरेन्द्रनाथ दास, श्री उपेन्द्र महारथी आदिक अतिरिक्त मिथिलाक प्रसिद्ध स्थान सब यथा—जनकपुर, अहल्यास्थान, उदयनाचार्यक जन्मभूमि करियन, राजनगरक विभिन्न मन्दिर ओ राज प्रासाद सभक चित्र अछि। एहि संग भूकम्पसँ पीड़ित उतर बिहारक 'विजिट' करबाक हेतु आयल लार्ड विलिंगडन, लेडी विलिंगडन ओ मै० महासभाक अधिवेशन आदिक चित्र सब सेहो समाविष्ट अछि।

ई तँ भेल एकर चित्रमयता, विषय वस्तुक दृष्टिएँ मिथिलाक सर्वांगपूर्ण परिचय एहिमे संकलित कयल गेल अछि। मिथिला मिहिरक उद्‌बोधन वाक्य अछि-'सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थ सिद्धिः'। मिथिलाङ्कक प्रथम पृष्ठपर म. म. डाँ० सर गङ्गानाथ झा रचित एक श्लोक अछि—

"सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थ सिद्धि—
रितीयमादौ मिहिर-प्रतिज्ञा।
तामेव धृत्वा हृदये स्वकीये
वर्धस्व देशं विमली कुरुष्व ॥"

एहि अङ्कक हेतु महाकवि मैथिलीशरण गुप्त जी विशेष रूपेँ चारि पाँती मात्रमे एक कविता लिखि क' पठौने छलथिन जे पद लुप्त भ' रहल अछि। सीताक प्रति ई चारू पाँती अनुपम अछि तेँ एतय उद्धृत करब हमरा आवश्यक प्रतीत भेल। कविताक स्वरूप निम्नांकित अछि—

"सीते सीते सीते!
अब तो कृपा-कोर हो जननी, जीवन के दिन बीते!

Scanned by CamScanner

तेरी शक्तिसुधा पी पीकर अजर अमर हैं जीते !
मर ही सकते कहीं मर्त्य हम पद-रस पीते पीते !"

ध्यान देबाक योग्य बात अछि जे मिथिलाङ्क १९३६ ई० मे प्रकशित भेल छल, तावतधरि पटना विश्वविद्यालय द्वारा मैथिलीकेँ एक पाठ्य विषयक रूपमे स्वीकृति देल जाय तकर आन्दोलन ओ चेष्टा कयले जाय रहल छल, स्वीकृति प्राप्त नहि भेल छल। एहि प्रसङ्ग सुप्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी 'मैथिली भाषा और संस्कृति' शीर्षक लेखमे उपर्युक्त माङक समर्थनमे लिखने छलाह।

"....मैं समझता हूँ, मैथिली भाषियों में इस बात की प्रबल अभिलाषा है कि वे अपनी भाषा को अपने प्रान्त में पुराने आसन पर प्रतिष्ठित देखें। अर्थात् वे चाहते हैं कि मैथिली उनके पठन-पाठन और सार्वजनिक कार्यों की भाषा हो। यह अभिलाषा उचित और न्याय भी है। प्रान्त के विश्वविद्यालय और शिक्षा विभाग के अधिकारियों को उचित है कि मैथिली के मार्ग की कुल बाधाओं को हटा कर इस अभिलाषा की परीक्षा करें। बिहार में मैथिली भाषियों की ही संख्या सबसे अधिक है। किन्तु यह दुर्भाग्य की बात है कि मैथिली ही अनादृत है। मिथिला में ऐसे लोगों का अभाव नहीं है जो बड़े शिक्षा विशारद हैं, विचारों के प्रवर्त्तक हैं और सार्वजनिक हितके कार्य्यों में लगे हैं, इसलिये उनकी मातृभाषा को उचित स्थान मिलना ही चाहिये।........"[1]

एहि तरहेँ हिन्दीओक माध्यमसँ मैथिलीक समर्थन कयल जाइत छल, परन्तु सर्वांशतः मैथिली पत्र रहला सन्ताँ जतेक मैथिलीक पक्ष सबल होइत, रचनात्मक काज भ' पबैत से तँ नहिएँ भेल।

मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे एहि मिथिलाङ्कक प्रकाशनकेँ यदि सर्वोपरि उपलब्धि कहल जाय तँ अत्युक्ति नहि होयत। मिथिलाक सम्बन्धमे जतेक सामग्री एहि विशेषाङ्कक माध्यमसँ प्रकाशमे आबि सकल से निश्चय अनुसन्धित्सु लोकनिक हेतु प्रकाशपुञ्जक काज करैत आबि रहल अछि। एहि विशेषांकक ई विशेषता अछि जे एखनहु ई पुरान नहि भेल अछि, अपितु पुराण जकाँ मन्थन कयला पर एखनहुँ कतोक सूत्र प्राप्त कयल जाय सकैत अछि जाहि सूत्रकेँ पकड़ि अनेक विषयक अनुसन्धान कयल जाय सकैत

१. मिथिलांक, पृ० ५।

Scanned by CamScanner

अछि। एहि कथनक पुष्टिक हेतु जिज्ञासुकेँ एहि विशेषांकमे प्रकाशित विषय-सूची देखबाक चाहियनि जे परिशिष्टमे देल गेल अछि। अतः डॉ० श्री जयकान्त मिश्र जे एकरा 'स्टोर हाउस' कहने छथि से ई एक'शब्द' अपनामे बहुतरास अर्थ समेटि क' रखने अछि।

श्री सुमन जीक सम्पादन कालमे समय-समय पर विशेषांक सब प्रकाशित होइत रहैत छल यथा—होलिकांक, विजयादशमीक अवसर पर पूजा-अंक। परन्तु दू गोट आओर विशेषांक अछि जकर नाम उल्लेखनीय अछि। १३४६ सालक शारदीय संख्या उदय ३२, किरण १, अर्थात् बत्तीसम वर्षमे 'मिहिर' प्रवेश क' रहल छल। दोसर 'वसन्तांक' जे हमरा देखबाक सुयोग नहि भेल अछि। शारदीय अंक मे मैथिलीक किछु अंश खण्डित अछि। एहू अंकक साज-सज्जा, विषय-चयन, सब किछु मिथिलांकक लघु संस्करणक रूपमे बुझबाक थिक।

हिन्दीक रचना ५५ पृष्ठ मे अछि तथा मैथिलीक ३२ पृष्ठ धरि हमरा देखबाक सुयोग भेटल। एहि अंकमे बिहारक मानचित्रक संग भाषाक आधार पर डॉ० ग्रियर्सनक बनाओल बिहारक मानचित्र सेहो देल गेल अछि जाहिसँ मैथिली भाषी क्षेत्रक परिचय भेटैत अछि। एहिमे अनेक राष्ट्रिय नेता यथा महात्मा गान्धी, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, प० नेहरू, अबुल कलाम आजाद, महामना मालवीय, सुभाषचन्द्र बोस, कवीन्द्र रवीन्द्र, ओहि समयक बिहारक कांग्रेस मन्त्रिमण्डलक वरिष्ठ मन्त्रिगण, यथा डॉ० श्री कृष्ण सिंह, अनुग्रह नारायण सिंह, डॉ० सैयद महमूद, जगलाल चौधरी, हिन्दीक तरुण साहित्यकारलोकनि यथा-कविवर मनोरंजन, श्री कलक्टर सिंह केसरी, रामलोचनशरण, श्री आरसी प्रसाद सिंह, कलाकार श्री उपेन्द्र महारथी, मिथिलेश कामेश्वर सिंह, कुमार गंगानन्द सिंह, मिथिला-मैथिलीक उन्नायक विद्वानलोकनि यथा—म० म० डॉ० गंगानाथ झा, म० म० डॉ० उमेश मिश्र, रायबहादुर जयानन्द 'कुमर', प० जीवनाथ राय, बाबू भोलालाल दास आदिक चित्र छनि। सामयिक रचना सभक अतिरिक्त विविध विषयक रचना संकलित अछि जाहिसँ अंक उपादेय बनल अछि। विस्तारक भयसँ विशेष विवरण देबाक लोभक संवरण करय पड़ैत अछि।

१९३५ ई० सँ १९५४ ई० धरिक मध्य मैथिलीकेँ जहिना थोड़-थोड़ अधिकार प्राप्त होइत गेलैक, तहिना-तहिना जगह धकियबैत गेल, जून १९५२ सँ देखबामे अबैत अछि जे पहिने जतय मैथिलीक स्थान छलैक,

Scanned by CamScanner

हिन्दीकेँ ताहिठाम ठेलि देल गेल आ राष्ट्रभाषाक पृष्ठ निर्धारित क' देल गेल छल। एहिमे ई युक्ति प्रतीत होइत अछि जे १९४९ ई० सँ पूर्व पटना विश्वविद्यालय प्रवेशिका परीक्षामे मैथिलीकेँ एक ऐच्छिक विषयक रूपमे मान्यता देने छल, परन्तु १९४९ बाद मातृभाषाक रूपमे मैथिलीक अध्यापन होअय लागल। दोसर, १९५०मे भारतक नवीन संविधान लागू भेल, जाहिमे भारतक विभिन्न भागक १४ गोट भाषा संविधानक अष्टम अनुसूचीमे परिगणित भेल, मैथिलीकेँ उपेक्षित राखि देल गेल। मैथिलीक हित-चिन्तक लोकनिक कान ठाढ़ भेलनि आ एहि हेतु आन्दोलनक स्वर मुखरित होअय लागल, परन्तु ई पंक्ति लिखबाक समयधरि मैथिलीकेँ उक्त अधिकार नहिए प्राप्त भेलैक अछि। एहू दृष्टिएँ 'मिहिर'मे मैथिलीक हेतु विशेष स्थान देबाक भावना बढ़ल होयत। तेसर लोक सभाक चुनावमे महाराज कामेश्वर सिंह प्रत्याशी भेल छलाह। क्षेत्र छलनि मैथिली भाषी। पहिले निर्वाचन भ' रहल छलैक। मतदाताकेँ एकर कोनो अनुभव नहि छलैक, तेँ प्रशिक्षित करब आवश्यक छलैक। ई काज हिन्दीक माध्यमसँ आर्यावर्त, अंगरेजीक माध्यमसँ 'इण्डियन नेशन' क' रहल छलनि, तेँ 'मिहिर' मैथिलीक माध्यमसँ ई काज करय से विचार उत्पन्न भेल होयत, ई हमर अनुमान अछि।

भने 'मिहिर'मे मैथिलीकेँ गौण स्थान रहौक, परन्तु विचारक आदान-प्रदान करबाक मंच तथापि 'मिहिर' छल। धर्मप्राण मिथिलामे धर्मशास्त्र विषयक अनेक द्वैध विचार समय-समयपर उपस्थित होइत छल। पर्व आदिक प्रसंग जे मतभेद उत्पन्न होइत छल, तँ विद्वान लोकनि एही माध्यमसँ अपन-अपन मत व्यक्त करैत छलाह। एही प्रकारक विवादकेँ दृष्टिमे राखि श्री हरिमोहन बाबू एकठाम लिखने छथि—"हे पण्डित! आबहु दया करू। जितिया पावनि लै जनु झगड़ू।" कोनो शास्त्रीय प्रश्न एही माध्यमसँ व्यक्त होइत छल। १९४७ क जनवरीक कोनो अंकमे श्री गोविन्द झाक "स्त्री प्रत्ययक उपेक्षा किएक?" एकर एक उदाहरणस्वरूप देखल जाय सकैत अछि।

मिथिला-मैथिल-मैथिलीसँ सम्बद्ध जतेक संस्था छल वा अछि—यथा मैथिल महासभा, मैथिली साहित्य परिषद आदि एकरो सभक सम्पूर्ण कार्य-कलाप, गतिविधि ओ विवरण आदि एही माध्यमसँ प्रकाशमे अबैत छल। आइ यदि मैथिल महासभाक सम्पूर्ण इतिहास लिखबाक हेतु कयौ उद्यत होथि तँ सम्पूर्ण सामग्री 'मिथिला मिहिर'मे उपलब्ध भ' सकैत छनि। मैथिली-साहित्य परिषदक विस्तृत इतिहास, अध्यक्ष, स्वागताध्यक्ष, आदिक भाषण,

मन्त्रीलोकनिक प्रतिवेदन आदि 'मिहिरे'मे सँ छानल जाय सकैत अछि। मैथिली साहित्यक प्रगतिक अधिकतर सूचना एहीसँ प्राप्त भ' सकैत अछि। अनेक कटु-मधु विवाद समय समयपर होइत छल, जे आगू आयल पीढ़ीक हेतु बेस मनोरंजक विवाद सब अछि, यथा—'बुचकुन बाबा बनाम खट्टरकका' मैथिली साहित्यक इतिहासमे बड़ मनोरंजक विवाद भेल छल तकर मंच 'मिहिरे' छल।

समय-समयपर संस्कृतपर सेहो कुठाराघात होइत रहल अछि, तकर प्रतिवाद, संस्कृतक संरक्षणार्थ जनमतकेँ प्रभावित करबाक काज सेहो एहि माध्यमसँ होइत रहैत छल। राजदरभंगा द्वारा प्रजाक हितमे समय समयपर जे काज कयल जाइत छल, शिक्षाक विकासक हेतु राजदरभंगाक जे अवदान अछि, ताहि सभक सम्पूर्ण विवरण एहीमे सुरक्षित अछि।

धारावाही रूपमे अनेक मौलिक ओ अनूदित रचना एहि माध्यमसँ प्रकाशमे अबैत रहल। उदाहरणार्थ—साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दास रचित 'सुभद्रा-हरण', महाकवि सीताराम झा रचित 'अम्ब-चरित', श्री मथुरानन्द चौधरी रचित 'कानन-कन्या' महाकाव्य सब। डॉ० श्री सुभद्र झा लिखित 'हमर विदेश यात्रा', जगदीश्वर प्रसाद ओझा लिखित-आगम रहस्य, डॉ० श्री श्रीकृष्ण मिश्र लिखित 'कन्यादान समीक्षा', पं० जनार्दन झा 'जनसीदन' रचित 'द्विरागम-रहस्य', प० श्री मतिनाथ मिश्रक 'सौभाग्य-सिन्दूर', श्री ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क 'अनल पथ,' प्रो० श्री तन्त्रनाथ झा द्वारा लिखित भवभूतिक 'मालती माधव' नाटकक कथासार, श्री दिव्येश्वर सिंह रचित 'गौरी परिणय' खण्डकाव्य, मिथिलेश-महेश-रमेश व्याख्यानमालाक अन्तर्गत कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशीक संस्कृत भाषामे देल दीक्षान्त भाषण, (जे १९५२क अप्रैलक तीन अङ्कमे समाप्त भेल अछि), एहिना अनूदित साहित्य, यथा शरश्चन्द्रक अनेक बंगला उपन्यास—श्री सुमनजी द्वारा अनूदित 'बड़की दाइ', श्री उपेन्द्र नाथ झा व्यास' द्वारा अनूदित 'बाभनक बेटी', श्री जितेन्द्र झा द्वारा अनूदित 'चन्द्रनाथ' ओ विलासी, प० लक्ष्मीनाथ झा द्वारा अनूदित बाजसनेयि वैवाहिक मन्त्रक मैथिली रूप आदि अनेक पुस्तक एहि माध्यमसँ प्रकाशमे आयल।

खेदक विषय ई जे 'मिथिला मिहिर'क १९०९ ई०सँ १९५४ ई० धरिक सम्पूर्ण 'फाइल' कतहु एक ठाम उपलब्ध नहि अछि। छिटफुट रूपमे कतहु किछु, कतहु किछु ताकि हेरि उपलब्ध कयल जा सकय तँ एहिसँ मैथिली साहित्यक बहुतो निधि छानि क' बाहर कयल जाय सकैत अछि। 'मिथिला-

Scanned by CamScanner

'मिहिर'क एक एहन दीर्घ जीवनकाल अछि जे स्वतन्त्र रूपेँ अनुसन्धानक अपेक्षा रखैत अछि।

१९५३ ई०मे श्री सुमनजी चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयमे मैथिलीक प्राध्यापक पदपर नियुक्त भेलाह तँ सम्पादन कार्यमे हिनका समय थोड़ भेटैत छलनि, तेँ श्री उमापति तिवारी तथा प० श्री उपेन्द्र नारायण झा हिनक सहायता करबाक हेतु नियुक्त कयल गेलाह, ओहि समयमे 'मिहिर'मे मैथिली भाषा पूर्णरूपेँ प्रमुखता पाबि चुकल छल, परन्तु दैव दुर्विपाक कही, मैथिलीक अभाग्य कही १३ नवम्बर १९५४क अङ्क अर्थात् ४८म वर्षक पाँचम अङ्क प्रकाशित भेलाक बाद हठात् महाराज एकर प्रकाशन बन्द क' देबाक आदेश द' देलथिन जकर चर्चा प० श्री गिरीन्द्र मोहन मिश्रजी अपन 'किछु देखल, किछु सुनल' नामक ग्रन्थमे कयने छथि आ जे प्रसङ्गतः पहिने उद्धृत कयल जा चुकल अछि।

एहि अवधिमे भाषाक शैली (वर्त्तनी)क प्रसंग मिथिलामिहिरकेँ ने कोनो पूर्वाग्रह छलैक ने कोनो दुराग्रह। एकर सम्पादक अत्यन्त उदारनीतिक लोक। जे जहिना लिखैत छलाह तनिक रचना ताही शैलीमे छपैत छलनि। सम्पादक अपनहु सब रूपकेँ वैकल्पिक माननिहार, अशुद्ध ककरो नहि। फलतः हिन्दी तथा मैथिली दूनू क्षेत्रक महान कवि ओ लेखकक सहयोग समान रूपसँ प्राप्त होइत छलनि।

उदाहरणार्थ किछु-किछु अंश उद्धृत करब। यथा--

सांस्कृतिक केन्द्र सौराठक दिन प्रतिदिन बढ़ैत दुर्व्यवस्थाक प्रसंग सम्पादकक कलमसँ लिखल—

"६० सालक शुद्धक संगहि सौराठ सभा सम्पन्न भय गेल। लक्ष लक्ष लोकक सागर-संगम वर्षान्तमे एक बेर तरांगायित भय पुनः अन्तर्लीन भय गेल।..............यद्यपि वर्त्तमान कालिक वैवाहिक कुरीतिसँ ईहो समाज बाँचल नहि रहल, टाका लेबा देबाक प्रवृत्ति एहू निरीह जातिकेँ लोलुप बनाय देलक। सुतरां सौराठक गाछी पूर्व जकाँ कुलीनताक उद्‌बोधनक केन्द्र नहि रहि सकल, प्रत्युत वर विक्रयक हाट जकाँ एकर रूप विकृत भय गेलैक। फलतः एहू उपयोगी सांस्कृतिक केन्द्रक प्रति समाजमे विरागात्मक प्रवृत्ति बढ़ि रहल छैक।"[1]

जमीन्दारी उन्मूलनक आन्दोलन जोर सोरसँ चलि रहल छल। से भेला उत्तर समाजमे क्रान्ति आबि जायत ई धारणा जन-साधारणमे बनयबाक

१. मि० मिहिर, २५ जुलाइ, १९५३, प्रथम पृष्ठ।

Scanned by CamScanner

प्रयास चलि रहल छल। 'मिहिर' एक जमीन्दार-संरक्षित पत्र होयबाक कारणें जमीन्दारी उन्मूलनक विरोधी छल। एहि प्रसंग म. म. डॉ० सर गंगानाथ झा लिखने छथि—

''आइ कालिह सर्वत्र 'ऐक्य' दिस लोक झुकल अछि। श्री गांधीजीक मतें त ऐक्य भेल, तहाँ सभ क्लेश दूर भेल,। परन्तु विचित्र घटना ई देखि पड़ैछ जे जतेक 'ऐक्य' 'ऐक्य' लोक जपैत अछि ततेक भेदो बढ़ल जाइछ। कांग्रेस तँ मुसलिम-लीगक पाछाँ पड़ल छथि—लीग आगरैले जाइत छथि। तथापि ओही दिस तत्पर छथि। ओ घरक लगक ऐक्य जे परम सुसाध्य ओ सुखकर छैक तकरा अंठौने छथि। जमींदार रैयतिक झगड़ा परम कृत्रिम। अनादिकालसँ दुहू एक आश्रमस्थ एक लाभ हानि वाला छथि। झगड़ा परम अमूल। 'जमींदारों का सत्यानाश' ई मन्त्र जे किसान लोकनि रटैत छथि, से कनेक विचार करथु जे कांग्रेस वा कोनो 'राज 'स्वराज' भेने हुनक भूमि 'ब्रह्मोत्तर' त नहिए भय जयतैन्ह—मालगुजारी ककरहु दैक पड़बे करतैन्ह—ओ जकरा दैक पड़तैन्ह से नाक पकरि कै ओसूल करतैन्ह—एखन तँ जमींदार हाथे पैर पकड़ैत छैन्ह। अद्यावधि जमींदार किसान एक आश्रमस्थ छथि—एक आश्रमस्थ लोक जकाँ अपनामे झगड़ो होइत छैन्ह त लगले मिलापो होइत छैन्ह—जमीन उपजाऊ हो तकर यत्न सबहिमिलि करैत अयलाह अछि। श्रद्धादि वेर कुबेर पड़लापर परस्पर साहित्य एक दोसराक करैत अयलाह—जमींदार अन्नें, द्रव्यें, किसान शरीरें। परस्पर अकृत्रिम सद्भाव सृष्टिक आदिसँ चल आयल अछि। पुस्तपुस्तैन घराउ व्यवहारसँ परस्पर सौहार्द सँ हृष्टपुष्ट सभ रहैत आएल अछि।

…………किसान लोकनि एहि भ्रममे जनु पड़थि जे जमींदारक चल गेने मालगुजारी नहि लगतैन्ह—मालगुजारी लगबे करतैन्ह। ओ कोन प्रकारें ओसूल कयल जेतैन्ह, से सरकारी 'खास महाल'क रैयति सँ बूझि लेथु। वा म्युनिसिपैलेटी (जे एक प्रकारक सरकारी 'खासमहाले' थीक)क टैक्स सम्बन्धी नीति-रीति कें बूझि लेथ—तखन मिलाबथु जे कोन रीति-नीतिमे रहब सुखकर—जमींदारी वा सरकारी मे।

जमींदारो लोकनि—जे लोकनि किसानकें रुपैयाक टकसाल मात्र बुझैत होथि—आब ताहि भावक परित्याग करथु। जे सदा सँ सुहृद् भाव—पितापुत्रकभाव जमींदार किसानक बीच रहि आएल अछि—ओ आबहुँ सुसञ्चालित जमींदारीमे सर्वत्र अछि—तकर अवलम्बन करथु—जमीन्दारीमे घूमल करथु—किसानक सुख दुःखक साक्षात् परिचय राखथु। किसानो

Scanned by CamScanner

लोकनि जमींदारीकेँ प्राचीन समय जकाँ अपन-रक्षक पोषक मानथु। तदनुसारे उभय पक्षक व्यवहार रखैत जाथु। एही में लोकक देशक कल्याण अछि।''[१]

एहि उद्धरणसँ शैलोक प्रसङ्ग जे अतिशय आग्रही छथि तनिक आग्रह दुराग्रह थिकनि तकरो बोध होइत अछि आ 'मिहिर'क नीति पर सही प्रकाश पड़ैत अछि।

आब एक छोट सन उदाहरण प० जीवनाथ रायक लिखल 'देवासुर संग्राम' शीर्षकसँ देल जाइत अछि—

''बहुत लोकक मनमे शंका होइत हयतैन्हि ये कलियुगसँ सभ प्रकारेँ उत्तम युग द्वापर, त्रेता कोन ये सत्ययुग पर्यन्तमे अनेको देवासुर-संग्राम भेल, एकर वर्णनसँ हमरा लोकनिक पुराण तथा इतिहास ग्रन्थ परिपूर्ण अछि, परञ्च की कारण ये कलियुगमे देवासुर-संग्रामक अभाव देखि पड़ैत अछि। की आब देवता और असुर छथिए नहि ? अथवा दुहू दल मध्य एहन कोनो सुदृढ़ सन्धि भ' गेल छैन्हि ये आब कोनो विरोधे नहि उपस्थित होइतछैन्हि?''[२]

उपर्युक्त उद्धरण सबसँ एहि कथनक पुष्टि होइत अछि जे श्री सुमन जीक सम्पादन कालमे भाषा शैलीक प्रसंङ्ग मिथिला मिहिरकेँ कोनो दुराग्रह वा पूर्वाग्रह नहि रहि गेल छलैक। हमरा जनैत संस्कृत सन सुगठित ओ नियम सबसँ आबद्ध भाषा पर्यन्तमे जखन वैकल्पिक रूप चलैत अछि तखन मैथिलीमे मानि लेलासँ कोनो हानि नहि अछि।

मिथिला मिहिर पर विचार करबाक हेतु एकरा हम चारि काल खण्डमे विभाजित कयलहुँ अछि जाहिमे तीन काल खण्ड पर विचार कयल जा चुकल अछि। अन्तिम कालखण्ड थिक पटनासँ प्रकाशित १९६० ई० सँ अद्य-पर्यन्त। एहि कालखण्ड पर हम संक्षेपमे विचार करब। पूर्वहि कहल गेल अछि जे 'मिहिर'क एहन दीर्घ जीवन काल छैक जकर स्वतन्त्र इतिहास लिखल जयबाक चाही। मैथिलीक दृष्टिएँ ई अन्तिम काल-खण्ड सबसँ महत्त्वपूर्ण अछि। एही कालमे आबि ई सम्पूर्णतः मैथिली साप्ताहिकक रूपमे प्रतिष्ठित भ' सकल अछि। ओना बाबू लक्ष्मीपति सिंहक एहि कथनसँ जे ''किन्तु, खेदक ओ ग्लानिक विषय एतबेक जे प्रचार-प्रसारादिक यथावश्यक सभ साधनक रहितहु 'मिथिला-मिहिर' एहि चौदह (आब बीस) वर्षहुमे एखन धरि स्वावलम्बी नहि बनि सकल अछि। की विडम्बना ! कहि नहि एहि राहुग्रस्ततासँ 'मिहिर' कहिया धरि कोना मुक्त भए अपन नाम गुण कए

१. मि. मि. शारदीय संख्या आश्विन १३४६ साल, मैथिली खंड १ पृ०।
२. तत्रैव, पृ० १०।

Scanned by CamScanner

वस्तुत: चरितार्थ कए सकत !!!" हम पूर्णतः सहमत छी। कारण एहिकालमे आबि मैथिलीक हेतु जन जागरणमे पर्याप्त वृद्धि भेल। अधिकार प्राप्तिक दिशामे सेहो मैथिली अनेक डेग आगू घुसकल, राजनीतिक चेतनामे सेहो परिपक्वता आयल, अनेक मैथिली भाषी बिहारक मुख्यमन्त्रिपदकें अलंकृत कयलनि, एहि समयमे नवयुवक वर्ग पूर्ण सचेत भेलाह, एहन वातावरणमे मिहिरकें जे प्रखरता अनबाक चाहिऐक से नहि आनि सकल, जन मानसकें आन्दोलित ओ आकर्षित करबाक स्वर मुखरित नहि क' सकल अछि। दिनानुदिन स्वस्थ होयबाक स्थान पर पिलपिलाहे होइत गेल। अस्तु।

एकर पुर्जन्मक कथा प्रसङ्गतः पूर्वहिक कहल जा चुकल अछि। एकर पुन: प्रकाशनक समय मे एक निश्चित भाषा शैली अपनयबाक प्रश्न उठल छल। हमरा जहाँ धरि स्मरण अछि---एहि हेतु एक उपसमिति बनल छल जाहि मे तत्कालीन आर्यावर्त्तक प्रधान सम्पादक श्रीयुत श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालङ्कार', प्रो० श्री हरिमोहन झा, श्रीसुमनजी तथा प० श्रीयुत गिरीन्द्र मोहन मिश्रजी सेहो छलाह। प्राचीन पत्र पत्रिकाक सम्पादकलोकनिक लेख शैली, महावैयाकरण प० दीनबन्धु झाजीक हाथक लिखल किछु पाण्डु-लिपि आदिकें आधार बनाय ई उपसमिति जे शैली निर्द्धारित कयलक ताही शैलीमे नवक्रमांक सँ एकर प्रकाशन आरम्भ भेल। एहिमे समन्वय करबाक चेष्टा कयल गेल जाहिसँ सब पक्षक लोक सहमत भ' जाथि। से भेबो कयल। बहुतो शैलीक हेतु कट्टर लेखक एकरा अंगीकार कयलनि आ मिथिला मिहिर कें अपन-अपन रचना सँ सहयोग करय लगलथिन। केवल आचार्य रमानाथ झा ओ विशिष्ट भाषा शास्त्री डा० श्री सुभद्र झाजी एहिसँ वैमत्य रखलनि। फलतः हिनका लोकनिक रचनाक संग 'लेखकक आग्रहें' ई सम्पादकीय टिप्पणी द' रचना छापल जाय लागल।

यदि ई कहल जाय जे मैथिलीमे शैलीक नामपर होइत विवाद क्रमशः एकर प्रकाशनक बाद क्षीण होइत होइत समाप्त प्राय: भ' रहल छल तँ से अत्युक्ति नहि होयत। ओना भाषामे एकरूपता आबि गेल से नहि मानल जा सकैत अछि। प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नवकवितावाद, नवलेखनवाद, अकविता-वाद ओ उदारतावादक नामपर एकरूपताक स्थानपर अनेक रूपता बढ़ैत बढ़ैत अनेक विकृति सेहो आबि गेल अछि। भाषापर अधिकारक कोन कथा, भाषाक सम्यक् ज्ञानसँ रहितो व्यक्ति दु अङ्क, चारि अङ्क कोनो पत्रिका प्रकाशित क' सम्पादकक पंक्तिमे आबि क' बैसि गेनिहार स्वयंभू साहित्यकारलोकनि

Scanned by CamScanner

एहि विकृतिकें पसारबामे सहायके भेलाह अछि, परन्तु स्थापित तथा सिद्ध-हस्त मान्य लेखक वर्गक अधिसंख्यक लोक मिथिलामिहिरक नवीन शैलीकें आत्मसात् क' लेलनि तथा एहि संग शैलीक विवादसँ अनभिज्ञ नव प्रतिभाक लोक जे साहित्य क्षेत्रमे पदार्पण कयलनि तनिका सभक हेतु 'मिहिरे'क शैली आदर्श रूपमे रहलनि। सर्व साधारण पाठक ओ शत-शत, सहस्र-सहस्र विद्यालय ओ महाविद्यालयमे पढ़निहार छात्र वर्गहुक हेतु मिथिलामिहिरक शैली मान्य ओ ग्राह्य भेल। आइ अधिकतर लोक एही शैलीकें स्वीकार क' चुकल अछि।

एहि ठाम ईहो संकेत क' देब आवश्यके प्रतीत होइत अछि जे क्रमशः एहू पत्रमे भाषाक अशुद्धि बढ़ैत गेल अछि जाहि दिस सम्पादक मण्डलक दृष्टि पड़बाक चाही। उदाहरणार्थ किछु उद्धरण देखल जाय—

एकटा शीर्षक-'दुधारि पशुक बाँझपन।'[1] एहिमे आगाँ लिखल गेल अछि "सफल डेरी एवं पशुपालनक हेतु ई आवश्यक मानल जाइछ जे गाय महींस समयपर गाभिन होअय आ समयपर बच्चा दिअऽ।"

शीर्षक शुद्ध क' हिन्दीक अनुवाद कयल गेल अछि। मैथिलीमे दुधारि शब्दे नहि होइछ। जे बाँझ रहत से दुधारि कोना होयत? दोसर, 'समयपर गाभिन होअय आ समयपर बच्चा दिअऽ' एहिमे 'दिअऽ' क्रियापद तँ अद्भुत अछि।

एकटा दोसर उदाहरण देखल जाय: शीर्षक छैक—'एकटा नमहर सन उलहन तोरे नाम'[2] एहिमे किछु पंक्ति छैक—

'एखने तँ पिरीत हमर छिलकि गेलैए' ('हमर' संग गेलैए ?)
ओ पुरिबा-पछबा
जे तोहर आँचरकें पनिया लैत छलै ('तोहर' संग छलै ?)
कतेक सुद्धा छलै। पहुँचल छलै
ओ राति
जे हमरा-तोरा जागल रहबाक
महामन्त्र सिखा गेल छलै" ('हमरा-तोरा' संग छलै ?)

एहि प्रकारक अनान्वित क्रियापदक प्रयोगसँ भाव ओ भाषामे कोन चमत्कार आबि जायत से सुधीलोकनिक हेतु विचारणीय अछि।

---

१. मि. मि. १५, जून १९५४: पृ० १३।

२. तत्रैव. पृ० १२।

एहन प्रयोगसँ लेखकक अनभिज्ञता ओ सम्पादकक उदासीनता वा असावधानता दूनू प्रकट होइत अछि। ई हँडी भरिक भातमेसँ एक आधटाकेँ आङुरसँ पीचि सिद्ध-असिद्धक परीक्षण क' देखाओल गेल अछि जकरा संस्कृतमे स्थालीपुलाकन्याय कहल गेल छैक। भाषाक संमार्जनक दृष्टिएँ एहन प्रयोग सबपर अंकुश राखब सम्पादकक उत्तरदायित्व होइत छनि से स्मरण राखब आवश्यक अन्यथा एहन विकृति भाषाकेँ उपहासास्पद बना देत। अस्तु।

उपर्युक्त कथनक ई तात्पर्य नहि जे मैथिलीकेँ 'मिथिलामिहिर'क कोनो विशेष अवदान प्राप्त नहि छैक। साहित्य-सर्जनक दृष्टिएँ मातृभाषा-साहित्यक श्रीवृद्धि करबाक सर्वोपरि श्रेय एहि बीस वर्षक अवधिमे प्रकाशित सहस्राधिक अङ्ककेँ छैक।

१० सितम्बर १९६० ई०सँ श्री सुधांशु शेखर चौधरी, प्रसिद्ध शेखरजीक, सम्पादकत्वमे इण्डियन नेशन प्रेस, पटनासँ ई अद्यावधि प्रकाशित भ' रहल अछि। जेँ एकमात्र पत्र अछि, तेँ सभ वर्गक पाठकक तोष राखब आवश्यक भ' जाइत छैक। अत: एहिमे अनेक स्तम्भ निर्धारित अछि। यथा, सहमति-असहमति, धार्मिक कथा, स्त्रीगण समाज, नेना भुटकाक चौपाड़ि, फिल्म लोक, देशदेशान्तर, देश-कोस, क्रीड़ाजगत, साप्ताहिक राशिफल, विचारमंच, पाठकीय प्रतिक्रिया, हास्य स्तम्भक रूपमे समय-समयपर 'गोनू झाक चटिसार 'धर्मधकेलानन्दक बलधिंगरो, 'बहिरा नाचय अपने तालेँ', 'अजगुत अनटोटल', रुचय तँ सत्त ने तँ फूसि, आरम्भिक कालमे स्तभेक रूपमे बहुतो दिन धरि 'अंग्रेजी फूलक चिट्ठी' 'सहजो पीसीक चर्खा आदि आदि अनेक स्तम्भ चलैत रहल। ई तँ भेल एकर विविधता, विशेष रूपेँ कथा, कविता, निबन्ध, एकांकी, समीक्षा आदि सब विधाक रचना नियमित रूपेँ प्रकाशित होइत रहैत अछि।

ऊपर जतेक विधाक उल्लेख कयल गेल अछि ताहि सबमे कहल जाय सकैत अछि जे कथा सबसँ अधिक विकसित भेल अछि 'मिहिर'क माध्यमसँ। एहि बीस वर्षमे २३ गोट उपन्यास ओ कतेको दीर्घ कथा सब धारावाही प्रकाशित भ' चुकल अछि। एहि सभक विवरण द' देब लाभदायके होयत।

नवक्रमाङ्क ३७ दिनाङ्क २१. ५. ६१ सँ श्रीमती शेफालिका देवीक लिखल 'तऽर पट्टा : ऊपर पट्टा' नामक उपन्यास आरम्भ भेल जे क्रमांक ५९ दिनांक २२. १०. ६१केँ समाप्त भेल। (ध्यातव्य जे श्रीमती शेफालिका

Scanned by CamScanner

देवी छद्मनाम छल, वस्तुतः एकर लेखक श्रीमती नहि, श्रीमान 'शेखर'जी स्वयं थिकाह।) क्रमाङ्क १७५ सँ १८६ पर्यन्त अर्थात् १२. १. ६४ सँ २९. ३. ६४ धरि श्री धीरेन्द्रक 'भोरुकवा', पुनः क्र० ४२७सँ ४३४ अर्थात् २४. ११. ६८ सँ १२. १. ६९ धरि हिनके 'कादो ओ कोइला', क्र० १९२ सँ २०० अर्थात् १०. ५. ६४ सँ ५. ७. ६४ पर्यन्त श्री ललितक 'पृथ्वीपुत्र', क्र० २१० सँ २२१ अर्थात् १३. ९. ६४ सँ २९. ११. ६४ धरि श्री सोमदेवक 'ब्रह्मपिशाच', क्र० २३५ सँ २४२ अर्थात् ७. ३. ६५ सँ २५. ४. ६५ धरि श्री मायानन्द मिश्रक 'खोंता आ चिड़ै,' श्री व्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म'क लिखल 'अर्द्धनारीश्वर' प्रथम खण्ड क्र० २९५ सँ ३३८, अर्थात् १५-५-६६सँ १२-३-६७ धरि, एकरे दोसर खण्ड क्र० ३७७ सँ ३८१ अर्थात् १०-१२-६७ सँ ७-१-६८ धरि, क्र० ४३७ सँ ४५० अर्थात् २-२-६९ सँ ४-५-६९ धरि 'राजा सलहेस', क्र० ९४० सँ ९४९ अर्थात् २२-१०-७८सँ ३०-१२-७८ धरि 'भारतीक बिलाड़ि' ई तीन उपन्यास, ३६६ सँ ३७६ अर्थात् २४-९-६७ सँ ३-१२-६७ धरि 'पनिपत,' ४१९ सँ ४२६ अर्थात् २९-९ ६८ सँ १७-११-६८ धरि 'अगिनवान', ५४८ सँ ५६७ अर्थात् २१-३-७१ सँ ६-६-७१ धरि 'नहि कतहु नहि' नामक श्री जीवकान्तक उपन्यास, श्री विनोदक 'नयनमणि' क्र० ३८३ सँ ३९६ धरि अर्थात् २१-१-६८ सँ २१-४ ६८ धरि, ४०८ सँ ४१२ अर्थात् १४-७-६८ सँ ११-८-६८ धरि श्री विद्यानाथ झा 'विदित'क "ओ....." ४९७ सँ ५०६ अर्थात् २९-३-७० सँ ३१-५-७० धरि श्रीमती गौरी मिश्रक 'चिनगी', ५०७ सँ ५१५ अर्थात् ७-६-७०सँ २-८-७० धरि 'अभिशप्त'मे तथा १२-९-७१क सम्पूर्ण अंक उपन्यास विशेषांकक रूपमे श्री प्रभास कुमार चौधरीक दोसर उपन्यास 'युगपुरुष'. ५९८ सँ ६०४ अर्थात् ९-१-७२ सँ २०-२-७२ धरि श्री शशिकान्तक 'गिरह-कट्ट,' क्र० ६७४ सँ ६९० अर्थात् २५-३-७३ सँ २२-७-७३ धरि श्री गंगेश 'गुंजन'क 'पहिल लोक,' क्र० ७१५ सँ ७३० अर्थात् १३-१-७४ सँ २६-५-७४ धरि श्री 'पराशर' छद्मनामसँ श्री 'शेखर'जीक दरिद्र छिम्मड़ि (मन कथा), श्री गायत्री 'किरण' रचित बाल उपन्यास — 'साहसी चिन्टू', क्र० ७३७ सँ ७४१ अर्थात् २३-६-७४ सँ २१-७-७४ धरि, क्र० ९७६ सँ ९९० अर्थात् १-७-७९ सँ ७-१०-७९ धरि श्रीमती लिलीरेक 'पटाक्षेप,' क्र० ९९२ सँ १०११ अर्थात् २१-१०-७९ सँ २-३-८० धरि, श्री मार्कण्डेय प्रवासीक 'अभियान' शीर्षक उपन्यासक अतिरिक्त श्री मती इन्दिरा चौधरी रचित सपता विपता कथा,

Scanned by CamScanner

श्रीमती लिलीरेक दीर्घ कथा 'अन्तराल' तथा महात्मा गान्धीक आत्मकथाक 'सत्यक हमर प्रयोग' नामसँ श्री योगानन्द झा द्वारा अनूदित अंश सेहो प्रकाशित भेल अछि।

ओना उपन्यास अंक, एकांकी अंक, निबन्ध अंक, लघु कथा अंक, सत्य कथा अंक, विद्यापति स्मृति अंक, होलिकांक आदि अनेक विशेषांक सेहो समय-समयपर प्रकाशित भेल अछि, परन्तु दोसरे वर्षक बाद सँ नवीन वर्षमे प्रवेशक अवसर पर कथा-अंक प्रकाशित होइत रहल अछि। 'मिहिर'मे प्रकाशित सब कथाक जँ परिगणन कयल जायत तँ से सब मिलाय तीन हजारसँ अधिक कथा होयत। अतः 'मिहिर'क माध्यमसँ मैथिली कथाक सर्वोपरि विकास भेल अछि, ई कथन सर्वांशतः सत्य मानल जयबाक चाही। ओना एहि माध्यमसँ सब विधाक विकास भेल अछि।

समग्ररूपमे भाषाक स्वरूपमे स्थिरता अनबाक ओ कथा साहित्यकेँ विश्वक अन्य भाषाक कथा-साहित्यक समकक्ष ठाढ करबाक श्रेय 'मिहिर'केँ छैक।

पूर्वमे कहल गेल अछि जे वेतन भोगी सम्पादक मण्डल केवल 'मिथिला-मिहिर'केँ प्राप्त भेलथिन, संगहि प्रसङ्गतः ईहो कहल जा चुकल अछि जे लेखपर पारिश्रमिको प्राप्त होइत छैक तकर अनुभव मैथिलीक साहित्यकारकेँ एही पत्रक माध्यमसँ भ' सकलनि।

ओना ई कहब बहुतोकेँ अपमानजनक प्रतीत होयतनि, परन्तु सत्यता एहू बातमे अछि जे पारिश्रमिक प्राप्त करबाक लोभसँ सेहो बहुतो लेखक मैथिलीमे लिखबाक हेतु प्रवृत्त भेलाह। एहि अवधिमे शतशः नव प्रतिभाक लोक साहित्य क्षेत्रमे अवतीर्ण भेलाह। हुनकालोकनिक प्रतिभा-लताकेँ लतरबाक हेतु 'मिहिर' विस्तृत मचानक काज करैत आबि रहल अछि।

नव-लेखनकेँ स्थापित करबाक हेतु समय-समयपर अनेक पत्र पत्रिका प्रकाशित होइत रहल, परन्तु ओ सब मिलिओक' जतबा काज नहि क' सकल ताहिसँ बेसी एकसरे 'मिहिर' करैत आबि रहल अछि।

मिथिलाक्षरकेँ पुनरुज्जीवित करबाक दिशामे सेहो एकर योगदान श्लाघ्य रहलैक अछि। विश्वविद्यालयीय परीक्षामे मिथिलाक्षरक हेतु जहियासँ १० अंक निर्धारित कयल गेलैक तहियासँ कमसँ कम ई १० अंक प्राप्त करबाक हेतु बहुतो छात्र थोड़बे सही, परन्तु मिथिलाक्षर सिखबाक हेतु प्रेरित होइत छथि। हुनका लोकनिकेँ सुविधापूर्वक मिथिलाक्षरक ज्ञान प्राप्त करयबाक

Scanned by CamScanner

दृष्टिसँ बहुतो दिन धरि वर्णमाला, तदुत्तर संयुक्ताक्षर ओ मात्रा, तदुत्तर छोट-छोट बात सभक श्लोक बनबा-बनबा 'मिहिर' बहुत दिन धरि छपैत रहल। जतेक व्यक्ति एहि माध्यमसँ मिथिलाक्षर सिखैत छथि, एको आध प्रतिशत जँ अभ्यासी भ' जाइत छथि तँ भविष्योक हेतु मिथिलाक्षरमे लिखल प्राचीन पाण्डुलिपिके पढ़निहार तँ समाजमे रहि जयताह जाहिसँ लुप्त होइत प्राचीन पाण्डुलिपि सभक उद्धार होयबाक आशा तँ बनल रहत।

एतेक विस्तृत क्षेत्र, एतेक पैघ जनसंख्या मैथिलीभाषीक होइतो जँ एक मात्र 'मिथिला-मिहिर' आदिकालसँ आइ धरि प्रकाशित होइत आबि रहल अछि, तेँ मैथिलीक प्रति जनिका हृदयसँ अनुराग छनि, तनिका लोकनिकेँ 'मिहिर'सँ बड़ आशा छनि।

मिथिला ओ मैथिलीक समक्ष अनेक सामाजिक ओ राजनीतिक समस्या सब छैक। एखनहुँ मिथिलांचल बहुत पिछड़ले अछि। तेँ मिथिलावासी 'मिहिर'केँ विशेष रूपेँ अपनाबथि तकर आवश्यकता अछि। एमहर आबि एकर छपाइ तेहन होइत रहल अछि जाहिसँ पत्र पढ़निहारकेँ कष्ट होइत छनि, तकर सुधार सर्वथा अपेक्षित अछि।

मिथिला

१९५२ ई०क दिसम्बर माससँ डॉ० श्री लक्ष्मण झा, पी. एच्. डी. (लण्डन)क सम्पादकत्वमे 'मिथिला' नामक एक साप्ताहिक पत्रक प्रकाशन दरभङ्गासँ आरम्भ भेल। ओना तँ एक आध गल्प ओ कविता सेहो एहिमे छपैत छल, परन्तु मुख्यता रहैत छलैक समाचारक, देश-विदेश प्रान्त-अंचल सब ठामक समाचारकेँ प्रमुखता देल जाइत छलैक। एहि ठाम स्मर्त्तव्य जे १९११ ई०सँ 'मिथिला-मिहिर' साप्ताहिक रूपमे प्रकाशित होइत आबि रहल छल, परन्तु एहि ४०-४१ वर्षक अन्तरालमे मासिक पत्रिका अनेक प्रकाशमे अबैत रहल, परन्तु साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करबाक क्यौ साहस नहि क' सकल छलाह। 'मिहिर'मे तँ प्राधान्य हिन्दीएक रहैत छलैक। अतः विशुद्ध मैथिलीभाषाक प्रथम साप्ताहिक होयबाक श्रेय एकरे प्राप्त छैक।

इतिहासकारलोकनि सेहो एहिपर विशेष प्रकाश नहि देने छथि तथा हमरो एकर प्रकाशित सब अङ्क उपलब्ध नहि भ' सकल। अतः एकरा नीतिक

Scanned by CamScanner

सम्बन्धमे अनुमानसँ किछु कहि देब हम युक्तिसंगत नहि मानैत छी। एहि प्रसङ्ग एतबा आवश्य कहल जाय सकैत अछि जे कांग्रेसक दुर्नीतिक विरुद्ध ई पूर्ण सावधान रहैत छल। अनीति ओ भ्रष्टाचार दिस जनताक ध्यान आकर्षित करैत रहैत छल। महावैयाकरण प० दीनबन्धु झाक एक चिट्ठी प्रकाशित छनि—

"मिथिला नामक साप्ताहिक पत्र प्रारम्भहिसँ सुन्दर ओ उपयुक्त अछि। एहिमे सुस्पष्ट रूपेँ देश-विदेशक जिज्ञास्य समाचारावलोक समावेश कयल जाइ अछि जकर उद्‌बोधन साधारणसँ लयकेँ उच्च पद प्राप्त पर्यन्त व्यक्तिमे आवश्यक। अतः हमरा विचारें योग्य प्रत्येक मैथिल महोदयक विविध समाचार ज्ञानार्थ तथा मैथिली भाषाक उन्नयन द्वारा मिथिलाक अभ्युन्नतिक हेतु ग्राहक अवश्य होथि।"[1]

एहि उद्धरणसँ एकर उपादेयताक आभास भेटैत अछि। मिथिलाक सर्वांगपूर्ण विकास हो ताही हेतु भाषाक उन्नति सर्वोपरि मानल जाइत अछि। अतः मैथिलीक प्रसङ्ग एकर की दृष्टिकोण छलैक तकर परिचय निम्नांकित सम्पादकीयसँ होइत अछि, जकर स्वरूपक अवलोकन करब बेसी उपयोगी होयत। सम्पादक 'मैथिली' शीर्षक सम्पादकीयमे लिखने छथि—

"लहेरियासरायमे दरभङ्गा जिला भरिक पुस्तकालय सभक प्रतिनिधि लोकनिक सम्मिलन भेल अछि। सभाक निमन्त्रण-पत्र, प्रचार, व्याख्यान, प्रस्ताव आदि सब काज हिन्दी भाषामे, एतयक मातृभाषा मैथिलीमे नहि, भेल अछि। पुस्तकालय सभमे मैथिली पुस्तकक संख्या दसो प्रतिशत नहि देखल अछि। पुस्तकालय संघक कार्यमे मैथिली बहिष्कृते अछि। पुस्तकालय संघक संचालकलोकनि मातृभाषाक उपेक्षा कय बाहरक भाषा द्वारा गाँव गाँव, घर घर व्यक्ति व्यक्ति तक कोना विद्याक प्रसार करय चाहै छथि से बुझिमे नहि अबै अछि। मिथिलामे स्कूलमे मैथिलीक उपेक्षा जाहि दिस लोकल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ओ म्युनिसिपेलिटीक कोनो ध्यान नहि, कालेज ओ युनिवर्सिटीमे उपेक्षा, पुस्तकालय, स्टेसन, पोस्ट आफिस, हाट बाजार सर्वत्र मैथिलीक उपेक्षा ओ बुलन्द शहरक बोली हिन्दीक बोलबाला अछि। शिक्षा ओ ज्ञानक प्रसार चाहयवाला बाबुलोकनि ई बात कियै नहि स्मरण रखै छथि जे मिथिलामें हिन्दी थीक अनैया भाषा, समाज एकरा मैथिलीक

१. मिथिला २० अप्रिल, १९५३, पृ० ७।

स्थानमे मातृभाषा रूपें नहि ग्रहण कय सकत, छ सय वर्षक मुसलमान ओ अंगरेज शासक लोकनि प्रयासक बादहु हिन्दीकें ग्रहण नहि कयलक; कांग्रेसी राजा लोकनिहुक आग्रह हिन्दी पक्ष ओ मैथिलीक विपक्षमे निष्फल हयत। आन ठामक भाषा एतय जड़ि नहि पकड़ि सकत। केवल मातृ भाषाकें उखाड़ि हिन्दीकें ओकर स्थानमे रोपयक प्रयासमे समाजक शिक्षा ओ ज्ञानक विकासमे बाधा पड़त। से एखन खूब भऽ रहल अछि।''[1]

एहि उद्धरणसँ मैथिलीक प्रति जे 'मिथिला' साप्ताहिकक जागरूकता छलैक से स्पष्टतः परिलक्षित होइत अछि। जनतामे मैथिलीक प्रति उदासीनताक कारणें एहन सुसम्पादित पत्र सेहो अर्थाभावक कारणें बहुत दिन नहि चलि सकल। सब अङ्क उपलब्ध नहि रहलाक कारणें एकर प्रकाशनक प्रामाणिक अवधि ज्ञात नहि भ' सकल। भविष्य मे एहि सब त्रुटिक मार्जन करबाक प्रयास कयल जायत।

पुनश्च, १९५७ ई०क सितम्बर माससँ प० भोलानाथ मिश्रक सम्पादकत्वमे 'मिथिला' नामक साप्ताहिक पत्रक प्रकाशन दरभंगहिसँ आरम्भ भेल छल, आकारमे किछु छोट परन्तु प्रकारमे पूर्वहिक 'मिथिला' एकरो बुझबाक चाही। पहिलुक 'मिथिला'मे कथाक स्थान नहिएँ जकाँ रहैत छलैक, हँ, कविता छपैत छलैक। व्यंग्य विनोदक हेतु सेहो कोनो स्तम्भ निर्धारित नहि छलैक। प० भोलानाथ मिश्रक सम्पादन कालमे 'परेमीक पुछारि' शीर्षक स्तम्भ निर्धारित कयल गेल छल जे एहि पंक्तिक लेखक लिखैत छलाह। एहिमे कथा, गल्प, कविता एहू सभक समावेश कयल गेल छल। नीतिक दृष्टिएँ एहूमे काँग्रेसक नीतिपर कठोर आघात कयल जाइत छल। भाषामे जे तीक्ष्णता पहिने रहैत छल से एहूमे दृष्टिगोचर होइत अछि। डॉ० श्री लक्ष्मण झा ओ प्रो० श्री लक्ष्मी नारायण सिंह एहूमे खूब लिखैत छलाह, परन्तु किछु अङ्कक बाद एकरो प्रकाशन बन्द भ' गेल।

---

१. मिथिला, १५ जून १९५३, पृ० ३।

Scanned by CamScanner

मिथिला सेवक

२ जनवरी १९५४ ई० सँ अखिल भारतीय मैथिल संघ, कलकत्ताक संरक्षकतामे कलकत्तासँ संघक मुखपत्रक रूपमे 'मिथिला सेवक' नामक एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होअय लागल। एकर सम्पादक छलाह प० श्री सभाकान्त झा, प्रकाशक श्री हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु'। एतवा स्मर्त्तव्य अछि जे अजमेर मैथिल महासभाक अवसर पर 'मिथिला-मिहिर'क पुनः प्रकाशनक निवेदन कयला पर जे प० वीरदत्त मिश्र २५१ ग्राहकक मूल्य देवाक हेतु उद्यत भेल छलाह सैह वीरदत्त मिश्र 'मिथिला सेवक'क प्रकाशनार्थ एक वर्षक कागतक मूल्य अग्रिम समर्पित क' देने छलथिन[1]।

ई ककरहु सँ अज्ञात नहि अछि जे मैथिली आन्दोलनमे गति अनबाक हेतु कलकत्ता प्रवासमे रहनिहार मैथिली भाषी बन्धुलोकनि सबदिन सँ तन-मन-धनसँ अग्रसर होइत रहलाह अछि। मैथिली आन्दोलन केँ राजनीतिक दृष्टि सँ आगाँ बढ़ाओल जाय एहि दिशामे कलकत्ता मैथिल संघ मुख्य रूपेँ सचेष्ट रहल। ओही संघक मुखपत्र होयबाक कारणेँ मिथिला-पृथक्प्रान्तक आन्दोलन जखन आरम्भ भेल तँ मिथिला सेवक एकरा प्रमुखता सँ स्वर देअय लागल छल।

एकर पहिल अंक 'अमर-अंक' नामसँ प्रकाशित भेल। डॉ अमरनाथ झा बिहार लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष छलाह, मैथिल संघ हुनके अभिनन्दन कयने छलनि। पहिल अंक मे ओही अभिनन्दन पत्रक संग सम्पूर्ण कार्यवाहीक विवरण आदि छपल अछि।

दोसर अंकक सम्पादकीयमे पत्रकेँ 'उत्तम पुरुष'मे राखि नीति पर प्रकाश देल गेल अछि। सम्पादकीय केर शीर्षक अछि—'हम, हमर उद्देश्य' विचार निम्नलिखित अछि—

''सर्वप्रथम अपन छोट सन डेग उठबैत, काँपैत हृदय तँ अपने सभक सम्मुख उपस्थित भेल छी। पैर एखन थरथर काँपिए रहल अछि, कोनो तरहेँ तलमलाइत-तलमलाइत ठाढ़ भेलहुँ। आशा अछि अपने लोकनिक आंगुरक सहारा पाबि हमहु पैर जमाइए लेब। बहुत पूर्व आइ सँ २९ वर्ष पहिने अंग्रेजी सालक १९२४ ईस्वीमें कलकत्ता महानगरीमें मिथिलाक हितचिन्तक विद्वत्समाज कैँ इच्छा भेलैन्हि एक गोट एहन संघक जन्म देवाँक जे मिथिलाक संस्कृतिक आधार पर मैथिल समाज कैँ सुव्यवस्थित करैत प्राचीनकाल जकाँ भारतक कोन-कोन मे मैथिल संस्कृतिक प्रचार प्रसार करए। अतः ओ लोकनि सर्वसम्मति सँ एक संघक जन्म देलन्हि। अपन

१. मिथिला सेवक, वर्ष १, अंक ११-१२, पृ० १२।

एहि २९ वर्षक जीवन काल मे संघ यद्यपि सांस्कृतिक एवं सामाजिक बहुतोक योजना बनाए कार्यान्वित कएलक, किन्तु ओहि सभक प्रचार साधन नहि रहने सर्वसाधारण में प्रसार नहि भए सकलैक। एक तँ समाजक अनुत्साह एवं दोसर सभ दिशि सँ उपेक्षित, कोनो सफलता पाएब कठिन सन होइत गेल। जहाँ धरि संघक प्रश्न छैक ओ अपन काज सुचारु रूपसँ दक्षताक संग निबाहैत, किन्तु प्रचार साधनक बिना अधिक कार्य हाथ मे लेबो सँ हटकैत रहल। तकर कारण, अधिकाधिक कार्यकर्त्ताक अभाव। अत: ई संघ जे "कलकत्ता मैथिल संघ" सँ आगाँ बढ़ि "अखिल भारतीय मैथिल संघ" बनि गेल निश्चय कएलक सम्पूर्ण भारतवर्ष भरिमें छितराएल मैथिल समाजक सर्वप्रथम संघटन कए तदुपरान्त ओही केन्द्र सँ मिथिला संस्कृतिक प्रसार कएल जाय। किन्तु से प्रचार साधनक अभावे कोना होएत ? अत: अपन जतबाक सामग्री उपलब्ध छलैक लएकए अपने लोकनिक सम्मुख हमरा ठाढ़ कए देलक। यद्यपि हमर क्षीण तथा सम्वलविहीन देह देखि अहाँकेँ कोनोटा सम्प्रति विशेष आशाक सम्भावना नहि होएत। परन्तु अपना जनकेँ दुर्बल देखि विश्वक सभ लोक सबल बनएबाक प्रयास करैत छैक। की अपने लोकनि एहि शाश्वतिक नियम सँ बाहर छी ?

अत: विश्वास करैत छी हमर पालन पोषण करबा सँ अपने सभ विमुख नहि होएब। प्रत्येक मिथिला जन, समाज वा संस्कृतिक सेवा करबाक कार्य हेतु हम उपस्थित छी, अत: हमर नाम 'मिथिला सेवक' थिक। मिथिलाक वर्त्तमान सीमा सँ यद्यपि हम १५० डेढ सए कोश पर छी तथापि हम अपने कैँ विश्वास दैत छी जे प्राचीन मिथिलाक अन्तर्गते हम छी एवं हमर कार्य क्षेत्र सम्पूर्ण भारतवर्ष अछि। कारण हमर याज्ञवल्क्य, गौतम जनक, कपिल, गंगेश, उदयन, वाचस्पति, मण्डन देशकालक सीमा में बान्हल नहि छलाह। हम तँ ओही संस्कृतिक तथा समाजक निर्माण करए लेल आएल छी। अत: 'मिथिला सेवक' बनबा में आइ हृदय में ततेक गोट विश्वास अछि जे अपने लोकनिक कृपा दृष्टिक वृष्टि एहि परिपुष्ट भए पूर्ण तरहें सेवा कए सकब तकर विश्वास अछि।

मिथिलाक अतीतक चित्र कैँ नेत्रक सम्मुख रखैत वर्त्तमान वा भविष्य कैँ ओहि गौरवमय स्थान पर पहुँचाबी यैह एकमात्र हमर कामना।..........१

१. मि. सेवक, वर्ष १, अंक २, पृ० ३।

Scanned by CamScanner

एहि उद्धरण सँ संघक उद्देश्यक संग एहि पत्रक उद्देश्य पर सेहो प्रकाश पड़ैत अछि। सम्पादकीय लेखन शैली सँ एकर भाषाक स्वरूपक परिचय सेहो भेटि जाइत अछि।

एहिमे एक स्तम्भ छल 'साप्ताहिक समीक्षा' जाहिमे देश-विदेशक प्रमुख समाचारक सारांश संकलित रहैत छल। ई परम उपयोगी स्तम्भ छल। मात्र एकर भाषामे कतहु कतहु शिथिलता छैक। दू चारि वाक्य उदाहरण-स्वरूप उपस्थित अछि—

"दुनिया ब्रिटेनक कूटनीतिज्ञता सँ परिचित अछि, जकरा सहारा सँ ओ मिश्रक समस्या सुलझावए चाहैत अछि।" "जतेक दिन बीतल जाइत अछि पाक अमेरिकी सन्धिक गुल खिलैत जाइत अछि।" 'कलकत्ता काण्ड सँ दिल्ली सिंहासन कम्पायमान भए उठल। एवं लोकसभा आओर राज्य-सभामे काण्डक गुंजायमान सुनवामे आयल।" "भारत एवं रोमानियाक बीच एक व्यापारिक समझौता भेल अछि। जाहि समझौता द्वारा भारत पटुआक तैयार कएल सामान, चाह......आदि बाहर भेजत।"

एहि सब उद्धरणमे भाषान्तरक विकृति स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि। परन्तु सूचनाक संचय एवं ओकर पुनः प्रतिपादन रोचक ढंगसँ कयल जाइत छल। बिनु आन भाषाक पत्र पढनहु सुदूर देहातमे रहनिहार पाठक, एहि स्तम्भकें पढ़लासँ अन्तरराष्ट्रिय राजनीतिक गतिविधिसँ परिचित भ' सकैत छलाह।, हँ, एकर स्वर राजनीतिक अधिक, साहित्यक अल्प रहलैक।

पूर्वमे कहल गेल अछि 'मिथिला प्रान्त'क माङक ई पूर्ण समर्थक छल। तकर पुष्टिमे एकर छोट सन उदाहरण अछि। अड़ाइडंगा 'मालदह'मे मैथिल महासभाक अधिवेशन भेल छलैक। ओहिमे 'मिथिलासेवकक प्रतिनिधि सम्मिलित भेल छलाह। ओहि अधिवेशनमे एक प्रस्ताव पारित भेल छल। 'मिथिलासेवक ओकर शीर्षक देने छैक—'पृथक मिथिला प्रान्तक गठन अविलम्ब आवश्यक'' 'अखिल भारतीय मैथिल महासभा द्वारा, महत्वपूर्ण निर्णय'। एहि अवसरपर महासभाक महामन्त्री रायबहादुरसँ प्रतिनिधि किछु प्रश्न कयने छलथिन, ओ प्रश्नोत्तर निम्नाङ्कित अछि—

प्रश्न—मिथिला प्रान्तक गठनमें अपनेक की विचार अछि ? एवं ओकर सीमा आओर राजधानी की रहतैक ?

Scanned by CamScanner

उत्तर—मिथिला प्रान्तक गठन अवश्य होमक चाही, 'सीमा कमीशन' जे सीमा देत आओर जनता जकरा राजधानीक हेतु चूनत से हमरा स्वीकार हयत।[1]

अडाइडँगा अधिवेशनक प्रस्तावकेँ कार्यान्वित करबाक हेतु मै. म. सभा बादमे एक अपील प्रकाशित कयने छल जे मिथिलामिहिरमे सेहो प्रकाशित भेल छल[2]। परन्तु ताहिसँ किछु नहि कयलक।

यद्यपि 'मिथिला सेवक' मिथिलाप्रान्तक निर्माणक समर्थक छल, परन्तु विचार-स्वातन्त्र्यक दृष्टिएँ विरोधमे छलाह तनिको विचारकेँ स्थान दैत छल। एकर प्रबल प्रमाण ई अछि जे जाहि डॉ० अमरनाथ झाक अभिनन्दनक अवसरपर ई अपन पहिल अङ्क प्रकाशित कयने छल से डॉ० झा भाषाधार प्रान्तक पुनर्गठनक विरोधी छलाह। उक्त अभिनन्दनक अवसरपर उत्तर दैत बाजल छलाह—

"भाषाक आधारपर प्रान्तक पुनर्गठनक माँग सम्प्रति अनुचित" तँ एहू विचारकेँ प्रमुखतासँ स्थान देने छल। सफल पत्रकारिताक ई एक आवश्यक गुण मानल गेल अछि। एतावता ई सिद्ध अछि जे 'मिथिलासेवक' साहित्यिक ओ सर्जनात्मक दिशामे ओतेक तत्पर नहि छल जतेक राजनीतिक दृष्टिकोणकेँ विकसित करबाक दिशामे। तथापि बहुत किछु साहित्यिक कृति सेहो एहि माध्यमसँ प्रकाशमे आबि सकल। उदाहरणार्थ प० श्री जयकान्त झा, 'श्रुतधर'क लिखल 'सीतायन'क किछु अंश, प० हरिश्चन्द्र झा हरीश'क लिखल' "विवाहक व्यवस्था नामक नाटक श्री गोपालजी झा 'गोपेश'क बहुतो गद्य पद्य रचना, डॉ० जानकी वल्लभ झाक 'विमाता' कथा, डॉ० श्री दुर्गानाथ झा श्रीश' श्री यमुना झा सब-रजिस्ट्रार श्री उपेन्द्रनाथमल्लिक, श्री अष्टावक्र नेहरा, परशुराम झा, श्री शैलेन्द्र लाल मिश्र, डॉ०श्री शैलेन्द्र मोहन झा, श्री श्यामानन्द 'सिंह' पूर्णियाँ, श्री भवनाथ झा, श्री गणेशचन्द्र झा, श्री राम किशोर झा 'विभाकर' आदि बहुतो नवयुवकक रचना—कविता, कथा, गल्प एकांकी—सब छपैत रहैत छल।

एकटा आश्चर्यजनक बात ई देखबामे आयल जे मिथिला-मैथिल-मैथिलीक एहन कट्टर समर्थक रहितो बीच-बीचमे हिन्दीक लेख कविता

१. मिथिला सेवक वर्ष १, अंक १०, पृ० ६।

२. मि. मिहिर ५ जून, १९५४।

सेहो सब एहिमे छपैत रहैत छल। ५० वर्ष पूर्व जहिया मैथिलीमे प्रथमपत्र बहरायल छल ताहू समय हिन्दीक हेंतु स्थान सुरक्षित छल आ १९५४ ई०मे आबि क' जे प्रकाशित भेल ताहूमे हिन्दीक समावेश कयल गेल। एकरा पाछाँ सम्पादक अथवा व्यवस्थापक लोकनिकेँ किछु बाध्यता रहल होयतनि तेहन प्रतीत होइत अछि।

पहिले अङ्कसँ श्री काली प्रसाद खेतान वैरिस्टरक एक लेख छपैत देखबामे आयल—'विद्यापतिके पदों का भारत में महत्त्व'। ई बात अवश्य जे 'खेतान' साहेब एक विशिष्ट व्यक्ति रहथि, डॉ० अमरनाथ झाक अभिनन्दन समारोहमे हुनको भाषण भेल छलनि, परन्तु तेँ हुनक हिन्दी लेख छपल हो से सम्भव नहि, तखन किछु आर्थिक लाभक दृष्टिएँ एहन भेल हो से सम्भव। अस्तु, तीनवर्ष धरि लगातार चललाक बाद १९५७मे जखन श्री हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु' लोक सभाक चुनावमे बाझि गेलाह तँ चारिम वर्षमे आब ईहो पत्र सर्वदाक हेतु बन्द भ' गेल।

निर्माण

१९४९ ई० मे जखन मिथिला केसरी बाबू जानकीनन्दन सिंह दरभंगा जिला बोर्डक चेयरमैन पदपर रहथि तँ लहेरियासरायसँ 'निर्माण' नामक एक हिन्दी साप्ताहिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ कयलनि। एकर प्रथम सम्पादक नियुक्त भेलाह प० यदुनन्दन शर्मा 'प्रलयंकर'। ओहि समयमे दरभङ्गासँ अनेक हिन्दी साप्ताहिक प्रकाशित होइत छल। श्री श्रीनारायण दास एम्० पी० क प्रबन्धकता मे ओ कुलानन्द 'नन्दन'क सम्पादकत्व मे 'पंचायती राज', प्रो० श्री धर्मप्रिय लालक सम्पादकत्व मे 'उदय' सेहो ओही लग पासक समय मे प्रकाशित भ' रहल छल। मैथिली केँ कण्ठ दाबि घरमे बैसा देबाक हेतु हिन्दीक तथाकथित समर्थक लोकनि फाँड़ बन्हने रहथि जाहिमे मैथिली भाषीक संख्या थोड़ नहि छल।

स्मर्त्तव्य जे ओही समयमे लहेरियासरायमे 'विद्यापति गोष्ठी' नामक संस्था संगठित भेल छल जकर कर्णधार हिन्दीएक समर्थकलोकनि छलाह। हुनकालोकनि विद्यापतिकेँ हिन्दीक पेटमे पचा लेबाक हेतु प्रयत्नशील छलाह।

विद्यापति गोष्ठीक संस्थापक सदस्य मण्डलमे एक एहू पंक्तिक लेखक छलाह जे आगाँ चलि मैथिलीक हेतु छटपटाइत रहैत छलाह ।

१९४९ ई० मे बिहार सरकार मातृभाषाक माध्यमसँ प्राथमिक] शिक्षा देल जाय ई सिद्धान्ततः स्वीकार कयने छल आ पटना विश्वविद्यालय प्रवेशिका परीक्षाक हेतु हिन्दी द्वितीय पत्रक स्थानपर मैथिली केँ मान्यता देने छल। कांग्रेसी नेता पार्टी अनुशासनक नाम पर मैथिलीक न्याय्य अधिकारहुक प्रति मुँह फोलबामे असमञ्जसक अनुभव क' रहल छलाह। बाबू जानकीनन्दन सिंह डिस्ट्रिक्ट बोर्डक चेयरमैन रहितो प्राथमिक पाठशालामे मैथिली माध्यमसँ शिक्षा आरम्भ नहि करा सकलाह। 'हिन्दीक क्षेत्र बड़ व्यापक छैक' से कहि निर्माणक प्रकाशन सेहो हिन्दीए मे भ' रहल छल। प० यदुनन्दन शर्मा जखन आर्यावर्तक सम्पादक मण्डल मे चल गेलाह तँ एकर सम्पादक श्री प्रेमचन्द्र शास्त्री बनाओल गेलाह।

१९५४ ई० मे आबि जखन बाबू साहेब मिथिला प्रान्तक नामपर कांग्रेस सँ विद्रोह कयलनि आ श्री प्रेमचन्द्र शास्त्री राजनीतिमे विशेष सक्रिय भ' गेलाह तँ निर्माणक सम्पादन छोड़ि देलनि। प० श्री राघवाचार्य शास्त्री ओहि समयमे सिनुआरा मिड्ल स्कूलमे अध्यापक रहथि तथा बाबू साहेबक बड़ प्रियपात्र रहथि। हम ओहि समयमे 'वैदेही' मासिकक सम्पादन करैत छलहुँ, परन्तु मतभेद क्रमशः बढ़ि रहल छल। एहि मानसिक स्थितिमे प० श्री राघवाचार्य शास्त्रीक माध्यमसँ बाबू जानकीनन्दन सिंहजी निर्माणक सम्पादन करबाक आग्रह हमरासँ कयलनि। हम पहिल शर्त्त यैह रखलियनि जे यदि मैथिलीक हेतु कमसँ कम किछु पृष्ठ 'मातृभाषाक पृष्ठ'क नामसँ निर्धारित क' देल जाय तँ हम सम्पादन भार स्वीकार क' सकैत छी।

तावतधरि विद्यपति-स्मृति-पर्वक माध्यमसँ मैथिलीक आन्दोलन एक रंग मे आबि चुकल छल, क्रमहि जनमत जागि रहल छलैक। पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्नातकोत्तर विभागक अध्यापन आरम्भ भ' चुकल छलैक, ओना प० यदुनन्दन शर्माक सम्पादन कालमे हमर एक आध मैथिली रचना सेहो प्रकाशित भ' चुकल छल। अतः बाबू साहेब हमर प्रस्ताव स्वीकार कयलनि आ १९५४ क पन्द्रह अगस्तक अंकसँ हम एकर सम्पादन आरम्भ कयल। अपन सम्पादित प्रथम अंकक पहिल पृष्ठपर कवि चूड़ामणि श्री 'मधुप' जीक 'उद्बोधन' शीर्षक कविता छापि आत्म-संतोषक अनुभव कयलहुँ।

Scanned by CamScanner

सत्य पूछल जाय तँ निर्माणक गणना मैथिली साप्ताहिकमे नहिएँ जकाँ होयबाक चाही, कारण सम्पादकीय, समाचार आदि तँ हिन्दीएक माध्यमसँ प्रकाशित होइत छल, परन्तु साहित्य सर्जनाक दृष्टिएँ निर्माणहुक योगदान अवश्य छैक। मैथिली मे तँ विशेषतः कविता ओ कथा छपैत छल जाहिमे सर्वश्री कविचूड़ामणि प० काशीकान्त मिश्र 'मधुप', व्रजकिसोर वर्मा 'मणिपद्म', मायानन्द मिश्र, रामदेव झा, लक्ष्मी नारायण ठाकुर 'उर्मिलेश', ब्रजभूषण झा 'भूषण,' उग्रनारायण मिश्र 'कनक,' जय नारायण झा 'विनीत', प० रामकृष्ण झा 'किसुन', श्री आद्यानाथ झा 'निरंकुश,' आदि कतिपय नव पुरान साहित्यकारक सहयोग प्राप्त होइत रहल।

मैथिलीक दृष्टिएँ निर्माणक दू गोट उपलब्धि विशेष रूपें उल्लेखनीय अछि। १९५५ ई० मे भारत सरकारक लोक साहित्य विभाग द्वारा जखन श्री मधुपजी केँ हुनक त्रिवेणी कविता संग्रह पर ५००)रु० पुरस्कार प्राप्त भेलनि,जे सरकार द्वारा मैथिली भाषाक हेतु प्रथम पुरस्कार छल, तखन निर्माण 'मधुप विशेषांक' प्रकाशित कयलक जाहिमे हिन्दी ओ मैथिलीक माध्यमसँ श्री मधुपजीक व्यक्तित्व ओ कृति सब पर थोड़ बहुत प्रकाश पड़ि सकल जाहिमे सर्वश्री सुमनजी, 'मणिपद्म' 'सुरेन्द्र प्रसाद सिंह 'रसिक', शेखरजी, राधाकृष्ण 'बहेड़,अणु, सपूत (डा० श्री रामदेव झा) पीताम्बर मिश्र आदिक रचना अछि। दोसर मै०सा० परिषदक अष्टम अधिवेशन दरभंगामे देल डॉ० अमरनाथ झाक भाषण (अंक ६ वर्ष ६ सँ अंक १३ वर्ष ६ धरि) छपल तथा अंक १५ वर्ष ६ सँ म० म० डॉ० उमेश मिश्रक घोघरडीहा अधिवेशन मे देल भाषण छपय लागल, मुदा ओ सम्पन्न नहि भ' सकल तावत फरवरी १९५६ ई० मे आबि ईहो पत्र बन्द भ' गेल।

जनक

६ दिसंबर १९६४ ई०सँ दरभङ्गासँ 'जनक' नामक एक स्वतन्त्र राष्ट्रिय मैथिली समाचार साप्ताहिकक प्रकाशन आरम्भ भेल। एकर प्रबन्धक छल 'मिथिला विकास प्रतिष्ठान' तथा एहि पंक्तिक लेखक एकर सम्पादक छलाह। प्रथमे अङ्कक आत्मनिवेदन शीर्षक सम्पादकीयमे एकर नीति ओ उद्देश्यपर जे प्रकाश देल गेल छल से उद्धृत कयल जाइत अछि—

Scanned by CamScanner

"एहिसँ पहिने जनकक प्रकाशन हिन्दीमे भेल छल। मैथिलीमे सर्व प्रथम एहि नामक समाचार साप्ताहिकक प्राकशन किछु विशेष उद्देश्यकेँ समक्ष राखि कयल जा रहल अछि।

पहिलुका किछु साप्ताहिक सभक सत्प्रयाससँ अपना समाजमे साहित्यिक चेतना आबि गेल अछि एवं आबि रहल अछि। परन्तु राजनीतिक चेतनाक उद्बोधनक दिशामे मनोवांछित प्रयास नहि भेल अछि। जनतन्त्रक सफलताक हेतु राजनीतिक चेतना परमावश्यक। समाचार साप्ताहिक समाचार सभक चयन एवं आवश्यक व्याख्या ओ टिप्पणी द्वारा जनतामे राजनीतिक बुद्धि परिष्कृत करबाक ओ राजनीतिक चेतनाक विकासक कार्य विशेष कुशलता पूर्वक क' सकैछ। आशा कयल जाइछ जे अपन मातृभाषामे रहबाक कारणेँ सर्व साधारण जनताक अवचेतन मनधरि ई अपन प्रभाव विस्तार करत। आधुनिक मनोविज्ञान मनक तीन स्तर मानलक अछि। ताहिमे चेतना मन एवं अवचेतन मन, जे सुप्त अवस्थामे सक्रिय रहैत अछि, ताहि दुहू लेल अपन भाषाक माध्यम सर्वश्रेष्ठ उपकरण थीक। मातृभाषाक अतिरिक्त आन कोनहु भाषाक लेल, अज्ञातो रूपेँ लोककेँ जानि बुझि कऽ अपन मन सक्रिय करवाक आयास करऽ पड़ैत छैक। मातृभाषाक लेल मन जन्महिसँ अनायासे सक्रिय बनल रहैत छैक।

आधुनिक अर्थशास्त्र चेतनाक जनक 'कीमिस' (Keynes)क अनुसार जनतन्त्रमे दू टा मुख्य राजनीतिक विचार चेतना रहैत छैक। एक राजनीतिक चेतना प्रचारित होइत अछि, दोसर प्रसारित। मन्त्रीगण, सत्तारूढ़ एवं सत्ताकांक्षी दल, सरकारी यन्त्र, विशेष-विशेष-गुटक समाचार पत्र ई चारू सेहो एक प्रकारक राजनीतिक मतचेतना वितरित करैत अछि जे प्रचारित विचार चेतना होइत छैक। अंचल-अंचलक साधारण जनताक जे अभाव अभियोग, जे शिक्षा-संस्कार, क्रिया–प्रतिक्रिया रहैत छैक तकर आधारक' परिशोधन करैत एक राजनीतिक चेतनाक समाचार पत्र द्वारा अवतरित होइत छैक। ई राजनीतिक चेतना होइत अछि प्रसारित एवं एकरा विशुद्ध लोकमत कहल जा सकैछ। 'जनक' अपन अंचलमे एही लोकमतक जन्मदाता हैत।

जनक शब्द मैथिली भाषी जनताक हेतु एक विशिष्ट महत्त्व रखैत अछि। एक एहन शासन तंत्र जे व्यापक मानववादी जीवन-दर्शन पर आधारित छल, जेजे मानसिके नहि, भौतिक धरातल पर सेहो अजेय छल, कारण

Scanned by CamScanner

अन्याय ओ अत्याचारक रावण सेहो एकरा अधीनस्थ नहि कऽ सकल, तकर एक प्रतिमा जनक शब्दक उच्चारण करितहिँ समक्ष भऽ जाइछ।

जनक नाम मैथिली भाषाक संग गुम्फित अछि। मैथिली भाषी भारतक उत्तर बिहार अंचलमे एवं नेपालक तराइ अंचलमे बाजल जाइत अछि। तेँ दुहू अंचलक लोकमतक प्रतिनिधित्व करबाक हेतु ई सचेष्ट रहत, यद्यपि तत्काल एकर कार्य दरभंगे अंचलसँ विशेष रूपेँ सम्बन्ध रखैत प्रारम्भ होइत छैक।

आइ काल्हिक राजनीतिमे बहुतरास समस्या ओ प्रश्न बूझि तँ पड़ैत अछि जनताक, परन्तु वास्तवमे रहैत अछि व्यक्तिगत समस्या वा प्रश्न। से ने केवल अंचल-विशेष वा प्रान्त-विशेषक सम्बन्धमे सत्य थिक, प्रत्युत देश-विदेश सभ ठाम अधिकतः व्यक्ति विशेषेक समस्या जनताक समस्याक रूपमे, निहित स्वार्थक पत्रकारिता द्वारा हमरा लोकनिक लग राखल जाइछ। से सभकेँ बुझबामे तावत धरि नहि औतैक जावत पृष्ठभूमिमे चलैत रुचि-अरुचि, महत्त्वाकांक्षा एवं ईर्ष्या-द्वेषक नाटकसँ लोक परिचित नहि हो। जनक जनताकेँ एहि नाटकसँ परिचित कराय एक स्पष्ट राजनीतिक दृष्टि प्रदान करत। जनक कोनहु व्यक्ति, गुट वा दल-विशेषक नहि रहि जनक जनताक रहत।"

एहि उद्धरणसँ एहि पत्रक नीति ओ उद्देश्य पर प्रकाश पड़ितहि अछि, एकर भाषा-स्वरूपक परिचय सेहो नीक जकाँ भ' जाइत अछि। एहन व्यापक उद्देश्यक हेतु जे समय, साधन ओ लोकक आवश्यकता होइत छैक, एकरा संचालित कयनिहारकेँ ओतेक साधन नहि, सम्पादन कयनिहारकेँ ओतेक अपेक्षित समय नहि आ सर्वोपरि बिनु कोनो लोभ-लाभक राजनीतिक सागरमे डुबकी लगा जन साधारणकेँ सत्यसँ परिचय करयबाक हेतु सत्यक अन्वेषण कयनिहार लोकक अभाव एकरो बहुत दिन ससरय नहि देलक।

मनोरंजनक हेतु व्यंग्य-विनोदक स्तम्भ सेहो राखल गेल छल आ घुमक्कड़ बाबाक नाम सँ एहि पंक्तिक लेखक ओहो लिखल करैत छलाह। साहित्यिक रचनाक प्रकाशनक तँ कोनो प्रश्ने नहि छल, परन्तु मैथिलीक पाठककेँ जेना दालिमे आमिल आवश्यक तहिना किछु साहित्यो, तेँ आगाँ चला 'नारीसंसार' 'शिशुजगत' आदि स्तम्भ सब जोड़ल गेल, परन्तु ग्राहकक अभावमे जुलाइ १९६५ धरि चलि ईहो बन्द भ' गेल। हँ, मिथिला विश्व विद्यालयक स्थापना, चन्द्रधारी मि० कालेजक विभाजनक विरोध, मैथिली भाषाक रक्षा, दरभंगामे आकाशवाणी केन्द्र आदि पर विशेष जोर दैत रहल।

स्वदेशवाणी

जून १९६९ ई०सँ प्रो० श्री चन्द्रधर द्वारा सम्पादित स्वदेशवाणी नामक एक साप्ताहिक देवघरसँ प्रकाशित होअय लागल। एकर उद्देश्य पर प्रकाश दैत प्रथमे अङ्कक सम्पादकीयमे कहल गेल अछि—

"स्वदेशवाणी'क उद्देश्य स्पष्ट अछि। "देशिल (?) बएना सबजन मिट्ठा।" भारत सरकार एकरा बुझलक त' अवश्य मुदा आंशिक रूपें। केवल १२ आधुनिक भारतीय भाषाकें संविधानक आठम अनुसूचीमे स्थान भेटल। पता नहि, मैथिली किए छोड़ि देल गेल। की मैथिलक हेतु अपन मातृभाषा मधुर नहि ?

स्वदेशवाणी १. मैथिली भाषीक बीच शुद्ध समाचार-विचारक प्रचारार्थ एक मैथिली दैनिकक प्रकाशन हेतु पथ-प्रशस्त करत, २ मैथिलीक माध्यमसँ स्वस्थ एवं प्रगतिशील जनमानसक निर्माण करत तथा ३. मिथिल मैथिल एवं मैथिलीक सब प्रकारक विकास तथा उन्नति हेतु सतत जागरूक रहत।"

एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे एक बहुत पैघ, चिरकांक्षित दैनिक पत्रक प्रकाशनक अभिलाषा पूर्ण करबाक विचारकें अन्तगर्भमे राखि एहि पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल छल। एहि दिशामे किछु काज सेहो आरम्भ भेल छल जे एहीमे प्रकाशित किछु समाचारसँ ज्ञात होइत अछि। एकटा समाचार अछि—"मैथिली दैनिकक जोरदार समर्थन" एहि शीर्षकक अन्तर्गत कहल गेल अछि—"देवघर : ज्ञात भेल अछि जे बिहारक प्रख्यात लोकनायक प० विनोदानन्द झाजी समस्तीपुर वा दरभंगासँ मैथिली दैनिक प्रकाशित करबाक प्रयासक स्वागत करैत मैथिली दैनिक प्रकाशन समिति, देवघरक संयोजक प्राचार्य भोलानाथ झाकें जनौलनि जे एक मैथिली दैनिकक अविलम्ब प्रकाशन नितान्त आवश्यक। दैनिकेक माध्यमसँ मिथिला, मैथिल-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक पथ प्रशस्त भए सकैछ।"

दोसर समाचार अछि—"मैथिली दैनिक प्रकाशन समितिक संयोजक प्राचार्य भोलानाथ झा जनौलनि अछि जे दैनिक-प्रकाशन-प्रयासमे केन्द्रीय रक्षा उत्पादन (राज्य) मन्त्री प० ललित नारायण मिश्रक सब प्रकारक सहयोग-सहायता समितिकें उपलब्ध अछि।" परन्तु ओ प्रयास आकाश कुसुमे रहि गेल, मात्र २१ अङ्क प्रकाशित भेलाक बाद ई स्वयं बन्द भ' गेल।

एकर दोसर प्रयास देखबामे अबैत अछि जे राजनीतिक कारणेँ मैथिली भाषी क्षेत्रकेँ खण्ड पखण्ड करबाक प्रयास चलैत आबि रहल अछि जाहिमे पूर्व ओ दक्षिण अंचलक भाषाकेँ अंगिका एवं पश्चिम अंचलक भाषाकेँ बज्जिका नाम द' स्थापित करबाक चेष्टा भ' रहल अछि। किछु एहनो गण्यमान्य मैथिली भाषी, जे हिन्दीक कट्टर समर्थक छलाह, एहि प्रयासमे सहायक होइत रहलथिन ! 'स्वदेशवाणी' एहि षड्यन्त्रक विरुद्ध स्वर मुखरित करबाक प्रयास करैत छल जकर उदाहरण भेटैत अछि एक समाचारमे। समाचारक शीर्षक अछि— "मुंगेर, भागलपुर, सं० प०क बोली मैथिलीएक रूप छी"। समाचारमे कहल गेल अछि—"देवघरः स्वदेशवाणीक प्रतिनिधिक प्रश्नक उत्तर दैत संताल परगनाक वयोवृद्ध कवि-साहित्यकार प० बुद्धिनाथ झा "कैरव" जनौलनि जे मुंगेर, भागलपुर एवं संताल परगनाक गैर-आदिवासी जनता जे बोली बजैछ से मैथिलीएक एक रूप छी ? (थीक)। हुनक दृष्टिएँ मैथिली मध्य-कालीन भारतीय संस्कृति-साहित्यक प्रतीक अछि जेकर विकास आवश्यक। हुनका दुःख छनि जे भारत सरकार मैथिलीकेँ संविधानक आठम अनुसूचीमे किएक नहि स्थान दैछ।....."

आरम्भमे जे स्वयं मैथिलीक विरोधी छलाह तनिकासँ मैथिलीक पक्षमे वक्तव्य देआयब मैथिलीक हितरक्षामे कतेक बेसी सहायक भ' सकैत अछि से स्वयं ऊह्य थिक। ई एक एहन केन्द्रसँ प्रकाशित होइत छल जाहिठाम मैथिलीक पैर स्थिर भेलासँ बहुत पैघ काज होइत, परन्तु मैथिलीभाषीक दुर्भाग्यवश ईहो पत्र चलि नहि सकल। एकरे एगारहम अङ्क भवप्रीतानन्द विशेषाङ्क रूपमे प्रकाशित भेल छल जे एहि पत्रक उल्लेखनीय कार्य कहल जाय सकैत अछि।

मिथिला टाइम्स

१९७१ ई०क अगस्त माससँ श्री विजयकान्त ठाकुरक सम्पादकत्वमे दरभंगासँ 'मिथिला टाइम्स' नामक एक समाचार साप्ताहिक प्रकाशित होअय लागल। वस्तुतः ई भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी द्वारा संचालित होइत छल। एक विशेष राजनीतिक बिचारधारासँ सम्पृक्त रहबाक कारणे ई अपन विचारधाराकेँ प्रचारित करबामे संलग्न छल तँ से सर्वथा उचिते छलैक।

Scanned by CamScanner

एहीसँ ईहो स्पष्ट अछि जे दल विशेषक प्रति-प्रतिबद्ध रहलाक कारणेँ अन्य राजनीतिक विचारधारा तथा सरकारक विरोधमे ई खूब मुखर छल होयत। एक विचारधारा विशेषक राजनीतिज्ञलोकनिमे कम्युनिस्ट पार्टीक नेता एहि क्षेत्रक भाषाकेँ अपन माध्यम बनाय विचारक प्रचारमे सुविधा होयत तकर अनुभव कयलनि इएह एकर सबसँ पैघ उपलब्धि हम मानैत छी। आन कोनो राजनीतिक दलक ध्यान एहि दिस नहि भेलनि अछि। यदि सत्य कहल जाय तँ एहि प्रेरणाक मूलमे छलाह श्री भोगेन्द्र झा (सांसद), तेँ एकर श्रेय हुनके छनि। जेँ ई दल अपनाकेँ जनवादी कहैत अछि, तेँ भाषाक दृष्टिसँ सेहो ई जनभाषाक अधिक निकट छल। परिणामतः साहित्यक भाषासँ ई दूर चल गेल छल। एहि प्रसङ्ग श्री 'मणिपद्म'क मन्तव्य छनि—

"मैथिलीभाषाकेँ संस्कृत साहित्यक मांगल— बांगल क्लिष्टता अलंकार त्यागय पड़तैक आ प्राचीन कालक बाइस-तेबाइस सड़ल बोजुआ चिन्तनसँ ओकर व्यायामी कामसूत्री आ उमौआ-घुमौआ अभिव्यक्तिसँ मुक्ति लेमय पड़तैक।....."[1]

साम्यवादी विचारधारा नास्तिकताक पोषक अछि, तेँ समय-समयपर भारतीय स्मृति, पुराण आदिक मान्यतापर सेहो आघात कयल जाइत छल, परन्तु मैथिलीक स्वत्वक हेतु सेहो संघर्षरत अवश्य रहैत छल।

टटका

'मिथिला भूमि'मे 'टटका' नामक एक साप्ताहिक विज्ञापन भेटैत अछि जे जमशेदपुर सँ प्रकाशित होइत छल। विज्ञापनमे "नवतुरिया दलक प्रतिनिधि मैथिली आन्दोलनक एकमात्र पत्रिका" कहल गेल अछि। हमरा जे किछु अङ्क दृष्टिपथपर आयल ताहिसँ एकर प्रकाशनक वर्ष ओ स्थान दूनू सन्दिग्ध प्रतीत होइत अछि। उदाहरणार्थ—

अङ्क १३-२० अप्रैल-मई १९७६ ई०मे वर्ष ९ छपल अछि तथा दिसम्बर १९७६क एक अङ्क अछि जाहिमे वर्ष १० अङ्क ३८-४९ छपल अछि। नवम वर्षक १३ सँ २० अर्थात् ८ अंकक संयुक्तांक जे मात्र ४ पृष्ठक अछि, यदि अप्रैल-मइक अंक भेल तँ दिसम्बरक ३८सँ ४९ अर्थात् १२ अंकक संयुक्तांक

१. मिथिला टाइम्स, २० सितं० १९७३, पृ० ७।

जे मात्र ४ पृष्ठ अछि, दसम वर्षक कोना भेल तकर अर्थ नहि लगैत अछि। वस्तुतः पीत-पत्रकारिताकेँ अग्रसारित करबामे तथा मैथिलीपत्र-पत्रिकाक ग्राहककेँ भड़कयबामे एकरो योगदान महत्त्वपूर्ण अछि। सम्प्रति एहिसँ अधिक एहि पत्रक प्रसङ्ग किछु कहबाक स्थितिमे नहि छी। एहि पत्रक चरित्रसँ परिचयक हेतु छोटसन उद्धरण—

"प्रिय भैयारी, जय मैथिली। की अहाँ मैथिल छी, जँ छी निम्नलिखित काज अहाँ कए रहल छी? ...जौँ अहाँ संभव छी तखन ओम हरिमर्कट मर्कटाय मैथिली विरोधी स्वाहा नित्य १०८ बेर जप करू।"

६० K

१९७२ ई० क २६ जनवरी सँ श्री परेश कुमार झाक सम्पादकत्व मे दरभंगा सँ ६० K नामक एक साप्ताहिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल। एकर नाम देखि प्रत्येक पाठक के विस्मय भेलनि। एहि नामक अर्थ की? अन्वेषण कयला उत्तर एकर मनोरंजक इतिहास लोकक समक्ष आयल। वस्तुतः एकर नाम राखल गेल छल 'ऊक'। रोमन लिपिमे लटपटा क' लिखल रहलाक कारणेँ पढ़निहार डबल (O) अक्षर केँ (60) साठि बूझि लेलक आ ६० के० (60 K) नाम सँ एकरा स्वीकृति द' देलक।

एकर नामकरणे एकर चरित्रकेँ उजागर करैत अछि। 'ऊक' ल' क' चलनिहार समाज केँ कतेक प्रकाश द' सकैत अछि से स्वयं ऊह्य थिक। ओना तँ मुख्यतः ई समाचार साप्ताहिक छल, परन्तु यदा कदा एक-आध कविता वा एक-आध गल्प सेहो छपैत छल। भाषाक दृष्टिएँ एहू पत्रमे विकृतिक अधिकते रहैत छल। किछुए दिन चलि इहो बन्द भ' गेल।

चरचा

ई पत्र १९७४क वसन्त पंचमी (जे स्व० ललित नारायण मिश्रक जन्मदिन पड़ैत छनि) सँ दरभंगा सँ श्री रामचन्द्र मिश्रक सम्पादकत्वमे प्रकाशित होअय लागल। एकर प्रेरक छलाह स्व० ललित बाबू, तेँ ई कांग्रेसक नीतिक समर्थक छल तथा मिथिलांचलक विभिन्न समस्या दिस शासकक ध्यान आकृष्ट करबाक चेष्टा करैत छल, परन्तु एकरा स्वीकृति नहि भेटि सकलैक,

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित पाँच गोट मात्र अंक प्रकाशित भ' बन्द भेल से बन्दे रहि गेल। एकर भाषा मर्यादित ओ शुद्धप्राय रहैत छल।

समाद ओ विकल्प

३ अगस्त १९७८ ई० कें बिहार सरकार १९४९ ई० मे मैथिलीकें मातृभाषाक रूपमे प्रवेशिका परीक्षाक हेतु देल गेल स्वीकृतिकें आपस लेबाक प्रस्ताव पारित क' लेलक आ ४ अगस्तक समाचार पत्र मे ई समाचार प्रकाशित देखि मैथिली भाषी क्षेत्र स्तम्भित रहि गेल। बिहार सरकारक एहि निर्णयक ततेक घोर प्रतिक्रिया भेल जे देशभरिक मैथिली संस्था उत्तेजित भ' उठल। चारू दिस सँ विरोधमे स्वर गुंजायमान होअय लागल। नवयुवक वर्गमे तँ आगि लागि गेल।

बिहार सरकारक निर्णयक विरोध ओ मैथिलीक समर्थनमे चारू दिस जे जनाक्रोशक स्वर मुखरित भ' रहल छल तकरा इण्डियन नेशन, आर्यावर्त्त आदि दैनिक पत्र प्रसारित ओ प्रचारित तँ करय लागल, परन्तु एहि हेतु स्वरमे जे तीक्षणता अपेक्षित छल ताहि लेल एक स्वतन्त्र पत्रक प्रकाशन आवश्यक प्रतीत होअय लागल। यत्र-तत्र युवापीढ़ीक साहित्यकार तथा विभिन्न विश्वविद्यालयक छात्र समुदाय अनशन, आन्दोलन, सभा, जुलूस, प्रदर्शन आदि करय लगलाह। पुरान-पुरान संस्था सभक दिससँ वक्तव्य सब आबय लागल। एहि स्वरकें मिथिलांचक कोन-कोन ओ जनसाधारणक कान-कान धरि पहुँचयबाक हेतु मैथिली भाषी छात्र संघक तत्वावधानमे पटनासँ 'समाद' नामक एक साप्ताहिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ कयल गेल जकर सम्पादकक रूपमे 'अभिन्न मित्र'क नाम छपैत छल। पत्रकारिताक जे असल स्वरूप छैक से एहिमे निखरल।

मिथिला मिहिर 'देश-कोस' स्तम्भक अन्तर्गत एहि पत्रक प्रसङ्ग जे मन्तव्य प्रकट कयने छल से निम्नांकित अछि—

"पटनाक मैथिली भाषी छात्र संघ द्वारा मैथिलीक एक साप्ताहिक समादक प्रकाशन आररम्भ भऽ गेल अछि। मैथिली आन्दोलनकें मुखर करब एहि पत्रक मुख्य उद्देश्य छैक। मिथिला-मैथिल-मैथिलीक समस्याकें पंजित करब सेहो 'समाद'क अभीष्ट छैक। 'अभिन्न मित्र' द्वारा सम्पादित अखबारी आकारमे 'समाद'क पृष्ठ-संख्या ४ अछि।

Scanned by CamScanner

बहुत दिनसँ मैथिली मे एकटा एहन पत्रक अभाव लोकके खटकैत छलै जे मिथिला-मैथिल-मैथिलीक समस्या केँ मुखर भऽ लोकक सोझा राखि सकय।…………जाहि पृष्ठभूमिमे समादक प्रकाशन प्रारम्भ भेल अछि, हमरा विश्वास अछि ई स्थायी होयत…………"[१]

यद्यपि एकर जन्म मैथिली आन्दोलनकेँ जन-जन धरि पहुँचयबाक हेतु भेल छलैक; एकरा पाछाँ एक विशाल युवाशक्ति कार्यरत छल, तथापि एकरा भाषामे शालीनताक अभाव नहि छलैक। आन्दोलनक भाषामे तँ तीक्ष्णता रहब स्वाभाविके छैक, परन्तु साम्प्रतिक वातावरण मे नवयुवक वर्गक भाषामे मर्यादाक उल्लंघन जेना देखबा मे अबैत अछि से एहिमे नहि। पृष्ठभूमि तँ एहन छल जे जनसाधारण धरि ई पत्र पहुँचय लागल छल आ पाठक उत्सुकता सँ अंकक प्रतीक्षा करैत छलाह, परन्तु एकरा 'समाद' नामसँ स्वीकृति नहि भेटि सकलैक। मात्र ४ गोट प्रयोगाङ्क प्रकाशित भेलाक बाद एकर व्यवस्थापक लोकनिमे आन्तरिक कलह उपस्थित भ' गेलनि। एकर एक दल 'विकल्प' नाम सँ एही स्वरमे विवेकानन्दक सम्पादकत्वमे दोसर साप्ताहिक आरम्भ कयलनि जकरा स्वीकृतियो प्राप्त भेलैक। ओमहर दोसर दल 'समाद'क चारि अङ्कधरि आओर प्रकाशित कयलनि।

सरकार एहि आन्दोलनक आगाँ झुकि गेल। मैथिली केँ पूर्ववत मातृ-भाषापत्र एवं ऐच्छिक पत्र मे स्थान भेटि गेलैक। लक्ष्य पूर्तिक बाद नवयुवक वर्गक उत्साह ठंढा पड़य लगलनि आ समादक संगहि क्रमहि विकल्पोक प्रकाशन बन्द भ' गेल।

---

१. समाद, प्रयोगांक ३, पृ० ३।

पाक्षिक पत्रिका

मिथिला मित्र

मैथिलीक प्रथम पाक्षिक पत्रिका थिक 'मिथिला-मित्र'। 'मिथिला'के बन्द भेलाक बाद जे रिक्तता आयल तकरा पुनः भरबाक चेष्टा भेल कृष्ण गढ़ बनैली सँ। एतयसँ 'मिथिला मित्र' नामक पाक्षिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल। एकर संरक्षक छलाह कुमार कृष्णानन्द सिंह। एहि हेतु एक सम्पादकमण्डल छल जाहिमे छलाह पण्डित गौरीनाथझा, धनुषधारीदास, श्री महेश झा ओ श्री शशिनाथ चौधरी। हमरा एको अङ्क एहि पत्रिकाक दृष्टिपथपर नहि आयल। अतः एहि प्रसङ्ग इतिहासकार सभक कथनके उद्धृत मात्र क' सन्तोष करय पड़ैत अछि।

डॉ० श्री जयकान्त मिश्र जे लिखने छथि[1] तकरे समर्थन करैत डॉ० 'श्रीश'क मंतव्य छनि—"मिथिला-मित्रमे सामाजिक समस्या दिस समुचित ध्यान नहि देल गेल, तथापि मिथिलावासी लोकनिमे माजानकीक सन्तान होएबाक गौरव जगएबामे एकर बड़ महत्त्व पूर्ण योगदान भेल तथा एहि पत्रक द्वारा सर्वप्रथम जानकी नवमीकेँ मैथिल लोकनिक राष्ट्रीय दिवसक रूपमे प्रतिष्ठित कएल गेल। एहि दृष्टिएँ एकर विशेषांक 'जानकी नवमी अङ्क प्रकाशित भेल। एहि पत्रक द्वारा मैथिली लेखकक रूपमे प्रतिष्ठा लाभ कएल महावीर झा 'वीर', श्री वल्लभ झा, श्री जीवनाथ झा, श्यामानन्द झा प्रभृति। एहि चारूक यश मुख्यतः कवि रूपमेअछि, मुदा श्री जीवनाथ झा कृतविद्य निबन्धकार ओ नाटककार सेहो छथि।"

---

1. Another periodical, under the patronage of Kumar Krishnananda Sinha of KrishnaNagara-Banaili, tried to follow their foot-steps. It was called "Mithila-Mitra (1931 to 1932) and began its career as a fortnightly with Gauri Nath Jha, Danukhdhari Lal Das, Mahesh Jha and Shashi Nath Chaudhari as

Scanned by CamScanner

एहि ठाम स्मर्तव्य जे जानकी नवमी पर्वकेँ व्यापक बनयबाक हेतु एकर पश्चात जे पत्र-पत्रिका सब प्रकाशित भेल सेहो सब पूर्ण प्रयत्नशील रहल, राजपण्डित बलदेव मिश्रजी प० श्री जीवानन्द ठाकुरकेँ प्रेरित क' जानकी नवमी पूजा पद्धतिक निर्माण कराय प्रकाशित करबौलनि, अपने जावत जीवैत रहलाह, प्रतिवर्ष ई पूजा बड़े उत्साहसँ मनबैत रहलाह। उक्त पूजा पद्धतिक प्रचारार्थ अपन छात्र जीवनमे एहि पंक्तिक लेखक सेहो देहातमे भ्रमण कयल, परन्तु ईहो पर्व व्यापकता नहि पाबि सकल। सीतामढ़ी आ जनकपुरक अतिरिक्त प्रायः आब अन्यत्र मनाओल जाइत हो से हमरा ज्ञात नहि।

मैथिली समाचार

दोसर पाक्षिक प्रकाशित भेल 'वैदेही' जे पश्चाति मासिक रूपमे परिवर्तित भ' गेल। अतः मासिक पत्रसभक संग ओहू पर विचार भ' चुकल अछि। तेसर पाक्षिक थिक 'मैथिली-समाचार' जे प्रयागसँ १९६३ ई०क अक्टूबर माससँ प्रकाशित होअय लागल। ई अखिल भारतीय मैथिली

---

its editors in sucession but had to turn it into a monthly in about eight months. It was not, however, fully 'alive' to the problems of Maithilas; its efforts to voice independent views were tame. Nevertheless, one great service that it rendered was to make Maithilas realise the importance of celebrating 'Janki-Navami' (the Birth day of Sita) as their National Day. Since Mithila-Mitra published a special Number ('Janki-Navami-Anka) it has more or less come to be regarded as such. Some writers who rose into prominence by contributing to this Journal were Mahavir Jha 'Vira', Vallabha Jha, Jivanath Jha 'Vidya Bhusan' and Syhmanand Jha. —A History of Maithili Literature पृ० 232।

Scanned by CamScanner

साहित्य समिति, प्रयागक साप्ताहिक मुखपत्रक रूपमे प्रकाशित होअय लागल छल। परन्तु बादमे चलिक' ई साप्ताहिकसँ पाक्षिक भ' गेल। एहीसँ एकर प्रगतिक अनुमान कयल जाय सकैत अछि।

साप्ताहिक 'मैथिली-समाचार'क एकमात्र अंकक (१५ नवंबर १९६४, अंक १६) 'साइक्लोस्टाइल' प्रति हमरा देखबाक सुयोग भेल अछि। एहि अंकमे सम्पादकक रूपमे श्री उमाकान्त, एम्. ए.क नाम छपल अछि। एहिमे प्रकाशित एक समाचारसँ ज्ञात होइत अछि जे प्राथमिक शिक्षाक आन्दोलनकेँ ई मुख्य उद्देश्य बनौने छल, परन्तु एकर सम्पूर्ण गतिविधि देखलासँ प्रतीत होइत अछि जे पत्रकारिताक नामपर ई एक उपहास थिक।

उपर्युक्त अंकमे एक समाचार छपल अछि—'कविवर श्री राघवाचार्यक भ्रमण'। समाचारक स्वरूप निम्नांकित अछि—

हमर एक उपन्यास ओ 'क्रान्तिकारी विद्यापति' अपूर्ण छल तेँ नेपाल (काठमाण्डू) एवं मोरंग, ओ कामरूप (आसाम) एवं सिलोन जाएब आवश्यक छल। ४ माससँ यात्रामे छी। स्थान-स्थानकेर प्रत्येक अंगक अवलोकन क' कनेमने निज अनुभवक स्पष्टीकरण करबाक क्षमता आबि जाए, अइ हेतु भ्रमणमे ५००) पाँच सए टाका खर्च एखन धरि कए चुकलहुँ।

एहि समाचारसँ सर्वत्र हर्ष होएत। आशा अछि दुहू पुस्तक आब अधिक गम्भीर ओ रोचक भए प्रामाणिको रहत। भगवती अपन वरद पुत्र एहि "मैथिलार्य"क स्वप्नकेँ जीवित राखथु ओ सत्यमे परिणत करथु।"

कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि समाचारकेँ छपना १६ वर्ष भ' गेल। उपरिचर्चित पुस्तकद्वयमे सँ कोन-कोन पुस्तक मैथिली पाठकक समक्ष आयल अछि से पाठके कहताह। एहने प्रामाणिक समाचारसँ ई विभूषित रहैत छल।

एकर वर्ष ओ अंक सब केहन ओझरायल अछि तकर किछु नमूना अंकित कयल जाइत अछि—

वर्ष ५ सितंबर २४, १९७२, अंक १० वर्ष ८, १२ अक्टूबर १९७५ सँ २२ फरवरी, १९७६ केर संयुक्तांक, अंक ७९-८८, वर्ष ९, १४ मार्च १९७६ सँ १४ नवंबर, १९७६केर संयुक्ताङ्क, अंक ८९-१०५, वर्ष १०, २३ फरवरीसँ १४ अगस्त १९७७केर संयुक्तांक, अंक १११—१२२, वर्ष ११-१२, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मइ, १९७८, अंक १३४-१४१। स्मर्तव्य जे एतेक-एतेक अंककेँ

Scanned by CamScanner

संयुक्त रूपमे जे प्रकाशित कयल गेल अछि ताहि सबमे कोनो २ पृष्ठक अछि आ कोनो ४ पृष्ठक। १४ मार्च १९७६ सँ १४ नवंबर १९७६ धरिक जे १७ अंकके एक ठाम छापल गेल अछि से दू पृष्ठक अछि आ ताहिमे तीन गोट मात्र शीर्षक अछि —(१) मैथिली क्षेत्रमे बच्चा सभहिक शिक्षा मातृ-भाषा द्वारा कोना हो' (२) प्रयागस्थ मैथिली कविक अभिनन्दन (३) मैथिली साहित्यकार लोकनिसँ निवेदन। एक अंकक मूल्य २५ पाइ राखल गेल अछि। यदि एहि सत्रहो अंकक मूल्य एकठाम जोड़ल जाय तँ चारि रुपैया पचीस पाइ होइत अछि। एहि तीन गोट शीर्षक तथा क्राउन अठपेजीक दू पृष्ठमे दुकलमा छपल अस्सी पंक्तिक दाम सवा चारिटाका कोन ग्राहक बुते जुटाओल पार लगतनि से स्वयं ऊह्य थिक। एकरा पत्रकारिताक उपहास नहि तँ की कहल जायत ?

जाबत ई साप्ताहिक छल तावत श्री उमाकान्त, एम्. ए. सम्पादक छलाह, जखन ई पाक्षिक भ' गेल तखन किछु दिन डॉ० श्री उमाकान्त तिवारीक नाम, तकर किछु दिनक बाद डॉ० श्री रुद्रकान्त मिश्रक नाम सम्पादकक रूपमे छपैत अछि। एहि प्रकारक पत्र-पत्रिकाक उपलब्धि की भेल तकर अन्वेषण करब निरर्थक प्रतीत होइत अछि। हँ, १९७२क जे एक अंक हमरा दृष्टिपथपर आयल अछि ताहिमे आचार्य रमानाथ झा द्वारा सम्पादित कीर्त्तिलताक समीक्षाक एक अंश उपलब्ध भेल जाहिमे रमानाथ बाबूक मन्तव्यक खण्डन डॉ० श्री जयकान्त मिश्र कयने छथि। मैथिलीक विशेष अध्येता लोकनिके मिथिला मिहिरक माध्यमसँ एहि शास्त्रार्थक प्रसङ्ग बहुत किछु अवगत भेल होयतनि। अन्यान्य अंक सब जे देखबाक सुयोग भेल ताहि सबमे अधिकांशमे डॉ० श्री मिश्रहिक वक्तव्य आदि छपल छनि। हँ, किछु पुस्तकक प्रकाशनक सूचना, किछु पुस्तकक परिचय आदि उपलब्ध होइत अछि। आश्चर्य तँ ई अछि जे १९७६क संयुक्तांकमे जखन वर्ष ८ छपल अछि तँ १९८०मे वर्ष १५ कोना भ' गेल ?

इतिहासमे सत्यक अपलाप नहि हो, ई पूर्वहु कहि आयल छी, तें नग्न सत्य पाठकक समक्ष उपस्थित करब हम अपन धर्म बूझल।

Scanned by CamScanner

मैथिली पारिजात

२६ जनवरी १९६४ ई० सँ दरभङ्गासँ 'मैथिली पारिजात' नामक चारिम पाक्षिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल। एकर सम्पादक छलाह श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर' तथा प्रेरणाक स्रोत एक तँ मैथिली-साहित्य परिषदक 'मैथिली विद्यापीठ' अर्थात् परीक्षा विभाग छल तथा दोसर कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालयक तत्कालीन उपकुलपति म० म० डॉ० उमेश मिश्रजी छलथिन। एकर उद्‌बोधन वाक्य छलैक— 'सिद्धिः साध्ये सतामस्तु'।

एकर प्रस्तावित अङ्कमे म० म० डॉ० मिश्रजी आशीर्वादक रूपमे लिखने छथिन—

"मैथिली-पारिजात नामक पाक्षिक पत्र अहाँ सभ प्रकाशित करैत छी से जानि परम हर्ष भेल। पाक्षिक पत्रक मुख्य उद्देश्य थिक मिथिला देशक समाचार प्रकाशित करब। एहिसङ्ग इहो ध्यान मे राखक थिक जे भाषा परिशुद्ध हो तथा सरल हो। हमर त इच्छा जे कोनहुना तिरहुता मे नहि त तावत बंगलो अक्षरक सहायता लय ई पत्र छपैत। जगज्जननी जानकी सँ प्रार्थना जे अहाँक मनोरथ पूर्ण हो तथा मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक सेवा एहि पत्र द्वारा हो। इति।"

एकर प्रथम अङ्कमे साहित्य आकादमी दिल्ली, साहित्य अकादमीमे मैथिली केँ मान्यता देबाक हेतु जे पाँच व्यक्तिक उप समिति नियुक्त कयने छल तकर समाचार तथा दिल्ली मे जे मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी भेल छल तकर उपलब्धिक चर्चा, मैथिलीमे फिल्म निर्माणक तथा मैथिली विद्यापीठ द्वारा सम्पादित परीक्षा आदिक सूचना भेटैत अछि।

दोसर अङ्क मे म० म० डा० मिश्र उपकुलपति पदसँ सेवा निवृत्त भेलाह तकर समाचार तथा 'मैथिली विद्यापीठ'क परीक्षाफल प्रकाशित भेल अछि। मात्र यैह दू गोट अङ्क प्रकाशित भेलाक बाद जे बन्द भेल सेबन्दे रहि गेल। अतः एकर उपलब्धि एतबे जे पत्र-पत्रिकाक नामक सूची मे एक नाम बढ़ि गेल। ओना अग्रिम अंक होलिकांक होयत से सूचना देल गेल छल।

सम्पर्क सूत्र

मैथिली मे प्रकाशित पाँचम पाक्षिक पत्र छल "सम्पर्क सूत्र"। ई असम विद्यापति गोष्ठी, पांडू द्वारा प्रकाशित होइत छल आ एकर सम्पादक छलाह—श्री परमानन्द प्रसाद कर्ण। एकरा पाक्षिक विवरणिका कहल गेल अछि। एहि पत्र सँ ज्ञात होइत अछि जे असम विद्यापति गोष्ठी सरकार द्वारा रजिस्टर्ड संस्था अछि। सम्पर्क सूत्रक प्रकाशनक मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश दैत कहल गेल अछि—

☐ सम्पर्क सूत्रमे मुख्य रूपें असम विद्यापति गोष्ठीक बैसार आर कार्य कलापक विवरण देल जाइछ।

☐ असम प्रदेश स्थित मैथिलीभाषी लोकनिकें साहित्य आर संस्कृतिक माध्यमसँ एकताक सूत्रमे बान्हब एकर अभीष्ट छैक।

☐ मैथिली साहित्य आर सांस्कृतिक कार्यकलापक विवरण जे अन्यत्रो भेल होयत, सदस्य लोकनिक जानकारीक हेतु आवश्यक बुझला पर सम्पर्क-सूत्रमे देल जा सकैछ।

☐ सम्पर्क-सूत्रमें सुधार लयबाक कोनो सुझाव जे गोष्टीक नियत उपनियमक अनुरूप होयत, स्वीकार कयल जायत।

सम्पर्क सूत्रक अवलोकन कयलासँ ई स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि जे असम विद्यापति गोष्ठी एक प्राणवन्त संस्था अछि जकरा मातृभाषाक प्रति एकान्त निष्ठा ओ प्रेम छैक। कोनो लोभ-लाभकें दृष्टिमे राखि ई कार्य-रत नहि अछि। मातृभाषाकें न्याय्य अधिकार देआयब अपन कर्त्तव्य बुझैत अछि। अतः असममे प्रवास कयनिहार प्रत्येक मैथिली-भाषीकें सजग करवाक एकर प्रयास स्तुत्य छैक। आर्थिक दृष्टिएँ दुर्बल रहितो, विद्यापति स्मृति पर्व आदिमे धूम-धड़ाका, नाच-गान आदिकें प्रमुखता नहि द' ठोस रचनात्मक कार्यके प्राथमिकता देब अपन कर्त्तव्य मानैत अछि।

एकर प्रकाशन १९६६ ई० सँ नियमितरूपें होइत रहल। हमरा एकर २६म अंकसँ ३४-३५म संयुक्तांक धरि देखबाक सुयोग भेटल अछि जाहिमे प्रकाशनक अनियमितता कतहु दृष्टिगोचर नहि भेल। मैथिली भाषाक हेतु ई कतेक सजग छल से एहिमे प्रकाशित समाचार सबसँ ज्ञात होइत अछि। एकटा समाचार उदाहरणार्थ उद्धृत कयल जाइछ। शीर्षक अछि :

Scanned by CamScanner

'देशी मुर्गी विलैती बोल'। समाचारक स्वरूप अछि—हालमे गौहाटी स्थित एकटा कथित मैथिली संस्था द्वारा "रवीन्द्र जयन्ती" मनाओल गेल। एहि अवसरपर अधिकांश व्यक्ति हिन्दीमे भाषण कयलनि। खेदक विषय थिक जे मंत्रीमहोदय सेहो गोष्ठीक प्रतिवेदन हिन्दीयेमे सुनौलनि। ओना तँ एहि संस्था द्वारा रवीन्द्र जयन्ती, तुलसी जयन्ती आदि मनाओल जाइत अछि से ततेक अधलाह नहि, मुदा की हमर मैथिली एतेक सक्षम नहि जे एहि भाषामे हम रवीन्द्र आ तुलसीक विशेषता व्यक्त क' सकी? स्मरणीय अछि जे ई संस्था वर्षमे एकबेर मैथिली कवि आदिक जयन्ती मनबैत अछि एवं ओ अछि 'विद्यापति जयन्ती'। दुःखक विषय थिक जे ओहू कार्य-क्रममे हिन्दी, मैथिली आर अंग्रेजीक खिचड़ी पकाओल जाइत अछि। तेँ हेतु एहि क्षेत्रक समस्त मैथिली भाषीक ई कर्त्तव्य थिकनि जे ओ सभ मिलि क' एहि संस्थाक कार्य-कर्त्ता लोकनि पर जोर देथि जाहिसँ गोष्ठी द्वारा मैथिलीक कार्यक्रम प्रस्तुत कयल जा सकय, जे एकर मूल उद्देश्य थिक।"[१]

उक्त गोष्ठीक कार्यकर्त्ता लोकनिक अदम्य उत्साहक प्रमाण यैह अछि जे हमरा जतबा अंक देखबाक अवसर भेटल, सब अंक 'साइक्लोस्टाइल' कयल अछि, जाहिमे मात्र एक गोट विशेषांक अछि जे टाइप कयल अछि, शेष हाथक लिखल। हँ, मुखपृष्ठ पर ऊपरसँ पत्रक नाम, सम्पादकक नाम, गोष्ठीक ओ पत्रक नियम आदि छपा क' राखि लेल गेल अछि।

एहि पत्रमे कोनो साहित्यिक रचना नहि प्रकाशित होइत छल, मात्र मैथिलीक गतिविधिक सूचना, समाचार आदि। जाहि विशेषांकक ऊपर चर्चा कयल गेल अछि से एहि पत्रक चरम उपलब्धि थिक। ई विशेषांक मैथिलीकेँ साहित्य अकादमी द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त भेलाक अवसरपर प्रकाशित कयल गेल अछि। ई निर्विवाद सत्य थिक जे कतेको दिनुक संघर्ष वा आन्दोलनक फलस्वरूप मैथिली साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त कयने छल आ एहि मान्यता द्वारा अन्य न्याय्य अधिकार-प्राप्तिक दिशामे एक डेग आगाँ बढ़ल छल, यद्यपि कतिपय उग्र विचार रखनिहार एकरा भीख कहलनि, मुदा अधिकार-प्राप्तिक दिशामे डेग एहिना आगाँ बढ़ैत अयलैक अछि। जहिना भारतवर्ष शान्तिक अवलम्बन क' स्वतन्त्रता प्राप्त करबामे सफल भ' सकल तहिना मैथिली एखन धरि जतबा जे किछु

---

१. सम्पर्क सूत्र, अंक २९, १-६-६७ ई०, पृ० २।

अधिकार प्राप्त क' सकल अछि ताहि हेतु कतहु कोनो रक्तपात नहि भेल अछि अथवा रामुलू जकाँ क्यौ अपन बलिदान नहि कयलनि अछि।

अतः एहि हर्षक शुभअवसरपर सम्पर्क सूत्र एक विशेषांक १-७-६७ ई० कें प्रकाशित कयलक। एहिमे श्री पीताम्बर मिश्र 'निर्मीक'क ''असममे मैथिली संस्थाक क्रमिक विकास,'' श्री रामचन्द्र सिंह, एम० ए०क ''असम आर मिथिलाक मध्य प्राचीन सम्पर्क,'' श्री अरविन्दक मिथिलाक प्राचीन संस्कृति आर वर्त्तमान मैथिल समाज;'' श्री गणेशनारायण दासक ''मैथिली पछुआयल कियैक ?'' श्री हरिशंकर झाक 'मैथिलीक उत्थानमे प्रवासी मैथिलक सहयोग,'' श्री देवनारायण मिश्रक ''मैथिलीक प्रति मैथिलक 'रबैया,'' श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क ''मिथिला जागि गेल अछि,'' श्री राम प्रसाद यादवक ''मिथिलाक रसम-रेवाज़'' तथा श्री परमानन्द प्र० कर्णक 'सम्पर्क सूत्रक एकवर्ष'' शीर्षक लेख सब प्रकाशित भेल अछि। एहि सभक अनुशीलनसँ जतय मिथिला ओ मैथिलीक प्राचीन गौरवक स्मरणक संग ओहि समयमे होइत मैथिलीक विकासक गतिविधिक परिचय भेटैत अछि ततय ईहो ज्ञात होइत अछि जे मैथिली भाषी अपनहिमे कोनो आन्तरिक विरोध रखैत छलाह जाहि कारणें केहनो सुसंगठित संस्था सब भ्रष्ट होइत रहल अछि। एहन सन प्रतीत होइत अछि जे एही कलहक कारणें एहि संस्थामे गत्यवरोध उत्पन्न भ' गेल।

एही अंकमे असम विद्यापति गोष्ठीक कतिपय शाखाक निदर्शन एक वंशवृक्ष बना क' कयल गेल अछि जाहिसँ एकर संगठनात्मक शक्तिक परिचय भेटैत अछि। एकर सात गोट शाखा भ' गेल छलैक—तेजपुर, गौहाटी, रंगिया, रंगापाड़ा, लमडिंग, बंगाड़ गाँव तथा शिलांग। एहि प्रकारक सुसंगठित संस्था प्रायः अन्यत्र नहि देखल जाइत अछि। मुदा एतेक होइतो एक गोट पत्र दीर्घजीवी नहि भ' सकल।

'सम्पर्क-सूत्रक एक वर्ष' शीर्षकमे सम्पादक वर्ष भरिक लेखा जोखा प्रस्तुत कयने छथि ताहिसँ ज्ञात होइत अछि जे एकर प्रथम अंक १५ मार्च १९६६कें प्रकाशित भेल। ई मात्र दू पृष्ठक प्रकाशित होइत रहल, अतः साहित्यक अन्य विधाक रचना तँ नहि, तखन एक-आध कविता यदा-कदा प्रकाशित करैत रहल। एकर दोसर अंकमे प्रकाशित एक छोट सन कविता पाठकक अनुरोधें एहिमे पुनः प्रकाशित भेल अछि जकरा उद्धृत करबाक

Scanned by CamScanner

लोभ—संवरण हमहु नहि क' पबैत छी। शीर्षक अछि—निपत्ता ! निपत्ता !! निपत्ता !!! कविताक स्वरूप निम्नांकित अछि—

एकटा दुब्बर-पातर-गोरि कन्या,
जकर वयस यैह किछु हजार वर्षक छैक,
जे सत्यक बेदाग उज्जर नूआ
आर मानवीय मूल्यक चित्रित कंचुकी पहिरने अछि।
सुनइछ, सभ्यताक सड़क पर अनैतिकताक मोटर पर सबार
किछु घोर भौतिकतावादी अपराधी उठा ल' गेलैक
आर बुद्धिवादिनो पुलिस देखैत रहि गेल।
अपने लोकनिसँ यैह प्रार्थना जे—
यदि ओकरा देखी तँ निचला पता पर पहुँचा दी,
यात्राव्ययक अतिरिक्त पुरस्कारो भेटत
कन्याक नाम स्मरण राखब—'मानवता'

—श्री रामचन्द्र सिंह, एम्० ए०, द्वारा असम वि० गो० गौहाटी-१२

एहि पत्रक स्वरमे जे प्रखरता छलैक, यदि दीर्घजीवी होइत तँ एहिसँ मैथिलीक बहुत पैघ उपकार होइतैक।

मातृवाणी

प्रायः १९७१ ई० सँ श्री ए० सी० 'दीपक'क सम्पादकत्वमे एक पाक्षिक समाचार पत्रक रूपमे लहेरियासरायसँ 'मातृवाणी'क प्रकाशन आरम्भ भेल। इतिहासकारलोकनि सेहो एहिपर पूर्ण प्रकाश नहि देने छथि तथा अन्वेषण कयलो उत्तर एकर अङ्क सब उपलब्ध नहि रहलाक कारणेँ एहि प्रसङ्ग विशेष किछु कहब प्रामाणिक नहि होयत। भविष्यमे अवसर ओ सुविधा भेला उत्तर किछु कहल जा सकय से संभव। सम्प्रति एतबे कहब उपयुक्त होयत जे इहो पत्र पीत पत्रकारिताकेँ अग्रसर करबामे अपन महत्त्व-पूर्ण भूमिका रखैत छल। एहि उक्तिक पुष्टिमे एकर छोट सन उदाहरण उपस्थित अछि। ई एक मिथिलाक मान्य विद्वानक प्रसंग कहल गेल अछि। शीर्षक अछि—"ब्रह्मचर्यक तेसर पीढ़ी"। आरम्भ होइत अछि—

"......शतलक्षापहारी कुल-संभूतः कश्चित कुल्हारी झा तस्य सूनुः सुनारी झा तस्य सूनुः प्रचारी झा तस्य सूनुः हर संहारी झा तस्य सूनुः

रसियारी झा तस्य सूनुः ब्रह्मचारी कारी झा तस्य सूनु ब्रह्मचारी प्रहारी झा इति विख्यात:...............

आब भाखामे बुझा कहैत छी। बजरबट्टूक पातपर कोनो अखरकट्टूक लिखल कंस्कृत भाषा ओ शिथिलाक्षरमे लिखल ई सिद्धान्तक पाता हमर गामक एकटा बूढ़ भरिया के कतहु कोशीकन्हामे उड़िआइत भेटल छलैक।"[1]

एहि पत्रक चरित्र बुझबाक हेतु ई उद्धरणे पर्याप्त अछि। निर्भीकताक हेतु ई पत्र अपना समयमे प्रसिद्ध छल। भाषामे शालीनता नहिओ रहैत नग्न सत्यकें पाठकक सोझाँ राखि देब, एकर विशेषता छलैक। मिथिला ओ मैथिलीक समस्याकें ई खूब प्रचारित करैत रहैत छल। भाषामे व्यंग्यात्मकता बेसी रहलाक कारणें बुद्धिजीवी वर्ग अङ्कक हेतु उत्सुक रहैत छल।

'मातृवाणी'क हेतु शुभकामना व्यक्त करैत 'मैथिल बन्धु'क संस्थापक ओ सम्पादक प० श्री रघुनाथ प्रसाद मिश्र अजमेरसँ लिखने छथिन—

"मातृवाणी पाबि मुदित भेलहुँ। मैथिलीक इतिहासमे कहिओ कोनो एहन निर्भीक बजनिहार पत्र नहि देखलहुँ।.......हम पत्रक उन्नति चाहैत छी। अपनेक निर्भीकता, स्पष्टवादिता लेल अनेकानेक साधुवाद, बधाइ, शुभकामना एवं शुभाशीर्वाद।"

एही संग श्री बुद्धिनाथ झा, वाराणसीसँ लिखने छथिन....."मातृवाणी नियमित रूपसँ छपि रहल अछि आ हमरा भेटि रहल अछि। ई प्रसन्नताक गप्प। एहिना पुकियबैत रही सत्ताकें यैह कामना।"[2]

एहू उद्धरणसँ एहि पत्रक नीति ओ चरित्रक अनुमान कयल जा सकैत अछि। एतेक होइतो सहयोगक अभावमे ईहो बन्द भ' गेल।

---

१. मातृवाणी, १ दिसम्बर १९७७, वर्ष ७, अंक २।

१. मातृवाणी, १.४.७३क अंक।

Scanned by CamScanner

द्वैमासिक पत्रिका

अभिव्यंजना

१९६० ई०मे पटनासँ एक साहित्यिक संकलन प्रकाशित होअय लागल जकर नाम छलैक 'अभिव्यंजना' तथा एकर सम्पादक छलाह श्री मायानन्द मिश्र। एकर प्रबन्ध सम्पादक प० श्री जयकान्त मिश्रजी रहथि। ओहि समयमे श्री जयनाथ बाबू पटनामे अजन्ता प्रेस चलबैत छलाह तथा श्री मायानन्द मिश्र पटना आकाशवाणीसँ प्रसारित 'चौपाल' कार्यक्रमक अन्तर्गत मैथिलीक प्रतिनिधिक रूपमे सेवा-रत छलाह। ओही समयमे श्री जयनाथ बाबू एकर प्रकाशकक योजना बनाय एकरा कार्यान्वित कयलनि।

यद्यपि डॉ० श्रीश अपना इतिहासमे लिखने छथि····"अभिव्यंजना त्रैमासिकक प्रकाशन पटनासँ श्री मायानन्द मिश्रक सम्पादकत्वमे आरम्भ भेल।"[१] परन्तु सम्पादक स्वयं लिखने छथि····"एखन तत्काल दू-दू मासपर प्रकाशित हैत।"[२] एहिसँ स्पष्ट अछि जे एकर योजना द्वैमासिकक छल। ई सत्य जे एक अङ्कक मूल्य एक टाका छल आ जँ द्वैमासिक छल तँ वार्षिक मूल्य १०) टाका नहि होयबाक चाही जे प्रथम अंकमे घोषित अछि, परन्तु ताहिसँ अगिला अंकमे एकर मार्जन क' मात्र ५) वार्षिक मूल्य राखल गेल अछि जे युक्तिसंगत अछि।

अभिव्यञ्जनाक प्रथम अंक कोन मासमे प्रकाशित भेल तकर उल्लेख कतहु नहि अछि, वर्ष १९६० मात्र छपल अछि। प्रथम अंकक सम्पादकीयमे एकर प्रकाशनक आवश्यकता पर प्रकाश दैत मैथिली साहित्यमे गतिरोधक समस्याकेँ उठाओल गेल अछि। एकर भाषा अपनामे एकदम बेछप अछि। पहिल अंकमे प्रकाशित विषयवस्तुकेँ पाँच खण्डमे विभाजित कयल गेल अछि····गद्यकृति, काव्यकृति, वैयक्तिकी, आलोचना एवं सामयिकी। एकटा विचित्रता हमरा बुझना जाइत अछि जे वैयक्तिकी, आलोचना, सामयिकी सब गद्यमे लिखल अछि, परन्तु गद्यकृतिमे कथामात्रकेँ परिगणित कयल गेल

---

१. मै० सा० इतिहास, पृ० १२९।

२. अभिव्यंजना-1, पृ० ३।

अछि। एहिसँ एहन प्रतीत होइछ जे गद्यक स्वरूपक उन्मेष केवल कथेमे भ' सकैत अछि एहन सन धारणा सम्पादकक छनि। अस्तु।

पहिल सम्पादकीय "समकालीन साहित्यमे गत्यवरोधक प्रश्न" शीर्षकमे अभिव्यक्त विचारक अवलोकन उपयोगी होयत जाहिसँ एहि पत्रिकाक प्रवृत्ति बुझबामे सहायता भेटत। सम्पादक लिखने छथि—

"समकालीन मैथिली साहित्यमे अर्थात् उत्तर स्वतन्त्रता युगमे गतिरोधक समस्या हमरा बुझने घोर चिन्तनीय विषय बनि गेल अछि।

ई कहबाक प्रयोजन नञि जे वर्त्तमान कालमे प्रायः पहिलुक बेर साहित्य जीवन यथार्थक एते निकट आबिक' ठाढ़ भेल आ सङ-सङ चलबाक चेष्टा केलक, मुदा परम्पराक निर्बलताक कारणे अपनामे ओते गति-संचय नञि क' सकल जतेक करक चाही।........

दृष्टान्तक रूपमे, सन बियालीस एल, देशव्यापी जन-आन्दोलनक एतेक टा ऊड़-बड़ेड़ा उठल, अन्तिम पराजयक विवशता देशकेँ मथि देलक, सन् सैंतालिसक उल्लास राष्ट्रीय उथल-पुथल, महगी, अकाली, घुसखोरी, भष्टाचार, सन् पच्चासक गणतन्त्रक स्थापना, प्रथम-द्वितीय पंचवर्षीय योजना, कोशी योजना, जमीन्दारी उन्मूलन, आधुनिक राष्ट्रीय पुर्नसंगठन, समकालीन सामाजिक, आर्थिक व्यस्तता, विवशता, निराशा आ कुंठा आदि, ई सब एहन घटना-स्थिति थिक जकर पूर्ण आ' समर्थ अभिव्यक्ति साहित्यमे अपेक्षित छल।........

अभिव्यज्जनाक उदय साहित्यक एही गत्यवरोधक अन्धकारक विनाश करबाक लेल भेल अछि।

आइ समकालीन मैथिली साहित्यमे नऽब दृष्टि, नऽब वस्तु विन्यास, नऽब भाव-भूमि, नऽब भाषा-व्यवस्था, नऽब प्रतीकऽ-योजना, नऽब उपमेय-उपमान, नऽब स्वर, नऽब मान-मूल्य, तथा नऽब अभिव्यक्ति प्रणालीक प्रयोजन छै— 'अभिव्यज्जना' एही प्रयोजन लै आगू बढ़ल अछि। आइ तरुण साहित्यकार सब नऽब दिशासँ संकेतक अभावमे भटकि रहल अछि—हमरा विश्वास अछि 'अभिव्यज्जना' हुनका बाट देखोतैन।

आइ युगक कुंठा, व्यस्तता, विवशता आ संघर्ष साहित्यकारक सहानुभूति मङैत, अपन अभिव्यक्ति चाहैछ—'अभिव्यज्जना' निर्विवाद रूपेँ से द' सकत आ' साहित्यसँ गतिरोधकेँ तोरि क' हटा देत।"

Scanned by CamScanner

अभिव्यज्जनाक चारि पाँच अंक प्रकाशित भ' सकल जाहिमे अन्तिम अंक फरवरी-मार्च १९६३ ई०क थिक। एहि अंकमे अग्रिम अप्रैलसँ एकर मासिक प्रकाशनक सूचना देल अछि।[1] परन्तु तकर बाद एकर प्रकाशन बन्दे भ' गेल।

हमरा एकर तीन गोट मात्र अंक दृष्टिपथ पर आयल। प्रथम अंक जे पटना सँ प्रकाशित भेल ताहिमे फणीश्वरनाथ 'रेणु'क 'नेपथ्यक अभिनेता', श्री रामदेव झाक "वट गाछक छाहरि", रामकृष्ण झा 'किसुन'क "संकल्पक आधार" तथा श्री मणिपद्मक "शाश्वत औल इन्डिया" ई चारि गोट कथा, श्री मधुकर गंगाधरक 'दिया सलाइ', श्री मायानन्दक, 'चारिटा कविता' प्रो० श्री हरिमोहन झाक 'गंगाक घाट पर', राजकमलक "देश अहीं केर थीक" तथा श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरक "समाज सेवा" शीर्षक कविता, वैयक्तिकीमे कुमार गङ्गानन्द सिंहक 'साहित्य प्रेरणा' तथा ज्यो० आ० प० बलदेव मिश्रक 'हमर साहित्य प्रवेश', आलोचनामे प्रो० श्री बुद्धिधारी सिंहक "विद्यापतिक सार्वभौमिकता एवं सामयिकी मे श्री बुद्धिनाथक 'डॉ० जिवागो, लोलिटा' प्रकाशित अछि। सामयिकी स्तम्भमे कहल गेल अछि—"समकालीन विश्व साहित्य सँ परिचय करैब एहि स्तम्भक उद्देश्य अछि।"

सम्पादकीय मे जे गत्यवरोध केँ दूर करबाक घोषणा कयल गेल अछि, तेहन कोनो विशेष विषय हमरा दृष्टिगोचर नहि भेल। हँ, ओहि समय धरि कवितामे प्रयोगवादेक नारा आयल छल आ कविता सबमे नवीन प्रयोग अवश्य देखल जाइत अछि।

अगिला अंक सबमे किरतनिञा अथवा कीर्तनिया नाटक पर आचार्य रमानाथ झा एवं डॉ श्री जयकान्त मिश्रक विस्तृत शास्त्रार्थ, विद्यापति रचित लिखनावलीक महत्व" पर प्रो० श्री राधाकृष्ण चौधरीक लिखल तथा डॉ० श्री शैलेन्द्र मोहन झाक लिखल "धूर्त समागमक मैथिली पद" आदि शोध निबन्ध सब छपल अछि। एकटा स्तम्भ 'चर्चा वर्चा' शीर्षकसँ आरम्भ कयल गेल छल जाहि अन्तर्गत मैथिली कथा मे वातावरणक प्रश्न पर आचार्य रमानाथ झा एवं डॉ श्री बालगोविन्द झा 'व्यथित'क विचार छपल अछि।

---

१. सम्पादकीय किछु विचार : किछु सूचना, पृ० २।

Scanned by CamScanner

वैयक्तिकीमे रामकृष्ण झा 'किसुन'क 'भेंट भेलाह अमरजी' तथा एहि पंक्तिक लेखकक 'स्वर्गीय बन्धु : उद्दीप्त प्रतिभा मुरझा गेल'' मे चाणक्य महाकाव्यक प्रणेता स्व० दीनानाथ पाठक सँ पहिल भेटक संस्मरण छपल अछि। 'गूड़ चाउर' रेडियो रूपक श्री भानुनाथक, श्री जयानन्दक 'रजिया', श्री मणिपद्मक 'ओइ राति', श्री प्रभास कुमार चौधरी 'लिफाफ बन्न : चिट्ठी खूजल'' कथा भेटैत अछि। अतः ई कहल जाय सकैत अछि जे 'अभिव्यञ्जना' मे जे रचना सब छपल से सब अपन महत्त्व अवश्य रखैत अछि, ओहि सब सँ मैथिली साहित्यमे गति अयलैक, परन्तु जाहि गत्यवरोधक प्रश्न उठाओल गेल छल ताहि दिशामे एकर की उपलब्धि भेलैक से हमरा बुद्धि मे नहि आयल।

मिथिला भारती

मैथिली अकादमी, पटनाक तत्त्वावधान मे मई १९७९ ई० सँ एक द्वैमासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल। एहि हेतु एक सम्पादकमण्डल बनल छल जाहि मे छलाह आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', श्री दीनानाथ झा, प० श्री गोविन्द झा ओ श्री गोपीरमण चौधरी। प्रधान सम्पादक मैथिली अकादमीक अध्यक्ष श्री श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' तथा सम्पादक श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', सचिव-सह-निदेशक, मैथिली अकादमी।

एहि पत्रिकाक नियमावलीमे कहल गेल अछि—

१. मिथिला भारती मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना द्वारा प्रकाशित एक द्वैमासिक साहित्यिक पत्रिका थिक।

२. मिथिला-भारती मैथिल भाषाक सर्वाङ्गीण विकासक हेतु सचेष्ट रहत। एहिमे कविता, कथा, शोध, निबन्ध, साहित्यिक, वैज्ञानिक वा अन्य निबन्ध, समीक्षा आदिक समावेश कयल जायत।

मिथिला भारती स्पष्ट रूपें घोषणा कयने छल जे राजनीतिक विवाद वाला विषय सभपर रचना स्वीकार नहि कयल जायत तथा मिथिला भारतीक प्रकाशित रचना सभपर सम्पादकमण्डल द्वारा निर्धारित सम्मान रूपमे लेखकलोकनिक केँ किछु पारिश्रमिक देल जयतनि।

स्मर्त्तव्य जे 'धीया पूता' पहिले पहिल प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देबाक घोषणा कयने छल जकरा कार्यान्वित नहि क' सकल। बाद मे जखन

Scanned by CamScanner

पटना सँ 'मिथिला-मिहिर'क प्रकाशन आरम्भ भेल तँ ओ पारिश्रमिक देबाक घोषणा तँ नहि कयलक, परन्तु किछु पारिश्रमिक देब आरम्भ कयलक आ तखमे मैथिलीक लेखक कें ईहो ज्ञात भ' सकलनि जे प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिको भेटैत छैक। मिथिला भारती अपन घोषणाक अनुसार कर्त्तव्यपालनमे तत्पर रहल।

'मिथिला-भारती'क नामकरण कोना भेल ताहि पर सम्पादकीयमे प्रकाश देल गेल अछि।

"मातृभाषानुरागी सुधी-समुदायकें ज्ञात होयतनि जे आई सँ दश वर्ष पूर्व पटनाक एक प्रतिष्ठित संस्था 'मैथिली-साहित्य-संस्थान' एक त्रैमासिक शोध-पत्रिका 'मिथिला भारती' नामसँ चलओने छल। दुर्भाग्यवश उक्त संस्थाक तथा ओहि पत्रिकाक मुख्य कर्णधार प० राजेश्वर झा दुई वर्ष पूर्व हमरा लोकनिकें छोड़ि असमयमे स्वर्गवासी भ' गेलाह आ हुनक परोक्ष भेलापर पत्रिकाक प्रकाशन शिथिल जेकाँ भ' गेल। परन्तु अल्पकालहि मे ई मिथिला-भारती अपना क्षेत्रमे एक कीर्त्तिमान स्थापित क' गेल आ एकर बन्द होयब सुधी-समुदाय कें असह्य जेकाँ लगैत रहलनि। अतः जखन हमरा लोकनि अकादमीक दिससँ पत्रिका चलयबाक बिचार कर' लगलहुँ तँ मिथिला भारती सहसा मन पड़ि गेल आ ई निर्णय भेल जे एकरे नामकें आ एकरे उज्ज्वल परम्परा कें अग्रसर कयल जाय।......................

'मिथिला-भारती' ई नाम तँ हमरालोकनि अंगीकृत क' लेल, परन्तु स्वरूप आ विषयवस्तुमे बहुतरास अन्तर कर' पड़ल अछि। मैथिलीमे पत्रिकाक घोर अभाव देखैत एकरा पूर्व जेकाँ शुद्ध शोध-पत्रिका नहि राखि सामान्य साहित्यक पत्रिका बनाओल अछि जाहिसँ एके पत्रिका तत्काल साहित्यक सभ क्षेत्रक आ सभ विधाक आवश्यकताक पूर्ति करय।"

एकरो मात्र तीन गोट अंक प्रकाशित भ' सकल। जखन भारत सरकार सँ एकर प्रकाशनक स्वीकृतिक हेतु प्रयास गेल तँ एहि नामपर स्वीकृति नहि भेटि सकल। अतः सितम्बर-अक्तूबरक अङ्कक बाद ई स्थगित भ' गेल।

मैथिली कविता

१९६८ ई० क अप्रैल सँ कलकत्तासँ 'मैथिली कविता' नामक एक विशुद्ध कविता त्रैमासिकक प्रकाशन आरम्भ भेल। वस्तुत: ई एक भाय ओ एक बहिनिक उत्साह ओ सत्प्रयासक परिणाम छल। एकर सम्पादक छलाह श्री नचिकेता तथा मुद्रक आ प्रकाशक छलाह श्रीमती इलारानी सिंह। मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे ई एकमात्र अभिनव प्रयास छल। एही अभिनवताक कारणें ई इतिहासमे अपन स्वतन्त्र स्थान बनयबामे समर्थ छल, परन्तु एकर उपलब्धि ओ स्वरक दृढ़ता शिलालेख जकाँ एकर नामकें अमिट बना देने अछि। यदि सत्य कहल जाय तँ एहि कालावधिमे अपनाकें स्थापित करबाक ओ संगहि आचार्यत्व प्राप्त करबाक अभिलाषा सँ अनेक वादक जन्मदाताक बाढ़ि आबि गेल अछि जाहि सब 'वाद' कें एक ठाम 'अघोरवाद' संज्ञा देल जाय सकैत अछि। एही 'अघोरवाद'क विरुद्ध ई पत्रिका कठोर आघात करबाक दुस्साहस देखौलक। युवापीढ़ीक एक प्रतिभावान साहित्यकारक एहि प्रयासक वाचनिक स्वागत तँ चारू दिस सँ भेल, परन्तु पत्रिका प्रकाशनक जे दृढ़ आधार थिक ग्राहकता, जाहि सँ आर्थिक बल प्राप्त होइत छैक, से एकरो नहि प्राप्त भ' सकलैक आ तें ईहो दीर्घजीवन प्राप्त करबामे विफल रहि गेल। मात्र ६ अंक प्रकाशित भ' सकल।

प्रथमे सम्पादकीय मे एकर उद्देश्य पर प्रकाश दैत लिखल गेल अछि —

रसात्म बोध सँ वंचित, विवेक और बुद्धियहु सँ विरहित, कवि-कर्मक दुरूहता सँ विमुक्त, फोकटिया यशक लिप्सा सँ अभिभूत, राष्ट्र-धर्म-संस्कृतिक विरोध कें कर्त्तव्य बुझनिहार, कुंठा, नपुंसकता, हीनता और संत्रास सँ प्रपीड़ित, नव-रूढ़ि-जाल मे आबद्ध हैबाक प्रेमी एवं संकीर्ण सम्प्रदाय मे अन्त-र्भुक्त तथाकथित साहित्यकार लोकनिक द्वारा नव लेखनक नाम पर पश्चिमक विकृतिक अनुकरण और दुर्द्व्यक सम्मिश्रण कैने क्यो बड़ जोर 'अकवि' भ' सकैछ, 'कवि' नहि। नव कवि लोकनि कें सब वस्तु सँ विरोध छन्हि। पुरान नामहि सँ ई लोकनि तहिना भड़कैत छथि जेना कारी छत्ता सँ महींस। धर्म पुरान भ' गेल छैक। तैं हिनका पसिन नहि। सामाजिक व्यवस्था

Scanned by CamScanner

पुरान भ' गेल छैक। तेँ हिनका वर्त्तमान समाज-व्यवस्था पसिन नहि। राष्ट्रीयताक नारा पुरान भ' गेल छैक। तेँ आब राष्ट्र-विरोधक नारा हिनका नीक लगैत छन्हि। अपन देशमे पसरल दुःख, दरिद्रता, अविद्या और कुरीति केँ दूर करबाक लेल ई लोकनि शिव संकल्प नहि क' सकैत छथि, कियैक त हिनका लोकनिक अन्तःकरण विश्व चेतना सँ उद्भावित हैत (?) रहैत छन्हि। चीनी साम्राज्यवादीक गोली सँ बिद्ध तथा पद-दलित अपन भाइ बन्धुक लहास हिनक हृदय विदीर्ण नहि कैलकन्हि, किन्तु वियतनामक गोली काण्ड सँ ई आइ अश्रु-मोचन क रहल छथि।

भारतवर्ष मे रहितहु वैशाख-जेठक प्रचंड उत्तापहु मे ई लोकनि साइबेरिया निवासी सब जकाँ हू-हू-हू-हू क' कए शीत सँ थर-थर कांपबाक स्वांग भरताह, कियैक त विश्व-चेतना सँ अनुप्राणित जे छथि ! अपन पास-पड़ोसिक क्रन्दन केँ और निराशा केँ बुझबाक हिनका पलखति नहि छन्हि, हुनका लोकनि केँ सहयोग देबाक वा समाजक नव निर्माण करवाक हिनका अवकाश नहि छन्हि, कि अपन माटि-पानिक दिसि निहारबाक हिनका दरकार नहि छन्हि, कियैक त ताहि सँ विश्व-चेतना सँ अनुप्राणित हेवाक कोन प्रमाण भेटतन्हि ? ई सत्य जे आजुक युग मे क्यो विश्व-शरिक घटना चक्र सँ अप्रभावित नहि रहि सकैछ आ' ने आयास पूर्वक अप्रभावित रहबाक चाही, किन्तु ईहो सत्य जे जकरा अपन घर, अपन समाज वा अपन देशक विभीषिका अनुप्रेरित नहि क' सकलैक से केवल आनहिक दयनीयता सँ प्रभावित हैवाक स्वांग करैछ त ओ भयानक दम्भी और मिथ्याचारी (फ्रॉड) मानल जायत।

एहन बिभ्रान्त कवि लोकनिक दू लक्षण विशेष उल्लेखनीय अछि। एक त ई अपने केँ त्रिकाल मे सबसँ पैघ मानैत छथि—हिनका दृष्टियेँ बाल्मीकि, कालिदास, विद्यापति, तुलसी, सूर, चन्दा झा, सुमन, मधुप, किरण, सीताराम झा आदि त कवि छथिये नहि, असल कविता'त आइ ई सब कवि लोकनि लिखि रहलाह अछि। नव कवि लोकनिक दोसर बिशेषता ई छन्हि जे ई सब अपन सम्प्रदायक चिट्ठा पर हस्ताक्षर कैनिहार और अपनहि साँचामे ढलल शब्द जाल मात्र केँ कविता मानैत छथि आन सब किछु केँ फूसि-फासि। नेतृत्वक लोभेँ एहि दल में कतेक बूढ़कौवो लोकनि कृत्रिम पंख लगा कए आबि गेल छथि। आजुक ई स्थिति विशेष विचारक अपेक्षा रखैत अछि।

आइ मैथिली कविता पर बड़ पैघ दायित्व छैक। कविलोकनि बड क्रान्त द्रष्टा हैत (?) छथि। तँ हुनका लोकनिक ई पवित्र कर्त्तव्य छन्हि जे सशक्त स्वर मे ओ समाजक पथ निर्देश करथु और मैथिली साहित्यक गौरव वर्द्धन करथु !

जनिका प्रतिभा छन्हि ओ कुहेलिकाक अन्ध जालक मायाकेँ त्यागि देथु। पश्चिमक अनुकरण नहि कं' कए अपन धरतीक माटि-पानि, अपन धरतीक आशा-निराशा, अपन धरतीक जीवन-संघर्ष दिसि ध्यान देथु। एहि प्रसंगे यात्रीजीक ई कविता स्मरणीय अछि—

"अवचेतन मध्य
रहताह ठाढ़ मनुपुत्र, दिगम्बर
ने जानि कतेक काल
पश्चिमाभिमुख"

कहबाक प्रयोजन नहि जे नव लेखनक नाम पर अश्रद्धा, अविश्वास, परम्पराक प्रति घृणा आदिक प्रसार कयनिहार पर ई हथौड़ा नहि, घनक प्रहार कयल गेल।

उपरिचर्चित सम्पादकीयमे तँ उक्त वर्गक नीति ओ सिद्धान्तक प्रसंग कहल गेल अछि। आब हिनका लोकनिक आचरण दिस संकेत करैत जे विचार व्यक्त कयल गेल अछि तकरो किछु अंश उद्धृत करब अनावश्यक नहि होयत। सम्पादक लिखने छथि—

"......संवबद्ध एहि अक्षमताक मतें ओ सब जे कहैत अछि सैह अछि आधुनिक (!) युगक वेद-वाक्य आ' पराजय, निराशा, विकृत कामाचार, ह्रास, विघटनक चित्रण थीक आधुनिक मनु संहिता। ई सब मनुष्यत्वहीन मनुष्य बुझैत छथि जीवनक चरम उद्देश्य थीक गाँजामे दम देने रस्ताक कात हाइड्रेनक भीतर घुसिआयल रहनाइ आ' हिनका सभक परम प्राप्ति थीक एकटा लाल-पीयर बोतल, टूटा होमै त आरो नीक; बाकी रहल पाशविक कामुकताक निवृत्ति लेल एकटा मांस-पिंड आ कविता लिख' लेल कागत-कलम।

इयैह सब अपनाकेँ निपीड़ित मानवक प्रतिनिधि हैबाक दावा करैत छथि। एहि मृत पीढ़िक इतिहास त एक चमत्कारे अछि। पाँच गोट मुर्दा मिलि कए एक दिन विशुद्ध अशुद्धताक आग मार्के लगा कविता-संकलनमे

Scanned by CamScanner

यन्त्रस्थ भ' कए अपने अपनहि पीठ ठोकि विख्यात बनि गेलाह आ' घर-घर थपड़ीक स्वाक्षरक लेल भीख मांग' लगलाह। दोसर दिन सब नुका कए रातिक अन्हारमे लिखलन्हि कोनो पत्रिका। मोसकिल तँ ई जे आखर-ज्ञान-हीन अन्ध सबकें अन्ध कहबो विपज्जनक अछि। ओ सब हाथीक चारि टा गोर (?) सूंढ़ टेबि कए हाथीक वास्तव रूप-चित्रण करैत छथि। जे हँमे हँ नहि मिलौलक तकरे ई सब अन्ध-प्रतिपन्न करैत छथि। हँसी लगैछ, दुःखो होइछ जे सूर्यक मुँह नहि देखलक ओकरा लेखें अन्हार त वास्तव हैबे करत।''[1]

एहिसँ स्पष्ट अछि जे नव लेखनक विरोधमे ई पत्रिका अपन सम्पूर्ण शक्ति लगौने छल। उपरिलिखित उद्धरणमे 'आखर-ज्ञान-हीन अन्ध' शब्द विशेष मननीय अछि जाहिसँ आन्तरिक राजनीतिक अनुमान सेहो भ' जाइत अछि।

एहिमे कविताक अतिरिक्त 'निकष' शीर्षक स्तम्भक अन्तर्गत किछु पुस्तकक परिचय प्रस्तुत कयल गेल अछि। यथा—श्री यात्रीजीक 'पत्रहीन नग्न गाछ,' श्री नचिकेताक 'कवयोवदन्ति,' श्री जयकान्त झा 'श्रुतधर'क 'विद्यापति सौरभ'—एहि तीनू पुस्तकक संक्षिप्त समीक्षा देखबामे आयल।

प्रथम वर्षक समाप्ति आ द्वितीय वर्षमे प्रवेश कयला उत्तर सम्पादक पुनः एहि पत्रक उद्देश्यपर प्रकाश दैत लिखने छथि—

"......आनन्दक विषय ई जे पत्रिकाक प्रकाशनमे सप्ताह वा दिनक त कथे कोन कहियो घंटो भरिक विलम्ब नहि भेल अछि।

'मैथिली कविता'क बहु विघोषित उद्देश्य अछि नपुंसकता, निराशा, सड़ल आक्रोश, संस्कारहीनता (अश्लीलता) एवं देश-द्रोहक उन्मूलन आ' प्राचीन तथा नवीनक स्वस्थ समन्वयक आधारपर स्थापित नव चेतनावादी साहित्यक प्रतिष्ठा। फोकटिया यश-लिप्सा निमग्न, नव रूढ़िवादमे आबद्ध, विदेशी उच्छिष्टजीवी, संकीर्णमना स्वार्थान्वेषी साहित्यकार सबकेँ प्रश्रय देब 'मैथिली कविता'क उद्देश्य नहि। हँ, ईहो सत्य जे सर्जनात्मक संजीवनी प्रतिभासँ सन्दीपित पाश्चात्य उद्यानक प्रत्येक पुष्प-राजिक सुरभिक अभिनन्दनक लेल 'मैथिली कविता'क वातायनकेँ उन्मुक्त राखल गेल

---

१. मैथिली कविता, वर्ष १, अंक ३, पृ० ३१-३२।

Scanned by CamScanner

अछि। (तँ नियमित रूपें प्रख्यात यूरोपीय कविताक अनुवाद प्रकाशित भ' रहल अछि।)''[1]

एहि कथनक आधारपर एहि पत्रिकाक अनुशीलन कयला उत्तर देखबामे अबैत अछि जे संसारक विभिन्न देशक विभिन्न भाषाक कवितासँ मैथिलीक पाठककें परिचय करयबाक हेतु प्रयास कयल गेल अछि से प्रशंसनीय अछि। अनुवाद कहाँ धरि सफल भेल अछि तकर परीक्षण तँ तत्तत् भाषाक ज्ञाता नीक जकाँ क' सकैत छथि। परन्तु एहि अनुवाद सबकें एकर उपलब्धि मानल जाय सकैत अछि।

अनूदित कवितामे अंग्रेजी कवि रॉबर्ट ब्राउनिंग केर दू गोट कविता 'पोर्फिरियाज लवर' तथा 'सममबोनम', एक गोट फ्रेंचगीत, दोसर फ्रेंचकवि पीयेर रोवर्दीक एक कविता तथा मोंमिलयेक—'अभूतपूर्व विआह', जापानी कवि मान्सूओ बाशोक एक तथा एक अज्ञात कविक, तेसर अनोनो कोचाचीक एक कविता, चारिम जापानी कवयित्री राजकुमारी दाइ हाकूक एक कविता, चॉसरक एक इतालियन कविता, जर्मन कवि ब्रेख्तक 'एक श्रमिक इतिहास पढ़ैछ, ब्रेजलीय कवि मूरिलोमाण्टीरोमेंडेसक 'यू० एस० एस० आर०, जर्मन कवि रायनर मारियारिल्केक दु गोट कविता 'शिशिर' ओ विवर्ण, ग्रीक कवि लूसियस मैलेरियस मार्शलसक एक कविता, रूसी कवि मायाकोवस्कीक दू टा कविता, चीनी कवि कनफ्यूशियसक—'अहाँ मरब', सेनेगाली कवि डेविडडिओपक अफ्रीका एवं कवीन्द्र रवीन्द्रक दु गोट कविता—आमि,' 'अफ्रिका' प्रकाशित भेल अछि।

एमहर सर्वश्री हरिमोहन झा, कवि चूड़ामणि 'मधुप', यात्रीजी, सुमनजी, विनीतजी, श्रीशजी, गोविन्द बाबू, डॉ० परमेश्वर मिश्र आदिसँ ल' नवीन पीढ़ी धरिक पचासो कविक रचना अछि। विशेषतः प० बुद्धिनाथ झा 'कैरव' पर्यन्तक रचना प्राप्त अछि।

मिथिला

स्मर्त्तव्य जे 'मिथिला' नामक उपयोग मैथिली पत्रकारितामे अनेक बेरि कयल गेल अछि। मासिकक रूपमे सर्वप्रथम बाबू भोला लाल दास, पुनः प० भोलानाथ मिश्र, तदुत्तर साप्ताहिकक रूपमे डॉ० श्री लक्ष्मण झा

१. मैथिली कविता, वर्ष २, अंक १, पृ० ३१।

Scanned by CamScanner

एवं त्रैमासिकक रूपमे बम्बइ प्रवासमे रहनिहार किछु मैथिली भाषी बन्धु लोकनि एहि नामक उपयोग कयलनि ।

१९६९ ई०क दिसम्बरमे बम्बइमे अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन भेल छल । ओहीसँ उत्साहित भ' जनवरी १९७० ई०मे श्री हरिश्चन्द्र झाक सम्पादकत्वमे एकर प्रकाशन आरम्भ भेल, परन्तु उत्साह अधिक दिन रहि नहि सकल, एके अंकक बाद ई बन्द भ' गेल । एकटा संख्यामे वृद्धिक अतिरिक्त एकर कोनो विशेष उपलब्धि नहि अछि ।

आहुति

एहि नामक एक त्रैमासिकक तेसर अंक मात्र हमरा दृष्टिपथ पर आयल जे फरवरी १९७८ ई० मे प्रकाशित अछि । एकर सम्पादक छथि श्री शैलेन्द्र आनन्द तथा प्रकाशक अछि उग्रतारा प्रकाशन, लोहना । एकर उद्देश्यक प्रसङ्ग आवरणक चतुर्थ पृष्ठपर कहल गेल अछि—

"समग्र प्रगतिशील चेतनाक संवाहक 'आहुति' कतिपय वैचारिक ओ आर्थिक संकटसँ लड़ैत अपन तेसर अंकक संग प्रस्तुत अछि ।

वर्त्तमान साहित्य जन चेतनाकेँ उद्वेलित करबामे अपन अधिकारक उचित माँग एवं कर्त्तव्यक प्रति निष्ठा देखेबामे महत्त्वपूर्ण भूमिका रखैछ ।··· काल्पनिक सौन्दर्य-वर्णन किंवा कागजक बन्दूकसँ जड़िआयल व्यवस्थाकेँ तोड़ब ओहिना असम्भव छै जेना अकाशमे धूआँक घर बनाएब । सभ सामयिक रचनाक माध्यमसँ 'आहुति' समाजक विद्रूपतापर प्रहार करै छै । ई प्रहार लक्ष्यविहीन नै "अपितु संधानल होइछ ।"

एहि प्रसङ्ग एतबे कहब पर्याप्त जे 'मैथिली कविता'मे सम्पादक जाहि विलक्षण व्यक्तित्वक उल्लेख कयने छथि ओहि पंक्तिमे एकरो परिगृहीत क' लेल जाय । बिनु अर्थ बोधक शब्द-प्रयोग एकर दोसर वैशिष्ट्य थिक ।

मिथिला मञ्च

फरवरी १९७८मे मैथिल छात्र-संघ काशी द्वारा 'मिथिला मञ्च' नामक एक त्रैमासिक पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल, परन्तु एकरो एक अंक मात्र प्रकाशित भ' सकल । सम्पादकमण्डल बहुत विशाल छल । श्री तन्त्रेश्वर झा प्रबन्ध सम्पादक तथा सर्वश्री रतिनाथ झा, डॉ० सुधाकान्त मिश्र,

Scanned by CamScanner

नाथ झा, अच्युत बुद्धिनाथ मिश्र, शिशिर कुमार ठाकुर, राकेश कुमार झा, सभक नाम सम्पादक मण्डलमे अछि। एकर प्रकाशनसँ एकबेरि काशीक ओ युग अवश्य स्मृतिपथपर आबि जाइछ जहिया ई मैथिली पत्रकारिताक हेतु एक पुण्य स्थल छल। एकरो उपलब्धि एतावन्मात्र बुझबाक थिक।

मैथिली साहित्यपरिषद् पत्रिका

परिषद् पत्रिका १९६२ ई०क मकर सक्रान्तिसँ प्रकाशित होअय लागल। एहि हेतु एक सम्पादकमण्डल गठित भेल जाहिमे छलाह प्रो० रमानाथ झा, प्रो श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन,' प० श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण' तथा प्रो० श्री श्रीकृष्ण मिश्र। एकर कार्यकारी सम्पादकक रूपमे एहि पंक्तिक लेखकके नियुक्त कयल गेलनि। एहिमे सम्पादकीय नहि लिखल गेल। एकर शैली (वर्त्तनी) की हो ताहिपर अनेक विवाद उठल आ अन्ततः जे जेना लिखैत छथि तनिक रचना ताही रूपेँ प्रकाशित हो से निर्णीत भेल।

एहि पत्रिकामे शोध-निबन्ध ओ समीक्षात्मक निबन्ध मात्र प्रकाशित हो से निर्णय लेल गेल छल, परन्तु कविचूड़ामणि श्री 'मधुप' गद्य लिखिते नहि छथि आ हुनक 'राधा विरह' महाकाव्य अर्थाभावक कारणेँ अप्रकाशिते पड़ल छलनि। अतः एकर प्रकाशनक व्ययभार जेँ हेतु परिषद्‌क तत्कालीन अध्यक्ष बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंहजी वहन करबाक स्वीकृति देने छलाह ते हुनकहि अनुरोधेँ धारावाही रूपेँ 'राधा विरह'क प्रकाशन हो सेहो निश्चय कयल गेल।

कार्यकारी सम्पादक होयबाक कारणेँ एहि पंक्तिक लेखक एक प्रकाशकीय वक्तव्य एहिमे देने छलाह जाहिसँ एहि त्रैमासिक पत्रिकाक उद्देश्यपर प्रकाश पड़ैत अछि। ओहि वक्तव्यक आवश्यक अंश उद्धृत कयल जाइत अछि। ओहिमे कहल गेल अछि—

"आधुनिक मैथिली साहित्य द्रुतगतिएँ उन्नतिक पथपर अग्रसर भै रहल अछि। भाषाक विभिन्न अंगके पुष्ट करबाक प्रयास चारूकात भै रहल अछि, किन्तु प्रकाशनक असुविधाक कारणेँ शोधकार्यमे जे प्रगति हैबाक चाही से पूर्ण रूपेँ सन्तोषजनक नहि कहल जा सकैछ। एही दिशामे परिषद द्वारा प्रकाशित ई त्रैमासिक पत्रिका मैथिली साहित्यके अग्रसर करबाक चेष्टामे संलग्न रहत, किन्तु सम्प्रति एक तँ शोधकार्य थोड़ होइछ आ जेहो

किछु होइछ तकर सूचना जिज्ञासु लोकनिकें पूर्ण रूपें नहि प्राप्त होइत छनि।

परिषद समस्त विद्वन्मण्डलीक ध्यान आकृष्ट करैत सबसँ विनम्र निवेदन करैत अछि जे एहि उद्देश्यक पूर्तिमे ओ लोकनि पूर्ण सहायक होथु।
मैथिली साहित्यक निबन्धवला अंग एखनहु परिपुष्ट नहि भै सकल अछि जकर पूर्त्ति एहि पत्रिका द्वारा करबाक ई प्रथम चेष्टा थीक। एहि पत्रिकाक जे स्वरूप अभीष्ट अछि से सम्प्रति नहि भै सकल अछि। भविष्यमे यदि मैथिलीक शीर्षस्थ विद्वान लोकनिक एहिना सहयोग प्राप्त भेल तँ निश्चय ई पूर्ण सन्तोषजनक रूपमे प्रकाशित भै मैथिलीक भंडार कें भरबामे सक्षम भै सकत।..........''

पूर्वहि कहल गेल अछि जे 'राधा विरह' महाकाव्य धारावाही रूपें प्रकाशित करबाक निश्चय भेल छल। तदतिरिक्त प्रो० श्रीतन्त्रनाथ झाक ''मिथिला भाषा नाटकक परम्परा', श्री कांचीनाथ झा 'किरण'क 'मैथिलीक शब्द समाज', प० जीवनाथ झा 'विद्याभूषण'क 'अलंकार वाद', ज्यो० बलदेव मिश्रक 'विब शब्दक उपयोग', प० श्री गोविन्द झाक 'छन्दक साक्ष्य पर विद्यापति गीतक पाठशुद्धि', प्रो० श्री जयधारी सिंहक 'चर्यापदक समस्या', डॉ० श्री जयमन्त मिश्रक 'रसक आनन्द रूपता', प्रो० श्री हरिहर झाक 'व्यक्तिवाद थिक व्याधि', प्रो० श्री त्रिलोकनाथ झाक 'समालोचक केहन हो ?' तथा एहि पंक्तिक लेखकक 'मैथिली साहित्य पर रामायणक प्रभाव' शीर्षक निबन्ध प्रथम अंक मे प्रकाशित भेल। जें परिषद पत्रिका छल तें 'मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना' शीर्षक लेख श्री शशिनाथ चौधरी सँ लिखबाओल गेल छल।

परन्तु परिषदक भीतर किछु एहन सैद्धान्तिक ओ वैयक्तिक मतभेद उत्पन्न भेल जाहि कारणें ई अंक प्रेसक गर्भहिमे रहि गेल। राज प्रेसमे छपल छल। राज प्रैस जखन टूटय लागल तँ एकर उपादेयता देखि किछु मैथिली भक्त प्राध्यापक प्रेसक बिल भुगतान क' फर्मा उठबाय लेलनि आ छात्रक हेतु परम उपयोगी रहबाक कारणें खपौलनि जाहि सँ ई अंक मैथिलीक अध्येतालोकनिक समक्ष आबि सकल, अन्यथा ई रद्दी कागतक संग बाजार चल गेल रहैत।

ओना तँ एहिमे प्रकाशित कतिपय निबन्ध अपन विशेष महत्वक अछिए प० श्री गोविन्द झाक काज बड़ श्रमसँ कयल छनि। एक कण्ठसँ दोसर कण्ठ

Scanned by CamScanner

अबैत-अबैत तथा एक लिपिक दोसरा द्वारा प्रतिलिपि होइत-होइत विद्या-पतिक पद सब मे अनेक विकृति अथवा भ्रम होइत गेल अछि। एकर परिष्कारक हेतु ओ जाहि प्रक्रिया कें अपनौने छथि से बहुत स्तुत्य अछि। एहीटा प्रक्रिया सँ पाठशुद्धिक काज भ' सकैत अछि। श्री गोविन्द बाबू एहिना यदि एहि काज कें बढ़ाबथि तँ मैथिली साहित्यक महान उपकार होयत।+

अभियान

१९६३ ई० मे पटनास्थ मैथिली प्रेमी लोकनिक उत्साह एवं प्रेरणासँ सांस्कृतिक पुस्तक-मालाक रूपमे 'अभियान' नामक संकलन प्रकाशित भेल। एकर सम्पादक प्रो० श्री आनन्द मिश्र, सहायक सम्पादक श्री प्रभास कुमार चौधरी तथा प्रबन्ध सम्पादक श्री गौरीनन्दन सिंह छलाह। मिथिला सांस्कृतिक परिषद एकर प्रकाशक छल।

डॉ० 'श्रीश' एहि प्रसङ्ग लिखने छथि—"एहि ठाम पटना सँ प्रकाशित प्रो० श्री आनन्द मिश्र द्वारा सम्पादित 'अभियान' मासिकक सेहो उल्लेख कएल जाय सकैत अछि, जकर दुइए अंक प्रकाशित भए सकल। किन्तु पृ० संख्या, रूप-सज्जा, लेखादि सामग्री आदि सब दृष्टिएँ ई पत्र उत्कृष्ट कोटिक छल। एकरा नव-पुरान प्रतिभाशाली ओ प्रतिष्ठित मैथिली साहित्यकार लोकनिक सहयोग प्राप्त छलैक।"[1]

परन्तु एहिमे ने कतहु वर्ष अछि ने मास आ ने कतहु प्रकाशनक अवधिएक सूचना अछि।। एकर प्रकाशनक योजना बनला उत्तर एक पत्र हमरहु प्राप्त भेल छल ओ एहि हेतु रचना पठौनहु छलिऐक। ओहि रचनाक डायरी सँ तथा अंक प्राप्तिक बाद हस्ताक्षरक संग लिखित तिथि सँ वर्षक अनुमान भेल अछि। ई मासिक तँ कथमपि नहि छल, तकर कारण जे एक अंकक मूल्य एक टाका छैक तथा वार्षिक मूल्य चारि टाका जे कथमपि संभव नहि भ' सकैत छैक। दोसर 'अभियान'क पाठकसँ' एक विज्ञप्तिमे कहल गेल अछि—

"परिषदद्क कर्मठ सदस्य कें 'अभियान'क प्रथम पुष्प पठाओल

---

१. मै सा० इतिहास, पृ० १२९।

+ ज्ञातव्य जे श्री गोविन्द झाक सम्पादकत्वमे अकादमीसँ विद्यापति-गीतावली प्रकाशित भ' चुकल अछि। —प्रकाशक।

जाइछ । हुनका लोकनि सँ विशेष अनुरोध जे आओर तीन अंकक तीन टाका मनिआर्डर द्वारा पठाए अभियानक प्रकाशन मे योग देथु ।''[1]

एहिसँ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे अवधिक उल्लेख बिनु कयनहु वर्ष मे चारि पुष्प प्रकाशित करबाक अवधारणा क' लेल गेल छल ! अत: एकरा त्रैमासिके कहब युक्तिसंगत अछि । अस्तु ।

एहि पत्रिकाक उद्देश्य ओ नीति पर प्रकाश दैत सम्पादकीय मे कहल गेल अछि—

''............एखन सभ क्षेत्र मे अभियानक आवश्यकता छैक । बिना ओकर प्रगतिक आशा कम । तें 'अभियान' मैथिलीक क्षेत्र मे एक नवीन उद्देश्य सँ आएल अछि । एकर विचार संकीर्ण नहि प्रत्युत उदार छैक । ई कोनो 'गोल' 'गोलैसि'क चपेटमे नहि अछि, ओना स्वतन्त्र भारत मे बजनिहार कें के रोकि सकैत अछि ?

मैथिलीमे एखन सभसँ विवादक विषय अछि 'शैली' । भिन्न-भिन्न लेखक लोकनि भिन्न-भिन्न प्रकारें लिखैत छथि । बहु (तो) लोकक कथन छैन्हि जे एहिमे एक रूपता होएब आवश्यक, किन्तु हम एहि मतक पक्षमे नहि । जे भाषा जीवित अछि, जाहिमे नित्य किछु किछु रचना भए रहल छैक, तकरा शैलीक बन्धन देब ओहि भाषा एवं साहित्यक कंठ मोकब होएत । जीवित भाषा, प्रगतिलील भाषा प्रतिदिन किछु ने किछु नवीन विषय, नवीन शैली लए पाठकक समक्ष उपस्थित होइछ । ओकर तिरस्कार करब भाषा एवं साहित्यक प्रति अन्याय होएत ।......तें 'अभियान' शैलीक प्रति अत्यन्त उदार भावना रखैत अछि । जे लेखक जाहि प्रकारें लिखैत छथि ओहि प्रकारें छापबाक सिद्धान्त 'अभियान' रखैत अछि ।......

हँ, किछु, अभियानक रचनाक विषयमे—हमरा लोकनि 'अभियान'मे साधारणत: गद्यकें प्रमुखता देबैक, जकरा अन्तर्गत निबन्ध, नाटक, कथा आदि अबैछ, संगहि दु-एकटा कविताक समावेश सेहो एहि मे रहत ।''

एतावता ई सिद्ध होइत अछि जे मैथिली साहित्यमे गद्यक अल्पताक अभाव चारू दिस अनुभव कयल जाइत छल । दरभङ्गासँ प्रकाशित 'इजोत' एहि दिशामे प्रयत्नशील भेल छल, परिषद् पत्रिका सेहो गद्य कें प्रमुखता देने छल, 'अभियान' सेहो ओही पथक अनुसरण कयलक ।

१. अभियान, प्रथम पुष्प, पृ० ७५

Scanned by CamScanner

एकर कलेवर बेस पुष्ट छलैक—डिमाइ साइजमे प्रथम पुष्प १२२ पृष्ठक तथा दोसर पुष्प १२६ पृष्ठक। आवरण सेहो आकर्षक, बहुरंगी छपाइ, विषयवस्तु सेहो रोचक ओ उपादेय सब, तथापि एकरो दू पुष्प मात्र विकसित भ' सकलैक।

प्रथम पुष्पमे मात्र दू गोट कविता—प्रथम एहि पंक्तिक लेखकक तथा दोसर नव उज्ज्वल प्रतिभा-सम्पन्न हरिनाथक, परन्तु दोसर पुष्पमे हरिनाथक मृत्यु-सूचना ओ हुनका प्रति शोकोच्छ्वास सम्पादक सँ ल' पाठक धरिकेँ मर्मान्तक पीड़ादायक भेल। दोसर पुष्पमे तीन गोट कविता छपल—प्रो० श्री तन्त्रनाथ झाक तीक्ष्ण व्यंग्य मूलक 'भीड़परक पक्षी' दोसर श्री यात्रीजीक 'स्वर्णमृग' आ तेसर श्री मधुकर गंगाधरक 'प्रतीक्षा'। दूनू अङ्क मिलाय एहिमे चारि गोट एकांकी श्री मायानन्द मिश्रक 'इतिहासक विसरल' रेडियो एकांकी, प्रो० श्री हरिमोहन झाक 'मंडन मिश्र,' श्री गोविन्द झाक 'मिथिलाक प्रतिनिधि' तथा श्री जटायुक 'पत्नीक शिकायत', श्री अयोध्या नाथ सिंहक 'अपन गाँव' दू अङ्कमे समाप्त भेल छनि। एहिमे श्री हरिमोहन बाबूक मंडन मिश्र तथा श्री गोविन्द बाबूक 'मिथिलाक प्रतिनिधि' बहुचर्चित एकांकी अछि।

दूनू पुष्प मिलाय १२ गोट कथा अछि—बाबू लक्ष्मीपति सिंहक 'अभियान', श्री मधुकर गंगाधरक 'नागफाँस,' श्री सुधांशु शेखर चौधरीक 'कोनो आपत्ति नहि', श्री हीरानन्द शास्त्रीक 'समाजवादी साहित्यक रचना' डॉ० श्री जगदीश चन्द्र झाक 'जोजे फाइन—नेपोलियनक हृदय केर रानी' तथा श्री भक्तिनाथक 'साक्षी', दोसर पुष्पमे श्री मणिपद्मक 'तूलिका लऽ कऽ' श्री राधा कृष्ण प्रसादक 'फूल आ इन्द्रधनुष' श्री माढ़व्यक 'उच्चका वाद (?) प्रो० श्री रामदेव झाक 'मनुक सन्तान', श्री प्रभास कुमार चौधरीक 'टूटल कलम : लभरल आखर' तथा श्री हंसराज द्वारा अनूदित गोर्कीक 'शाल्टमार्श'।

एहिना दुनू पुष्पमे कुल तेरह गोट निबन्ध अछि—आचार्य रमानाथ झाक 'मिथिलाक उत्कर्ष', आचार्य श्री परमानन्दन शास्त्रीक 'महाकवि कालिदास आओर मिथिला', प्रो० श्री शैलेन्द्र मोहन झाक 'पथ हेरथि राधा', प्रो० श्री अमरेश पाठकक 'कथा साहित्यक भूमिका', प्रो० श्री वासुकीनाथ झाक 'नाटककार उमापति', श्री ताराकान्त प्रकाशक 'बातसँ नहि, काजसँ' पहिल पुष्पमे तथा दोसर पुष्पमे—स्व० डाॅ० अमरनाथ झाक 'युवा लोकनिसँ दू

शब्द', श्री गोविन्द झाक 'विद्यापतिक गीतक पाठोद्धार', डॉ० राजकुमार मिश्रक 'मिथिला ओ नेपालमे साँस्कृतिक सम्पर्क,' प्रो० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क 'मैथिलीक आधुनिक मौलिक नाट्य साहित्य,' प्रो० श्री लेखनाथ मिश्रक महाकवि गोविन्द दास केर पदावलीमे अभिसार वर्णन', श्री शशि नाथ चौधरीक 'मैथिली बाल-साहित्य' तथा श्री राजेन्द्र चौधरीक 'समाजे थीक'।

कहबाक प्रयोजन नहि जे मात्र दू पुष्प प्रकाशित भ' 'अभियान' मैथिली साहित्यक भण्डारक पूर्ण श्रीवृद्धि कयलक। ओना तँ बहुतो रचना एहिमे उपादेय अछि, तथापि एक विषय दिस विशेष ध्यान आकर्षित करब उपयोगी प्रतीत भेल। स्व० डॉ० अमरनाथ झाक विचार वर्तमान परिस्थितिमे विशेष रूपें मननीय अछि। ओ लिखने छथि—

"विश्वास एवं विनय एहि दुहूक तीव्रतासँ विलोप भए रहल छैक।........ बहुधा युवा लोकनिक मनोवृत्तिकें दूषित कएल गेल अछि। अतिरंजित अभिनन्दनसँ बहुधा हुनका लोकनिकें विश्वास कराओल गेल अछि जे मात्र हुनके लोकनिक गणना अछि, जे मात्र हुनके लोकनि ज्ञान आओर बुद्धिक भण्डार थिकाह, जे हुनका लोकनिक अतिरिक्त एहि विश्वकें आओर क्यो विकसित नहि कए सकैत अछि। प्रशंसा एवं मिथ्या स्तुतिक ई तीव्र सांघातिक मदिरा हुनक सन्तुलनकेँ स्वभावतः नष्ट कए दैत छन्हि। हुनका लोकनि अपनासँ ज्येष्ठकें भारस्वरूप एवं व्यर्थ वस्तु बुझए लगैत छथि, जनिका अपन अस्तित्वक समर्थनो करब उचित नहि। हुनका लोकनिकें बूझि पड़ैत छन्हि जे मात्र युवे व्यक्ति कोनो अस्तित्व रखैछ। युवाक अस्तित्व छैक अवश्य। किन्तु युवक लोकनिकें ई मिथ्या धारणा देब जे हुनका लोकनि देशक अदृष्टकें निर्देश देबामे पूर्णतया समर्थ भए गेलाह अछि, समाजोपकारी नहि होएत। ओहि दिशामे विनाश छैक।"[1]

परन्तु समाज एही पथ पर अग्रसर भेल जा रहल अछि। प्रमाण देबाक प्रयोजन नहि, ई प्रत्यक्षे अछि।

---

१. अभियान, दोसर पुष्प, पृ० १।

Scanned by CamScanner

मिथिला भारती (त्रैमासिक)

१९६९ ई०सँ मैथिली साहित्य संस्थानक तत्वाधानमे 'मिथिला-भारती' नामसँ एक विशुद्ध शोधपत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। एहि प्रकारक पत्रिकाक प्रकाशनक आवश्यकताक अनुभव बहुतो दिनसँ कयल जाइत छल, छिट फुट प्रयास सेहो होइत आबि रहल छल जे सम्पूर्णतः प्रतिफलित भेल एहिमे आबि क'। आकार ओ प्रकार दूनूमे ई अपन गरिमाकेँ बनौने रहल। परन्तु एतेक होइतो दोसर अंकमे आचार्य रमानाथ झा जे आशङ्का व्यक्त कयने छलाह—"मिथिला-भारतीक प्रथम अंक पाबि बड़ प्रसन्न भेलहुँ। सौंसे देखि गेलहुँ। तेहन पत्र ई नहि छैक जे सरसराएकेँ पढ़ि जाएब; एकरा पढ़बामे अवकाश, तत्परता ओ समयक अपेक्षा छैक परन्तु ई कहबामे कनेको संकोच नहि होइत अछि जे मैथिलीमे एहि उच्च स्तरक ई प्रथमे पत्र थिक। प्रबन्ध सम्पादक ओ प्रधान सम्पादककेँ भूरि-भूरि धन्यवाद दैत छिऐन्हि, धन्यवादक पात्र तँ एकर प्रत्येक सदस्य थिकाह। कालिदास कहने छथि—'स्नेह : पापशङ्की'। हमरहु हृदयकेँ एकेटा पाप सशंक कएने अछि जे एहन विलक्षण ई पत्र चलि सकत की नहि अथवा चलबो करत तँ सब अंक एकर एहने उच्चस्तरीय भए सकत की नहि।"[1] से जतेक दिन प्रकाशित भेल ततेक दिन स्तर तँ बना क' रखने रहल, परन्तु हुनक प्रथम आशङ्का एकदम सत्य सिद्ध भेल, मात्र दू वर्ष चलि ई बन्द भ' गेल। एहि दू वर्षमे ई मात्र तीन खण्डमे प्रकाशित भ' सकल—प्रथम वर्षक १-२ प्रथम खण्ड, ३-४ दोसर खण्ड तथा दोसर वर्षक १—४ एक खण्डमे। दोसर वर्षक कुमार गङ्गानन्द सिंह स्मारक अङ्कक रूपमे प्रकाशित भेल अछि, परन्तु डॉ० श्रीश अपना इतिहासमे म. म. डॉ० उमेश मिश्र स्मृति अंकक[2] उल्लेख कयने छथि जे हमरा दृष्टिपथ पर नहि आयल अछि। यदि उक्त अंक सेहो प्रकाशित भेल हो तखन ओ तेसर वर्षक भ'.सकैत अछि।

एकर नामकरणमे एकटा विलक्षण संयोग अछि। स्व० बाबू भोलालाल दास 'मिथिला' तथा 'भारती' नामसँ क्रमशः दू गोट मासिक पत्र प्रकाशित क' चुकल छलाह, ओहि दूनू नामकेँ संयुक्त क' एकर नाम 'मिथिला-भारती भ' गेल से कोनो बिचारि क' नहि, प्रत्युत संयोगवशात् सेहो मानय पड़त।

आब एकर आविर्भाव एवं ध्येयक प्रसङ्ग जे विचार व्यक्त कयल गेल अछि तकरा उद्धृत करब समुचित प्रतीत होइछ। सर्वप्रथम तँ एकरा

१. पृ० २२४। २. पृ० १३१।

Scanned by CamScanner

हेतु एक विशाल सम्पादक-मण्डल बनल छल। ओहिमे मुख्य सम्पादक डॉ० श्री जगदीश चन्द्र झा, प्रबन्ध-सम्पादक प० राजेश्वर झा तथा प्रथम वर्षक सम्पादक-मण्डलमे सर्वश्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी, आचार्य परमानन्दन शास्त्री, कुलानन्द नन्दन, सुरेन्द्र मिश्र, प्रो० हेतुकर झा, डॉ० लेखनाथ मिश्र ओ डॉ० इन्द्रकान्त झाक नाम छनि तथा दोसर वर्षक अङ्कमे एहि मण्डलमे सर्व श्री डॉ० रामदेव झा, डॉ० लेखनाथ मिश्र, हंसराज, गोपीरमण चौधरी, प्रो० जगदीश यादव, जीतेन्द्र मिश्र 'जीवन', हेतुकर झा, डॉ० इन्द्रकान्त झा, तथा डा० प्रेमशङ्कर सिंहक नाम छनि। एतदतिरिक्त एकटा परामर्शदात्री समिति सेहो अछि जाहिमे डा० सुधाकर झा शास्त्री, श्री सुरेन्द्र झा, 'सुमन', सुधांशु शेखर चौधरी, आचार्य परमानन्दन शास्त्री, प्रो० रमानाथ झा, प्रो० आनन्द मिश्र, प्रो० हितनारायण झा, तथा श्री कुलानन्द नन्दन छथि।

मुख्य सम्पादक जे सम्पादकीय लिखने छथि से निम्नांकित अछि—

'गत एक वर्षसँ पटनामे मैथिलीक 'स्टैन्डर्ड' पत्रिकाक प्रकाशनक प्रयास भए रहल छल। ई बात सर्वविदित अछि जे कोनो भाषाक समुचित विकास मौलिक रचने द्वारा भए सकैत अछि आ एहि हेतु एक नीक पत्रिकाक बड़ आवश्यकता अछि। मुदा कइएक कारणसँ गत मइ माससँ पूर्व एहि दिशामे कोनो ठोस काज नहि भए सकल।

गत १७ मइकेँ श्री लक्ष्मीपति सिंहक अध्यक्षतामे मैथिलीभाषी प्राध्यापक, पत्रकार, साहित्यकार आदि लोकनिक एक बैसक भेल, जाहि मे 'मैथिली साहित्य संस्थान'क स्थापना भेल आ 'मिथिला-भारती' नामक एक त्रैमासिक शोध पत्रिका प्रकाशित करबाक निश्चय भेल आ आइ ई पत्रिका लेखकलोकनिक सहयोग ओ प्रबन्ध-सम्पादकक तत्परतासँ प्रकाशित भए सकल अछि।

आइ सँ पन्द्रह वर्ष पूर्व स्वनामधन्य डाक्टर अमरनाथ झा 'मैथिली कुसुमाञ्जलि'क प्राक्कथनमे लिखने छलाह—''मैथिली भाषा बहुत प्राचीन थीक। एकरा बजनिहारक संख्या बहुत। एकर साहित्य समृद्ध। एकर लिपि सुन्दर। परन्तु बहुत दिन धरि ई भाषा उपेक्षित छल। आब ई फेरि भारतीय भाषासमूहमे प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कएलक अछि। हम सब चाहैत छी जे हमर मातृभाषा उन्नति करए। हमर इच्छा जे एहिमे उच्च कोटिक साहित्यक रचना हो। एम्हर दस-पन्द्रह वर्षमे जे मैथिली साहित्यक

प्रगति हम देखलहुँ अछि ताहिसँ विश्वास होइत अछि जे थोड़ेक दिनमे उत्तमोत्तम ग्रन्थक प्रकाशन होएत।..........मैथिलीमे केवल शृंगार ओ भक्तिक पदेटा नहि रचल जाइत छैक—साहित्यक प्रत्येक अंगमे उत्कृष्ट रचना एहिमे भए सकैत अछि।" 'मिथिला-भारती' परिवार एहि उद्गार केँ स्मरण करैत ई संकल्प करैत अछि जे मैथिली भाषाक बहुमुखी विकासक प्रयास एकर मुख्य ध्येय रहतेक।

....

ओना तँ साहित्य अकादमी द्वारा मैथिलीकेँ मान्यता भेटि गेल छैक आ दु गोट मैथिलीक लेखक पुरस्कृतो कएल गेल छथि। एतबेक नहि, कइएक विश्वविद्यालयमे एम्० ए० तकक पढ़ाइ एहि भाषामे होइत अछि तथा शोध-प्रबन्ध सेहो तैयार भए रहल अछि। मुदा एखनहुँ शोध-कार्य अथवा लेख विद्यापति, चन्दा झा, उमापति आदिसँ दूर नहि जाए सकल अछि। आवश्यकता एहि बातक अछि जे मिथिलांचलक इतिहासक, संस्कृति, अर्थ-व्यवस्था, रहन-सहन आदि पर काज हो जाहिसँ लोक ई बूझि सकए जे मैथिली साहित्यकार मात्र रजनी सजनी बाला साहित्य नहि रचि गम्भीर रचना सेहो करैत छथि।"

एहि प्रकारेँ मैथिलीक गरिमाक प्रतिपादनपूर्वक गम्भीर रचनाक दिशा-संकेत करैत सम्पादक प्रस्तुत अंकमे उपस्थापित रचना सभक प्रसङ्ग प्रकाश दैत आगाँ लिखने छथि—

"प्रस्तुत 'मिथिला-भारती'क प्रथम अंकमे विद्यापतिपर सेहो दू गोट शोध-रचना अछि, मुदा ओहिसँ बेसी मिथिलाक इतिहास ओ संस्कृति पर सामग्री अछि। दक्षिण भागलपुर, पूर्णिया, सहरसा आदि अंचलक झाँकी सेहो प्रस्तुत कयल गेल अछि। मैथिली लिपिक विकास, कन्यादानक समस्या आदि पर ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक संग प्रकाश देल गेल अछि। यत्र तत्र चित्र आदिक सेहो सहायता लेल गेल अछि।"

'मिथिला-भारती'क मुखपृष्ठ पर एक अरिपनक चित्र अछि, तकर विश्लेषण करैत ओकर दार्शनिक पक्ष पर प्रकाश दैत आगाँ कहल गेल अछि—

"मुख्य आवरण पर जे प्रतीक चेन्ह अछि ओकर एक दार्शनिक पक्ष छैक। ऊपरमे मन्दिरक त्रिशूल छैक जे तीन पातक दूर्वादलक चित्र थीक

जे ब्रह्मा, विष्णु एवं महेशक त्रिशक्तिक सत्वगुण, रजोगुण तथा तमोगुण अथवा जगतक सृजन, पालन ओ संहारक द्योतक थीक। मन्दिरक गुम्बजक जे सुन्दर, सुकोमल एवं सुगंधित तीन पातक कमलक चित्र छिक (?) ओ प्रातः मध्याह्न एवं संध्या कालक प्रतीक थीक। श्वेत आलेपनक तीन वृत्ताकार जे क्षेत्र अछि ओ सृष्टि धारण कएनिहार तीनू भुवनक रूप गर्भ-मन्दिरक स्थान थीक। मन्दिरक चारू दिसिक बिन्दु मन्दिर परक दीपक प्रतिनिधित्व करैछ तथा मन्दिरक मध्यक सृष्टिक आदि शक्ति रूप जे रक्तविन्दु अछि से भगवती गौरीक यन्त्र थीक जे मानवक समग्र कामनाक पूर्त्ति करैछ।"

ध्यातव्य जे एही 'मिथिला-भारती'कें पुनरुज्जीवित कयल गेल छल मैथिली अकादमी, पटना द्वारा द्वैमासिकक रूपमे, जकर विवेचन कयल जाय चुकल अछि। एहू नवीन अङ्क सबमे भिन्न-भिन्न अङ्कमे भिन्न-भिन्न अरिपनक चित्र देल गेल अछि, परन्तु एहि सभक कोनो दार्शनिक आधारक ने विश्लेषण कयल गेल अछि ने कोनो परिचय देल गेल अछि, ओना मिथिलाक लोकजीवनमे विभिन्न पर्व ओ विभिन्न संस्कारक अवसर पर भिन्न-भिन्न प्रकारक अरिपन देबाक विधान अछि।

स्मर्त्तव्य जे देवोत्थान एकादशी, चौठ चन्द्र एवं सीर पञ्चमीक अवसरपर ताहि दिनमे अरिपन देबाक एक प्रकारक प्रतियोगिता होइत छल। एक आङनक दाइ-माइ दोसर-दोसर आङनक अरिपनक पर्यवेक्षण करय जाइत छलीह आ ओहिसँ ओहि आङनक स्त्रीगणक लूरि, व्युत्पन्नताक अनुमान कयल जाइत छल। अस्तु।

'मिथिला-भारती'मे प्रकाशित रचना सबमे अधिकतर परम उपादेय तथा मिथिलाक अतीतपर प्रकाश तँ दीतहि अछि, भविष्यहुँक दिस बहुत किछु संकेत करैत अछि जाहिसँ अनुसन्धित्सुलोकनि बहुत प्रकाश पाबि सकैत छथि।

एहिमे प्रकाशित रचनामे बाबू लक्ष्मीपति सिंहक 'इतिहासक अन्वेषण' ओ 'यन्त्रमयी मिथिला', श्री सुशील कुमार झाक 'अठारहम शताब्दीक दुइ गोट अपूर्व निर्णय पत्र,' श्री जटाशंकर झाक 'उनैसम शताब्दीक मिथिलामे कन्यादानक समस्या' ओ 'मिथिलाक प्राचीन परीक्षा-प्रणाली', डॉ० श्री जगदीशचन्द्र झाक 'चित्रपति उपाध्याय तथा ईस्ट इंडिया कम्पनी कालक

Scanned by CamScanner

न्याय व्यवस्था,' एही प्रसङ्ग उठाओल आचार्य रमानाथ झाक 'जिज्ञासा,' प० राजेश्वर झाक 'मिथिलाक्षरक उद्‌भव ओ विकास', जे तीनू खण्डमे समाप्त भेल अछि आ पछाति पुस्तकाकार भ' चुकल अछि, डॉ० श्री इन्द्र कान्त झाक 'विद्यापतिकालीन मिथिलामे कृषि-कार्य,' डॉ० श्री शैलेन्द्र मोहन झाक 'भनइ विद्यापतित्यादि,' 'विद्यापतिक शिवविषयक दूटा पद' ओ 'बैजल देव,' श्री चित्तरंजन प्रसाद सिन्हाक 'सहरसासँ पटना संग्रहालयकें प्राप्त चारिगोट दुर्लभ प्राचीन मूर्त्ति' तथा 'मिथिला क्षेत्रसँ प्राप्त गणेशक प्रतिमा,' डॉ० श्री अभयकान्त चौधरीक 'गंगाक दक्षिणक मैथिल क्षेत्र,' प्रो० श्री हेतुकर झा, 'मिथिलामे वृक्षपूजा,' श्री दयाशंकर उपाध्यायक 'मिथिलामे सीकीक उपादानक निर्माणक परम्परा,' ओ 'मिथिलाक लोकचित्र कला', डॉ० श्री रामदेव झाक 'सुकवि सदानन्दक पाँच गोट गीत', तथा 'परमहंस विष्णुपुरी ओ हुनक शिवगीत,' डॉ० श्री सीताराम रायक 'कोन बाटे राम अएलाह,' आचार्य श्री परमानन्दन शास्त्रीक 'सम्बन्ध-विमर्श,' श्री जय-नारायण ठाकुरक 'मिथिला एवं तिब्बतक वाणिज्य-व्यापार,' श्री जयगोविन्द मिश्रक 'संतशिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोसाँइक बारह गोट दुर्लभ पद,' डॉ० श्री लेखनाथ मिश्रक 'म. म. वंशमणि झा', डॉ० श्री अमरनाथ झाक 'कवीश्वर चन्दा झाक रामायणक किछु अप्रकाशित पद्य,' श्री भगवानजी चौधरीक 'मध्यकालीन मिथिलाक ऐतिहासिक महत्व' आदि अपना-अपनामे महत्त्व-पूर्ण निबन्ध सब अछि। एतदतिरिक्त 'कुमार गङ्गानन्द सिंहक व्यक्तित्व ओ कृतित्व' तथा 'बनैली राजवंशक इतिहास' सेहो उपादेय अछि। प्रो० श्री राधाकृष्ण चौधरी जे 'प्राचीन भारतीय इतिहासमे काल-निर्धारणक समस्या' उठौने छथि सेहो इतिहासक अध्येतालोकनिक हेतु चिन्तनीय अछि। सबटा मिलाजुला क' 'मिथिला-भारती' मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे अपन स्वतन्त्र ओ विशिष्ट स्थान रखैत अछि।

मिथिला भूमि

१९६९ ई०क नवंबर माससँ 'मिथिला भूमि' नामक एक त्रैमासिक पत्रिका जमशेदपुरसँ प्रकाशित होअय लागल जकर प्रधान सम्पादक छलाह श्री प्रभाकर मिश्र तथा प्रबन्ध सम्पादक दिनराज। अखिल भारतीय मैथिल ब्राह्मण महासभाक उत्तर प्रदेशक शाखा द्वारा ई प्रकाशन आरम्भ कयल

Scanned by CamScanner

गेल। एकर प्रथम अंकक सम्पादकीयसँ एकर उद्देश्य, नीति ओ भाषाक स्वरूपक परिचय भेटि जाइत अछि। सम्पादक लिखने छथि—

"मैथिलीकेँ आवश्यकता छैक लव कुश केर, जे अन्यायी रामसँ बदला ल' सकए" श्रीमती निर्मला झाक एहि पाँतीमे जे दर्दक टीस टहकैत अछि ओ वास्तविक रूपमे मैथिलीक आर्त्तनाद छैक। आइ वस्तुतः मैथिलीकेँ पुनः एक बेर "विद्यापति"क डमरू चाहिऐक ओ उगनाक "त्रिशूल" चाहिऐक।

मैथिलीकेँ की नहि छैक ! मिथिलाकेँ कोन वस्तुक कमी छैक ! मैथिल ककरासँ कम अछि ?

मिथिला-मैथिली-मैथिल सब बातमे पूर्ण अछि। तखन एहन एकर अधोगति किएक ? हमरामे कोनो बातक कमी नहि अछि, हम पूर्ण छी। "मिथिला भूमि" अपन विराट स्वरूपकेँ लघु आवरणमे पुनः विश्वमंच पर प्रस्तुत करत जे देख हम की छी।"

अन्यायी राम (?) सँ बदला लेबाक हेतु लवकुशकेँ प्रशिक्षित करबाक उद्देश्य जकर होइक ओकर केहन संस्कार होयतैक से स्वयं विचारणीय थिक। भाषाक सौष्ठव (!) देखबाक हेतु निम्नांकित अंश पठनीय अछि—

"प्रिय पाठक गण !

अपनेक कोमल करमे हजाड़ कोश दूर मैनपुरीसँ सनेसर चढ़जेसमे "मिथिला भूमि" पठा रहल छी आर आशा अछि अपनेक आगेवा कापू स उपराग-राग-बिरागक भरनपथिया पठा देब अति आकुलतासँ अपनेक बात तकैत रहब।"............

जौं अपने लोकनिक—हृयोग भेटल "मिथिला भूमि" शिघ्रादि त्रैमासिक सँ मासिकमे परिवर्त्तित भए जाएत।"..........

दुःख देनहार अहीक—सम्पादक"

एकर बाद दोसर ओ तेसर मार्च—जून १९७० क अङ्क अ० भा० मैथिल ब्राह्मण महासभाक मैनपुरी महाधिवेशनाङ्क रूपमे छपल अछि, जाहिमे महाधिवेशनक समस्त विवरण सचित्र छापल गेल अछि। भाषाक दृष्टिएँ भ्रष्टताक प्रचुर उदाहरण एहि अंकमे उपलब्ध अछि। बादमे चलि त्रैमासिकक रूपमे एकर प्रकाशन बन्द भ' गेल। किछु दिनक बाद

Scanned by CamScanner

१९७३ सँ श्री सोमदेवक सम्पादकत्वमे साप्ताहिक रूपमे एकर प्रकाशन होअय लागल जे घोर अनियमित रूपमे एखन धरि भ' रहल अछि।

मैथिलीमे जाहि पीत पत्रकारिताक बीज-वपन पहिने भेल छल, ओहि परम्पराकें आगाँ बढ़यबाक हेतु जे पत्र सब अग्रसर भेल ताहिमे एकरो नाम प्रमुखतासँ लेल जा सकैत अछि। एहि कथनक पुष्टिमे मात्र दू टा उदाहरण पर्याप्त होयत। गद्यमे एक उदाहरण—

"रा०देवजी—"सोमदेवजी गारि देबाक लेल पत्रिका बहार करैत छथि"।

संघीजी—"मिथिला टाइम्स कम्यूनिस्ट पत्र अछि। लऽ जाउ।"

पण्डाजी—"दीपक जी अगिलगौन छथि। मातृवाणी? छीया छीया।"

मैथिली विभागाध्यक्षजी— 'अग्निपत्र..........गाहुर, शिशा,........ ई सभटा पत्र मैथिली मे बहार होइत अछि? ....औ ई सभ कोनो पत्रिका सन पत्रिका अछि, जकरा लेल हम चन्दा पठावी? हमरा कोनो धारतब अछि? जाउ आन विभाग मे........हम सब तऽ अपने लेखक छी।"

महंथजी—"राम राम, सीताराम। की नाम लेल, दिनराज शांडिल्यक टटका? जाउ।"

एहि पाँच गोटाक गप्पसँ निराश भै क्रोधमे आन्हर मैथिली प्रचारक बाजि उठल—"तखन बाबू अपने लोकनिक....... मे दम अछि तऽ बहार करू ने एकटा टिटहीओ। बिख कयए प..........छी?"

क्षमा याचना, पाठक वर्ग जौं अपनहुँ लोकनि केर समक्ष क्यो एहन मैथिलीक प्रति उपेक्षा देखयने रहिते तऽ अपने अवस्स पनही सँ ओकर मरम्मति कयने रहितहुँ।"[1]

ई तँ भेल गद्यक उदाहरण। पद्यक एक उदाहरण—

"धन्य छी अपने हे प्रोफेसर उपन्यासकार!
अपने लगाओल मैथिलीमे विराड़
अपने छी मैथिलीक खरहोड़िक एकठाह हुराड़
........अपनेक बाद आब के सार मैथिली मे लिखत उपन्यास?"[2]

---

१. मिथिला भूमि, वर्ष २, अंक-३५-४२, अक्तवर-नवंबर १९७४, पृ०.३।
२. तत्रैव, पृ०४।

Scanned by CamScanner

उपर्युक्त उद्धरण सब मे जाहि प्रकारें शालीनताक परित्याग ओ अवाच्य शब्दक प्रयोग भेल अछि से एकर चरित्र ओ प्रवृत्तिकें पूर्ण रूपें उजागर करैत अछि।

जाहि अंकसँ ई उद्धरण देल गेल अछि से आठ अंकक संयुक्ताङ्क थिक एवं ६ पृष्ठमे छपल अछि तथा एहिमे विज्ञापन चारि गोट अछि, दूटा कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालयक विज्ञप्ति तथा दूटा लघु सिंचाई विभागक कार्यपालक अभियन्ता द्वारा देल गेल निविदा (टेण्डर)। वस्तुत: एहिना जखन कोनो विज्ञापन भेटि गेल तँ अङ्क बहरायल आ ओहिमे ककर स्तुति वा निन्दा करबाक भेल से क' देल गेल। अत: एहि प्रकारक पत्रसँ भाषा, साहित्य वा समाजकें कोनो लाभ होइक तकर आशे करब व्यर्थ थिक। विशेष जिज्ञासुकें उपर्युक्त अंकक अतिरिक्त विशेष रूपें 'मिथिला भूमि'क फाइल देखबाक चाहिअनि। तखने एहि कथनक सत्यता प्रतीत होयतनि जे विज्ञापन भेटले उत्तर एकर अङ्क सब बहराइत रहल अछि। भाषाक स्वरूपकें विकृत करब सामान्य बात अछि।

ई तँ भेल एकर अन्धकार पक्ष। एकर अर्थ ई नहि जे एहिसँ मैथिलीक कोनो उपकार नहि भेल। जें एकर माध्यम मैथिली अछि, तें मैथिलीक अधिकार प्राप्ति ओ प्राप्त अधिकारक संरक्षणक प्रसङ्ग एकर स्वर सदा मुखरित रहल अछि जे एकर उपलब्धि मानल जायत।

Scanned by CamScanner

मैथिली प्रकाश

१९६८ ई०सँ मैथिली प्रकाशन समिति, कलकत्ताक तत्वावधानमे 'मैथिली प्रकाश'नामक अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। एहि हेतु एक सम्पादक-मण्डल बनल जाहिमे श्री इन्द्रगोविन्द झा, श्री जयकान्त झा 'श्रुतधर', श्री मदन चौधरी, श्रीनन्दन झा एवं श्री श्यामानन्द पाठक सदस्य छलाह। बादमे एहिमे किछु हेर फेर होइत रहल अछि। हमरा लग अतिम अंक मार्च-अप्रैल १९७क शोध विशेषांक अछि जाहिमे श्री नन्दन झा तथा श्री श्यामानन्द पाठकक नाम नहि छनि, एक नवीन नाम श्री सुरेन्द्र नाथ मिश्रक जोड़ल छनि।

हमरा आइ धरि प्रकाशित सब अङ्क देखबाक सुयोग नहि भेल। जतेक अङ्क हम देखि सकलहुँ अछि ताहिमे प्रथम थिक वर्ष ३ अंक ४-५। एकर प्रकाशन ३० नवम्बर १९७० ई०केँ भेल अछि। एतावत एकर तीन गोट अंक एहिसँ पूर्व प्रकाशमे आबि चुकल अछि। एहि अंकमे प्रकाशित मन्त्रीक वक्तव्य तथा सम्पादकीयसँ एकर उद्देश्य ओ नीति पर प्रकाश पड़ैत अछि। ओहिसँ स्पष्ट अछि जे एकर उद्देश्य बहुत उदात्त छलैक, परन्तु एहि दिशामे जेहन सहयोग प्राप्त होयबाक चाही से नहि भेटि सकलैक। अंक ११ सितम्बर १९७२मे एकरा चतुर्मासिक शोध-पत्रिकाक रूपमे पबैत छी, परन्तु शोध-निबन्धसँ हटि कविता-कथा आदि विधाक प्रकाशन आरम्भ भेल भेटैत अछि। एहिसँ एहन प्रतीत होइत अछि जे जाहि लक्ष्यकेँ सम्मुख राखि एकर प्रकाशन आरम्भ भेल छल ताहिमे मैथिलीक विद्वानलोकनिक अपेक्षित सहयोग एकरा नहि भेटि सकलैक। ओना शोध-पत्रिकाक जेहन स्तर ओ गरिमा होयबाक चाहिऐक से एकर नहि भ' सकलैक तथापि एहि प्रकारक रचनाकेँ प्रकाशमे अनबाक एकर प्रयास पत्रकारिताक इतिहासमे स्वतन्त्र अस्तित्व अवश्य स्थापित करैत छैक। चतुर्मासिक पत्रिका होइतो मैथिलीक अस्तित्व-रक्षा, न्याय्य अधिकारक प्राप्ति, जननेतालोकनिक अकर्मण्यता, विद्वानलोकनिक उदासीनता, मैथिली-भाषी जनसामान्यक मोहनिद्रा आदिपर समय-समयपर सम्पादकीयक माध्यमसँ तीक्ष्ण प्रहार कयल जाइत छल। मातृभाषाक हेतु आतुरता एकरा स्वरसँ स्पष्ट प्रतिभासित होइत अछि।

एकर प्रकाशनमे अनियमितता सेहो परिलक्षित होइत अछि। उदाहरणार्थ सितम्बर १९७२क अंकमे क्रम संख्या ११ छपल अछि आ पुनः जनवरी ७३क

Scanned by CamScanner

अंकमे ओकरे दोहराओल गेल अछि। एहिना १९७४ ई०क जनवरी अंकमे वर्ष ६ अंक १४ छपल अछि तथा १९७६क दिसम्बरक अंकमे वर्ष १० अंक ३२-३४।

एहिमे हमरा जतेक अंक उपलब्ध भ' सकल ताहिमे किछु उपादेय तथा संग्रहणीय गवेषणात्मक निबन्ध सब जे दृष्टिमे आयल से थिक—आचार्य रमानाथ झाक 'विद्यापतिक गीत', श्री शैलेन्द्र मोहन झाक 'विद्यापतिक दू टा अप्रकाशित गीत', डॉ० 'श्रीश'क 'मैथिली साहित्यमे हास्यरस तथा रुद्रनाथक 'रस-रत्नाकर गीत नाटिका,' डॉ० श्री उपेन्द्र ठाकुरक 'दार्शनिक उदयनाचार्य', डॉ० श्री वासुकीनाथ झाक 'विद्यापतिक पदावलीमे ध्वनि', डॉ० श्री रामदेव झाक 'चण्डीदास पदावलीक अनभिज्ञात स्रोत' तथा 'जगज्ज्योतिर्मल्लक दशावतारनृत्यम्', एहि पंक्तिक लेखकक 'आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क साहित्यपर महाकवि कालिदासक प्रभाव ओ ऋतुशृंगार'।

एकर अतिरिक्त श्री महेन्द्र नारायण झा लिखित 'राधाकृष्ण नाट्य नृत्य', डॉ० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क गीत रूपक 'पुरुषार्थ' अपना ढंगक नवीन वस्तु अछि। सब मिलाजुला क' 'मैथिली-प्रकाश'क सेवा स्तुत्य छैक। एकर मूल उद्देश्यमे सफलताक हेतु आबहुँ गवेषकलोकनि योगदान करथि तँ उत्तम होयत।

लोकमञ्च

१९६९ ई०मे कलकत्तासँ श्री गुणनाथ झाक सम्पादकत्वमे 'लोकमञ्च' नामक एक अर्द्धवार्षिक पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। ई विशुद्ध नाट्य ओ मंच विषयक पत्रिका छल, परन्तु एकर एक मात्र अंक प्रकाशमे आबि सकल। एहिमे प्रो० रमानाथ झाक 'मैथिली नाटक ओ मंच', बंगलाक सुप्रसिद्ध नाटककार श्री मन्मथ रायक 'बेर्टल्ट ब्रेश्ट', डॉ० श्री लेखनाथ मिश्रक 'आधुनिक मैथिली नाटक ओ रंगमंच', बंगलाक दोसर प्रसिद्ध नाटककार श्री शम्भु मित्रक 'नाट्य ओ मिथिला', बंगलाक अनेक आधुनिक नाटकक प्रणेता श्री वीरु मुखोपाध्यायक 'वर्त्तमान बंगला नाटकक गतिविधि', श्री प्रवीर मुखोपाध्यायक 'वर्त्तमान मैथिली नाटक ओ ओकर प्रदर्शन', श्री विश्वम्भर ठाकुरक 'मैथिली नाटक ओ मिथिला कला केन्द्र' प्रकाशित अछि। एहि निबन्धसभक माध्यमसँ मैथिली नाटकक प्रसङ्ग विशेष अध्ययन कयनिहारकेँ विविध विषयक सूचना प्राप्त भ' सकैत छनि।

एकर अतिरिक्त श्री गुणनाथ झाक लिखल 'मधुयामिनी' नामक एक नाटिका सेहो एहिमे प्रकाशित अछि।

Scanned by CamScanner

अनियतकालीन पत्रिका

समन्वय

संताल परगना कालेज, दुमका, मैथिली साहित्य-परिषद् पत्रिका मार्च १९६४मे प्रो० श्री विद्यानाथ झा 'विदित'क सम्पादकत्वमे लेथो प्रतिक रूपमे प्रकाशित भेल छल जकर एकमात्र अंक प्रकाशित भ' सकल। ई 'फुलस्केप' आकारमे एकपिट्ठा दस पृष्ठक छल। उद्देश्यक अनुरूपे एकर नामकरण भेल छल। भाषाकेँ राजनीतिसँ जुटि जयबाक कारणेँ मैथिली क्षेत्रके खण्डित करबाक जे कुचक्र चलाओल गेल, ई तकरे विरुद्ध ठाढ़ होयबाक कल्पना छल। सम्पादकीयमे कहल गेल अछि—

"......अपन साहित्य-संस्कारसँ मैथिली एहन परिस्थितिमे पहुँचि गेल अछि जतय एकर एक नहि, अनेकानेक बोली भऽ गेलैक अछि, ततय ओकरा सबहक समन्वय करब सेहो आवश्यक अछि। भाषामे' बोलीक समन्वय तखन संभव हैत जखन कि :—

(१) ओकरा सबहक शब्दकोश बनय।

(२) ओकरा पत्र-पत्रिकामे स्थान भेटैक तथा

(३) ओकर व्याकरण बनैक।

जाबत से सभ नहि कैल जैत ताबत ने मैथिलीक विकास संभव हैत ने एकर क्षेत्रे विस्तृत भऽ सकत। मैथिलीमे सबसँ आवश्यक कार्य एखन ई अछि जे पत्र-पत्रिका द्वारा विभिन्न 'बोली' सभमे लीखल वस्तु सभकेँ क्रमिक साहित्यिक रूप देल जाइ। एकरे ध्यानमे राखि 'समन्वय' चलाओल गेल अछि।"

एहि दृष्टिएँ एहिमे श्री वरदाचरण मिश्रक "बाबा वैद्यनाथक आशीर्वाद" देवघरक बोलीमे तथा श्री 'दिङ्नाग'क 'पिस्तौल' शीर्षक मुंगेरक बोलीमे प्रकाशित कयल गेल। यदि ई पत्रिका दीर्घजीवी होइत तँ एकरासँ बहुत किछु आशा कयल जाय सकैत छल।

स्मर्त्तव्य जे 'मिथिला-मिहिर'मे एहि भावनाक पुष्ट्यर्थं यदाकदा एहि बोलीमे रचना सब छपैत रहैत अछि।

Scanned by CamScanner

अक्षत

स्व० 'हरिनाथ' अपन जीवन-कालमे 'अक्षत' नामक मैथिली संकलनक प्रकाशन आरम्भ कयने छलाह। हुनका द्वारा सम्पादित कोनो प्रति देखबाक सुयोग हमरा नहि भ' सकल अछि, परन्तु उद्दाम-प्रतिभा-सम्पन्न एहि तरुण साहित्यकारक असामयिक निधनसँ जे शोकक लहरि पसरल, ओहि लहरिसँ त्राण पयबाक निमित्त हुनक सहकर्मी वा सहयोगी लोकनि द्वारा एक संकलन हुनके स्मृतिमे १९६४ ई०मे गंगाश्रम, सरिसबपाहीसँ प्रकाशित भेल, जे हमरा समक्ष अछि। एहिमे स्व० हरिनाथक किछु रचना एवं हुनकासँ सम्बद्ध कतिपय संस्मरण प्रकाशित अछि। एहिसँ ओहि दिवंगत साहित्यकारक अनुपमेय प्रतिभाक परिचय पाठकककेँ होइत छनि। एहि प्रयाससँ अकाल-काल-कवलित एक दीप्तिमान नक्षत्रक स्मृति इतिहासपर युगयुग धरि अङ्कित रहि सकत। एही हेतु संकलनक अपन महत्व छैक, परन्तु हमरा दृष्टिमे एकरा पत्र-पत्रिकाक पंक्तिमे राखब समुचित नहि प्रतीत होइत अछि, तथापि मैथिली-साहित्यक विकासक एक कड़ी धरि ई अवश्य थिक, ताहिमे सन्देह नहि।

अनामा

नवम्बर १९६५ सँ 'कालपुरुष' नामक [छद्मनामधारी] व्यक्तिक सम्पादकत्वमे 'अनामा' नामक बुलेटिन प्रकाशित होअय लागल। एकरा बुलेटिन एहि हेतु कहल गेल अछि जे एकर प्रकाशनक कोनो अवधि निर्धारित नहि छल। एकर तीन अंक मात्र प्रकाशित भ' सकल, दोसर अङ्क १९६७क विद्यापति जयन्तीक अवसर पर आ तेसर अङ्क मार्च १९६८ ई०मे। एकटा कथन अछि—

"राजनीतिक क्षेत्रक व्यक्तिवादी मनोवृत्ति राष्ट्र-जीवनक अन्यो क्षेत्रकेँ कम विषाक्त नहि कयल अछि। साहित्य क्षेत्रमे आइ जतेक नव-नव विधाक निर्माण भ' रहल अछि, जतेक नव-नव वादक विवाद ठाढ़ कयल जा रहल अछि से की जन-कल्याणक कोनो अभिनव मार्ग खोलबाक लेल? अथवा जन-जीवनकेँ नव निर्माणक कोनो नवीन चिन्तनक दिशा जाग्रत करबा लेल? सत्य त' ई जे व्यास वाल्मीकिकेँ जनमानसक आसनसँ धकेलि स्वयं व्यास

आ वाल्मीकि जकाँ सम्मान प्राप्त करब जाग्रत वैयक्तिक बुभुक्षाक परिणति थिक।''[१]

उपर्युक्त कथनकेँ सर्वांशतः चरितार्थ करबाक दिशामे जे किछु प्रयत्न भेल अछि ताहिमेसँ एकटा प्रयत्न 'अनामा'क प्रकाशनकेँ सेहो कहल जाय सकैत अछि। नव लेखनक स्थापनामे अपन अल्पबोधकेँ नुकयबाक विफल प्रयास कतिपय रचनामे स्पष्ट दृष्टिगत होइत अछि! दुर्बलतासँ आक्रोश उत्पन्न होइत छैक आ आक्रोश श्रद्धा एवं विश्वासकेँ ढाहि दैत छैक। श्रद्धाक अभावमे ज्ञान नहि आ ज्ञानक अभावमे विश्वासक पृष्ठभूमि स्थिर नहि रहि पबैत छैक। इएह कारण छल जे एकरा आगाँ प्रकाशित होयबामे बाधा उत्पन्न भेलैक। एहि पत्रिकाक भाषा हमरा दृष्टिएँ अनेक स्थलमे मर्यादाक उल्लंघन करैत अछि ओ वाक्य रचनामे सरलता ओ स्पष्टताक अभाव अछि। एहि पत्रिकाक स्वरूपक प्रसङ्ग एहिमे प्रकाशित एक पाठकक प्रतिक्रिया उद्धृत करब समीचीन होयत। शिवचन्द्र झा नामक एक व्यक्ति लिखने छथिन—

''अपनेक 'अनामा द्व' हस्तगत कएल मुदा ई 'अनामा' साप्ताहिक अछि की पाक्षिक वा मासिक से पता नहि चलि सकल। दोसर गप्प ई जे जौं एहि तरहेँ अपने एकेटा लेखक वा कविक रचना एक अंकमे प्रकाशित करब त' अपनेक 'अनामा' अनमना भए नेना ने खेलाबऽ लागय, से चिन्ता अछि। तेसर गप्प ई जे 'अनामा'क गेटअप पहाड़ाक पोथीसँ कम नहि अछि तेँ एहिमे सुधार आवश्यक अछि।''[२]

स्मर्त्तव्य जे उपर्युक्त प्रतिक्रियामे चर्चित अंकमे श्री गंगेश गुंजनक ''हम एकटा मिथ्या परिचय'' शीर्षक एकटा सम्पूर्ण कविता प्रकाशित भेल छनि। तेसर अंकक बाद एकर प्रकाशन बन्द भ' गेल।

एक युगक बाद १९७९क नवम्बरमे पुनः पटनेसँ श्री प्रभास कुमार चौधरी तथा डॉ० श्री गंगेश गुंजनक सम्पादकत्वमे विशुद्ध कथा-मासिकक रूपमे एकर प्रकाशन आरम्भ भेल जकर पुनः तीनगोट अंक प्रकाशित भ' सकल अछि। नव प्रकाशित अंकक सम्पादकीयमे एकर भूत, वर्त्तमान ओ भविष्यपर प्रकाश

१. बागमती, अंक २, पृ० १—२।
२. अनामा ३, आवरणक चतुर्थ पृष्ठ।

Scanned by CamScanner

देल गेल अछि। एकर सम्पूर्ण स्थितिक परिचय प्राप्त करबाक हेतु तकर अवलोकन समीचीन होयत। सम्पादक लिखैत छथि—

"लगभग बारह वर्षक अन्तराल पर अनामाक ई अंक अपने लोकनिक हाथमे दैत अत्यन्त हर्ष भ' रहल अछि। अनामाक प्रकाशनक आइ पन्द्रह वर्ष पूरि रहल छैक आ पन्द्रह वर्षमे अनामाक मात्र चारिटा अंक प्रकाशित भ' सकलैक। एकर अन्देसा योजना प्रारम्भे करैत काल हमरा लोकनिकें छल, तें अनामाक घोषणापत्र (नवंबर ६४) (६५ होयबाक चाही ?)मे कहल गेलैक—अनियतकालीन (घोषणापत्रमे कालसापेक्ष शब्दक प्रयोग अछि)। मार्च ६८मे अनामा तीनक प्रकाशनक लगभग बारह वर्षक बाद अनामा कथा-प्रधान मासिकक रूपमे पुनः प्रकाशन स्वयम् हमरा लोकनिक हेतु आह्लादक संग आश्चर्यक बात।

अनामा-१क संपादक छलाह कालपुरुष—माने प्रभास, गुंजन, साकेतानन्द, बालेश्वर एवं गौरीकान्त चौधरी 'कान्त'। अनामा तीन धरि अबैत अनामा प्रकाशनसँ सम्बद्ध रहि गेलाह—प्रभास आ गुंजन। यद्यपि नागपुरसँ साकेतानन्दक सहयोग बनल रहलनि आ नव सहयोगी भेलथिन वसन्त कुमार! तकर बाद एकटा पैघ अन्तराल। अनामाक कोनो अंक प्रकाशित नहि भ' सकल।

आइ अनामा-४ अपने लोकनिक हाथमे अछि। प्रकाशन-प्रेरणा आइयो वैह जे पन्द्रह वर्ष पूर्व अनामाक घोषणा पत्रमे कहल गेल छल—आधुनिक मैथिली साहित्य कें कलात्मक रूपें सुधी पाठकक समक्ष राखब। आइ धरि मैथिलीमे एकोटा कथा मासिकक प्रकाशन नहि भेल अछि। (स्मर्त्तव्य जे १९४८ ई० मे आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' 'कथा-मुखी' नामसँ कथा मासिकक प्रकाशन आरम्भ कयने छलाह जकर एकमात्र अंक प्रकाशित भऽ सकल छल) अनामा कें कथाप्रधान मासिकक रूप देबाक इच्छा आ संकल्प अछि।

एतेक पैघ अन्तरालोक बाद एकटा स्थिति अपरिवर्त्तित। इहो अनामा कोनो सेठ-साहुकारक धर्मखाताक दान सँ नहि, शहादत प्रेमी साहित्य सेवीक पसेनाक कमाइ सँ प्रकाशित। (ध्यातव्य जे मैथिलीक पत्र पत्रिका अधिकतर एहने बलिदानी, मातृभाषाक अनन्य अनुरागी साहित्यसेवी वर्गक द्वारा आइ धरि प्रकाशमे अबैत ओ डुबैत रहल। विशेष पूजीसम्पन्न एक

Scanned by CamScanner

मात्र 'मिथिला-मिहिर' रहल अछि आ तेँ मध्यमे एक आधबेर लटपटाइतो आइ धरि टेक धयने अछि आ अन्य पत्र-पत्रिकाक आर्थिक आधार जेँ सबल नहि रहलैक तेँ दीर्घजीवी नहि भ' सकल अछि ।)

अनामाक आरम्भिक तीनू अंकमे क्रमश: जनिकालोकनिक रचना प्रकाशित होइत रहलनि तनिका सभक नाम थिकनि—बालेश्वर, गंगेश गुंजन, ज्योति जयन्ती, गौरीकान्त चौधरी, साकेतानन्द, प्रभास कुमार चौधरी, स्व० राजकमल चौधरी, रत्नधर, वसन्त कुमार, आनन्द शास्त्री, नरेन्द्र शुक्ल । अनामाक क्षेत्रविस्तरकेँ विज्ञापित करबाक बुद्धिएँ हिन्दीक राजेन्द्र तृषित, गुजरातीक कुसुम दोषी तथा मराठीक रोगणेकर नामक पाठकक पत्र अनामा तीनक आवरणक चतुर्थ पृष्ठ पर छपल अछि ।

वस्तुत: कथा-साहित्यक पाठक सम्प्रति सबसँ अधिक छथि । यदि ई प्रयास दृढ़तासँ चलैत रहल तँ एकर भविष्य उज्ज्वल ओ उत्साहवर्द्धक होयत से आशा कयल जा सकैत अछि, परन्तु प्रकाशनोसँ कठिन काज वितरणक होइत अछि, तेँ तकर समुचित प्रबन्ध कोना हो से सोचल जाय ।

फ्रायड आ मार्क्सक प्रभाव जहियासँ मैथिलीक साहित्य-लेखनमे प्रवेश कयलक एवं अनेक राजनीतिक वादक विस्तार होइत गेल, नव-लेखनक नाम पर अनास्था, अश्रद्धा, औद्धत्य, अवाच्य कथन आदिक वृद्धि होइत गेल । कोनो मैथिली युवालेखन-संकलन, कोनो विद्रोही नवतुरियाक स्वर-मंच, कोनो मैथिली नवतूर संकलन आदि आदि नाम पर दू अङ्क चारि अंक प्रकाशित भ बन्द होइत गेल । एहिमे अनेक नाम गनाओल जा सकैत अछि, यथा अग्नि-पत्र, शिखा, भुम्हूर, भूर, लालधूआँ, चाङुर आदि ।

१९७०-८० क दशकमे एहि प्रकारक अनेक पत्रिका प्रकाशमे आयल । एहिमे कतिपय तँ एहन अछि जाहिमे मास, वर्ष आदिहुक उल्लेख कतहु नहि अछि । वस्तुत: ई सब संकलन थिक । एकरा सबकेँ पत्रिकाक रूपमे प्राय: सरकारी स्वीकृति सेहो नहि प्राप्त छैक, परन्तु रंग-ढंग, क्रियाकलाप पत्र-पत्रिकाक जे होयबाक चाही से छैक । अत: एहि पंक्तिमे एकर परिगणन कयल गेल अछि । एहि पत्र-पत्रिकाक प्रसङ्ग हम अपन कोनो मन्तव्य प्रकट करबामे अक्षम छी ।

एतय अग्निपत्रमे प्रकाशित 'पराशर' लिखित "मैथिली नवलेखन : स्वरूप आओर दिशा" शीर्षकक अंश उद्धृत क' देब समुचित बुझैत छी जे अग्निजीवी

Scanned by CamScanner

लेखकक अपन वक्तव्य नामक स्तम्भमे छपल अछि। एहिमे निम्नांकित अंश द्रष्टव्य अछि—

"व्यक्तिगत रूपसँ हम नव-लेखनक प्रति आस्थावान् छी आ हमरा नव-लेखनक भविष्य पर कनेको सन्देह नहि अछि, मुदा हम ओकर दिशाहीनता ओ दृष्टिहीनताक प्रति औखन आशंकित छी। मैथिलीक नव-लेखन वस्तुत: मैथिली साहित्यकेँ एक नव धरातल देलक अछि—ई भिन्न कथा जे नव-लेखनक मर्मकेँ बुझनिहार साहित्यकार बड़ सीमिते किऐक ने होथि।"[1]

'पराशर'क उपर्युक्त कथनसँ हम पूर्ण सहमत छी। प्राय: बुद्धि-विवेक रखनिहार पाठको एहिसँ असहमत नहि होयताह। ई जे नवलेखनक मर्मकेँ बुझनिहार सीमिते साहित्यकार छथि सेहोलोकनि एही पत्र-पत्रिकाक माध्यमसँ निखरि ओ उभरि सकलाह अछि। अत: उपरिचर्चित पत्र-पत्रिका सभक एक महान् उपलब्धि मानबा मे ककरो आपत्ति नहि होयबाक चाही।

एहि सभमे जे किछु अधकच्चू ओ उद्धत युवक साहित्य क्षेत्रमे अवतीर्ण भेलाह अछि, हमरा विश्वास अछि वयस जहिना परिपक्व होइत जयतनि, जीवनक उत्तरदायित्व जतेक बढ़ल जयतनि, तहिना-तहिना ई औद्धत्य दूर भेल जयतनि। एहि विश्वासक आधार हमरा नव-लेखनक मन्त्रद्रष्टा कविवर श्री यात्रीजीक निम्नांकित पद्यमे भेटैत अछि। श्री यात्री लिखने छथि—

"चानन बूझि किदन लेपल हम देहमे
झरकि रहल अछि मोन आब सन्देहमे
शुन्न भेल ई जीह, जहर मिश्रित छनइ
तथाकथित ओहि संजीवन - अवलेहमे
चानन बूझि किदन लेपल हम देह मे"[2]

अन्तमे एतबे कहि देव पर्याप्त होयत जे ई चिन्तने अभारतीय थिक। प्रतिमा कें भंग करबाक उन्माद। एहन प्रवृत्ति आत्माक अनुशीलन नहि

१. अग्निपत्र-२, मइ १९७३, पृ० ७३।१—७३।३।
२. मिथिला-भारती (द्वैमासिक), वर्ष १, अंक १, पृ० ७।

Scanned by CamScanner

करय दैत छैक। अतः एहि सँ साहित्य आ समाजके लाभ सँ अधिक हानिए होयबाक संभावना रहैत छैक, परन्तु भेड़िया धसानक एहि युगमे, नकल करबाक एहि उद्धत प्रवृत्तिक अन्त की होयत से भविष्ये कहत।

उपरिचर्चित पत्रिका सभक विवरण निम्नांकित अछि—

अग्निपत्र

ई १९७३ सँ कलकत्तासँ प्रकाशित होइत रहल अछि। एकर प्रकाशनक कोनो अवधि निर्द्धारित नहि अछि। पहिने एकर सम्पादक छलाह वीरेन्द्र मल्लिक ओ सहयोगी सुकान्त सोम तथा रामलोचन ठाकुर। आगाँ चलि केवल रामलोचन ठाकुरक नाम सम्पादकक रूपमे देखबामे अबैत अछि :

चाङ्ुर

शतगंधा, सहरसा द्वारा प्रायः १९७२ मे ई प्रकाशित होअय लागल। एकर पहिल अंक टाइप कयल तथा दोसर अंक छपल अछि। सुनल जे एकर तेसर अंक लघुकथा विशेषांक छल। एहिसँ अधिक विवरण हमरा प्राप्त नहि। दोसर अंकमे 'भनइ विद्यापति' आ 'मैथिली मरि जाएत' शोर्षकक अनुशीलन कयलासँ एकर की योगदान रहलैक से बूझल जाय सकैत अछि। चाङ्ुरक सम्पादक छलाह 'जटायु' आ सम्पादकीयक हेतु शीर्षक राखल गेल छल 'नोछाड़'। एही दू शब्दसँ एकर सम्पूर्ण जीवनदर्शन स्वयं अनुमेय अछि।

शिखा

ई पत्रिका प्रायः १९७४ सँ प्रकाशित होअय लागल। एकर पहिल प्रकाशन स्थान कलकत्ता रहल अछि, परन्तु किछु अंकमे दरभंगा सेहो देखल जाइछ। एकर सम्पादक कुणाल ओ अग्निपुष्प थिकाह। नव लेखनक स्थापनामे जतेक पत्र-पत्रिका प्रकाशित होइत रहल अछि ताहि सबमे सबसँ अधिक अमर्यादित भाषाक प्रयोग एहीमे देखल जाइत अछि। पत्रकारिताक सबसँ

Scanned by CamScanner

पैघ संकट ई रहल अछि जे जनभाषाक नाम ल' सूर्यकें 'सुर्य' लिखितो एकरा अशुद्ध कहनिहारकें होरिया देल गेल अछि। सम्पादनक हेतु कोन योग्यता अपेक्षित अछि तकर चर्चो करब एहि वर्गक दृष्टिमे महान् अपराध मानल जाइत अछि । एहिसँ भाषा, साहित्य ओ पत्र-पत्रिकाक कतेक अवमूल्यन भेल अछि से अनिर्वचनीय अछि ।

लालधूआं

एकर सम्पादक नहि, प्रयोजक छथि अष्टावक्र । ई शिवनगर, मधुबनी सँ प्रकाशित होइत छल । एकर पाँचम संकलन नवम्बर ७६ मे आ छठम संकलन नवम्बर ७७ मे प्रकाशित भेल अछि। एतावता ईहो यदाकदा प्रकाशित होइत रहल अछि । विशेष विवरणक एखन प्रतीक्षे करय पड़त ।

सन्निपात

ई पत्रिका पटनासँ प्रकाशित होइत छल । एकर प्रयोजक छथि श्रीकुलानन्द मिश्र ओ श्री मोहन भारद्वाज । हमरा एकर अंक २ ओ ३ देखबाक सौभाग्य भेल जाहिमे मासवर्ष आदिक कोनोमे उल्लेख नहि अछि । विद्रोहक स्वरकें मुखर करबामे एकरो योगदान छैक, परन्तु एकर भाषा-प्रयोगमे मर्यादाक अति उल्लंघन नहि भेल अछि ।

भुम्हूर ओ भूर

ई दुनू एक-एक अंक मात्र प्रकाशित भेल । एकर सम्पादक छलाह क्रमशः श्री दयानन्द मिश्र ओ श्री नूतन राकेश। ई दुनू लहेरियासरायसँ प्रकाशित भेल छल ।

मि०

१९७०क मइ माससँ 'मि०'नामक एक पत्रिका श्री वीरेन्द्र मल्लिक आ गुणनाथ झाक सम्पादकत्वमे आरम्भ भेल । मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे

अपना आकारक हेतु ई एकमात्र रहल अछि। एकर आकार छल १० से० मी० नाम तथा ६ से० मी० चाकर। एही नापसँ एहिमे कविता कथा, नाटक, समाचार, विज्ञापन सब किछु छपैत छल। कविताक किछु उदाहरण देखल जाय—

१- "खबरदार ! औ बूढ़
दूनू हाथ उठाउ !
फटाक् !!!" —जीवकान्त

२- "रौ बूढ़ ! चुप रह
बड़ अतत्तह कैलें
आब हमर राज छौक :
जेना जे कहैत छियौक, से कर
नञि त'
गोलीसँ दागि देबौक।"—वीरेन्द्र मल्लिक

एहने एक मिनी कथाक आस्वादन कयल जाय—

"हे भगवान् !" राजकुमारी बाजि उठल—"हम गर्भवती छी आ ई हमरा नहि बुझना जाइछ जे ककर पिताके छैक।" —विश्वंभर ठाकुर

उपर्युक्त उद्धरण सबसँ एहि पत्रिकाक चरित्र ओ प्रवृत्तिक आकलन कयल जाय सकैत अछि। यद्यपि हमरा एकर एकमात्र अंक दृष्टिपथपर आयल तथा डॉ० 'श्रीश' सेहो एक अंक मात्रक सूचना देने छथि, परन्तु कतिपय साहित्यिक बन्धुक कथनानुसार एकर दोसरो अंक प्रकाशित भेल छल।

मैथिली बुलेटिन

कलकत्ता सांस्कृतिक परिषदक दिससँ समयसमय पर 'मैथिली बुलेटिन' नामसँ एक पत्र प्रकाशित होइत छल जे परिषदक मुखपत्र छल।

एहिमे सम्पादकक नाम कतहु नहि छपल अछि, परन्तु एकर पंजीयन सं० एस/६७६२ क उल्लेख भेल अछि। एहि बुलेटिन मे मिथिला सांस्कृतिक परिषदक संपूर्ण गतिविधिक संग मैथिली आन्दोलनक गतिविधि तथा मिथिला ओ मैथिलीक समस्या पर प्रकाश देल जाइत छल। भाषा

परिमार्जित रहैत छलैक। सम्प्रति एकर की स्थिति छैक से हमरा ज्ञात नहि अछि।

मैथिली समीक्षा

१९७४ ई० मे 'मिथिलाञ्चल प्रकाशन, लहेरियासरायक तत्त्वावधानमे एकर प्रकाशन आरम्भ भेल आ प्रायः दु गोट मात्र अङ्क प्रकाशित भ' सकल।

जेहन एकर नामकरण भेल छल आ जेना मैथिलीमे समीक्षाविषयक अल्पता अछि तेना जँ एकर परिधिक विस्तार कयल जाइत तँ निश्चय मैथिली साहित्यक बड़ उपकार होइत।

मिथिला समुदाय

१९७५ ई०मे दिल्लीसँ श्री उमानन्द मिश्रक सम्पादकत्वमे एकर प्रकाशन बहुत धूमधामसँ आरम्भ भेल छल। एकर काया ओ साज-सज्जा, आवरण ओ पृष्ठ संख्या ततबा ओ तेहन छल जाहिसँ एकर उज्ज्वल भविष्यक आशा कयल जाइत छल, परन्तु एकरा समक्ष कोनो स्पष्ट योजना ओ उद्‌देश्य नहि छलैक। उद्‌देश्य एक मात्र जे दिल्लीसँ एक पत्रिका प्रकाशित होयबाक चाही। एकर संरक्षक छलाह श्री गुणानन्द ठाकुर, सांसद, ताहिसँ ई आशा कयल जाइत छल जे आर्थिक संकटसँ ग्रस्त भ' ई बन्द नहि होयत, परन्तु दृष्टिकोणक अभावमे ई एक चाटुकारक भूमिका मात्रक निर्वाह करैत रहल। एकर प्रथम अङ्क अक्टूबर ७५मे प्रकाशित भेल। तदुत्तर नवम्बर ओ दिसंबर तथा ७६क जनवरी ओ फरवरीक संयुक्ताङ्क प्रकाशित भ' सर्वदाक हेतु बन्द भ' गेल।

सबसँ अन्तिम अङ्क स्व० ललित नाराणय मिश्रक स्मृतिमे प्रकाशित भेल छल। अतः उक्त अंकमे स्व० ललित बाबूक प्रसङ्ग प्रचुर सामग्री प्राप्त होइत अछि। स्व० ललित बाबूक जे अवदान मिथिला ओ मैथिलीक हेतु छनि तकरा कोनो कृतघ्ने नकारि सकैत अछि। एहि दृष्टिएँ एकर उक्त अंक अपन विशेष महत्त्व रखैत अछि।

Scanned by CamScanner

रंगमंच

कलकत्तासँ नाट्य विषयक पत्रिका 'रंगमंच' श्री रामलोचन ठाकुरक सम्पादकत्वमे आरंभ भेल छल। एहिमे ने कतहु वर्षक उल्लेख अछि ने प्रकाशनक अवधिक चर्चा। अतः ई मासिक, त्रैमासिक वा अर्द्धवार्षिक से किछु नहि कहल जाय सकैत अछि। हँ, 'आगन्तुक' नामक एक नाटकक मंचन होयबाक सूचना छपल अछि जकर तिथि छपल अछि २८ अप्रील १९७४ ई०। एहिसँ अनुमान कयल जाय सकैत अछि जे ओहि मासमे वा ओहिसँ गोटेक मास पूर्व एकर प्रकाशन भेल होयत।

ई तँ निर्विवाद जे स्वतन्त्र एक विधाकेँ ल' स्वतन्त्र पत्रिकाक प्रकाशन प्रगतिक दृष्टिएँ अवश्य श्लाघनीय प्रयास छल। 'लोकमंच'क अपेक्षा एहिमे सामग्री अधिक ओ विशेष महत्त्वक छपल अछि, परन्तु एकरो एकमात्र अंक प्रायः प्रकाशित भ' सकल। एतय एकटा बात स्पष्ट क' देब विशेष उपयुक्त होयत जे कलकत्ता महानगरीक विभिन्न भागमे मैथिलीभाषी लोकनि रहैत छथि। नेतृत्वक कामना तँ आजुक समयमे बहुतो गोटेक हृदयमे होइत रहैत छनि। एही कारणेँ परस्पर स्पर्द्धा होइत रहैत छनि। एहि प्रतिस्पर्द्धाक फलस्वरूप कलकत्तासँ कतिपय पत्र-पत्रिका उदित ओ अस्त होइत रहल। एही क्रममे 'लोकमंच'क प्रतिस्पर्द्धामे 'रंगमंच'क प्रकाशन भेल हो तँ से कोनो अतर्कित नहि मानल जाय सकैत अछि। जखन प्रतिस्पर्द्धा होइत छैक तँ पहिलुकासँ नीक बनयबाक प्रयास होइते छैक।

'रंगमंच' आकार ओ प्रकार दूनूमे 'लोकमंच'सँ विशिष्ट छल, परन्तु ६८ पृष्ठक एहि पत्रिकामे २८ पृष्ठ सम्पूर्ण आ आध-आध पृष्ठक अनेक विज्ञापन छपल अछि जे एकर व्यावसायिक चातुर्यक परिचायक थिक।

एहिमे डॉ० श्रीदुर्गानाथ झा 'श्रीश'क 'सांस्कृतिक चेतना मूलक नाटक : विषय ओ अवधारण', श्री नरेन्द्र झाक 'मैथिली लोक-गीत एवं नृत्य', प्राचार्य श्री प्रफुल्ल कुमार 'मौन'क 'नेपालक मैथिली नाटकक विशेषता', श्री नचिकेताक 'नाटकक स्वरूप-निर्णय आ मैथिली नाटक', डॉ० श्रीमती अणिमा सिंहक 'नाटके कियैक ?' एवं डॉ० श्री प्रबोध नारायण सिंहक 'भाव-रसक अनिवार्य घटक उपकरण' आदि निबन्ध नाट्य विषयपर पर्याप्त प्रकाश दैत अछि।

Scanned by CamScanner

ध्यातव्य जे आधुनिक कालमे मैथिलीमे नाटकक अल्पता रहल अछि। कविता ओ कथा जाहि परिमाणमे लिखल जाइत रहल, निबन्धे जकाँ नाटक लिखनिहार बड़ थोड़ गोटे क्षेत्रमे अयलाह। एहि दिशामे कलकत्ता बेसी सक्रिय रहल। श्रीमती पन्ना झा 'मैथिली नाटक एवं कलकत्ताक अवदान' शीर्षक लेखमे पूर्ण प्रकाश देलनि अछि।

श्री गंगेश गुंजन लिखित 'मैथिली रेडियो नाटक' शीर्षक निबन्ध सेहो पूर्ण सूचना दैत अछि।

फराक

उपर्युक्त सन्दर्भमे पटनासँ 'फराक' नामक एक संकलन प्रकाशित होइत छल। एकर प्रयोजक श्री कुलानन्द मिश्र छलाह। एकर जहिना नाम छलैक 'फराक' तहिना एकर स्वर सेहो फराके छलैक। हमरा एकर मात्र तीन गोट अंक दृष्टिपथ पर आयल। प्रायः यैह तीन गोट अंक एकर प्रकाशितो भ' सकल।

ई संकलन मैथिलीक सम्पूर्ण गतिविधिक सर्वेक्षण करैत रहैत छल आ असंगति ओ विसंगतिकेँ फड़िछा क' पाठकक समक्ष राखि दैत छल। एकर प्रथम अंक महाकवि सीताराम झाक स्मृतिमे समर्पित अछि जे एकर श्रद्धाक परिचायक थिक। ओना किछु रचना एहनो अछि जे संस्कृतिपर आघात करैत अछि। एहन सन प्रतीत होइत अछि जे किछु लोक फैसनमे आबि क' मर्मकेँ बिनु बुझनहि अपन उक्ति-वैचित्र्यसँ लोकमे चर्चित होयबाक लालसा राखि किछु लिखि मारैत अछि। ओहिसँ साहित्यक समृद्धि बढ़ैत छैक से बात नहि, परन्तु अश्रद्धावादी, प्रतिमाभंजक समुदाय ओकरा बाहबाही दैत छैक जकरा ओ अपन उत्कर्ष बुझैत अछि, यद्यपि तत्त्वतः ओ अपकर्षक कोटिमे अबैत अछि। एकटा उदाहरण प्रस्तुत अछि : शीर्षक अछि "दू टा छोटकिनमी कविता' ताहिमे पहिल थिक 'गंगाजल'—

"—आब कुल देवता लग चिकबेसँ कटायब—खस्सी।
जाति रहतह ?
भगवती नष्ट नहि भऽ जयतीह ?
नहि बाबा, हम एतेक बेकुफ छी ?

चिकबाकेँ भगवती-घर जयबासँ पहिने
ढारि देबैक देहपर
एक लोटा गंगाजल,
पिया देबैक एक गिलास गंगाजल,
पढ़ि देबैक मन्त्र—
ओम् अपवित्रः पवित्रो वा........"[1]

एहि उद्धरणसँ स्पष्ट अछि जे कुलदेवता, गंगा, मन्त्र ओ बाबाक मान्यताक प्रति अश्रद्धा मात्र अभिव्यक्त भेल अछि। एहिसँ जन-सामान्य, जकरा हेतु नवलेखन विशेष रूपेँ अपनाकेँ प्रतिबद्ध कहैत अछि, कोन उत्कर्ष प्राप्त करत? ओकरा जीवनक कोन समस्याक समाधान ओकरा हेतु भ' सकतैक? तखन तँ जकरा उपर्युक्त सभक प्रति आस्था छैक तकरा मर्मपर चोट मात्र करब उद्‌देश्य भेल। एकरे लोक प्रतिमाभंजन कहैत छैक। भारतमे नास्तिकवाद नहि रहलैक अछि से बात नहि। हिन्दू धर्म ततेक उदार छैक जे एहि हेतु व्यक्तिकेँ पूर्ण स्वातन्त्र्य छैक। अनीश्वरवादियो ओहिना हिन्दू रहैत अछि जहिना ईश्वरवादी! तखन ककरो आस्थापर आघात करबाक की प्रयोजन? ईहो बात सत्य जे सिद्धान्तक रूपमे ई कहितो क्रियाक रूपमे परिणत करबाक साहस नहि देखा सकैत छी।

एही छोटकिनमी कविताक दोसर खंड अछि 'वेश्या'। जाहि भोगल यथार्थक नग्न-चित्रण करबाक घोल मचाओल जाय रहल अछि, की आजुक नवतुरियाक यैह भोगल यथार्थ थिकनि? एहिसँ कोन संस्कार उद्‌बुद्ध होइत अछि? जनसामान्य एहिसँ कोन प्रेरणा ग्रहण क' सकैत अछि?

कहबाक हेतु कहि देल जाइत अछि, परन्तु नग्न यथार्थकेँ अङ्कित करब मात्र फैशनमे वा लेखनमे अनितहु व्यवहारमे ओ कहाँ देखल जाइत अछि? मनुष्य एक सामाजिक प्राणी थिक। सामाजिक जीवन व्यतीत करबाक हेतु मनुष्यकेँ एक आवरणक भीतर रहब अनिवार्य भ' जाइत छैक। वस्त्र धारण करब तकरे प्रमाण थिक। गाय-महीस, कूकुर-बिलाड़ि सेहो गामे-घरमे रहैत अछि। ककरो धोती वा पेन्ट वा कोनो आवरणक प्रयोजन नहि होइत छैक। तकर कारण थिकैक जे ओकरा लोक-लज्जा नामक कोनो वस्तु

१: फराक २, पृ० ४।

नहि छैक। यैह लोक-लज्जा मनुष्यकेँ सभ्य जीवनक कोटिमे अनैत छैक। अतः साहित्योमे यथार्थक चित्रण करितो ओहिमे आवरण अपेक्षित होइत छैक। जखने आवरण भेलैक तखन ओ नग्न-यथार्थ नहि रहि जाइत अछि। मनुष्यक दाम्पत्य-जीवन एहने आवरणसँ आवृत रहैत अयलैक अछि। कलम उठबैत देरी ध्यान रखबाक चाही जे एकरा हमर पिता, गुरुजन, अनुज ओ सन्तति सब पढ़त। तेँ लक्षणा ओ व्यंजनाक प्रयोजन होइत अछि। धोती तरमे नाङट रहितो बिनु धोती पहिरने हम लोकक समक्ष नहि जाय सकैत छी। एहि मर्यादाक पालन लेखनोमे हमरा दृष्टिएँ अपेक्षित रहैत अछि। एहिमे अनेक मतभेद भ' सकैत अछि, शास्त्रार्थो कयल जाय सकैत अछि, परन्तु तथ्यकेँ हृदयंगम करबाक हेतु एकान्तमे शान्त चित्तसँ चिन्तन करब अपेक्षित होइत अछि। नाम-निर्देश बिनु कयनहि हम विराम लैत छी।

अस्तु, ई सब रहितो 'फराक' नवलेखनक हेतु एक स्वस्थ प्रवृत्तिकेँ अग्रसारित कयलक से 'फराक'क पाठककेँ स्वीकार्य होयबाक चाहियनि। एहि कथनक पुष्टिमे श्री सुकान्त सोमक लिखल "इतिहास-लेखन: स्थिति आ अपेक्षा", श्री राजमोहन झाक "प्राध्यापकीय दायित्व ओ निर्वाह", श्री मोहन भारद्वाजक "मैथिलीक नव-लेखन : रूढ़ि आ सीमा", श्री भीमनाथक "एकटा कालपुरुषक देहावसान" तथा श्री रमानन्द झा 'रमण'क "आधुनिक मैथिली कवितामे आत्म-निर्वासन"[1], एहिना श्री राजमोहनजीक 'नामक दुर्गति : आलोचनाक अवगति।"[2] तथा "आलोचकक गछाड़मे पड़ल मैथिली पोथी"[3] शीर्षक लेख औंघाइत आलोचकक आँखिमे मेरिचाइक बुकनीक काज करैत अछि। एहि प्रकारक आओरो कतोक लेख अछि जे मैथिलीमे चलैत घृणित गुटवाद, मैथिली साहित्यक वर्त्तमान गतिविधिपर नीक जकाँ प्रकाश दैत अछि। इएह सब तथ्य अछि जे 'फराक' केँ अन्य प्रकाशित पत्रिका सबसँ फराक करैत एक गरिमा प्रदान करैत अछि।

फराक द्वारा उठाओल किछु समस्या सभक प्रसङ्ग प्रो० श्री आनन्द मिश्र जे अपन मन्तव्य प्रकट कयने छथि ताहिसँ अधिकांश पाठक सहमत भ' सकैत छथि। श्री आनन्द बाबू लिखने छथि—

---

१. सब शीर्षक 'फराक'-१।
२. फराक-२, पृ० १९।
३. फराक-३, पृ० ११।

"स्व० सीताराम झाजीक स्मृतिमे समर्पित 'फराक'क प्रथम संकलन देखल तथा पढ़ल। एहि संकलनक अपन विशेषता छैक जे स्वतः ध्यान आकृष्ट करैछ। एक साधारण पाठकसँ प्राध्यापक वर्गकेँ फराक राखब उचित होएत कारण साधारण पाठक पढ़ि कए मनहिमन रहि सकैत अछि। किन्तु प्राध्यापकके अपन प्रतिक्रिया कोनहु ने कोनो रूपमे व्यक्त करब आवश्यक भए जाइत छैन्हि। ओ स्वयं लिखथु वा नहि, पढ़एबाक काल हुनका अपन विचार व्यक्त करहिटा पड़तैन्हि। ओकरा ओ उचित रूपेँ करथि ताहि दिशि बड़े सुन्दर संकेत अछि एहि संकलनक "प्राध्यापकीय दायित्व ओ निर्वाह'मे। प्राध्यापकक वर्ग एक विशिष्ट एवं प्रबुद्ध पाठकक वर्ग थिक एहिमे सन्देह नहि। ओहि वैशिष्ट्यक निर्वाह नहि भए रहल अछि जे उक्त निबंधसँ स्पष्ट अछि। केओ हमरहि सभमेसँ कोनो रचना जे 'कविता' थिकैक ओकरा 'कथा' कहि देने छथि। एहन अनुत्तरदायित्व नहि होएबाक चाही। दोसर विषय ई जे प्राध्यापक वर्गमे किछुए गोटा एहन छथि जे साहित्यक सभ विधामे कलम भाँजए लगैत छथि तथा स्वयं हास्यक आलम्बन बनि जाइत छथि। ईहो उचित नहि।.......

साहित्य क्षेत्रमे प्राध्यापकक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका छैक। ओ लोकनि यावत् उचित मूल्यांकनक दिशामे अग्रसर नहि होएताह, आलोचनाकेँ स्वस्थ नहि बनओताह तावत् अपन कर्त्तव्यपालनमे पछुआएल रहताह।

दोसर समस्या जाहि दिशि 'फराक' ध्यान आकृष्ट कएलक ओ थीक इतिहास-लेखनक समस्या। मैथिलीमे एखन धरि इतिहास नहि अछि। जे अछि से 'कैटलॉग' अथवा तादृशे ····किछु कहल जाएत। एकर कारण की? कि मैथिलीक इतिहासलेखकलोकनि उचित मूल्यांकन करैत डेराइत छथि अथवा रचनाक विश्लेषणात्मक अध्ययनसँ अपनाकेँ हटएबाक प्रयास करैत छथि? केवल ग्रन्थसूची अथवा लेखक-सूची इतिहास नहि थीक। एहिसँ किछु सामग्री मात्रक सूचना भेटैत अछि, कोनो दृष्टिकोणक नहि। एहि दिशामे उठाओल गेल प्रश्न विचारणीय अछि,।

तेसर विषय जे 'फराक' उठओलक अछि ओ थीक 'नवलेखन'क प्रसङ्ग। ई शब्द आइ काल्हि ततेक ने घोंघाउजि उठाए देलक अछि जे कहल नहि जाए। जाहि देशमे जाहि परिस्थितिक कारणेँ ओ 'लेखन' चलल तकरा बिसरि मैथिलीअहुमे ओएह विषय सभक चित्रण करब 'नव-लेखन' कथमपि

नहि थीक। मिथिला तथा मैथिलीक अपन समस्या छैक, अपन समाज छैक, अपन आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थिति छैक। एहि परिवेशकें यदि छोड़ि देल जएतैक तथा विदेशी वातावरण अथवा सुदूर शहरी वातारणक चित्रण मैथिलीमे होएतैक तँ यथार्थ मिथिला तथा मैथिलीक पाठककें कहिओ रुचिकर नहि होएतैक। यावत् धरि एहि ठामक लेखकलोकनि अपनाकें एहि ठामक माँटि-पानिसँ नहि जोड़ने रहताह तावत् धरि हुनक रचना समाज कहिओ आदरक दृष्टिसँ नहि देखतनि।

....प्रयोजक कलम प्रतिबद्धता दिशि ससरलैन्हि अछि। ई विषय अत्यन्त विवादक छैक, तखन ओ किछु स्पष्ट होइत कहैत छथि जे लोकसँ प्रतिबद्ध होइ। एहिठाम विवाद समाप्ते जकाँ भए जाइछ जे बिना लोक, समाज आदिमँ प्रतिबद्ध भेने रचना होएबे कोना करत? अन्तमे, 'फराक' प्रथमहि आगमनसँ आकृष्ट कएलक। ई सएह करैत रहए एही आशामे छी।''[१]

एकर भाषा सुगठित, विचार अधिकतर परिपक्व रहैत छल, परन्तु दुःखक बात जे एहन नीक पत्रिका रहितो इहो नहि चलि सकल जे अपना समाजक उदासीनताकें नीक जकाँ रेखांकित करैत अछि।

उपरिचर्चित 'नवलेखन'सँ सम्बद्ध पत्र-पत्रिकाक विश्लेषण जेना होयबाक चाही से नहि भ' सकल अछि।। एहि हेतु हम प्रो० श्री राधाकृष्ण चौधरीक उक्तिकें दोहरबैत 'प्रत्येक युगक मनुष्य अपनाकें सबसँ बुधियार बुझैत अछि आर ई बिसरि जाइछ जे भावी सन्तानोकें सोचबाक अधिकार छैक'[२]—भविष्यमे अयनिहारक हेतु छोड़ि दैत छी।

---

१. फराक-२, पृ० ३१-३२।

२. अग्निपत्र-५-६, पृ० ७४/१।

नेपालसँ प्रकाशित किछु पत्र-पत्रिका

मध्यकालमे मैथिली साहित्यक विकासमे नेपालक स्मरणीय योगदान रहलैक अछि, परन्तु जँ-जँ समय व्यतीत होइत गेल, मैथिलीक ह्रासे होइत गेल। जखन मिथिलामे मैथिलीक हेतु पुनर्जागरणक समय अपन उत्कर्षपर पहुँचय लागल अछि तँ एकर प्रभाव नेपालपर सेहो पड़ल। हमरालोकनि जखन मैथिलीभाषीक संख्या तीन करोड़ बजैत छी तँ निश्चित रूपें नेपाल तराइमे बसनिहार मैथिलीभाषी सेहो ध्यानमे रहैत छथि। अतः मैथिलीक प्रसङ्ग जखन जे चर्चा होइत अछि तँ नेपालोक मैथिलीभाषी ओहिमे सम्मिलित रहिते छथि। एही दृष्टिएँ पत्र-पत्रिकाक विकासक चर्चाक क्रममे नेपालोक पत्र-पत्रिका पर विचार अपेक्षित भ' जाइत अछि।

ई बात निर्विवाद मानल जाय सकैछ जे नेपालक्षेत्रमे जे पुनर्जागरण भेल अछि तकर मुख्य केन्द्र जनकपुर रहल अछि तथा जनकपुरकें मुख्य केन्द्र बनयबाक श्रेय स्व० प० जीवनाथ झाकें रहलनि अछि। इएह महानुभाव जखन जनकपुरने रहय लगलाह तँ ओहिठामक मैथिलीभाषीकें अग्रसर होयबाक हेतु उत्प्रेरित कयलनि। अतः जनकपुर जँ आधुनिक उत्थानक मुख्य केन्द्र तँ जीवनाथबाबू प्रेरणाक मुख्य स्रोत रहलाह। यद्यपि इतिहासकारक दृष्टिसँ ई तथ्य अलक्षित रहल अछि। एकर पछाति प्रो० श्री धीरेन्द्र जखन जनकपुर पहुँचलाह तँ नवयुवक मण्डलीकें प्रेरित कयलनि। प्रो० श्री राजेन्द्र प्रसाद 'विमल' लिखने छथि—"कहल जा सकैत अछि जे नेपालीय मैथिली कविताक परम्परावादी कवि प० जीवनाथ स्कूलक थिकाह आ नव कविताक रचनाकार लोकनि डॉ० (?) धीरेन्द्र स्कूलक।"

एही क्रममे ओ आगाँ लिखने छथि—"१९६० पूर्वक कविमे चूड़ान्त छथि स्व० प० जीवनाथ झा। नेपालीय मैथिली साहित्य पथकें लगभग १९५० ई० सँ १९७८ धरि अथक साधनाक अखण्ड दीप-शिखासँ उद्भासित कएनिहार, संस्कृत साहित्यक गहन अध्ययन एवं दीर्घकालीन अध्यापनक फलस्वरूप रिक्थमे उर्वर कल्पना एवं आलंकारिक भाषाक विशाल कोष प्राप्त

Scanned by CamScanner

कएनिहार प० जीवनाथ झा नेपालमे बीसम शताब्दीक पहिल मैथिली कवि छथि।''[1]

एही परिवेशमे नेपालमे मैथिला पत्र-पत्रिकाक यात्रा आरंभ होइत अछि। एतय ई स्पष्ट क' देब आवश्यक जे वस्तुतः नेपालसँ प्रकाशित सब पत्र संकलन छल, पत्र नहि, हँ, 'फूलपात'केँ रजिस्ट्रेशन भेटल छलैक, परन्तु ताहिमे अनेक शर्त्त लगा देल गेल छलैक। यथा (१) कोनो प्रकारक राजनैतिक समाचार नहि छापल जाय, (२) कोनो प्रकारक राजनीतिक आलोचना प्रत्यालोचना नहि छापल जाय, (३) सम्पादकीय आदिमे कोनो राजनैतिक समाचारक अंश धरि नहि छापल जाय, (४) विशुद्ध साहित्यमे आधारित राखल जाय।''[2]

आब नेपालक पत्र साहित्यक सम्बन्धमे इतिहासकारलोकनि जे अपन-अपन विचार प्रकट कयने छथि से उद्धृत कयल जाइत अछि। डॉ० 'श्रीश' लिखनें छथि—

''एतए नेपालसँ प्रकाशित पत्रिकाक चर्चा करब सेहो आवश्यक अछि। नेपालमे मैथिली पत्रकारिताक आरम्भ जनकपुरधामक त्रैभाषिक मासिक पत्र 'नवजागरण' (१चैत २०१६ विक्रम) १९५९ ई० सँ मानल जाइत अछि। एकर मैथिली भागक सम्पादन कएल प्रो० सूर्यकान्त झा। २०२७ विक्रमवर्षमे तीन गोट पत्रिकाक प्रकाशन भेल—१-श्री सुन्दर झा 'शास्त्री'क सम्पादकत्व मे 'फूलपान' (? फूलपात) क, डॉ हरदेव मिश्रक सम्पादकत्वमे 'इजोत'क एवं श्री प्रफुल्ल कुमार 'मौन', श्री लक्ष्मण शास्त्री ओ श्री गणेश लाल कर्णक संयुक्त सम्पादकत्व मे 'मैथिली'क। एहि तीनू पत्रिकामे मिथिलांचलक ऐतिहासिक ओ साहित्यक निबन्धक अतिरिक्त नेपालमे उपलब्ध प्राचीन मैथिली साहित्यक प्रकाशन विशेष महत्व रखैत अछि। परन्तु नेपालोक पत्र-पत्रिका दीर्घायु प्राप्त नहि कए सकल आ' ने नियमित रूपेँ प्रकाशिते भेल, मुदा जतबहि दिन प्रकाशित भेल ततबहि सँ मैथिली साहित्यक महान् उपकार भेल।''[3]

नेपालक मैथिली साहित्यक विशिष्ट अध्येता प्रो० श्री प्रफुल्ल कुमार सिह ''मौन'' लिखने छथि—

१. अर्चना—४, पृ० २।
२. फूलपात, जून १९७२, पृ० 'ग'।
३. मै० सा० इतिहास, पृ० १३२।

Scanned by CamScanner

"नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्यक सृजनकेँ अक्षर जगतमे प्रस्तुत करबाक एकमात्र माध्यम छैक काठमाण्डूसँ प्रकाशित 'फूलपात' (आरम्भ २०२५ वि०), 'इजोत' (२०२७ वि०) तथा विराटनगरसँ 'मैथिली' (२०२७ वि०)। एहि संकलनपत्र सभक माध्यमसँ नेपालीय मैथिली लेखनक साहित्यिक मंचक निर्माण भऽ रहल अछि।..............."

नेपालमे मैथिली पत्रकारिताक प्रारम्भ जनकपुरसँ त्रिभाषिक मासिक पत्र 'नवजागरण' (१ चैत्र २०१६ वि०) सँ भेल जकर मैथिली भागक सम्पादक प्रो० सूर्यकान्त झा छलाह। यद्यपि ओहूसँ पूर्व श्री निर्भय शंकर लाल कर्ण 'ललित' हस्तलिखित पत्रिका 'बालसखा' निकालैत छलाह मुदा दुर्भाग्यवश ओकर एक्कोटा प्रति उपलब्ध नहि अछि। तत्पश्चात् नेपालीय मैथिलीक पत्र-साहित्यक इतिहासमे २०२७ वि० महत्वपूर्ण वर्ष मानल जायत जाहि वर्षमे 'फूलपात'क पुनर्जन्म (आषाढ़-भाद्र २०२७ वि०), 'इजोत'क प्रस्फुटन (भाद्र २०२७ वि०) एवं 'मैथिली'क आविर्भाव (विवाह पंचमी, २०२७ वि०) भेल छल।

एहि तीनू संकलनपत्र सभक माध्यमसँ नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य प्रस्तुत भऽ रहल अछि। श्री सुन्दर झा शास्त्री सम्पादित 'फूलपात'क जीवनयात्राक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि (थीक) विद्यापति विशेषांक (आषाढ़-भाद्र २०२७ वि) जाहिमे विद्यापति साहित्यक पुनर्मूल्यांकनक दृष्टिकोण प्रमुख रहल अछि। डा० हरदेव मिश्र द्वारा सम्पादित 'इजोत'क प्रथम अंक रचना-वैविध्यक एवं वैशिष्ट्यक कारणेँ स्तरीय संकलनक प्रमाण देइछ (? दैछ) मुदा ओकर दोसर संकलन प्रकाशित नहि भऽ सकल (स्मर्त्तव्य जे एहि पत्रिकाक प्रसङ्ग दरभंगासँ प्रकाशित 'इजोत' मासिकक विवेचनक सन्दर्भमे पूर्वहि कहल जाय चुकल अछि) नेपालक तेसर संकलन पत्र 'मैथिली'क (सं० प्रो० लक्ष्मण शास्त्री, प्रफुल्ल कुमार 'मौन', प्रो० गणेशलाल कर्ण) गाइड लाइन 'फूलपात' ओ 'इजोत'क अपेक्षा किछु भिन्न बुझना जाइछ। 'मैथिली'मे प्रकाशित मिथिलाञ्चलक ऐतिहासिक ओ सांस्कृतिक निबन्ध सभक अतिरिक्त प्राचीन मैथिली साहित्यक शोध-सम्पादनक प्रमुखता उल्लेखनीय अछि। 'मैथिली'क सभसँ महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मोरङ पदावली (मै० १, २), सेनकालीन मैथिली अभिलेख (मै० १, २, ५), नेपालीय शिलालेखमे उत्कीर्ण मैथिली गीत (मै० ४), मैथिली नवलेखन (मै० ५) एवं शिकार

साहित्य (मै० १,२,४)। मैथिलीमे शिकार साहित्यक बड़ अभाव छल, जकर पूर्त्ति श्री आर० पी० सिंह सन शिकारी लेखके सँ भऽ सकत।''[1]

उद्धरणीय जे श्री 'मौन' ७ नवं० १९७१क 'मिथिला मिहिर'मे नेपालक पत्र-साहित्य पर किछु विस्तार सँ सेहो लिखने छथि।

उपर्युक्त उद्धरण सभमे डा० 'श्रीश' फूलपातक प्रकाशन २०२७वि कहने छथि तथा प्रो० श्री 'मौन' २०२५ वि०। एहिमे श्री 'मौन'क कथन सैह तथ्यपरक अछि। डा० 'श्रीश' एहि तथ्यसँ अनभिज्ञ छथि जे 'फूलपात'क प्रथम अंक अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषदक सहयोगसँ प्रकाशित भेल छल, परन्तु ओकर किछुए प्रति प्रेसक गर्भसँ बाहर भ' सकल, शेष प्रेसे मे सड़ि गेल तकर कारण छल उक्त परिषदक आन्तरिक कलह।

एहि ठाम एतबा उल्लेख करब असमीचीन नहि होयत जे फूलपातक सम्पादक श्री सुन्दर झा शास्त्री पूर्वमे हिन्दीमे लिखैत छलाह जकर प्रमाण हुनक प्रकाशित प्रथम कविता-संग्रह 'परवशता' थिक, परन्तु १९५३ ई० मे शास्त्रीजी प्रवेशिका-परीक्षामे हमर सहपाठी भेलाह। ओहि समय हम "वैदेही"क सम्पादन करैत छलहुँ आ शास्त्रीजी हमरे डेरामे रहि परीक्षाक तैयारी करैत छलाह। हुनका एतहिसँ नेपालमे मैथिली साहित्यकारक संगठन क' मैथिलीमे पत्रिका प्रकाशित करबाक हेतु जे प्रेरित कयल तकरा ओ श्री ५ महाराजाधिराज महेन्द्रक ४९ म जन्मोत्सवक अवसरपर कार्यान्वित कयलनि।

फूलपातक पुनर्जन्म महारानी रत्ना राज्यलक्ष्मीक ४३म जन्मोत्सवक अवसर पर भेल। प्रो० श्री मौन जाहि विद्यापति विशेषांक केँ 'फूलपात'क चरम उपलब्धि कहने छथि से इएह अंक थिक। पहिल अंक हमरा देखबाक सुयोग नहि भेल, परन्तु एहि अंकक सम्पादकीय सँ पहिलुक अंकक आंशिक विषयवस्तुक सूचना भेटैत अछि। सम्पादकीयमे लिखल गेल अछि—

"आइ सँ करीब दू वर्ष पूर्व एहि 'फूल-पातक'क प्रथम पुष्प, नहि-नहि अंकुर, नहि-नहि अंकुरो नहि, बीज मात्र वपन भेल छल। जाहि पैघ व्यवधानक पछाति ई पुनः बहार भऽ रहल अछि से स्वतः सिद्ध करैछ जे एकर समुचित विकास मे अनेकानेक बाधा उत्पन्न भेल अछि—प्रायः रहबो करत। एहि मैथिली शिशुक ई सौभाग्य कहबाक चाही जे कहुना प्रस्तुत अंकक प्रकाशन

१. नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ० ९४-९५।

Scanned by CamScanner

सँ एकर भ्रूणहत्या नहि भऽ सकल, परन्तु अल्पायुमे एकर अकालमृत्यु भऽ जैबाक आशंका सँ ई एखनो संत्रस्त अछिए।.......

ई निस्सन्देह सुखद संयोग कहबाक चाही जे 'फूलपात'क प्रथम प्रकाशन श्री ५ महेन्द्रक ४९म जन्मोत्सवक शुभ अवसर पर भेल छल तऽ प्रस्तुत प्रकाशन श्री ५ महारानी रत्नाराज्यलक्ष्मी देवीक ४३ म जन्मोत्सवक शुभ अवसर पर भऽ रहल अछि। अन्तर अछि दूनूक विषयवस्तुमे। पहिलुक प्रकाशनक विषय कवि राजा श्री५महेन्द्रक जीवनक विविध पक्ष पर आधारित छल त' प्रस्तुत प्रकाशन मैथिली साहित्यक आलोकस्तम्भ कविकोकिल विद्यापतिक साहित्यक विविध पक्ष पर आधारित अछि।"[1]

एहि अंकमे सम्पादकक लेखनीसँ महाकवि विद्यापतिकेँ जनकवि सिद्ध कयल गेलनि अछि। एकर अतिरिक्त युगेश्वर प्रसाद वर्माक "यौवन, यौन आ' विद्यापति", डा० श्री कृष्णचन्द्र मिश्रक 'महाकवि विद्यापतिक सौन्दर्य साधना" प्रो० श्री उपेन्द्र प्रसाद 'कमल'क "विद्यापति आ अलंकार", प्रो० श्री लोकेश्वर दत्त 'व्यथित'क "पदावलीक राधा", श्री परशुराम झा, एम. ए. क "मानव सौन्दर्यक उपासक विद्यापति" तथा मीमांसक कृष्णेश्वर झाक "म. म. कविकोकिल विद्यापति ठाकुर : एक परिचय" शीर्षक निबन्ध सब प्रकाशित अछि।

एही अंकसँ दू अंक धरि दू पाँती मे एकर आप्तवाक्य छपल अछि—

"चमकि नेपालक नील-गगनमे मैथिलीक ई तारा।
डुबि न जाय से सरिपहुँ पाठक ! अपने पर अछि भारा।।"

यद्यपि एहि पत्रिकाक प्रायशः प्रत्येक अंकमे नेपाल नरेशक अनेक प्रकारक अभ्यर्थना, स्तुति ओ बिरुद गाओल गेल अछि, तथापि एकरा कोनो प्रकारक सरकारी साहाय्य नहि प्राप्त भ' सकलैक आ संभवतः सात अंक धरि प्रकाशित भ' ई तारा डूबि गेल।

मैथिली

विराटनगरसँ प्रकाशित 'मैथिली" नामक पत्र-संकलनक एको प्रति देखबाक संयोग हमरा नहि भ' सकल। अतः एहि प्रसङ्ग प्रो० श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' जे मन्तव्य प्रकट कयने छथि, जकर एक झलक उपरि-

१. फूल पात, वर्ष २, अंक १, पृ० क, घ।

लिखित उद्धरणमे भेटैत अछि से उद्धृत करैत छी। विस्तारसँ विचार करैत प्रा० श्री 'मौन' लिखने छथि...

"नेपालक तेसर संकलनपत्र अछि मैथिली साहित्य परिषद, विराटनगर सँ प्रो० लक्ष्मण शास्त्री, प्रो० प्रफुल्ल कुमार 'मौन' एवं प्रो० गणेशलाल कर्णक संयुक्त सम्पादकत्वमे प्रकाशित त्रैमासिकी 'मैथिली'। मैथिलीक प्रकाशनारंभ अगहन २०२७क जानकी जन्म जयन्तीक शुभ अवसर पर भेल छल जे आइ धरि त्रैमासिक संकलनक रूपेँ नियमित छपि रहल अछि। मैथिलीक प्रकाशित तीनटा अंक सभकेँ देखि ई कहल जा सकैत अछि जे फूलपात एवं इजोतक अपेक्षा मैथिलीक 'गाइडलाइन' किछु भिन्न छैक। मुदा ई भिन्नते विशेष उल्लेखनीय अछि। 'मैथिली'मे कथाक जतेक अभाव छैक ओतेक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक निबन्ध सभक बहुलता। उदाहरणार्थ प्रो० प्रफुल्ल कुमार 'मौन'क मोरङक मैथिली लोक साहित्य, श्रीमती राज कुमारी कर्णक 'मिथिलाक पावनि तिहार', प्रो० लक्ष्मण शास्त्रीक 'महत्तरीक सांस्कृतिक परिवेश, पंचकोशी परिक्रमा, प्रो० गणेशलाल कर्णक मिथिलाक लोक चित्र कला, श्रीमती राजकुमारी सिंहक मोरङ पदावली, डा० वेचनक आधुनिक मैथिली साहित्य, प्राचार्य राधाकृष्ण चौधरीक विराट कल्पना : एक दृष्टिकोण, डा० परमेश्वर मिश्रक नेपालमे मैथिलीक विकास आदि सन महत्त्वपूर्ण निबन्ध, सौमित्रि, प० जीवनाथ झा, कुँवर कान्त, राम नारायण आदिक परम्परित एवं आधुनिक भावबोधक कविता सभक अतिरिक्त श्री आर० पी० सिंहक शिकारकथा (नङरा बाघ, गोहिक शिकार) विशेष रोचक एवं पठनीय बनि गेल अछि। मैथिली मे एखन धरि शिकार कथाक बड़ अभाव छल, जकर पूर्ति श्री आर० पी० सिंहसन शिकारी लेखके सँ भऽ सकत।..........

मैथिलीक सभसँ पैघ उपलब्धि अछि शिकार कथाक अतिरिक्त श्रीमती राजकुमारी सिंह द्वारा संपादित—मोरङ पदावली। एहि पदावलीक माध्यम सँ जे प्राचीन मैथिली पद सभक पाठोद्धार भऽ रहल अछि से शोध-जगतमे महत्त्वपूर्ण मानल जायत।........मैथिलीक चारिम अंक (भाद्र...कार्त्तिक २०२८) एहि उद्धारकार्य मे रमि गेल अछि। एहि अंकमे डा० श्री रामदेव झा कण्ठमाण्डूक शिलालेख सभक मैथिली गात सभक पाठोद्धार कऽ प्रस्तुत कयलनि अछि। मैथिली ४ क संपादकीय 'नेपालक शिलोत्कीर्ण गीताञ्जलि' सेहो महत्त्वपूर्ण अछि।........

Scanned by CamScanner

अन्ततः एहि मैथिली संकलनपत्र सभक उज्ज्वल भविष्यक संभावना छैक, जँ ओ सभ नियमित प्रकाशित हो एवं अधिकाधिक मैथिली लेखक एवं पाठक सबकें आकृष्ट क' सकय।''[1]

एहि पत्रक प्रसङ्ग एही उद्धरणसँ सन्तोष करय पड़त। परन्तु उपरि-चर्चित तीनू संकलन अतीतक अन्धकारमय गर्त्तमे चल गेल।

अर्चना

उपर्युक्त तीनू संकलनकें अकाले कालकवलित भ' गेलाक बाद पुनः जनकपुरसँ युवा साहित्यकार श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क सत्प्रयाससँ ओ हिनके सम्पादकत्वमे 'अर्चना' नामक द्वैमासिक एहने पत्रसंकलनक प्रकाशन प्रायः १९७८ ई० सँ आरम्भ भेल अछि जे एखनहु प्रकाशित भ' रहल अछि। एकर पूस २०३६ वि०मे प्रकाशित तेरहम संख्या हमरा समक्ष अछि।

आरम्भसँ एकर सब अङ्क देखबाक सुयोग नहि भेल अछि, परन्तु जे किछु अङ्क दृष्टिपथ पर आयल अछि ताहिसँ एहि युवा साहित्यकारक साहसक प्रशंसा करब समुचित प्रतीत होइछ। नेपालसँ प्रकाशित पत्र-पत्रिकाक परम्पराकें जीवित राखब एतबोसँ प्रशंसाक पात्र भ' जाइत छथि। ओना विषयवस्तुक दृष्टिसँ अथवा भाषाक दृष्टिसँ सम्पूर्ण संकलन स्तरक निर्वाह नहि क' पबैत अछि। सम्पादक नवलेखनक प्रति विशेष आकृष्ट छथि, परन्तु नवलेखनक दृष्टिएँ कोनो विशेष उपलब्धि एकरा नहि मानल जाय सकैत अछि। हँ, एकटा आगि, जे मातृभाषा-प्रेमक आगि थिक, तकरा जरैत रखबाक दिशामे ई एक प्रयास अवश्य मानल जायत। सम्पादक लिखने छथि—

''.........भोगल यथार्थकें सहज रूपसँ इमान्दारीपूर्वक राखि देब नव कविताक धर्म थीक। एत्त वैयक्तिक अनुभूति सार्वजनिक भऽ जाइछ अथवा ई कहल जाय जे जे वस्तु वैयक्तिक स्तरपर लिखल गेल होइतो जन-जनक स्वयं केर भोगल स्तर धरि पहुँचि जाइक इएह थीक नव कविताक विशेषता। सम्प्रेषणीयताक सहजता जहिना नवकविताक हेतु आवश्यक तहिना संप्रेषणीयतामे दुरूहता एकर धर्ममे बट्टा लगा दैत छैक। हमरा जनैत नवकविताक सहजता पूर्ण रूपेण जनसाधारण स्तर धरि रहब जरूरी छैक।

---

१. मिथिलामिहिर, ७ नवंबर, १९७१, पृ० २४।

Scanned by CamScanner

से एहन सहजताक निर्वाह नेपालीय मैथिली नव-कविता एखन धरि कए रहल अछि, बरु आर बेसी यथार्थ भेलैक अछि। एखन धरि साधनालीन कविलोकनि अपन भोगल यथार्थकेँ खूब ईमानदारीपूर्वक रखैत रहलाह अछि जे विश्वक कोनो नवकविता विधाक स्तरक आगाँ ठोस रूपेँ टिकबाक सामर्थ्य बना लेलक अछि।

'अर्चना'क ई खण्ड एकर एकटा छोट-छीन उदाहरण रूपमे अपनेक समक्ष राखल गेल अछि। एहिमे संगृहीत कविता बड़ थोड़ भ' सकल अछि मुदा जे अछि से नेपालीय मैथिली नव कविताक स्वरूप दीशि संकेत अवश्य करैत बुझाएत।"[१]

एहिमे जे सहजता एवं सम्प्रेषणीयताक बात कहल गेल अछि से केवल नव कविताक धर्म नहि थिक, प्रत्युत साहित्य मात्रक हेतु सामान्य रूपेँ लागू होइत अछि। एकरे प्रसाद गुण कहल गेल अछि। परन्तु नव कवितामे सम्प्रेषणीयताक अभाव देखल जाइछ। उद्धरण पढ़लासँ विचारक अपरिपक्वता स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित होइत अछि। जाहि रचना सबकेँ सम्पादक उदाहरण रूपमे उपस्थित कयने छथि से हिनके कसौटीपर सही नहि उतरैत छनि। विस्तारक भयसँ उदाहरण उपस्थित करब संभव नहि अछि। जिज्ञासु व्यक्तिकेँ अर्चना—४क अनुशीलन करबाक चाहियनि।

भाषाकेँ परिमार्जित क' प्रकाशनक हेतु देब सम्पादकक उत्तरदायित्व होइत अछि। किन्तु भाषापर पूर्ण अधिकार बिनु प्राप्त कयने सम्पादनक उत्तरदायित्व ग्रहण क' लेब आधुनिक प्रवृत्ति भ' गेल अछि। एहि ठाम उदाहरणार्थ मात्र दु गोट वाक्य उपस्थित कयल जाइछ—"ने जानि राममे ओ पौरुष कतऽसँ आबि दीपित भऽ गेलैक। आर हुनक शोभा द्विगुणित भऽ उठलैक।"[२] जेँ हेतु पौरुषक आधार 'राम' छथिन तेँ पौरुष दीपित भ' गेलनि ई आदरार्थके प्रयोग समुचित होयत। एहिना दोसर वाक्यमे शोभा हुनक थिकनि तेँ द्विगुणित भ' उठलनि होयबाक चाही। ई दूनू वाक्य एक सिद्धहस्त लेखकक लेखनीप्रसूत थिकनि। एहि प्रकारक भ्रान्तिकेँ दूर करब सम्पादकक काज थिकनि। परन्तु सिद्धहस्त लेखकक जखन ई हाल अछि तखन ई अल्प अनुभव रखनिहार सम्पादक कहाँ धरि सम्हारथु! अस्तु।

---

१. अर्चना—४, पृ० 'ख'।

२. अर्चना—११, पृ० ७।

Scanned by CamScanner

'अर्चना' नेपालमे एक मात्र एहन पत्रिका अछि जे मातृभाषाक अर्चनामे अपन सम्पूर्ण शक्ति समर्पित कयने अछि । नव-पुरान दूनूकें समेटने ई संघर्ष पथपर अग्रसर भेल जा रहल अछि । अतः सर्वथा प्रशंसाक योग्य अछि । हँ, एकटा प्रवृत्ति जे दृष्टिमे आयल ताहि दिस सम्पादककें सावधान रहब परमावश्यक । एक कविता 'आयल वसन्त' शीर्षक पढ़लहुँ जकर स्वरूप निम्नांकित अछि—

"विरह बसन छोड़लि बरनागरि, बुझि आगम मधुमास ।
शुभ्र-शीत-जल स्नात गात भए, विरह ताप देल त्रास ।
आयल सखि ऋतुराज वसन्त, धाओल अलिकुल माधवि पंथ ।
दिनकर किरण भेल पौगण्ड, केसर कुसुम धएल हेमदण्ड ।
उन्मादक झूलापर झुलैत, मधुराशिक पिचकारी भरैत ।
वल्लिक अञ्चल चञ्चल करैत, मलयानिल नचइत अछि दिगंत ।"[1]

मैथिलीक अध्येताक हेतु ई कहबाक प्रयोजन नहि जे उपर्युक्त कवितामे किछु पंक्ति महाकवि विद्यापतिक तथा निचला दू पंक्ति स्व० उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क थिकनि । खेद जे ई एक प्रो० आशा सिन्हाक नामसँ छपल अछि, कोनो नेनाक नामसँ नहि । एक प्राध्यापककें कवि बनबाक लालसासँ एहन आचरण नहि करबाक चाहिऐनि । एहि ठाम संस्कृतक एक श्लोक स्मरण होइछ—

"कविरनुहरतिच्छायां भावं कुकविः पदं चौरः ।
सकलपदावलिहर्त्रे साहसकर्त्रे नमस्तुभ्यम् ।।"

अर्थात् कवि छाया मात्रकें ग्रहण करैत छथि, कुकवि अनकर भावकें, चोर आन कविक पदकें, परन्तु सम्पूर्ण पदावलिएक हरण कयनिहार अहाँकें नमस्कार । एकर प्रत्यक्ष उदाहरण उपर्युक्त पदकें कहल जाय सकैत अछि । अस्तु ।

हमरा दृष्टिपथपर जतेक अङ्क आयल अछि ताहि सबमे किछु एहन रचना अवश्य अछि जाहिसँ मैथिली साहित्यक भण्डारमे अभिवृद्धि भेल अछि । जेना प्रो० राजेन्द्र प्रसाद 'विमल'क 'नेपालीय मैथिली कविता (अर्चना-४), 'शक्ति उपासनाक परम्परा'—लेखक प्रो० श्री धीरेन्द्र,

---

१. अर्चना—११, पृ० ४ ।

(अर्चना-१०), डॉ० श्री प्रफुल्ल कुमार 'मौन'क 'मैथिली लोकगीतमे राम विवाह' (अर्चना–११), श्री राजेन्द्र किशोरक 'नेपालमे मैथिली रंगमंचक स्थिति' (अर्चना–१२)। एकर अतिरिक्त नेपालक भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री मातृका प्रसाद कोइरालाक संग नेपालमे मैथिलीक स्थितिक सम्बन्धमे सम्पादकक 'विशेष अन्तरवार्त्ता' राजनीतिक दृष्टिएँ अपन विशेष महत्त्व रखैत अछि। कारण मैथिलीकें अन्तरराष्ट्रिय भाषा होयबाक गौरव प्राप्त छैक, परन्तु राजनीतिक अधिकार एखन धरि भारतवर्षहुमे एकरा प्राप्त नहि भ' सकलैक अछि ई सर्वविदित अछि। नेपालोमे मात्र शिक्षाक क्षेत्रमे मैथिलीक प्रवेश भ' सकलैक अछि। प्रशासनिक कार्य वा न्यायालयमे एखनहु उपेक्षित अछि। भारतवर्ष तँ एक विशाल देश अछि, जाहि ठाम मैथिलीभाषीक संख्यासँ अधिको संख्यामे कतिपय भाषाभाषी छथि, परन्तु नेपालमे मैथिली दोसरे स्थानपर अछि। सत्योकें एक राजनेताक मुहसँ उच्चरित भेला उत्तर आजुक युगमे बल भेटैत छैक। अतः उपर्युक्त वार्त्ताक किछु अंश उद्धृत कयल जाइत अछि। सम्पादक लिखने छथि—

"सभसँ पहिने श्रद्धेय मातृका बाबूकें हम पुछैत छीएनि (?) जे मैथिली भाषा-संस्कृतिक सम्बन्धमे अपनेक की विचार अछि?

ओ हँसैत छथि—एहो पुछए पड़त। जगजाहिर अछि, तथापि हम कहब जे मैथिली भाषा एहि देशक एकटा महत्त्वपूर्ण भाषा अछि। राष्ट्रिय जन-गणनाक आधारपर दोसर नम्बरक भाषा थीक। प्रादेशिक भाषा सभमे ई सभसँ बेसी समृद्धिशाली अछि। एकर अपन साहित्य छैक, लीपि (?) छैक तएँ एकर उद्धार हएब जरूरी। एकर संवर्द्धन, संरक्षण हएब जरूरी।"[1]

एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे साहित्यक श्रीवृद्धिक संग राजनीतिक अधिकार-प्राप्तिक दिशामे सेहो ई पत्रिका सचेष्ट अछि। एकर अस्तित्वे एकर उपलब्धि थिक।

---

१. अर्चना—११, पृ० १।

Scanned by CamScanner

उपसंहार

मैथिली भाषामे पत्रकारिताक आरम्भ १९०५ ई०सँ भेल। आधुनिक युग चन्दा झाक आविर्भावक कालसँ मानल जाइत अछि। डॉ० ग्रियर्सन जाहि चेतनाकेँ उद्‌बुद्ध कयने छलाह तकरा अग्रसारित करबाक श्रेय सर्वोपरि चन्दा झाकेँ देल जाइत छनि। मैथिलीमे एमहर पत्रकारिताक आरम्भ होइत अछि आ मात्र दू वर्षक बाद चन्दा झाक अवसान होइत छनि। एहन सन प्रतीत होइत अछि जे पत्रकारिताक आरम्भ भ' गेलाक बाद प्रायः चन्दा झा आश्वस्त भ' गेल होयताह जे आब मैथिली विकासक मार्गपर पहुँचि गेल अछि। ई जाग्रत चेतना आब पुनः सुषुप्त नहि होयत। ई विश्वास यथार्थे छलनि।

मैथिली पत्रकारिताक एहि ७५ वर्षक इतिहास देखलासँ ई निश्चित धारणा बनैत अछि जे ओहि आरम्भिक कालमे म० म० प० परमेश्वर झा, बाबू तुलापति सिंह, म० म० मुकुन्द झा बख्शी, कविवर लाल दास आदि जे मैथिलीमे कलम भँजैत रहलाह से पत्र-पत्रिकेक अनुरोधसँ। एही लाथेँ मैथिलीमे बहुत-किछु लिखाइत रहल आ आधुनिक कालमे जे मैथिलीक महल ठाढ़ भ' रहल अछि तकरा न्योंमे हिनके लोकनिक साधना आधारक काज क' रहल अछि। पारस्परिक प्रतिस्पर्धा जहिना एकसँ अनेक पत्रक प्रकाशनक मार्गकेँ प्रशस्त कयलक तहिना एक दोसरकेँ सर्जनात्मक कार्यक हेतु प्रेरित सेहो करैत रहल।

मैथिली पत्र-पत्रिकाक अनुशीलनसँ ईहो स्पष्ट होइत अछि जे जँ हिन्दीक तथाकथित समर्थक मैथिलीकेँ आत्मसात् करबाक विफल चेष्टा नहि कयने रहितथि तँ कालकक्रमे अवधी, व्रजभाषा, रांजस्थानी आदि भाषा जकाँ मैथिली सेहो अनायास हिन्दीक पेटमे गेल रहैत। ओ तँ जहिना जहिना मैथिलीक विरुद्ध षड्यन्त्र कयनिहार सक्रिय होइत गेलाह, तहिना-तहिना मैथिली क्षेत्रमे प्रतिक्रिया होइत गेलैक। ओहि समय 'मिथिलामोद'क जेहन भूमिका रहलैक, यदि 'मिथिला-मिहिर' ओकर संग पुरने रहितैक तँ भारतक संविधान बनबाक समय जेना मैथिलीभाषी क्षेत्र राजनीतिक चेतनाक अभावमे पछुआयल रहि गेल, एहन समृद्ध भाषा होइतो मैथिली

Scanned by CamScanner

उचित न्यायय अधिकार प्राप्त करबासँ वंचित रहि गेल, से प्रायः नहि होइत।

मैथिली पत्रकारिताक सबसँ पैघ त्रुटि रहलैक जे ई एकांगी रहल। सम्पूर्ण मिथिला ओ मिथिला-निवासीक समस्याकेँ अपन समस्या नहि बुझलक। मैथिल महासभाक संकुचित नीतिक जँ एक दिस कटु आलचोना होइत छल तँ दोसर पत्रक माध्यमसँ तकर समर्थन। परिणामतः मैथिल शब्द ततेक सीमित अर्थमे प्रयुक्त होअय लागल जे भाषा पर्यन्त पर ओकर दुष्प्रभाव पड़ि गेलैक। ओ संकीर्ण दृष्टिकोण सर्वत्र राखल गेल। मै० महासभाक नीतिक विरोधी जे पत्र छल सेहो यदि कोनो सामाजिक सुधारक प्रसङ्ग विचार व्यक्त करैत छल तँ ओ समस्या वर्ग-विशेषक रहैत छलैक।

धर्मप्राण ई मिथिला क्षेत्र, धर्मक संरक्षक ब्राह्मण समुदाय तथा सनातन धर्मक विरोधी युगक वातावरण। अतः धर्मक रक्षाक हेतु मैथिली पत्र अपन अधिक शक्ति लगौने रहैत छल। एकदिस वर्णाश्रमक विरोधी वातावरण आ दोसर दिस वर्णाश्रमक रक्षार्थ मैथिली पत्रक प्रयास। परन्तु एहि प्रयासमे सफलता नहि भेटलैक। युगक प्रवाह ततेक प्रखर रहलैक अछि जे आश्रम तँ पहिने टूटि चुकल छल, वर्ण सेहो आब टूटि रहल अछि। फलतः एहू हेतु कयल प्रयास निरर्थके भेलैक।

पत्रक स्वर एकजातीय रहलाक कारणेँ पाँजि-पाटिक चरमराइत चारकेँ बचयबाक चेष्टा सेहो होइत रहल, परन्तु जखन वर्णक रक्षा कठिन भ' रहल अछि तखन पाँजि-पाटि बाँचि सकैत तकर कोन कल्पना?

विगत ५० वर्ष धरिक पत्रपत्रिकामे अनमेल विवाह ओ काटर प्रथाक विरुद्ध आन्दोलनात्मक रुखि देखबामे अबैत अछि, परन्तु समाज बहिरी करैत जकाँ किछु सुनबाक हेतु प्रस्तुत नहि। विशेषतः ब्राह्मण-समाजमे आरम्भमे कन्याक प्रति आ बादमे बालकक प्रति टाका गनयबाक प्रथा जोरे पकड़ैत गेल अछि। बाल-विवाह अथवा वृद्ध-विवाह आब नहि होइत अछि से समयानुसार परिस्थिति बदलि जयबाक कारणेँ, पत्र-पत्रिका द्वारा आन्दोलनक प्रभावेँ नहि।

एहि सब दिशामे यदि पत्र-पत्रिकाक प्रयास सार्थक सिद्ध नहि भेलैक तँ से एहि हेतु जे युगक वातावरण सर्वथा तकर प्रतिकूल छलैक, परन्तु भाषाक संरक्षण ओ गद्यक विकासमे पत्र-पत्रिकाक योगदानकेँ अमूल्य कहल जाय सकैत अछि। पद्य साहित्य तँ स्वाभाविक गतिएँ विद्यापतिसँ अद्यावधि अल्प वा अधिक मात्रामे लिखल जाइत रहल, परन्तु कथा, उपन्यास, समीक्षा,

Scanned by CamScanner

निबन्ध, एकांकी, नाटक आदि विशेष परिमाणमे लिखल जा सकल तकर श्रेय पत्र-पत्रिकाकेँ सर्वोपरि छैक। एही संग भाषाक प्रसङ्ग थोड़ेक राजनीतिक चेतनाक उदय सेहो एकरे माध्यमसँ भ' सकल अछि। हँ, भाषाक स्वरूप एखनहु स्थिर नहि भ' सकल अछि तकर दोष किछु दुराग्रही लोकक जिद्दकेँ देल जाय सकैत अछि। 'मिथिला-मोद' अपन बीस वर्षक जीवनमे जे एकरूपता अनबाक प्रयास कयने छल तकरा साहित्य-पत्रक प्रकाशनक बाद बदलल गेल आ एमहर विगत बीस वर्षसँ 'मिथिला-मिहिर' द्वारा जे स्वरूप स्थिर भेल जा रहल छल तकरा नवका पाठ्यग्रन्थ ओ मैथिली-अकादमीक किछु प्रकाशनसँ मेल नहि खाइत छैक। परिणामत: अपन-अपन लेखन-शैली "मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना" एही कथनकेँ सार्थक क' रहल अछि। हमरा तँ एहन प्रतीत होइत अछि जे मुजफ्फरपुरसँ पूर्णियाँ धरि आ देवघरसँ नेपाल तराइ धरिक लोकमे जहिना-जहिना मातृभाषाक महत्वक अनुभव कयल जायत आ सम्पूर्ण क्षेत्रसँ लेखकवृन्द मातृभाषाक सेवाक क्षेत्रमे प्रवेश करताह तहिना-तहिना तत्तत् क्षेत्रक शब्दावली तथा ध्वनि साहित्यमे प्रवेश करैत जायत। तखन जे भाषाक स्वरूप स्थिर भ' सकत ताहिमे स्थायित्वक संभावना।

एमहर भाषापर थोड़ेक संकट बढ़ले गेल अछि। बहुतो स्थानीय शब्द जनकण्ठसँ लुप्त भेल जा रहल अछि आ विज़ातीत शब्द प्रवेश कयने जा रहल अछि। एखनधरि जाहि वर्गविशेषक भाषा मैथिलीकेँ कहल जाइत रहल अछि ताहू वर्गमे ई संक्रमण देखल जाइत अछि। आब सौराठ सभामे वर, कन्या, विवाह, काटर, व्यवस्था, बिख्या आदि शब्दक स्थानपर लड़का, लड़की, शादी, दहेज, दुलहा आदि शब्द अधिकार कयने जाइत अछि। दृष्टि-कोणक उदारताक नामपर एहने शब्दावलीकेँ आत्मसात् कयलासँ भाषाक स्वतन्त्र व्यक्तित्व बाधित होइत जायत। मैथिलीभाषी सब पाठक अंग्रेजी जनिते होथि, एहन स्थिति तँ एखनहु नहि आयल अछि। हँ, अंग्रेजीक किछु शब्दावली एहन अवश्य प्रचलित अछि जाहिमे मूर्खो, निरक्षरो लोक सुपरि-चित भ' गेल अछि, जनसामान्य ओहि शब्द सभक अबाध प्रयोग करैत अछि। तेहन शब्दक प्रयोग जँ साहित्यमे होइत अछि तँ तकरा अवाञ्छनीय नहि कहल जा सकैत अछि, परन्तु नव तूरक लोक जाहि प्रकारेँ कथा वा कवितामे अंग्रेजी शब्दक समावेश क' रहल छथि से सामान्य पाठकक हेतु अपच रहैत अछि।

Scanned by CamScanner

मैथिली भाषा, जकरा पुनरुज्जीवित करबाक सर्वोपरि श्रेय मैथिली पत्रकारिताकेँ छैक, एखनहु स्वतन्त्र भारतक अन्य क्षेत्रीय भाषाक समान ने तँ अधिकारे प्राप्त क' सकल अछि ने साहित्यमे समकक्षते। अतः मैथिलीक आन्दोलन अपन लक्ष्यप्राप्तिसँ एखनहु दूरे अछि। हिन्दीक ओ कहबी "दिल्ली अभी दूर है" मैथिलीक हेतु एखनहु चरितार्थ भ' रहल अछि। शिक्षाक क्षेत्रमे मैथिलीक प्रवेशसँ आजीविकाक संग एकर सम्बन्ध मात्र जुड़ल छल; बिहार-लोक-सेवा-आयोगमे प्रवेश भेलासँ ओ सम्बन्ध किछु अंशमे दृढ़ भेल अछि, परन्तु ई सम्बन्ध सुदृढ़ होयत सांविधानिक मान्यता प्राप्त कयला उत्तर, जाहि हेतु एखनहु पर्याप्त प्रयास अपेक्षित अछि।

मिथिलानिवासी एखनहु बंगालक निवासी जकाँ अपना मातृभाषाकेँ नहि चीन्हि सकलाह अछि। आजीविकाक संग एकर सम्बन्ध जतेक दृढ़सँ दृढ़तर भेल जायत ततेक अधिक संख्यामे एहि प्रति लोकक आकर्षण बढ़ल जायत। 'मिथिला-मिहिर' ओ आकाशवाणीक माध्यम सँ जहियासँ किछु अर्थोपार्जन होयबाक संभावना भेल अछि, केहन-केहन हिन्दीक कट्टर समर्थक ओ मैथिलीक कट्टर विरोधी मैथिली दिश घुसकुनिया देब' लगलाह अछि। यदि केन्द्रीय लोक-सेवा-आयोगमे एकर प्रवेश भ' जाइक तँ स्वतः सम्पूर्ण मिथिलावासी एहि दिस आकृष्ट होयताह।

भाषाक राजनीतिक कारणेँ मैथिलीभाषी क्षेत्रकेँ खण्ड-पखण्ड करबाक जे दुरभिसन्धि एखन चलि रहल अछि, बहुत अंशमे तकरो निराकरण होयबाक संभावना एहिसँ बढ़ि जायत। परन्तु ई सब काज केवल प्रस्ताव पास कयलासँ होयत तकर आशा करब व्यर्थ थिक। एहि हेतु जनमतकेँ जगबय पड़त, जन-जन धरि पहुँचय पड़त। जेँ हेतु मैथिली पत्रकारिता एखन धरि पूर्ण विकास नहि पाबि सकल अछि, तेँ मिथिला क्षेत्र सब क्षेत्रमे पछुअयले अछि। एहि हेतु अनेक दैनिक पत्र आवश्यक अछि। अनेकक स्थान पर एकोटा दैनिक एखनधरि नहि प्रकाशित भ' सकल अछि, जाहिदिश एहि क्षेत्रक विकासक कामना रखनिहारकेँ गम्भीरतासँ सोचबाक चाहियनि। एहि क्षेत्रक विधायक ओ सांसद आइधरि एकजुट भ' अपन कर्त्तव्यक पालन करबाक प्रयास नहि कयलनि अछि। एहि बातक चिन्ता सेहो सबकेँ नहि छनि। यदि आइ आभास भेटि जाइनि जे जँ हम एहि दिशामे प्रयत्नशील नहि होयब तँ दोसर खेप जनताक सोझाँ मुह देखयबाक योग्य नहि रहब,

Scanned by CamScanner

तखने ओ लोकनि एहि दिस प्रवृत्त होयताह। जनताक सोझाँ मुह देखयबाक योग्य ओ तखने रहि सकैत छथि जखन मिथिलाञ्चलक जनता अपन मातृभाषाक महत्वकें चीन्हि जायत। से काज दैनिकेक माध्यमसँ सम्भव होयत।

ओना नवयुवक वर्गमे क्रमश: चेतना जागि रहल अछि, परन्तु एकर गति अतिशय मन्द अछि। एहिमे तीव्रता अनबाक हेतु सेहो यथाशीघ्र पत्रकारिताकें पूर्ण विकसित करबाक दिशामे प्रयास अपेक्षित अछि। देखी जगज्जननी मैथिली कहियाधरि ई सद्बुद्धि उत्पन्न करैत छथि!

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट (क)

[‘मिथिला-मोद’, उद्‌गार १०७मे पं० वैद्यनाथ मिश्र ‘विद्यासिन्धु’ रचित मिथिलाक्षरक आकारक शब्द चित्र ।]

वर्णोद्धार अन्तरालाप पिहानी

चरण कमल वन्दन करी हमरा नहिँ मति छूति ।
करथु कृपा सब मात्रिका कवियश जनिक विभूति ।।

अर्द्धचन्द्र काँ पेन फराठी, ओनिआ लागल माथाँ लाठी ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान ‘आ’दिहि पाबथि चतुर सुजान ।।१।।

आधा सड़सी ढेकुल माथ, पाँजर ठेङा ओकरा साथ ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, ‘इ’जड़क जड़ि धए कहथि सुजान ।। २।।

आधा सड़सी देखी ठाढ़, माथाँ अर्द्धचन्द्र छवि काढ़ ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, ‘उ’रिदक जड़ि धए कहथि सुजान ।।३।।

कोनिआ खाम्ही ऊपर बरि, बीचहुँ बाती खाम्ही धरि ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, ‘ऋ’तुमूलहि कह चतुर सुजान ।।४।।

बुढ़िया बैसलि पएर पसारि, निहुड़ल ठेहुन रहै निहारि ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, ‘ए’कक आदिहि कहथि सुजान ।।५।।

बुढ़िया बैसलि पएर पसारि, माथ ठाढ़ एक लट फटकारि ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, ‘ऐ’पन आदहि कहथि सुजान ।।६।।

एक ठाम दुइ चुलहा जोड़ल, सभटा ओकर पुत्ता तोड़ल ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, ‘ओ’छक मूलहिँ कहथि सुजान ।।७।।

दुइ चुलहाकेर पुत्ता तोड़ल, बीचहि ठाढ़ि सूड़ एक जोड़ल ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, ‘औ’षधक आदिहि कहथि सुजान ।।८।।

कोनिआ चारक मोड़ल सूड़, खाली पेट बड़ेरी मूड़ ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, ‘क’टक किनारे कहथि सुजान ।।९।।

एकहरी नर भल गुड़गुड़ी, नहिँ चीलम नहि माटिक कूड़ी।
विद्या सिन्धु पिहानी भान, 'ख'लक मूल धए कहथि सुजान ॥१०॥

विना कोल्हुकेर मोहनि टेढ़, ढेकुल लागलि बाँस अधेड़।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, 'ग'म्हड़िक जड़ि धए कहथि सुजान ॥११॥

दुइ गेठरी पिठि लाठी माथ, मनुष ठाढ़ छथि काटल हाथ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, पहिला 'व'र केर कहथि सुजान ॥१२॥

आधा सड़सी उनटा कएल, ऊपर औन्हल बटट्टुक धएल।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, भा'ङ'क अन्तहि कहथि सुजान ॥१३॥

भाँटा टाङल तानल जौड़ि, खाली पेट भेट बिनु कौड़ि।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, जड़ि 'च'रखा केर कहथि सुजान ॥१४॥

भांटा टाङल तानल रस्सी, नीचाँ लटकल आधा सड़सी।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, गा'छ'क ऊपर कहथि सुजान ॥१५॥

आधा सड़सी लागनि लटकल, माथाँ सोझ फराठी अटकल।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, माँझहि क'ज'रिक कहथि सुजान ॥१६॥

उनटा नकुसी दुइ गोट साथ, लाठी राखल देहक माथ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, माँ'झ'क अन्तहि कहथि सुजान ॥१७॥

बुढ़िया बैसलि पएर पसारि, दुइ गोट गठरी पीठि सुधारि।
विद्यासिन्धु पिहानी भान झ'ञा'ड़ा आदिक अगिला जान ॥१८॥

गैँचल गैँचा धरती ठाढ़, एक सूँड़ बाढ़ल बिच घाड़।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, बा'ट'क ओड़हि कहथि सुजान ॥१९॥

ऊपर डंटी भाँटा राखल, जीभ कष्ट किछु जँ जन चाखल।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, पा'ठ'क अन्तहि कहथि सुजान ॥२०॥

आधा सड़सी नहिँ वयौ साथ, केवल सोझ फराठी गाथ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, 'ड'मरू मूलहि कहथि सुजान ॥२१॥

काटल कुकुरक नाङड़ि एक, माथाँ सोझ फराठी टेक।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, 'ढ'क्कक जड़िभ कहथि सुजान ॥२२॥

नीचा ओछ उपर किछु बढ़ल, आँकुश एक अनारिक गढ़ल।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, गे'ण'क अन्त धए कहथि सुजान ॥२३॥

Scanned by CamScanner

घुटमुटार मानवकेर कान, तकरा ऊपर डोरी तान।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, बा'त'क अन्तहि कहथि सुजान ।।२४।।

औन्हल मौनी वामा पाखा, ऊपर लागल खाली आँखा।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, 'हाथ'क अगिला कहथि सुजान ।।२५।।

मानुष बैसल ठेहुन मोड़ि, बाँस माथपर कड़ची छोड़ि।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, व'द'न बीच कह चतुर सुजान ।।२६।।

चौकी पर हरबाहक डाँड़, बालक बैसल तिरछा घाड़।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, 'ध'रतिक जड़ि धए कहथि सुजान ।।२७।।

उनटा नकुसी फुदनादार, ऊपर सोझ फराठी धार।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, धा'न'क दोसर कहथि सुजान ।।२८।।

ठाढ़ कएल एक छूरी मोड़ल, पैघ फान आँकुश सिर जोड़ल।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, कहथि 'प'हाड़क मूल सुजान ।।२९।।

खाली आँखा मोड़ल सूड़, रोलल सोझ फराठी मूड़।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, मूल 'फ'राठिक ताक सुजान ।।३०।।

कोनिआँ चारक ऊपर बरि, गोड़िक नीचाँ चौकी सरि।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, 'ब'ड़क जड़ि धए कहथि सुजान ।।३१।।

लोलदार मुह मोड़ल ठेङा, ऊपर राखल पातर हेङा।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, डा'भ'क अगिला कहथि सुजान ।।३२।।

चौकोना एक खेत अनूप, नीचाँ वामा कोनिआ कूप।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, गा'म'क ओड़हि कहथि सुजान ।।३३।।

बिनु जाठिक एक पोखरि गोट, घाट कतहु नहिँ पाटक छोट।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, 'य'वक जड़ि धए कहथि सुजान ।।३४।।

तेकुना खेतक बीचहुँ आरि सोझ बाट लागल उपरारि।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, 'र'थक मूल धए कहथि सुजान ।।३५।।

डामा दिशि जड़ि आकुश लाग, ताहि घड़ी पर तानल ताग।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, अगिला सा'ल'क कहथि सुजान ।।३६।।

कोनिआँ चारक ऊपर इत्यादि पूर्ववत् ।।३७।।

Scanned by CamScanner

भीतर खाली राखल आखाँ, डोरी मोड़ल दहिना पाँखा।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, के'श'रि भीतर कहथि सुजान ॥३८॥

बिनु जाठिक एक पोखरि भेट, ताहि घाट नहि काटल पेट।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, मा'ष'क अन्तहि कहथि सुजान ॥३९॥

मोड़ल बातिक दुहु दिशि लाठी, माथक ऊपर सजल भराठी।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, ता'स'क ओड़हि कहथि सुजान ॥४०॥

नीचाँ नाङड़ि बीचहि सूङ, ताहि फराठिक लाठी मूङ।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, 'ह'रक मूल धए कहथि सुजान ॥४१॥

दुइ गठरी कर आगाँ मोड़ल, अगिला धड़ गणेशक जोड़ल।
विद्यासिन्धु पिहानी भान, वृ'क्ष'क ओड़हि कहथि सुजान ॥४२॥

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट (ख)

'राजहंस'

['मिथिला दूत'मे श्री 'हंसराज', जे आब डा०श्री रामदेव झा नामें लिखैत छथि, रचित निबन्ध—"१९५४ आ मैथिली"। एहि निबन्धमे वर्ष भरिक प्रगतिक जाहि रूपें सर्वेक्षण कयल गेल अछि ताहिसँ बहुत सूचना साहित्यक अध्येताकें एक्के ठाम भेटि जाइत छनि, तें संरक्षणीय।]

१९५४ आ मैथिली

प्रत्येक वर्ष जखन जाइत अछि तँ किछु एहेन घटना अवश्य छोड़ि जाइत अछि जे स्मरणीय होइछ। वर्ष समाप्त भेला उत्तर प्रत्येक व्यक्ति अपन गत वर्षपर दृष्टि दिऐ' आ ओही अनुसारें अगिला वर्षक कार्यकें सम्पन्न करै। मैथिलीक हेतु १९५४ वर्ष कतेक विचारें महत्वपूर्ण रहल। ओकर अधिकारक रक्षा एवं प्रसारक हेतु कतेक रास काज भेलैक अछि।

१९५४क जनवरीक 'पाटल'मे डा० रामविलास शर्मा 'हिन्दी और मैथिली' नामक निबन्ध लीखि मैथिलीकें हिन्दीक बोली सिद्ध करबाक हास्यास्पद प्रयास कएलन्हि; जकर उत्तर 'आर्यावर्त्त'क १४ एवं २१ फरबरीक अंकमे नागार्जुन (यात्री) देने छलथिन्ह आ ओही पत्रक ३० मइक अंकमे श्री अमरजीक जोरदार उत्तर बहार भेलन्हि। जनबरिएमे बिहार एसेम्बलीमे श्री जानकी नन्दन सिंह द्वारा मैथिलीक प्रश्न उपस्थित भेल। बाबू हरिनन्दन सिंह मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा 'यदुनन्दन सिंह व्याख्यान माला'क प्रारम्भ कएल गेल—डा० अमरनाथ झाजीक भाषणसँ। पी. ई. एन.केर अन्नमलय नगरक तृतीय अखिल भारतीय लेखक सम्मेलनक हेतु मैथिलीओ लेखकसभसँ निवन्ध पठैबाक आग्रह कएल गेल छलन्हि। एहिमें श्री अमरजीक 'मैथिली पर रामायणक प्रभाव' वड़ प्रशंसित भेलन्हि। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी—मैथिलीक महत्तापर भागलपुरमे अपन भाषणक बीच आ सितम्बर मासक 'पाटल'मे 'मध्ययुग की प्रान्तीय भाषाओंके साहित्यका पारस्परिक सम्बन्ध' नामक निबन्ध लीखि, पर्याप्त प्रकाश देलन्हि।

केन्द्र द्वारा कविचूड़ामणि श्री 'मधुपजी'कें 'त्रिवेणी' नामक कविता संग्रह पर ५००) टाकाक पुरस्कार भेटलन्हि। दिसम्बरमे ब्रजमण्डलमे ११

Scanned by CamScanner

ठाम 'मैथिली साहित्य परिषद'क शाखा फूजल। 'विद्यापति स्मृति दिवस'क अवसरपर पटनामे बिहारक राज्यपाल श्री आर०आर०दिवाकर सेहो मैथिलीक प्राचीनता पर प्रकाश देलन्हि। बिहार संस्कृत समिति सेहो मैथिलीकें एही वर्ष स्थान देलक अछि।

प्रकाशनो गत वर्ष महत्वपूर्ण अछि। कलकत्ता सँ 'मिथिला सेवक' साप्ताहिक आ पटना सँ मासिक पत्र 'चौपाड़ि'क प्रकाशन प्रारम्भ भेल। कानपुरसँ 'मिथिलादूत'क प्रकाशन सेहो १९५४क प्रयास कहल जा सकैछ। 'अमर'जीक सम्पादनमे अबितहि 'निर्माण'मे मैथिलीकें स्थान भेटि गेलैक। मैथिली पत्रक इतिहासमे 'निर्माण' सेहो अपन स्थान बना लेलक अछि। लालदासक 'रमेश्वर चरित रामायण'क प्रकाशन अधिक स्मरणीय थीक। प्रस्तुत महाकाव्य आइसँ ५० वर्ष पूर्व लिखल गेल छल, किन्तु आइ धरि अमुद्रिते छल। श्री अमर द्वारा सम्पादित पद्य-प्रसून कविता-संग्रह मैथिलाक प्रतिनिधि कवि लोकनिक कविताक बानगीक संकलन थीक (स्मर्त्तव्य जे १९५४क मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशनमे भेल कवि सम्मेलनक अवसर पर पठित सब कविताक एक संकलन प्रकाशित भेल छल)। कलकत्तासँ "क्रान्ति गीत" प्रकाशित भेल जे श्री राघवाचार्यक वीर रसक कविताक संग्रह छन्हि। 'गोधूलि' लए श्याम बिहारी दासक आगमन भेल। उपन्यासक नामपर 'नवतुरिए' टा, जे यात्रीजीक लेखनीसँ बहरैल, नीक कोटिक उपन्यास कहल जा सकैछ।

कथा संग्रहमे हरिमोहन बाबूक 'तीर्थयात्रा', श्री योगानन्द झा द्वारा सम्पादित 'सप्तसुमन', 'चारि आना कैञ्चा' आ 'गरीबक बखारी' थीक। राधाकृष्णक 'नीमक फड़' मध्यम वर्गक समस्याकें लैत सफल भेल अछि। श्री केदार नाथ मिश्रक 'गरीबक बखारी' गरीबेक बखारी थीक। श्री मन मोहन झा द्वारा सम्पादित 'सञ्चयिता' कथा संग्रह प्रशंसनीय प्रयास थीक जाहिमे मैथिलीक ख्यात कथाकारमेसँ किछु गोटेक कथा संग्रहित छन्हि। तैं ई जनि बुझि लेबाक चाही जे ओहिमे सभ कथा उत्कृष्टे अछि।

भवभूतिक 'उत्तररामचरित'क अनुवाद डॉ० राजकुमार मिश्र बड़ सफलतापूर्वक उपस्थित कएलन्हि अछि। मैथिलीमे एकर कमी खटकैत छल। संगहि श्री योगानन्द झा 'मुनिक मतिभ्रम'कें उपस्थित कए 'भलमानुसे' जकाँ स्तुत्य काज कएलन्हि अछि। सात दृश्यक एकांकीमे 'सुकन्योपाख्यान'

Scanned by CamScanner

नामक पुराणप्रसिद्ध आख्यायिकाकेँ उपस्थित कएल गेल। तेँ एकर लेखककेँ सफल उपन्यासकारक संग एक सफल नाट्यकारक विशेषण सेहो जोड़ल जा सकैछ। मैथिलीभाषी एकर स्वागत अवश्य करताह। श्री दामोदर झाक 'गान्धर्वविवाह' नाम्क नाटक सेहो उल्लेखनीय प्रकाशन थीक।

श्री बलदेब मिश्र ज्योतिषाचार्यक 'गपशप विवेक' सहजहि श्री भेषनाथ झाजीक 'व्यवहार विज्ञान'केँ मोन पाड़ि दैत अछि। १०३ पृष्ठक ई पुस्तक लोकाचार एवं शिष्टाचारक विश्लेषणमे आन स्वतन्त्रे विशेषता रखैछ। मैथिलीक एहि पुरान सेवीक अभ्यर्थनामे दूनू हाथ स्वतः उठि जाइछ।

'परिचय-निषय' श्री शैलेन्द्र मोहन झाक आलोचनात्मक पुस्तक थिकनि। लेखक परिपाटीकेँ आरो नीक कए सकैत छलाह। पुस्तक विद्यार्थीक हेतु पठनीय अछि।

'विवेचना'क सम्पादनमे सम्पादक अपन दृष्टिकेँ कनी आरो बढ़बितथि त' नीक। ई अवश्य जे एकर प्रत्येक निबन्ध अपना प्रकारक अपने अछि।

श्री अमरजी 'मुहावरा ओ लोकोक्ति' लीखि कए सत्ते विद्यार्थी वर्गक लेल स्तुत्य एवं सफल अभियान कएलन्हि अछि।

एतेक होइतो एकटा महान शोकक गप्प तँ ई जे 'मिथिला-मिहिर' सन पत्र बंद भए गेल, जकर पुरातनता पर मैथिलीकेँ गर्व छलैक। श्री सीताराम झाक 'अम्बचरित' आ 'मणिपद्म'क 'अनल-पथ'क गाड़ी सेहो ओहीमे रुकि गेल।

एहि वर्षक महत्त्वपूर्ण घटनामे 'खट्टर काका' आ 'बुचकुन बाबा'क उतरा चौड़ी सेहो अपन स्थान रखैछ। मैथिलीक संभवतः अधिकांश योद्धा कच्छा चढ़ा अखाढ़ामे उतरल छलाह।

एहि वर्षक कथा-साहित्यमे कुमार गङ्गानन्द सिंहक 'पंडित पुत्र' 'नन्दन'क 'चारि आना कैञ्चा' आ 'रधिया भिखमङ्गनी', राधाकृष्णक 'नीमक फड़,' मायानन्द मिश्रक 'स्त्रीक बात' आ मुरबा (सुरबा)क शब्दचित्र, ललितक 'रमजानी' आ शेखरक 'सरस गल्प' उत्कृष्ट कहल जा सकैछ।

श्री भवनाथ झाक 'विद्यापति', अमरजीक 'नवीन पाठ्य प्रणाली' आ व्रजकिशोर वर्माक 'मिथिलाक बेटी' नीक एकांकी थीक।

आलोचनात्मक निबन्धमे प्रो० जयदेव मिश्रक 'मिथिलाक हास्य-साहित्य' सुमनजीक 'कविगोष्ठीक परम्परा ओ मैथिली', अमरजीक 'गंगास्तुतिक परंपरा

Scanned by CamScanner

मे सुमनजी,' व्रजकिशोर वर्माक 'मधुप'क गुंजन' आ हरिमोहन झाक 'मानस क्षितिज,' भक्तिनाथ सिंहठाकुरक 'मैथिली साहित्यमे गल्पक विकास,' परमानन्द शास्त्रीक 'मिथिलाक्षर आओर मिथिला भाषा,' 'मैथिलीक प्राचीन इतिहास' आदि उत्तम कोटिमे रखबा जोगर अछि।

नवीन प्रयोग सेहो प्रारम्भ भेल अछि। यात्रीजीक रिपोर्ताज 'चारि अहोरात्रि आ एकदिन,' 'पृथ्वी ते पात्रं', अमरजीक 'डायरीक पृष्ठ', 'विचारक उजाहि' ई सब नवीने प्रयोग थीक।

सक्षेपमे, १९५४ मैथिलीक लेल नीके रहल आ विश्वास अछि जे १९५५ आओर अधिक उज्ज्वल होयत।

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट (ग)

['मिथिला मिहिर'क 'मिथिलांक'मे प्रकाशित रचना ओ लेखक-सूची।]

हिन्दी

मैथिली भाषा और संस्कृति	डा० सुनीति कुमार चटर्जी
बौद्ध नैयायिक	त्रिपिटकाचार्य प० राहुल सांकृत्यायन
सती सीमन्तिनी सीता का चरित्रोत्कर्ष	शिवपूजन सहाय
वररुचि और हलायुध मैथिल थे ?	राजपण्डित बलदेव मिश्र
प्राचीन मिथिला	प० गौरीनाथ झा, व्या० तीर्थ
मिथिलामे दर्शन	प० जटेश्वर झा मी० न्या० तीर्थ
आदिकाल की मिथिला	अच्युतानन्द दत्त
कविराज गोविन्ददास झा	श्री नरेन्द्रनाथ दास
मिथिलाके संस्कृत सा० महारथियों की तालिका	कविशेखर बदरीनाथ झा
मिथिला की निजी विशेषताएँ	मथुरा प्रसाद दीक्षित
मिथिलामे नान्यवंश का शासन	नन्द किशोर लाल दास
१७ वीं १८ वीं शताब्दी के मैथिली नाटक	कुमार गंगानन्द सिंह
बौद्धकालीन मिथिला	श्री कमल नारायण झा
मिथिला की एक झलक	यदुनन्दन शर्मा
विद्यापति और हमारा कर्त्तव्य	रामवृक्ष बेनीपुरी
खेल में ब्रह्मविद्या	राजपं० बलदेव मिश्र
मिथिला के विद्वान्	प० त्रिलोकनाथ मिश्र
मिथिला के शिक्षित युवक	शुकदेव ठाकुर, बी. ए.
	देवनारायण सिंह, बी. ए.
मिथिला की गोशालाएँ	श्री धर्मलाल सिंह
पुराण में मिथिला	प० सीताराम झा 'व्यास' व्या० तीर्थ
मिथिला में आयुर्वेद	प० हरिश्चन्द्र झा
मिथिला की भौगोलिक स्थिति	परमानन्द दत्त

Scanned by CamScanner

मैथिल कवियों के कुछ संस्कृत पद	प० श्री रामचन्द्र मिश्र, व्या० वे० आ०
मिथिला का महत्त्व	प० जनार्दन झा
रामायणकारों की दृष्टि में मिथिला	प० रघुनाथोपाध्याय, व्या० आ०
मिथिला और भूकम्प	प० श्री गिरीन्द्र मोहन मिश्र
मिथिला में वनस्पति	प० भुवनेश्वर झा
मैथिली की उत्पत्ति और विकास	बाबू भोलालाल दास
हरिसिंहदेवीय समाज पद्धति	प० कपिलेश्वर मिश्र, वैयाकरण शिरोमणि
मिथिला के तीर्थस्थान	प० राम निरेषण मिश्र
मिथिला में प्रचलित कुछ पर्व-त्योहार	प० श्री जीवानन्द ठाकुर
मिथिला के उपनिवेश	प० कपिलेश्वर मिश्र, वै० शि०
वेश-भूषा	प० ईशदत्त झा, व्या० तीर्थ
साहित्य सरोज कमलानन्द सिंह	विन्ध्येश्वरी प्र० सिंह, बी. ए. बी-एल्.
म. म. डॉ० गंगानाथ झा	श्री शशिनाथ चौधरी, बी. ए. बी. एल्
मिथिला की विभूतियाँ (शास्त्रकार, नव्यन्यायकार, साहित्य शास्त्रकार और कवि, धर्मशास्त्र निबन्धकार, सिद्ध महात्मा)	—सम्पादक
मिथिला की विदुषियाँ	सिद्धेश्वरी प्रसाद श्रीवास्तव
मिथिला की कुछ संस्थाएँ	देवनारायण चौधरी
मिथिला की रियासतें	प० श्री उपेन्द्र झा, व्या० न्या० आ०
मिथिला और काश्मीर	प० गोपीनाथ जी
तन्त्रवाद	अच्युतानन्द दत्त
संस्कृत विद्यालय	प० कृष्णेश्वर झा, व्या० न्या. आ०
पत्र-पत्रिकाएँ	बाबू गंगापति सिंह

प्रकीर्ण इत्यादि गद्यांशमे अछि। संगहि सम्पादकीय मन्तव्य एवं आत्म निवेदनमे मिथिलाङ्कक आवश्यकता ओ तैयारीक प्रसंग प्रकाश देल गेल अछि। एकर अतिरिक्त कविता सब अछि जकर सूची निम्नांकित अछि—

प्रभात	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
सीते	मैथिलीशरण गुप्त
कवि	रामधारी सिंह 'दिनकर'
असफल	जयकिशोर नारायण सिंह
खँड़हर की रानी	कपिलदेव नारायण सिंह 'सुहृद'
मिथिला के प्रति	श्री जयनारायण झा

Scanned by CamScanner

?	श्री रामचन्द्र मिश्र 'मोहन'
मिथिला के कोकिल से	श्री कलधटर सिंह 'केसरी'
मिथिला	श्री आरसी प्रसाद सिंह[१]

मैथिली

मिथिलाक गति	म. म. डॉ० गंगानाथ झा
दार्शनिक मिथिला	म. म. प० बालकृष्ण मिश्र
मैथिली एवं हिन्दी	डॉ० अमरनाथ झा
मिथिला मैथिल मैथिली	म. म. डॉ० उमेश मिश्र
मिथिला आओर कर्मकाण्ड	म. म. बख्शी मुकुन्द झा
मैथिली लिपि	प० जीवनाथ राय, बी. ए.
मिथिलाक राजवंश	श्री कुलानन्द दास, बी० ए०
मिथिला और स्वास्थ्य	डॉ० भवनाथ झा
कीर्त्तिलता	प० गणेश्वर झा, न्या० आ०
मैथिली मे नाटक	हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज'
जानकी जन्मोत्सव	धनुषधारी दास 'मै० बाचस्पति'
मिथिलामे स्त्रीशिक्षा	श्री विद्यानन्द ठाकुर
मैथिलीक विषय मे दुइ शब्द	डॉ० सुधाकर झा शास्त्री
मिथिलेश लोकनिक मैथिली कविता	श्री नरेन्द्रनाथ दास
कविकोकिल विद्यापतिक एक पद	प्रियनाथ मित्र, एम्. ए. बी. एल्.
मैथिली लिपि ओ ओझाजी	पुलकित लाल दास 'मधुर'
मिथिलाक भाषा[२]	प० गोकुललाल झा चक्रवर्त्ती, बी. ए.
	प० जयनन्दन शास्त्री, व्या० आ० का० ती०
मिथिलाक संगठन कोना हो ?	गोपीकान्त चौधरी 'कान्त'
वेद ब्राह्मण मे मिथिला	प० महेन्द्रनाथ झा सामवेदी

१. एतेक विशाल विशेषाङ्कमे कथा मात्र दू गोट अछि, हिन्दीमे श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क 'झोपड़ीमे' तथा मैथिलीमे कुमार गंगानन्द सिंहक बहुचर्चित 'अगिलही'।

२. स्मर्त्तव्य जे एहि लेखक टिप्पणीमे प० जयनन्दन शास्त्री द्वारा 'मैथिली शब्द 'सागर' आओर 'मैथिली-विश्वकोष' नामक दुइ कोषक संकलन क' रहल जयबाक सूचना देल गेल अछि। एकर अन्वेषण होयबाक चाही।

Scanned by CamScanner

मिथिलाक संग बंगालक सम्बन्ध प० शारदा चरण सेन कविराज

अवनतिक मूल और उन्नतिक उपाय प० भूपनारायण झा, व्या.न्या.मी.आ०

प० बदरीनाथ झा, आयु० आ०

मैथिली भाषाक रूप में बाबू भोलालाल दास, बी. ए. एल्. एल्. बी.

आचार ओ विचार प० त्रिलोचन झा

मैथिलीमे निम्नांकित कविलोकनिक कविता संकलित छनि—'मैथिलीक प्रति—बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन,' 'शुभाशंसा'—प० रामभद्र झा, एम्. ए. (अलवर), 'प्रभात'—प० श्री आनन्द झा, न्या०, आ०, 'गीत'—प० रामचन्द्र झा 'चन्द्र,' 'महत्त्वगान'—कविवर सीताराम झा, 'उक्तिसप्तक' प० श्रीवल्लभ झा, 'मिथिले'—श्री वैद्यनाथ मिश्र (आब यात्री), 'मिथिलाक मिहिरसँ'—प्रो० श्री हरिमोहन झा, 'देश'—प० महावीर चौधरी, 'सुरपुर समाद'—सा० रत्नाकर मुन्शी रघुनन्दन दास, 'अनुरोध'—राघवेन्द्र झा, 'आश्रम'—प० वीरभद्र शास्त्री, 'अनुरोध'—प० कुशेश्वर कुमर, 'मिथिलाक गङ्गा'—प० उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन,' 'मिथिला'—प० सहदेव झा, 'प्रोत्साहन' —बाबू लक्ष्मीपति सिंह, 'कामना'—प० जीवनाथ झा, विद्याभूषण। अन्तमे 'विचार विन्दु'मे 'निवेदन' ओ मिथिलाक ऐतिहासिक स्थानक रक्षा' पर प्रकाश देल गेल अछि।

मैथिली अकादमी

श्रीकृष्णपुरी, पटना—८०००१

१९७९–८०क प्रकाशन

		मूल्य	
		साधारण—	सजिल्द
आधुनिक मैथिली कविता (आलोचना) प्रो० हरिमोहन मिश्र	....	१०.००	१२.५०
स्मृति-सन्ध्या (संस्मरण-संग्रह) श्री मोहन भारद्वाज (सम्पा.)	....	७.५०	९.५०
उमापति (जीवनी) डॉ० रामदेव झा	....	५.००	६.५०
म० म० मुरलीधर झा (जीवनी) श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'	....	६.००	८.००
जीवन झा-रचनावली (नाटक) श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' (सम्पा.)	....	८.००	१०.००
आत्मकथा (जीवनी) म०म० डॉ० गंगानाथ झा अनुवाद : श्री सुशील झा	....	७.००	९.००
जानकी-रामायण (आख्यानकाव्य) महाकवि लालदास	....	७.००	९.५०
रुक्मिणी-परिणय (महाकाव्य) श्री बबुआजी झा 'अज्ञात'	...	६.५०	८.५०
मिथिलाक इतिहास डॉ० उपेन्द्र ठाकुर	....	१४.००	१७.००
कृति राजकमलक (कथा + उपन्यास) प्रो० आनन्द मिश्र (सम्पा.) श्री मोहन भारद्वाज "	....	९.००	११.५०
वर्णरत्नाकर (ज्योतिरीश्वर कृत) प्रो० आनन्द मिश्र (सम्पादक) श्री गोविन्द झा "	....	१२.००	१५.००
अगस्त्यायनी (महाकाव्य) श्री मार्कण्डेय प्रवासी	....	८.००	१०.५०

Scanned by CamScanner